बंदी
खोए हुए समय की खोज में - खंड V
मार्सेल प्राउस्ट

मूल शीर्षक:
बंदी
अतीत की यादें - खंड V

अनुवादक: चार्ल्स केनेथ स्कॉट मोनक्रिफ़
चैटो एंड विंडस, लंदन, 1929

Table of Contents

खंड I
अध्याय 1
अल्बर्टाइन के साथ जीवन
अध्याय II
एम. डी चार्लस के साथ वर्डुरिन्स का झगड़ा
खंड II
अध्याय II (जारी)
एम. डी चार्लस के साथ वर्डुरिन्स का झगड़ा
अध्याय III
अल्बर्टाइन की उड़ान

खंड I

अध्याय 1

अल्बर्टाइन के साथ जीवन

भोर होते ही मेरा चेहरा दीवार की ओर मुड़ा हुआ था, और इससे पहले कि मैं बड़े भीतरी पर्दों के ऊपर से प्रकाश की पहली किरणों का रंग देख पाता, मैं समझ गया था कि आज का दिन कैसा होगा। गली से आने वाली पहली आवाज़ों ने ही मुझे बता दिया था, चाहे वे वातावरण की नमी से धुंधली और विकृत होकर मेरे कानों तक पहुँचें या फिर एक विशाल, निर्मल, बर्फीली सुबह के गूंजते और खाली क्षेत्र में तीरों की तरह कांपती हुई; जैसे ही मैंने पहली ट्रामगाड़ी की गड़गड़ाहट सुनी, मैं समझ गया कि वह बारिश से भीगी हुई है या नीले आसमान में आगे बढ़ रही है। और शायद इन आवाज़ों से पहले ही कोई तेज़ और व्यापक ध्वनि प्रकट हो गई थी, जो मेरी नींद में घुसकर उसमें एक उदासी भर देती थी, मानो बर्फ़बारी का संकेत दे रही हो, या (कभी-कभी वहाँ प्रकट होने वाले एक छोटे से व्यक्ति के होठों से) सूर्य की महिमा के इतने भजन गाती थी कि पहले तो मैं नींद में मुस्कुराने लगा, अपनी बंद पलकों के पीछे अपनी आँखों को चकाचौंध के लिए तैयार कर लिया, और अंत में संगीत की तेज़ आवाज़ों के बीच जाग उठा। इसके अलावा, इस दौरान मैंने बाहरी दुनिया की जानकारी मुख्य रूप से अपने शयनकक्ष से ही प्राप्त की। मुझे पता है कि ब्लोच ने बताया था कि जब वह शाम को मुझसे मिलने आता था, तो उसे बातचीत की आवाज़ सुनाई देती थी; क्योंकि मेरी माँ कॉम्ब्रे में थीं और उसे मेरे कमरे में कोई नहीं मिला, इसलिए उसने निष्कर्ष निकाला कि मैं खुद से बात कर रहा था। बहुत समय बाद जब उन्हें पता चला कि उस समय अल्बर्टीन मेरे साथ रह रही थी, और उन्हें यह भी एहसास हुआ कि मैंने अपने सभी दोस्तों से उसकी मौजूदगी छुपा रखी थी, तो उन्होंने कहा कि उन्हें आखिरकार वह कारण समझ आ गया है कि मेरे जीवन के उस दौर में मैं हमेशा घर से बाहर क्यों नहीं निकलती थी। वे गलत थे। हालांकि, उनकी यह गलती पूरी तरह से क्षमा करने योग्य थी, क्योंकि सच्चाई, चाहे वह अपरिहार्य ही क्यों न हो, हमेशा पूरी तरह से समझ में नहीं आती। जो लोग किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन के बारे में कोई सटीक जानकारी जान लेते हैं, वे तुरंत गलत निष्कर्ष निकाल लेते हैं और उस नई खोजी गई बात में उन चीजों की व्याख्या ढूंढ लेते हैं जिनका उससे कोई संबंध नहीं होता।

अब जब मैं इस बात पर विचार करता हूँ कि बालबेक से लौटने पर मेरी प्रेमिका पेरिस में मेरे साथ एक ही छत के नीचे रहने आई थी, उसने क्रूज पर जाने का विचार छोड़ दिया था, उसे मेरे कमरे से बीस कदम की दूरी पर, गलियारे के अंत में, मेरे पिता के टेपेस्ट्री से सजे अध्ययन कक्ष में एक कमरा दिया गया था, और हर रात देर से, मुझे छोड़ने से पहले, वह अपनी जीभ मेरे होठों के बीच ऐसे फेरती थी जैसे वह रोटी का एक टुकड़ा हो, एक पौष्टिक भोजन जिसमें लगभग पवित्रता का भाव था, जिस पर हमने जो कष्ट सहे हैं, वे समय के साथ एक प्रकार की आध्यात्मिक कृपा प्रदान करते हैं, तो तुलना करते समय मुझे तुरंत वह रात याद नहीं आती जब कैप्टन डी बोरोडिनो ने मुझे बैरक में बिताने की अनुमति दी थी, एक ऐसा उपकार जिसने अंततः केवल एक क्षणिक बीमारी को ठीक कर दिया था, बल्कि वह रात याद आती है जब मेरे पिता ने माँ को मेरे बगल वाले छोटे से पलंग पर सोने के लिए भेजा था। इसलिए, यदि जीवन हमें एक बार फिर उस पीड़ा से मुक्ति दिलाने वाला है जो अपरिहार्य प्रतीत होती रही है, तो वह ऐसा अलग परिस्थितियों में करता है, जो कभी-कभी इतनी विपरीत होती हैं कि हम पर प्रदत्त कृपा की पहचान का दावा करना लगभग एक खुला अपवित्रता है।

जब अल्बर्टीन को फ्रांस्वा से पता चला कि मेरे अभी भी पर्दे से ढके कमरे के अंधेरे में मैं सो नहीं रही हूँ, तो उसने अपने ड्रेसिंग रूम में नहाते समय शोर मचाने में कोई संकोच नहीं किया। फिर, अक्सर, दिन में बाद तक इंतज़ार करने के बजाय, मैं उसके बगल वाले बाथरूम में चली जाती थी, जिसका अपना एक अलग ही आकर्षण था। एक समय था, जब एक स्टेज मैनेजर किसी महान अभिनेत्री के महारानी का किरदार निभाने वाले सिंहासन को असली पन्ना से सजाने के लिए लाखों फ्रैंक खर्च करता था। रूसी बैले ने हमें सिखाया है कि प्रकाश की साधारण व्यवस्था, यदि सही जगह पर डाली जाए, तो उतने ही भव्य और विविध रत्नों का सृजन कर सकती है। हालाँकि, यह सजावट, जो स्वयं भौतिक नहीं है, उतनी सुंदर नहीं है जितनी वह, जो सुबह आठ बजे सूर्य द्वारा उस प्रकाश की जगह ले लेती है जिसे हम दोपहर से पहले न उठने पर देखने के आदी थे। हमारे-हमारे स्नानघरों की खिड़कियाँ, ताकि बाहर से अंदर के लोग दिखाई न दें, साफ़ कांच की नहीं थीं, बल्कि उन पर एक कृत्रिम और पुराने ज़माने की धुंधली परत चढ़ी हुई थी। अचानक, सूरज की किरणें इस कांच के पर्दे को रंग देतीं, उसे सुनहरा कर देतीं, और अपने भीतर उस पुराने युवा को पाकर, जिसे आदत ने लंबे समय

से छिपा रखा था, मैं यादों में खो जाता, मानो मैं खुले मैदान में सुनहरे पत्तों की बाड़ को निहार रहा हूँ, जिसमें एक पक्षी भी मौजूद है। क्योंकि मुझे अल्बर्टीन की गुनगुनाहट लगातार सुनाई दे रही थी।
उदासी के लिए
यह तो सरासर मूर्खता है।
और जो इस पर ध्यान देता है वह मूर्ख है।
मैं उससे इतना प्यार करता था कि उसके संगीत के बेस्वाद होने पर भी मैं मुस्कुरा देता था। संयोग से, पिछली गर्मियों में इस गाने ने श्रीमती बोंटेम्प्स को बहुत प्रसन्न किया था, जिन्होंने हाल ही में लोगों को यह कहते सुना कि यह गाना बेवकूफी भरा है, जिसके परिणामस्वरूप, जब भी उनके घर कोई पार्टी होती, तो अल्बर्टीन से इसे गाने के लिए कहने के बजाय, वह यह गाना गाती थीं:
विरह के झरनों से विदाई का गीत फूटता है,
जो बदले में 'मैसनेट की एक पुरानी तुकबंदी बन गई, जिसमें बच्चा हमेशा हमारे कानों में शोर मचाता रहता है।'
एक बादल गुजरा और सूरज को ढक लिया; मैंने देखा कि कांच के नीचे की सादी, आवरण बनाने वाली पत्तियाँ बुझ गईं और उनकी जगह एक धूसर रंग की छाया छा गई।
हमारे दो ड्रेसिंग रूमों को अलग करने वाली दीवार (अल्बर्टीन का, जो मेरे जैसा ही था, एक बाथरूम था जिसे मम्मी, जिनका फ्लैट के दूसरे छोर पर एक और बाथरूम था, मेरी नींद में खलल पड़ने के डर से कभी इस्तेमाल नहीं करती थीं) इतनी पतली थी कि हम नहाते समय भी एक-दूसरे से पूरी गोपनीयता में बातें कर सकते थे, हमारी बातचीत केवल पानी की आवाज़ से ही बाधित होती थी, उस आत्मीयता में जो होटलों में कमरों के छोटे आकार और निकटता के कारण अक्सर संभव होती है, लेकिन पेरिस के निजी घरों में इतनी दुर्लभ है।
कई बार सुबह मैं बिस्तर पर ही लेटी रहती, जब तक मन करता ऊंघती रहती, क्योंकि आदेश था कि जब तक मैं घंटी न बजा दूं, कोई भी मेरे कमरे में न आए। मेरे बिस्तर के ऊपर बिजली का बल्ब जिस अजीब तरह से लटका हुआ था, उसकी वजह से घंटी बजाने में इतना समय लगता था कि अक्सर उसे ढूंढने से थककर और अकेले रहने की खुशी में, मैं कुछ पल के लिए

लेट जाती और लगभग फिर से सो जाती। ऐसा नहीं था कि मुझे घर में अल्बर्टीन की मौजूदगी से कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसकी सहेलियों से अलग रहने से मेरे दिल को किसी नए दुख से राहत मिलती थी। वह मेरे दिल को एक तरह की शांति और सुकून देती थी, जिससे उसे ठीक होने में मदद मिलती थी। लेकिन आखिरकार, मेरी मालकिन जो शांति मुझे दे रही थी, वह दुख से मुक्ति थी, न कि कोई सच्ची खुशी। ऐसा नहीं था कि इसने मुझे उन अनेक सुखों का अनुभव करने से वंचित कर दिया था, जिनसे तीव्र दुःख ने मुझे वंचित रखा था, परन्तु ये सुख, अल्बर्टीन की देन बिल्कुल नहीं थे, जिनमें मुझे अब कोई सुंदरता नहीं दिखती थी और जो मुझे ऊबने लगी थीं, जिनसे अब मुझे स्पष्ट रूप से यह अहसास हो गया था कि मैं प्रेम में नहीं हूँ। बल्कि, ये सुख मैंने तब अनुभव किए जब अल्बर्टीन मेरे साथ नहीं थीं। इसलिए, सुबह की शुरुआत में, मैं उन्हें तुरंत नहीं बुलवाता था, विशेषकर यदि मौसम सुहाना होता था। कुछ क्षणों के लिए, यह जानते हुए कि वह मुझे अल्बर्टीन से अधिक प्रसन्न करेंगे, मैं अपने भीतर के उस छोटे से व्यक्ति के साथ एकांत में रहता था, उगते सूरज का गुणगान करता था, जिसके बारे में मैं पहले ही बात कर चुका हूँ। हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले तत्वों में, सबसे स्पष्ट तत्व सबसे आवश्यक नहीं होते। मुझमें, जब अस्वस्थता उन्हें एक-एक करके उखाड़ फेंकने में सफल हो जाती है, तब भी दो या तीन तत्व शेष रह जाते हैं, जो बाकियों की तुलना में अधिक दृढ़ होते हैं, विशेष रूप से एक दार्शनिक जो तभी प्रसन्न होता है जब वह कला की दो कृतियों में, दो संवेदनाओं में, एक समान तत्व खोज लेता है। लेकिन अंत में, मैंने कभी-कभी खुद से पूछा है कि क्या यह वही छोटा सा पुतला नहीं हो सकता, जो कॉम्ब्रे के ऑप्टिशियन की दुकान की खिड़की में मौसम का पूर्वानुमान लगाने के लिए रखा जाता था, और जो धूप निकलने पर अपना हुड उतार देता था, और बारिश होने वाली होती तो उसे फिर से पहन लेता था। मैं इस छोटे पुतले के अहंकार को जानता हूँ; हो सकता है मैं घुटन से पीड़ित हूँ और बारिश की हल्की सी आशंका भी मुझे शांत कर दे; वह इस पर ध्यान नहीं देता, और बेसब्री से इंतज़ार की जा रही पहली बूँदों को देखते ही, अपनी खुशी खोकर, उदास होकर अपना हुड नीचे खींच लेता है। इसके विपरीत, मैं कह सकता हूँ कि अपनी अंतिम पीड़ा में, जब मेरे सभी अन्य 'रूप' मर चुके होंगे, अगर सूरज की एक किरण कमरे में आ जाए, जब मैं अपनी अंतिम साँस ले रहा हूँ,

तो बैरोमीटर का वह छोटा सा साथी बहुत राहत महसूस करेगा, और अपना हुड उठाकर गाएगा: "आह! आखिरकार मौसम सुहाना हो गया!"

मैंने फ्रांस्वा को फोन किया। मैंने फिगारो अखबार खोला। मैंने उसके पन्ने पलटे और यह सुनिश्चित किया कि उसमें वह लेख, या तथाकथित लेख, तो नहीं है जो मैंने संपादक को भेजा था, और जो हाल ही में सामने आए उस पन्ने का थोड़ा संशोधित संस्करण मात्र था, जिसे मैंने बहुत पहले डॉ. परसेपीड की गाड़ी में बैठकर मार्टिनविले के ऊंचे शिखरों को निहारते हुए लिखा था। फिर मैंने माँ का पत्र पढ़ा। उन्हें यह बात अजीब, बल्कि चौंकाने वाली लगी कि एक लड़की मेरे साथ घर में अकेली रह रही है। पहले दिन, बालबेक से विदा होते समय, जब मेरी माँ ने मेरी दयनीय हालत देखी और मुझे अकेले छोड़ने की आशंका से दुखी हुई, तो शायद उन्हें यह जानकर खुशी हुई होगी कि अल्बर्टीन भी हमारे साथ यात्रा कर रही है। उन्होंने यह भी देखा कि हमारे अपने बक्सों (जिन बक्सों में मैंने बालबेक के होटल में एक रात आँसुओं में बिताई थी) के साथ-साथ अल्बर्टीन के संकरे और काले बक्से भी 'ट्विस्टर' में लादे गए थे, जो मुझे ताबूत जैसे लग रहे थे और जिनके बारे में मुझे पता नहीं था कि वे मेरे घर में जीवन ला रहे हैं या मृत्यु। लेकिन मैंने यह सवाल खुद से कभी नहीं पूछा, क्योंकि बालबेक में रहने के डर के बाद, उस उज्ज्वल सुबह में मैं बहुत खुश थी कि मैं अल्बर्टीन को अपने साथ ले जा रही हूँ। लेकिन इस प्रस्ताव पर, यदि शुरुआत में मेरी माँ का रवैया शत्रुतापूर्ण नहीं था (वह मेरी सहेली से ऐसे प्यार से बात कर रही थीं जैसे कोई माँ जिसका बेटा गंभीर रूप से घायल हो गया हो और वह उस युवती की आभारी हो जो उसकी देखभाल कर रही है), तो अब जब यह बात पूरी तरह से स्पष्ट हो चुकी थी और वह लड़की हमारे घर में लंबे समय तक रह रही थी, और वह भी मेरे माता-पिता की अनुपस्थिति में, तो उनका रवैया शत्रुतापूर्ण हो गया था। हालाँकि, मैं यह नहीं कह सकता कि मेरी माँ ने कभी इस शत्रुता को ज़ाहिर किया। जैसे पहले, जब उन्होंने मेरी मानसिक अस्थिरता और आलस्य के लिए मुझे ताना मारने की हिम्मत छोड़ दी थी, अब उन्हें एक झिझक महसूस हो रही थी—जिसे शायद मैंने उस समय पूरी तरह से नहीं समझा या समझने से इनकार कर दिया—कि कहीं ऐसा न हो कि जिस लड़की को मैंने शादी का प्रस्ताव देने का इरादा बताया था, उसकी आलोचना करके वह मेरे जीवन में एक उदासी का साया ला दे, जिससे भविष्य में मेरी पत्नी के प्रति मेरी निष्ठा कम हो जाए, और शायद उस समय के लिए

जब वह स्वयं नहीं रहेंगी, अल्बर्टीन से शादी करके उन्हें दुखी करने के पछतावे के बीज बो दिए जाएँ। माँ ऐसा दिखावा करना चाहती थीं कि वह मेरे उस फैसले को मंज़ूरी दे रही हैं, जिसे बदलने में वह खुद को असमर्थ मानती थीं। लेकिन उस समय उनके संपर्क में आए लोगों ने मुझे बताया कि अपनी माँ को खोने के दुख के साथ-साथ वह लगातार किसी चिंता में डूबी रहती थीं। इस मानसिक उथल-पुथल, इस आंतरिक संघर्ष के कारण मेरी माँ का माथा तप जाता था और वह हमेशा खिड़कियाँ खोलकर ताज़ी हवा अंदर आने देती थीं। लेकिन वह कोई फैसला नहीं ले पाईं, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं वह मुझे गलत दिशा में प्रभावित न कर दें और मेरी खुशी को बर्बाद न कर दें। वह मुझे अल्बर्टाइन को कुछ समय के लिए घर में रखने से भी नहीं रोक पाईं। वह मैडम बोंटेम्प्स से ज़्यादा सख्त नहीं दिखना चाहती थीं, जो इस मामले की मुख्य सूत्रधार थीं और जिन्हें इस व्यवस्था में कोई बुराई नहीं दिखती थी, जिससे मेरी माँ बहुत हैरान थीं। फिर भी, उन्हें इस बात का अफ़सोस था कि उन्हें हम सबको एक साथ छोड़कर उसी समय कॉम्ब्रे के लिए रवाना होना पड़ा, जहाँ उन्हें कई महीनों तक रहना पड़ सकता था (और वास्तव में वे रहीं भी), इस दौरान मेरी परदादी को दिन-रात उनकी निरंतर देखभाल की आवश्यकता थी। लेग्रैंडिन की दयालुता और समर्पण के कारण वहाँ उनके लिए सब कुछ आसान हो गया था। लेग्रैंडिन खुशी-खुशी हर संभव प्रयास करते थे और पेरिस लौटने में हफ़्ते दर हफ़्ते देरी करते रहते थे, ऐसा नहीं था कि वे मेरी चाची को अच्छी तरह जानते थे, बल्कि इसलिए कि वे उनकी माँ की दोस्त थीं, और इसलिए भी कि वे जानते थे कि मृत्युदंड प्राप्त कर चुकी बीमार चाची को उनकी देखभाल की बहुत ज़रूरत थी और उनके बिना उनका गुज़ारा नहीं हो सकता था। अहंकार एक गंभीर मानसिक रोग है, लेकिन यह एक सीमित क्षेत्र तक ही सीमित रहता है और पूरे व्यक्तित्व को दूषित नहीं करता। दूसरी ओर, मैं, माँ के विपरीत, कॉम्ब्रे में उसकी अनुपस्थिति से बेहद खुश थी, लेकिन अगर ऐसा न होता तो मुझे डर होता (क्योंकि मैं अल्बर्टीन को इस बारे में न बताने की चेतावनी नहीं दे पाई थी) कि उसे मैडम विंटेइल के साथ मेरी दोस्ती के बारे में पता चल जाएगा। यह मेरी माँ के लिए एक बहुत बड़ी बाधा होती, न केवल उस शादी के लिए जिसके बारे में उन्होंने मुझसे अल्बर्टीन को अभी तक कुछ भी न बताने की विनती की थी, और जिसका विचार मेरे लिए असहनीय होता जा रहा था, बल्कि अल्बर्टीन को घर में लंबे समय तक रहने देने के लिए भी।

इस मामले में जो गंभीर कारण लागू नहीं होता, उसे छोड़कर, मेरी दादी के मुक्तिदायक और शिक्षाप्रद उदाहरण के दोहरे प्रभाव में, जिनके अनुसार जॉर्ज सैंड की प्रशंसा में सद्गुण हृदय की महानता में निहित था, और मेरे स्वयं के भ्रष्ट स्वभाव के कारण, मेरी माँ अब उन महिलाओं के प्रति उदार थीं, जिनके आचरण की वह अतीत में, या अब भी, निंदा करतीं, यदि वे पेरिस या कॉम्ब्रे में उनकी कोई मध्यमवर्गीय मित्र होतीं, लेकिन जिनके उच्च स्वभाव की मैंने उनसे प्रशंसा की और जिन्हें उन्होंने मेरे प्रति उनके स्नेह के कारण बहुत हद तक क्षमा कर दिया। लेकिन सब कुछ कहने के बाद, और शिष्टाचार के किसी भी प्रश्न को अलग रखते हुए, मुझे संदेह है कि अल्बर्टीन उस माँ को सहन कर पातीं, जिसने कॉम्ब्रे से, मेरी चाची लियोनी से, और अपने सभी रिश्तेदारों से समय की पाबंदी और अनुशासन की ऐसी आदतें सीख ली थीं, जिनकी मेरी मालकिन को दूर-दूर तक कोई कल्पना भी नहीं थी।

वह कभी दरवाजा बंद करने के बारे में सोचती भी नहीं थी, और दूसरी तरफ, अगर दरवाजा खुला भी होता तो वह किसी कमरे में घुसने में उतनी ही सहजता दिखाती जितनी कोई कुत्ता या बिल्ली। उसका कुछ हद तक अटपटा आकर्षण वास्तव में घर में एक लड़की की तरह नहीं, बल्कि एक पालतू जानवर की तरह था जो कमरे में आता-जाता है, और जहाँ भी उसकी उम्मीद न हो वहाँ मिल जाता है और (उसके मामले में) - मुझे गहरी शांति का अहसास कराते हुए - आकर मेरे बिस्तर पर मेरे बगल में लेट जाती, अपने लिए एक ऐसी जगह बना लेती जहाँ से वह कभी हिलती भी नहीं, और मेरे रास्ते में भी नहीं आती जैसे कोई इंसान आता है। हालाँकि, अंत में उसने मेरे सोने के समय का पालन करना शुरू कर दिया, और न केवल मेरे कमरे में आने की कोशिश नहीं करती थी, बल्कि इस बात का भी ध्यान रखती थी कि जब तक मैं घंटी न बजा दूँ तब तक कोई आवाज़ न करे। ये नियम तो फ्रांस्वा ने ही उसे सिखाए थे।

वह कॉम्ब्रे की उन नौकरानियों में से एक थी, जो अपने मालिक के विश्व में स्थान से भलीभांति परिचित थीं और यह मानती थीं कि वे कम से कम इतना तो कर ही सकती हैं कि उनके साथ पूरे सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाए, जिसके वे हकदार समझती थीं। जब एक अजनबी ने मुलाकात के बाद जाते समय फ्रांस्वा को रसोई की नौकरानी के साथ बाँटने के लिए कुछ भेंट दी, तो उसने जैसे ही सिक्का उसके हाथ में रखा, फ्रांस्वा ने उतनी ही तेज़ी, समझदारी और फुर्ती से रसोई की नौकरानी को बता दिया। नौकरानी आगे आई और उसने फुसफुसाकर

नहीं, बल्कि खुलकर और ज़ोर से धन्यवाद दिया, जैसा कि फ्रांस्वा ने उसे करने के लिए कहा था। कॉम्ब्रे के पादरी कोई बहुत बुद्धिमान नहीं थे, लेकिन वे यह भी जानते थे कि उनका क्या कर्तव्य है। उनके निर्देश पर, श्रीमती सैज़ेरत के कुछ प्रोटेस्टेंट चचेरे भाइयों की बेटी को चर्च में शामिल किया गया था और उसका परिवार उनका बहुत आभारी था: मामला मेसेग्लिस के एक युवा रईस से उसकी शादी का था। युवक के रिश्तेदारों ने कुछ घमंडी लहजे में उसके बारे में पूछताछ करने के लिए पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने उसके प्रोटेस्टेंट मूल के प्रति अपनी नापसंदगी व्यक्त की। कॉम्ब्रे के पादरी ने इस तरह से जवाब दिया कि मेसग्लिस का वह रईस, निराश और हताश होकर, एक बिलकुल अलग पत्र लिखा जिसमें उसने सबसे कीमती कृपा के रूप में उस लड़की का हाथ विवाह में देने की भीख मांगी।

मेरी नींद का सम्मान करवाने में फ्रांस्वा को कोई विशेष श्रेय नहीं दिया जा सकता। वह परंपराओं से ओतप्रोत थी। उसकी मौन मुद्रा या मेरे कमरे में प्रवेश करने या मुझे कोई संदेश भेजने के प्रस्ताव पर उसके कठोर जवाब से, जिसे अल्बर्टाइन ने पूरी मासूमियत से व्यक्त किया था, अल्बर्टाइन को आश्चर्य के साथ एहसास हुआ कि वह अब एक अजनबी दुनिया में रह रही है, जहाँ अजीब रीति-रिवाज प्रचलित हैं, और आचरण के ऐसे नियम हैं जिनका उल्लंघन करने का कभी सपना भी नहीं देखा जा सकता। उसे बालबेक में पहले ही इसका पूर्वाभास हो गया था, लेकिन पेरिस में उसने विरोध करने का कोई प्रयास नहीं किया, और हर सुबह कोई शोर मचाने से पहले मेरी घंटी की आवाज का धैर्यपूर्वक इंतजार करती थी।

फ्रांस्वा ने उसे जो प्रशिक्षण दिया, वह हमारी बूढ़ी नौकरानी के लिए भी मूल्यवान साबित हुआ, क्योंकि इससे धीरे-धीरे उसकी शिकायतें शांत हो गईं, जो बालबेक से लौटने के बाद से लगातार जारी थीं। दरअसल, जैसे ही हम ट्राम में चढ़ रहे थे, उसे याद आया कि वह होटल की हाउसकीपर को अलविदा कहना भूल गई थी। वह मूंछों वाली महिला कमरों के फर्श की देखभाल करती थी, फ्रांस्वा को मुश्किल से जानती थी, लेकिन उसके साथ अपेक्षाकृत अच्छा व्यवहार किया था। फ्रांस्वा ने ट्राम से उतरकर होटल वापस जाने, हाउसकीपर को ठीक से अलविदा कहने और अगले दिन तक पेरिस न जाने पर अड़ियल रवैया अपनाया। सामान्य ज्ञान और बालबेक के प्रति मेरे अचानक पैदा हुए डर ने मुझे उसकी यह रियायत देने से रोक दिया, लेकिन मेरे इनकार ने उसे एक ऐसे बुखार जैसी बीमारी से संक्रमित कर दिया, जो हवा

के बदलाव से ठीक नहीं हुई और पेरिस में भी बनी रही। फ्रांस्वा के उसूलों के अनुसार, जैसा कि सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स की नक्काशी में दर्शाया गया है, किसी शत्रु की मृत्यु की कामना करना, यहाँ तक कि उसे मारना भी मना नहीं है, लेकिन जो आपसे अपेक्षित है उसे न करना, शिष्टाचार का पालन न करना, और होटल छोड़ते समय हाउसकीपर को अलविदा न कहना, एक अशिष्ट व्यक्ति की तरह, एक भयानक पाप है। पूरी यात्रा के दौरान, उस महिला से विदा न लेने की याद बार-बार फ्रांस्वा के गालों को लाल कर रही थी, जो काफी चिंताजनक था। और अगर उसने पेरिस पहुँचने तक एक निवाला भी नहीं खाया, तो शायद इसलिए कि इस याद ने उसके पेट पर एक 'सामान्य बोझ' डाल दिया था (समाज के हर वर्ग की अपनी एक विकृति होती है), न कि हमें दंडित करने के इरादे से।

माँ के मुझे रोज़ाना पत्र लिखने के पीछे कई कारण थे, और हर पत्र में श्रीमती डी सेविग्ने का कोई न कोई उद्धरण ज़रूर होता था। इनमें से एक कारण मेरी दादी की याद भी थी। माँ मुझे लिखती थीं: "श्रीमती सैज़ेरत हमें वो छोटी-छोटी दावतें देती थीं, जिनका राज़ उन्हें पता है। जैसा कि तुम्हारी बेचारी दादी श्रीमती डी सेविग्ने के शब्दों में कहतीं, ये दावतें हमें एकांत से वंचित कर देती थीं, साथ ही साथ कोई साथी भी नहीं देती थीं।" अपने एक पुराने पत्र में मैंने माँ को बड़ी नासमझी से लिखा था: "इन उद्धरणों से तुम्हारी माँ तुम्हें तुरंत पहचान लेंगी।" इस पर तीन दिन बाद मुझे डांट पड़ी: "मेरे प्यारे बेटे, अगर तुम सिर्फ़ मेरी माँ के बारे में मुझसे बात कर रहे थे, तो श्रीमती डी सेविग्ने का ज़िक्र करना बिलकुल अनुचित था। वो तुम्हें वही जवाब देतीं जो उन्होंने श्रीमती डी ग्रिगन को दिया था: 'तो क्या वो तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं थीं? मुझे लगा था कि तुम उनसे रिश्तेदार हो?'"

इस समय तक, मैं अपनी मालकिन के कमरे से बाहर जाने या वापस आने की आवाज़ सुन सकता था। मैंने घंटी बजाई, क्योंकि अब एंड्री के आने का समय हो गया था, साथ में ड्राइवर भी था, जो मोरेल का दोस्त था और जिसे वर्दुरिन परिवार ने मुझे अल्बर्टीन को बाहर ले जाने के लिए दिया था। मैंने अल्बर्टीन से हमारी शादी की दूर की संभावना के बारे में बात की थी; लेकिन मैंने उसे कभी कोई औपचारिक वादा नहीं किया था; उसने खुद, समझदारी से, जब मैंने उससे कहा: "मैं कह नहीं सकता, लेकिन शायद यह संभव हो सकता है," तो उसने एक उदास आह के साथ अपना सिर हिलाया, मानो कह रही हो: "ओह, नहीं, कभी नहीं," दूसरे

शब्दों में: "मैं बहुत गरीब हूँ।" और इसलिए, जब मैं भविष्य की योजनाओं के बारे में बात करते हुए कहता रहा: "यह बिल्कुल अनिश्चित है," उस समय मैं उसे खुश करने, उसके जीवन को सुखद बनाने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहा था, शायद अनजाने में इस इरादे से कि वह मुझसे शादी करना चाहे। वह खुद मेरी उदारता पर हँसी। "एंड्री की माँ बहुत खुश होंगी अगर वो मुझे अपनी तरह एक अमीर महिला बनते हुए देखें, जिसे वो 'घोड़े, गाड़ियाँ और तस्वीरें' रखने वाली महिला कहती हैं। क्या? क्या मैंने तुम्हें कभी नहीं बताया कि वो ऐसा कहती हैं। ओह, वो तो बिल्कुल अनोखी हैं! मुझे हैरानी इस बात की है कि वो तस्वीरों को घोड़ों और गाड़ियों जितना ही महत्वपूर्ण समझती हैं।" आगे चलकर हम देखेंगे कि, बोलने के उन मूर्खतापूर्ण तरीकों के बावजूद जिन्हें उसने अभी तक नहीं छोड़ा था, अल्बर्टीन का बौद्धिक विकास आश्चर्यजनक रूप से हुआ था, जिसने मुझे अप्रभावित कर दिया। एक महिला मित्र की बौद्धिक श्रेष्ठता में मेरी रुचि हमेशा से इतनी कम रही है कि अगर मैंने कभी अपनी किसी दोस्त की उसकी बौद्धिक श्रेष्ठता की तारीफ की है, तो वह केवल शिष्टाचारवश ही थी। अकेले में, सेलेस्टे की विलक्षण प्रतिभा शायद मुझे आकर्षित कर सकती है। मैं खुद पर काबू न रख पा रही थी, फिर भी कुछ पलों के लिए मुस्कुराती रही, जैसे कि जब मुझे पता चला कि फ्रांस्वा मेरे कमरे में नहीं है, तो उसने मुझसे कहा: "स्वर्गिक देवी पलंग पर लेटी हुई!" "लेकिन क्यों, सेलेस्टे," मैं कहती, "देवी क्यों?" "ओह, अगर तुम सोचती हो कि तुम्हारा इस नश्वर धरती पर तीर्थयात्रा करने वाले मनुष्यों से कोई संबंध है, तो तुम बहुत बड़ी गलती कर रही हो!" "लेकिन बिस्तर पर 'लेटने' का क्या मतलब है, क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि मैं बिस्तर पर लेटी हूँ?" "तुम कभी झूठ नहीं बोलती। भला किसी को ऐसे लेटे हुए किसने देखा है? तुम अभी-अभी यहाँ उतरी हो। अपने सफेद पायजामे और गर्दन घुमाने के अंदाज़ से, तुम बिल्कुल कबूतर जैसी दिखती हो।"

अल्बर्टीन, मामूली से मामूली मामलों पर भी चर्चा करते समय, उस छोटी बच्ची से बिल्कुल अलग तरह से व्यवहार करती थी जो कुछ साल पहले बालबेक में थी। एक राजनीतिक घटना के बारे में, जिससे वह असहमत थी, उसने यहाँ तक कह दिया: "मैं इसे अशुभ मानती हूँ।" और मुझे यकीन नहीं है कि इसी समय के आसपास उसने यह कहना सीखा कि जब उसे कोई

किताब खराब शैली में लिखी हुई लगती है, तो वह कहती है: "यह दिलचस्प तो है, लेकिन सच में, ऐसा लगता है जैसे इसे किसी सूअर ने लिखा हो।"
मेरे कमरे में तब तक प्रवेश न करने का नियम उसे बहुत मज़ेदार लगता था जब तक मैं घंटी न बजा दूं। चूंकि उसने हमारे परिवार की उद्धरण देने की आदत अपना ली थी, और इसका पालन करते हुए वह उन नाटकों का हवाला देती थी जिनमें उसने अपने मठ में अभिनय किया था और जिनकी मैंने प्रशंसा की थी, इसलिए वह हमेशा मेरी तुलना असुएरस से करती थी।
और जो कोई दुस्साहस करता है, उसे मृत्यु का दंड मिलता है।
अनजाने में उसकी उपस्थिति में कदम रखना...
कोई भी इससे मुक्त नहीं है; और न ही कोई ऐसा है जिसे
या फिर पद या लिंग ऐसी विपत्ति से बचा सकते हैं;
मैं खुद भी...
बाकी सभी की तरह, मैं भी इस कानून से बंधा हुआ हूँ;
और, उनसे बात करने के लिए, मुझे पहले पाया जाना चाहिए
या तो वह मुझे अपने पास बुलाएगा या फिर वह मुझे अपने पास बुलाएगा।
शारीरिक रूप से भी वह बदल गई थी। उसकी नीली, बादाम जैसी आँखें, जो पहले से लंबी हो गई थीं, अपना आकार नहीं रख पाई थीं; उनका रंग तो वही था, लेकिन मानो वे तरल अवस्था में चली गई हों। इतना कि जब वह उन्हें बंद करती थी, तो ऐसा लगता था जैसे समुद्र का नज़ारा छिपाने के लिए पर्दे खींच दिए गए हों। निस्संदेह, यही उसकी वह विशेषता थी जो मुझे हमारे बिछड़ने के बाद हर रात सबसे ज़्यादा याद रहती थी। क्योंकि, इसके विपरीत, हर सुबह उसके बालों की लहराती लटें मुझे उसी तरह आश्चर्यचकित करती थीं, मानो कोई नई चीज़ हो जो मैंने पहले कभी नहीं देखी हो। और फिर भी, एक लड़की की मुस्कुराती आँखों के ऊपर, काले बैंगनी रंग के उन गुच्छेदार बालों के मुकुट से ज़्यादा सुंदर क्या हो सकता है? मुस्कान ज़्यादा दोस्ती का भाव जगाती है; लेकिन खिलते बालों की छोटी-छोटी चमकती नोकें, जो मांस से ज़्यादा मिलती-जुलती हैं, मानो मांस की छोटी-छोटी लहरों में बदल गई हों, इच्छा को और भी ज़्यादा उत्तेजित करती हैं।

जैसे ही वह मेरे कमरे में आती, वह मेरे बिस्तर पर कूद पड़ती और कभी-कभी मेरी बुद्धि के प्रकार पर लंबी-चौड़ी बातें करती, और पूरी ईमानदारी से कसम खाती कि वह मुझे छोड़ने के बजाय मरना पसंद करेगी: यह उन सुबहों की बात है जब मैं उसे बुलाने से पहले दाढ़ी बना लेता था। वह उन महिलाओं में से एक थी जो अपनी भावनाओं के कारण को कभी नहीं समझ पातीं। चिकने गालों से मिलने वाले सुख को वे उस पुरुष के नैतिक गुणों से जोड़कर समझाती हैं जो उन्हें भविष्य की खुशी की संभावना प्रदान करता प्रतीत होता है, हालांकि, दाढ़ी न बनाने की अवधि बढ़ने के साथ-साथ यह संभावना कम होती जाती है और इसकी आवश्यकता भी कम होती जाती है।

मैंने उससे पूछा कि वह कहाँ जाने की सोच रही है।

"मुझे लगता है कि एंड्री मुझे बुटे-चामोंट ले जाना चाहती है; मैं वहां कभी नहीं गया हूं।"

बेशक, इतने सारे शब्दों के बीच यह पता लगाना मेरे लिए असंभव था कि इनमें कोई झूठ छिपा है या नहीं। इसके अलावा, मैं एंड्री पर भरोसा कर सकती थी कि वह मुझे उन सभी जगहों के बारे में बताएगी जहाँ वह अल्बर्टीन के साथ गई थी।

बालबेक में, जब मुझे लगा कि मैं अल्बर्टीन से पूरी तरह ऊब चुका हूँ, तो मैंने एंड्री से झूठ बोलने का मन बना लिया था: "मेरी प्यारी एंड्री, काश मैं तुमसे पहले मिल पाता! मैं तुमसे ही प्यार करता। लेकिन अब मेरा दिल किसी और को दे चुका है। फिर भी, हम एक-दूसरे से खूब मिल सकते हैं, क्योंकि किसी और के लिए मेरा प्यार मुझे बहुत परेशान कर रहा है, और तुम मुझे सांत्वना देने में मदद करोगी।" और देखो, तीन हफ़्तों के भीतर ये झूठे शब्द सच हो गए। शायद, पेरिस में एंड्री ने मान लिया था कि यह झूठ है और मैं उससे प्यार करता हूँ, जैसा कि उसने बालबेक में भी माना होगा। क्योंकि सच्चाई हम सभी के लिए इतनी बदलती रहती है कि दूसरों को उसमें खुद को पहचानना मुश्किल हो जाता है। और जैसा कि मैं जानता था कि वह मुझे सब कुछ बता देगी कि उसने और अल्बर्टीन ने क्या किया है, मैंने उससे पूछा था, और वह लगभग हर दिन अल्बर्टीन को लेने आने के लिए तैयार हो गई थी। इस तरह मैं बिना किसी चिंता के घर पर रह सकता था।

साथ ही, छोटे समूह की लड़कियों में से एक होने के नाते एंड्री की विशेष स्थिति ने मुझे यह विश्वास दिलाया कि वह अल्बर्टीन से मेरी हर ज़रूरत पूरी कर देगी। सचमुच, मैं अब पूरी ईमानदारी से उससे कह सकती थी कि वह मेरी चिंता दूर करने में सक्षम होगी।
साथ ही, मेरी प्रेमिका के लिए मार्गदर्शक और साथी के रूप में एंड्री (जो संयोगवश पेरिस में ही रह रही थी, क्योंकि उसने बालबेक लौटने की अपनी योजना छोड़ दी थी) को चुनने का मेरा निर्णय अल्बर्टीन द्वारा मुझे बताई गई बातों से प्रेरित था, जिसमें उसने बताया था कि बालबेक में उसकी सहेली को मुझसे कितना स्नेह था, जबकि उस समय मुझे लग रहा था कि मैं उसे ऊब रहा हूँ; वास्तव में, अगर मुझे उस समय यह पता होता, तो शायद मैं एंड्री से ही प्यार कर बैठता।
"क्या, तुम्हें कभी पता ही नहीं चला," अल्बर्टीन ने कहा, "लेकिन हम हमेशा इस बारे में मज़ाक करते थे। क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तुमने कभी ध्यान नहीं दिया कि वह तुम्हारे बोलने और बहस करने के सारे तरीके कैसे कॉपी करती थी? जब वह तुम्हारे साथ होती थी, तो यह बहुत साफ़ दिखता था। उसे हमें यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि उसने तुम्हें देखा है या नहीं। जैसे ही वह हमारे साथ आती, हम तुरंत समझ जाते थे। हम एक-दूसरे को देखकर हंसते थे। वह एक कोयला ढोने वाले की तरह थी जो दिखावा करता है कि वह कोयला ढोने वाला नहीं है। वह पूरी तरह से काला है। एक चक्की वाले को यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि वह चक्की वाला है, उसके कपड़ों पर आटा लगा हुआ दिखता है; और उसके कंधे पर ढोए गए बोरों के निशान भी। एंड्री भी बिल्कुल वैसी ही थी, वह तुम्हारी तरह अपनी भौंहें सिकोड़ती थी, अपनी लंबी गर्दन फैलाती थी, और न जाने क्या-क्या करती थी। जब मैं तुम्हारे कमरे में रखी कोई किताब उठाती हूँ, चाहे मैं उसे बाहर ही क्यों न पढ़ रही हूँ, मैं तुरंत समझ जाती हूँ कि वह तुम्हारी है क्योंकि उसमें अभी भी तुम्हारी घिनौनी धुएँ की बदबू आती है। बस इतना ही मामूली सी बात है, फिर भी यह काफी अच्छी मामूली बात है, क्या आप नहीं जानते? जब भी कोई आपके बारे में अच्छी बातें करता था, या आपके बारे में बहुत अच्छी राय रखता था, तो एंड्री खुशी से झूम उठती थी।

इन सब बातों के बावजूद, अगर मेरी पीठ पीछे कोई गुप्त योजना बनाई गई हो, तो मैंने उसे सलाह दी कि वह उस दिन ब्यूटेस-चामोंट जाने का विचार छोड़ दे और इसके बजाय सेंट-क्लाउड या कहीं और चली जाए।

यह बात मुझे भली-भांति पता थी कि मैं अल्बर्टीन से ज़रा भी प्रेम नहीं करता था। प्रेम शायद उन भावनाओं के भंवरों का उद्दीपन मात्र है जो किसी भावना के बाद आत्मा को झकझोर देते हैं। जब अल्बर्टीन ने बालबेक में मैडम विंटेइल के बारे में मुझसे बात की थी, तब सचमुच ऐसे ही कुछ भंवरों ने मेरी आत्मा को गहराई तक झकझोर दिया था, लेकिन अब वे शांत हो चुके थे। मैं अब अल्बर्टीन से प्रेम नहीं करता था, क्योंकि अब मुझे वह पीड़ा महसूस नहीं हो रही थी, जो अब ठीक हो चुकी थी, जो मैंने बालबेक की ट्राम में महसूस की थी, जब मुझे पता चला कि अल्बर्टीन ने अपना बचपन कैसे बिताया था, शायद मोंटजोवेन की यात्राओं के साथ। यह सब, जिसे मैंने बहुत लंबे समय से स्वाभाविक मान लिया था, ठीक हो चुका था। लेकिन, कभी-कभी अल्बर्टीन द्वारा इस्तेमाल किए गए कुछ शब्दों से मुझे यह अनुमान लगाने पर मजबूर होना पड़ता था—क्यों, मैं कह नहीं सकता—कि अपने छोटे से जीवन में उसने स्नेह की घोषणाएँ अवश्य सुनी होंगी, और उन्हें खुशी से, यानी कामुकता के साथ स्वीकार किया होगा। इसलिए, वह किसी भी संदर्भ में कहती: "क्या यह सच है? क्या यह सचमुच सच है?" निश्चित रूप से, अगर उसने ओडेट की तरह कहा होता: "क्या यह सचमुच सच है, वह सरासर झूठ?" तो मैं परेशान नहीं होता, क्योंकि इस वाक्य की बेतुकीपन नारी बुद्धि की एक मूर्खतापूर्ण मूर्खता के रूप में अपने आप स्पष्ट हो जाती। लेकिन उसका प्रश्नवाचक स्वर: "क्या यह सच है?" एक ओर तो एक ऐसे प्राणी की अजीब छाप छोड़ता है जो स्वयं चीजों का आकलन करने में असमर्थ है, और आपसे गवाही मांगता है, मानो उसके पास आपके समान क्षमताएं न हों (यदि आप उससे कहते: "अरे, हम पूरे एक घंटे से बाहर हैं," या "बारिश हो रही है," तो वह पूछती: "क्या यह सच है?")। दुर्भाग्य से, दूसरी ओर, बाहरी घटनाओं का स्वयं आकलन करने में उसकी यह अक्षमता उसके "क्या यह सच है? क्या यह सचमुच सच है?" का वास्तविक कारण नहीं हो सकती। ऐसा लगता था मानो ये शब्द, उसकी किशोरावस्था की शुरुआत से ही, इन सवालों के जवाब रहे हों: "जानती हो, मैंने तुम्हारे जैसी खूबसूरत लड़की कभी नहीं देखी।" "जानती हो, मैं तुमसे बेइंतहा प्यार करता हूँ, मैं बहुत उत्तेजित हूँ।"—इन बातों का जवाब,

नज़ाकत भरी विनम्रता के साथ, बार-बार इन सवालों से दिया जाता था: "क्या यह सच है? क्या यह सचमुच सच है?" मेरे साथ होने पर अल्बर्टीन के लिए ये जवाब अब किसी काम के नहीं थे, सिवाय इसके कि वह किसी ऐसे सवाल का जवाब सवाल से दे, जैसे: "तुम एक घंटे से ज़्यादा सो रहे हो।" "क्या यह सच है?"

मुझे अल्बर्टीन से ज़रा भी प्यार नहीं था, न ही मैंने उसके साथ बिताए पलों को अपनी खुशियों की सूची में शामिल किया था, फिर भी मैं इस बात से परेशान था कि वह अपना समय कैसे बिताती है; क्या मैं वास्तव में बालबेक से इसलिए नहीं भागा था ताकि वह उस या उस व्यक्ति से न मिल सके जिसके साथ मुझे उसके दुर्व्यवहार का इतना डर था, महज़ मज़ाक के तौर पर (शायद मेरे ऊपर ही मज़ाक), कि मैंने चतुराई से अपनी विदाई से उसके सभी खतरनाक बंधनों को एक साथ तोड़ने की योजना बनाई थी? और अल्बर्टीन इतनी शांत थी, उसमें चीजों को भूलने और दबाव के आगे झुकने की इतनी क्षमता थी कि ये रिश्ते सचमुच टूट गए थे और मैं खुद अपने उस डर से मुक्त हो गया था। लेकिन वह डर उतने ही रूप धारण कर सकता है जितना कि वह अनिश्चित बुराई जो उसका कारण है। जब तक मेरी ईर्ष्या नए लोगों में पुनर्जन्म नहीं लेती, तब तक मैंने अपनी पीड़ा के बीत जाने के बाद कुछ समय शांति का आनंद लिया था। लेकिन किसी पुरानी बीमारी के मामले में, ज़रा सा बहाना भी उसे फिर से ज़िंदा कर देता है, ठीक वैसे ही जैसे हमारी ईर्ष्या का कारण बनने वाले व्यक्ति के दुर्गुण के मामले में, ज़रा सा मौका मिलते ही वह (संयम के कुछ समय बाद) अलग-अलग लोगों के साथ उसे फिर से दोहराने लगती है। मैं अल्बर्टीन को उसके साथियों से अलग करने में कामयाब हो गया था, और ऐसा करके मैंने अपने भ्रमों को दूर कर दिया था; भले ही उसे लोगों को भुला देना, उसके लगाव को कम करना संभव था, फिर भी उसकी कामुक प्रवृत्ति पुरानी थी और शायद बस खुद को प्रकट करने के अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी। अब पेरिस ने बालबेक की तरह ही कई अवसर प्रदान किए।

किसी भी कस्बे में उसे तलाश करने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि बुराई केवल अल्बर्टीन में ही नहीं, बल्कि उन सभी में मौजूद थी जिन्हें आनंद का कोई भी अवसर अच्छा लगता था। एक की नज़र, जिसे दूसरा तुरंत समझ लेता है, उन दो भूखी आत्माओं को संपर्क में ले आती है। और एक चतुर महिला के लिए यह आसान होता है कि वह अनदेखा करने का नाटक करे, फिर

पाँच मिनट बाद उस व्यक्ति से मिले जिसने उसकी नज़र पढ़ ली है और किसी गली में उसका इंतज़ार कर रहा है, और कुछ ही शब्दों में मिलने का समय तय कर ले। भला किसे पता चलेगा? और अल्बर्टीन के लिए मुझे यह बताना कितना आसान था, ताकि वह इन प्रथाओं को जारी रख सके, कि वह पेरिस के बाहरी इलाके में उस जगह को फिर से देखना चाहती थी जो उसे पसंद थी। और इसलिए, उसका सामान्य से अधिक देर से लौटना, उसकी यात्रा में अनिश्चित समय लगना ही काफी था, हालाँकि बिना किसी इंद्रियजन्य कारण के शायद इसका स्पष्टीकरण देना पूरी तरह से आसान था, मेरी बीमारी के फिर से उभरने के लिए, इस बार उन मानसिक चित्रों से जुड़ा हुआ जो बालबेक के नहीं थे, और जिन्हें मैं, उनके पूर्ववर्तियों की तरह, नष्ट करने के लिए काम में लगा दूंगा, मानो एक क्षणिक कारण का विनाश एक जन्मजात बीमारी का अंत कर सकता है। मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि विनाश के इन कृत्यों में, जिनमें अल्बर्टीन मेरी सहभागी थी, उसकी परिवर्तनशीलता, उसकी भूलने की क्षमता, यहाँ तक कि अपने हालिया प्रेम के पात्र से लगभग घृणा करने की क्षमता का लाभ उठाते हुए, मैं कभी-कभी उन अज्ञात व्यक्तियों में से किसी एक को गहरा दुःख पहुँचा रहा था जिनके साथ उसने आनंद लिया था, और यह दुःख पहुँचाना व्यर्थ था, क्योंकि उन्हें त्याग दिया जाएगा, उनकी जगह नए लोग आ जाएँगे, और उसके हल्के-फुल्के व्यभिचारों के सभी उपेक्षितों से भरे रास्ते के समानांतर, मेरे लिए एक और निर्दयी रास्ता खुल जाएगा, जो कभी-कभार थोड़े समय के लिए ही विराम देगा; इसलिए मेरा दुख या तो अल्बर्टीन के जीवन के साथ समाप्त होगा या मेरे अपने जीवन के साथ। पेरिस लौटने के बाद शुरुआती दिनों में भी, एंड्री और ड्राइवर द्वारा मेरी प्रेमिका के साथ उनके अभियानों के बारे में दी गई जानकारी से संतुष्ट न होकर, मुझे पेरिस का इलाका बालबेक के इलाके जितना ही कष्टदायक लगा था, और मैं अल्बर्टीन के साथ कुछ दिनों के लिए गाँव चला गया था। लेकिन हर जगह मुझे इस बात का उतना ही डर था कि वह क्या कर रही होगी; कुछ गलत होने की संभावना उतनी ही प्रबल थी, सतर्कता और भी कठिन हो गई, जिसके परिणामस्वरूप मैं उसके साथ पेरिस लौट आया। बालबेक छोड़ते समय मैंने सोचा था कि मैं गोमोराह को पीछे छोड़ रहा हूँ, अल्बर्टीन को वहाँ से निकाल रहा हूँ; लेकिन अफसोस, वास्तविकता में गोमोराह दुनिया के कोने-कोने में बिखर गई थी। और कुछ ईर्ष्या के कारण, और कुछ ऐसे सुखों से अनभिज्ञता के कारण (जो वास्तव में एक दुर्लभ

मामला है), मैंने अनजाने में ही लुका-छिपी का यह खेल रच दिया था जिसमें अल्बर्टीन हमेशा मुझसे बच निकलती थी।

मैंने उससे सीधे-सीधे पूछा: "अरे हाँ, अल्बर्टीन, क्या मैं सपना देख रही हूँ, या तुमने मुझे बताया था कि तुम गिल्बर्ट स्वान को जानती हो?" "हाँ; मतलब, वो हमारी कक्षाओं में मुझसे बात करती थीं, क्योंकि उनके पास फ्रांसीसी इतिहास की किताबों का एक सेट था, दरअसल वो बहुत अच्छी थीं, और उन्होंने मुझे उन्हें उधार दिया था, और अगली बार जब मैं उनसे मिली तो मैंने उन्हें वापस कर दिया।" "क्या वो उस तरह की औरत हैं जिनसे मुझे आपत्ति है?" "अरे नहीं, बिलकुल विपरीत।" लेकिन, इस तरह की आपराधिक जाँच में उलझने के बजाय, मैं अक्सर अल्बर्टीन की यात्रा की कल्पना करने में वह ऊर्जा लगाती थी जो मैं उसे साझा करने में नहीं लगाती थी, और अपनी प्रेमिका से उसी जोश के साथ बात करती थी जो हमारे अधूरे सपनों में आज भी बरकरार है। मैंने सैंट-चैपल की किसी खिड़की को फिर से देखने की इतनी तीव्र इच्छा व्यक्त की, और इस बात का इतना गहरा अफसोस जताया कि मैं उसके साथ अकेले वहां नहीं जा पा रहा था, कि उसने मुझे प्यार से कहा: "क्यों, मेरे प्यारे बेटे, जब तुम इतने उत्सुक दिख रहे हो, तो थोड़ी कोशिश करो, हमारे साथ आओ। हम जब चाहो तब शुरू कर सकते हैं, जब भी तुम तैयार हो जाओ। और अगर तुम मेरे साथ अकेले रहना चाहते हो, तो मुझे बस एंड्री को घर भेजना है, वह किसी और समय आ जाएगी।" लेकिन बाहर जाने के लिए उसकी इन विनतियों ने उस शांति को और बढ़ा दिया जिससे मैं घर के अंदर रहने की अपनी इच्छा के आगे झुक गया।

मुझे यह एहसास नहीं हुआ कि अल्बर्टीन की देखभाल के लिए एंड्री या ड्राइवर को अपनी बेचैनी शांत करने का काम सौंपकर मैंने जो उदासीनता दिखाई, वह मुझमें लकवा मार रही थी, जिससे मन की सारी कल्पनाशीलता और इच्छाशक्ति की सारी प्रेरणाएँ निष्क्रिय हो रही थीं, जो हमें यह अनुमान लगाने में सक्षम बनाती हैं कि कोई दूसरा क्या करने वाला है; वास्तव में, संभावनाओं की दुनिया मेरे लिए हमेशा वास्तविक घटनाओं की दुनिया से कहीं अधिक खुली रही है। इससे हमें मानवीय हृदय को समझने में मदद मिलती है, लेकिन हम अक्सर व्यक्तियों से प्रभावित हो जाते हैं। मेरी ईर्ष्या मानसिक छवियों से उत्पन्न हुई थी, एक प्रकार की आत्म-यातना जो संभावनाओं पर आधारित नहीं थी। अब मनुष्यों और राष्ट्रों के जीवन में कभी-

कभी ऐसा क्षण आ सकता है (और एक दिन मेरे जीवन में भी आना था) जब हमें अपने भीतर एक पुलिस अधीक्षक, एक दूरदर्शी राजनयिक, एक कुशल जासूस की आवश्यकता हो, जो सभी दिशाओं में फैली छिपी संभावनाओं पर विचार करने के बजाय, सटीक तर्क करे और स्वयं से कहे: "यदि जर्मनी यह घोषणा करता है, तो इसका अर्थ है कि वह कुछ और करने का इरादा रखता है, न केवल अमूर्त रूप से 'कुछ', बल्कि ठीक यही या वह, जिसे शायद उसने पहले ही शुरू कर दिया हो।" "यदि फलां व्यक्ति भाग गया है, तो वह दिशा a या b या d में नहीं, बल्कि बिंदु c की ओर गया है, और वह स्थान जहाँ हमें उसकी खोज करनी चाहिए वह c है।" अफसोस, यह क्षमता जो मुझमें अत्यधिक विकसित नहीं थी, मैंने उसे शिथिल होने दिया, उसकी शक्ति खो दी, उसे लुप्त होने दिया, क्योंकि मुझे दूसरों के मेरे लिए निगरानी करने पर तुरंत शांत होने की आदत पड़ गई थी।

घर से बाहर निकलने में मेरी अनिच्छा का कारण मैं अल्बर्टीन को समझाना नहीं चाहता था। मैंने उसे बताया कि डॉक्टर ने मुझे बिस्तर पर रहने का आदेश दिया है। यह सच नहीं था। और अगर यह सच भी होता, तो उनका नुस्खा मुझे मेरी प्रेमिका के साथ जाने से नहीं रोक पाता। मैंने उससे विनती की कि वह मुझे उसके और एंड्री के साथ बाहर जाने से माफ़ कर दे। मैं अपने कारणों में से केवल एक का उल्लेख करूँगा, जो विवेक से प्रेरित था। जब भी मैं अल्बर्टीन के साथ बाहर जाता, अगर वह एक पल के लिए भी मुझसे दूर हो जाती, तो मैं चिंतित हो जाता, यह सोचने लगता कि उसने किसी से बात की है, या बस किसी पर नज़र डाली है। अगर वह अच्छे मूड में नहीं होती, तो मुझे लगता कि मेरी वजह से उसकी कोई मुलाकात छूट गई है या टल गई है। वास्तविकता एक अज्ञात तत्व का प्रलोभन मात्र है, जिसकी खोज में हम कभी बहुत आगे नहीं बढ़ सकते। बेहतर है कि हम न जानें, जितना हो सके कम सोचें, अपनी ईर्ष्या को छोटी से छोटी ठोस बात से भी न बढ़ाएँ। दुर्भाग्य से, बाहरी जीवन को हटा देने पर भी, आंतरिक जीवन से भी घटनाएँ उत्पन्न होती हैं; हालाँकि मैं अल्बर्टीन के अभियानों से दूर रहा, फिर भी मेरे एकांत चिंतन के अनियमित प्रवाह ने मुझे कभी-कभी सत्य के उन छोटे-छोटे अंशों से अवगत कराया जो चुंबक की तरह अज्ञात के आभास को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, और उस आभास से ही वह आभास पीड़ादायक हो जाता है। भले ही हम एक बंद कमरे में रहते हों, विचारों और यादों का समूह हम पर अपना प्रभाव डालता रहता है। लेकिन ये

आंतरिक आघात तुरंत नहीं होते थे; अल्बर्टीन के अपने अभियान पर निकलते ही, एकांत के प्रेरक गुणों ने मुझे कुछ क्षणों के लिए ही सही, पुनर्जीवित कर दिया।

मैंने नए दिन के सुखों का भरपूर आनंद लिया; उन्हें चखने की मेरी इच्छा—उनका सहज और स्वाभाविक झुकाव—उन्हें मेरी पहुँच में लाने के लिए काफ़ी नहीं होता, अगर मौसम की विशेष स्थिति ने न केवल मुझे अतीत की उनकी छवियों की याद न दिलाई होती, बल्कि वर्तमान में उनकी वास्तविकता को भी पुष्ट न किया होता, जो उन सभी लोगों के लिए तुरंत सुलभ थी जिन्हें किसी आकस्मिक और परिणामस्वरूप नगण्य परिस्थिति ने घर पर रहने के लिए विवश न किया हो। कुछ सुहावने दिनों में मौसम इतना ठंडा होता था कि ऐसा लगता था मानो घर की बाहरी दीवारों में कोई दरार आ गई हो, और जब भी कोई ट्रामकार गुजरती, उसकी घंटी की आवाज़ ऐसी गूंजती जैसे कोई चांदी का चाकू कांच की दीवार पर टकरा रहा हो। लेकिन सबसे ज़्यादा मैंने अपने भीतर ही, मदहोशी से, छिपे हुए वायलिन की एक नई ध्वनि सुनी। इसके तार बाहर की दुनिया में तापमान और प्रकाश के मात्र परिवर्तनों से कसते या ढीले होते हैं। हमारे भीतर, एक ऐसा यंत्र जिसे आदत की एकरसता ने खामोश कर दिया है, इन्हीं भटकावों, इन्हीं विविधताओं से गीत का जन्म होता है, जो समस्त संगीत का स्रोत है: कुछ दिनों मौसम का परिवर्तन हमें एक स्वर से दूसरे स्वर पर तुरंत ले जाता है। हम उस भूली हुई धुन को पुनः प्राप्त कर लेते हैं जिसकी गणितीय अनिवार्यता का हम अनुमान लगा सकते थे, और जिसे हम पहले कुछ क्षणों के लिए बिना पहचाने ही गाते हैं। ये परिवर्तन (जो यद्यपि बाहरी थे, फिर भी आंतरिक थे) मेरे लिए बाहरी दुनिया को नया रूप देते हैं। लंबे समय से बंद पड़े संचार के द्वार मेरे मस्तिष्क में खुल जाते हैं। कुछ शहरों का जीवन, कुछ अभियानों का उल्लास मेरी चेतना में अपना स्थान पुनः प्राप्त कर लेता है। सब कुछ कंपन करते तार के साथ सामंजस्य में धड़कता है, मैं अपने अतीत के नीरस जीवन और आदत के रबर से मिट चुके अपने आने वाले पूरे जीवन को, इन विशेष, अद्वितीय क्षणों में से एक के लिए बलिदान कर देता।

अगर मैं अल्बर्टीन के साथ उसकी लंबी ड्राइव पर न गया होता, तो मेरा मन और भी भटक जाता, और क्योंकि मैंने उस खास सुबह को अपनी इंद्रियों से महसूस करने से इनकार कर दिया था, इसलिए मैंने कल्पना में वैसी ही सभी सुबहों का आनंद लिया, चाहे वो बीत चुकी हों या संभव हों, या अधिक सटीक रूप से कहें तो एक खास तरह की सुबह का, जिसकी तरह

की सभी सुबहें मेरे लिए एक क्षणिक आभास मात्र थीं, जिसे मैंने तुरंत पहचान लिया; क्योंकि ठंडी हवा ने किताब को अपने आप सही पन्ने पर खोल दिया, और मैंने अपनी आँखों के सामने स्पष्ट रूप से देखा, ताकि मैं अपने बिस्तर से ही उसका अनुसरण कर सकूँ, उस दिन का सुसमाचार। इस आदर्श सुबह ने मेरे मन को एक स्थायी वास्तविकता से भर दिया, जो वैसी ही सभी सुबहों के समान थी, और मुझे एक ऐसी प्रसन्नता से भर दिया जिसे मेरी शारीरिक अस्वस्थता कम नहीं कर सकी: क्योंकि, हमारी खुशहाली का एहसास हमारे अच्छे स्वास्थ्य से उतना नहीं होता जितना हमारी शक्ति की अतिरिक्त अनुपयोगी उपलब्धता से, इसलिए हम इसे अपनी शक्ति बढ़ाने के साथ-साथ अपनी गतिविधि को कम करके भी प्राप्त कर सकते हैं। जिस गतिविधि से मैं लबालब भरा हुआ था और जिसे मैं बिस्तर पर लेटे हुए लगातार सक्रिय रखता था, उसके कारण मेरा दिल तेजी से धड़कता था और मैं करवटें बदलता रहता था, ठीक वैसे ही जैसे कोई मशीन अंतरिक्ष में हिलने-डुलने से रोके जाने पर अपनी धुरी पर घूमती रहती है।

फ्रांस्वा आग जलाने आई और उसे तेज़ करने के लिए उस पर मुट्ठी भर टहनियाँ डाल दीं। एक साल पहले भूली हुई उनकी सुगंध, चिमनी के चारों ओर एक जादुई घेरा बना रही थी। उस घेरे में, मैं खुद को कभी कॉम्ब्रे में, कभी डोंसिएरेस में, एक किताब पढ़ते हुए पाता था। पेरिस में अपने शयनकक्ष में रहते हुए भी मुझे उतनी ही खुशी होती थी, मानो मैं मेसेग्लिस मार्ग पर टहलने जा रहा हूँ या सेंट-लूप और उसके दोस्तों के साथ प्रशिक्षण मैदान में शामिल होने जा रहा हूँ। अक्सर ऐसा होता है कि अपनी यादों में संजोई गई स्मृतियों को पलटने में जो आनंद आता है, वह उन लोगों में सबसे तीव्र होता है जिन्हें शारीरिक अस्वस्थता और ठीक होने की दैनिक आशा एक ओर तो प्रकृति में उन स्मृतियों से मिलते-जुलते दृश्यों की खोज करने से रोकती है, और दूसरी ओर, इस विश्वास से कि वे जल्द ही ऐसा कर पाएंगे, वे उन स्मृतियों को लालसा और लालसा की अवस्था में निहारते रहते हैं, और उन्हें केवल स्मृतियों या चित्रों के रूप में नहीं देखते। लेकिन, भले ही वे मेरे लिए महज़ यादों से ज़्यादा कुछ न हों, भले ही उन्हें याद करते हुए मुझे महज़ तस्वीरें ही दिखाई दें, फिर भी एक जैसी अनुभूति से वे तुरंत मेरे भीतर उस लड़के, उस युवक को फिर से जीवंत कर देती थीं जिसने उन्हें पहली बार देखा था। बाहर मौसम में बदलाव या कमरे में किसी ताज़ी खुशबू का आना मात्र नहीं था, बल्कि मेरे

भीतर उम्र का अंतर आ गया था, मानो कोई दूसरा व्यक्ति आ गया हो। ठंडी हवा में झाड़ियों की टहनियों की खुशबू अतीत के एक टुकड़े जैसी थी, मानो किसी पुरानी सर्दी की बर्फ से टूटा हुआ एक अदृश्य टुकड़ा मेरे कमरे में आ गया हो, और अक्सर किसी खुशबू या रोशनी से रंगा हुआ हो, मानो अलग-अलग वर्षों का एक क्रम हो, जिनमें मैं डूबा हुआ, अभिभूत था, यहाँ तक कि उन्हें पहचानने से पहले ही, उन आशाओं की उमंग से जो बहुत पहले छोड़ दी गई थीं। सूरज की किरणें मेरे बिस्तर पर पड़ रही थीं और मेरे दुबले-पतले शरीर के पारदर्शी आवरण से होकर गुज़र रही थीं, मुझे गर्म कर रही थीं, मुझे जलते हुए क्रिस्टल की चादर की तरह गर्म कर रही थीं। इसके बाद, एक भूखा-प्यासा बीमार व्यक्ति, जिसने उन सभी व्यंजनों को खाना शुरू कर दिया था जो अभी भी उसके लिए वर्जित थे, मैंने खुद से पूछा कि क्या अल्बर्टीन से शादी करना मेरे जीवन को बर्बाद नहीं कर देगा, एक तो इसलिए कि मुझे किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति खुद को समर्पित करने का बोझ उठाना पड़ेगा, जो मेरे कंधों के लिए बहुत भारी है, और दूसरा इसलिए कि उसकी निरंतर उपस्थिति के कारण मुझे खुद से दूर रहना पड़ेगा और मुझे हमेशा के लिए एकांत के सुखों से वंचित कर देगा।

और केवल इन्हीं की बात नहीं है। यहां तक कि जब हम दिन से केवल इच्छाओं की ही कामना करते हैं, तब भी कुछ ऐसे लोग होते हैं—जो वस्तुओं से नहीं बल्कि लोगों से प्रेरित होते हैं—जिनका स्वभाव ही दूसरों से बिल्कुल अलग होता है। यदि मैं बिस्तर से उठकर खिड़की के पास जाता और एक पल के लिए पर्दा हटाता, तो यह केवल पियानोवादक की तरह अपने वाद्य यंत्र का ढक्कन एक पल के लिए हटाकर यह देखने के लिए नहीं होता कि बालकनी और सड़क पर सूर्य की रोशनी ठीक उसी स्वर में है या नहीं जैसी मेरी स्मृति में है, बल्कि यह किसी धोबिन को अपनी कपड़े की टोकरी लिए हुए, नीले एप्रन में रोटी बेचने वाली को, सफेद लिनेन के कोट और आस्तीन में दूधवाली को, जिस पर दूध के जग लटके हुए हैं, उसे लिए हुए, किसी अभिमानी सुनहरे बालों वाली युवती को, अपनी गवर्नेंस के साथ, एक मिश्रित छवि की झलक पाने के लिए भी होता, जिसमें रूपरेखा के अंतर, संख्यात्मक रूप से शायद नगण्य, उसे किसी भी अन्य से उतना ही अलग बनाते जितना संगीत की किसी धुन में दो स्वरों का अंतर होता है, एक ऐसी छवि जिसके दर्शन के बिना मेरा दिन उन वस्तुओं से वंचित रह जाता जो मेरी खुशी की इच्छाओं को पूरा कर सकती थीं। लेकिन, जिन महिलाओं की कल्पना करना असंभव था,

उन्हें देखकर मुझे जो अत्यधिक आनंद मिला, उससे गली, शहर और दुनिया अधिक आकर्षक और खोजबीन के योग्य लगने लगी, और इसी कारण से मेरे मन में अपनी सेहत सुधारने, घर से बाहर निकलने और अल्बर्टीन के बिना एक स्वतंत्र व्यक्ति बनने की लालसा जाग उठी। कितनी बार, जब वह अनजानी महिला, जो मेरे सपनों में हमेशा रहती थी, खिड़की के नीचे से गुज़रती, कभी पैदल, कभी अपनी कार की पूरी रफ़्तार से, तो मैं कितना दुखी हो जाता कि मेरा शरीर मेरी उस निगाह का पीछा नहीं कर पाता जो उसके साथ-साथ चलती थी, और मानो खिड़की से निकली किसी तोप से उस पर झपटकर, उस चेहरे की उड़ान को रोक पाता जो मुझे उस खुशी का प्रस्ताव दे रहा था जिसे मैं इस तरह एकांत में रहकर कभी नहीं जान पाता।
दूसरी ओर, अल्बर्टीन के बारे में मुझे कुछ भी नया नहीं पता था। हर दिन, वह मुझे कम आकर्षक लगने लगी थी। केवल, उसके प्रति दूसरों में जागृत होने वाली चाहत, जिसके बारे में सुनकर मैं फिर से पीड़ा सहने लगता और उसे लेकर दूसरों के अधिकार को चुनौती देने के लिए विवश हो जाता, उसे मेरी नज़रों में एक ऊंचे शिखर पर पहुंचा देती थी। वह मुझे पीड़ा दे सकती थी; खुशी कभी नहीं। केवल पीड़ा ही मेरे नीरस लगाव को जीवित रखती थी। जैसे ही मेरी पीड़ा दूर होती, और उसके साथ ही उसे शांत करने की ज़रूरत भी, जो किसी कष्टदायक विकर्षण की तरह मेरा सारा ध्यान खींचती थी, मुझे लगता कि वह मेरे लिए बिल्कुल महत्वहीन है, और मैं भी उसके लिए बिल्कुल महत्वहीन हूं। यह स्थिति बनी रहने से मैं दुखी हो जाता था, और कभी-कभी मैं उसके द्वारा किए गए किसी भयानक काम के बारे में सुनने के लिए तरसता था, कुछ ऐसा जो मुझे ठीक होने तक हमें एक-दूसरे से दूर रख सके, ताकि हम फिर सुलह कर सकें, और हमारे बीच के बंधन को एक नए और लचीले रूप में ढाल सकें।
इस बीच, मैं हजारों परिस्थितियों, हजारों सुखों का सहारा लेकर उसे अपने सानिध्य में उस सुख का भ्रम दिला रहा था, जो मैं स्वयं उसे देने में असमर्थ महसूस कर रहा था। मैं चाहता था कि ठीक होते ही वेनिस के लिए रवाना हो जाऊं, लेकिन अगर मैं अल्बर्टीन से शादी कर लेता, तो यह कैसे संभव होता? मैं, जो उससे इतना ईर्ष्यालु था कि पेरिस में भी जब भी अपने कमरे से बाहर निकलता, तो उसके साथ ही निकलता था। यहां तक कि जब मैं पूरी दोपहर घर में रहता, तब भी मेरे विचार उसकी यात्रा में उसका साथ देते, एक दूर, नीले क्षितिज का अनुसरण करते, और मेरे चारों ओर अनिश्चितता का एक अस्थिर क्षेत्र बना देते। मैंने मन ही मन कहा,

"अगर इन यात्राओं में से किसी एक के दौरान, यह देखकर कि मैं अब उससे शादी के बारे में कुछ नहीं कहता, वह वापस न आने का फैसला कर ले और बिना मुझे अलविदा कहे अपनी चाची के घर चली जाए, तो अल्बर्टीन मुझे वियोग के कष्ट से कितनी हद तक बचा लेगी!" मेरा हृदय, जिसका घाव अब भरने लगा था, अब मेरी प्रेमिका के हृदय से अलग हो रहा था। मैं कल्पना मात्र से उसे अपने से अलग कर सकता था, बिना किसी पीड़ा के। निःसंदेह, अगर मैं असफल हो जाता, तो कोई दूसरा पुरुष उसका पति होता, और अपनी स्वतंत्रता में शायद उसे उन भयावह अनुभवों का सामना करना पड़ता जिनसे मैं भयभीत हो जाता। लेकिन दिन इतना सुहाना था, और मुझे इतना यकीन था कि वह शाम को लौट आएगी, कि अगर मेरे मन में दुर्व्यवहार की आशंका भी आती, तो मैं अपनी स्वतंत्र इच्छाशक्ति का प्रयोग करके उसे अपने मस्तिष्क के उस हिस्से में कैद कर सकता था जहाँ उसका उतना ही महत्व होता जितना कि मेरे वास्तविक जीवन में किसी काल्पनिक व्यक्ति के दुर्गुणों का होता। अपने विचारों के लचीले आधारों को सक्रिय करते हुए, मैंने अपने मस्तिष्क में एक ऐसी ऊर्जा का अनुभव किया जो शारीरिक और मानसिक दोनों थी, मानो एक मांसपेशीय गति और एक आध्यात्मिक आवेग हो, और उस निरंतर चिंता की स्थिति से मुक्त हो गया जिसमें मैं तब तक सीमित था, और एक स्वतंत्र वातावरण में आगे बढ़ने लगा, जिसमें अल्बर्टीन को किसी और से शादी करने से रोकने और महिलाओं के प्रति उसके लगाव में बाधा डालने के लिए सब कुछ बलिदान करने का विचार मेरे मन को उतना ही अतार्किक लग रहा था जितना कि उस व्यक्ति के मन को जिसने उसे कभी नहीं जाना था।

हालांकि, ईर्ष्या उन रुक-रुक कर होने वाली बीमारियों में से एक है, जिसका कारण मनमौजी, अनिवार्य, एक ही रोगी में हमेशा एक जैसा होता है, कभी-कभी दूसरे में बिल्कुल अलग होता है। कुछ अस्थमा के रोगी खिड़कियाँ खोलकर, ताज़ी हवा में साँस लेकर, पहाड़ों की शुद्ध हवा में साँस लेकर ही अपने दौरे को शांत कर पाते हैं, जबकि अन्य शहर के बीचोंबीच, धुएँ से भरे कमरे में शरण लेकर ऐसा कर पाते हैं। ईर्ष्यालु व्यक्ति शायद ही कभी मिलता है जिसकी ईर्ष्या कुछ रियायतों की अनुमति न देती हो। एक व्यक्ति बेवफाई को स्वीकार कर लेता है, बशर्ते उसे इसके बारे में बताया जाए, जबकि दूसरा इसे छुपाए रखने पर, जहाँ दोनों ही बातें समान रूप से हास्यास्पद प्रतीत होती हैं, क्योंकि यदि बाद वाला व्यक्ति सच्चाई न बताए जाने के

कारण अधिक शाब्दिक रूप से धोखा खाता है, तो दूसरा उस सच्चाई में अपने कष्टों का आधार, विस्तार और नवीनीकरण चाहता है।

इससे भी बढ़कर, ईर्ष्या के ये दो समानांतर उन्माद अक्सर शब्दों से परे चले जाते हैं, चाहे वे विश्वास जताने की विनती करें या उसे अस्वीकार करें। हम एक ईर्ष्यालु प्रेमी को देखते हैं जो केवल उन महिलाओं से ईर्ष्या करता है जिनके साथ उसकी प्रेमिका उसकी अनुपस्थिति में संबंध बनाती है, लेकिन उसे किसी अन्य पुरुष के साथ संबंध बनाने की अनुमति देता है, यदि यह उसकी अनुमति से, पास में और, यदि वास्तव में उसकी आँखों के सामने नहीं, तो उसके घर में हो। यह मामला उन वृद्ध पुरुषों में बिल्कुल भी असामान्य नहीं है जो युवा महिलाओं से प्रेम करते हैं। ऐसा पुरुष प्रेमिका का दिल जीतने में कठिनाई महसूस करता है, कभी-कभी उसे संतुष्ट करने में अपनी असमर्थता महसूस करता है, और विश्वासघात से बचने के लिए, अपने घर के बगल वाले कमरे में किसी ऐसे पुरुष को आने देता है जिसे वह प्रेमिका को बुरी सलाह देने में असमर्थ, लेकिन उसे आनंद देने में असमर्थ नहीं समझता। दूसरे पुरुष के साथ मामला बिल्कुल विपरीत है; वह अपनी प्रेमिका को किसी ऐसे शहर में एक मिनट के लिए भी अकेले बाहर नहीं जाने देता जिसे वह जानता है, उसे बंधन में रखता है, लेकिन उसे एक महीने के लिए किसी ऐसी जगह जाने की अनुमति देता है जिसे वह नहीं जानता, जहाँ वह यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि वह क्या कर रही होगी। अल्बर्टीन के बारे में मेरे मन में ये दोनों तरह की मोहभंगिमाएँ थीं। अगर वह मेरी संगति में, मेरे प्रोत्साहन से, अपने सुखों का आनंद उठाती, तो शायद मुझे ईर्ष्या नहीं होती; उन सुखों पर मैं पूरी तरह से नज़र रख सकता था, जिससे किसी भी तरह के झूठ का डर नहीं रहता। शायद मुझे तब भी ईर्ष्या नहीं होती, अगर वह किसी ऐसी अपरिचित और दूरदराज जगह पर चली जाती, जहाँ मैं उसके जीवन के बारे में जानने की कोई कल्पना या संभावना नहीं कर सकता था, और न ही कोई इच्छा होती। दोनों ही स्थितियों में, मेरी अनिश्चितता पूरी तरह से ज्ञान या अज्ञानता से समाप्त हो जाती।

दिन ढलने के साथ ही स्मृति के एक क्षण ने मुझे बहुत पहले के एक शीतल वातावरण में वापस ले जाकर, मैंने उसी आनंद के साथ उसमें सांस ली, जिस आनंद के साथ ओर्फियस ने इस पृथ्वी पर अज्ञात, एलिसियन फील्ड्स की सूक्ष्म वायु में सांस ली थी।

लेकिन दिन ढल रहा था और शाम की उदासी मुझ पर हावी हो रही थी। अल्बर्टीन के लौटने में कितने घंटे बचे हैं, यह देखने के लिए मैंने घड़ी पर नज़र डाली और पाया कि मेरे पास अभी भी तैयार होने और नीचे जाकर अपनी मकान मालकिन, श्रीमती डी गुएरमांटेस से उन विभिन्न वस्त्रों के बारे में जानकारी लेने का समय है, जिन्हें मैं अपनी मालकिन के लिए खरीदना चाहती थी। कभी-कभी मैं डचेस को आंगन में टहलते हुए देखती थी, चाहे मौसम खराब ही क्यों न हो, वह हमेशा एक टाइट-फिटिंग टोपी और फर के वस्त्र पहने होती थीं। मैं अच्छी तरह जानती थी कि कई बुद्धिमान लोगों के लिए, वह महज़ एक आम महिला थीं, डचेस डी गुएरमांटेस नाम का कोई महत्व नहीं था, क्योंकि अब कोई संप्रभु डची या रियासत नहीं बची थी, लेकिन लोगों और स्थानों का आनंद लेने के मेरे नज़रिए में एक अलग ही बदलाव आ गया था। जिन राज्यों की वह डचेस, राजकुमारी, विस्काउंटेस थीं, उन सभी के किले, मौसम की परवाह न करते हुए फर के वस्त्र पहने यह महिला, मुझे ऐसा प्रतीत होता था मानो उन्हें अपने कंधों पर ढो रही हो, जैसे किसी गिरजाघर के द्वार पर खुदी हुई आकृति अपने हाथ में उस गिरजाघर को थामे हुए हो जिसे उसने बनवाया है या उस शहर को जिसे उसने बचाया है। लेकिन ये किले, ये जंगल, केवल मेरी कल्पना ही फर के वस्त्र पहने उस महिला के बाएं हाथ में देख सकती थी, जिसे राजा चचेरी बहन कहते थे। मेरी प्रत्यक्ष दृष्टि केवल उन दिनों में, जब आसमान में बादल छाए होते थे, उसमें एक छाता देख पाती थी, जिसे लेकर डचेस निडर होकर खुद को बचाती थीं। "कोई कभी निश्चित नहीं हो सकता, यही समझदारी है कि मैं घर से मीलों दूर हो जाऊं, और कोई तांगा चालक मुझसे मेरी हैसियत से ज़्यादा किराया मांग रहा हो।" डचेस की बातचीत में बार-बार 'बहुत महंगा' और 'मेरी हैसियत से बाहर' जैसे शब्द गूंजते रहते थे, साथ ही 'मैं बहुत गरीब हूँ' भी। यह तय करना मुश्किल था कि वह ऐसा इसलिए कहती थीं क्योंकि उन्हें इतना अमीर होते हुए भी खुद को गरीब कहना मजेदार लगता था, या फिर इसलिए कि वह इतनी कुलीन होने के बावजूद, किसान होने का दिखावा करने के बावजूद, धन को उतना महत्व न देना समझदारी समझती थीं जितना कि केवल अमीर लोग देते हैं और गरीबों को नीचा समझते हैं। शायद यह उनके जीवन के उस दौर की आदत थी जब वह पहले से ही अमीर थीं, लेकिन अपनी सारी संपत्तियों के रखरखाव के खर्च को देखते हुए उनकी ज़रूरतें पूरी नहीं हो रही थीं। उन्हें पैसों की कमी महसूस होती थी जिसे वह छिपाना नहीं चाहती थीं। जिन चीजों पर

हम अक्सर मजाक करते हैं, वे आम तौर पर इसके विपरीत, वे चीजें होती हैं जो हमें शर्मिंदा करती हैं, लेकिन हम यह दिखाना नहीं चाहते कि हम उनसे शर्मिंदा हैं, और शायद मन ही मन यह आशा रखते हैं कि जिससे हम बात कर रहे हैं, वह हमारी बात को मजाक के रूप में सुनकर यह निष्कर्ष निकालेगा कि यह सच नहीं है।

लेकिन लगभग हर शाम, इस समय, मुझे डचेस घर पर ही मिल जाती थीं, और मुझे इस बात की खुशी थी, क्योंकि अल्बर्टीन को जिस जानकारी की ज़रूरत थी, उसके बारे में उनसे विस्तार से पूछना मेरे लिए ज़्यादा सुविधाजनक था। और मैं लगभग बिना सोचे-समझे नीचे चला गया कि यह कितना अजीब था कि मैं अपने बचपन की उस रहस्यमयी श्रीमती डी गुएरमांटेस से मिलने जा रहा था, सिर्फ़ एक व्यावहारिक काम के लिए, जैसे हम टेलीफ़ोन का इस्तेमाल करते हैं, एक ऐसा अलौकिक यंत्र जिसके चमत्कारों को देखकर हम कभी चकित रह जाते थे, और जिसका इस्तेमाल हम अब बिना सोचे-समझे अपने दर्जी को बुलाने या किसी पार्टी के लिए बर्फ़ मंगवाने के लिए करते हैं।

अल्बर्टीन को हर तरह की सजावट बहुत पसंद थी। मैं उसे हर दिन कोई न कोई नई चीज़ देने से खुद को रोक नहीं पाती थी। और जब भी वह मुझसे किसी स्कार्फ, स्टोल या सनशेड के बारे में उत्साह से बात करती, जिसे खिड़की से या आंगन में एक-दूसरे के पास से गुजरते समय, उसकी तेज़ नज़रें किसी भी भड़कीली चीज़ को पहचान लेती थीं, किसी के गले में, कंधों पर या हाथ में देख लेती थीं... डी गुएरमांटेस यह जानते हुए कि लड़की का स्वाभाविक रूप से परिष्कृत स्वाद (जो एल्स्टिर की बातचीत से मिले परिधान की सुंदरता के पाठों द्वारा और भी निखर गया था) किसी भी साधारण विकल्प से बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं होगा, चाहे वह सुंदर ही क्यों न हो, जो आम लोगों की नज़र में उसकी जगह ले ले लेकिन उससे पूरी तरह भिन्न हो, मैं चुपके से डचेस के पास गया ताकि वह मुझे समझाए कि अल्बर्टीन को पसंद आने वाली वस्तु कहाँ, कैसे और किस मॉडल से बनाई गई थी, मैं ठीक वैसी ही वस्तु कैसे प्राप्त करूँ, निर्माता का रहस्य क्या है, उसके तरीके का आकर्षण (जिसे अल्बर्टीन 'ठाठ' 'शैली' कहती थी), सटीक नाम - सामग्री की सुंदरता भी महत्वपूर्ण थी - और उन सामग्रियों की गुणवत्ता जिनके उपयोग पर मुझे जोर देना था।

बालबेक से लौटते समय जब मैंने अल्बर्टीन से कहा कि डचेस डी गुएरमांटेस हमारे ठीक सामने, उसी हवेली में रहती हैं, तो इस गौरवशाली उपाधि और महान नाम को सुनकर उन्होंने एक ऐसी उदासीनता, शत्रुता और तिरस्कार का भाव दिखाया, जो अभिमानी और भावुक स्वभावों में नपुंसक इच्छा का संकेत होता है। अल्बर्टीन का स्वभाव कितना भी शानदार क्यों न हो, उनमें निहित उत्तम गुण केवल उन बाधाओं के बीच ही विकसित हो सकते थे जो हमारी व्यक्तिगत पसंद या उन पसंदों के लिए विलाप हैं जिन्हें हमें त्यागना पड़ा है—अल्बर्टीन के मामले में, यह अभिमान था—जिसे घृणा कहा जाता है। वैसे तो, समाज के लोगों के प्रति अल्बर्टीन की घृणा उनके स्वभाव का एक बहुत छोटा हिस्सा थी, और मुझे यह क्रांतिकारी भावना के एक पहलू के रूप में आकर्षित करती थी—अर्थात कुलीन वर्ग के प्रति एक कड़वा प्रेम—जो फ्रांसीसी चरित्र के उस पहलू पर अंकित है जो श्रीमती डी गुएरमांटेस के अभिजात्य व्यवहार को प्रदर्शित करता है। इस कुलीन शैली के बारे में, इसे हासिल करने की असंभवता को देखते हुए, अल्बर्टीन शायद सोचती भी नहीं, लेकिन जब उसे याद आया कि एल्स्टिर ने उससे डचेस के बारे में कहा था कि वह पेरिस की सबसे सुंदर पोशाक पहनने वाली महिला है, तो डचेस के प्रति उसकी गणतंत्रवादी अवमानना की जगह एक फैशनेबल महिला में गहरी दिलचस्पी पैदा हो गई। वह हमेशा मुझसे मैडम डी गुएरमांटेस के बारे में पूछती रहती थी और खुश होती थी कि मैं डचेस से उनके पहनावे के बारे में सलाह लेने जाती थी। निस्संदेह मैं यह सलाह मैडम स्वान से भी ले सकती थी और वास्तव में मैंने एक बार उन्हें इसी इरादे से पत्र भी लिखा था। लेकिन मुझे लगता था कि मैडम डी गुएरमांटेस ने पहनावे की कला को और भी ऊंचे स्तर पर पहुंचा दिया था। यदि मैं यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह बाहर नहीं गई हैं और यह संदेश छोड़कर कि अल्बर्टीन के लौटते ही मुझे सूचित कर दिया जाए, एक क्षण के लिए उनसे मिलने नीचे जाती और देखती कि डचेस भूरे रंग के क्रेप डी चाइन वस्त्र में लिपटी हुई हैं, तो मैं उनके इस रूप को स्वीकार कर लेती, जिसे मैं जटिल कारणों से उत्पन्न और पूरी तरह से अपरिहार्य मानती थी; मैं उस वस्त्र से निकलने वाले वातावरण में डूब जाती, मानो किसी शाम के समय हल्की धुंध से ढकी मोती जैसी धूसर रोशनी हो; दूसरी ओर, यदि उनका आंतरिक गाउन लाल और पीले रंग की लपटों से सजा चीनी शैली का होता, तो मैं उसे एक चमकते हुए सूर्यास्त की तरह निहारती; ये वस्त्र उनकी इच्छा अनुसार बदलने योग्य कोई

साधारण सजावट नहीं थे, बल्कि मौसम या दिन के किसी विशेष समय के प्रकाश की तरह एक निश्चित और काव्यात्मक वास्तविकता थे।

श्रीमती डी गुएरमांटेस द्वारा पहने गए सभी बाहरी और आंतरिक परिधानों में से, फोर्टुनी द्वारा पुराने वेनिस के मॉडलों पर बनाए गए परिधान सबसे अधिक किसी विशेष उद्देश्य को दर्शाते और विशेष महत्व रखते प्रतीत होते थे। क्या यह उनका ऐतिहासिक स्वरूप है, या यह तथ्य कि उनमें से प्रत्येक अद्वितीय है, जो उन्हें इतना विशेष महत्व देता है कि जब कोई महिला आपका इंतज़ार करते हुए या आपसे बात करते हुए उस परिधान को पहनती है, तो उसकी मुद्रा असाधारण महत्व प्राप्त कर लेती है, मानो वह पोशाक किसी लंबे विचार-विमर्श का परिणाम हो और आपकी बातचीत रोजमर्रा की जिंदगी की धारा से अलग होकर किसी उपन्यास के दृश्य की तरह हो? बाल्ज़ाक के उपन्यासों में, हम देखते हैं कि उनकी नायिकाएँ किसी विशेष अतिथि की प्रतीक्षा करते समय जानबूझकर कोई विशेष पोशाक पहनती हैं। आज के परिधानों में इतना विशिष्ट व्यक्तित्व नहीं है, फोर्टुनी की रचनाओं को छोड़कर। उपन्यासकार के वर्णन में अस्पष्टता की कोई गुंजाइश नहीं है, क्योंकि गाउन वास्तव में मौजूद है, और उसका हल्का सा रेखाचित्र भी कलाकृति की प्रतिकृति की तरह स्वाभाविक रूप से पूर्वनिर्धारित है। इनमें से किसी एक को पहनने से पहले, महिला को दो वस्त्रों में से एक को चुनना पड़ा है, जो लगभग एक जैसे नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक अपने आप में अद्वितीय है और अपने नाम के अनुरूप है। लेकिन उस पोशाक ने मुझे उस महिला के बारे में सोचने से नहीं रोका।

सचमुच, श्रीमती डी गुएरमांटेस मुझे उस समय पहले से कहीं अधिक आकर्षक लग रही थीं, जब मैं उनसे प्रेम करता था। उनसे कम उम्मीद रखते हुए (जिनसे मैं अब उनके लिए मिलने नहीं जाता था), मैं लगभग उसी सहजता और आराम से उनकी बातें सुन रहा था जैसे कोई अकेला व्यक्ति अपने पैरों को कार के फेंडर पर टिकाकर बैठा हो, मानो मैं कोई पुरानी भाषा में लिखी किताब पढ़ रहा हूँ। मेरा मन इतना तटस्थ था कि मैं उनकी बातों में फ्रांसीसी भाषा के उस शुद्ध आकर्षण का आनंद ले पा रहा था, जो आज के समय में न तो बोलचाल में और न ही साहित्य में देखने को मिलता है। मैंने उसकी बातचीत को एक लोकगीत की तरह मधुरतापूर्वक और विशुद्ध रूप से फ्रांसीसी लहजे में सुना। तब मुझे एहसास हुआ कि मैं भी

उसे मेटरलिंक को नीचा दिखाने की अनुमति दे देती (वैसे तो अब वह बौद्धिक कमजोरी के कारण, उन साहित्यिक रुझानों से प्रभावित होकर, जिनकी किरणें धीरे-धीरे फैलती हैं, उसकी प्रशंसा कर रही थी), ठीक वैसे ही जैसे मेरिमी ने बॉडेलेयर, स्टेंडहल बाल्ज़ाक, पॉल-लुई कूरियर, विक्टर ह्यूगो और मेलहाक मलार्मे को नीचा दिखाया था। मुझे एहसास हुआ कि आलोचक का दृष्टिकोण अपने शिकार की तुलना में कहीं अधिक सीमित था, लेकिन उसकी शब्दावली कहीं अधिक शुद्ध थी। श्रीमती डी गुएरमांटेस की शब्दावली, लगभग सेंट-लूप की माँ की शब्दावली की तरह, एक मनमोहक स्तर तक शुद्ध थी। आज के लेखकों के नीरस शब्दों के सूत्रों में नहीं, जो कहते हैं: 'वास्तव में', 'विशेष रूप से', 'आश्चर्यचकित', और इसी तरह के अन्य शब्द, हमें पुरानी भाषा और शब्दों के सही उच्चारण की याद दिलाते हैं, बल्कि मैडम डी गुएरमांटेस या फ्रांस्वा से बातचीत करने में ही यह बात समझ आती है। मैंने पाँच साल की उम्र में फ्रांस्वा से ही सीखा था कि 'टार्न' नहीं बल्कि 'टार' बोलते हैं; 'बियर्न' नहीं बल्कि 'बियर' बोलते हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि बीस साल की उम्र में जब मैं समाज में जाने लगा, तो मुझे वहाँ यह सीखने की ज़रूरत नहीं पड़ी कि मैडम बोंटेम्प्स की तरह 'मैडम डी बियर्न' नहीं बोलना चाहिए।

यह कहना असत्य होगा कि डचेस को अपने भीतर मौजूद इस क्षेत्रीय और अर्ध-किसान स्वभाव की पूरी जानकारी नहीं थी; वास्तव में, वह इसे ज़ोर देकर दिखाने में एक तरह का दिखावा करती थी। लेकिन, उनकी ओर से, यह किसी महान महिला की देहाती महिला की नकल करने वाली बनावटी सादगी या उन धनी महिलाओं को नीचा दिखाने पर तुली डचेस का घमंड नहीं था जो अनजान किसानों के प्रति तिरस्कार व्यक्त करती हैं, बल्कि यह एक ऐसी महिला की कलात्मक पसंद थी जो अपनी चीज़ों के आकर्षण को जानती थी और उसे आधुनिक दिखावे से खराब नहीं करना चाहती थी। इसी तरह, सभी को डाइव्स में गुइलौम ले कॉन्केरेंट के ज़मींदार, एक नॉर्मन सराय मालिक याद होगा, जिसने - जो कि बहुत दुर्लभ है - अपनी सराय को होटल जैसी आधुनिक सुविधाओं से वंचित रखा, और करोड़पति होने के बावजूद, उसने नॉर्मन किसान की बोली और ब्लाउज़ को बरकरार रखा और आपको अपनी रसोई में प्रवेश करने और उसे अपने हाथों से खाना बनाते देखने की अनुमति दी, जैसे किसी

फार्महाउस में, एक ऐसा भोजन जो फिर भी सबसे आलीशान होटलों के भोजन से कहीं बेहतर और महंगा था।

पुराने कुलीन परिवारों में बची-खुची स्थानीय विरासत ही काफी नहीं है; उनमें से एक ऐसा बुद्धिमान व्यक्ति भी पैदा होना चाहिए जो इसे तुच्छ न समझे, इसे समाज के दिखावे के पीछे न छुपाए। श्रीमती डी गुएरमांटेस, जो दुर्भाग्य से चतुर और पेरिस की रहने वाली थीं, जब मैं उनसे पहली बार मिला था, तब उनमें अपनी जन्मभूमि का केवल लहजा ही बचा था। कम से कम जब उन्होंने अपने बचपन के जीवन का वर्णन करना चाहा, तो उन्होंने अपने शब्दों में एक ऐसा समझौता ढूंढ लिया (एक तरफ तो वह सहज रूप से प्रांतीय लगता था और दूसरी तरफ कृत्रिम रूप से साहित्यिक), एक ऐसा समझौता जो जॉर्ज सैंड की 'ला पेटिट फडेट' या शैतोब्रिएंड द्वारा अपने 'मेमोइर्स डी'आउट्रे-टोम्बे' में संरक्षित कुछ किंवदंतियों का आकर्षण है। मुझे सबसे ज्यादा आनंद तब आता था जब मैं उनसे कोई ऐसा किस्सा सुनता था जिसमें किसान भी उनके साथ शामिल होते थे। ऐतिहासिक नाम, पुरानी परंपराएं महल और गांव के इस मेल को एक अलग ही आकर्षक स्वाद देती थीं। जिन क्षेत्रों पर कभी इसका शासन था, उनसे संपर्क बनाए रखने के कारण, कुलीन वर्ग का एक निश्चित वर्ग क्षेत्रीय बना रहा, जिसके परिणामस्वरूप एक सरल सी टिप्पणी भी हमारे सामने फ्रांस के पूरे इतिहास का एक राजनीतिक और भौगोलिक मानचित्र प्रस्तुत कर देती है।

अगर इसमें बनावटीपन या कोई विशेष भाषा गढ़ने की इच्छा न होती, तो शब्दों के उच्चारण का यह तरीका बातचीत में प्रदर्शित फ्रांसीसी इतिहास का एक नियमित संग्रहालय होता। 'मेरे परदादा फिट्ज़-जेम्स' कहना बिल्कुल भी आश्चर्यजनक नहीं था, क्योंकि हम जानते हैं कि फिट्ज़-जेम्स परिवार को खुद को फ्रांसीसी कुलीन कहने पर गर्व है और वे अपना नाम अंग्रेज़ी लहजे में उच्चारित करवाना पसंद नहीं करते। संयोगवश, उन लोगों की विनम्रता की सराहना करनी चाहिए जो पहले कुछ नामों का उच्चारण ध्वन्यात्मक रूप से करने के लिए बाध्य थे, और जिन्होंने डचेस डी गुएरमांटेस को उन्हें अलग तरह से उच्चारित करते हुए सुनकर अचानक उस उच्चारण को अपना लिया जिसकी उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। इस प्रकार, डचेस, जिनके परदादा कॉम्टे डी चैम्बॉर्ड के दरबार में थे, अपने पति को ऑर्लियनिस्ट बनने पर चिढ़ाने के लिए कहती थीं: "हम पुराने फ्रोशेडॉर्फ के लोग..." वह आगंतुक, जो हमेशा

से यह मानता था कि 'फ्रोह्सडॉर्फ' कहना उसका सही प्रयास था, तुरंत अपना कोट पलट लिया, और उसके बाद से उसे हमेशा 'फ्रोचेडॉर्फ' कहते हुए सुना जा सकता था।

एक बार जब मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस से पूछा कि वह युवक कौन है जिसे उन्होंने मुझे अपने भतीजे के रूप में मिलवाया था, लेकिन जिसका नाम मैं सुन नहीं पाया था, तो मुझे कुछ भी समझ नहीं आया क्योंकि डचेस ने अपने गले के पिछले हिस्से से बहुत ऊँची लेकिन अस्पष्ट आवाज़ में कहा: "से ल...ई इऑन...ल...ब...फ्रेर आ रॉबर्ट। वह कहता है कि उसकी खोपड़ी का आकार प्राचीन गॉल लोगों जैसा है।" तब मुझे एहसास हुआ कि उन्होंने कहा था: "से ले पेटिट लियोन," और यह प्रिंस डी लियोन थे, जो वास्तव में रॉबर्ट डी सेंट-लूप के बहनोई थे। “मुझे उसकी खोपड़ी के बारे में कुछ नहीं पता,” उसने आगे कहा, “लेकिन जिस तरह से वह कपड़े पहनता है, और मुझे कहना होगा कि वह काफी अच्छे कपड़े पहनता है, वह उन इलाकों के रिवाजों से बिल्कुल मेल नहीं खाता। एक बार जब मैं रोहन परिवार के साथ जोसेलिन में ठहरी थी, तो हम सब एक तीर्थयात्रा पर गए थे, जहाँ ब्रिटनी के हर हिस्से से किसान आए हुए थे। लियोन के गाँवों में से एक गाँव का एक हट्टा-कट्टा आदमी रॉबर्ट के बहनोई को उसके बेज रंग के पैंट में देखकर मुँह खोले खड़ा रह गया! लियोन ने कहा, ‘तुम मुझे ऐसे क्यों घूर रहे हो? मुझे यकीन है कि तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ?’ किसान ने मान लिया कि वह नहीं जानता। लियोन ने कहा, ‘अच्छा, मैं तुम्हारा राजकुमार हूँ।’ ‘ओह!’ किसान ने अपनी टोपी उतारते हुए और माफी मांगते हुए कहा। ‘मुझे लगा कि आप अंग्रेज हैं।’”

और अगर मैं इस अवसर का लाभ उठाते हुए श्रीमती डी गुएरमांटेस को रोहन परिवार (जिनके साथ उनके परिवार का अक्सर विवाह संबंध रहा था) के बारे में बात करने के लिए प्रेरित करता, तो उनकी बातचीत में पार्डन परिवार के उदास आकर्षण की झलक मिलती, और (जैसा कि सच्चे कवि पैम्पिल कहते) "सरसों की आग पर तले हुए काले अनाज के पैनकेक के तीखे स्वाद" का एहसास होता।

मार्क्विस डू लाउ (जिनके दुखद पतन के बारे में हम सभी जानते हैं, जब वे स्वयं बहरे हो गए थे और उन्हें श्रीमती एच... से मिलने ले जाया जाता था, जो नेत्रहीन थीं) के बारे में, वह उन कम दुखद वर्षों को याद करती थीं जब गुएरमांटेस में दिन भर के खेल के बाद, वे वेल्स के राजकुमार के साथ चाय पीने से पहले चप्पल पहन लेते थे, जिनके सामने वे खुद को हीन नहीं

मानते थे और जिनके साथ, जैसा कि हम देखते हैं, वे कोई औपचारिकता नहीं निभाते थे। उन्होंने इन सब का वर्णन इतने सजीव ढंग से किया कि ऐसा लगता था मानो उन्होंने उन्हें पेरिगोर्ड के कुछ हद तक अभिमानी सज्जनों की तरह पंखों वाली मस्कटियर टोपी पहना दी हो।

लेकिन विभिन्न लोगों के साधारण वर्गीकरण में भी, उनके मूल प्रांतों को अलग करने और इंगित करने की उनकी सावधानी, जब श्रीमती डी गुएरमांटेस अपने स्वाभाविक रूप में होती थीं, तो एक ऐसा महान आकर्षण था जो पेरिस में जन्मी महिला कभी हासिल नहीं कर सकती थी, और वे सरल नाम अंजू, पोइटू, पेरिगोर्ड, उनकी बातचीत को चित्रमय परिदृश्यों से भर देते थे।

श्रीमती डी गुएरमांटेस के उच्चारण और शब्दावली पर वापस आते हुए, इसी पहलू में कुलीन वर्ग वास्तव में रूढ़िवादी प्रतीत होता है, इस शब्द से जुड़े सभी अर्थ एक साथ कुछ बचकाने और कुछ खतरनाक हैं, विकास के प्रति अपने प्रतिरोध में हठी हैं लेकिन एक कलाकार के लिए रुचिकर भी हैं। मैं जीन नाम की मूल वर्तनी जानने के लिए उत्सुक था। मुझे यह तब पता चला जब मुझे श्रीमती डी विलेपारिसिस के भतीजे का एक पत्र मिला, जो अपने नाम से - जैसा कि उनका बपतिस्मा हुआ था, जैसा कि गोथा में उनका उल्लेख है - जेहान डी विलेपारिसिस के रूप में हस्ताक्षर करते हैं, उसी सुंदर, अतिरिक्त, राजसी 'h' के साथ जिसकी हम प्रशंसा करते हैं, जो प्रार्थना पुस्तिका या खिड़की में सिंदूरी या गहरे नीले रंग में प्रकाशित होता है।

दुर्भाग्य से, मेरे पास इन मुलाकातों को अनिश्चित काल तक जारी रखने का समय कभी नहीं था, क्योंकि मैं यथासंभव अपनी प्रेमिका के बाद घर वापस न लौटना चाहता था। लेकिन श्रीमती डी गुएरमांटेस से मुझे उनके वस्त्रों के बारे में थोड़ी-थोड़ी जानकारी ही मिल पाई, जो अल्बर्टीन के लिए उसी शैली के वस्त्र मंगवाने में मेरे काम आई, जहाँ तक संभव हो, एक युवती उन्हें पहन सके। "उदाहरण के लिए, महोदया, उस शाम जब आपने श्रीमती डी सेंट-यूवर्टे के साथ भोजन किया और फिर राजकुमारी डी गुएरमांटेस के घर गईं, तो आपने पूरी तरह से लाल रंग की पोशाक और लाल जूते पहने थे, आप अद्भुत लग रही थीं, आप मुझे एक विशाल रक्त-लाल फूल, एक चमकते माणिक की याद दिला रही थीं - अब, वह पोशाक क्या थी? क्या वह ऐसी पोशाक है जिसे कोई लड़की पहन सकती है?"

डचेस ने अपने थके हुए चेहरे पर वही चमक बिखेरी जो प्रिंसेस डेस लाउम्स वर्षों पहले स्वान द्वारा प्रशंसा किए जाने पर दिखाया करती थीं। आँखों में खुशी के आँसू लिए, वह उत्सुकता, जिज्ञासा और प्रसन्नता से एम. डी ब्रेउटे की ओर देखने लगीं, जो उस समय हमेशा वहीं मौजूद रहते थे और अपने मोनोकल के पीछे से एक ऐसी मुस्कान बिखेर रहे थे मानो बौद्धिक बकवास के इस विस्फोट को युवावस्था के शारीरिक उत्साह के लिए माफ कर रहे हों, जो उनके लिए मानो अंदर ही अंदर छिपा था। डचेस मानो कह रही हों: "इसे क्या हो गया है? यह पागल ही होगा।" फिर मेरी ओर मुस्कुराते हुए उसने कहा, "मुझे पता नहीं था कि मैं चमकते माणिक या गहरे लाल फूल जैसी दिख रही थी, लेकिन मुझे याद है कि मैंने लाल रंग की ड्रेस पहनी थी: वह लाल साटन की थी, जो उस मौसम में चलन में थी। हाँ, कोई लड़की कभी-कभार ऐसी ड्रेस पहन सकती है, लेकिन तुमने मुझे बताया था कि तुम्हारी सहेली शाम को बाहर नहीं जाती। यह तो पूरी तरह से शाम की ड्रेस है, ऐसी नहीं जिसे वह किसी से मिलने जाते समय पहन ले।"

असाधारण बात यह है कि उस शाम की घटना, जो वैसे तो बहुत पुरानी नहीं थी, के बारे में श्रीमती डी गुएरमांटेस को केवल इतना ही याद था कि उन्होंने क्या पहना था, और वह एक ऐसी घटना को भूल गई थीं जो, जैसा कि हम अभी देखेंगे, उनके लिए बहुत मायने रखती थी। ऐसा लगता है कि कर्मठ पुरुषों और महिलाओं में (और समाज में लोग सूक्ष्म स्तर पर कर्मठ होते हैं, लेकिन फिर भी कर्मठ होते हैं), एक घंटे बाद होने वाली घटनाओं पर ध्यान देने की आवश्यकता से अत्यधिक व्यस्त मन, स्मृति में केवल कुछ ही बातें सहेज पाता है। अक्सर, उदाहरण के लिए, एम. डी नॉरपोइस का उद्देश्य अपने प्रश्नकर्ता को गलत साबित करना या खुद को त्रुटिहीन दिखाना नहीं होता था, बल्कि जब आप उन्हें जर्मनी के साथ गठबंधन के संबंध में उनकी उन भविष्यवाणियों की याद दिलाते थे जो कभी पूरी नहीं हुईं, तो वे कहते थे: "आप गलत समझ रहे होंगे, मुझे इसकी बिल्कुल भी याद नहीं है, यह मेरे स्वभाव के विपरीत है, क्योंकि इस तरह की बातचीत में मैं हमेशा बहुत कम बोलता हूँ, और मैंने कभी भी उन अप्रत्याशित प्रयासों की सफलता की भविष्यवाणी नहीं की होगी जो अक्सर केवल आपसी टकराव होते हैं और लगभग हमेशा ही जबरदस्ती में बदल जाते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि दूर भविष्य में फ्रांस-जर्मनी के बीच सुलह हो सकती है और यह दोनों देशों के लिए

अत्यधिक लाभदायक होगी, और मुझे विश्वास है कि इससे फ्रांस को कोई नुकसान नहीं होगा, लेकिन मैंने इस बारे में कभी बात नहीं की क्योंकि अभी परिणाम आना बाकी है, और यदि आप मेरी राय जानना चाहते हैं, तो हमारे पूर्व शत्रुओं को हमारे साथ विवाह बंधन में बांधने के लिए कहना, मेरे विचार से, हम एक तरह से उन्हें धोखा दे रहे हैं।" "कड़ी अस्वीकृति का सामना करना पड़ेगा, और यह प्रयास केवल विनाश में ही परिणत हो सकता है।" यह कहते हुए एम. डी नॉरपोइस झूठ नहीं बोल रहे थे, वे बस भूल गए थे। हम उन चीजों को जल्दी भूल जाते हैं जिन पर हमने गहराई से विचार नहीं किया है, जो हमें नकल करने की भावना से, अपने पड़ोसियों के जुनून से प्रभावित होकर बताई गई हैं। ये चीजें बदलती हैं, और इनके साथ हमारी स्मृति भी बदल जाती है। राजनयिकों से भी अधिक, राजनेता उस दृष्टिकोण को याद रखने में असमर्थ होते हैं जिसे उन्होंने किसी विशेष क्षण में अपनाया था, और उनकी कुछ गलतियाँ महत्वाकांक्षा की अधिकता से अधिक स्मृति की कमी के कारण होती हैं। जहाँ तक समाज के लोगों की बात है, वे बहुत कम चीजें याद रख पाते हैं।

श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मुझे आश्वस्त किया कि जिस पार्टी में वह लाल गाउन पहनकर गई थीं, वहाँ उन्हें श्रीमती डी चौसेपियर की उपस्थिति याद नहीं है, और मैं ही गलत हूँ। फिर भी, ईश्वर ही जानता है कि चौसेपियर तब से ड्यूक और डचेस दोनों के मन में काफी चर्चा में रहे थे। इसका कारण यह था कि जब जॉकी क्लब के अध्यक्ष की मृत्यु हुई, तब श्रीमती डी गुएरमांटेस क्लब के वरिष्ठ उपाध्यक्ष थे। क्लब के कुछ सदस्य, जो समाज में लोकप्रिय नहीं थे और जिनका एकमात्र आनंद उन पुरुषों को बहिष्कृत करना था जो उन्हें अपने घर आमंत्रित नहीं करते थे, उन्होंने ड्यूक डी गुएरमांटेस के खिलाफ एक अभियान शुरू किया। ड्यूक, जिन्हें अपने चुनाव का पूरा भरोसा था और जो अध्यक्ष पद के प्रति अपेक्षाकृत उदासीन थे (जो उनकी सामाजिक स्थिति के लिए कोई मायने नहीं रखता था), ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। उनके खिलाफ यह आरोप लगाया गया कि डचेस ड्रेफस समर्थक थीं (ड्रेफस मामला तो बहुत पहले समाप्त हो चुका था, लेकिन बीस साल बाद भी लोग इस पर चर्चा कर रहे थे, जबकि अभी केवल दो साल ही बीते थे), और रोथ्सचाइल्ड परिवार की मेहमाननवाज़ी करती थीं, और हाल ही में ड्यूक डी गुएरमांटेस जैसे कुछ बड़े अंतरराष्ट्रीय धनाढ्यों को बहुत अधिक सम्मान दिया गया था, जो आधे जर्मन थे। इस अभियान को इसके लिए उपयुक्त माहौल मिल

गया, क्योंकि क्लब हमेशा सार्वजनिक जीवन में रहने वाले लोगों से ईर्ष्या करते हैं और बड़ी दौलत से घृणा करते हैं।

चौसेपियर की संपत्ति भी कम नहीं थी, लेकिन इस पर किसी को आपत्ति नहीं थी; वह एक पैसा भी खर्च नहीं करते थे, दंपति एक साधारण से अपार्टमेंट में रहते थे, पत्नी हमेशा काले रंग के सर्ज वस्त्र पहनती थीं। संगीत की शौकीन होने के नाते, वह अक्सर दोपहर में छोटी-छोटी पार्टियाँ देती थीं जिनमें गुएरमांटे परिवार की पार्टियों से कहीं अधिक गायक आमंत्रित होते थे। लेकिन इन पार्टियों का कभी किसी ने ज़िक्र नहीं किया, कोई जलपान नहीं परोसा जाता था, पति भी कभी नज़र नहीं आते थे, और रुए डे ला चेज़ की गुमनामी में सब कुछ चुपचाप चलता रहता था। ओपेरा में, श्रीमती डे चौसेपियर किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना ही निकल जाती थीं, हमेशा उन लोगों के बीच रहती थीं जिनके नाम चार्ल्स X के करीबी लोगों के सबसे कट्टर समूह की याद दिलाते थे, लेकिन वे लोग बिल्कुल अप्रचलित थे, जिनका कोई महत्व नहीं था। चुनाव के दिन, सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, गुमनामी ने प्रसिद्धि पर विजय प्राप्त की: द्वितीय उपाध्यक्ष चौसेपियर को जॉकी का अध्यक्ष चुना गया, और ड्यूक डी गुएरमांटेस वरिष्ठ उपाध्यक्ष की कुर्सी पर बैठे रह गए। बेशक, गुएरमांटेस जैसे सर्वोच्च पद के राजकुमारों के लिए जॉकी का अध्यक्ष होना कोई मायने नहीं रखता। लेकिन जब आपकी बारी हो और आप अध्यक्ष न हों, और आपके ऊपर चौसेपियर को चुना जाए, जिसकी पत्नी ओरियान ने दो साल पहले न केवल झुकने से इनकार कर दिया था, बल्कि इस बात पर आपत्ति जताई थी कि एक अनजान व्यक्ति उसके सामने झुके, तो यह बात ड्यूक के लिए सहन करना कठिन था। उन्होंने इस अपमान को नजरअंदाज करते हुए दावा किया कि इसके पीछे स्वान के साथ उनकी पुरानी दोस्ती थी। वास्तव में उनका गुस्सा कभी शांत नहीं हुआ।

एक अजीब बात यह थी कि ड्यूक डी गुएरमांटेस को पहले कभी भी आम बोलचाल की भाषा में 'आउट एंड आउट' जैसे मुहावरे का इस्तेमाल करते नहीं सुना गया था, लेकिन जॉकी चुनाव के बाद से, जब भी कोई ड्रेफस मामले का जिक्र करता, तो वह तुरंत 'आउट एंड आउट' बोल देते। "ड्रेफस मामला, ड्रेफस मामला, यह कहते ही शब्द का गलत इस्तेमाल हो जाता है। यह धर्म का सवाल नहीं है, यह पूरी तरह से राजनीतिक मामला है।" अगर पांच साल बीत जाएं और आप उन्हें दोबारा 'आउट एंड आउट' कहते न सुनें, बशर्ते उस दौरान कोई ड्रेफस मामले

का जिक्र न करे, लेकिन अगर पांच साल बाद ड्रेफस का नाम फिर से सामने आ जाए, तो 'आउट एंड आउट' अपने आप उनके मुंह से निकल ही जाता। ड्यूक किसी भी हालत में इस मामले का जिक्र सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, "जिसकी वजह से," वे कहते, "कई आपदाएं आई हैं", हालांकि वे वास्तव में सिर्फ एक ही बात से वाकिफ थे; जॉकी के अध्यक्ष बनने में उनकी अपनी विफलता। और उस दोपहर, जब मैंने मैडम डी गुएरमांटेस को उनके चचेरे भाई की पार्टी में पहनी हुई लाल पोशाक की याद दिलाई, तो एम. डी ब्रेउटे का स्वागत कुछ खास अच्छा नहीं हुआ। कुछ कहने की ठानकर, कुछ अस्पष्ट विचारों के जुड़ाव से, जिन्हें उन्होंने स्पष्ट नहीं किया, उन्होंने अपने होंठों को सिकोड़ते हुए जीभ को घुमाते हुए कहना शुरू किया: "ड्रेफस मामले की बात करें तो—" (अरे, ड्रेफस मामले की दुनिया में, हम तो बस एक लाल पोशाक की बात कर रहे थे, और निश्चित रूप से बेचारे ब्रेउटे, जिनकी एकमात्र इच्छा खुद को स्वीकार्य बनाना थी, का कोई दुर्भावनापूर्ण इरादा नहीं हो सकता था)। लेकिन ड्रेफस का नाम सुनते ही ड्यूक डी गुएरमांटेस ने अपनी भौंहें तन डालीं। “मुझे बताया गया था,” ब्रेओटे ने आगे कहा, “यह बहुत अच्छी बात है, बेहद चालाकी भरी बात है, कसम से, यह बात हमारे दोस्त कार्टियर ने कही थी” (हम पाठक को यह बताना चाहेंगे कि यह कार्टियर, श्रीमती डी विलेप्रेंच का भाई था, जिसका उस नाम के जौहरी से कोई संबंध नहीं था) “मुझे ज़रा भी आश्चर्य नहीं है, क्योंकि उसके पास बहुत अक्ल है,” “ओह!” ओरियान बीच में बोली, “वह मुझे अपनी अक्ल दे सकता है। मैं आपको यह बताना नहीं चाहती कि आपका दोस्त कार्टियर मुझे हमेशा से कितना उबाऊ लगता रहा है, और मैं कभी भी उस असीम आकर्षण को नहीं समझ पाई जो चार्ल्स डी ला ट्रेमोइल और उनकी पत्नी को उसमें मिलता है, क्योंकि जब भी मैं उनके घर जाती हूँ तो वह मुझे वहाँ मिलता है।” "मेरे प्यारे दत्त—हाँ," ब्रेओटे ने जवाब दिया, जो नरम 'क' का उच्चारण ठीक से नहीं कर पा रही थी, "मुझे लगता है कि आप कार्टियर पर बहुत सख्त हैं। यह सच है कि उसने ला ट्रेमोइल्स में शायद कुछ ज़्यादा ही सहजता से रहना सीख लिया है, लेकिन आखिरकार वह टायर्ल्स को एक तरह का—मैं क्या कहूँ?—एक तरह का फिडस अचेट्स तो देता ही है, जो आजकल बहुत दुर्लभ हो गया है। खैर, कहानी मुझे इस तरह सुनाई गई है। कार्टियर ने कहा था कि अगर एम. ज़ोला ने जानबूझकर मुकदमा झेलने और दोषी ठहराए जाने का फैसला किया था, तो वह सिर्फ़ उस एक अनुभूति का आनंद लेने

के लिए था जो उसने कभी नहीं की थी, यानी जेल में रहने की अनुभूति।" "और इसलिए वह गिरफ़्तार होने से पहले ही भाग गया," ओरियान बीच में बोली। "आपकी कहानी में कोई दम नहीं है। इसके अलावा, अगर यह तर्कसंगत भी होता, तो मुझे लगता है कि उसकी यह टिप्पणी बिल्कुल बेवकूफी भरी है। अगर आप इसे ही चतुराई कहते हैं!" “अरे वाह, मेरी प्यारी ओरियान,” ब्रेओटे ने जवाब दिया, जो खुद को विरोधाभासी पाकर आत्मविश्वास खोने लगा था, “यह मेरी टिप्पणी नहीं है, मैं तुम्हें वही बता रहा हूँ जो मुझे बताया गया है, इसे जैसा समझो वैसा समझो। खैर, इस पर एम. कार्टियर को उस शानदार व्यक्ति ला ट्रेमोइल से जमकर फटकार मिली, जो बिल्कुल सही ही, अपने ड्राइंग रूम में समसामयिक विषयों पर चर्चा करना पसंद नहीं करता, और वह इसलिए और भी नाराज़ था क्योंकि श्रीमती अल्फोंस रोथ्सचाइल्ड भी वहाँ मौजूद थीं। कार्टियर को ला ट्रेमोइल की तीखी फटकार सुननी पड़ी।” ड्यूक ने बेहद गुस्से में कहा, "मुझे तो ऐसा ही लगता है। अल्फोंस रॉथ्सचाइल्ड्स, भले ही वे उस घिनौने मामले का ज़िक्र न करने की समझदारी दिखाते हों, लेकिन दिल से सभी यहूदियों की तरह ड्रेफसवादी हैं। दरअसल, यह एक व्यक्तिगत हमला है" (ड्यूक ने 'व्यक्तिगत हमला' शब्द का इस्तेमाल कुछ अस्पष्ट ढंग से किया था) "जिसका इस्तेमाल यहूदियों की बेईमानी साबित करने के लिए काफ़ी नहीं किया गया है। अगर कोई फ्रांसीसी किसी को लूटता या मार डालता है, तो मैं खुद को इस बात के लिए बाध्य नहीं समझता कि वह मेरी तरह ही फ्रांसीसी है, इसलिए मैं उसे निर्दोष मान लूँ। लेकिन यहूदी कभी यह स्वीकार नहीं करेंगे कि उनका कोई साथी देशद्रोही है, हालाँकि वे इसे अच्छी तरह जानते हैं, और वे कभी भी उन भयानक परिणामों के बारे में नहीं सोचते" (ड्यूक स्वाभाविक रूप से चौसेपियर की उस मनहूस हार के बारे में सोच रहे थे) "जो उनके लोगों में से किसी एक के अपराध से हो सकते हैं... आओ, ओरियान, तुम यह दिखावा नहीं करने वाली हो कि यह यहूदियों के लिए शर्मनाक नहीं है।" कि वे सब एक गद्दार का समर्थन करते हैं। आप मुझे यह नहीं कह सकते कि यह सिर्फ इसलिए नहीं है क्योंकि वे यहूदी हैं। "बिल्कुल नहीं," ओरियान ने पलटवार किया (थोड़ी झुंझलाहट के साथ, जुपिटर टोनन्स के सामने अपनी बात रखने और ड्रेफस मामले से ऊपर 'बुद्धि' को रखने की इच्छा रखते हुए)। "शायद यह सिर्फ इसलिए है क्योंकि वे यहूदी हैं और अपनी जाति को जानते हैं, इसलिए वे समझते हैं कि एक व्यक्ति यहूदी हो सकता है और

जरूरी नहीं कि वह गद्दार और फ्रांस-विरोधी हो, जैसा कि एम. ड्रमोंट मानते हैं। निश्चित रूप से, अगर वह ईसाई होता, तो यहूदियों को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं होती, लेकिन उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि अगर वह यहूदी नहीं होता तो लोग उसे बिना सोचे-समझे गद्दार नहीं मानते, जैसा कि मेरा भतीजा रॉबर्ट कहता है।" "महिलाओं को राजनीति की कोई समझ नहीं होती," ड्यूक ने डचेस पर अपनी निगाहें गड़ाते हुए कहा। "वह भयावह अपराध केवल यहूदियों का मामला नहीं है, बल्कि व्यापक राष्ट्रीय महत्व का एक मामला है जिसके फ्रांस के लिए अत्यंत भयावह परिणाम हो सकते हैं, जिसे सभी यहूदियों को देश से बाहर निकाल देना चाहिए था, जबकि मुझे यह कहते हुए खेद है कि अब तक उठाए गए कदम (एक नीच तरीके से, जिसे रद्द करना होगा) उनके खिलाफ नहीं बल्कि उनके सबसे प्रमुख विरोधियों, सर्वोच्च पद के लोगों के खिलाफ निर्देशित किए गए हैं, जिन्हें गटर में फेंक दिया गया है, जिससे हमारे दुर्भाग्यपूर्ण देश का विनाश हुआ है।"

मुझे लगा कि बातचीत गलत मोड़ ले चुकी है और मैंने जल्दी से कपड़ों के विषय पर वापस लौट आया।

“क्या आपको याद है, महोदया,” मैंने कहा, “पहली बार जब आप मुझसे दोस्ताना व्यवहार कर रही थीं?” “पहली बार जब मैं उनसे दोस्ताना व्यवहार कर रही थी,” उन्होंने मुस्कुराते हुए एम. डी ब्रेउटे की ओर मुड़ते हुए दोहराया, जिनकी नाक की नोक और नुकीली हो गई थी, और श्रीमती डी गुएरमांटेस के प्रति विनम्रता के कारण उनकी मुस्कान और भी कोमल हो गई थी, जबकि उनकी आवाज, जैसे किसी घिसे हुए पत्थर पर चाकू, से अस्पष्ट और कर्कश ध्वनियाँ निकल रही थीं। “आपने बड़े काले फूलों वाला पीला गाउन पहना था।” “लेकिन, मेरे प्यारे लड़के, ये तो एक ही बात है, ये तो शाम की पोशाकें हैं।” “और आपकी कॉर्नफ्लावर वाली टोपी जो मुझे बहुत पसंद आई थी! खैर, ये सब तो बीते दिनों की बात है। मैं उस लड़की के लिए, जिसका मैंने आपसे जिक्र किया था, कल सुबह आपके पहने हुए फर के लबादे जैसा ही एक लबादा बनवाना चाहता हूँ। क्या मैं उसे देख सकता हूँ?” "ज़रूर; हैनिबल को अभी जाना है। तुम मेरे कमरे में आ जाना और मेरी नौकरानी तुम्हें वो सब कुछ दिखा देगी जो तुम देखना चाहो। बस, मेरे प्यारे बेटे, हालाँकि मुझे तुम्हें कुछ भी उधार देने में खुशी होगी, लेकिन मैं तुम्हें चेतावनी देना चाहती हूँ कि अगर तुम कैलोट, डौसेट या पैक्विन के कपड़ों की नकल किसी

छोटे दर्जी से करवाओगे, तो नतीजा कभी भी वैसा नहीं होगा।" "लेकिन मैंने कभी किसी छोटे दर्जी के पास जाने का सपना भी नहीं देखा, मुझे अच्छी तरह पता है कि वो वैसा नहीं होगा, लेकिन मुझे यह जानने में दिलचस्पी होगी कि तुम क्यों।" "तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं कभी कुछ समझा नहीं सकता, मैं बिलकुल बेवकूफ हूँ, मैं तो किसान की तरह बोलता हूँ। ये कारीगरी और स्टाइल की बात है; जहाँ तक फर की बात है, मैं कम से कम तुम्हें अपने फर वाले का पता दे सकती हूँ, ताकि वो तुम्हें लूटे नहीं। लेकिन तुम्हें पता है कि तब भी तुम्हें आठ-नौ हज़ार फ्रैंक खर्च करने पड़ेंगे।" "और वो गाउन जो आपने उस शाम पहना था, जिसमें एक अजीब सी खुशबू थी, गहरा, मुलायम, चित्तीदार, तितली के पंख की तरह सुनहरी धारियों वाला?" "आह! वो तो फोर्टुनी का है। आपकी युवती उसे घर में आराम से पहन सकती हैं। मेरे पास ऐसे बहुत सारे हैं; आप उन्हें अभी देखेंगी, दरअसल अगर आप चाहें तो मैं आपको एक-दो दे भी सकती हूँ। लेकिन मैं चाहूँगी कि आप वो गाउन देखें जो मेरी चचेरी बहन टैलीरैंड के पास है। मुझे उसे उधार लेने के लिए पत्र लिखना होगा।" "लेकिन आपके जूते भी बहुत प्यारे थे, क्या वे भी फोर्टुनी के हैं?" नहीं, मैं जानती हूँ कि आप किनकी बात कर रही हैं। ये किसी सुनहरे चमड़े से बनी हैं जो हमें लंदन में मिली थी, जब मैं कॉन्सुएलो मैनचेस्टर के साथ खरीदारी कर रही थी। ये अद्भुत थी। मुझे कभी समझ नहीं आया कि उन्होंने इसे कैसे बनाया होगा, ये बिल्कुल सोने की परत जैसी थी, बस उसके सामने एक छोटा सा हीरा लगा हुआ था। बेचारी डचेस ऑफ मैनचेस्टर अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन अगर इससे आपको कोई मदद मिले तो मैं लेडी वारविक या डचेस ऑफ मार्लबोरो को लिखकर कुछ और मंगवाने के लिए कह सकती हूँ। अब मुझे लगता है कि शायद मेरे पास भी उस चमड़े का एक टुकड़ा बचा हो। आप यहाँ एक जोड़ी बनवा सकती हैं। मैं आज शाम को इसकी तलाश करूँगी और आपको बता दूँगी।

चूंकि मैं यथासंभव कोशिश करता था कि अल्बर्टीन के लौटने से पहले डचेस के घर से निकल जाऊं, अक्सर ऐसा होता था कि जब मैं उनके दरवाजे से बाहर निकलता था तो आंगन में मुझे एम. डी चार्लस और मोरेल मिल जाते थे, जो बैरन के लिए जुपियन के यहां चाय पीने जा रहे होते थे। मैं उनसे हर दिन नहीं मिलता था, लेकिन वे हर दिन वहां जाते थे। यहां हम शायद यह कह सकते हैं कि किसी आदत की नियमितता आमतौर पर उसकी निरर्थकता के अनुपात में

होती है। सनसनीखेज चीजें हम आमतौर पर कभी-कभार ही करते हैं। लेकिन निरर्थक जीवन, जिसमें पागल व्यक्ति खुद को सभी सुखों से वंचित कर लेता है और खुद को सबसे अधिक कष्ट देता है, वह प्रकार है जो सबसे कम बदलता है। हर दस साल में, अगर हमें जानने की जिज्ञासा हो, तो हम पाएंगे कि बेचारा व्यक्ति अभी भी उस समय सो रहा होता है जब वह अपना जीवन जी सकता था, उस समय बाहर जा रहा होता है जब सड़कों पर खुद को मरवाने के अलावा कुछ नहीं किया जा सकता, गर्मी में ठंडे पेय पी रहा होता है, और अभी भी जुकाम ठीक करने की बेताब कोशिश कर रहा होता है। एक दिन के लिए भी थोड़ी सी ऊर्जा का संचार इन आदतों को हमेशा के लिए बदलने के लिए पर्याप्त होगा। लेकिन सच्चाई यह है कि इस तरह का जीवन लगभग हमेशा ऊर्जाहीन व्यक्ति का ही होता है। दुर्गुण इन नीरस जीवन का एक और पहलू हैं, जिन्हें इच्छाशक्ति के प्रयोग से कम कष्टदायी बनाया जा सकता है। इन दोनों पहलुओं को एक साथ तब देखा जा सकता था जब एम. डी चार्लस हर दिन मोरेल के साथ जुपियन के यहाँ चाय पीने आते थे। एक घटना ने इस दैनिक रिवाज को बिगाड़ दिया था। एक दिन दर्जी की भतीजी ने मोरेल से कहा, "कोई बात नहीं, कल आना, मैं तुम्हें चाय पिलाऊँगी।" बैरन ने इस बात को उस व्यक्ति के मुँह से बहुत ही भद्दा समझा जिसे वह लगभग भावी बहू मानते थे। लेकिन चूंकि उन्हें अपमानजनक बातें करने में आनंद आता था और वे अपने गुस्से में बह गए थे, इसलिए मोरेल से यह कहने के बजाय कि वे उसे शिष्टाचार का पाठ पढ़ाएँ, घर लौटते समय उनके पूरे रास्ते में हिंसक झड़पें हुईं। अत्यंत उद्दंड, अत्यंत अभिमानी लहजे में: "तो आपका 'स्पर्श', जो मुझे स्पष्ट रूप से 'समझदारी' से संबंधित नहीं है, ने आपकी सूंघने की क्षमता के सामान्य विकास में बाधा डाली है, क्योंकि आपने उस दुर्गंधयुक्त अभिव्यक्ति को - पंद्रह सेंटिम में, मुझे लगता है - मेरी शाही नाक तक सीवेज की बदबू फैलाने की अनुमति दी? जब आप वायलिन वादन समाप्त करते हैं, तो क्या आपने कभी मेरे घर में उन्मादी तालियों के बजाय एक पाद से पुरस्कृत होते देखा है, या उससे भी अधिक मार्मिक मौन, क्योंकि यह उस प्रयास से होने वाली थकावट के कारण है जो आप पर आपकी युवती द्वारा लुटाए गए स्नेह को रोकने के कारण नहीं, बल्कि उस सिसकी को रोकने के कारण है जो आपने मेरे होठों पर ला दी है?"

जब किसी सरकारी अधिकारी पर उसके वरिष्ठ अधिकारी द्वारा इसी तरह के आरोप लगाए जाते हैं, तो वह अगले ही दिन अपना पद खो देता है। इसके विपरीत, एम. डी चार्लस के लिए मोरेल को बर्खास्त करने से ज़्यादा कष्टदायक कुछ नहीं हो सकता था, और वास्तव में इस डर से कि कहीं वह कुछ ज़्यादा ही न बोल दे, उसने लड़की की विस्तृत प्रशंसा करना शुरू कर दिया, जिसमें शालीनता और धृष्टता का मिश्रण था। "वह मनमोहक है; चूंकि आप एक संगीतकार हैं, मुझे लगता है कि उसने अपनी आवाज़ से आपको मोहित कर लिया होगा, जो ऊंचे सुरों में बहुत सुंदर है, जहां ऐसा लगता है कि वह आपके बी शार्प के साथ की प्रतीक्षा कर रही है। उसके निचले सुर मुझे उतने पसंद नहीं आए, और इसका कुछ संबंध उसके अजीब और पतले गले के तीन गुना उभार से होना चाहिए, जो समाप्त होने के बाद फिर से शुरू हो जाता है; लेकिन ये तो मामूली बातें हैं, मुझे तो उसका पूरा रूप पसंद है। और चूंकि वह एक दर्जी है और कैंची चलाने में माहिर होगी, इसलिए आपको उससे कागज पर खुद का एक मनमोहक सिल्हूट कटवा करवाना होगा।"

चार्ली ने इस प्रशंसा पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया था, क्योंकि उसकी मंगेतर के जिन गुणों की प्रशंसा की गई थी, वे उसकी नज़र से बिल्कुल ओझल थे। लेकिन उसने एम. डी चार्लस के जवाब में कहा, "कोई बात नहीं, मेरे लड़के, मैं उसे ठीक से डांटूँगा, और वह फिर कभी इस तरह बात नहीं करेगी।" अगर मोरेल ने एम. डी चार्लस को इस तरह 'लड़का' कहकर संबोधित किया, तो इसका मतलब यह नहीं था कि सुंदर वायलिन वादक इस बात से अनजान था कि उसकी उम्र बैरन की उम्र का मुश्किल से एक तिहाई थी। न ही उसने इस अभिव्यक्ति का प्रयोग जुपियन की तरह किया, बल्कि उस सरलता के साथ किया जो कुछ रिश्तों में यह दर्शाती है कि उम्र के अंतर को दबाने से पहले मौन रूप से स्नेह पनपा था। मोरेल की ओर से एक बनावटी स्नेह। दूसरों में, एक सच्चा स्नेह। इस प्रकार, लगभग इसी समय एम. डी चार्लस को एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था: "मेरी प्यारी पलामेडे, मैं तुमसे फिर कब मिल पाऊँगा? मैं तुम्हें बहुत याद कर रहा हूँ और हमेशा तुम्हारे बारे में सोचता रहता हूँ। पियरे।" एम. डी चार्लस यह पता लगाने के लिए बहुत दिमाग खपा रहे थे कि उनके रिश्तेदारों में से कौन उन्हें इतने आत्मीयता से संबोधित कर रहा है, और इसलिए उन्हें अच्छी तरह जानता होगा, हालांकि वे लिखावट को पहचान नहीं पाए। गोथा के पंचांग में जिन राजकुमारों का ज़िक्र है, वे सभी कई

दिनों तक उनके दिमाग में घूमते रहे। और फिर, अचानक, पत्र के पीछे लिखे पते ने उन्हें चौंका दिया: पत्र लिखने वाला एक जुआघर का नौकर था, जहाँ एम. डी चार्लस कभी-कभी जाते थे। उस नौकर को एम. डी चार्लस को इस लहजे में पत्र लिखने में कोई असभ्यता महसूस नहीं हुई, बल्कि इसके विपरीत, वह उनके प्रति गहरा सम्मान रखता था। लेकिन उसने सोचा कि उस सज्जन को संबोधित न करना असभ्य होगा जिसने कई बार उन्हें चूमा हो, और इस तरह - उसने अपनी सरलता में सोचा - अपना स्नेह बरसाया हो। एम. डी चार्लस इस आत्मीयता से सचमुच प्रसन्न हुए। उन्होंने एम. डी वोगौबर्ट को दोपहर की पार्टी से भी बुला लिया ताकि उन्हें पत्र दिखा सकें। फिर भी, ईश्वर ही जानता है कि एम. डी चार्लस एम. डी वोगौबर्ट के साथ घूमना पसंद नहीं करते थे। क्योंकि वो आँख में चश्मा लगाए, हर गुजरते युवक को घूरते रहते थे। इससे भी बुरा यह था कि एम. डी चार्लस के साथ रहते हुए, वो अपनी मनमानी करने लगते थे और ऐसी भाषा का प्रयोग करते थे जिसे बैरन नापसंद करते थे। वो सभी पुल्लिंग शब्दों में स्त्रीलिंग जोड़ देते थे और अपनी मूर्खता के कारण, इस मज़ाक को बेहद हास्यपूर्ण समझते थे और लगातार हँसते रहते थे। चूंकि वो राजनयिक सेवा में अपने पद को बहुत महत्व देते थे, इसलिए सड़क पर उनकी ये दयनीय हँसी-मज़ाक की हरकतें तब रुक जाती थीं जब समाज का कोई व्यक्ति, या उससे भी बुरा, कोई सरकारी कर्मचारी, अचानक सामने आ जाता था। “वो छोटी सी टेलीग्राफ़ संदेशवाहक,” उसने नाराज़ बैरन को कोहनी मारते हुए कहा, “मैं उसे जानता था, पर वो अब संभ्रांत हो गई है, धिक्कार है! ओह, गैलरीज़ लाफ़ायेट का वो संदेशवाहक, क्या सपना है! हे भगवान, वहाँ वाणिज्य विभाग का प्रमुख है। आशा है उसने कुछ नहीं देखा होगा। वो मंत्री जी से इसका ज़िक्र करने में पूरी तरह सक्षम है, जो मुझे सेवानिवृत्तों की सूची में डाल देंगे, खासकर इसलिए क्योंकि लगता है कि वो खुद भी इतने ही संभ्रांत हैं।” एम. डी चार्लस गुस्से से अवाक रह गए। अंत में, इस क्रोधभरी सैर को समाप्त करने के लिए, उन्होंने पत्र निकालने और राजदूत को पढ़ने के लिए देने का फैसला किया, लेकिन उन्हें सावधानी बरतने की चेतावनी दी, क्योंकि उन्हें चार्ली के ईर्ष्यालु होने का नाटक करना पसंद था, ताकि लोग यह सोचें कि वो उससे मोहित हैं। “और,” उन्होंने असीम दयालुता के भाव से कहा, “हमें हमेशा यथासंभव कम से कम परेशानी पैदा करने का प्रयास करना चाहिए।” जुपियन की दुकान पर वापस आने से पहले, लेखक यह कहना चाहेंगे कि यदि

किसी पाठक को उनके द्वारा चित्रित इन असामान्य पात्रों से ठेस पहुँचे तो उन्हें गहरा खेद होगा। एक ओर (और यह इस मामले का कम महत्वपूर्ण पहलू है), ऐसा लग सकता है कि इन पृष्ठों में, समाज के अन्य वर्गों की तुलना में अभिजात वर्ग पर अत्यधिक पतित होने का आरोप लगाया गया है। यदि यह सच होता, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होती। सबसे पुराने परिवार लाल और उभरी हुई नाक या विकृत ठुड्डी जैसे विशिष्ट लक्षण प्रदर्शित करते हैं, जिनमें हर कोई 'वंश' की प्रशंसा करता है। लेकिन इन स्थायी और निरंतर विकसित होने वाली विशेषताओं के बीच, कुछ अन्य भी हैं जो दिखाई नहीं देतीं, अर्थात् प्रवृत्तियाँ और रुचियाँ। यदि इसका कोई आधार होता, तो यह कहना अधिक गंभीर आपत्ति होती कि यह सब हमारे लिए अजनबी है, और हमें अपने आस-पास की कविता से सच्चाई निकालनी चाहिए। सबसे परिचित वास्तविकता से निकाली गई कला वास्तव में मौजूद है और इसका दायरा शायद सबसे बड़ा है। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि ऐसे कार्यों में गहरी रुचि, बल्कि सुंदरता भी पाई जा सकती है, जो ऐसी मानसिकता से प्रेरित होते हैं जो हमारी भावनाओं और विश्वासों से इतनी दूर होती है कि हम उन्हें कभी समझ नहीं पाते; वे हमारे सामने एक बेतुके तमाशे की तरह प्रदर्शित होते हैं। डेरियस के पुत्र ज़ेरक्सेस द्वारा अपने बेड़े को डुबो देने के कारण समुद्र को कोड़ों से दंडित करने का आदेश देने से अधिक काव्यात्मक और क्या हो सकता है?

हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि मोरेल ने, अपने व्यक्तिगत आकर्षण के प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए, बैरन की आलोचना को, जो मानो स्वयं की ओर से आई हो, मोरेल तक पहुँचाया होगा। क्योंकि 'स्टैंड यू अ टी' कहने का चलन दर्जी की दुकान से उसी तरह गायब हो गया, जैसे ड्राइंग रूम से कोई ऐसा घनिष्ठ मित्र गायब हो जाता है जो रोज़ आता था, जिससे किसी न किसी कारण से हमारा झगड़ा हो गया हो, या जिसे हम नज़रों से दूर रखने की कोशिश कर रहे हों और केवल घर के बाहर ही मिलते हों। एम. डी चार्लस 'स्टैंड यू अ टी' के बंद होने से संतुष्ट थे। उन्होंने इसे मोरेल पर अपनी श्रेष्ठता का प्रमाण और लड़की की सुंदरता में से उस एक छोटे से दोष के मिटने का प्रमाण माना। संक्षेप में, अपने जैसे अन्य लोगों की तरह, मोरेल और उससे लगभग सगाई कर चुकी लड़की से सच्चा प्रेम करते हुए, उनके विवाह के प्रबल समर्थक होते हुए भी, वे अपनी इच्छा से कमोबेश हानिरहित छोटे-छोटे दृश्य रचने

की अपनी शक्ति का भरपूर आनंद लेते थे, जिनसे वे स्वयं अपने भाई की तरह ही अलग और श्रेष्ठ बने रहते थे।

मोरेल ने एम. डी चार्लस को बताया था कि वह जुपियन की भतीजी से प्यार करता है और उससे शादी करना चाहता है। बैरन को अपने युवा मित्र के साथ उन मुलाकातों में जाना अच्छा लगता था, जिनमें वह होने वाले ससुर की भूमिका निभाते हुए स्नेहपूर्ण और विवेकपूर्ण व्यवहार करता था। इससे उसे और कुछ भी प्रसन्न नहीं करता था।

मेरी निजी राय यह है कि 'स्टैंड यू अ टी' (चाय पिलाओ) मुहावरा खुद मोरेल ने ही गढ़ा था, और अपने प्रेम में अंधी होकर उस युवती ने अपने प्रेमी की एक ऐसी अभिव्यक्ति अपना ली थी जो उसके बोलने के सुंदर अंदाज़ से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी। बोलने का यही अंदाज़, उससे जुड़े आकर्षक शिष्टाचार और एम. डी चार्लस के संरक्षण के कारण ही उसके कई ग्राहक, जिनके लिए उसने काम किया था, उसे दोस्त की तरह मानते थे, उसे रात के खाने पर बुलाते थे, अपने दोस्तों से मिलवाते थे, हालांकि वह लड़की उनके निमंत्रण केवल बैरन की अनुमति से और उन्हीं शामों को स्वीकार करती थी जो उन्हें ठीक लगती थीं। पाठक आश्चर्य से कहेंगे, "समाज में इतनी लोकप्रिय युवती? कितना असंभावित!" अगर आप इस पर गौर करें, तो यह भी उतना ही असंभावित था कि एक समय अल्बर्टीन आधी रात को मुझसे मिलने आई थी, और अब वह मेरे घर में रह रही है। और फिर भी यह शायद किसी और के लिए असंभव होता, लेकिन अल्बर्टीन के लिए नहीं, जो पिता-माता विहीन अनाथ थी और इतनी अनियंत्रित जिंदगी जी रही थी कि बालबेक में मैंने उसे पहले एक साइकिल चालक की रखैल समझ लिया था। उसकी निकटतम रिश्तेदार श्रीमती बोंटेम्प्स थीं, जो पुराने समय में श्रीमती स्वान के यहाँ अपनी भतीजी की केवल बदतमीजी ही पसंद करती थीं और अब आँखें बंद कर लेती थीं, खासकर अगर ऐसा करके वह उसकी किसी अमीर से शादी करवाकर उससे छुटकारा पा सकें, जिससे कुछ धन चाची की जेब में चला जाए (उच्च समाज में, एक उच्च कुल की और बिल्कुल निर्धन माँ, जब अपने बेटे के लिए एक अमीर दुल्हन ढूंढने में सफल हो जाती है, तो वह युवा जोड़े को अपना भरण-पोषण करने देती है, फर, मोटर-कार जैसे उपहार स्वीकार करती है, और उस बहू से पैसे लेती है जिसे वह पसंद नहीं करती लेकिन अपने दोस्तों से मिलवाती है)।

वह दिन शायद आए जब दर्ज़ी—और मुझे इसमें ज़रा भी हैरानी नहीं होनी चाहिए—समाज में अपनी जगह बनाएँगी। जुपियन की भतीजी का अपवाद होना हमें कोई अनुमान लगाने का आधार नहीं देता, क्योंकि एक घटना से कोई बड़ा बदलाव नहीं आ जाता। वैसे भी, अगर जुपियन की भतीजी की मामूली तरक्की ने कुछ लोगों को चौंकाया भी हो, तो मोरेल उनमें से नहीं थे, क्योंकि कुछ मामलों में उनकी मूर्खता इतनी चरम पर थी कि उन्होंने न केवल खुद से हज़ार गुना ज़्यादा होशियार इस लड़की को 'काफ़ी मूर्ख' कहा, और शायद सिर्फ़ अपने प्रति प्रेम के कारण ही मूर्ख समझा, बल्कि उन्होंने उन ऊँचे दर्ज़ियों को भी साहसी औरतें समझा जो महिलाओं का रूप धारण करके भेस बदल रही थीं, जबकि उन्होंने भ़री प्रतिष्ठा वाले लोगों को अपने घर बुलाया था और जिनके निमंत्रण को उन्होंने ज़रा भी घमंड के बिना स्वीकार किया था। स्वाभाविक रूप से ये न तो गुएरमांटे परिवार की महिलाएं थीं, न ही गुएरमांटे परिवार को जानने वाली महिलाएं, बल्कि मध्यम वर्ग की धनी और बुद्धिमान महिलाएं थीं, जो इतनी उदार थीं कि उन्हें अपने घर में एक दर्जी को आमंत्रित करने में कोई शर्म नहीं महसूस होती थी और साथ ही इतनी विनम्र भी थीं कि उन्हें उस लड़की का संरक्षण करने में कुछ संतुष्टि मिलती थी, जिससे महामहिम बैरन डी चार्लस - बिना किसी अनुचितता के - प्रतिदिन मिलने जाया करते थे।

इस विवाह के विचार से बैरन को सबसे अधिक प्रसन्नता हुई होगी, क्योंकि उन्हें लगा कि इस तरह मोरेल उनसे अलग नहीं होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि जुपियन की भतीजी, जब वह लगभग बच्ची ही थी, तब 'मुसीबत में' थी। और एम. डी चार्लस, मोरेल के सामने उसकी प्रशंसा करते हुए, इस रहस्य को अपने मित्र को बताने में जरा भी संकोच नहीं करते, क्योंकि मित्र क्रोधित हो जाते और इस प्रकार कलह के बीज बो देते। एम. डी चार्लस, हालांकि अत्यंत द्वेषपूर्ण थे, फिर भी वे उन अनेक भले लोगों के समान थे जो किसी पुरुष या स्त्री की प्रशंसा अपनी उदारता के प्रमाण के रूप में करते हैं, परन्तु उन मदिरापरक शब्दों से विष की तरह विमुख रहते हैं, जो बहुत कम बोले जाते हैं और जो कलह को समाप्त कर सकते हैं। इसके बावजूद, बैरन ने कोई भी संकेत देने से परहेज किया, और इसके दो कारण थे। “अगर मैं उसे बता दूँ,” उसने मन ही मन कहा, “कि उसकी प्रेमिका बेदाग नहीं है, तो उसका अहंकार आहत होगा, वह मुझसे नाराज़ हो जाएगा। इसके अलावा, मुझे कैसे पता चलेगा कि वह उससे

प्यार नहीं करता? अगर मैं कुछ न कहूँ, तो यह तिनके की आग जल्द ही अपने आप बुझ जाएगी, मैं उनके संबंधों को अपनी मर्ज़ी से नियंत्रित कर सकूँगा, वह उससे उतना ही प्यार करेगा जितना मैं चाहूँगा। अगर मैं उसे उसकी प्रेमिका के अतीत के गुनाह के बारे में बता दूँ, तो कौन जाने कि मेरा चार्ली अब भी उससे इतना मोहित नहीं है कि ईर्ष्या करने लगे। तब मैं अपने ही कर्मों से एक हानिरहित और आसानी से नियंत्रित होने वाले प्रेम प्रसंग को एक गंभीर जुनून में बदल दूँगा, जिसे संभालना बहुत मुश्किल है।" इन्हीं कारणों से, एम. डी चार्लस ने चुप्पी साधे रखी, जो देखने में तो विवेकपूर्ण लगती थी, लेकिन दूसरे मायने में सराहनीय थी, क्योंकि उसके जैसे पुरुषों के लिए चुप रहना लगभग असंभव है।

बहरहाल, वह लड़की बेहद आकर्षक थी, और एम. डी. चार्लस, जिन्होंने पाया कि वह महिलाओं के प्रति उनकी सभी सौंदर्य संबंधी रुचियों को संतुष्ट करती है, उसकी सैकड़ों तस्वीरें लेना चाहते थे। मोरेल की तरह मूर्ख न होते हुए, उन्हें उन महिलाओं के नाम सुनकर प्रसन्नता हुई जिन्होंने उसे अपने घरों में आमंत्रित किया था, और जिन्हें उनकी सामाजिक सूझबूझ पहचान सकी, लेकिन उन्होंने सावधानी बरती (क्योंकि वे अपनी शक्ति बनाए रखना चाहते थे) कि चार्ली को इस बारे में न बताएं, जो इस मामले में बिलकुल मूर्ख था और मानता था कि 'वायलिन वर्ग' और वर्दुरिन परिवार के अलावा, केवल गुएरमांटे परिवार और बैरन द्वारा गिनाए गए कुछ लगभग शाही घराने ही मौजूद हैं, बाकी सभी 'नीच' या 'गंदगी' हैं। चार्ली ने एम. डी. चार्लस के इन शब्दों का शाब्दिक अर्थ निकाला।

एम. डी चार्लस के लिए इस युवा जोड़े के विवाह की प्रतीक्षा करने के कारणों में से एक यह था कि जुपियन की भतीजी एक प्रकार से मोरेल के व्यक्तित्व का विस्तार होगी, और इस प्रकार बैरन की उस पर शक्ति और ज्ञान का प्रतीक बनेगी। वैवाहिक दृष्टि से वायलिन वादक की भावी पत्नी के साथ 'विश्वासघात' करने के बारे में एम. डी चार्लस को कभी कोई संकोच नहीं हुआ होगा। लेकिन एक 'युवा जोड़े' का प्रबंधन करना, मोरेल की पत्नी का शक्तिशाली और सर्वशक्तिमान रक्षक बनना, जो यदि बैरन को देवता मानती है तो यह सिद्ध होगा कि मोरेल ने ही उसके मन में यह विचार डाला है, और इस प्रकार उसमें मोरेल का कुछ अंश समाहित होगा, एम. डी चार्लस के प्रभुत्व के स्वरूप में एक नई विविधता जोड़ता है और उनके 'प्राणी' मोरेल को एक अधिक जीवंत प्राणी के रूप में प्रकट करता है, यानी बैरन को उसमें कुछ

अलग, नया, अनोखा प्रेम करने योग्य देता है। शायद अब यह प्रभुत्व पहले से भी अधिक मजबूत होगा। क्योंकि जहाँ मोरेल अकेले, मानो नग्न अवस्था में, अक्सर बैरन का विरोध करता था, जिसे वह पुनः जीतने के प्रति आश्वस्त था, वहीं विवाह के बाद, अपने घर, अपने मकान, अपने भविष्य का विचार उसे अधिक शीघ्रता से भयभीत करने लगा, और वह एम. डी चार्लस की इच्छाओं के लिए एक व्यापक क्षेत्र, एक आसान पहुँच प्रदान करने लगा। यह सब, और यहाँ तक कि, यदि कुछ और न मिले, तो उन शामों में जब वह ऊब जाता था, पति-पत्नी के बीच झगड़ा कराने की संभावना (बैरन को युद्ध-चित्रों से कभी कोई आपत्ति नहीं थी) उसे सुखद लगती थी। हालाँकि, युवा लोगों की उस निर्भरता की स्थिति का विचार उससे कहीं अधिक सुखद था जिसमें वे स्वयं पर निर्भर होकर जीवन व्यतीत करेंगे। एम. डी चार्लस का मोरेल के प्रति प्रेम तब और भी सुखद हो गया जब उन्होंने मन ही मन कहा: "उनकी पत्नी भी मेरी उतनी ही होंगी जितना कि वे हैं, वे हमेशा मुझे नाराज़ न करने का ध्यान रखेंगे, वे मेरी हर इच्छा का पालन करेंगे, और इस प्रकार वह उस बात का प्रतीक होंगी (जिसे मैं अब तक नज़रअंदाज़ करता रहा हूँ) जिसे मैं लगभग भूल चुका था, जो मेरे दिल को बेहद प्रिय है, कि पूरी दुनिया के लिए, हर उस व्यक्ति के लिए जो देखता है कि मैं उनकी रक्षा करता हूँ, उन्हें आश्रय देता हूँ, मेरे लिए, मोरेल मेरी हैं।" दुनिया की नज़रों में और खुद अपनी नज़रों में यह गवाही एम. डी चार्लस को किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्रसन्न करती थी। क्योंकि जिसे हम प्यार करते हैं, उसे पाना प्रेम से भी बड़ा आनंद है। अक्सर जो लोग इस प्रेम को दुनिया से छिपाते हैं, वे ऐसा केवल इस डर से करते हैं कि कहीं उनका प्रिय उनसे छिन न जाए। और इस समझदारी भरी चुप्पी से उनका सुख कम हो जाता है।

पाठक को शायद याद होगा कि मोरेल ने एक बार बैरन को बताया था कि उसकी सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा किसी युवती को, और विशेष रूप से इस युवती को, बहकाना है। अपने इस प्रयास में सफल होने के लिए वह उससे शादी करने का वादा करेगा और, जब यह घिनौना काम पूरा हो जाएगा, तो वह अपना 'कांटा काट देगा'; लेकिन मोरेल ने जुपियन की भतीजी के प्रति जो प्रेम का इज़हार किया था, उसके कारण एम. डी चार्लस यह बात भूल गए थे। इतना ही नहीं, मोरेल शायद खुद भी इसे भूल गए थे। मोरेल के स्वभाव—जैसा कि उन्होंने व्यंग्यपूर्वक स्वीकार किया था, शायद चतुराई से बढ़ा-चढ़ाकर भी कहा था—और उस क्षण के बीच शायद

एक वास्तविक अंतर था जब उनका स्वभाव उन पर फिर से हावी हो जाता। जैसे-जैसे वह उस युवती से बेहतर परिचित होते गए, वह उन्हें आकर्षित करने लगी, उन्हें वह पसंद आने लगी। वह खुद को इतना कम जानते थे कि उन्होंने निस्संदेह कल्पना की होगी कि वह उससे प्यार करते हैं, शायद वास्तव में वह हमेशा उससे प्यार करते रहेंगे। यह सच है कि उसकी प्रारंभिक इच्छा, उसका आपराधिक इरादा, बना रहा, लेकिन भावनाओं की इतनी परतों से ढका हुआ था कि यह साबित करने के लिए कुछ भी नहीं है कि वायलिन वादक यह कहने में ईमानदार नहीं होगा कि यह दुष्ट इच्छा उसके कृत्य का असली मकसद नहीं थी। इसके अलावा, एक संक्षिप्त अवधि ऐसी भी थी जिसके दौरान, बिना स्वयं स्वीकार किए, उसे यह विवाह आवश्यक प्रतीत हुआ। उस समय मोरेल हाथ में तेज ऐंठन से पीड़ित था, और उसे वायलिन छोड़ना पड़ सकता था। अपनी कला को छोड़कर बाकी सभी चीजों में वह आश्चर्यजनक रूप से आलसी था, इसलिए उसके सामने यह सवाल मंडरा रहा था कि उसका भरण-पोषण कौन करेगा, और उसने एम. डी चार्लस के बजाय जुपियन की भतीजी को प्राथमिकता दी, क्योंकि इस व्यवस्था से उसे अधिक स्वतंत्रता और विभिन्न प्रकार की महिलाओं के साथ संबंध बनाने का व्यापक विकल्प मिलता, जिनमें प्रशिक्षु महिलाएं भी शामिल थीं, जो लगातार बदलती रहती थीं, जिनके लिए वह जुपियन की भतीजी को व्यभिचार करने के लिए मजबूर करता था, और अमीर और सुंदर महिलाएं भी थीं जिनके लिए वह उसे वेश्यावृत्ति के लिए मजबूर करता था। मोरेल ने कभी सोचा भी नहीं था कि उसकी होने वाली पत्नी इन व्यवस्थाओं को स्वीकार करने से इनकार कर देगी, कि वह इतनी जिद्दी हो सकती है। हालांकि, ये बातें पीछे छूट गईं, क्योंकि अब उसका दर्द ठीक हो चुका था और उनकी जगह शुद्ध प्रेम ने ले ली थी। उसका वायलिन और एम. डी चार्लस से मिलने वाला भत्ता ही काफी था, क्योंकि मोरेल की शादी लड़की से हो जाने के बाद एम. डी चार्लस का उस पर दावा निश्चित रूप से कम हो जाएगा। प्रेम और अपनी स्वतंत्रता के हित में, विवाह ही सबसे ज़रूरी था। उसने जुपियन को औपचारिक रूप से विवाह का प्रस्ताव दिया, जिसने अपनी भतीजी से सलाह ली। यह बिल्कुल अनावश्यक था। वायलिन वादक के लिए लड़की का प्यार उसके चारों ओर ऐसे उमड़ रहा था जैसे उसके बाल खुले हों, जैसे उसकी चमकती आँखों में खुशी। मोरेल में, लगभग हर वो चीज़ जो उसे अच्छी या फायदेमंद लगती थी, नैतिक भावनाओं और उनसे मेल खाने वाले शब्दों को जगा देती थी,

कभी-कभी तो उसे रुला भी देती थी। इसलिए, अगर यह शब्द उसके लिए उपयुक्त हो, तो उसने जुपियन की भतीजी को भावपूर्ण ढंग से संबोधित किया (भावुकतापूर्ण भाषण तो उन कई युवा रईसों के भी होते हैं जो पूर्ण आलस्यपूर्ण जीवन की कामना करते हुए किसी मध्यमवर्गीय करोड़पति की आकर्षक पुत्री से बात करते हैं), ठीक वैसे ही जैसे उसने एम. डी चार्लस को एक कुंवारी लड़की को बहकाने और उसका कौमार्य भंग करने के बारे में जो भाषण दिया था, वह घोर नीचता से भरा था। लेकिन जिस व्यक्ति से उसे आनंद मिलता था और जिसके साथ उसने गंभीर प्रतिज्ञा की थी, उसके प्रति इस नेक उत्साह का एक दूसरा पहलू भी था। जैसे ही वह व्यक्ति उसे आनंद देना बंद कर देता था, या उदाहरण के लिए, यदि उसके द्वारा किए गए वादे को पूरा करने का दायित्व उसे अप्रसन्न करता था, तो वह तुरंत उसके प्रति घृणा का पात्र बन जाती थी, जिसे वह अपनी दृष्टि में उचित ठहराता था और जो तंत्रिका तंत्र में कुछ गड़बड़ी के बाद, जैसे ही उसका तंत्रिका तंत्र संतुलित होता था, उसे यह सिद्ध करने में सक्षम बनाता था कि, विशुद्ध रूप से नैतिक दृष्टिकोण से भी देखा जाए, तो वह किसी भी दायित्व से मुक्त है। इस प्रकार, बालबेक में अपने प्रवास के अंत में, वह किसी तरह अपना सारा पैसा खो बैठा था और एम. डी चार्लस से इस मामले का जिक्र करने का साहस न करते हुए, किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश करने लगा जिससे वह मदद मांग सके। उसने अपने पिता से (जिन्होंने उसे कभी भी दूसरों पर निर्भर न रहने की सलाह दी थी) सीखा था कि ऐसी परिस्थितियों में सही तरीका यह है कि जिस व्यक्ति से आप ऋण मांगना चाहते हैं, उसे लिखें कि "आपको उससे व्यावसायिक कार्य के लिए बात करनी है," "उससे व्यावसायिक मुलाकात का समय मांगें।" इस जादुई नुस्खे ने मोरेल को इतना मोहित कर लिया था कि मुझे लगता है कि वह अपना पैसा खोने में भी खुशी महसूस करता, सिर्फ इसलिए कि उसे 'व्यापार के सिलसिले में' मिलने का समय मिल जाए। अपने जीवनकाल में उसने पाया कि इस नुस्खे में वह गुण नहीं था जो उसने सोचा था। उसने पाया कि कुछ लोग, जिन्हें वह आम तौर पर कभी पत्र नहीं लिखता, 'व्यापार के सिलसिले में' बात करने के लिए लिखे गए उसके पत्र का पाँच मिनट के भीतर जवाब नहीं देते थे। अगर दोपहर बीत जाती और उसे कोई जवाब नहीं मिलता, तो उसके मन में कभी यह ख्याल नहीं आता कि, अगर सबसे अच्छी व्याख्या की जाए, तो यह संभव है कि जिसे पत्र लिखा गया था वह अभी तक घर नहीं आया हो, या उसे और पत्र

लिखने हों, या फिर वह घर से बाहर ही चला गया हो, बीमार हो गया हो, या कुछ इसी तरह की बात हो। अगर किसी असाधारण भाग्य से मोरेल को अगली सुबह मिलने का समय मिल जाता, तो वह अपने संभावित लेनदार से कहता: "मुझे जवाब न मिलने पर बहुत आश्चर्य हुआ, मैं सोच रहा था कि क्या आपको कोई परेशानी है, आपको देखकर खुशी हुई कि आप बिल्कुल ठीक हैं," और इसी तरह की बातें। तो फिर, बालबेक में, और मुझे यह बताए बिना कि वह उससे 'व्यापार' की बात करना चाहता है, उसने मुझसे उस ब्लोच से मिलवाने के लिए कहा, जिसके साथ उसने एक सप्ताह पहले ट्रेन में इतना बुरा बर्ताव किया था। ब्लोच ने उसे पाँच हज़ार फ़्रैंक उधार देने में ज़रा भी संकोच नहीं किया—या यूँ कहें कि उसके लिए एम. निस्सिम बर्नार्ड से ऋण दिलवाया। उस पल से मोरेल ब्लोच का बहुत बड़ा प्रशंसक बन गया। उसकी आँखों में आँसू थे और वह खुद से पूछ रहा था कि वह उस व्यक्ति के प्रति अपना आभार कैसे व्यक्त करे जिसने उसकी जान बचाई थी। आखिरकार, मैंने उसकी ओर से एम. डी चार्लस से हर महीने एक हज़ार फ़्रैंक माँगने का जिम्मा लिया, जो वह तुरंत ब्लोच को भेज देगा और इस तरह ब्लोच को बहुत कम समय में ही पैसा वापस मिल जाएगा। पहले महीने, ब्लोच की उदारता से प्रभावित मोरेल ने उसे तुरंत एक हज़ार फ़्रैंक भेज दिए, लेकिन इसके बाद उसे शायद लगा कि बचे हुए चार हज़ार फ़्रैंक का कोई और उपयोग उसके लिए ज़्यादा संतोषजनक हो सकता है, क्योंकि वह ब्लोच के बारे में तरह-तरह की बुरी बातें कहने लगा। ब्लोच को देखते ही उसके मन में बुरे विचार उमड़ने लगे। ब्लोच खुद भी यह भूल गया था कि उसने मोरेल को कितनी रकम उधार दी थी, और उसने मोरेल से 4,000 फ़्रैंक के बजाय 3,500 फ़्रैंक मांगे थे, जिससे वायलिन वादक को 500 फ़्रैंक का फायदा हो जाता। इस पर मोरेल ने कहा कि इस तरह के बेतुके धोखे को देखते हुए, वह न केवल एक पैसा भी नहीं देगा, बल्कि अगर मोरेल उस पर मानहानि का मुकदमा न करे तो वह खुद को बहुत भाग्यशाली समझेगा। यह कहते हुए उसकी आँखें गुस्से से लाल हो उठीं। वह सिर्फ इतना कहकर संतुष्ट नहीं हुआ कि ब्लोच और एम. निस्सिम बर्नार्ड को उसके खिलाफ शिकायत करने का कोई कारण नहीं है, बल्कि उसने यह भी कहा कि वे खुद को भाग्यशाली समझें कि उसने उनके खिलाफ कोई शिकायत नहीं की। अंततः, एम. निसिम बर्नार्ड द्वारा यह कहने पर कि थिबाउट मोरेल जितना ही अच्छा बजाता था, मोरेल ने फैसला किया कि उसे इस मामले को अदालत में ले जाना चाहिए। यह

टिप्पणी उसके पेशे में उसे नुकसान पहुँचाने वाली थी, और फ्रांस में, विशेषकर यहूदियों के विरुद्ध, न्याय का नामोनिशान नहीं था (एक इस्राइली से 5,000 फ़्रैंक का ऋण लेने के परिणामस्वरूप मोरेल में यहूदी-विरोध पैदा हो गया था), वह हमेशा भरी हुई रिवाल्वर के बिना बाहर नहीं निकलता था। इसी तरह की घबराहट भरी प्रतिक्रिया, तीव्र स्नेह के बाद, जल्द ही मोरेल में दर्जी की भतीजी के प्रति भी उत्पन्न हुई। यह सच है कि एम. डी चार्लस अनजाने में, कुछ हद तक, इस बदलाव के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं, क्योंकि उनकी आदत थी कि वे बिना सोचे-समझे, केवल उन्हें चिढ़ाने के लिए कहते थे कि शादी के बाद वे फिर कभी उन पर नज़र नहीं डालेंगे और उन्हें अपने दम पर उड़ने के लिए छोड़ देंगे। यह विचार अपने आप में मोरेल को उस लड़की से अलग करने के लिए पर्याप्त नहीं था; लेकिन, यह विचार उसके मन में छिपा हुआ था और समय आने पर अन्य समान विचारों के साथ जुड़ने के लिए तैयार था, जो एक बार यौगिक बन जाने के बाद एक शक्तिशाली विघटनकारी कारक बनने में सक्षम था।

हालांकि, ऐसा बहुत कम ही होता था कि मेरी मुलाकात एम. डी चार्लस और मोरेल से हो पाती। अक्सर जब मैं डचेस से लौटता, तब तक वे जुपियन की दुकान में जा चुके होते थे, क्योंकि उनकी संगति में मुझे इतना आनंद मिलता था कि मैं न केवल अल्बर्टीन की वापसी की चिंता को भूल जाता था, बल्कि उनकी वापसी का समय भी भूल जाता था।

श्रीमती डी गुएरमांटेस के यहाँ बिताए अन्य दिनों में से मैं एक दिन को अलग रखना चाहूँगा, जो एक मामूली घटना से चिह्नित था, जिसका क्रूर महत्व मुझे बिल्कुल समझ नहीं आया और बहुत बाद तक मेरे दिमाग में नहीं आया। उस खास दोपहर को, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मुझे, यह जानते हुए कि मुझे सिरिंगा की कुछ शाखाएँ पसंद हैं, दीं, जो उन्हें दक्षिण से भेजी गई थीं। जब मैं डचेस से विदा लेकर ऊपर अपने फ्लैट में गया, तो अल्बर्टीन पहले ही लौट चुकी थी, और सीढ़ियों पर मेरी मुलाकात एंड्री से हुई, जो उन फूलों की तेज़ सुगंध से परेशान लग रही थी जिन्हें मैं घर ला रहा था।

"क्या, तुम इतनी जल्दी वापस आ गए?" मैंने कहा। "अभी-अभी, लेकिन अल्बर्टीन को कुछ पत्र लिखने थे, इसलिए उसने मुझे भेज दिया।" "तुम्हें नहीं लगता कि वो कोई शरारत कर रही है?" "बिल्कुल नहीं, मुझे लगता है वो अपनी मौसी को लिख रही है, लेकिन तुम जानती हो कि उसे तेज़ खुशबू बिल्कुल पसंद नहीं है, उसे ये सिरिंगा फूल देखकर बिल्कुल अच्छा नहीं

लगेगा।" "कितनी बेवकूफी की बात है! मैं फ्रांस्वा से कह दूंगी कि इन्हें सीढ़ी पर रख दे।" "क्या तुम्हें लगता है कि अल्बर्टीन को तुम पर इनकी खुशबू नहीं आएगी? ट्यूबरोज़ के बाद, मुझे तो हमेशा यही लगता है कि इनकी खुशबू सबसे तेज़ होती है; खैर, मुझे लगता है फ्रांस्वा खरीदारी करने गई है।" "लेकिन अगर ऐसा है, तो मेरे पास चाबी नहीं है, तो मैं अंदर कैसे जाऊंगी?" "अरे, बस घंटी बजा दो। अल्बर्टीन तुम्हें अंदर आने देगी। वैसे भी, फ्रांस्वा शायद तब तक वापस आ गई होगी।"

मैंने एंड्री को अलविदा कहा। घंटी बजाते ही अल्बर्टीन दरवाजा खोलने आ गई, जो थोड़ा मुश्किल था क्योंकि फ्रांस्वा बाहर गई हुई थी और अल्बर्टीन को लाइट जलाने का तरीका नहीं पता था। आखिरकार उसने मुझे अंदर आने दिया, लेकिन सिरिंज की गंध से वह भाग गई। मैं उन्हें रसोई में ले गई, जिसके परिणामस्वरूप मेरी मालकिन ने अपना पत्र अधूरा छोड़कर (क्यों, यह मेरी समझ से परे था) मेरे कमरे में जाने का समय पा लिया, जहाँ से उसने मुझे पुकारा और मेरे बिस्तर पर लेट गई। उस समय भी, मुझे इसमें कुछ भी ऐसा नहीं लगा जो पूरी तरह से स्वाभाविक न हो, ज़्यादा से ज़्यादा थोड़ा उलझन भरा, लेकिन किसी भी मामले में महत्वहीन। वह एंड्री के साथ लगभग पकड़ी जा चुकी थी और उसने लाइट बंद करके, मेरे कमरे में जाकर, ताकि मैं उसके बिस्तर की अस्त-व्यस्त हालत न देखूँ, और पत्र लिखने में व्यस्त होने का नाटक करके थोड़ी देर के लिए राहत पा ली थी। लेकिन इन सब बातों पर हम बाद में चर्चा करेंगे, एक ऐसी स्थिति जिसकी सच्चाई का मुझे कभी पता नहीं चला। सामान्य तौर पर, और इस एक घटना को छोड़कर, डचेस से मिलने के बाद जब मैं लौटा तो सब कुछ बिल्कुल सामान्य था। चूंकि अल्बर्टीन को कभी पता नहीं होता था कि मैं रात के खाने से पहले उसके साथ बाहर जाना चाहूँगा या नहीं, इसलिए मुझे अक्सर हॉल में उसकी टोपी, लबादा और छाता मिल जाते थे, जिन्हें वह ज़रूरत पड़ने पर इस्तेमाल करने के लिए वहाँ छोड़ देती थी। जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोलकर उन्हें देखा, घर का वातावरण फिर से जीवंत हो उठा। मुझे लगा कि विरल हवा की जगह, उसमें खुशी भरी हुई है। मैं अपने उदासी से बाहर आ गया, इन छोटी-छोटी चीज़ों को देखकर मुझे अल्बर्टीन की याद आ गई, मैं उससे मिलने दौड़ पड़ा।

जिन दिनों मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस के पास नहीं जाता था, उन दिनों समय बिताने के लिए, अपनी प्रेमिका के लौटने से पहले के एक घंटे के दौरान, मैं एल्स्टिर की रचनाओं का एक एल्बम, बर्गोट की पुस्तकों में से एक, विंटेइल का सोनाटा उठाता था।

फिर, ठीक वैसे ही जैसे कला की वे कृतियाँ जो केवल आँखों या कानों को ही संबोधित करती प्रतीत होती हैं, यह अपेक्षा करती हैं कि यदि हम उनका आनंद लेना चाहते हैं, तो हमारी जागृत बुद्धि उन अंगों के साथ घनिष्ठ रूप से सहयोग करे, मैं अनजाने में अपने भीतर से उन सपनों को जगाने लगा जो अल्बर्टीन ने मुझे बहुत पहले, उसे जानने से पहले, प्रेरित किए थे - वे सपने जो रोजमर्रा की जिंदगी की दिनचर्या में दब गए थे। मैंने उन्हें संगीतकार के शब्दों या चित्रकार की छवि में एक भट्टी की तरह ढाल दिया, या उनका उपयोग उस पुस्तक को समृद्ध करने के लिए किया जिसे मैं पढ़ रहा था। और निस्संदेह परिणामस्वरूप पुस्तक और भी अधिक जीवंत प्रतीत हुई। लेकिन अल्बर्टीन को भी उतना ही लाभ हुआ जब वह उन दो संसारों में से एक से बाहर निकल गई, जिनमें हम प्रवेश कर सकते हैं और जिनमें हम बारी-बारी से एक ही वस्तु को रख सकते हैं, इस प्रकार पदार्थ के भारी भार से मुक्त होकर मन के तरल स्थान में स्वतंत्र रूप से खेलने लगी। मैंने स्वयं को अचानक और क्षण भर के लिए इस चिड़चिड़ी लड़की के लिए तीव्र इच्छा महसूस करने में सक्षम पाया। उस क्षण वह एल्स्टिर या बर्गोट की कृति जैसी प्रतीत हो रही थी, कल्पना और कला के परिप्रेक्ष्य में उसे देखकर मुझे क्षणिक उत्साह का अनुभव हुआ।

तभी कोई आकर मुझे बताने लगा कि वह लौट आई है; हालाँकि एक नियम था कि अगर मैं अकेला न होऊँ, तो उसका नाम न लिया जाए, उदाहरण के लिए अगर मेरे साथ कमरे में ब्लोच हो, जिसे मैं थोड़ी देर और रुकने के लिए मजबूर कर दूँ ताकि हॉल में मेरी मालकिन से मिलने का कोई खतरा न हो। क्योंकि मैंने यह बात छुपाई थी कि वह घर में ठहरी हुई थी, और यहाँ तक कि मैंने उसे कभी वहाँ देखा भी था, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं मेरा कोई दोस्त उससे प्यार न कर बैठे और बाहर उसका इंतज़ार न करे, या गलियारे या हॉल में क्षण भर की मुलाक़ात में वह इशारा करके मिलने का समय तय न कर ले। तभी मैंने अल्बर्टीन के पेटीकोट की सरसराहट सुनी जब वह अपने कमरे की ओर जा रही थी, क्योंकि सावधानी के कारण और शायद उसी भावना से, जिसके साथ, जब हम ला रास्पेलियर में रात के खाने पर जाया

करते थे, वह ध्यान रखती थी कि मुझे ईर्ष्या का कोई कारण न हो, वह मेरे कमरे में नहीं आई, यह जानते हुए कि मैं अकेला नहीं हूँ। लेकिन यह केवल इसी कारण से नहीं था, जैसा कि मुझे अचानक एहसास हुआ। मुझे याद आया; मैं एक अलग अल्बर्टीन को जानता था, फिर अचानक वह एक और अल्बर्टीन में बदल गई, आज की अल्बर्टीन में। और इस बदलाव के लिए मैं खुद के अलावा किसी और को ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकता था। जो बातें वह मुझसे पहले आसानी से, फिर जानबूझकर तब कह देती थी जब हम सिर्फ दोस्त थे, वो बातें उसके मुंह से निकलना बंद हो गईं जैसे ही उसे शक हुआ कि मैं उससे प्यार करता हूँ, या शायद प्यार का नाम लिए बिना, उसने मेरे अंदर एक जिज्ञासु भावना को भांप लिया जो जानना चाहती है, जानकर दुखी होती है, और और भी जानने की चाह रखती है। उस दिन से उसने मुझसे सब कुछ छिपाया। वह मेरे कमरे से दूर रहती थी अगर उसे लगता कि मेरा साथी (ऐसा बहुत कम होता था) पुरुष नहीं बल्कि महिला है, वही जिसकी आँखें एक समय में तब चमक उठती थीं जब मैं किसी लड़की का ज़िक्र करता था: "तुम्हें उसे यहाँ बुलाने की कोशिश करनी चाहिए। मैं उससे मिलना चाहूँगी।" "लेकिन उसका अंदाज़ अच्छा नहीं है।" "बेशक, इससे तो और भी मज़ा आता है।" उस पल, शायद मैं सब कुछ जान चुका होता। और सचमुच, जब उस छोटे से कैसिनो में उसने अपना स्तन एंड्री से अलग किया था, तो मेरा मानना है कि यह मेरी उपस्थिति के कारण नहीं, बल्कि कॉटार्ड की उपस्थिति के कारण था, जिसके बारे में उसने शायद सोचा होगा कि वह उसकी बदनामी कर सकता है। फिर भी, तब भी, वह पहले से ही 'शांत' होने लगी थी, उसके होठों से अब विश्वास भरी बातें नहीं निकलती थीं, उसके हाव-भाव संयमित हो गए थे। इसके बाद, उसने अपने आप को उन सभी चीजों से मुक्त कर लिया था जो मेरी भावनाओं को झकझोर सकती थीं। अपने जीवन के उन हिस्सों के बारे में, जिनके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था, उसने एक ऐसा निर्दोष चरित्र दिया जिसकी अज्ञानता ने उसे और भी अधिक स्पष्ट कर दिया। और अब, परिवर्तन पूरा हो चुका था, अगर मैं अकेला नहीं होता तो वह सीधे अपने कमरे में चली जाती, न केवल मुझे परेशान करने के डर से, बल्कि मुझे यह दिखाने के लिए कि उसे इस बात की परवाह नहीं है कि मेरे साथ कौन है। केवल एक ही बात थी जो वह मेरे लिए फिर कभी नहीं करेगी, जो वह केवल उन दिनों में करती जब मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, और वह उस समय बिना किसी झिझक के करती, यानी मुझसे अपने

दिल की बात खुलकर कहना। मुझे हमेशा एक न्यायाधीश की तरह, वाणी की उन नासमझियों से अनिश्चित निष्कर्ष निकालने पड़ते थे जिन्हें शायद अपराध की परिकल्पना किए बिना पूरी तरह से समझाना असंभव था। और उसे हमेशा लगता था कि मैं उससे ईर्ष्या करता हूँ और उसका न्याय करता हूँ।

जब मैं अल्बर्टीन के कदमों की आहट सुन रहा था और इस बात से मुझे थोड़ी राहत मिल रही थी कि वह उस शाम फिर बाहर नहीं जाएगी, तो मुझे यह कितना अद्भुत लगा कि इस लड़की के लिए, जिसे मैं कभी जान भी नहीं सकता था, हर दिन घर लौटना मेरे घर में प्रवेश करने जैसा था। बालबेक में, जिस रात वह होटल में सोने आई थी, उस रात मैंने जो आनंद, रहस्य और कामुकता का मिश्रण, क्षणिक और अधूरा सा महसूस किया था, वह अब पूर्ण, स्थिर हो गया था, मेरे अब तक खाली घर को घरेलू, लगभग वैवाहिक सुख के एक स्थायी भंडार से भर दिया था (जो गलियारों में भी फैल रहा था), जिस पर मेरी सभी इंद्रियां, या तो सक्रिय रूप से, या जब मैं अकेला होता था, कल्पना में, उसके लौटने की प्रतीक्षा करते हुए, चुपचाप टिकी हुई थीं। जब मैंने अल्बर्टीन के कमरे का दरवाज़ा उसके पीछे बंद होते सुना, अगर मेरे साथ कोई दोस्त होता, तो मैं उसे वहाँ से हटाने की जल्दी करता, और तब तक उसका पीछा नहीं छोड़ता जब तक मुझे पूरा यकीन न हो जाए कि वह सीढ़ियों पर है, ताकि मैं उसे कुछ कदम नीचे तक छोड़ भी सकूँ। उसने मुझे चेतावनी दी कि मुझे सर्दी लग जाएगी, और बताया कि हमारा घर सचमुच बर्फीला है, हवाओं का अड्डा है, और वह इसमें तब तक नहीं रहेगा जब तक उसे इसके लिए पैसे न दिए जाएँ। यह ठंड का मौसम शिकायत का कारण था क्योंकि यह अभी शुरू ही हुआ था, और लोग अभी तक इसके आदी नहीं हुए थे, लेकिन इसी वजह से इसने मेरे अंदर एक खुशी जगा दी, साथ ही सर्दियों की पहली शामों की एक अनजाने में याद भी आ गई, जब बीते सालों में, गाँव से लौटकर, पेरिस के भूले हुए सुखों को फिर से महसूस करने के लिए, मैं किसी कैफ़े-कॉन्सर्ट में जाया करता था। और इसलिए, होठों पर एक गीत लिए, अपने दोस्त को अलविदा कहने के बाद, मैं फिर से सीढ़ियाँ चढ़कर फ्लैट में दाखिल हुआ। गर्मी का मौसम उड़ गया था, पक्षियों को अपने साथ ले गया था। लेकिन अन्य संगीतकार, अदृश्य, आंतरिक, उनकी जगह ले चुके थे। और जिस बर्फीली हवा के झोंके की ब्लोच ने निंदा की थी, जो हमारे अपार्टमेंट के बेढंगे दरवाजों से मधुरता से सीटी बजाता हुआ आ रहा था, उसका (जैसे जंगल

के पक्षी गर्मियों के सुहावने दिनों का स्वागत करते हैं) फ्रैगसन, मायोल या पॉलस के गीतों के टुकड़ों से, अनियंत्रित रूप से गुनगुनाते हुए, जोश से स्वागत किया जा रहा था। इसी बीच, अल्बर्टीन मेरी ओर आ रही थी। "मैं कहती हूँ, जब तक मैं अपना सामान उतार रही हूँ, मैं तुम्हें एंड्री से मिलवा दूँगी, वह एक मिनट के लिए आई थी, हालचाल पूछने के लिए।" और अब भी अपने उस बड़े भूरे घूंघट में लिपटी हुई, जो उसकी चिनचिला टोपी से गिर रहा था, जो मैंने उसे बालबेक में दी थी, वह मुझसे मुँह मोड़कर अपने कमरे में वापस चली गई, मानो उसे अंदाज़ा हो गया हो कि एंड्री, जिसे मैंने उसकी देखभाल करने का ज़िम्मा सौंपा था, जल्द ही उनके दिन भर के कारनामों का पूरा ब्यौरा देकर, किसी परिचित व्यक्ति से हुई मुलाक़ात का ज़िक्र करते हुए, उस पूरे दिन की सैर के अस्पष्ट क्षेत्रों को कुछ हद तक स्पष्ट कर देगी, जिसकी मैं कल्पना भी नहीं कर पा रहा था। एंड्री की कमियाँ अब और भी स्पष्ट हो गई थीं; वह अब उतनी सुखद साथी नहीं रही थी जितनी पहली बार मिलने पर थी। अब सतह पर एक तरह की कड़वी बेचैनी दिखाई देती थी, जो समुद्र की लहरों की तरह उमड़ने को तैयार रहती थी, बस अगर मैं गलती से भी अल्बर्टीन और मुझे खुशी देने वाली किसी बात का ज़िक्र कर देता। इससे एंड्री का मेरे प्रति दयालु होना और मुझे अन्य मिलनसार लोगों की तुलना में ज़्यादा पसंद करना कम नहीं हुआ—और मुझे इसका कई बार प्रमाण मिला है। लेकिन किसी व्यक्ति के चेहरे पर खुशी की हल्की सी झलक भी, अगर वह खुद उसकी वजह से न हो, तो उसके मन को उतना ही झकझोर देती थी जितना कि ज़ोर से बंद होते दरवाज़े से लगने वाला झटका। वह उन कष्टों को तो सहन कर सकती थी जिनमें उसका कोई हाथ नहीं था, लेकिन सुखों को नहीं; अगर वह देखती कि मैं अस्वस्थ हूँ, तो वह दुखी होती, मेरे लिए तरस खाती, और मेरी देखभाल करने के लिए रुक जाती। लेकिन अगर मैं किताब बंद करते हुए, आनंदित भाव से अंगड़ाई लेते हुए, यह कहते हुए भी संतुष्टि का इज़हार करती: "आह! मैंने इस मनोरंजक किताब के साथ सचमुच एक सुखद दोपहर बिताई है," तो ये शब्द, जो मेरी माँ, अल्बर्टीन, सेंट-लूप को खुशी देते, एंड्री में एक तरह की अस्वीकृति, शायद बस एक तरह की तंत्रिका संबंधी चिड़चिड़ाहट पैदा कर देते। मेरी संतुष्टियाँ उसे ऐसी झुंझलाहट देती थीं जिसे वह छिपा नहीं पाती थी। इन कमियों के साथ-साथ कुछ और गंभीर कमियाँ भी थीं; एक दिन जब मैंने उस नौजवान का ज़िक्र किया जो रेसिंग और गोल्फ़ में तो इतना पारखी था, लेकिन बाकी सब मामलों में

बिलकुल अनपढ़ था, तो एंड्री ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा: "तुम्हें पता है कि उसका बाप एक धोखेबाज़ है, वो बस बाल-बाल मुक़दमे से बच गया। वो अब पहले से भी ज़्यादा अकड़ दिखा रहा है, लेकिन मैं सबको इसके बारे में बताती रहती हूँ। काश वो मेरे खिलाफ़ मानहानि का मुकदमा कर दे। मैं गवाह के कटघरे में कमाल कर दूँगी!" उसकी आँखें चमक उठीं। खैर, मुझे पता चला कि बाप ने कुछ भी गलत नहीं किया था, और एंड्री भी यह बात किसी और से बेहतर जानती थी। लेकिन उसे लगता था कि बेटा उसे नीचा समझता है, इसलिए उसने कुछ ऐसा ढूँढ़ा जिससे वो शर्मिंदा हो जाए, उसे लज्जित कर दे, उसने सबूतों की एक लंबी-चौड़ी कहानी गढ़ ली थी, जिसे उसने खुद अदालत में पेश करने की कल्पना की थी, और खुद को बार-बार उन बातों को दोहराते-दोहराते शायद अब उसे यह एहसास ही नहीं रहा था कि वो सच नहीं थीं। और इसलिए, उसकी वर्तमान स्थिति में (और उसकी क्षणिक, मूर्खतापूर्ण नफरतों के बिना भी), मैं उससे मिलना नहीं चाहता, अगर यह केवल उस द्वेषपूर्ण संवेदनशीलता के कारण न होता जिसने उसके गर्मजोशी भरे और बेहतर स्वभाव को एक कठोर और ठंडे आवरण से जकड़ रखा था। लेकिन मेरी मालकिन के बारे में जो जानकारी केवल वही मुझे दे सकती थी, वह मेरे लिए इतनी महत्वपूर्ण थी कि मैं उसे प्राप्त करने के इतने दुर्लभ अवसर को खो नहीं सकता था। एंड्री मेरे कमरे में आई और उसने दरवाजा बंद कर दिया; वे एक ऐसी लड़की से मिली थीं जिसे वे जानती थीं, जिसका जिक्र अल्बर्टीन ने मुझसे कभी नहीं किया था। "उन्होंने किस बारे में बात की?" "मैं आपको नहीं बता सकती; मैंने मौका देखकर, क्योंकि अल्बर्टीन अकेली नहीं थी, कुछ ऊनी कपड़ा खरीदने चली गई।" "कुछ ऊनी कपड़ा खरीदना?" "हाँ, अल्बर्टीन ने ही मुझे लाने को कहा था।" "तो फिर न जाने का और भी कारण है, शायद यह आपको रास्ते से हटाने की साजिश थी।" "लेकिन उसने मुझे अपनी सहेली से मिलने से पहले ही लाने को कहा था।" "आह!" मैंने फिर से सांस लेते हुए जवाब दिया। मेरा संदेह तुरंत फिर से जाग उठा; जहां तक मुझे पता था, उसने शायद पहले से ही अपनी सहेली से मिलने का समय तय कर लिया था और समय आने पर अकेले रहने का बहाना बना लिया था। इसके अलावा, क्या मैं निश्चित हो सकता था कि मेरी पिछली परिकल्पना (जिसके अनुसार एंड्री हमेशा मुझसे सच नहीं बोलती थी) सही नहीं थी? शायद एंड्री अल्बर्टीन के साथ साजिश में शामिल थी। बालबेक में, मैं खुद से कहा करता था, प्यार वह भावना है जो

हम किसी ऐसे व्यक्ति के लिए महसूस करते हैं जिसके कार्यों से हमें ईर्ष्या होती है; हमें लगता है कि अगर वह हमें सब कुछ बता दे, तो शायद हम आसानी से उसके प्रति अपने प्यार से मुक्त हो जाएंगे। ईर्ष्या से पीड़ित व्यक्ति इसे कितनी भी कुशलता से छिपाए, जिसने इसे प्रेरित किया है, वह इसे तुरंत पहचान लेती है, और समय आने पर वह भी उतनी ही कुशलता से ऐसा करती है। वह हमें उस बात से भटकाने की कोशिश करती है जो हमें दुखी कर सकती है, और सफल भी होती है, क्योंकि जो व्यक्ति पहले से आगाह नहीं होता, उसके लिए एक सामान्य कथन उसके नीचे छिपे झूठ को कैसे उजागर कर सकता है? हम इस कथन को बाकी कथनों से अलग नहीं कर पाते; भय के बोध में कही गई यह बात अनसुनी रह जाती है। बाद में, जब हम अकेले होते हैं, तो इस बात पर फिर से विचार करते हैं; तब यह हमें मामले के तथ्यों के अनुरूप पूरी तरह से उपयुक्त नहीं लगती। लेकिन क्या हमें यह सही से याद है? ऐसा लगता है मानो हमारे भीतर अनायास ही इस बात और हमारी स्मृति की सटीकता के संबंध में एक अनिश्चितता उत्पन्न हो गई हो, ठीक उसी प्रकार की अनिश्चितता जो कुछ तंत्रिका विकारों में होती है, जब हम कभी यह याद नहीं रख पाते कि हमने दरवाजा बंद किया है या नहीं; पचासवीं बार भी पहली बार से बेहतर याद नहीं रहती; ऐसा लगता है कि हम इस क्रिया को अनिश्चित काल तक दोहरा सकते हैं, लेकिन फिर भी हमें कभी सटीक और स्पष्ट स्मृति प्राप्त नहीं होती। खैर, हम दरवाजा फिर से बंद कर सकते हैं, इक्यावनवीं बार। जबकि वह विचलित करने वाली बात अतीत में एक अपूर्ण श्रवण के रूप में मौजूद है जिसे दोहराना हमारे बस में नहीं है। तब हम अपना ध्यान अन्य बातों पर केंद्रित करते हैं जो कुछ भी नहीं छिपातीं और एकमात्र उपाय जिसे हम नहीं अपनाते, वह है हर चीज से अनभिज्ञ रहना, ताकि आगे ज्ञान प्राप्त करने की कोई इच्छा न रहे।

जैसे ही ईर्ष्या का पता चलता है, जिस पर यह प्रकट होती है, वह इसे एक चुनौती के रूप में देखती है जो छल को जायज़ ठहराती है। इसके अलावा, कुछ जानने के हमारे प्रयास में, झूठ और छल में पहल हम ही करते हैं। एंड्री, ऐमे हमसे वादा कर सकते हैं कि वे कुछ नहीं कहेंगे, लेकिन क्या वे अपना वादा निभाएंगे? ब्लोच कुछ वादा नहीं कर सकता था क्योंकि वह कुछ नहीं जानता था, और अल्बर्टीन को तीनों में से किसी से भी बात करने पर, सेंट-लूप द्वारा क्रॉस-रेफरेंस कहे जाने वाले माध्यमों की मदद से, यह पता चल जाता है कि जब हम उसके कार्यों

के प्रति उदासीन होने और नैतिक रूप से उस पर नज़र रखने में असमर्थ होने का दिखावा करते हैं, तो हम उससे झूठ बोल रहे होते हैं। और इस प्रकार, अल्बर्टीन क्या कर रही होगी, इस बारे में मेरी आदतन असीम अनिश्चितता को इस तरह प्रतिस्थापित करते हुए, एक ऐसी अनिश्चितता जो इतनी अनिश्चित है कि पीड़ा रहित नहीं रह सकती, जो ईर्ष्या के लिए वैसी ही है जैसे शोक के लिए विस्मृति की वह शुरुआत जिसमें अस्पष्टता से राहत मिलती है, एंड्री द्वारा मुझे दिए गए उत्तर के छोटे से अंश ने तुरंत नए प्रश्न खड़े कर दिए; मेरे चारों ओर फैले विशाल क्षेत्र के एक हिस्से की खोज का एकमात्र परिणाम यह हुआ कि वह अज्ञेयता मुझसे और भी दूर हो गई, जो किसी दूसरे व्यक्ति के जीवन में हमेशा ही झलकती है, जब हम उसके बारे में कोई निश्चित धारणा बनाने का प्रयास करते हैं। मैं एंड्री से सवाल पूछता रहा, जबकि अल्बर्टीन ने विवेकवश और मुझे दूसरों से सवाल पूछने की आजादी देने के लिए (क्या उसे इस बात का एहसास था?) अपने कमरे में अपना श्रृंगार जारी रखा। "मुझे लगता है कि अल्बर्टीन के चाचा और चाची दोनों मुझे पसंद करते हैं," मैंने मूर्खतापूर्वक एंड्री से कहा, उसकी विचित्र प्रकृति को भूलकर।

मैंने तुरंत उसके चेहरे के भाव बदलते देखे। जैसे कोई सिरप खराब हो गया हो, उसका चेहरा मानो हमेशा के लिए धुंधला हो गया। उसका मुँह कड़वा हो गया। एंड्री में अब वह बचपन की खुशी नहीं बची थी, जो उस छोटे से समूह के सभी सदस्यों की तरह, और अपनी कमजोर सेहत के बावजूद, उसने बालबेक की मेरी पहली यात्रा के वर्ष में दिखाई थी, और जो अब (यह सच है कि एंड्री अब कई साल बड़ी हो चुकी थी) उसमें इतनी जल्दी गायब हो गई थी। लेकिन उस शाम एंड्री के घर जाकर खाना खाने से पहले, मैंने अनजाने में ही उस खुशी को फिर से जगा दिया। मैंने उससे कहा, "आज किसी ने तुम्हारी बहुत तारीफ की।" तुरंत ही उसकी आँखों में खुशी की एक किरण चमक उठी, वह ऐसी लग रही थी मानो वह सचमुच मुझसे प्यार करती हो। उसने मेरी नज़रें बचाईं, लेकिन अचानक गोल हो गई आँखों से खाली हवा में मुस्कुराई। उसने भोलेपन और उत्सुकता से पूछा, "कौन था?" मैंने उसे बताया, और जो भी था, वह बहुत खुश हुई।

फिर हमारे बिछड़ने का समय आ गया और वह मुझे छोड़कर चली गई। अल्बर्टीन मेरे कमरे में आई; उसने अपने कपड़े उतार दिए थे और वह एक आकर्षक क्रेप डी चाइन रैपर या

जापानी गाउन पहने हुए थी, जिसके बारे में मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस से मुझे बताने के लिए कहा था, और जिसके बारे में कुछ अतिरिक्त जानकारी मुझे श्रीमती स्वान ने एक पत्र में दी थी, जिसकी शुरुआत इस प्रकार हुई थी: "आपके लंबे समय तक एकांतवास के बाद, जब मैंने आपके चाय के गाउन के बारे में आपका पत्र पढ़ा, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे दूसरी दुनिया से कोई संदेश मिल रहा हो।"

अल्बर्टीन के पैरों में हीरे जड़े काले जूते थे, जिन्हें फ्रांकोइस ने चिढ़कर 'पैटन्स' कहा। ये जूते उन जूतों की तरह थे जिन्हें उसने ड्राइंग रूम की खिड़की से मैडम डी गुएरमांटेस को शाम को पहने देखा था। कुछ समय बाद अल्बर्टीन ने चप्पलें पहनना शुरू कर दिया, कुछ सोने की परत चढ़ी हुई थीं, कुछ चिनचिला की। मुझे ये देखकर अच्छा लगता था क्योंकि ये सभी इस बात के संकेत थे (जो दूसरे जूते नहीं दे सकते थे) कि वह मेरे घर में रह रही है। उसके पास कुछ ऐसी चीजें भी थीं जो उसे मुझसे नहीं मिली थीं, जिनमें एक सुंदर सोने की अंगूठी भी शामिल थी। मैंने उस पर बने चील के फैले हुए पंखों की प्रशंसा की। "यह मेरी चाची ने मुझे दी थी," उसने बताया। "वह कभी-कभी काफी अच्छी भी हो सकती हैं। इसे देखकर मुझे बहुत बूढ़ा महसूस होता है, क्योंकि उन्होंने इसे मुझे मेरे बीसवें जन्मदिन पर दिया था।"

इन सभी सुंदर वस्तुओं में अल्बर्टीन की रुचि डचेस से कहीं अधिक थी, क्योंकि संपत्ति प्राप्त करने में आने वाली हर बाधा की तरह (मेरे मामले में खराब स्वास्थ्य जिसने यात्रा को इतना कठिन और इतना वांछनीय बना दिया था), गरीबी, धन-दौलत से कहीं अधिक उदार होती है, और महिलाओं को उन वस्त्रों से भी बेहतर चीज़ देती है जिन्हें वे खरीद नहीं सकतीं - उन वस्त्रों की सच्ची, विस्तृत और गहन जानकारी। वह, क्योंकि वह कभी इन वस्तुओं को खरीदने में सक्षम नहीं थी, और मैं, क्योंकि उनके लिए इन्हें मंगवाकर मैं उन्हें प्रसन्नता देना चाहता था, हम दोनों उन छात्रों की तरह थे जो उन चित्रों के बारे में पहले से ही सब कुछ जानते हैं जिन्हें देखने के लिए वे ड्रेसडेन या वियना जाने के लिए तरस रहे हैं। जबकि धनी महिलाएं, अपने ढेर सारे टोपियों और गाउन के बीच, उन पर्यटकों की तरह होती हैं जिनके लिए किसी गैलरी का दौरा, बिना किसी इच्छा के, केवल भ्रम, ऊब और थकावट की अनुभूति देता है।

एक खास टोपी, एक खास सेबल चोगा, एक खास डौसेट रैपर, जिसकी आस्तीनें गुलाबी रंग की अस्तर से सजी थीं, अल्बर्टीन के लिए चुनी गई थीं, जिन्होंने उन्हें देखा था, उन पर मोहित

हो गई थीं और इच्छा के तत्व माने जाने वाले विशिष्टता और सूक्ष्म बारीकियों के कारण, उन्हें बाकी सब चीजों से अलग कर दिया था, एक ऐसे शून्य में जहां अस्तर या स्कार्फ पूर्णता से उभर कर सामने आता था, और उन्हें हर विवरण के साथ कंठस्थ कर लिया था - और मेरे लिए, जो मैडम डी गुएरमांटेस के पास इस वस्त्र की विशेष खूबी, श्रेष्ठता, स्मार्टनेस और महान डिजाइनर की अद्वितीय शैली के रहस्य की व्याख्या खोजने गया था - एक महत्व, एक आकर्षण जो निश्चित रूप से डचेस के लिए नहीं था, जो भूख लगने से पहले ही तृप्त हो गई थीं और वास्तव में मेरे लिए भी नहीं होता अगर मैंने उन्हें कुछ साल पहले किसी फैशनपरस्त महिला के साथ दर्जी की दुकानों के उसके उबाऊ दौरों में से एक पर देखा होता।

सच कहें तो, अल्बर्टीन धीरे-धीरे एक फैशनेबल महिला बनती जा रही थी। क्योंकि, भले ही मैंने उसके लिए जो भी चीज़ें मंगवाई थीं, वे अपनी तरह की सबसे खूबसूरत थीं, और उनमें श्रीमती डी गुएरमांटेस या श्रीमती स्वान द्वारा जोड़े गए सभी अलंकरण शामिल थे, फिर भी उसके पास ये चीज़ें बहुत ज़्यादा होने लगी थीं। लेकिन कोई बात नहीं, जब तक वह शुरू से ही उनकी सराहना करती थी, और हर एक चीज़ की अलग-अलग प्रशंसा करती थी।

जब हम एक चित्रकार से, फिर दूसरे से मुग्ध हो जाते हैं, तो अंत में हम पूरी गैलरी के लिए एक ऐसी प्रशंसा महसूस कर सकते हैं जो ठंडी नहीं होती, क्योंकि यह क्रमिक उत्साहों से बनी होती है, जिनमें से प्रत्येक अपने समय में अद्वितीय था, जो अंततः एक साथ मिलकर एक संपूर्ण रूप में सामंजस्य स्थापित कर लेते हैं।

वैसे तो वह बिल्कुल भी लापरवाह नहीं थीं; अकेले में खूब पढ़ती थीं और मेरे साथ होने पर जोर-जोर से पढ़ती थीं। वह बेहद बुद्धिमान हो गई थीं। वह कहती थीं, हालांकि उनका यह कहना पूरी तरह गलत था: "यह सोचकर मुझे बहुत दुख होता है कि अगर आप न होते तो मैं आज भी कितनी अज्ञानी होती। मेरी बात का खंडन मत कीजिए। आपने मेरे लिए विचारों की एक ऐसी दुनिया खोल दी है जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी, और मैं जो कुछ भी बनी हूँ, वह सब आपकी ही देन है।"

याद रहे कि उसने एंड्री पर मेरे प्रभाव के बारे में भी कुछ इसी तरह की बातें कही थीं। क्या उन दोनों में से किसी के मन में मेरे लिए कोई भावनात्मक लगाव था? और, अपने आप में, अल्बर्टीन और एंड्री क्या थीं? इसका उत्तर जानने के लिए, मुझे तुम्हें स्थिर करना होगा, उस

निरंतर अपेक्षा में जीना बंद करना होगा, जो हमेशा तुम्हारे एक अलग रूप में समाप्त होती है, मुझे तुमसे प्रेम करना बंद करना होगा, ताकि तुम्हें स्थिर कर सकूँ, तुम्हारे अंतहीन और हमेशा विचलित करने वाले आगमन को जानना बंद कर सकूँ, ओह लड़कियों, ओह उस भंवर में बार-बार आने वाली किरण जिसमें हम तुम्हें मुश्किल से पहचानते हुए, प्रकाश की चकाचौंध भरी गति में फिर से प्रकट होते देखकर भावनाओं से कांप उठते हैं। उस गति से शायद हम अनजान ही रह जाते और सब कुछ हमें स्थिर प्रतीत होता, अगर एक यौन आकर्षण हमें तुम्हारी खोज में न लगाता, सोने की बूँदें जो हमेशा अलग होती हैं, और हमेशा हमारी अपेक्षा से परे होती हैं! हर बार जब हम किसी लड़की को देखते हैं, तो वह पहले जैसी बिल्कुल नहीं दिखती (जैसे ही हम उसे देखते हैं, उसकी यादें और हमारी इच्छाएं चकनाचूर हो जाती हैं), और हम उसके बारे में जो स्थिर स्वभाव देखते हैं, वह महज़ काल्पनिक और कहने की एक सुविधा मात्र रह जाती है। हमें बताया गया है कि कोई सुंदर लड़की कोमल, प्रेममय और अत्यंत कोमल भावनाओं से भरी होती है। हमारी कल्पना इस आश्वासन को मान लेती है, और जब हम पहली बार उसके सुनहरे बालों की लटों में उसके गुलाबी चेहरे को देखते हैं, तो हमें लगभग डर लगता है कि कहीं यह इतनी गुणी बहन अपने ही गुणों से हमारे उत्साह को ठंडा न कर दे, कहीं वह कभी हमारी प्रेमिका न बन पाए जिसकी हमें लंबे समय से चाहत रही है। उसके हृदय की महानता के बल पर, हम उससे पहले ही पल से कितने राज़ साझा करते हैं, कितनी योजनाओं पर साथ मिलकर चर्चा करते हैं। लेकिन कुछ दिनों बाद, हमें अपने इतने भरोसे पर पछतावा हुआ, क्योंकि गुलाब की पत्तियों वाली लड़की ने हमारी दूसरी मुलाकात में हमसे एक कामुक क्रोधी स्त्री की भाषा में बात की। जहाँ तक उन लगातार चित्रों की बात है जो कुछ दिनों तक चलने वाली स्पंदन के बाद गुलाबी प्रकाश के नवीनीकरण से हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं, यह भी निश्चित नहीं है कि इन लड़कियों के रूप को किसी बाहरी शक्ति ने नहीं बदला है, और बालबेक में मेरी लड़कियों के समूह के साथ भी ऐसा ही हुआ होगा।

लोग हमें कुंवारी लड़की की कोमलता और पवित्रता की प्रशंसा करते हैं। लेकिन बाद में उन्हें लगता है कि कुछ अधिक परिपक्व हमें ज़्यादा पसंद आएगा, और वे उसे अधिक साहसी बनने की सलाह देते हैं। क्या वह अपने आप में किसी एक गुण से अधिक थी? शायद नहीं, लेकिन जीवन की तेज़ धारा में अनेक संभावनाओं को अपनाने में सक्षम थी। एक अन्य लड़की,

जिसका सारा आकर्षण उसके निर्दयी स्वभाव में निहित था (जिसे हम अपनी इच्छा के अधीन करने की उम्मीद कर रहे थे), जैसे कि बालबेक की वह भयानक उछलने वाली लड़की, जो अपने उछाल में चौंके हुए बूढ़े सज्जनों के गंजे सिर को छू लेती थी, कितनी निराशा हुई जब उसके ताज़े रूप को देखकर, ठीक उसी समय जब हम उससे स्नेहपूर्ण शब्दों में बात कर रहे थे, जो दूसरों के प्रति उसकी क्रूरता की यादों से प्रेरित थे, हमने उसे खेल की पहली चाल के रूप में यह कहते हुए सुना कि वह शर्मीली है, कि वह पहली मुलाकात में किसी से भी कोई समझदारी भरी बात नहीं कह सकती, इतनी डरी हुई है, और लगभग दो सप्ताह बाद ही वह हमसे सहजता से बात कर पाएगी। स्टील रुई जैसा नरम हो गया था, हमारे पास तोड़ने के लिए कुछ भी नहीं बचा था, क्योंकि उसने अपनी सारी स्थिरता खो दी थी। अपनी मर्जी से, लेकिन शायद हमारी गलती से, क्योंकि हमने कठोरता को जो कोमल शब्द कहे थे, शायद अनजाने में ही सही, उन्होंने उसे यह संकेत दे दिया था कि उसे कोमल होना चाहिए।

यह बदलाव भले ही हमारे लिए कष्टदायक रहा हो, पर यह पूरी तरह से अनाड़ीपन नहीं था, क्योंकि उसकी कोमलता के प्रति हमारी कृतज्ञता शायद उसकी क्रूरता पर विजय पाने की खुशी से कहीं अधिक हमसे अपेक्षा रखती। मैं यह नहीं कहता कि वह दिन नहीं आएगा जब इन तेजस्वी कन्याओं को भी हम स्पष्ट रूप से भिन्न चरित्र नहीं दे पाएंगे, बल्कि ऐसा इसलिए होगा क्योंकि उनमें हमारी रुचि समाप्त हो जाएगी, क्योंकि उनका आगमन हमारे हृदय के लिए वह रूप नहीं रहेगा जिसकी वह एक अलग रूप में अपेक्षा करता था और जो हर बार नए अवतारों से उसे अभिभूत कर देता है। उनकी स्थिरता उनके प्रति हमारी उदासीनता से उत्पन्न होगी, जो उन्हें हमारे मन के निर्णय के हवाले कर देगी। वैसे, यह किसी भी स्पष्ट शब्दों में व्यक्त नहीं किया जाएगा, क्योंकि एक बार जब मन यह तय कर लेगा कि एक में जो दोष प्रमुख था वह सौभाग्य से दूसरे में नहीं है, तो वह देखेगा कि इस दोष के बदले में कोई अनमोल गुण भी था। इसलिए, हमारी बुद्धि का वह गलत निर्णय, जो केवल तभी सक्रिय होता है जब हम रुचि खो देते हैं, लड़कियों के स्थायी चरित्रों को परिभाषित कर देता है, जो हमें उन आश्चर्यजनक चेहरों से अधिक कुछ नहीं समझाते जो हर दिन दिखाई देते थे, जब हमारी उम्मीदों की चकाचौंध में, हमारे दोस्त रोज़ाना, साप्ताहिक रूप से हमारे सामने आते थे, इतने अलग कि हम उन्हें वर्गीकृत नहीं कर पाते थे, क्योंकि वे कभी रुकते नहीं थे, और न ही उन्हें

योग्यता के स्तर दे पाते थे। जहाँ तक हमारी भावनाओं की बात है, हम उनके बारे में इतनी बार बात कर चुके हैं कि अब इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि अक्सर प्रेम एक लड़की के चेहरे (जिसे अन्यथा हम जल्द ही असहनीय पा लेते) के साथ दिल की धड़कनों के जुड़ाव से अधिक कुछ नहीं होता, जो एक अंतहीन, व्यर्थ उम्मीद और उसके द्वारा हम पर खेले गए किसी छल से अविभाज्य होती हैं। यह सब केवल कल्पनाशील युवकों के लिए ही सच नहीं है जो परिवर्तनशील लड़कियों के संपर्क में आते हैं। जिस चरण तक हमारी कहानी अब पहुँची है, ऐसा प्रतीत होता है, जैसा कि मैंने बाद में सुना है, कि जुपियन की भतीजी ने मोरेल और एम. डी चार्लस के बारे में अपनी राय बदल दी थी। मेरी वाहन चालक ने मोरेल के प्रति अपने प्रेम को और मजबूत करते हुए, वायलिन वादक में विद्यमान असीम कोमलता का बखान किया था, जिस पर वह आसानी से विश्वास कर लेती थी। साथ ही, मोरेल भी एम. डी चार्लस द्वारा किए जाने वाले निरंकुश व्यवहार की शिकायत करता रहता था, जिसे वह द्वेष का परिणाम मानती थी, यह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि यह प्रेम के कारण भी हो सकता है। इसके अलावा, वह यह मानने के लिए बाध्य थी कि एम. डी चार्लस उनकी सभी मुलाकातों में तानाशाही ढंग से उपस्थित रहता था। इन सब बातों की पुष्टि के रूप में, उसने समाज की महिलाओं को बैरन की भयानक दुर्भावना के बारे में बात करते सुना था। अब, हाल ही में, उसका विचार पूरी तरह बदल गया था। उसने मोरेल में (हालांकि इस कारण से उसका प्रेम कम नहीं हुआ) द्वेष और विश्वासघात की गहराई पाई, जो हालांकि अक्सर दिखाई देने वाली दयालुता और सच्ची भावना से संतुलित थी, और एम. डी चार्लस में एक अकल्पनीय और अपार उदारता पाई, जो कठोरताओं से मिश्रित थी, जिसके बारे में उसे कुछ भी पता नहीं था। और इसलिए वह वायलिन वादक और उसके संरक्षक के वास्तविक स्वरूप के बारे में मुझसे अधिक निश्चित राय नहीं बना पाई, जितनी कि मैं एंड्री के बारे में बना पाया था, जिसे मैं फिर भी हर दिन देखता था, या अल्बर्टीन के बारे में, जो मेरे साथ रहती थी। जिन शामों को अल्बर्टीन मुझे पढ़कर नहीं सुनाती थी, वह मेरे लिए वायलिन बजाती थी या शतरंज का खेल शुरू कर देती थी, या बातचीत शुरू कर देती थी, जिसे मैं चुंबनों से रोक देता था। हमारे रिश्तों की सादगी ने उन्हें सुकून भरा बना दिया था। उसके जीवन के खालीपन ने ही अल्बर्टीन को मेरी हर एक गुजारिश को मानने के लिए उत्सुक बना दिया था। इस लड़की के पीछे, ठीक वैसे ही जैसे

बालबेक में मेरे कमरे के पर्दों के नीचे से छनकर आने वाली बैंगनी रोशनी के पीछे, जब बाहर संगीत कार्यक्रम चल रहा होता था, समुद्र की नीली-हरी लहरें चमक रही थीं। क्या वह वही लड़की नहीं थी (जिसके मन ही मन में मेरी छवि इतनी पक्की हो गई थी कि अपनी चाची के बाद शायद मैं ही वह व्यक्ति थी जिसे वह खुद से सबसे कम अलग समझती थी) जिसे मैंने पहली बार बालबेक में देखा था, अपनी सपाट पोलो टोपी में, अपनी लगातार हंसती आँखों के साथ, एक अजनबी, लहरों के सामने उभरी एक परछाई की तरह? हमारी स्मृति में अक्षुण्ण ये छवियाँ, जब हम उन्हें याद करते हैं, तो हम उस व्यक्ति से उनकी भिन्नता पर आश्चर्यचकित होते हैं जिसे हम जानते हैं, और हमें एहसास होने लगता है कि आदत से हर दिन कितना बड़ा बदलाव होता है। पेरिस में, मेरी आग के पास, अल्बर्टीन के आकर्षण में अभी भी वह चाहत बाकी थी जो समुद्र तट पर उस उद्दंड और जीवंत जुलूस ने मेरे भीतर जगाई थी। ठीक वैसे ही जैसे राहेल ने सेंट-लूप की निगाहों में, उसके द्वारा मंच छोड़ने के बाद भी, अपने रंगमंच के जीवन की प्रतिष्ठा बरकरार रखी थी, वैसे ही बालबेक से दूर, मेरे घर में कैद इस अल्बर्टीन में, जहाँ से मैं उसे जल्दी से ले आया था, समुद्र तट के जीवन की भावना, सामाजिक उलझन, बेचैन घमंड और भटकती इच्छाएँ बनी रहीं। वह इतनी प्रभावी ढंग से कैद थी कि कुछ शामों को मैंने उसे अपने कमरे में आने के लिए भी नहीं कहा, वह जिसके पीछे कभी पूरी दुनिया दीवानी थी, जिसे साइकिल पर तेजी से गुजरते हुए पकड़ना मेरे लिए इतना मुश्किल था, जिसे लिफ्ट-बॉय भी मेरे लिए पकड़ नहीं पाया, जिससे मुझे उसके आने की लगभग कोई उम्मीद नहीं बची थी, हालाँकि मैं पूरी रात जागकर उसका इंतजार करता रहा। क्या अल्बर्टीन होटल के सामने, चकाचौंध भरे समुद्र तट की एक महान अभिनेत्री की तरह नहीं थी, जो उस प्राकृतिक मंच पर आगे बढ़ते हुए ईर्ष्या जगाती थी, किसी से बात नहीं करती थी, नियमित रूप से आने-जाने वालों को पीछे धकेलती हुई, लड़कियों, अपनी सहेलियों पर हावी होती थी? और क्या यह अत्यधिक प्रतिष्ठित अभिनेत्री वही नहीं थी, जिसे मैंने मंच से हटाकर अपने घर में बंद कर दिया था, और अब वह बाकी सभी की इच्छाओं से परे थी, जो भविष्य में व्यर्थ ही उसकी तलाश कर सकते थे, कभी मेरे कमरे में, कभी अपने कमरे में, और किसी पैटर्न को बनाने या काटने में व्यस्त?

इसमें कोई शक नहीं कि बालबेक में शुरुआती दिनों में अल्बर्टीन मेरे जीवन के समानांतर ही एक अलग दुनिया में रहती हुई प्रतीत होती थी, लेकिन (एल्स्टिर की मेरी यात्रा के बाद) वह दुनिया मेरे करीब आ गई थी और अंततः उसमें विलीन हो गई थी, क्योंकि बालबेक में, पेरिस में और फिर से बालबेक में उसके साथ मेरे संबंध और भी घनिष्ठ हो गए थे। इसके अलावा, बालबेक की दो तस्वीरों में, मेरी पहली और दूसरी यात्रा में, वही विला और वही लड़कियां उसी समुद्र की ओर जाती हुई दिखाई देती थीं - कितना अंतर था! मेरी दूसरी यात्रा के समय अल्बर्टीन की सहेलियों में, जिन्हें मैं बहुत अच्छी तरह जानती थी, जिनके अच्छे और बुरे गुण उनके चेहरे पर स्पष्ट रूप से अंकित थे, मैं उन ताजा, रहस्यमय अजनबियों को कैसे याद कर पाती, जो पहली बार में मेरे दिल की धड़कन बढ़ाए बिना, रेत पर बने अपने बंगले का दरवाजा खोलकर अंदर आती थीं और रास्ते से नीचे आते हुए इमली के पेड़ों को कंपकंपा देती थीं! इस बीच उनकी विशाल आँखें उनके चेहरों में समा गई थीं, निस्संदेह इसलिए कि वे अब बच्चे नहीं रहे थे, लेकिन इसलिए भी कि वे मनमोहक अजनबी, वे रोमांटिक प्रथम वर्ष की मनमोहक अभिनेत्रियाँ, जिनके बारे में मैं लगातार जानकारी की तलाश में भटकता रहा था, अब मेरे लिए कोई रहस्य नहीं रह गई थीं। वे मेरी इच्छाओं के प्रति आज्ञाकारी हो गई थीं, बस नन्ही-मुन्नियों का एक समूह, जिनमें से मैंने उनका सबसे सुंदर गुलाब तोड़कर अपने साथ ले जाने पर गर्व महसूस किया था।

बालबेक के दो दृश्यों के बीच, जो एक दूसरे से इतने भिन्न थे, पेरिस में कई वर्षों का अंतराल था, जिसका लंबा विस्तार अल्बर्टाइन की मेरी यात्राओं से भरा हुआ था। मैंने अपने जीवन के विभिन्न वर्षों में उसे अपने प्रति अलग-अलग दृष्टिकोणों में देखा, जिससे मुझे बीच के अंतरालों की सुंदरता का एहसास हुआ, समय का वह लंबा विस्तार जिसमें मैंने उसे कभी नहीं देखा और उस पारदर्शी पृष्ठभूमि के विरुद्ध, जिसमें मेरे सामने दिखाई देने वाला गुलाबी चेहरा रहस्यमय छायाओं और स्पष्ट उभार के साथ गढ़ा गया था। यह न केवल अल्बर्टाइन की मेरे लिए क्रमिक छवियों के अध्यारोपण के कारण था, बल्कि मस्तिष्क और हृदय के महान गुणों, चरित्र की कमियों के कारण भी था, जो सभी मेरे लिए अनपेक्षित थे, जिन्हें अल्बर्टाइन ने अपने अंकुरण, अपने गुणन, गंभीर रंगों में एक कामुक प्रस्फुटन के रूप में, एक ऐसे स्वभाव में जोड़ा था जिसे पहले शायद ही अस्तित्व में कहा जा सकता था, लेकिन अब वह गहराई से परे

था। अन्य लोगों के लिए, यहाँ तक कि उनके लिए भी जिनके बारे में हमने अक्सर सपने में सोचा था कि वे एक तस्वीर मात्र रह गए हैं, बेनोज़ो गोज़ोली की किसी आकृति की तरह हरियाली की पृष्ठभूमि पर उभरे हुए हैं, जिनके बारे में हम यह मानने को तैयार थे कि उनमें बदलाव केवल देखने के नज़रिए, हमसे उनकी दूरी, प्रकाश और छाया के प्रभाव पर निर्भर करता है, ये लोग, हमारे संबंध में बदलते हुए भी, स्वयं में भी बदलते हैं, और समुद्र के सामने सरलता से रेखांकित की गई उस आकृति में एक समृद्धि, एक ठोसपन और एक आयतन में वृद्धि हो जाती है। इसके अलावा, अल्बर्टाइन में मेरे लिए केवल दिन ढलते समय का समुद्र ही जीवंत नहीं होता था, बल्कि कभी-कभी चांदनी रातों में किनारे पर समुद्र की सुस्त फुसफुसाहट भी जीवंत हो उठती थी।

कभी-कभी, वास्तव में, जब मैं अपने पिता के अध्ययन कक्ष से एक किताब लाने के लिए उठता था, और अपनी मालकिन को मेरे कमरे से बाहर रहने के दौरान लेटने की अनुमति देता था, तो वह सुबह और दोपहर में खुली हवा में लंबी सैर के बाद इतनी थकी हुई होती थी कि, भले ही मैं केवल एक पल के लिए ही दूर गया होता, जब मैं लौटता तो अल्बर्टीन को सोता हुआ पाता और उसे जगाता नहीं था।

मेरे बिस्तर पर पूरी तरह फैली हुई, इतनी स्वाभाविक मुद्रा में कि किसी कलाकृति से ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, वह मुझे एक लंबे खिले हुए तने की याद दिला रही थी जो वहाँ रखा गया हो, और वास्तव में वह वैसी ही थी: सपने देखने की वह क्षमता जो केवल उसकी अनुपस्थिति में मुझमें होती थी, उसकी उपस्थिति में ऐसे क्षणों में वापस आ जाती थी, मानो सो जाने से वह एक पौधा बन गई हो। इस तरह उसकी नींद ने कुछ हद तक प्रेम को संभव बना दिया। जब वह मौजूद होती थी, मैं उससे बात करता था, लेकिन मैं अपने आप से इतना विमुख होता था कि सोच भी नहीं पाता था। जब वह सो जाती थी, तो मुझे उससे बात करने की आवश्यकता नहीं रहती थी, मैं जानता था कि वह अब मुझे नहीं देख रही है, मुझे अब अपने बाहरी स्वरूप में जीने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

आँखें बंद करके, बेहोश होकर, अल्बर्टीन ने एक-एक करके उन सभी मानवीय गुणों को त्याग दिया था जिनसे उसने मुझे उस दिन से धोखा दिया था जब मैं उससे पहली बार मिला था। अब वह केवल वनस्पतियों, पेड़ों के अचेतन जीवन से ही जीवंत थी, एक ऐसा जीवन जो मेरे जीवन

से बहुत अलग, बहुत अजनबी था, और फिर भी मुझसे अधिक जुड़ा हुआ था। उसका व्यक्तित्व हर पल, जैसे कि हमारी बातचीत के दौरान, उसके अनजाने विचारों और उसकी निगाहों के माध्यम से प्रकट नहीं होता था। उसने अपने भीतर वह सब कुछ समेट लिया था जो बाहर था, शरण ली थी, अपने शरीर में समाहित कर लिया था, पुनः समाहित कर लिया था। उसे अपनी आँखों के सामने, अपने हाथों में रखकर, मुझे ऐसा आभास हुआ जैसे मैं उस पर पूर्ण अधिकार कर चुका हूँ, जो मुझे उसके जागते समय कभी नहीं हुआ था। उसका जीवन मेरे प्रति समर्पित था, अपनी कोमल साँस मेरे लिए छोड़ रहा था।

मैंने उस गुनगुनाती, रहस्यमयी ध्वनि को सुना, जो समुद्र से आती हल्की हवा की तरह कोमल और उसकी नींद में बसी चांदनी की तरह जादुई थी। जब तक वह ध्वनि बनी रही, मैं उसके बारे में सोचने और उसे निहारने के लिए स्वतंत्र था, और जब उसकी नींद गहरी होती गई, तो उसे छूने, उसे चूमने के लिए भी। उस समय मैंने जो महसूस किया, वह किसी ऐसी पवित्र, भावहीन और रहस्यमयी चीज़ की उपस्थिति में प्रेम था, मानो मैं प्रकृति की उन निर्जीव वस्तुओं के सामने खड़ा था जो उसकी सुंदरता हैं। और सचमुच, जैसे ही उसकी नींद गहरी हुई, वह महज़ एक पौधा नहीं रह गई; उसकी नींद, जिसके किनारे पर मैं एक नए आनंद के साथ चिंतन करता रहा, जिसका आनंद मैं कभी नहीं थकता था, बल्कि अनिश्चित काल तक लेता रह सकता था, मेरे लिए एक अनछुआ देश थी। उसकी नींद ने मेरे लिए कुछ ऐसा शांत, उतना ही कामुक रूप से आनंददायक अनुभव ला दिया, जैसा कि बालबेक की खाड़ी में पूर्णिमा की उन रातों में होता था, जो एक झील की तरह शांत हो जाती थीं, जहाँ शाखाएँ मुश्किल से हिलती थीं, और जहाँ रेत पर लेटकर कोई घंटों तक लहरों के टूटने और पीछे हटने की आवाज़ सुन सकता था।

जब मैं कमरे में दाखिल हुआ, तो मैं दरवाज़े पर ही खड़ा रहा, ज़रा भी आवाज़ नहीं की। मुझे उसकी साँसों की हल्की-हल्की आवाज़ के सिवा कुछ सुनाई नहीं दिया, जो उसके होठों से नियमित अंतराल पर निकलती जा रही थी, मानो समुद्र की लहरों की तरह, लेकिन उससे भी धीमी और कोमल। और जिस क्षण मेरे कानों ने उस दिव्य ध्वनि को ग्रहण किया, मुझे लगा मानो उसमें उस मनमोहक बंदी का संपूर्ण व्यक्तित्व, उसका संपूर्ण जीवन समाहित हो गया हो, मानो मेरी आँखों के सामने फैला हुआ हो। गली में गाड़ियाँ खड़खड़ाती हुई गुज़र रही थीं,

उसके चेहरे के भाव उतने ही स्थिर, उतने ही पवित्र थे, उसकी साँसें उतनी ही हल्की थीं, मानो हवा की आवश्यक मात्रा का सरल निष्कासन मात्र हों। फिर, यह देखकर कि उसकी नींद में खलल नहीं पड़ेगा, मैं धीरे से आगे बढ़ा, पलंग के पास रखी कुर्सी पर बैठ गया, फिर पलंग पर ही लेट गया।

मैंने अल्बर्टीन के साथ बातें करते और खेल खेलते हुए कई खुशनुमा शामें बिताई हैं, लेकिन सोते हुए उसे देखना सबसे सुखद अनुभव था। बेशक, जब वह मुझसे बातें करती या ताश खेलती थी, तो उसमें एक ऐसी सहजता होती थी जिसे कोई अभिनेत्री भी नहीं अपना सकती, लेकिन उसकी नींद में मुझे जो सहजता देखने को मिली, वह उससे कहीं बढ़कर थी। उसके गुलाबी चेहरे पर बिखरे बाल बिस्तर पर उसके बगल में फैले हुए थे, और कहीं-कहीं एक सीधी लट से ऐसा प्रभाव पैदा हो रहा था जैसे चांदनी रात में पतले और पीले पेड़, जो एल्स्टिर की राफेल शैली की तस्वीरों की पृष्ठभूमि में सीधे और अकड़े खड़े दिखाई देते हैं। अगर अल्बर्टीन के होंठ बंद होते, तो उसकी पलकें, जहाँ मैं खड़ा था, वहाँ से इतनी ढीली लग रही थीं कि मुझे लगभग शक होने लगा कि क्या वह सचमुच सो रही है। साथ ही, उसकी झुकी हुई पलकों ने उसके चेहरे में एक ऐसी परिपूर्ण निरंतरता ला दी थी, जो आँखों के हस्तक्षेप से बिल्कुल भी नहीं टूट रही थी। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके चेहरे पर उस क्षण एक असाधारण सुंदरता और भव्यता आ जाती है जब वे अपनी आंखों से बाहर देखना बंद कर देते हैं।

मैंने अपनी बेटी अल्बर्टाइन को पैरों के पास फैलाकर नाप लिया। बीच-बीच में उसके शरीर में एक हल्की, अनजानी सी कंपकंपी दौड़ती थी, जैसे हवा के अचानक झोंके से पेड़ के पत्ते कुछ पलों के लिए हिल जाते हैं। वह अपने बालों को छूती, फिर उन्हें अपनी पसंद से संवार न पाती और फिर से अपने बालों पर हाथ फेरती, इतनी लगातार और सधी हुई हरकतों से कि मुझे लगा जैसे वह जागने ही वाली है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, वह फिर से उसी नींद में डूब गई जिससे वह उठी ही नहीं थी। इसके बाद वह बिना हिले-डुले लेटी रही। उसने अपना हाथ अपने सीने पर इतनी मासूमियत से रखा था कि उसे देखते हुए मुझे अपने चेहरे पर आने वाली मुस्कान को दबाना पड़ा, जो छोटे बच्चों की गंभीरता, मासूमियत और आकर्षण को देखकर अपने आप आ जाती है।

मैं, जो एक ही व्यक्ति में अनेक अल्बर्टाइन गुणों से परिचित था, अब मानो अपने बगल में विश्राम कर रही अनेक और अल्बर्टाइन गुणों को देख पा रहा था। उसकी भौहें, जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थीं, उसकी पलकों के गोल घेरे को किसी शांत चिड़िया के मुलायम घोंसले की तरह घेरे हुए थीं। उसके चेहरे पर अनेक नस्लें, पूर्वज प्रवृत्तियाँ और दुर्गुण झलक रहे थे। जब भी वह अपना सिर हिलाती, एक नई स्त्री का रूप धारण कर लेती, अक्सर ऐसी स्त्री जिसका अस्तित्व मैंने कभी सोचा भी नहीं था। ऐसा लग रहा था मानो मेरे पास एक नहीं, बल्कि अनगिनत लड़कियाँ हों। उसकी साँसें, जैसे-जैसे गहरी होती गईं, अब नियमित रूप से उसके सीने को हिला रही थीं और उसके माध्यम से, उसके मुड़े हुए हाथ, उसके मोती, उसी गति से अलग-अलग तरीके से हिल रहे थे, जैसे ज्वार-भाटे से नावों और लंगर की जंजीरों का हिलना। फिर, यह महसूस करते हुए कि उसकी नींद पूरी हो चुकी है, और मुझे गहरी नींद के ऊँचे जल से ढकी चेतना की चट्टानों पर नहीं अटकना चाहिए, मैं जानबूझकर चुपचाप बिस्तर पर रेंगता हुआ गया, उसके बगल में लेट गया, एक हाथ से उसकी कमर को थाम लिया, अपने होंठ उसके गाल और हृदय पर रखे, फिर बारी-बारी से उसके शरीर के हर हिस्से पर अपना दूसरा हाथ रखा, जो अल्बर्टीन की साँसों से मोतियों की तरह ऊपर उठ रहा था; मैं स्वयं उसकी नियमित गति से धीरे-धीरे हिल रहा था: मैं अल्बर्टीन की नींद की लहर पर सवार हो गया था। कभी-कभी यह मुझे एक ऐसे सुख का अनुभव कराता था जो उतना शुद्ध नहीं था। इसके लिए मुझे कोई हरकत करने की आवश्यकता नहीं थी, मैंने अपना पैर उसके पैर से सटाकर रखा, जैसे कोई चप्पू पानी में धीरे-धीरे चलता है, और हवा में सोए हुए पक्षी के पंख की तरह बीच-बीच में हल्का कंपन देता है। उसे निहारते हुए, मैंने उसके चेहरे के उस पहलू को चुना जिसे किसी ने कभी नहीं देखा था और जो इतना मनमोहक था।

यह समझना तो स्वाभाविक है कि किसी व्यक्ति से प्राप्त पत्र कमोबेश एक जैसे होते हैं और मिलकर लेखक की ऐसी छवि बनाते हैं जो हमारे परिचित व्यक्ति से इतनी भिन्न होती है कि मानो एक दूसरा व्यक्तित्व बन जाती है। लेकिन यह कितना विचित्र है कि एक स्त्री, रोसिटा और डूडिका की तरह, किसी दूसरी स्त्री से जुड़ी हो, जिसकी भिन्न सुंदरता हमें एक अलग चरित्र का अनुमान लगाने पर मजबूर करती है, और एक को देखने के लिए हमें उसे एक तरफ से देखना पड़ता है, जबकि दूसरी को सामने से। उसकी साँसों की आवाज़ जैसे-जैसे तेज़

होती जाती, आनंद की असीम उमंग का भ्रम पैदा करती और जब मेरी उमंग चरम पर होती, तो मैं उसकी नींद में खलल डाले बिना उसे चूम सकता था। ऐसे क्षणों में मुझे ऐसा लगता था मानो मैं उसे पूरी तरह से अपने वश में कर रहा हूँ, मानो मैं एक अचेतन और निर्दयी मूक वस्तु हूँ। नींद में कभी-कभार बुदबुदाने वाले शब्दों का मुझ पर कोई असर नहीं होता था, उनका अर्थ मेरी समझ से परे था, और इसके अलावा, चाहे वह अज्ञात व्यक्ति कोई भी हो, मेरे हाथ पर, मेरे गाल पर ही, कभी-कभार कंपन के साथ, उसका हाथ एक पल के लिए अकड़ जाता था। मैंने उसकी नींद का आनंद निस्वार्थ भाव से, सुखदायक प्रेम से लिया, ठीक उसी तरह जैसे मैं घंटों तक लहरों के खुलने की आवाज सुनता रहता था।

शायद यह नियम है कि लोगों को हमें गहन पीड़ा पहुँचाने में सक्षम होना चाहिए, तभी वे विश्राम के क्षणों में हमें प्रकृति के समान सुखदायक शांति प्रदान कर सकते हैं। मुझे उससे वैसे उत्तर देने की आवश्यकता नहीं थी जैसे बातचीत के दौरान होती है, और भले ही मैं चुप रह सकता था, जैसा कि मैं तब रहता था जब वह बोल रही होती थी, फिर भी उसकी आवाज़ सुनते हुए मैं उसके भीतर गहराई तक नहीं उतर पाया। जैसे-जैसे मैं सुनता रहा, पल-पल उसकी साँसों की हल्की-हल्की, न महसूस होने वाली हवा की तरह सुकून देने वाली आवाज़ को ग्रहण करता रहा, मेरे सामने एक संपूर्ण शारीरिक अस्तित्व फैल गया; जैसे मैं घंटों समुद्र तट पर, चाँदनी में लेटा रहता था, वैसे ही मैं वहाँ उसे निहारता और उसकी बातें सुनता रह सकता था। कभी-कभी ऐसा लगता था मानो समुद्र उफान पर है, तूफान का असर खाड़ी के अंदर भी महसूस हो रहा है, और खाड़ी की तरह मैं भी उसकी साँसों की गड़गड़ाहट सुन रहा था। कभी-कभी, जब उसे बहुत गर्मी लगती, तो वह आधी नींद में ही अपना किमोनो उतारकर मेरी कुर्सी पर फेंक देती। जब वह सो रही होती, मैं खुद से कहता कि उसके सारे पत्र इस किमोनो की भीतरी जेब में हैं, जिसमें वह हमेशा अपने पत्र ठूंस देती थी। एक हस्ताक्षर, एक लिखित नियुक्ति पत्र झूठ साबित करने या संदेह दूर करने के लिए काफी होता। जब मैंने देखा कि अल्बर्टीन गहरी नींद में सो रही है, और बिस्तर के उस हिस्से को छोड़ रही है जहाँ मैं बिना हिले-डुले उसे निहार रहा था, तो मैं एक कदम आगे बढ़ा, एक तीव्र जिज्ञासा से भर गया, यह महसूस करते हुए कि इस दूसरे जीवन का रहस्य उस कुर्सी में, बेजान और असहाय, मेरे सामने प्रकट हो रहा है। शायद मैंने यह कदम इसलिए भी आगे बढ़ाया क्योंकि कुछ देर तक

बिल्कुल स्थिर खड़े होकर उसे सोते हुए देखना थका देने वाला हो गया था। और इसलिए, दबे पांव, बार-बार पीछे मुड़कर यह सुनिश्चित करते हुए कि अल्बर्टीन जाग न जाए, मैं आरामकुर्सी की ओर बढ़ा। वहाँ मैं अचानक रुक गया, काफी देर तक किमोनो को निहारता रहा, ठीक वैसे ही जैसे मैं अल्बर्टीन को निहारता रहा था। लेकिन (और शायद यहाँ मैं गलत था) मैंने किमोनो को एक बार भी नहीं छुआ, जेब में हाथ नहीं डाला, चिट्ठियों को नहीं देखा। अंत में, यह महसूस करते हुए कि मैं कभी भी अपना मन नहीं बना पाऊंगा, मैं दबे पांव वापस अल्बर्टीन के बिस्तर के पास लौटा और उसे सोते हुए देखने लगा, उसे जो मुझे कुछ नहीं बता रही थी, जबकि मैं कुर्सी के एक बाजू पर पड़ा वह किमोनो देख सकता था जो मुझे बहुत कुछ बता सकता था। और जैसे लोग बालबेक के होटल में एक कमरे के लिए एक दिन के सौ फ्रैंक खर्च करते हैं ताकि वे समुद्र की हवा में सांस ले सकें, मुझे लगा कि उसके लिए उससे अधिक खर्च करना स्वाभाविक था क्योंकि उसकी सांस मेरे गालों पर थी, उसके होठों के बीच जिन्हें मैंने अपने होठों से खोला था, जिनके माध्यम से उसका जीवन मेरी जीभ से बह रहा था।

लेकिन उसे सोते हुए देखने का यह सुख, जो उसके जीवित होने के सुख के समान ही अनमोल था, एक दूसरे सुख से क्षीण हो गया - उसके जागने का सुख। यह सुख, उससे कहीं अधिक गहन और रहस्यमय था, जो मुझे उसे अपने घर में पाकर प्राप्त होता था। दोपहर में, जब वह गाड़ी से उतरी, तो यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि वह मेरे ही घर लौट रही है। मेरे लिए तो यह और भी अधिक सुखद था कि जब वह नींद के अगाध लोक से सपनों की सीढ़ी के अंतिम पायदानों पर चढ़ी, तो मेरे ही कमरे में उसका पुनर्जन्म हुआ, और उसने एक क्षण के लिए स्वयं से पूछा: "मैं कहाँ हूँ?" और कमरे में चारों ओर की सभी चीजों को देखकर, उस दीपक को देखकर जिसकी रोशनी से उसकी आँखें मुश्किल से झपकीं, वह आश्वस्त हो गई कि वह घर पर है, जैसे ही उसे एहसास हुआ कि वह मेरे घर में जाग रही है। अनिश्चितता के उस पहले सुखद क्षण में, मुझे ऐसा लगा कि मैंने एक बार फिर उस पर अधिक पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया है, क्योंकि जहाँ पहले वह बाहर घूमने के बाद अपने कमरे में लौटती थी, वहीं अब मेरा कमरा, जैसे ही अल्बर्टीन इसे पहचानती, उसे अपने अंदर समाहित करने वाला था, और मेरी मालकिन की आँखों में किसी प्रकार की आशंका का कोई संकेत नहीं था, जो इतनी शांत थीं मानो वह कभी सोई ही न हों।

उसकी चुप्पी से जागृति की अनिश्चितता झलक रही थी, लेकिन उसकी आँखों में ज़रा भी नहीं। जैसे ही वह बोलने में सक्षम हुई, उसने कहा: "मेरे ——" या "मेरे प्यारे ——" और फिर मेरा ईसाई नाम, जो अगर हम कथावाचक का नाम इस पुस्तक के लेखक के नाम पर रखें, तो 'मेरे मार्सेल' या 'मेरे प्यारे मार्सेल' होगा। इसके बाद मैं अपने रिश्तेदारों को मुझे 'प्यारे' कहकर पुकारने की अनुमति कभी नहीं दूँगा, ताकि वे अल्बर्टीन द्वारा मेरे लिए कहे गए उन अनमोल शब्दों की विशिष्टता को न छीन लें। जैसे ही उसने ये शब्द कहे, उसने अपने होंठों को थोड़ा सा सिकोड़ा, जिसे उसने खुद ही एक चुंबन में बदल दिया। जिस तेज़ी से वह शाम को सो गई थी, उतनी ही तेज़ी से वह जाग गई। समय में मेरी अपनी प्रगति से ज़्यादा कुछ नहीं, किसी चीज़ को निहारने की क्रिया से ज़्यादा कुछ नहीं। मेरे सामने दीपक के नीचे बैठी वह लड़की, जिस पर सूर्य की रोशनी से अलग प्रकाश पड़ रहा था, जब मैं उसे समुद्र तट पर टहलते हुए देखता था, क्या अल्बर्टीन की यह भौतिक समृद्धि, यह स्वतंत्र प्रगति ही मेरे वर्तमान दृष्टिकोण और बालबेक में उसके बारे में मेरी पहली धारणा के बीच अंतर का निर्णायक कारण थी? कई वर्षों का अंतराल इन दोनों छवियों को अलग कर सकता था, लेकिन इतना पूर्ण परिवर्तन नहीं होता; यह परिवर्तन अनिवार्य और अचानक तब हुआ जब मुझे पता चला कि मेरी प्रेमिका का पालन-पोषण मैडम विंटेइल की सहेली ने किया था। यदि एक समय मैं अल्बर्टीन की आँखों में रहस्य की झलक देखकर रोमांचित हो जाता था, तो अब मैं केवल उन क्षणों में प्रसन्न होता था जब उन आँखों से, यहाँ तक कि उसके गालों से भी, जो उसकी आँखों की तरह ही प्रतिबिंबित होते थे, जो अब इतने कोमल हैं लेकिन जल्दी ही उदास हो जाते हैं, मैं रहस्य के हर निशान को मिटाने में सफल हो जाता था।

जिस छवि की मैं तलाश कर रहा था, जिस पर मैं भरोसा करता था, जिस पर झुककर मरना चाहता था, वह अब अल्बर्टाइन की गुप्त जीवनयापन की छवि नहीं थी, बल्कि एक ऐसी अल्बर्टाइन की छवि थी जो मेरे लिए यथासंभव परिचित थी (और इसी कारण मेरा प्रेम तब तक स्थायी नहीं हो सकता था जब तक वह दुखी न हो, क्योंकि अपने स्वभाव में वह रहस्य की मेरी आवश्यकता को पूरा नहीं करता था), एक ऐसी अल्बर्टाइन जो किसी दूर के संसार को प्रतिबिंबित नहीं करती थी, बल्कि मेरे साथ रहने के अलावा और कुछ नहीं चाहती थी—ऐसे क्षण भी थे जब वास्तव में ऐसा प्रतीत होता था—एक ऐसे व्यक्ति के साथ जो मुझ जैसा ही था,

एक ऐसी अल्बर्टाइन जो मेरे अपनेपन का प्रतीक थी, अज्ञात का नहीं। जब इस तरह, किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा उत्पन्न पीड़ा के क्षण से, जब इस अनिश्चितता से कि हम उसे अपने पास रख पाएंगे या वह भाग जाएगी, प्रेम का जन्म होता है, तो ऐसा प्रेम उस क्रांति की छाप लिए रहता है जिसने इसे जन्म दिया है, यह उस व्यक्ति के बारे में हमारे पहले के विचारों को बहुत कम याद दिलाता है। समुद्र की पृष्ठभूमि में अल्बर्टीन को देखकर मेरे मन में जो पहली छाप पड़ी, वह शायद कुछ हद तक उसके प्रति मेरे प्रेम में बनी रहे: वास्तव में, इस प्रकार के प्रेम में ये प्रारंभिक छापें बहुत छोटी सी भूमिका निभाती हैं; इसकी शक्ति में, इसकी पीड़ा में, इसकी सांत्वना की आवश्यकता में और एक शांत और सुखदायक स्मृति में लौटने में, जिसके साथ हम बने रहना पसंद करते हैं और जिसे हम प्यार करते हैं उसके बारे में और कुछ नहीं जानना चाहते, भले ही कुछ भयानक हो जो हमें जानना चाहिए—हम तो इन प्रारंभिक स्मृतियों से ही परामर्श करना अधिक पसंद करेंगे—ऐसा प्रेम बिल्कुल अलग तत्वों से बना होता है!

कभी-कभी उसके आने से पहले मैं बत्ती बुझा देता था। अँधेरे में, सुलगती हुई लकड़ी की हल्की रोशनी में, वह मेरे बगल में लेट जाती थी। मेरी आँखें उसे देखे बिना ही, मेरे हाथ और गाल ही उसे पहचान पाते थे, मेरी आँखें जो अक्सर उसे बदले हुए रूप में देखने से डरती थीं। इस वजह से, इस अदृश्य प्रेम के कारण, शायद उसने खुद को सामान्य से कहीं अधिक गर्मजोशी भरे स्नेह में सराबोर महसूस किया होगा। कुछ अन्य शामों को, मैं कपड़े उतारता, लेट जाता, और अल्बर्टीन मेरे बिस्तर के किनारे बैठी होती, और हम अपने खेल या चुम्बनों से बाधित हुई बातचीत को फिर से शुरू कर देते; और, उस इच्छा में ही जो हमें किसी दूसरे व्यक्ति के अस्तित्व और चरित्र में रुचि लेने के लिए प्रेरित करती है, हम अपने स्वभाव के प्रति इतने सच्चे बने रहते हैं (भले ही, साथ ही साथ, हम बारी-बारी से उन विभिन्न लोगों को त्यागते रहें जिनसे हमने प्रेम किया है), कि एक बार, जब मैंने अल्बर्टीन को चूमते हुए और उसे अपनी छोटी बच्ची कहते हुए शीशे में खुद को देखा, तो मेरे चेहरे पर जो दुख और भावुकता का भाव था, ठीक वैसा ही जैसा बहुत पहले गिलबर्ट के साथ था, जिसे मैं अब याद नहीं करता था, और शायद एक दिन किसी और लड़की के साथ भी वैसा ही भाव होता, अगर अल्बर्टीन को भूलना मेरी नियति होती, तो मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि किसी भी व्यक्तिगत विचार से ऊपर (वह सहज प्रवृत्ति जो हमें उस क्षण के व्यक्ति को एकमात्र सच्चा व्यक्ति मानने के लिए

बाध्य करती है) मैं स्त्री की यौवन और सुंदरता के प्रति समर्पित एक भावुक और पीड़ादायक भक्ति का कर्तव्य निभा रहा था। और फिर भी इस इच्छा के साथ, यौवन को एक भेंट के साथ सम्मानित करने की, बालबेक की मेरी यादों के साथ भी, अल्बर्टाइन को हर शाम इस तरह अपने पास रखने की जो आवश्यकता मैंने महसूस की, उसमें कुछ ऐसा समाहित था जो अब तक अज्ञात था, कम से कम मेरे प्रेममय जीवन में, यदि यह मेरे जीवन में पूरी तरह से नया नहीं था।

यह एक ऐसी सुकून देने वाली शक्ति थी, जिसका अनुभव मैंने बहुत पहले कॉम्ब्रे की उन शामों के बाद से नहीं किया था, जब मेरी माँ मेरे बिस्तर पर झुककर मुझे चुंबन से शांति देती थीं। सच कहूँ तो, उस समय मुझे बहुत आश्चर्य होता अगर कोई मुझसे कहता कि मैं पूरी तरह से गुणी नहीं हूँ, और उससे भी अधिक आश्चर्य होता अगर कोई मुझसे कहता कि मैं कभी किसी और को सुख से वंचित करने की कोशिश करूँगा। मुझे खुद का बहुत कम ज्ञान रहा होगा, क्योंकि अल्बर्टीन के मेरे साथ रहने का सुख, दुनिया से अलग होने के सुख से कहीं अधिक था, जहाँ हर कोई बारी-बारी से उसका आनंद लेने के लिए स्वतंत्र था, वह खिलती हुई युवती जो अगर मुझे कोई बड़ा सुख नहीं देती थी, तो कम से कम दूसरों से सुख छीन रही थी। महत्वाकांक्षा, प्रसिद्धि मुझ पर कोई असर नहीं डालती। और उससे भी बढ़कर, मैं घृणा महसूस करने में असमर्थ था। फिर भी, मेरे लिए शारीरिक रूप से प्रेम करना, अनगिनत प्रतिद्वंद्वियों पर विजय प्राप्त करने जैसा था। मैं इसे कितनी बार भी दोहराऊँ, कम ही होगा; यह सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण एक शामक था।

अल्बर्टीन के लौटने से पहले, भले ही मुझे उसकी वफादारी पर संदेह रहा हो, मैंने कल्पना की हो कि वह मोंटजोवेन के कमरे में है, जब वह अपने ड्रेसिंग गाउन में मेरी कुर्सी के सामने बैठी होगी, या (यदि, जैसा कि अक्सर होता था, मैं बिस्तर पर ही रहता था) मेरे बिस्तर के चरणों में, मैं अपने संदेह उसके समक्ष रख देता, उन्हें उसके हवाले कर देता ताकि वह मुझे उनसे मुक्ति दिला सके, एक उपासक की तरह जो अपनी प्रार्थना कर रहा हो। पूरी शाम वह मेरे बिस्तर पर एक उत्तेजक गेंद की तरह सिमटी हुई, मेरे साथ खेलती हुई, एक बड़ी बिल्ली की तरह हो सकती थी; उसकी छोटी गुलाबी नाक, जिसकी नोक को वह एक चंचल नज़र से और भी छोटा कर देती थी, जिससे उसमें वह तीक्ष्णता आ जाती थी जो हम कुछ हट्टे-कट्टे लोगों में देखते हैं,

उसे एक उग्र और विद्रोही आभा दे सकती थी; ऐसा लग रहा था मानो वह अपने लंबे, काले बालों की एक लट को अपने गुलाबी गाल पर गिरने दे रही हो और अपनी आँखें आधी बंद करके, अपनी बाहें फैलाकर मुझसे कह रही हो: "मेरे साथ जो चाहो करो!"; जब उसके जाने का समय आया और वह शुभ रात्रि कहने के लिए मेरे करीब आई, तो मैंने उसके दृढ़ गले के दोनों ओर एक ऐसी नम्रता से चुंबन किया जो मेरे पारिवारिक जीवन का लगभग हिस्सा बन चुकी थी। अब मुझे उसका गला कभी भी उतना भूरा या झाइयों वाला नहीं लगता था, मानो ये ठोस गुण अल्बर्टीन की किसी वफादार उदारता के अनुरूप ही थे।

जब अल्बर्टीन की बारी मुझे शुभ रात्रि कहने की आई, तो उसने मेरे गले के दोनों ओर चुंबन किया, उसके बाल मुझे कोमल, फड़फड़ाते पंखों की तरह सहला रहे थे। शांति के वे दो चुंबन अतुलनीय थे, फिर भी अल्बर्टीन मेरे होंठों में समा गई, मुझे अपनी जीभ का उपहार दे दिया, मानो पवित्र आत्मा का उपहार हो, जो मुझे एक पवित्र औषधि की तरह दे गया हो, और मुझे ऐसी शांति प्रदान कर गया हो जो लगभग उतनी ही अनमोल हो जितनी शाम को कॉम्ब्रे में मेरी माँ मेरे माथे पर अपने होंठ रखा करती थी।

"क्या तुम कल हमारे साथ आ रहे हो, शरारती लड़के?" उसने मुझे छोड़कर जाने से पहले पूछा। "तुम कहाँ जा रही हो?" "यह मौसम और तुम पर निर्भर करेगा। लेकिन क्या तुमने आज कुछ लिखा है, मेरे प्यारे? नहीं? तो फिर हमारे साथ न आना तुम्हारा कोई फ़ायदा नहीं था। वैसे, मुझे बताओ, जब मैं अंदर आई, तो तुमने मेरी आहट पहचान ली, तुमने तुरंत अंदाज़ा लगा लिया कि कौन है?" "बिल्कुल। क्या मैं गलती कर सकती हूँ, क्या मैं अपनी नन्ही चिड़िया की फुदक को हज़ारों में नहीं पहचान सकती? उसे सोने से पहले मुझे उसके जूते उतारने देने चाहिए, मुझे बहुत खुशी होगी। तुम उस सफ़ेद लेस में कितनी प्यारी और गुलाबी लग रही हो।"

यही मेरा जवाब था; मेरी कामुक अभिव्यक्तियों में, कुछ ऐसी भी थीं जो मेरी दादी और माँ की खासियत थीं, क्योंकि धीरे-धीरे मैं अपने सभी रिश्तेदारों से मिलती-जुलती जा रही थी, खासकर अपने पिता से, जो मुझसे बिल्कुल अलग तरीके से, क्योंकि अगर चीजें खुद को दोहराती हैं, तो बड़े बदलावों के साथ ही सही—मौसम में बहुत दिलचस्पी रखते थे; और सिर्फ अपने पिता ही नहीं, मैं अपनी चाची लियोनी से भी मिलती-जुलती जा रही थी। वरना, अल्बर्टीन मेरे घर से

बाहर जाने का एक कारण जरूर होती, ताकि मैं उसे अपने नियंत्रण से बाहर अकेला न छोड़ दूं। मेरी चाची लियोनी, जो धार्मिक अनुष्ठानों में लीन रहती थीं, जिनके साथ मुझे पक्का यकीन था कि मेरी कोई भी बात मेल नहीं खाती थी, मैं जो आनंद की इतनी शौकीन थी, उस सनकी औरत से बिलकुल अलग, जिसने अपने जीवन में कभी कोई आनंद नहीं जाना था और जो दिन भर अपनी माला जपती रहती थी, मैं जो साहित्यिक करियर शुरू करने में अपनी असमर्थता से पीड़ित थी, जबकि वह परिवार में एकमात्र ऐसी व्यक्ति थीं जो कभी यह नहीं समझ पाईं कि पढ़ना एक मनोरंजक शगल से बढ़कर कुछ और भी हो सकता है, जिसके कारण ईस्टर के मौसम में भी रविवार को पढ़ना जायज था, जब हर तरह का गंभीर काम वर्जित होता है, ताकि वह दिन केवल प्रार्थना से ही पवित्र हो सके। अब, हालांकि मैं हर दिन किसी न किसी बीमारी का बहाना बनाकर अक्सर बिस्तर पर ही पड़ा रहता था, एक शख्सियत (अल्बर्टीन नहीं, न ही कोई ऐसा शख्स जिसे मैं प्यार करता था, बल्कि एक ऐसी शख्सियत जिसका मुझ पर किसी भी प्रियजन से कहीं अधिक प्रभाव था) मुझमें समा गई थी, इतनी निरंकुश कि कभी-कभी मेरी ईर्ष्या भरी शंकाओं को भी दबा देती थी या कम से कम मुझे यह पता लगाने से रोकती थी कि क्या उनमें कोई सच्चाई है, और यह मेरी चाची लियोनी थीं। यह काफी था कि मैं अपने पिता से हद से ज्यादा मिलता-जुलता था, इस हद तक कि उनकी तरह बैरोमीटर देखकर संतुष्ट नहीं होता था, बल्कि खुद एक चलता-फिरता बैरोमीटर बन जाता था; यह काफी था कि मैं अपनी चाची लियोनी के आदेश पर घर में रहकर मौसम देखता रहता था, अपने बेडरूम की खिड़की से या अपने बिस्तर से भी; फिर भी मैं अब अल्बर्टीन से बात कर रहा था, एक पल में वैसे ही जैसे कॉम्ब्रे में मैं अपनी माँ से बात करता था, दूसरे पल में जैसे मेरी दादी मुझसे बात करती थीं।

जब हम एक निश्चित आयु पार कर लेते हैं, तो हमारे भीतर के उस बच्चे की आत्मा और उन मृत आत्माओं का आगमन होता है जिनसे हम उत्पन्न हुए हैं, और वे अपने खजाने और विपत्तियों को मुट्ठी भर-भरकर हम पर बरसाती हैं। वे हमसे नए भावों में सहयोग करने की अनुमति मांगती हैं, जिनमें हम उनकी पुरानी छवि को मिटाकर उन्हें एक मौलिक रचना में ढालते हैं। इस प्रकार, मेरे बचपन से लेकर मेरे माता-पिता और रिश्तेदारों का अतीत, अल्बर्टीन के प्रति मेरे अपवित्र प्रेम के साथ मिलकर एक ऐसे स्नेह का आकर्षण पैदा करता है

जो पुत्रवत और मातृवत दोनों है। जीवन के एक निश्चित पड़ाव पर, हमें अपने उन सभी रिश्तेदारों का आतिथ्य करना पड़ता है जो इतनी दूर से यात्रा करके हमारे चारों ओर एकत्रित हुए हैं।

इससे पहले कि अल्बर्टीन मेरी बात मानकर अपने जूते उतारने देती, मैंने उसकी कमीज़ खोल दी। उसके दोनों छोटे उभरे हुए स्तन इतने गोल थे कि वे उसके शरीर का अभिन्न अंग होने के बजाय फल की तरह वहीं पके हुए प्रतीत होते थे; और उसका पेट (उस जगह को छुपाए हुए जहाँ किसी पुरुष का पेट किसी मूर्ति में लोहे की कील अटकी रह जाती है) उसकी जांघों के जोड़ पर दो ऐसे घुमावदार उभारों से बंद था, जो सूर्यास्त के बाद क्षितिज के समान शांत, स्थिर और एकांतप्रिय थे। उसने अपने जूते उतारे और मेरे बगल में लेट गई।

हे पुरुष और स्त्री के महान भाव, जिनमें संसार के प्रथम युग की मासूमियत और मिट्टी की नम्रता के साथ, सृष्टि के विखंडित भाग में पुनर्मिलन की चाह है, जिनमें हव्वा उस पुरुष के समक्ष विस्मित और विनम्र है जिसके साये में वह जागी है, ठीक वैसे ही जैसे वह स्वयं, अभी भी अकेला, उस ईश्वर के समक्ष जिसने उसे गढ़ा है। अल्बर्टीन ने अपने काले बालों के पीछे अपनी बाहें मोड़ लीं, उसका उभरा हुआ कूल्हा, उसका पैर हंस की गर्दन की तरह ऊपर की ओर खिंचता है और फिर अपने आरंभिक बिंदु की ओर मुड़ जाता है। जब वह पूरी तरह करवट लेकर लेटी थी, तभी उसके चेहरे का एक ऐसा पहलू दिखाई दिया (जो सामने से देखने पर बहुत सुंदर और आकर्षक लगता था) जिसे मैं सहन नहीं कर सका, लियोनार्डो के कुछ व्यंग्यचित्रों की तरह टेढ़ी नाक, जो किसी जासूस की धूर्तता, लाभ के लालच और चालाकी को दर्शाती प्रतीत होती थी, जिसकी मेरे घर में उपस्थिति मुझे भयभीत कर देती और जिसका यह चेहरा पर्दाफाश करता प्रतीत होता था। मैंने तुरंत अल्बर्टीन का चेहरा अपने हाथों में लिया और उसकी स्थिति बदल दी।

"अच्छे बच्चे बनो, मुझसे वादा करो कि अगर तुम कल बाहर नहीं आए तो काम करोगे," मेरी मालकिन ने कमीज़ पहनते हुए कहा। "हाँ, लेकिन अभी अपना ड्रेसिंग गाउन मत पहनो।" कभी-कभी मैं उनके बगल में ही सो जाता था। कमरा ठंडा हो गया था, और लकड़ी की ज़रूरत थी। मैंने अपने सिर के ऊपर घंटी ढूंढने की कोशिश की, लेकिन नाकाम रहा। मैंने सारी तांबे की छड़ें एक-एक करके छू लीं, सिवाय उनके जिनके बीच घंटी लटकी थी। फिर

मैंने अल्बर्टीन से कहा, जो बिस्तर से उठ गई थी ताकि फ्रांस्वा हमें साथ-साथ लेटे हुए न देख ले: "नहीं, एक पल के लिए वापस आओ, मुझे घंटी नहीं मिल रही है।"

सुकून भरे पल, खुशनुमा, देखने में मासूम, फिर भी वो पल जिनमें हमारे भीतर अप्रत्याशित आपदा की आशंका पनपती है, जो प्रेममय जीवन को सबसे अनिश्चित बना देती है, वो जीवन जिसमें सबसे उज्ज्वल पलों के बाद गंधक और धुएँ की अथाह वर्षा होती है, जिसके बाद, अपनी विपत्ति से सबक लेने का साहस किए बिना, हम तुरंत उस गड्ढे की ढलानों पर पुनर्निर्माण के काम में लग जाते हैं जहाँ से तबाही के सिवा कुछ नहीं निकल सकता। मैं उतना ही लापरवाह था जितना हर वो व्यक्ति जो यह सोचता है कि उसका सुख स्थायी होगा।

यह सांत्वना दुख को जन्म देने के लिए आवश्यक रही है—और समय-समय पर उसे शांत करने के लिए भी लौटती है—इसी कारण पुरुष एक-दूसरे के प्रति और यहाँ तक कि स्वयं के प्रति भी ईमानदार हो सकते हैं, जब वे किसी स्त्री की दयालुता पर गर्व करते हैं, यद्यपि कुल मिलाकर, उनकी घनिष्ठता के मूल में एक गुप्त रूप से, दुनिया से अनकहा या अनजाने में प्रश्नों, पूछताछों के माध्यम से प्रकट होने वाला, एक पीड़ादायक अनिश्चितता निरंतर बनी रहती है। लेकिन चूंकि यह प्रारंभिक सांत्वना के बिना जन्म नहीं ले सकती थी, और बाद में भी यह रुक-रुक कर मिलने वाली सांत्वना पीड़ा को सहनीय बनाने और दरारों को रोकने के लिए आवश्यक है, इसलिए उस गुप्त नरक को छिपाना जो जीवन उस स्त्री के साथ साझा करने पर बन सकता है, जिसे वे एक कीमती घनिष्ठता के दिखावटी प्रदर्शन के चरम तक ले जाते हैं, एक वास्तविक दृष्टिकोण, कारण और प्रभाव की एक सार्वभौमिक प्रक्रिया, और उन तरीकों में से एक को व्यक्त करता है जिनसे दुख का सृजन संभव होता है।

अब मुझे इस बात पर आश्चर्य नहीं होता था कि अल्बर्टीन घर में है और कल वह मेरे साथ या एंड्री की देखरेख में ही बाहर जाएगी। साझा जीवन की ये आदतें, मेरे अस्तित्व की वह व्यापक रूपरेखा, जिसमें अल्बर्टीन के अलावा कोई प्रवेश नहीं कर सकता था, (मेरे आने वाले जीवन की उस भविष्य की योजना में, जिसके बारे में मैं अभी भी अनजान था, जैसे कोई वास्तुकार उन विशाल संरचनाओं की योजना बनाता है जो बहुत बाद में बनेंगी) दूर की रेखाएँ, जो अन्य रेखाओं के समानांतर थीं लेकिन कहीं अधिक विशाल थीं, जिन्होंने मुझमें, एक एकांत आश्रम की तरह, मेरे भविष्य के प्रेम के कुछ हद तक कठोर और नीरस सूत्र को उकेरा था, वास्तव में

उसी रात बालबेक में खींची गई थीं, जब छोटी ट्राम में, अल्बर्टीन ने मुझे बताया था कि उसका पालन-पोषण किसने किया था, और मैंने हर कीमत पर उसे कुछ प्रभावों से दूर रखने और आने वाले कुछ दिनों तक उसे मेरी नज़रों से ओझल न होने देने का फैसला किया था। दिन-ब-दिन बीतते गए, ये आदतें यांत्रिक हो गईं, लेकिन, उन आदिम अनुष्ठानों की तरह जिनका अर्थ इतिहासकार खोजते रहते हैं, मैं किसी को भी, जो मुझसे पूछता कि इस एकांत जीवन से मेरा क्या तात्पर्य है, जिसे मैंने थिएटर तक न जाने तक अपना लिया था, यह कह सकता था (परंतु नहीं कहता) कि इसकी उत्पत्ति एक विशेष शाम की चिंता से हुई थी, और आने वाले दिनों में स्वयं को यह सिद्ध करने की मेरी आवश्यकता से कि जिस लड़की के दुर्भाग्यपूर्ण बचपन के बारे में मैंने जाना था, वह यदि चाहे तो स्वयं को ऐसे प्रलोभनों के अधीन न कर सके। मैं अब इन संभावनाओं के बारे में बहुत कम ही सोचता था, लेकिन फिर भी वे मेरी चेतना में अस्पष्ट रूप से मौजूद रहती थीं। यह तथ्य कि मैं उन्हें दिन-प्रतिदिन नष्ट कर रहा था—या नष्ट करने का प्रयास कर रहा था—निःसंदेह यही कारण था कि मुझे उन गालों को चूमने में सुकून मिलता था जो कई अन्य गालों से अधिक सुंदर नहीं थे; किसी भी गहन शारीरिक आकर्षण के नीचे खतरे की स्थायी संभावना छिपी होती है।

मैंने अल्बर्टीन से वादा किया था कि अगर मैं उसके साथ बाहर नहीं जाऊँगा, तो काम में लग जाऊँगा, लेकिन सुबह, मानो हमारे सोए रहने का फ़ायदा उठाकर घर अचानक गायब हो गया हो, मैं एक अलग ही मौसम और अलग ही वातावरण में जागा। हम किसी अनजान देश में पहुँचते ही काम शुरू नहीं कर देते, जहाँ की परिस्थितियों के अनुसार हमें खुद को ढालना पड़ता है। लेकिन मेरे लिए हर दिन एक अलग देश था। यहाँ तक कि मेरी आलस्य भी, अपने नए-नए रूपों में, मैं उसे कैसे पहचान पाता?

कभी-कभी, ऐसे दिनों में जब मौसम, सबके अनुसार, उम्मीद से परे होता था, लगातार और निरंतर बारिश के बीच स्थित घर में रहना मात्र ही एक समुद्री यात्रा के समान मनमोहक, शांत और रोचक अनुभव प्रदान करता था; वहीं कभी-कभी, एक सुहावने दिन में, बिस्तर पर चुपचाप लेटे रहना ऐसा था मानो प्रकाश और छाया मेरे चारों ओर एक पेड़ के तने की तरह खेल रहे हों।

या फिर, पास के एक मठ की घंटी की पहली झंकार में, सुबह-सुबह के दुर्लभ उपासकों की तरह, जो अपनी फड़फड़ाती बर्फबारी से अंधेरे आकाश को मुश्किल से सफेद कर रहे थे, जो गर्म हवा से पिघलकर बिखर गई थी, मैंने उन तूफानी, अव्यवस्थित, आनंददायक दिनों में से एक को पहचाना, जब कभी-कभार होने वाली बौछार से भीगी और हवा के झोंके या धूप की किरण से सूखी छतें एक मधुर गुनगुनाहट बिखेरती हैं, और जैसे ही वे हवा के फिर से चलने की प्रतीक्षा करती हैं, उस क्षणिक धूप में इतराती हैं जिसने उनकी कबूतर जैसी स्लेट की छाती को चमका दिया है, उन दिनों में से एक जो मौसम के इतने बदलावों, वायुमंडलीय घटनाओं, तूफानों से भरा होता है कि आलसी व्यक्ति को यह महसूस नहीं होता कि उसने उन्हें व्यर्थ कर दिया है, क्योंकि वह उस गतिविधि में रुचि ले रहा है जिसे स्वयं की अनुपस्थिति में, वातावरण, एक अर्थ में उसके स्थान पर कार्य करते हुए, प्रदर्शित कर रहा है; क्रांति या युद्ध के उन दिनों की तरह, जो कक्षा से बंक मारने वाले स्कूली बच्चे को खाली नहीं लगते, क्योंकि अदालतों के बाहर समय बिताने या अखबार पढ़ने से उसे यह भ्रम होता है कि घटी घटनाओं में, जो उसने नहीं सीखी हैं, उसे बौद्धिक लाभ मिल रहा है और अपनी आलस्य का बहाना मिल रहा है; ऐसे दिनों की तुलना हम उन दिनों से कर सकते हैं जब हमारे जीवन में कोई असाधारण संकट आता है और वह व्यक्ति जिसने कभी कुछ नहीं किया है, यह सोचता है कि अगर सब कुछ ठीक रहा तो वह मेहनती आदतें अपना लेगा; उदाहरण के लिए, वह सुबह जब वह एक ऐसे द्वंद्वयुद्ध के लिए निकलता है जो बेहद खतरनाक परिस्थितियों में लड़ा जाना है; फिर अचानक, ठीक उसी क्षण जब शायद उसका जीवन उससे छिनने वाला होता है, उसे उस जीवन के मूल्य का एहसास होता है जिसका उपयोग वह किसी महत्वपूर्ण कार्य को शुरू करने या केवल सुखों का आनंद लेने के लिए कर सकता था, और जिसका उसने बिल्कुल भी उपयोग नहीं किया है। वह खुद से कहता है, "अगर मैं मारा न जाऊं, तो मैं इसी क्षण काम में लग जाऊंगा और आनंद भी लूंगा।"

उसकी नज़रों में जीवन का मूल्य अचानक बढ़ गया है, क्योंकि वह जीवन में वह सब कुछ झोंक देता है जो उसे लगता है कि जीवन दे सकता है, न कि वह थोड़ा-बहुत जो वह सामान्यतः जीवन से प्राप्त करता है। वह जीवन को अपनी इच्छा के प्रकाश में देखता है, न कि उस रूप में जैसा उसके अनुभव ने उसे सिखाया है - यानी इतना तुच्छ! उस क्षण, जीवन काम, यात्रा,

पर्वतारोहण, उन सभी सुखद चीजों से भर गया है, जिनके बारे में वह खुद से कहता है कि द्वंद्वयुद्ध का घातक परिणाम उन्हें असंभव बना देगा, जबकि द्वंद्वयुद्ध का प्रश्न उठने से पहले ही वे असंभव थीं, उन बुरी आदतों के कारण जो द्वंद्वयुद्ध न होने पर भी बनी रहतीं। वह बिना किसी खरोंच के घर लौट आता है, लेकिन उसे सुखों, सैर-सपाटे, यात्रा, उन सभी चीजों में वही बाधाएं मिलती रहती हैं जिनसे उसे एक पल के लिए भी मृत्यु द्वारा हमेशा के लिए वंचित होने का डर था; इन चीजों से उसे वंचित करना ही उसके लिए पर्याप्त रहा है। काम के संबंध में—असाधारण परिस्थितियाँ व्यक्ति में पहले से मौजूद प्रवृत्ति को और तीव्र कर देती हैं, परिश्रमी में श्रम और आलसी में आलस्य को बढ़ा देती हैं—वह छुट्टी ले लेता है।

मैंने उनके उदाहरण का अनुसरण किया, और वही किया जो मैंने लेखक बनने के अपने पहले संकल्प के बाद से हमेशा किया था, जो मैंने बहुत पहले लिया था, लेकिन जो मुझे कल का ही प्रतीत होता था, क्योंकि मैंने हर बीते दिन को अस्तित्वहीन माना था। मैंने इस दिन को भी उसी तरह से लिया, बारिश की बौछारों और धूप की चमक को बिना कुछ किए बीतने दिया, और मन में ठान लिया कि कल से काम शुरू करूँगा। लेकिन अब मैं बादलों से रहित आकाश के नीचे खड़ा हुआ वह व्यक्ति नहीं था; घंटियों की सुनहरी ध्वनि में केवल प्रकाश ही नहीं था (जैसे शहद में होता है), बल्कि प्रकाश की अनुभूति और संरक्षित फलों की कड़वी गंध भी थी (क्योंकि कॉम्ब्रे में यह अक्सर हमारे साफ़ किए गए खाने की मेज पर ततैया की तरह मंडराती रहती थी)। चकाचौंध भरी धूप के इस दिन, रात होने तक आँखें बंद करके रहना एक जायज़, सामान्य, स्वास्थ्यवर्धक, सुखद, समसामयिक बात थी, ठीक वैसे ही जैसे गर्मी से बचने के लिए बाहर के शटर बंद रखना।

बालबेक की अपनी दूसरी यात्रा की शुरुआत में, ऐसे ही मौसम में मैं बढ़ती लहरों के नीले रंग के बीच ऑर्केस्ट्रा के वायलिन की मधुर ध्वनि सुना करता था। आज अल्बर्टाइन को मैं और भी अधिक गहराई से महसूस कर रहा था। कुछ दिन ऐसे भी थे जब घंटे की घंटी की ध्वनि अपने प्रतिध्वनि क्षेत्र पर इतनी शीतल, इतनी नमी से भरी या प्रकाश से लबालब एक ऐसी छाप छोड़ती थी मानो किसी अंधे के लिए लिखा गया चित्र हो, या यूँ कहें कि बारिश या सूरज के आकर्षण की संगीतमय व्याख्या हो। इतना अधिक कि उस क्षण, जब मैं बिस्तर पर आँखें बंद करके लेटा था, मैंने स्वयं से कहा कि सब कुछ रूपांतरित हो सकता है और जो ब्रह्मांड केवल

श्रव्य है, वह भी उतना ही विविधतापूर्ण हो सकता है जितना कि दूसरा। जैसे किसी नाव में आलस से दिन-प्रतिदिन नदी के विपरीत दिशा में यात्रा करते हुए, और अपनी आँखों के सामने मंत्रमुग्ध कर देने वाली यादों की एक अंतहीन रूप से बदलती श्रृंखला को प्रकट होते हुए देखकर, जिन्हें मैंने नहीं चुना था, जो एक क्षण पहले अदृश्य थीं, और जिन्हें मेरा मन मुझे एक के बाद एक प्रस्तुत करता था, बिना मुझे उन्हें चुनने की स्वतंत्रता दिए, मैं उस निरंतर विस्तार पर धूप में अपनी सैर को आलस से जारी रखता था।

बालबेक में वे सुबह के संगीत कार्यक्रम बहुत पुराने नहीं थे। फिर भी, उस अपेक्षाकृत हाल के क्षण में, मैंने अल्बर्टीन के बारे में बहुत कम सोचा था। वास्तव में, मेरे आगमन के बाद की पहली कुछ सुबहों में, मुझे पता ही नहीं था कि वह बालबेक में है। तो फिर मुझे यह किससे पता चला? ओह, हाँ, ऐमे से। आज ही की तरह एक सुहावना धूप वाला दिन था। वह मुझे फिर से देखकर खुश था। लेकिन उसे अल्बर्टीन पसंद नहीं है। हर कोई उससे प्यार नहीं कर सकता। हाँ, उसी ने मुझे बताया था कि वह बालबेक में है। लेकिन उसे कैसे पता चला? आह! वह उससे मिला था, और उसे लगा था कि उसका अंदाज़ अच्छा नहीं है। उस क्षण, जब मैंने ऐमे की कहानी को उस नज़रिए से अलग नज़रिए से देखा, जिस नज़रिए से उसने मुझे बताया था, मेरे विचार, जो अब तक इन शांत जलधाराओं पर आनंदपूर्वक तैर रहे थे, अचानक फट पड़े, मानो वे किसी अदृश्य और खतरनाक बारूदी सुरंग से टकरा गए हों, जो मेरी स्मृति के इस बिंदु पर धोखे से बंधी हुई थी। उसने मुझे बताया था कि वह उससे मिला था, और उसे उसका अंदाज़ बुरा लगा था। बुरे अंदाज़ से उसका क्या मतलब था? मैंने समझा था कि उसका मतलब भद्दा व्यवहार था, क्योंकि मैंने पहले ही उसका खंडन करते हुए कहा था कि वह बहुत सभ्य थी। लेकिन नहीं, शायद उसका मतलब गोमोराह के अंदाज़ से था। वह एक दूसरी लड़की के साथ थी, शायद उन्होंने एक-दूसरे की कमर में बाहें डाली हुई थीं, वे दूसरी महिलाओं को घूर रही थीं, वे सचमुच एक ऐसा 'अंदाज़' दिखा रही थीं जो मैंने अल्बर्टीन को अपनी मौजूदगी में कभी नहीं देखा था। वह दूसरी लड़की कौन थी, ऐमे उससे कहाँ मिला था, इस घिनौनी अल्बर्टीन से?

मैंने ऐमे की कही हुई बातों को ठीक से याद करने की कोशिश की, ताकि यह पता चल सके कि क्या वह मेरे भ्रम को दर्शा रहा था या उसका मतलब महज़ शिष्टाचार था। लेकिन मेरा

सवाल पूछना व्यर्थ था, क्योंकि जिसने ये कहा था और जो मुझे ये याद दिला सकता था, वे दोनों एक ही व्यक्ति थे, मैं खुद। पल भर के लिए मेरी छवि फिर से प्रकट हुई, पर मेरी अहमियत में कोई इज़ाफ़ा नहीं हुआ। चाहे मैं कितना भी सवाल पूछूँ, जवाब तो मैंने खुद ही दिया, और मुझे कुछ भी नया पता नहीं चला। मैंने मैडम विंटेइल के बारे में सोचना भी बंद कर दिया। एक नए संदेह से उपजी, ईर्ष्या की जो लहर मुझे सता रही थी, वह भी नई थी, या यूँ कहें कि वह उसी संदेह का विस्तार मात्र थी। उसका दृश्य भी वही था, जो अब मोंटजोवेन नहीं, बल्कि वह सड़क थी जिस पर ऐमे की मुलाकात अल्बर्टाइन से हुई थी, और उसके आसपास वे सभी दोस्त थे, जिनमें से कोई न कोई वह भी हो सकती थी जो उस दिन अल्बर्टाइन के साथ थी। शायद वह कोई एलिज़ाबेथ थी, या फिर शायद वे दो लड़कियाँ जिन्हें अल्बर्टीन ने कैसिनो में शीशे में देखा था, जबकि वह उन्हें अनदेखा करने का दिखावा कर रही थी। निस्संदेह उसके उनके साथ और ब्लोच की चचेरी बहन एस्थर के साथ भी संबंध थे। अगर किसी तीसरे व्यक्ति ने मुझे इन संबंधों के बारे में बताया होता, तो यह बात मुझे लगभग मार ही डालती, लेकिन चूंकि मैं खुद ही इन बातों की कल्पना कर रहा था, इसलिए मैंने जानबूझकर इसमें कुछ अनिश्चितता जोड़ दी ताकि दर्द कम हो जाए।

हम प्रतिदिन, संदेह के बहाने, भारी मात्रा में इस विचार को आत्मसात करने में सफल होते हैं कि हमारे साथ विश्वासघात हो रहा है, जिसकी थोड़ी सी मात्रा भी घातक साबित हो सकती है, यदि चुभने वाले शब्दों की सुई से चुभ जाए। निस्संदेह इसी कारण से, और आत्मरक्षा की प्रवृत्ति के कारण, वही ईर्ष्यालु व्यक्ति मामूली बातों के आधार पर भी सबसे भयानक संदेह पैदा करने में संकोच नहीं करता, बशर्ते कि जब भी उसे कोई सबूत पेश किया जाए, वह उसे स्वीकार करने से इनकार कर दे। खैर, प्रेम एक लाइलाज बीमारी है, उन डायथेटिक अवस्थाओं की तरह जिनमें गठिया पीड़ित को थोड़े समय के लिए राहत देता है, लेकिन फिर मिर्गी जैसे सिरदर्द से भर देता है। क्या मेरा ईर्ष्यालु संदेह शांत हुआ? फिर मुझे अल्बर्टीन के प्रति इस बात का गुस्सा आया कि वह मेरे साथ नरमी से पेश नहीं आई, शायद इसलिए कि उसने एंड्री के सामने मेरा मजाक उड़ाया था। मुझे इस बात का डर सताने लगा कि अगर एंड्री ने हमारी सारी बातें दोहरा दी होतीं तो उसने क्या सोचा होगा; भविष्य अंधकारमय और भयावह लग रहा था। मेरी यह उदासी तभी दूर होती जब कोई नया ईर्ष्यापूर्ण संदेह मुझे किसी

और खोज पर ले जाता या फिर अल्बर्टीन का स्नेह प्रदर्शन मेरी वास्तविक स्थिति को मेरे लिए महत्वहीन बना देता। यह लड़की जो भी हो, मुझे ऐमे को पत्र लिखना होगा, उससे मिलने की कोशिश करनी होगी, और फिर अल्बर्टीन से बात करके, उसका बयान सुनकर उसके कथन की पुष्टि करनी होगी। इस बीच, मुझे पूरा यकीन था कि वह ब्लोच की चचेरी बहन ही होगी, इसलिए मैंने ब्लोच से ही, जिसे मेरे इरादे का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था, बस इतना कहा कि मुझे उसकी तस्वीर दिखा दे, या इससे भी बेहतर, अगर संभव हो तो उससे मेरी मुलाकात करवा दे।

ईर्ष्या हमें कितने व्यक्तियों, शहरों, सड़कों के बारे में जानने के लिए उत्सुक नहीं बनाती? यह ज्ञान की प्यास है जिसके कारण, विभिन्न अलग-अलग बिंदुओं के संबंध में, हम बारी-बारी से हर संभव धारणा प्राप्त कर लेते हैं, सिवाय उन धारणाओं के जिनकी हमें आवश्यकता होती है। हम कभी नहीं कह सकते कि संदेह उत्पन्न नहीं होगा, क्योंकि अचानक, हमें एक अस्पष्ट वाक्य याद आ जाता है, एक ऐसा बहाना जो हमें बिना किसी उद्देश्य के नहीं दिया गया होगा। और फिर भी, हमने उस व्यक्ति को दोबारा नहीं देखा है, लेकिन एक मरणोपरांत ईर्ष्या भी होती है, जो उसे छोड़ने के बाद ही जन्म लेती है, दहलीज की ईर्ष्या। शायद यह मेरी आदत थी कि मैं अपने हृदय में एक साथ कई इच्छाओं को पालती थी, एक अच्छे परिवार की युवती के लिए इच्छा, जिसे मैं अपनी खिड़की के नीचे से उसकी गवर्नेंस के साथ गुजरते हुए देखती थी, और विशेष रूप से उस लड़की के लिए जिसका सेंट-लूप ने मुझसे जिक्र किया था, जो बदनाम घरों में जाती थी, सुंदर नौकरानियों के लिए इच्छा, और विशेष रूप से मैडम की नौकरानी के लिए। बसंत ऋतु की शुरुआत में गाँव जाने की इच्छा, एक बार फिर नागफनी के पेड़, खिले हुए सेब के पेड़, समुद्र में तूफान देखने की इच्छा, वेनिस जाने की इच्छा, काम पर बसने की इच्छा, अन्य लोगों की तरह जीने की इच्छा—शायद इन सभी इच्छाओं को बिना पूरा किए मन में दबा लेने की आदत, खुद से किए गए इस वादे से संतुष्ट रहना कि मैं एक दिन इन्हें पूरा करना नहीं भूलूंगा, शायद यह आदत, जो इतने वर्षों से चली आ रही है, निरंतर टालमटोल करने की, जिसे एम. डी चार्लस टालमटोल के नाम से निंदा करते थे, मुझमें इतनी प्रबल हो गई थी कि इसने मेरे ईर्ष्यालु संदेहों पर भी नियंत्रण कर लिया और, जबकि इसने मुझे यह मानसिक रूप से याद दिला दिया कि मैं किसी दिन अल्बर्टीन से उस लड़की के बारे में

स्पष्टीकरण जरूर लूंगा, संभवतः उन लड़कियों के बारे में (कहानी का यह हिस्सा मेरी स्मृति में उलझा हुआ, मिटा हुआ, यानी मिट गया था) जिनसे ऐमे उससे मिला था, इसने मुझे इस स्पष्टीकरण को भी टालने पर मजबूर कर दिया। वैसे भी, मैं आज शाम अपनी प्रेमिका से इस बारे में बात नहीं करूंगा, क्योंकि मुझे डर है कि कहीं वह मुझे ईर्ष्यालु न समझे और इस तरह उसे नाराज न कर दे।

फिर भी, अगले दिन जब ब्लोच ने मुझे अपनी चचेरी बहन एस्थर की तस्वीर भेजी, तो मैंने उसे तुरंत ऐमे को भेज दिया। और उसी क्षण मुझे याद आया कि अल्बर्टीन ने उस सुबह मुझे एक ऐसे सुख से वंचित कर दिया था जिससे शायद वह थक जाती। क्या उसने ऐसा किसी और के लिए बचाकर रखने के लिए किया था? शायद आज दोपहर के लिए? किसके लिए?

इस प्रकार ईर्ष्या कभी खत्म नहीं होती, क्योंकि भले ही प्रियतम की मृत्यु हो जाए और वह अपने कार्यों से ईर्ष्या उत्पन्न न कर सके, फिर भी मृत्यु के बाद की यादें, जो किसी भी घटना से बाद में उत्पन्न होती हैं, अचानक हमारे मन में इस प्रकार आकार ले लेती हैं मानो वे भी कोई घटना हों। ये वे यादें हैं जिन्हें हमने अब तक ठीक से नहीं खोजा था, जो हमें महत्वहीन लगती थीं, और जिन पर हमारे स्वयं के चिंतन मात्र से ही, बिना किसी बाहरी क्रिया के, एक नया और भयावह अर्थ मिल जाता है। हमें उसकी संगति की आवश्यकता नहीं है, अपने कमरे में अकेले बैठकर सोचना ही काफी है, ताकि हमारी प्रेमिका द्वारा किए गए नए विश्वासघात हमारे सामने आ सकें, भले ही वह मर चुकी हो। इसलिए हमें प्रेम में, रोजमर्रा की जिंदगी की तरह, केवल भविष्य से ही नहीं, बल्कि अतीत से भी डरना चाहिए, जिसे हम अक्सर भविष्य के बीत जाने तक समझ नहीं पाते; और हम केवल उस अतीत की बात नहीं कर रहे हैं जिसे हम बहुत बाद में खोजते हैं, बल्कि उस अतीत की भी बात कर रहे हैं जिसे हमने लंबे समय तक अपने भीतर संजोकर रखा है और अचानक उसकी व्याख्या करना सीख जाते हैं।

खैर, मैं बहुत खुश था, क्योंकि दोपहर ढलकर शाम में बदल रही थी, और वह घड़ी दूर नहीं थी जब मैं अल्बर्टीन की संगति में सांत्वना पा सकूँगा जिसकी मुझे सख्त जरूरत थी। दुर्भाग्य से, अगली शाम ऐसी थी जिसमें मुझे यह सांत्वना नहीं मिली, जिस शाम अल्बर्टीन ने मुझे रात को विदा करते समय जो चुंबन दिया, जो उसके सामान्य चुंबन से बहुत अलग था, वह मुझे उतना ही शांत कर पाया जितना मेरी माँ का चुंबन मुझे बहुत पहले शांत करता था, उन दिनों जब वह

मुझसे नाराज़ होती थी और मैं उसे बुलाने की हिम्मत नहीं करता था, लेकिन साथ ही जानता था कि मुझे नींद नहीं आएगी। ऐसी ही शामों में अल्बर्टीन ने कल के लिए कोई योजना बना रखी होती थी जिसके बारे में वह मुझे बताना नहीं चाहती थी। अगर उसने मुझे बताया होता, तो मैं उसे सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए ऐसा जोश दिखाता जो केवल अल्बर्टीन ही मुझमें जगा सकती थी। लेकिन उसने मुझे कुछ नहीं बताया, और न ही उसे मुझे कुछ बताने की कोई आवश्यकता थी; जैसे ही वह अंदर आई, मेरे कमरे की दहलीज पार करने से पहले ही, क्योंकि उसने अभी भी अपनी टोपी या हैट पहन रखी थी, मैंने उसके भीतर एक अनजानी, बेचैन, बेताब, अदम्य इच्छा को महसूस कर लिया था। अक्सर ये वही शामें होती थीं जब मैं उसके लौटने का सबसे प्यार भरे भावों से इंतजार करता था, और पूरे स्नेह से उसे गले लगाने के लिए तरसता था।

अफसोस, मेरे माता-पिता के साथ अक्सर होने वाली वो गलतफहमियाँ, जिन्हें मैं प्यार से लबालब गले लगाने के लिए दौड़ते समय कभी ठंडा तो कभी नाराज़ पाती थी, प्रेमियों के बीच होने वाली इन गलतफहमियों के सामने कुछ भी नहीं हैं! तब होने वाली पीड़ा कहीं अधिक सतही होती है, कहीं अधिक सहन करने योग्य होती है, यह हृदय की गहरी परतों में बसती है।

लेकिन आज शाम अल्बर्टीन को अपनी योजना का ज़िक्र करना पड़ा; मैं तुरंत समझ गया कि वह अगले दिन श्रीमती वर्दुरिन से मिलने जाना चाहती थी, और वैसे तो मुझे इस मुलाकात पर कोई आपत्ति नहीं होती। लेकिन ज़ाहिर है कि उसका मकसद वहाँ किसी से मिलना था, ताकि भविष्य में किसी सुख-सुविधा की तैयारी कर सके। वरना वह इस मुलाकात को इतना महत्व नहीं देती। यानी, वह मुझे बार-बार यह आश्वासन नहीं देती कि यह मुलाकात महत्वहीन है।

अपने जीवन में मैं उन लोगों से बिल्कुल विपरीत दिशा में विकसित हुआ हूँ जो वर्णमाला के अक्षरों को प्रतीकों का समूह मानकर ही ध्वन्यात्मक लेखन का उपयोग करते हैं; मैं, जिसने इतने वर्षों तक दूसरों के वास्तविक जीवन और विचारों को केवल उनके द्वारा स्वेच्छा से दिए गए प्रत्यक्ष कथनों में ही खोजा था, और जब ये नहीं मिले तो मैंने इसके विपरीत, केवल उन प्रमाणों को ही महत्व देना शुरू कर दिया जो सत्य की तर्कसंगत और विश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति नहीं हैं; ये शब्द अपने आप में मुझे तब तक कोई ज्ञान नहीं दे पाए जब तक कि

इनकी व्याख्या उसी तरह न की जाए जैसे किसी शर्मिंदा व्यक्ति के गालों पर अचानक खून का दौरा पड़ जाता है, या, जो कि और भी अधिक स्पष्ट है, अचानक चुप्पी छा जाती है।
कुछ सहायक शब्द (जैसे कि एम. डी कैम्ब्रेमर द्वारा प्रयुक्त शब्द, जब उन्हें समझ आया कि मैं 'साहित्यिक' हूं, और मुझसे पहले बात न करने के कारण, जब वे वर्दुरिन परिवार की अपनी यात्रा का वर्णन कर रहे थे, तो उन्होंने मेरी ओर मुड़कर कहा: "अरे, बोरेली वहां थे!") दो विचारों के अनजाने, कभी-कभी खतरनाक संपर्क से प्रज्वलित हो उठते हैं, जिन्हें वक्ता ने व्यक्त नहीं किया है, लेकिन विश्लेषण या विद्युत अपघटन की उपयुक्त विधियों को लागू करके मैं उससे जो कुछ निकाल सका, उसने मुझे एक लंबे भाषण से कहीं अधिक बताया।
अल्बर्टीन कभी-कभी अपनी बातचीत में इन अनमोल विचारों का ज़िक्र कर देती थी, जिन्हें मैं तुरंत समझने और स्पष्ट विचारों में बदलने की कोशिश करता था। वैसे, प्रेमी के लिए सबसे बड़ी विपत्तियों में से एक यह है कि यदि विशिष्ट विवरण—जिन्हें केवल प्रयोग, जासूसी आदि के माध्यम से ही जाना जा सकता है—को खोजना इतना कठिन हो, तो सत्य को समझना या केवल सहज ज्ञान से महसूस करना आसान होता है।
अक्सर मैंने उसे बालबेक में देखा था, जब वह हमारे पास से गुज़रने वाली कुछ लड़कियों को घूरती, मानो शारीरिक संपर्क हो रहा हो। इसके बाद, अगर मैं उन लड़कियों को जानता होता, तो वह मुझसे कहती: "मान लो हम उन्हें अपने साथ आने के लिए कहें? मुझे उनके साथ बदतमीज़ी करने में कितना मज़ा आएगा।" और अब, कुछ समय से, शायद जब से उसने मेरे स्वभाव को समझ लिया था, वह मुझसे किसी को आमंत्रित करने का अनुरोध नहीं करती, एक शब्द भी नहीं कहती, यहाँ तक कि उसकी आँखों से तिरछी नज़र भी नहीं पड़ती। उसकी आँखें अब भावहीन और मूक हो गई थीं, और उसके चेहरे के बाकी हिस्सों के धुंधले और खाली भाव के साथ, पहले की तरह ही सब कुछ बयां कर रही थीं। अब मेरे लिए उसे डांटना या उससे उन चीज़ों के बारे में सवाल करना नामुमकिन था जिन्हें वह बहुत छोटी, तुच्छ बातें कहती, ऐसी बातें जिन्हें मैंने तिल का ताड़ बनाने के मजे के लिए अपने मन में जमा कर रखा था। यह कहना तो काफी मुश्किल है: "तुम उस लड़की को क्यों घूर रहे थे जो गुज़र रही थी?" लेकिन यह कहना कहीं ज़्यादा मुश्किल है: "तुम उसे क्यों नहीं घूर रहे थे?" और फिर भी मैं अच्छी तरह जानता था, या कम से कम मुझे जान लेना चाहिए था, अगर मैंने अल्बर्टीन के

कथनों पर विश्वास करने के बजाय उसकी एक नज़र में छिपी सभी तुच्छ बातों पर ध्यान न दिया होता, जो उसकी बातों और उसके भाषण में किसी न किसी विरोधाभास से सिद्ध होती थीं, एक ऐसा विरोधाभास जिसे मैं अक्सर उसके जाने के काफी देर बाद तक नहीं समझ पाता था, जिसने मुझे पूरी रात बेचैन रखा, जिसका जिक्र मैंने उससे दोबारा करने की हिम्मत कभी नहीं की, लेकिन फिर भी वह समय-समय पर आकर मेरी यादों को सम्मान देता रहा।

अक्सर, बालबेक के समुद्र तट पर या पेरिस की सड़कों पर इन चोरी-छिपे या तिरछी निगाहों के मामले में, मैं खुद से पूछती थी कि क्या उन्हें उकसाने वाली व्यक्ति केवल उस क्षण किसी वांछित वस्तु के पास से गुजरी थी, बल्कि कोई पुरानी परिचित थी, या फिर कोई ऐसी लड़की थी जिसका ज़िक्र बस उससे हुआ था, और जिसके बारे में सुनकर मैं हैरान थी कि कोई उससे बात कैसे कर सकता है, क्योंकि वह अल्बर्टीन से इतनी अलग थी कि वह उसे जानना भी नहीं चाहेगी। लेकिन आज का गोमोराह एक बिखरी हुई पहेली है जो टुकड़ों से बनी है और हमें उन जगहों पर मिलती है जहाँ हमें उन्हें मिलने की बिल्कुल उम्मीद नहीं होती। इस तरह मैंने एक बार रिवेबेल में दस महिलाओं की एक बड़ी डिनर पार्टी देखी, जिन्हें मैं जानती थी—कम से कम नाम से—वे एक-दूसरे से जितनी अलग हो सकती थीं, उतनी अलग थीं, फिर भी पूरी तरह से एकजुट थीं, इतनी कि मैंने इतनी समरूप, हालांकि इतनी मिश्रित, पार्टी पहले कभी नहीं देखी थी।

सड़क पर जिन लड़कियों से हमारी मुलाकात हुई, उनकी बात पर लौटते हुए, अल्बर्टीन ने कभी किसी बूढ़े व्यक्ति, चाहे पुरुष हो या स्त्री, को इतनी एकाग्रता से या फिर इतनी संकोच से, मानो कुछ देखा ही न हो, नहीं देखा था। जिन पतियों को अपनी पत्नी से धोखा मिला होता है और जो कुछ नहीं जानते, वे भी सब कुछ जानते हैं। लेकिन ईर्ष्या का दृश्य बनाने के लिए अधिक सटीक और पर्याप्त सबूतों की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, यदि ईर्ष्या हमें उस स्त्री में झूठ बोलने की प्रवृत्ति का पता लगाने में मदद करती है जिससे हम प्रेम करते हैं, तो जब स्त्री को पता चलता है कि हम ईर्ष्यालु हैं, तो यह प्रवृत्ति सौ गुना बढ़ जाती है। वह झूठ बोलती है (इतना झूठ जितना उसने पहले कभी हमसे नहीं बोला), चाहे दया के कारण हो, या डर के कारण, या इसलिए कि वह सहज रूप से हमारी जाँच से बचने के लिए एक सुनियोजित तरीके से भाग जाती है। निश्चित रूप से ऐसे प्रेम प्रसंग भी होते हैं जिनमें शुरुआत से ही एक

सौम्य स्त्री अपने प्रेमी की नज़रों में सद्गुण की साक्षात मूर्ति के रूप में प्रस्तुत होती है। लेकिन ऐसे कितने प्रेम प्रसंग हैं जिनमें दो बिल्कुल विपरीत कालखंड होते हैं? पहले प्रसंग में, स्त्री लगभग सहजता से, थोड़े-बहुत बदलाव के साथ, अपनी कामुक इच्छाओं और उस आनंदमय जीवन के बारे में बात करती है जो उसने इन सुखों के कारण जिया है। बाद में, जब उसे यह एहसास होगा कि वह पुरुष उससे ईर्ष्या करता है और उस पर नज़र रखता है, तो वह अपनी अंतिम साँस तक उसी पुरुष से इन सब बातों का खंडन करेगी। पुरुष को उन शुरुआती विश्वासों के दिनों की याद सताने लगती है, जिनकी स्मृति अब भी उसे पीड़ा देती है। यदि स्त्री ऐसा करती रहती, तो वह लगभग बिना किसी सहायता के ही उसे अपने आचरण का वह रहस्य बता देती, जिसे वह दिन-प्रतिदिन व्यर्थ ही खोजता रहा है। और इसके अलावा, यह कितना बड़ा समर्पण, कितना बड़ा विश्वास, कितनी बड़ी मित्रता होगी। यदि वह उसे धोखा दिए बिना नहीं रह सकती, तो कम से कम वह एक मित्र के रूप में उसे धोखा दे रही होगी, उसे अपने सुखों के बारे में बता रही होगी, उसे उनमें शामिल कर रही होगी। और उसे उस तरह के जीवन की याद आती है जो उनके प्रेम के शुरुआती दौर में वादा करता प्रतीत होता था, जिसे बाद में असंभव बना दिया गया है, उस प्रेम को अत्यंत पीड़ादायक बना दिया है, जो परिस्थितियों के अनुसार अंतिम बिछड़ने को या तो अपरिहार्य या असंभव बना देगा।

कभी-कभी अल्बर्टीन के झूठ को समझने के लिए मुझे जिस लिपि का सहारा लेना पड़ता था, वह प्रतीकात्मक न होते हुए भी, बस उसे उल्टा पढ़ने से ही समझ आ जाती थी; इसलिए आज शाम उसने लापरवाही भरे लहजे में मुझे यह संदेश दिया, जिसे वह लगभग अनसुना करना चाहती थी: "हो सकता है मैं कल वर्दुरिन के घर जाऊं, मुझे बिल्कुल नहीं पता कि मैं जाऊंगी या नहीं, मैं सच में जाना नहीं चाहती।" यह बात उसने बचकाने अंदाज़ में कही थी: "मैं कल वर्दुरिन के घर जरूर जाऊंगी, यह बिल्कुल तय है, क्योंकि मैं इस मुलाकात को बहुत महत्व देती हूं।" यह स्पष्ट हिचकिचाहट एक दृढ़ निश्चय का संकेत थी और इसका उद्देश्य मुझे आगाह करते हुए इस मुलाकात के महत्व को कम करना था। अल्बर्टीन अपने अटल निर्णयों के बारे में बात करते समय हमेशा अनिश्चितता का लहजा अपनाती थी। मेरा निर्णय भी उतना ही अटल था। मैंने यह सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए कि श्रीमती वर्दुरिन से मेरी मुलाकात न हो। ईर्ष्या अक्सर प्रेम के मामलों में तानाशाह बनने की एक बेचैन ज़रूरत मात्र होती है।

मुझे निःसंदेह अपने पिता से ही यह अचानक और मनमानी करने की इच्छा विरासत में मिली थी कि मैं उन लोगों को धमकाऊं जिनसे मैं सबसे ज्यादा प्यार करता था, इस उम्मीद में कि वे सुरक्षा की झूठी उम्मीद में खुद को बहला रहे थे; जब मैंने देखा कि अल्बर्टीन ने मेरी जानकारी के बिना, मेरी पीठ पीछे, एक ऐसे अभियान की योजना बनाई थी जिसे मैं उसके लिए आसान और अधिक सुखद बनाने के लिए हर संभव प्रयास करता, अगर उसने मुझ पर भरोसा किया होता, तो मैंने लापरवाही से, ताकि वह कांप जाए, कहा कि मैं अगले दिन खुद भी जाने का इरादा रखता हूं।

मैंने अल्बर्टीन को उन दिशाओं में अन्य यात्राओं का सुझाव देने का काम शुरू किया, जिनसे वर्दुरिन्स की यह यात्रा असंभव हो जाती। मैंने बनावटी उदासीनता के भाव से अपने उत्साह को छिपाने की कोशिश की। लेकिन उसने इसे भांप लिया था। उसके भीतर एक विपरीत इच्छाशक्ति का बिजली का झटका लगा जिसने इसे ज़ोरदार तरीके से दूर धकेल दिया; मैं उसकी आँखों से चिंगारियाँ निकलती देख सकता था। लेकिन उस क्षण उसकी आँखों में क्या झलक रहा था, इस पर ध्यान देने का क्या फायदा? मैं बहुत पहले यह क्यों नहीं समझ पाया था कि अल्बर्टीन की आँखें उस श्रेणी की थीं जो एक साधारण व्यक्ति में भी कई टुकड़ों से बनी हुई प्रतीत होती हैं, क्योंकि वह व्यक्ति उस दिन कई स्थानों पर जाना चाहता है—और अपनी उस इच्छा को छुपाने की कोशिश करता है। वे आँखें, जिन्हें उनका झूठ हमेशा स्थिर और निष्क्रिय रखता है, फिर भी गतिशील हैं, जिन्हें उस निश्चित, अटल नियति वाले मिलन स्थल तक पहुँचने से पहले तय की जाने वाली दूरी (यार्ड या मील में मापी जा सकती है) में मापा जा सकता है। ये आँखें उस आनंद पर मुस्कुराने के बजाय, जो उन्हें लुभा रहा है, उदासी और निराशा से घिरी हुई हैं क्योंकि शायद उन्हें मिलन स्थल तक पहुँचने में कठिनाई हो सकती है। यहाँ तक कि जब आप उन्हें अपने हाथों में पकड़ते हैं, तब भी ये लोग भगोड़े होते हैं। उन भावनाओं को समझने के लिए जो वे जगाते हैं, और जो अन्य लोग, यहाँ तक कि अधिक सुंदर लोग भी नहीं जगाते, हमें यह ध्यान में रखना होगा कि वे स्थिर नहीं बल्कि गतिमान हैं, और उनके व्यक्तित्व में एक ऐसा चिह्न जोड़ना होगा जो भौतिकी में वेग को इंगित करने वाले चिह्न के अनुरूप हो। यदि आप उनकी दिन की योजनाओं को बिगाड़ देते हैं, तो वे आपसे उस आनंद को स्वीकार करते हैं जिसे उन्होंने आपसे छिपा रखा था: "मैं अपने प्रिय मित्र फलां-फलां के साथ शाम पाँच

बजे चाय पर जाना चाहता था।" ठीक है, अगर छह महीने बाद आपको उस व्यक्ति के बारे में पता चलता है, तो आपको पता चलेगा कि जिस लड़की की योजना आपने बिगाड़ी, जो आपके जाल में फंसकर, ताकि आप उसे आज़ाद कर सकें, आपसे कबूल करती है कि वह हर दिन एक प्रिय मित्र के साथ उसी समय चाय पीने जाती थी जब आप उसे नहीं देखते थे—वह कभी भी उस व्यक्ति के घर के अंदर नहीं गई, उन्होंने कभी साथ में चाय नहीं पी, और वह लड़की यही बहाना बनाती थी कि उसका सारा समय आपके साथ ही बीतता था। तो जिस व्यक्ति के साथ उसने चाय पीने जाने की बात कबूल की, जिसके साथ उसने आपसे चाय पीने जाने की अनुमति मांगी, वह व्यक्ति, मजबूरी में दिया गया बहाना, असली व्यक्ति नहीं था, कोई और था, कुछ और! कुछ और, क्या? कोई और, कौन?

अफसोस, उदासी से भरी दूर तक टकटकी लगाए वो बहुरंगी आँखें शायद हमें दूरी तो नापने में मदद कर सकती हैं, पर दिशा नहीं बता सकतीं। संभावनाओं का असीम क्षेत्र हमारे सामने फैला हुआ है, और अगर किसी भी तरह वास्तविकता हमारी नज़रों के सामने आ भी जाए, तो वो संभावनाओं की सीमाओं से इतनी परे होगी कि अचानक दीवार से टकराकर हम पीछे की ओर गिर पड़ेंगे। उसके आने-जाने का सबूत होना भी ज़रूरी नहीं, इतना ही काफी है कि हम उसका अंदाज़ा लगा लें। उसने हमें चिट्ठी भेजने का वादा किया था, हम शांत थे, अब हम उससे प्यार नहीं करते थे। चिट्ठी नहीं आई; कोई संदेशवाहक भी नहीं आया; आखिर क्या हुआ होगा? चिंता और प्यार फिर से जन्म लेते हैं। ऐसे लोग ही सबसे ज़्यादा हमारे अंदर प्यार जगाते हैं, लेकिन हमारे विनाश के लिए। क्योंकि उनके कारण पैदा होने वाली हर नई चिंता हमारी नज़रों में उनकी कुछ शख्सियत छीन लेती है। हम दुख सहने के लिए तैयार थे, यह सोचते हुए कि हम अपने से बाहर प्रेम करते हैं, और हम समझते हैं कि हमारा प्रेम हमारे दुख का परिणाम है, शायद हमारा प्रेम ही हमारा दुख है, और इसका लक्ष्य, बहुत ही कम हद तक, काले बालों वाली लड़की है। लेकिन अंततः, ये लोग ही हैं जो दूसरों से कहीं अधिक प्रेम को प्रेरित करते हैं।

सामान्यतः, प्रेम का लक्ष्य मानव शरीर नहीं होता, सिवाय तब जब उसमें कोई भावना, उसे खोने का भय, और उसे पुनः पाने की अनिश्चितता समाहित हो जाती है। इस प्रकार की चिंता का शरीरों के प्रति गहरा लगाव होता है। यह उनमें एक ऐसा गुण जोड़ देती है जो सुंदरता से

भी परे होता है; यही एक कारण है कि हम देखते हैं कि जो पुरुष सबसे सुंदर महिलाओं के प्रति उदासीन होते हैं, वे उन महिलाओं के प्रति आसक्त प्रेम में पड़ जाते हैं जो हमें बदसूरत लगती हैं। इन लोगों के लिए, इन भगोड़ों के लिए, हमारी चिंता उनके अपने स्वभाव को पंख लगा देती है। और यहाँ तक कि जब वे हमारे साथ होते हैं, तब भी उनकी आँखों की चमक हमें चेतावनी देती है कि वे उड़ने ही वाले हैं। इस सुंदरता का प्रमाण, जो पंखों द्वारा जोड़ी गई सुंदरता से भी कहीं अधिक है, यह है कि अक्सर वही व्यक्ति हमारी दृष्टि में कभी पंखहीन तो कभी पंखयुक्त प्रतीत होता है। उसे खोने के भय से हम बाकी सभी को भूल जाते हैं। उसे अपने पास रखने के प्रति आश्वस्त होकर, हम उसकी तुलना उन अन्य लोगों से करते हैं जिन्हें हम उससे अधिक पसंद करते हैं। और चूंकि ये भावनाएं और ये निश्चितताएं सप्ताह-दर-सप्ताह बदल सकती हैं, एक व्यक्ति एक सप्ताह अपने लिए वह सब कुछ बलिदान होते हुए देख सकता है जो हमें आनंद देता था, अगले सप्ताह स्वयं बलिदान हो सकता है, और यह सिलसिला कई हफ्तों और महीनों तक चलता रहता है। यह सब समझ से परे होता अगर हमें उस अनुभव से पता न होता, जो हर पुरुष का होता है, कि जीवन में कम से कम एक बार किसी स्त्री से प्रेम करना छोड़ देना, उसे भूल जाना, क्योंकि जब कोई व्यक्ति हमारी भावनाओं से अप्रभावित हो जाता है—या अभी तक अप्रभावित नहीं होता—तो उसका अपना महत्व कितना कम हो जाता है। और यह भी समझ लें कि जो हम भगोड़ों के बारे में कहते हैं, वही बात जेल में बंद महिलाओं, बंदी महिलाओं के बारे में भी सच है, हम मानते हैं कि हम उन्हें कभी प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए पुरुष दलालों से घृणा करते हैं, क्योंकि वे भागने में मदद करती हैं, प्रलोभन को बढ़ाती हैं, लेकिन दूसरी ओर यदि वे किसी एकांतवासी महिला से प्रेम करते हैं, तो वे उसे उसके कारावास से बाहर निकालने और अपने पास लाने के लिए खुशी-खुशी दलाल का सहारा लेते हैं। जिन महिलाओं का हम अपहरण करते हैं, उनके साथ हमारे संबंध अन्य संबंधों की तुलना में कम स्थायी होते हैं, इसका कारण यह है कि उन्हें प्राप्त करने में असफल होने का भय या उनके भाग जाने का डर ही उनके प्रति हमारे प्रेम का सार होता है। और एक बार जब उन्हें उनके पतियों से अलग कर दिया जाता है, उनकी चकाचौंध से दूर कर दिया जाता है, हमें छोड़ने के प्रलोभन से मुक्त कर दिया जाता है, संक्षेप में, हमारी किसी भी भावना से अलग कर दिया जाता है, तो वे केवल स्वयं ही रह जाती हैं, अर्थात् लगभग कुछ

भी नहीं। और, इतनी लंबे समय तक चाही गई, उन्हें जल्द ही वही व्यक्ति त्याग देता है जो उनके द्वारा त्यागे जाने से इतना भयभीत था।

मैंने खुद से पूछा है, मैंने इसका अंदाज़ा कैसे नहीं लगाया? लेकिन क्या मैंने बालबेक में पहले दिन से ही इसका अंदाज़ा नहीं लगाया था? क्या मैंने अल्बर्टीन में उन लड़कियों में से एक को नहीं पहचाना था, जिनके जिस्म के आवरण के नीचे कई छिपे हुए व्यक्तित्व हलचल मचा रहे थे, जितना कि... मैं ताश के पत्तों के ढेर की बात नहीं कर रहा हूँ जो अभी डिब्बे में बंद हैं, किसी गिरजाघर या थिएटर की बात नहीं कर रहा हूँ जिसमें हम प्रवेश करने वाले हैं, बल्कि उस पूरी, विशाल, निरंतर बदलती भीड़ की बात कर रहा हूँ? न केवल ये सभी व्यक्ति, बल्कि इन सभी व्यक्तियों की इच्छा, कामुक स्मृति, और हताश खोज। बालबेक में मैं परेशान नहीं था क्योंकि मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन मैं किसी निशान का पीछा करूँगा, भले ही वह झूठा निशान हो। कोई बात नहीं! इसने मेरी नज़रों में अल्बर्टीन को एक ऐसे व्यक्ति की परिपूर्णता प्रदान की थी जो इन सभी व्यक्तियों, इच्छाओं और कामुक स्मृतियों के अतिक्रम से लबालब भरा हुआ था। और अब जब उसने एक दिन ये शब्द कहे, 'श्रीमती...' विंटेइल,' मैं उसके वस्त्र फाड़कर उसका शरीर देखना नहीं चाहता था, बल्कि उसके शरीर के माध्यम से उसकी यादों और उसके भविष्य के भावुक जुड़ावों के उस ज्ञापन को देखना और पढ़ना चाहता था।

जब कोई प्रिय व्यक्ति (या वह व्यक्ति जिसमें केवल यही छल नहीं था जिसके कारण हम उससे प्रेम करते थे) हमसे हमारी बातें छुपाता है, तो वे चीजें जो शायद सबसे महत्वहीन होती हैं, अचानक ही असाधारण महत्व ग्रहण कर लेती हैं! अपने आप में, पीड़ा हमें उस व्यक्ति के प्रति प्रेम या घृणा की भावनाएँ उत्पन्न नहीं करती जिसने इसे उत्पन्न किया है: एक सर्जन हमारे शरीर को चोट पहुँचा सकता है बिना किसी व्यक्तिगत भावना को जगाए। लेकिन एक स्त्री जो कुछ समय से हमें यह आश्वासन देती रही है कि हम उसके लिए दुनिया में सब कुछ हैं, जबकि वह स्वयं हमारे लिए दुनिया में सब कुछ नहीं है, एक स्त्री जिसे देखकर, चूमकर, अपनी गोद में लेकर हमें आनंद आता है, तो हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं यदि हमें अचानक केवल इस बात का प्रतिरोध महसूस होता है कि हम उसके जीवन का निर्णय करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं। तब निराशा हमारे भीतर एक पुरानी पीड़ा की भूली हुई स्मृति को पुनर्जीवित कर सकती है, जिसे

हम जानते हैं कि इस स्त्री द्वारा नहीं बल्कि उन अन्य लोगों द्वारा उकसाया गया था जिनके विश्वासघात हमारे अतीत के मील के पत्थर हैं; अगर ऐसी नौबत आ जाए, तो जीने की इच्छा रखने का साहस हमारे पास कैसे आएगा? हम मृत्यु से बचने के लिए एक उंगली भी कैसे हिला पाएंगे? ऐसी दुनिया में जहां प्रेम केवल झूठ से प्रेरित होता है, और केवल उस व्यक्ति से अपने कष्टों को शांत करवाने की हमारी ज़रूरत में सिमट जाता है जिसने हमें कष्ट दिया है। उसके झूठ और उसके प्रतिरोध का पता चलने पर जो पतन होता है, उससे उबरने के लिए एक कठोर उपाय यह है कि हम उन लोगों की मदद से, जो हमें उसके जीवन में हमसे ज़्यादा करीब से जुड़े हुए लगते हैं, उसकी इच्छा के विरुद्ध कार्य करने का प्रयास करें, उस पर जो हमारा विरोध कर रही है और हमसे झूठ बोल रही है, ताकि हम भी बदले में धोखा दें और खुद को घृणा का पात्र बना लें। लेकिन ऐसे प्रेम से होने वाला कष्ट ऐसा होता है कि पीड़ित को अंततः अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाकर एक भ्रामक सांत्वना की तलाश करनी पड़ती है।

अफसोस! इन साधनों की कोई कमी नहीं है! और उस तरह के प्रेम की भयावहता, जिसे केवल बेचैनी ने जन्म दिया है, इस तथ्य में निहित है कि हम अपने पिंजरे में लगातार तुच्छ बातों को दोहराते रहते हैं; यह कहने की जरूरत नहीं है कि जिन लोगों के लिए हम यह प्रेम महसूस करते हैं, वे शायद ही कभी शारीरिक रूप से हमें जटिल तरीके से आकर्षित करते हैं, क्योंकि यह हमारी जानबूझकर की गई पसंद नहीं है, बल्कि पीड़ा का एक क्षण, हमारे चरित्र की कमजोरी के कारण अनिश्चित काल तक लंबा खिंच जाने वाला एक क्षण है, जो हर शाम अपने प्रयोग दोहराता है जब तक कि वह शामक दवाओं के आगे हार न मान ले, जो हमारे लिए चुनाव करता है।

इसमें कोई शक नहीं कि अल्बर्टीन के लिए मेरा प्यार इच्छाशक्ति की कमजोरी के कारण किसी पुरुष के मन में पैदा होने वाले सबसे नीरस प्रेमों में से नहीं था, क्योंकि यह पूरी तरह से निराधार नहीं था; उसने मुझे शारीरिक संतुष्टि दी और इसके अलावा, वह बुद्धिमान भी थी। लेकिन यह सब व्यर्थ था। मेरे मन में उसकी किसी बुद्धिमान टिप्पणी की चिंता नहीं थी, बल्कि उसके किसी ऐसे कथन की चिंता थी जिसने मुझे उसके कार्यों के बारे में संदेह में डाल दिया था; मैं यह याद करने की कोशिश कर रहा था कि उसने क्या कहा था, किस लहजे में, किस क्षण, मेरे किस कथन के जवाब में, उसके साथ हुई पूरी बातचीत को फिर से दोहराने की

कोशिश कर रहा था, यह याद करने की कोशिश कर रहा था कि उसने किस क्षण वर्दुरिन परिवार से मिलने की इच्छा व्यक्त की थी, मेरे किन शब्दों ने उसके चेहरे पर झुंझलाहट का भाव ला दिया था। सबसे महत्वपूर्ण मामला भी संदेह के घेरे में हो सकता था, अगर मैं सच्चाई स्थापित करने, उचित माहौल और रंग को बहाल करने के लिए इतनी मेहनत न करता। निस्संदेह, जब ये चिंताएँ असहनीय स्तर तक बढ़ जाती हैं, तो कभी-कभी हम उन्हें एक शाम के लिए पूरी तरह से शांत करने में कामयाब हो जाते हैं। जिस पार्टी में हमारी प्रेमिका जाने वाली है, जिसके असली स्वरूप को जानने के लिए हमारा मन कई दिनों से संघर्ष कर रहा है, उसमें हमें भी आमंत्रित किया गया है। प्रेमिका के पास हमारे सिवा किसी और के लिए न तो नज़र है और न ही शब्द। हम उसे घर ले आते हैं और फिर हम आनंद लेते हैं। हमारी सारी चिंताएँ दूर हो जाती हैं, हमें ऐसा सुकून मिलता है, जैसा कभी-कभी लंबी सैर के बाद आने वाली गहरी नींद में मिलता है। और निस्संदेह, ऐसे सुकून के लिए हमें भारी कीमत चुकानी पड़ती है। लेकिन क्या यह ज़्यादा आसान नहीं होता कि हम जानबूझकर, और वह भी इतनी ज़्यादा कीमत पर, अपने लिए यह चिंता न खरीदते? इसके अलावा, हम अच्छी तरह जानते हैं कि ये क्षणिक आराम चाहे कितने भी गहरे क्यों न हों, चिंता फिर भी हावी रहेगी। कभी-कभी तो वाकई, जो शब्द हमें सुकून देने के लिए कहे गए थे, वे भी हमें फिर से जगा देते हैं। लेकिन आमतौर पर, हम जो करते हैं, वह हमारी चिंता को ही बदल देता है। हमें शांत करने के लिए कहे गए वाक्य के एक शब्द से ही हमारे संदेह किसी और दिशा में दौड़ पड़ते हैं। हमारी ईर्ष्या की मांगें और हमारे भोलेपन का अंधापन उस महिला की कल्पना से कहीं अधिक है जिसे हम प्यार करते हैं।

जब वह अपनी मर्ज़ी से हमसे कसम खाकर कहती है कि कोई आदमी उसके लिए महज़ दोस्त है, तो वह हमें यह बताकर चौंका देती है—एक ऐसी बात जिसका हमें ज़रा भी शक नहीं था—कि वह सचमुच उसका दोस्त था। अपनी सच्चाई साबित करने के लिए जब वह हमें बताती है कि उसी दोपहर उन्होंने साथ में चाय पी थी, तो उसके हर शब्द के साथ, अनदेखे रहस्य हमारे सामने आकार लेने लगते हैं। वह मानती है कि उसने उसे अपनी रखैल बनने के लिए कहा था, और यह सोचकर हम व्याकुल हो जाते हैं कि उसने उसकी बातों को सुना होगा। वह कहती है कि उसने मना कर दिया था। लेकिन थोड़ी देर बाद, जब हम उसकी कही

बातों को याद करते हैं, तो हम खुद से सवाल करेंगे कि क्या उसकी कहानी सचमुच सच है, क्योंकि उसने जो अलग-अलग बातें कही हैं, उनमें वह तार्किक और ज़रूरी जुड़ाव नहीं है, जो तथ्यों से कहीं ज़्यादा सच्चाई की निशानी होता है। इसके अलावा, उसके लहजे में तिरस्कार का वह भयानक भाव था: "मैंने उसे साफ़-साफ़ मना कर दिया था," जो समाज के हर वर्ग की औरत में झूठ बोलते समय पाया जाता है। फिर भी, हमें उसके इनकार के लिए उसका धन्यवाद करना चाहिए, और अपनी दयालुता से उसे भविष्य में ऐसी क्रूर बातें दोहराने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। ज़्यादा से ज़्यादा, हम यह कह सकते हैं: "लेकिन अगर उसने पहले ही आपसे संबंध बनाने की कोशिश की थी, तो आपने चाय के लिए उसका निमंत्रण क्यों स्वीकार किया?" "ताकि वह मुझसे नाराज़ न हो और यह न कहे कि मैं उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं कर रही थी।" और हम यह कहने की हिम्मत नहीं कर सकते कि इनकार करके शायद वह हमारे साथ ज़्यादा अच्छा व्यवहार करती।

अल्बर्टीन ने मुझे और भी चिंतित कर दिया जब उसने कहा कि उसकी प्रतिष्ठा का ध्यान रखते हुए यह कहना बिल्कुल सही था कि मैं उसका प्रेमी नहीं था, क्योंकि "वैसे भी," उसने आगे कहा, "यह बिल्कुल सच है कि तुम भी नहीं हो।" शायद मैं शब्द के पूर्ण अर्थ में उसका प्रेमी नहीं था, लेकिन फिर क्या मुझे यह मान लेना चाहिए था कि जो कुछ हमने साथ किया, वह उन सभी अन्य पुरुषों के साथ भी करती थी जिनकी प्रेमिका होने की उसने मुझसे कसम खाई थी? किसी भी कीमत पर यह जानने की इच्छा कि अल्बर्टीन क्या सोच रही है, किससे मिल रही है, किससे प्यार करती है, यह कितना अजीब था कि मैं इस ज़रूरत के लिए सब कुछ कुर्बान कर रहा था, जबकि गिल्बर्ट के मामले में भी मुझे नाम और तथ्य जानने की ऐसी ही ज़रूरत महसूस हुई थी, जो अब मुझे बिल्कुल उदासीन कर रहे थे। मैं भली-भांति जानता था कि अल्बर्टीन के कार्यों में अपने आप में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। यह विचित्र बात है कि पहला प्यार, यदि हमारे दिल को जिस कमजोर अवस्था में छोड़ता है, उससे हमारे बाद के प्रेमों का मार्ग खुलता है, तो कम से कम लक्षणों और पीड़ाओं की समानता को देखते हुए, हमें उन्हें ठीक करने के साधन प्रदान नहीं करता है।

आखिर किसी तथ्य को जानना क्या ज़रूरी है? क्या हम आम तौर पर उन महिलाओं के झूठ और यहाँ तक कि उनकी गोपनीयता से पहले से अवगत नहीं होते, जिनके मन में कुछ छिपा

होता है? क्या गलती की कोई गुंजाइश है? वे अपनी चुप्पी को ही गुण बना लेती हैं, जबकि हम उन्हें बोलने के लिए कुछ भी देने को तैयार रहते हैं। और हमें पूरा यकीन होता है कि उन्होंने अपने साथी को आश्वस्त किया होगा: "मैं कभी कुछ नहीं बताती। मेरे ज़रिए किसी को इसके बारे में पता नहीं चलेगा, मैं कभी कुछ नहीं बताती।" एक आदमी किसी के लिए अपनी दौलत, अपनी जान तक दे सकता है, और फिर भी अच्छी तरह जानता है कि लगभग दस साल बाद, वह उसे दौलत देने से इनकार कर देगा, अपनी जान बचाना पसंद करेगा। क्योंकि तब वह व्यक्ति उससे अलग हो जाएगा, अकेला, यानी निरर्थक। जो चीज़ें हमें लोगों से जोड़ती हैं, वे हैं वे हज़ारों जड़ें, वे अनगिनत धागे जो पिछली रात की हमारी यादें हैं, आने वाली सुबह की हमारी उम्मीदें हैं, आदत के वे निरंतर बंधन जिनसे हम कभी खुद को मुक्त नहीं कर सकते। जैसे कुछ कंजूस उदारता से धन जमा करते हैं, वैसे ही हम भी लालच से खर्च करने वाले फिजूलखर्ची करते हैं। हम अपना जीवन किसी व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि उस व्यक्ति से जुड़ी हर चीज के लिए कुर्बान करते हैं, चाहे वो पल हों, दिन हों, या वो चीजें हों जिनसे हमारा आने वाला जीवन, जो अभी तक जिया नहीं गया है, हमें अधिक दूर, अधिक अलग, कम व्यावहारिक और कम अपना लगता है। हमें उन बंधनों से खुद को मुक्त करने की आवश्यकता है जो उस व्यक्ति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे हमारे भीतर उसके प्रति अस्थायी दायित्व पैदा करते हैं। ये दायित्व हमें उसके द्वारा गलत समझे जाने के डर से उसे छोड़ने की हिम्मत नहीं करने देते, जबकि बाद में हम ऐसा करने की हिम्मत करेंगे, क्योंकि हमसे अलग होकर वह हम नहीं रह जाएगी। वास्तव में, हम अपने लिए दायित्व बनाते हैं (भले ही स्पष्ट विरोधाभास से वे आत्महत्या की ओर ले जाएं)।

अगर मैं अल्बर्टीन से प्यार नहीं करता (और इस बात का मुझे पूरा यकीन नहीं था), तो मेरे जीवन में उसकी भूमिका में कुछ भी असाधारण नहीं था: हम केवल उसी के साथ जीते हैं जिससे हम प्यार नहीं करते, जिसके साथ हम केवल असहनीय प्यार को खत्म करने के लिए रहते हैं, चाहे वह किसी स्त्री के लिए हो, किसी स्थान के लिए हो, या फिर किसी स्थान का प्रतीक स्त्री के लिए हो। वास्तव में, अगर फिर से अलगाव हो जाए तो हमें दोबारा प्यार करने से बहुत डर लगेगा। मैं अल्बर्टीन के साथ अभी उस स्तर तक नहीं पहुंचा था। उसके झूठ, उसकी स्वीकारोक्तियों ने मुझे सच्चाई को उजागर करने का काम पूरा करने के लिए छोड़ दिया:

उसके अनगिनत झूठ इसलिए क्योंकि वह केवल झूठ बोलने से संतुष्ट नहीं थी, जैसे हर कोई जो सोचता है कि उसे प्यार किया जाता है, बल्कि स्वभाव से ही, इसके अलावा, वह झूठी थी, और इतनी असंगत थी कि, भले ही वह मुझे हर बार सच बताती, उदाहरण के लिए, मुझे बताती कि वह दूसरे लोगों के बारे में क्या सोचती है, वह हर बार कुछ अलग कहती; उसके द्वारा किए गए खुलासे, क्योंकि वे इतने दुर्लभ और इतने कम समय में समाप्त हो गए थे, कि उन्होंने अतीत के संदर्भ में, उस पूरे विस्तार में विशाल अंतराल छोड़ दिए थे, जिसका मुझे पुनः पता लगाना पड़ा - और सबसे पहले उसके जीवन के बारे में जानना पड़ा।

वर्तमान की बात करें तो, फ्रांस्वा की रहस्यमयी बातों से जितना मैं समझ पाया, उससे यही स्पष्ट था कि अल्बर्टीन मुझसे केवल कुछ खास बातों में ही नहीं, बल्कि पूरी तरह से झूठ बोल रही थी, और 'एक दिन' मैं वह सब देख लूँगा जो फ्रांस्वा जानने का दिखावा कर रही थी, जो उसने मुझे बताने से इनकार कर दिया था, और जो मैं उससे पूछने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। निस्संदेह, यूलाली के प्रति अतीत में जो ईर्ष्या उसने महसूस की थी, उसी ईर्ष्या के कारण फ्रांस्वा सबसे असंभावित बातें कह रही थी, इतनी अस्पष्ट कि कोई ज़्यादा से ज़्यादा यही अनुमान लगा सकता था कि बेचारा कैदी (जो स्त्रियों का प्रेमी था) किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करना पसंद करता है जो मुझसे बिल्कुल अलग हो। यदि ऐसा था, तो रेडियोटेलीपैथी की शक्ति होने के बावजूद, फ्रांस्वा को यह बात कैसे पता चली? निश्चित रूप से, अल्बर्टीन के कथनों से मुझे कोई ठोस जानकारी नहीं मिल सकी, क्योंकि वे हर दिन उतने ही बदलते थे जितने कि लगभग रुक चुके लट्टू के रंग। हालांकि, ऐसा प्रतीत होता था कि घृणा ही सबसे अधिक फ्रांस्वा को बोलने के लिए प्रेरित करती थी। एक भी दिन ऐसा नहीं गुजरता था जब वह मुझसे ये बातें न कहती हो, और मैं अपनी माँ की अनुपस्थिति में ऐसे भाषण सहन करती थी:

"निश्चित रूप से, आप स्वयं दयालु हैं, और मैं आपके प्रति अपने आभार के ऋण को कभी नहीं भूलूंगा" (शायद इसलिए ताकि मैं उसके आभार का नया दावा स्थापित कर सकूं) "लेकिन अब यह घर एक महामारी का अड्डा बन गया है क्योंकि दयालुता ने इसमें धूर्तता को जन्म दिया है, क्योंकि चालाकी अब तक के सबसे मूर्ख व्यक्ति की रक्षा कर रही है, क्योंकि शिष्टाचार, अच्छे व्यवहार, बुद्धि, हर चीज में गरिमा ने कानून बनाने और शासन करने की अनुमति दी है

और मुझे शर्मिंदा किया है, जो चालीस वर्षों से इस परिवार में हूं, - बुराई, हर वह चीज जो सबसे अश्लील और नीच है।"

फ्रांस्वा को अल्बर्टीन से सबसे ज़्यादा नाराज़गी इस बात की थी कि उसे एक ऐसे व्यक्ति से आदेश लेने पड़ते थे जो हमारे परिवार का हिस्सा नहीं था, और साथ ही घर के अतिरिक्त कामों का बोझ भी, जिससे हमारी बूढ़ी नौकरानी की सेहत बिगड़ रही थी। वह नौकरानी किसी भी तरह की मदद नहीं लेना चाहती थी, क्योंकि वह किसी काम की नहीं थी। यही बात उसकी मानसिक थकावट और उसके प्रति तीव्र घृणा का कारण हो सकती थी। निश्चित रूप से, वह अल्बर्टीन-एस्थर को घर से निकाल देना चाहती थी। यह फ्रांस्वा की सबसे बड़ी इच्छा थी। और उसे सांत्वना देने से ही उसकी यह इच्छा पूरी हो जाती, जिससे हमारी बूढ़ी नौकरानी को कुछ राहत मिल जाती। लेकिन मेरे विचार में इसके पीछे और भी कारण थे। इतनी तीव्र घृणा केवल अत्यधिक तनावग्रस्त शरीर में ही उत्पन्न हो सकती थी। और, विचार से भी ज़्यादा, फ्रांस्वा को नींद की ज़रूरत थी।

अल्बर्टीन अपना सामान उतारने चली गई और जो मैं जानना चाहता था, उसे जानने में देर न करने के लिए मैंने एंड्री को फोन करने की कोशिश की; मैंने रिसीवर पकड़ा, ईश्वर से प्रार्थना की, लेकिन केवल उनकी क्रोध को भड़काने में सफल रहा, जो एक शब्द 'व्यस्त!' में व्यक्त हुआ। एंड्री वास्तव में किसी और से बात कर रही थी। जब मैं उसके बातचीत खत्म होने का इंतजार कर रहा था, तो मैंने खुद से पूछा कि यह कैसे संभव है - अब जब हमारे इतने सारे चित्रकार अठारहवीं शताब्दी के नारी चित्रों को पुनर्जीवित करने की कोशिश कर रहे हैं, जिनमें चतुराई से तैयार किया गया परिवेश अपेक्षा, क्रोध, रुचि, विचलितता जैसी भाव-भंगिमाओं को चित्रित करने का बहाना होता है - कि हमारे आधुनिक बूचर या फ्रैगोनार्ड में से किसी ने भी 'पत्र' या 'हार्पसीकोर्ड' के बजाय इस दृश्य को क्यों नहीं चित्रित किया, जिसे 'टेलीफोन पर' शीर्षक दिया जा सकता है, जिसमें सुनने वाले के होठों पर अनायास ही एक ऐसी मुस्कान आ जाती है जो इस बात से और भी अधिक वास्तविक होती है कि उसे कोई देख नहीं रहा है। आखिरकार, दूसरी तरफ से एंड्री की आवाज़ आई: "क्या तुम कल अल्बर्टीन को बुलाने आ रही हो?" मैंने पूछा, और जैसे ही मैंने अल्बर्टीन का नाम लिया, मुझे स्वान के प्रति वह ईर्ष्या याद आ गई जो मुझे प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की पार्टी वाले दिन उसके कहे पर हुई थी:

"आओ और ओडेट से मिलो," और मैंने सोचा कि आखिर एक ईसाई नाम में कुछ तो खास बात होती है, जो पूरी दुनिया की नज़रों में, यहाँ तक कि खुद ओडेट की नज़र में भी, केवल स्वान के होंठों पर ही इस पूर्ण अधिकार का भाव लिए हुए था।

किसी दूसरे व्यक्ति के पूरे अस्तित्व पर अधिकार जताने का ऐसा कृत्य—जिसे एक शब्द में समेट दिया जाए—क्या वाकई सुखद नहीं होता (जब भी मैं प्रेम में होती थी, मुझे ऐसा ही महसूस होता था!)। लेकिन असलियत में, जब हम इसे कहने की स्थिति में होते हैं, तो या तो हमें इसकी परवाह नहीं रहती, या फिर आदत ने स्नेह की शक्ति को कम नहीं किया होता, बल्कि उसके सुख को पीड़ा में बदल दिया होता है। झूठ एक बहुत छोटी सी बात है, हम इसके बीच में ही रहते हैं और कुछ नहीं करते, बस इस पर मुस्कुराते हैं, हम इसे बिना किसी को नुकसान पहुँचाने के इरादे के करते हैं, लेकिन हमारी ईर्ष्या इससे आहत होती है, और झूठ में छिपी बातों से कहीं ज़्यादा देख लेती है (अक्सर हमारी प्रेमिका हमारे साथ शाम बिताने से मना कर देती है और थिएटर चली जाती है ताकि हम यह न देख पाएं कि वह ठीक नहीं लग रही है)। सच्चाई में छिपी बातों को लेकर यह कितनी अंधी रह जाती है! लेकिन यह कुछ भी हासिल नहीं कर सकती, क्योंकि जो औरतें कसम खाकर कहती हैं कि वे झूठ नहीं बोल रही हैं, वे फांसी के तख्ते पर भी अपना असली चरित्र कबूल करने से इनकार कर देंगी। मुझे पता था कि केवल मैं ही एंड्री से उस लहजे में 'अल्बर्टाइन' कह सकती थी। फिर भी, अल्बर्टीन, एंड्री और खुद के लिए, मुझे लगा कि मैं कुछ भी नहीं हूँ। और मुझे उस असंभवता का एहसास हुआ जिसके आगे प्रेम शक्तिहीन है।

हम कल्पना करते हैं कि प्रेम का लक्ष्य वह व्यक्ति है जिसे हम अपनी आँखों के सामने लेटे हुए, मानव शरीर में समाहित देख सकते हैं। अफसोस, प्रेम उस व्यक्ति का अंतरिक्ष और समय के उन सभी बिंदुओं तक विस्तार है जिन्हें वह व्यक्ति धारण कर चुका है और भविष्य में धारण करेगा। यदि हम इस या उस स्थान, इस या उस समय से उसका संपर्क नहीं रखते, तो हम प्रेम को प्राप्त नहीं कर सकते। लेकिन हम इन सभी बिंदुओं को स्पर्श नहीं कर सकते। यदि वे हमें संकेतित कर दिए जाते, तो शायद हम उन तक पहुँचने का प्रयास कर पाते। लेकिन हम उन्हें खोजने के लिए टटोलते रहते हैं, फिर भी वे हमें नहीं मिलते। इसीलिए अविश्वास, ईर्ष्या और

उत्पीड़न उत्पन्न होते हैं। हम व्यर्थ समय को निरर्थक संकेतों पर बर्बाद करते हैं और सत्य को बिना संदेह किए अनदेखा कर देते हैं।

लेकिन पहले से ही उन चिड़चिड़ी देवियों में से एक, जिनके सेवक बिजली की फुर्ती से चलते हैं, नाराज़ हो गई थीं, इसलिए नहीं कि मैं बोल रही थी, बल्कि इसलिए कि मैं कुछ नहीं बोल रही थी। "चलो, मैं इतनी देर से तुम्हारे लिए लाइन पर बनी हुई हूँ; मैं तुम्हारी लाइन काट दूंगी।" हालाँकि, उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया, बल्कि जैसे ही उन्होंने एंड्री की उपस्थिति का आह्वान किया, उसे एक महान कवि की तरह, अल्बर्टीन की सहेली के घर, उस इलाके, उस जीवन के विशिष्ट वातावरण में समाहित कर लिया। "क्या यह तुम हो?" एंड्री ने पूछा, जिसकी आवाज़ उस देवी द्वारा पल भर में मुझ तक पहुँचाई गई, जिसे प्रकाश से भी तेज़ आवाज़ उत्पन्न करने का विशेषाधिकार प्राप्त है। "सुनो," मैंने उत्तर दिया; "जहाँ चाहो जाओ, कहीं भी, सिवाय श्रीमती वर्दुरिन के घर के। चाहे कुछ भी हो जाए, तुम्हें कल अल्बर्टीन को वहाँ से दूर रखना है।" "अरे, उसने तो कल वहीं जाने का वादा किया था।" "आह!"

लेकिन मुझे मजबूरन बातचीत रोकनी पड़ी और धमकी भरे इशारे करने पड़े, क्योंकि अगर फ्रांस्वा (मानो यह टीकाकरण जैसी कोई अप्रिय या हवाई जहाज जैसी कोई खतरनाक बात हो) फोन करना सीखने से इनकार करती रही, जिससे वह हमें उन बातचीत से बचा सकती थी जिन्हें वह बिना किसी नुकसान के बीच में ही सुन सकती थी, तो दूसरी तरफ वह तुरंत कमरे में आ जाती जब मैं किसी ऐसी निजी बातचीत में व्यस्त होता जिसे मैं उससे छुपाना चाहता था। जब वह कमरे से चली गई, तो वह कुछ देर रुकी रही और वहाँ पिछले दिन से पड़ी हुई कई चीजें उठा लाई, जिन्हें एक घंटे और वहीं छोड़ा जा सकता था, और अंगीठी में एक लकड़ी का लट्ठा रख दिया जो मेरे बुखार और ऑपरेटर द्वारा कॉल कट जाने के डर को देखते हुए बिलकुल अनावश्यक था: "माफ़ कीजिए," मैंने एंड्री से कहा, "मेरी बातचीत बीच में ही रुक गई। क्या यह बिल्कुल निश्चित है कि उसे कल वर्दुरिन के घर जाना ही है?" "बिल्कुल, लेकिन मैं उसे बता दूँगी कि आपको यह पसंद नहीं है।" "नहीं, बिलकुल नहीं, लेकिन हो सकता है मैं आपके साथ आ जाऊँ।" "आह!" एंड्री ने बेहद नाराज़गी भरे लहजे में कहा, मानो मेरी इस गुस्ताखी से वह घबरा गई हो, जिसे उसके विरोध ने और भी बढ़ावा दिया था। "तो मैं शुभ रात्रि कहती हूँ, और आपको बेवजह परेशान करने के लिए मुझे माफ़ कर दीजिएगा।" "बिल्कुल

नहीं," एंड्री ने कहा, और (चूँकि आजकल टेलीफ़ोन के आम इस्तेमाल के कारण, इसके चारों ओर शिष्टतापूर्ण बातचीत की एक औपचारिक परंपरा बन गई है, जैसे पहले चाय की मेज़ों के चारों ओर होती थी) आगे कहा: "आपकी आवाज़ सुनकर बहुत अच्छा लगा।"

मैं भी शायद यही कहता, और एंड्री से कहीं अधिक सत्य के साथ, क्योंकि मैं उसकी आवाज़ से बहुत प्रभावित हुआ था, इससे पहले मैंने कभी ध्यान नहीं दिया था कि यह अन्य लोगों की आवाज़ों से इतनी अलग थी। फिर मुझे अन्य आवाज़ें याद आईं, विशेष रूप से महिलाओं की आवाज़ें, कुछ प्रश्न की सटीकता और मानसिक एकाग्रता के कारण धीमी हो गई थीं, कुछ वक्ताओं के कथन के लयबद्ध प्रवाह के कारण सांस फूलने वाली, यहाँ तक कि कुछ क्षणों के लिए मौन भी हो गई थीं; मुझे बालबेक में जानी-पहचानी सभी लड़कियों की आवाज़ें एक-एक करके याद आईं, फिर गिल्बर्ट की आवाज़, फिर मेरी दादी की, फिर श्रीमती डी गुएरमांटेस की। मैंने पाया कि वे सभी एक-दूसरे से भिन्न थीं, प्रत्येक वक्ता की अपनी एक अनूठी भाषा में ढली हुई, प्रत्येक एक अलग वाद्य यंत्र बजा रही थी, और मैंने स्वयं से कहा कि पुराने चित्रकारों के तीन या चार देवदूत संगीतकारों द्वारा स्वर्ग में प्रस्तुत किया गया संगीत कितना छोटा होगा, जब मैंने देखा कि दसियों, सैकड़ों, हजारों की संख्या में सभी आवाजों का सामंजस्यपूर्ण और बहुध्वनिक अभिवादन ईश्वर के सिंहासन पर आसीन हो रहा है। मैंने ध्वनि की गति पर शासन करने वाली देवी को धन्यवाद दिए बिना टेलीफोन नहीं छोड़ा, जिन्होंने मेरे विनम्र शब्दों के लिए ऐसी शक्ति का प्रयोग किया जिससे वे गरज से सौ गुना अधिक तीव्र हो गए, लेकिन मेरे धन्यवाद के बदले में मुझे केवल फोन कटने का ही उत्तर मिला।

जब अल्बर्टीन मेरे कमरे में लौटी, तो उसने काले साटन का एक वस्त्र पहना हुआ था, जिससे वह और भी पीली लग रही थी, मानो ताजी हवा की कमी, भीड़-भाड़ वाले माहौल और शायद बुरी आदतों के कारण मुरझाई हुई एक पीली, उत्साही पेरिसियन महिला हो, जिसकी आंखें और भी बेचैन लग रही थीं क्योंकि उसके गालों पर कोई चमक नहीं थी।

मैंने उससे कहा, "अंदाज़ा लगाओ, मैं अभी किससे फ़ोन पर बात कर रही थी? एंड्री से!" "एंड्री?" अल्बर्टीन ने हैरानी और भावनाओं से भरे कठोर स्वर में कहा, जो इतनी सरल जानकारी के लिए शायद ही ज़रूरी था। "मुझे उम्मीद है कि उसने तुम्हें बताया होगा कि हम कुछ दिन पहले श्रीमती वर्दुरिन से मिले थे।" "श्रीमती वर्दुरिन? मुझे याद नहीं," मैंने जवाब

दिया, मानो मैं किसी और चीज़ के बारे में सोच रही थी, ताकि इस मुलाकात के प्रति उदासीन दिखूँ और एंड्री को धोखा न दूँ जिसने मुझे बताया था कि अल्बर्टीन कल कहाँ जा रही है।
लेकिन मैं यह कैसे जान पाता कि एंड्री खुद मुझे धोखा नहीं दे रही थी, और कल अल्बर्टीन को यह नहीं बताएगी कि मैंने उससे हर कीमत पर वर्दुरिन के घर जाने से रोकने के लिए कहा था, और न ही उसे यह बताया था कि मैंने कई बार इसी तरह की अपील की थी। उसने मुझे आश्वासन दिया था कि उसने कभी कुछ नहीं दोहराया, लेकिन मेरे मन में इस बात का महत्व इस धारणा से कम हो गया था कि कुछ समय से अल्बर्टीन के चेहरे पर वह विश्वास नहीं दिख रहा था जो उसने इतने लंबे समय तक मुझ पर जताया था।
आश्चर्यजनक बात यह है कि अल्बर्टीन के साथ इस विवाद से कुछ दिन पहले ही मेरा उससे विवाद हो चुका था, लेकिन एंड्री की मौजूदगी में। एंड्री, हालांकि अल्बर्टीन को अच्छी सलाह देती थी, हमेशा बुरी बातें कहती हुई प्रतीत होती थी। "चलो, इस तरह बात मत करो, चुप रहो," उसने कहा, मानो वह अत्यंत प्रसन्न हो। उसका चेहरा उन धर्मपरायण गृहणियों के सूखे रसभरे रंग जैसा हो गया था जो हमें बारी-बारी से अपने नौकरों को निकालने के लिए कहती थीं। जब मैं अल्बर्टीन पर ऐसे आरोप लगा रही थी जो मुझे कभी नहीं लगाने चाहिए थे, एंड्री बड़े आनंद से जौ की चीनी का एक टुकड़ा चूसती हुई लग रही थी। अंत में वह अपनी स्नेहपूर्ण हंसी को रोक नहीं पाई। "चलो, टिटीन, मेरे साथ। तुम्हें पता है, मैं तुम्हारी प्यारी छोटी बहन हूँ।" मैं न केवल इस बनावटी प्रदर्शन से चिढ़ गई, बल्कि मैंने खुद से पूछा कि क्या एंड्री वास्तव में अल्बर्टीन के लिए उतना स्नेह रखती है जितना वह दिखावा करती है। यह देखकर कि अल्बर्टीन, जो एंड्री को मुझसे कहीं बेहतर जानती थी, जब भी मैं उससे पूछता कि क्या उसे एंड्री के स्नेह का पूरा यकीन है, तो वह हमेशा कंधे उचका देती थी और जवाब देती थी कि दुनिया में कोई भी उससे इतना प्यार नहीं करता, मुझे अब भी यकीन था कि एंड्री का स्नेह सच्चा था। शायद, उसके धनी लेकिन संकीर्ण परिवार में, कैथेड्रल स्क्वायर की कुछ दुकानों के समान कुछ मिल सकता था, जहाँ कुछ मिठाइयों को 'सर्वोत्तम गुणवत्ता' का बताया जाता है। लेकिन मैं यह जानता हूँ कि, भले ही मैं हमेशा इसके विपरीत निष्कर्ष पर पहुँचा होता, मुझे इतना प्रबल आभास होता था कि एंड्री अल्बर्टीन को सबक सिखाने की कोशिश कर रही थी कि मेरी प्रेमिका ने तुरंत मेरा स्नेह पुनः प्राप्त कर लिया और मेरा क्रोध शांत हो गया।

प्रेम में पीड़ा कभी-कभी क्षण भर के लिए थम जाती है, लेकिन फिर एक अलग रूप में लौट आती है। हम यह देखकर रो पड़ते हैं कि जिसे हम प्यार करते हैं, वह अब हमारे प्रति सहानुभूति और प्रेम का भाव नहीं दिखाती; हमारा दुख और भी गहरा हो जाता है जब वह हमारे साथ ये सब खो देने के बाद, दूसरों के लिए इन्हें फिर से हासिल कर लेती है; फिर, इस पीड़ा से हम एक नए और कहीं अधिक तीखे दुख से विचलित हो जाते हैं, इस संदेह से कि उसने पिछली शाम कैसे बिताई, इस बारे में हमसे झूठ बोला था, और उसने निस्संदेह हमें धोखा दिया था; यह संदेह भी दूर हो जाता है, हमारी प्रेमिका की दयालुता हमें सुकून देती है, लेकिन फिर एक बात जो हम भूल गए थे, हमारे मन में लौट आती है; किसी ने हमें बताया था कि वह सुख के क्षणों में बहुत भावुक हो जाती थी, जबकि हमने उसे हमेशा शांत पाया है; हम कल्पना करने की कोशिश करते हैं कि दूसरे लोगों के साथ उसका ये उन्माद कैसा रहा होगा, हम महसूस करते हैं कि हम उसके लिए कितने महत्वहीन हैं, बातचीत के दौरान हमें उसके चेहरे पर ऊब, उदासी और मायूसी का भाव दिखाई देता है, हम उसके सादे कपड़ों को एक काले आकाश की तरह देखते हैं जो वह हमारे साथ होने पर पहनती है, और दूसरों के लिए उन कपड़ों को बचाकर रखती है जिनसे वह पहले हमें खुश करती थी। अगर इसके विपरीत वह स्नेही है, तो पल भर के लिए कितनी खुशी होती है; लेकिन जब हम उसकी छोटी सी जीभ को निमंत्रण के संकेत में आगे बढ़ते हुए देखते हैं, तो हमें उन लोगों की याद आती है जिन्हें वह निमंत्रण अक्सर दिया जाता रहा है, और शायद घर पर भी, भले ही अल्बर्टीन उनके बारे में नहीं सोच रही थी, लंबे समय की आदत के कारण यह एक स्वचालित संकेत बन गया है। तब हमें एक-दूसरे से ऊब महसूस होने लगती है। लेकिन अचानक यह दर्द गायब हो जाता है जब हम उसके जीवन में मौजूद अज्ञात बुराई के बारे में सोचते हैं, उन जगहों के बारे में सोचते हैं जिन्हें पहचानना असंभव है, जहाँ वह रही है, जहाँ वह शायद अब भी जाती है जब हम उसके साथ नहीं होते, अगर वास्तव में वह वहाँ पूरी तरह से रहने की योजना नहीं बना रही है, वे स्थान जहाँ वह हमसे अलग है, जहाँ वह हमारे साथ होने की तुलना में अधिक खुश है। ईर्ष्या की घूमती हुई रोशनी ऐसी ही होती है।

ईर्ष्या एक ऐसा दानव है जिसे भगाया नहीं जा सकता, बल्कि वह हमेशा नए रूप में लौट आता है। भले ही हम उसे पूरी तरह से नष्ट करने में सफल हो जाएं, और जिसे हम प्यार करते हैं उसे

हमेशा के लिए अपने पास रख लें, फिर भी बुराई की आत्मा एक और भी दयनीय रूप धारण कर लेगी, बलपूर्वक वफादारी हासिल करने की निराशा, प्यार न मिलने की निराशा।
अल्बर्टीन और मेरे बीच अक्सर एक खामोशी छाई रहती थी, जो निस्संदेह उन शिकायतों पर आधारित थी जिन्हें वह अपने भीतर दबाकर रखती थी, क्योंकि वह उन्हें अपूरणीय मानती थी। कुछ शामों को अल्बर्टीन बेहद आकर्षक लगती थी, लेकिन अब उसमें वे सहज भावनाएं नहीं दिखती थीं जो मुझे बालबेक में याद हैं, जब वह कहा करती थी: "तुम मेरे लिए अब भी कितने अच्छे हो!" और उसका पूरा दिल बिना किसी संकोच के मेरी ओर उमड़ पड़ता था, उन शिकायतों को छिपाए बिना जिन्हें वह अब अपने भीतर दबाकर रखती थी क्योंकि वह निस्संदेह उन्हें अपूरणीय, भुला न सकने वाली और अनकही मानती थी, लेकिन फिर भी ये शिकायतें उसके और मेरे बीच उसकी वाणी की सार्थक सावधानी या एक अटूट खामोशी का अंतराल पैदा कर देती थीं।
"और क्या मुझे यह जानने की अनुमति है कि आपने एंड्री को फ़ोन क्यों किया?" "यह पूछने के लिए कि क्या उन्हें कल आपके साथ मेरे आने पर कोई आपत्ति है, ताकि मैं वर्दुरिन परिवार से मिलने जा सकूँ, जैसा कि मैंने उनसे ला रास्पेलियर में वादा किया था।" "जैसा आपको ठीक लगे। लेकिन मैं आपको चेतावनी दे दूँ, आज शाम को बहुत घना कोहरा छाया हुआ है, और यह कल तक बना रहेगा। मैं यह इसलिए बता रही हूँ क्योंकि मैं नहीं चाहती कि आप बीमार पड़ जाएँ। व्यक्तिगत रूप से, आप समझ सकती हैं कि मैं चाहती हूँ कि आप हमारे साथ आएँ। हालाँकि," उन्होंने सोच-विचार करते हुए कहा: "मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं है कि मैं वर्दुरिन परिवार के घर जाऊँगी। वे मेरे प्रति इतने दयालु रहे हैं कि मुझे वास्तव में जाना चाहिए... आपके बाद, वे मेरे प्रति सबसे अच्छे रहे हैं, लेकिन उनके बारे में कुछ बातें हैं जो मुझे बिल्कुल पसंद नहीं हैं। मुझे बॉन मार्शे और ट्रोइस-क्वार्टियर्स जाना ही होगा और इस काली पोशाक के साथ पहनने के लिए एक सफेद स्कार्फ खरीदना होगा।"
अल्बर्टीन को अकेले ही एक बड़ी दुकान में जाने की अनुमति देना, जो लोगों से खचाखच भरी हो और जहाँ लोग लगातार एक-दूसरे से टकराते रहते हों, और जिसमें इतने सारे दरवाजे हों कि कोई महिला हमेशा कह सके कि बाहर आने पर उसे वह गाड़ी नहीं मिली जो सड़क पर आगे उसका इंतज़ार कर रही थी; मैंने ठान लिया था कि मैं ऐसी किसी बात के लिए कभी

सहमत नहीं होऊँगी, लेकिन इस विचार ने मुझे बेहद दुखी कर दिया। फिर भी मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि मुझे बहुत पहले ही अल्बर्टीन से मिलना बंद कर देना चाहिए था, क्योंकि वह मेरे जीवन के उस दुखद दौर में प्रवेश कर चुकी थी, जिसमें समय और स्थान में बिखरी हुई एक व्यक्ति अब स्त्री नहीं रह जाती, बल्कि घटनाओं की एक ऐसी श्रृंखला बन जाती है जिस पर हम कोई प्रकाश नहीं डाल सकते, अनसुलझी समस्याओं की एक श्रृंखला, एक ऐसा सागर जिसे हम ज़ेरक्सिस की तरह बेतुके ढंग से कोड़े मारने की कोशिश करते हैं, ताकि उसे उसके द्वारा निगले गए सागर के लिए दंडित कर सकें। एक बार यह दौर शुरू हो जाए, तो हम निश्चित रूप से पराजित हो जाते हैं। वे लोग धन्य हैं जो समय रहते इस बात को समझ लेते हैं और कल्पना की सीमाओं से घिरे इस व्यर्थ, थकाऊ संघर्ष को अनावश्यक रूप से लंबा नहीं खींचते। इस संघर्ष में ईर्ष्या इतनी दयनीय भूमिका निभाती है कि वही व्यक्ति जो कभी अपनी साथी स्त्री की निगाह एक पल के लिए भी किसी दूसरे पुरुष पर पड़ते देख षड्यंत्र रचता था और अंतहीन पीड़ा सहता था, समय आने पर उसे अकेले बाहर जाने की अनुमति दे देता है, कभी-कभी उस पुरुष के साथ जिसे वह उसका प्रेमी जानता है, क्योंकि वह अज्ञात की इस पीड़ा को सहने को तैयार हो जाता है जिसे कम से कम वह जानता तो है! यह उस लय का प्रश्न है जिसे अपनाया जाना चाहिए, और जिसे बाद में व्यक्ति आदत के बल पर अपना लेता है। मनोरोगी जो कभी भी डिनर पार्टी से दूर नहीं रह सकते थे, बाद में आराम के लिए ऐसे उपाय करते हैं जो उन्हें कभी भी पर्याप्त नहीं लगते; वे स्त्रियाँ जो हाल ही में सहज स्वभाव की थीं, प्रायश्चित के कार्यों के लिए जीती हैं। ईर्ष्यालु प्रेमी, जो अपनी प्रेमिका पर नज़र रखने के लिए अपनी नींद कम कर देते हैं, खुद को आराम से वंचित कर लेते हैं, यह सोचकर कि उसकी निजी इच्छाएँ, विशाल और रहस्यमयी दुनिया, समय, उनसे अधिक शक्तिशाली हैं, उसे उनके बिना बाहर जाने देते हैं, फिर यात्रा करने देते हैं, और अंत में उससे अलग होने देते हैं। इस प्रकार ईर्ष्या पोषण की कमी से नष्ट हो जाती है और इतने लंबे समय तक केवल नए भोजन के लिए लगातार व्याकुल होकर ही जीवित रही है। मैं अभी भी इस स्थिति से बहुत दूर था।

अब मुझे अल्बर्टीन के साथ जितनी बार चाहूँ बाहर जाने की पूरी आज़ादी थी। पेरिस के चारों ओर हाल ही में कई हवाई अड्डे बन गए थे, जो हवाई जहाज़ों के लिए वैसे ही थे जैसे बंदरगाह जहाज़ों के लिए होते हैं। और ला रास्पेलियर जाते समय, एक पायलट से हुई उस लगभग

पौराणिक मुलाकात के बाद से, जिसके ऊपर से गुज़रते समय मेरा घोड़ा डर गया था, वह मेरे लिए आज़ादी का प्रतीक बन गई थी, इसलिए मैं अक्सर अल्बर्टीन की सहमति से, जो हर तरह के खेल की शौकीन थी, अपने दिन के भ्रमण का अंत इन्हीं हवाई अड्डों में से किसी एक पर करना पसंद करता था। हम दोनों वहाँ जाते थे, उस निरंतर आने-जाने की हलचल से आकर्षित होकर, जो समुद्र प्रेमियों के लिए घाट पर या समुद्र तट पर टहलने को और आकाश प्रेमियों के लिए किसी 'विमानन केंद्र' में घूमने को बेहद आकर्षक बना देती है। किसी भी क्षण, निष्क्रिय और लंगर डाले खड़ी मशीनों के बीच, हमें एक मशीन दिखाई देती, जिसे कई मैकेनिक बड़ी मेहनत से धकेल रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे किसी पर्यटक के कहने पर नाव को रेत पर धकेला जाता है, जो एक घंटे के लिए समुद्र में सैर करना चाहता है। फिर इंजन चालू किया गया, मशीन ज़मीन पर चलने लगी, गति पकड़ने लगी, और अंत में, अचानक, समकोण पर, धीरे-धीरे ऊपर उठने लगी, मानो एक अजीब, मानो लकवाग्रस्त आनंद में, क्षैतिज गति अचानक एक राजसी, ऊर्ध्वाधर आरोहण में बदल गई हो। अल्बर्टीन अपनी खुशी नहीं रोक पाई और मैकेनिकों से स्पष्टीकरण मांगने लगी, जो अब मशीन के हवा में होने के कारण शेड की ओर टहल रहे थे। इस बीच, यात्री मीलों का सफर तय कर रहा था; विशाल नाव, जिस पर हमारी निगाहें टिकी हुई थीं, अब नीले आकाश में एक मुश्किल से दिखाई देने वाले धब्बे से ज्यादा कुछ नहीं थी, जो हालांकि, जैसे ही भ्रमण के लिए निर्धारित समय समाप्त होने वाला था, उतरने का क्षण आने पर धीरे-धीरे अपना ठोसपन, आकार और आयतन पुनः प्राप्त कर लेती। और हम, अल्बर्टीन और मैं, ईर्ष्या से उसे धरती पर उतरते हुए देखते रहे, वह यात्री जो उन एकांत विस्तारों में शाम की शांति और निर्मलता का भरपूर आनंद लेने के लिए ऊपर गया था। फिर, चाहे हवाई अड्डे से हो या किसी संग्रहालय से, या किसी चर्च से, जहाँ हम घूमने गए थे, हम रात के खाने के लिए एक साथ घर लौट आते थे। फिर भी, मैं घर लौटकर उतना शांत नहीं होता था जितना बालबेक में कम बार होने वाली उन यात्राओं से होता था जिन्हें मैं पूरी दोपहर तक चलते देखकर आनंदित होता था, और बाद में अल्बर्टीन के जीवन के शेष भाग से अलग, एक खाली आकाश के सामने, जहाँ हम बिना सोचे-समझे सुखद चिंतन करते थे, खिले हुए फूलों की तरह खड़े होने के बारे में सोचता था। उस समय अल्बर्टीन का समय मेरे पास आज की तरह प्रचुर मात्रा में नहीं था। फिर भी, वह समय मुझे कहीं अधिक अपना लगता था,

क्योंकि मैं केवल उन्हीं घंटों को ध्यान में रखता था - मेरा प्रेम उनमें एक कृपा के समान आनंदित होता था - जो वह मेरे साथ बिताती थी; अब—मेरी ईर्ष्या उनमें विश्वासघात की संभावना तलाशते हुए बेचैनी से उन घंटों को खोज रही है—केवल उन घंटों को जब वह मुझसे अलग रहती थी।

खैर, कल वह कुछ ऐसे ही पलों की उम्मीद कर रही थी। मुझे चुनना होगा, या तो पीड़ा से मुक्ति पाऊं, या प्रेम करना छोड़ दूं। क्योंकि, जैसे शुरुआत में प्रेम इच्छा से बनता है, वैसे ही बाद में वह केवल पीड़ादायक चिंता से ही कायम रहता है। मुझे लगा कि अल्बर्टीन के जीवन का एक हिस्सा मुझसे दूर जा रहा है। प्रेम, पीड़ादायक चिंता में भी और आनंदमय इच्छा में भी, संपूर्णता पर ज़ोर देता है। यह जन्म लेता है, यह तभी जीवित रहता है जब इसका कोई हिस्सा बाकी रहता है जिसे यह जीत सके। हम केवल उसी चीज़ से प्रेम करते हैं जो हमारे पास पूरी तरह से नहीं होती। अल्बर्टीन झूठ बोल रही थी जब उसने मुझसे कहा कि वह शायद वर्दुरिन के घर नहीं जाएगी, जैसे मैं झूठ बोल रहा था जब मैंने कहा कि मैं वहाँ जाना चाहता हूँ। वह केवल मुझे अपने साथ जाने से रोकना चाहती थी, और मैंने इस योजना की अचानक घोषणा करके, जिसे अमल में लाने का मेरा कोई इरादा नहीं था, उसके सबसे संवेदनशील बिंदु को छुआ, उसकी छिपी हुई इच्छा को उजागर किया और उसे यह स्वीकार करने पर मजबूर किया कि कल मेरा साथ उसे उस इच्छा को पूरा करने से रोक देगा। उसने वर्दुरिन परिवार को देखने जाने की इच्छा को अचानक त्याग कर वस्तुतः इस बात को स्वीकार कर लिया था।

मैंने उससे कहा, "अगर तुम वर्दुरिन के यहाँ नहीं जाना चाहतीं, तो ट्रोकाडेरो में एक शानदार चैरिटी शो है।" मेरी बात सुनकर वह उदास हो गई। मैंने उससे वैसे ही सख्ती से पेश आना शुरू किया जैसे बालबेक में, अपनी पहली ईर्ष्या के समय। उसके चेहरे पर निराशा झलक रही थी, और मैंने अपनी प्रेमिका को फटकारने के लिए उन्हीं तर्कों का इस्तेमाल किया जो मेरे माता-पिता बचपन में अक्सर मेरे खिलाफ इस्तेमाल करते थे, और जो मेरे नासमझ बचपन को देखते हुए मुझे बेतुके और क्रूर लगते थे। मैंने अल्बर्टीन से कहा, "नहीं, तुम्हारे इतने उदास चेहरे के बावजूद, मुझे तुम पर ज़रा भी दया नहीं आती; अगर तुम बीमार होतीं, मुसीबत में होतीं, या किसी अपने को खो बैठी होतीं, तो मुझे तुम्हारे लिए दुख होता; लेकिन मुझे यकीन है कि तुम्हें इससे ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि तुम हर छोटी-मोटी बात पर झूठी भावनाएँ

दिखाती हो। खैर, मुझे उन लोगों की भावनाओं की कोई परवाह नहीं है जो हमसे इतना प्यार करने का दिखावा करते हैं और हमारी ज़रा सी भी मदद करने में असमर्थ हैं, और जिनका ध्यान इतना भटकता रहता है कि वे वह चिट्ठी पहुँचाना भूल जाते हैं जो हमने उन्हें सौंपी है, जिस पर हमारा पूरा भविष्य टिका है।"

ये शब्द—जिनमें से अधिकांश बातें हम स्मृति से दोहराते हैं—मैंने अपनी माँ से सुने थे। वे हमेशा मुझे समझाती रहती थीं कि हमें सच्ची भावना को, जिसे (उनके अनुसार) जर्मन लोग, जिनकी भाषा की वे मेरे पिता की घृणा के बावजूद बहुत प्रशंसा करती थीं, 'एम्फिंडुंग' कहते हैं, और बनावटीपन या 'एम्फिंडेलेई' में भ्रमित नहीं करना चाहिए। एक बार जब मैं रो रहा था, तो उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि नीरो शायद तंत्रिका संबंधी समस्याओं से पीड़ित था और इसी वजह से उसकी हालत और खराब हो गई। वास्तव में, उन पौधों की तरह जो बढ़ते-बढ़ते दो भागों में बँट जाते हैं, मेरे अंदर जो संवेदनशील लड़का था, उसके ठीक बगल में अब एक बिल्कुल विपरीत स्वभाव का व्यक्ति था, जो व्यावहारिक ज्ञान से परिपूर्ण था, दूसरों की संवेदनहीनता के प्रति कठोर था, एक ऐसा व्यक्ति जो मेरे माता-पिता के मेरे प्रति दृष्टिकोण से मिलता-जुलता था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि, जैसा कि हममें से प्रत्येक अपने पूर्वजों के जीवन को अपने भीतर जारी रखने के लिए बाध्य है, संतुलित, निंदक व्यक्ति जो शुरू में मेरे भीतर मौजूद नहीं था, संवेदनशील व्यक्ति के साथ जुड़ गया था, और यह स्वाभाविक था कि मैं भी वही बन जाऊं जो मेरे माता-पिता मेरे लिए थे।

और तो और, जिस क्षण मुझमें इस नए व्यक्तित्व का आकार लेने लगा, उसे अपनी भाषा उन व्यंग्यात्मक और फटकार भरे भाषणों की स्मृति में तैयार मिली, जो मुझसे कहे गए थे, और जिन्हें अब मुझे दूसरों से कहना था, और जो मेरे होठों से इतनी स्वाभाविक रूप से निकल आते थे, चाहे मैंने उन्हें नकल और स्मृतियों के संयोजन से याद किया हो, या इसलिए कि प्रजनन शक्ति के कोमल और रहस्यमय आकर्षण ने अनजाने में मुझमें, जैसे किसी पौधे की पत्ती पर, वही स्वर, वही हावभाव, वही मनोवृत्ति उकेर दी थी, जो उन लोगों ने अपनाई थी जिनसे मैं उत्पन्न हुआ था। क्योंकि कभी-कभी, जब मैं अल्बर्टीन से बातचीत में एक बुद्धिमान सलाहकार की भूमिका निभा रहा था, तो ऐसा लगता था मानो मैं अपनी दादी की बातें सुन रहा हूँ; और तो और, मेरी माँ को (कई अस्पष्ट अवचेतन धाराएँ मुझमें हर चीज को, यहाँ तक कि

मेरी उंगलियों की छोटी से छोटी हरकतों को भी, मेरे माता-पिता के समान चक्रों का अनुसरण करने के लिए प्रभावित करती थीं) यह न लगता कि दरवाजे पर मेरे पिता हैं, क्योंकि मेरी दस्तक उनकी दस्तक से इतनी मिलती-जुलती थी।

दूसरी ओर, विपरीत तत्वों का मेल जीवन का नियम है, प्रजनन का सिद्धांत है, और जैसा कि हम आगे देखेंगे, अनेक विपत्तियों का कारण भी है। सामान्यतः, हम अपने से मिलती-जुलती चीज़ों से घृणा करते हैं, और जब हम किसी दूसरे व्यक्ति में अपनी ही कमियाँ देखते हैं तो हमें बहुत गुस्सा आता है। उस उम्र को पार कर चुके व्यक्ति को, जिस उम्र में हम स्वाभाविक रूप से अपनी कमियाँ दिखाते हैं, उदाहरण के लिए, वह व्यक्ति जिसने सबसे कठिन क्षणों को भी कठोर चेहरे के साथ सहा है, उन्हीं कमियों से कितनी घृणा करेगा, यदि वही कमियाँ कोई दूसरा व्यक्ति, चाहे वह छोटा हो, सरल हो या मूर्ख हो, दिखा रहा हो। कुछ संवेदनशील लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें दूसरों की आँखों में अपने रोके हुए आँसू देखना भी क्रोधित कर देता है। समानता इतनी अधिक होने के कारण ही, पारिवारिक स्नेह के बावजूद, और कभी-कभी स्नेह जितना अधिक होता है, उतना ही अधिक, परिवार टूट जाते हैं।

शायद मुझमें और कई अन्य लोगों में, जो दूसरा व्यक्ति मैं बन गया था, वह पहले व्यक्ति का ही एक और पहलू था - अपने मामलों में उत्तेजित और संवेदनशील, दूसरों के लिए एक बुद्धिमान मार्गदर्शक। शायद मेरे माता-पिता के साथ भी ऐसा ही था, यह इस बात पर निर्भर करता था कि उन्हें मेरे संदर्भ में देखा जाए या उनके व्यक्तित्व के संदर्भ में। मेरी दादी और माँ के मामले में यह बिल्कुल स्पष्ट था कि मेरे प्रति उनकी कठोरता उनकी जानबूझकर की गई थी और वास्तव में इसके लिए उन्हें काफी प्रयास करना पड़ा था, लेकिन शायद मेरे पिता में उनकी शीतलता उनकी संवेदनशीलता का बाहरी पहलू मात्र थी। क्योंकि शायद इसी दोहरे पहलू का मानवीय सत्य - निजी जीवन का पक्ष, सामाजिक संबंधों का पक्ष - एक ऐसे वाक्य में व्यक्त हुआ था जो उस समय मुझे अपने अर्थ में जितना असत्य लगा, उतना ही सामान्य भी लगा, जब किसी ने मेरे पिता के बारे में कहा: "उनकी बर्फीली ठंडक के नीचे एक असाधारण संवेदनशीलता छिपी है; असल में उनमें कमी यह है कि वे अपनी भावनाओं से शर्मिंदा हैं।"

क्या यह अंततः उन निरंतर गुप्त तूफानों को नहीं छुपाता था, वह शांति (आवश्यकतानुसार उपदेशात्मक चिंतन, संवेदनशीलता के अनाड़ी प्रदर्शनों पर व्यंग्य से युक्त) जो उसकी थी,

लेकिन जिसे अब मैं भी सबके साथ अपने संबंधों में अपना रहा था और अल्बर्टीन के साथ अपने संबंधों की कुछ परिस्थितियों में कभी नहीं छोड़ा था?

मुझे सचमुच लगता है कि उस दिन मैं उससे रिश्ता तोड़कर वेनिस जाने का पक्का इरादा करने ही वाला था। मुझे फिर से अपनी बेड़ियों में जकड़ने वाली बात नॉर्मंडी से जुड़ी थी, ऐसा नहीं कि उसने उस क्षेत्र में जाने की कोई इच्छा दिखाई जहाँ मैं उससे ईर्ष्या करता था (क्योंकि यह मेरा सौभाग्य था कि उसकी योजनाएँ मेरी यादों के दर्दनाक धब्बों को कभी छू नहीं पाईं), बल्कि इसलिए कि जब मैंने उससे कहा: "ऐसा लगता है जैसे मैं तुमसे तुम्हारी चाची की उस सहेली के बारे में बात कर रहा हूँ जो इन्फ्रेविल में रहती थी," तो उसने गुस्से से जवाब दिया, जैसे हर बहस में हर कोई अपने पक्ष में ज़्यादा से ज़्यादा तर्क जुटाने की कोशिश करता है, और मुझे यह साबित करने में उसे खुशी होती है कि मैं गलत हूँ और वह खुद सही है: "लेकिन मेरी चाची इन्फ्रेविल में किसी को नहीं जानती थीं, और मैं कभी उस जगह के पास भी नहीं गई।"

वह उस झूठ को भूल गई थी जो उसने एक दोपहर मुझसे उस संवेदनशील महिला के बारे में बोला था, जिसके साथ उसे चाय पीनी ही है, चाहे उस महिला से मिलने जाने से मेरी दोस्ती टूट जाए और उसकी अपनी उम्र भी कम हो जाए। मैंने उसे उसके झूठ की याद नहीं दिलाई। लेकिन इससे मुझे बहुत बुरा लगा। और एक बार फिर मैंने हमारे रिश्ते को तोड़ने का फैसला टाल दिया। प्यार पाने के लिए किसी को ईमानदारी या झूठ बोलने की कला की ज़रूरत नहीं होती। मैं यहाँ आपसी पीड़ा को प्यार का नाम दे रही हूँ। आज शाम मुझे उससे वैसे ही बात करने में कोई बुराई नहीं दिखी जैसे मेरी दादी—जो पूर्णता की प्रतीक थीं—मुझसे बात करती थीं, और न ही जब मैंने उसे बताया कि मैं उसे वर्दुरिन के घर तक छोड़ दूँगी, तो अपने पिता के उस रूखे अंदाज़ को अपनाने में, जो हमें कभी भी किसी फैसले की जानकारी इस तरह देते थे जिससे हम बेहद परेशान हो जाएँ, फैसले के अनुपात से कहीं ज़्यादा। इसलिए उनके लिए हमें इतनी छोटी सी बात पर इतना परेशान देखकर मूर्ख कहना आसान था, जबकि हमारी परेशानी असल में उस भावना के अनुरूप थी जो उन्होंने हममें जगाई थी। चूंकि—मेरी दादी की अटल बुद्धिमत्ता की तरह—मेरे पिता के ये मनमाने मिजाज मुझमें भी आ गए थे, जिससे मेरा संवेदनशील स्वभाव पूर्ण हो गया, जिससे वे लंबे समय तक पराक्रमी रहे थे, और जिन्होंने

मेरे पूरे बचपन में मुझे बहुत पीड़ा दी थी, इसलिए उस संवेदनशील स्वभाव ने उन्हें उन बिंदुओं के बारे में बहुत सटीक जानकारी दी जिन पर उन्हें सावधानीपूर्वक निशाना साधना चाहिए: एक सुधरा हुआ चोर या जिस राष्ट्र से हम लड़ रहे हैं उसका नागरिक, इससे बेहतर सूचना देने वाला कोई नहीं हो सकता। कुछ बेईमान परिवारों में, एक भाई जो बिना किसी स्पष्ट कारण के अपने भाई से मिलने आता है और जाते समय दरवाजे पर ही उससे कुछ जानकारी मांगता है, जिस पर वह सुनने तक का दिखावा नहीं करता, इस प्रकार अपने भाई को यह संकेत देता है कि यही जानकारी उसके आने का मुख्य उद्देश्य था, क्योंकि भाई उस अलगाव के भाव से भलीभांति परिचित है, उन शब्दों से जो मानो कोष्ठक में और अंतिम क्षण में बोले जाते हैं, क्योंकि उसने स्वयं भी अक्सर ऐसा किया है। खैर, कुछ विकृत परिवार भी होते हैं, जिनमें समान संवेदनशीलताएँ, भाईचारे वाले स्वभाव होते हैं, जो उस मूक भाषा में पारंगत होते हैं जो परिवार के सदस्यों को बिना बोले अपनी बात समझाने में सक्षम बनाती है। और एक मनोरोगी से ज़्यादा परेशान करने वाला कौन हो सकता है? इसके अलावा, इन मामलों में मेरे व्यवहार के पीछे शायद कोई व्यापक, कोई गहरा कारण रहा हो। मेरा मतलब है कि उन संक्षिप्त लेकिन अपरिहार्य क्षणों में, जब हम किसी ऐसे व्यक्ति से घृणा करते हैं जिसे हम प्यार करते हैं —ऐसे क्षण जो कभी-कभी उन लोगों के मामले में पूरे जीवन भर चलते हैं जिन्हें हम प्यार नहीं करते—हम दया पाने के लिए अच्छा दिखना नहीं चाहते, बल्कि एक ही समय में जितना संभव हो उतना दुष्ट और खुश दिखना चाहते हैं ताकि हमारी खुशी सचमुच घृणास्पद लगे और कभी-कभार या स्थायी शत्रु की आत्मा को घाव दे। मैंने कितने ही लोगों के सामने खुद को झूठा बदनाम किया है, सिर्फ इसलिए कि मेरी 'सफलताएँ' उन्हें अनैतिक लगें और वे और भी ज़्यादा क्रोधित हो जाएँ! सही तरीका तो इसके विपरीत मार्ग अपनाना होगा, बिना अहंकार के यह दिखाना होगा कि हमारे अंदर उदार भावनाएँ हैं, न कि उन्हें छिपाने के लिए इतना प्रयास करना। और यह आसान होता अगर हम कभी नफरत न कर पाते, हर समय प्यार कर पाते। तब हमें केवल वही बातें कहने में बहुत खुशी होगी जो दूसरों को खुश कर सकें, उनके दिलों को पिघला सकें और उन्हें हमसे प्यार करने पर मजबूर कर सकें।

सच कहूँ तो, मुझे अल्बर्टीन को इतना परेशान करने पर थोड़ा अफ़सोस हुआ और मैंने मन ही मन कहा: "अगर मैं उससे प्यार न करता, तो वह मेरी ज़्यादा आभारी होती, क्योंकि मैं उसके

साथ बुरा बर्ताव न करता; लेकिन नहीं, अंत में बात वही होती, क्योंकि मैं उसके साथ कम अच्छा बर्ताव करता।" और शायद, खुद को सही ठहराने के लिए, मैं उसे बता भी देता कि मैं उससे प्यार करता हूँ। लेकिन उस प्यार का इज़हार, इस तथ्य के अलावा कि इससे अल्बर्टीन को कुछ नया पता नहीं चलता, शायद उसे मेरे प्रति और भी ठंडा कर देता, उस कठोरता और धोखे से भी ज़्यादा, जिसके लिए प्यार ही एकमात्र बहाना था। जिससे हम प्यार करते हैं, उसके प्रति कठोर और धोखेबाज़ होना कितना स्वाभाविक है! अगर दूसरों के प्रति हमारी रुचि हमें उनके प्रति दयालु होने और उनकी इच्छाओं को पूरा करने से नहीं रोकती, तो हमारी रुचि सच्ची नहीं है। एक अजनबी के प्रति हम उदासीन रहते हैं, और उदासीनता हमें निर्दयी कार्यों के लिए प्रेरित नहीं करती।

शाम बीत गई। अल्बर्टीन के सोने से पहले, अगर हम सुलह करना चाहते थे, गले मिलना चाहते थे, तो समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था। हममें से किसी ने भी पहल नहीं की थी। मुझे लगा कि वह पहले से ही मुझसे नाराज़ है, इसलिए मैंने उसकी नाराज़गी का फ़ायदा उठाकर एस्थर लेवी का ज़िक्र किया। "ब्लोच ने मुझे बताया है" (यह झूठ था) "कि तुम उसकी चचेरी बहन एस्थर की बहुत अच्छी दोस्त हो।" "अगर मैं उसे देख भी लूँ तो पहचान नहीं पाऊँगी," अल्बर्टीन ने अस्पष्ट भाव से कहा। "मैंने उसकी तस्वीर देखी है," मैंने गुस्से से कहा। मैंने यह कहते हुए अल्बर्टीन की ओर नहीं देखा, ताकि मैं उसके चेहरे के हाव-भाव न देख सकूँ, जो उसकी एकमात्र प्रतिक्रिया होती, क्योंकि उसने कुछ नहीं कहा।

अब मुझे वह शांति नहीं मिलती थी जो मुझे कॉम्ब्रे में मेरी माँ के चुंबन से मिलती थी, जब मैं अल्बर्टीन के साथ होती थी। बल्कि, इसके विपरीत, मुझे उन शामों की पीड़ा महसूस होती थी जब मेरी माँ मुश्किल से ही मुझे शुभ रात्रि कहती थीं, या मेरे कमरे में आती ही नहीं थीं, चाहे वह मुझसे नाराज़ हों या मेहमानों के कारण नीचे ही रुकी हों। यह पीड़ा—केवल प्रेम के रूप में इसका रूपांतरण ही नहीं—नहीं, यह पीड़ा जो कभी प्रेम में ही समाहित थी, जो केवल प्रेम को ही समर्पित थी जब भावनाओं का विभाजन और वितरण प्रभावी हुआ था, अब ऐसा प्रतीत होता था कि वह फिर से सभी भावनाओं तक फैल रही है, मेरे बचपन की तरह फिर से अविभाज्य हो गई है, मानो मेरी सारी भावनाएँ जो इस विचार से काँपती थीं कि मैं अल्बर्टीन को अपने बिस्तर के पास एक साथ, प्रेमिका, बहन और बेटी के रूप में नहीं रख पाऊँगी; माँ के

रूप में भी, जिसकी नियमित शुभ रात्रि चुंबन की बचपन की ज़रूरत मुझे फिर से महसूस होने लगी थी, मेरे जीवन की उस असमय संध्या में, जो सर्दियों के एक दिन जितनी छोटी प्रतीत होती थी, सब कुछ एक साथ जुड़ने लगा था। लेकिन अगर मुझे अपने बचपन का दर्द महसूस हो रहा था, तो उस व्यक्ति में आए बदलाव ने, जिसने मुझे यह दर्द महसूस कराया, उस भावना के अंतर ने, मेरे चरित्र में आए परिवर्तन ने, मेरे लिए अल्बर्टीन से उस दर्द को शांत करने की माँग करना असंभव बना दिया, जैसा कि मैं पहले अपनी माँ से करती थी।

मैं अब और यह नहीं कह सकता था: "मैं दुखी हूँ।" मृत्यु को हृदय में लिए, मैं स्वयं को उन महत्वहीन बातों तक सीमित कर लिया जिनसे मुझे किसी सुखद समाधान की ओर कोई प्रगति नहीं मिल रही थी। मैं पीड़ादायक घिसे-पिटे कथनों में डूबा रहा। और उस बौद्धिक अहंकार के साथ, जो किसी तुच्छ तथ्य के हमारे प्रेम पर प्रभाव पड़ने पर हमें उस व्यक्ति के प्रति बहुत सम्मान देता है जिसने उसे खोजा है, शायद उसी संयोग से जैसे कोई ज्योतिषी किसी तुच्छ घटना की भविष्यवाणी करता है जो बाद में सच हो जाती है, मैं फ्रांकोइस को बर्गोट और एल्स्टिर से अधिक प्रतिभाशाली मानने के करीब पहुँच गया था क्योंकि उसने बालबेक में मुझसे कहा था: "वह लड़की तुम्हें केवल मुसीबत में डालेगी।"

हर मिनट मुझे अल्बर्टीन की शुभ रात्रि के और करीब ला रहा था, जो आखिरकार उसने कह ही दी। लेकिन आज शाम उसका चुंबन, जिसमें वह खुद मौजूद नहीं थी और जो मुझे छू भी नहीं पाया, मुझे इतना बेचैन कर गया कि धड़कते दिल से मैं उसे दरवाजे की ओर जाते हुए देखता रहा, और सोचता रहा: "अगर मुझे उसे वापस बुलाने, उसे यहीं रोकने, उससे सुलह करने का कोई बहाना ढूंढना है, तो मुझे जल्दी करनी होगी; बस कुछ कदम और वह कमरे से बाहर निकल जाएगी, बस दो कदम, अब एक, वह हैंडल घुमा रही है; वह दरवाजा खोल रही है, बहुत देर हो चुकी है, उसने दरवाजा बंद कर दिया है!" शायद फिर भी बहुत देर नहीं हुई थी। कॉम्ब्रे में पुराने दिनों की तरह, जब मेरी माँ मुझे अपने चुंबन से शांत किए बिना चली जाती थी, मैं अल्बर्टीन के पीछे भागने को बेताब था। मुझे लग रहा था कि जब तक मैं उससे दोबारा नहीं मिल लेता, मुझे चैन नहीं मिलेगा। यह अगली मुलाकात कुछ ऐसी असाधारण होगी जैसी पहले कभी नहीं हुई थी, और अगर मैं अपने प्रयासों से इस उदासी से छुटकारा नहीं पा सका, तो शायद मुझे अल्बर्टीन से भीख मांगने की शर्मनाक आदत लग जाएगी। मैं बिस्तर से उछल

पड़ा जब वह पहले ही अपने कमरे में जा चुकी थी। मैं गलियारे में इधर-उधर चक्कर लगाता रहा, इस उम्मीद में कि वह अपने कमरे से बाहर आएगी और मुझे बुलाएगी; मैं उसके दरवाजे के बाहर चुपचाप खड़ा रहा, इस डर से कि कहीं उसकी हल्की सी आवाज़ न सुनाई दे। मैं एक पल के लिए अपने कमरे में लौटा यह देखने के लिए कि कहीं मेरी मालकिन अपना रूमाल, अपना थैला, या कोई ऐसी चीज़ तो नहीं भूल गई है जिसके बारे में मैं रात में यह जता सकूँ कि मुझे उसकी ज़रूरत है, और जिससे मुझे उसके कमरे में जाने का बहाना मिल जाता। नहीं, कुछ नहीं था। मैं उसके दरवाजे के बाहर अपनी जगह पर लौट आया, लेकिन उसके नीचे की दरार से अब कोई रोशनी नहीं दिख रही थी। अल्बर्टीन ने बत्ती बुझा दी थी, वह बिस्तर पर थी, मैं वहीं बिना हिले-डुले पड़ा रहा, किसी चमत्कार की उम्मीद में, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ; और बहुत देर बाद, स्तब्ध होकर, मैं अपने बिस्तर पर लेट गया और पूरी रात रोता रहा।

लेकिन कुछ शामें ऐसी भी थीं जब मैंने एक चाल चलकर अल्बर्टीन का चुंबन पा लिया। मैं जानता था कि लेटते ही उसे कितनी जल्दी नींद आ जाती थी (वह भी यह जानती थी, क्योंकि स्वाभाविक रूप से लेटने से पहले वह अपनी चप्पलें उतार देती थी, जो मैंने उसे दी थीं, और अपनी अंगूठी भी, जिसे वह बिस्तर के पास रखती थी, जैसा कि वह अपने कमरे में सोने से पहले करती थी), मैं जानता था कि उसकी नींद कितनी गहरी होती थी, और जागने पर वह कितनी स्नेहपूर्ण होती थी, इसलिए मैं कुछ ढूंढने जाने का बहाना बनाकर उसे अपने बिस्तर पर लिटा देता था। जब मैं कमरे में लौटता तो वह सो रही होती थी और मेरे सामने वह दूसरी औरत होती थी जो उसका पूरा चेहरा देखने पर बन जाती थी। लेकिन वह बहुत जल्दी अपना रूप बदल लेती थी, क्योंकि मैं उसके बगल में लेट जाता और उसका चेहरा फिर से देख पाता। मैं अपना हाथ उसके हाथ में, उसके कंधे पर, उसके गाल पर रख सकता था। अल्बर्टीन सोती रही।

मैं उसका सिर पकड़कर घुमा सकता था, उसे अपने होठों से लगा सकता था, उसकी बाहों में अपनी गर्दन लपेट सकता था, फिर भी वह एक ऐसी घड़ी की तरह सोती रही जो रुकती नहीं, एक ऐसे जानवर की तरह जो चाहे उसे कोई भी स्थिति दी जाए, जीता रहता है, एक बेल की तरह, एक ऐसी झाड़ी की तरह जो चाहे उसे कितना भी सहारा दिया जाए, अपनी शाखाएँ फैलाती रहती है। केवल उसकी साँसें मेरी उंगलियों के हर स्पर्श से बदल जाती थीं, मानो वह

कोई वाद्य यंत्र हो जिस पर मैं बजा रहा हूँ और जिससे मैं पहले एक, फिर दूसरे तार से अलग-अलग स्वर निकालकर लयबद्ध धुनें निकाल रहा हूँ। मेरी ईर्ष्या शांत हो गई, क्योंकि मुझे लगा कि अल्बर्टीन एक ऐसी प्राणी बन गई है जो साँस लेती है, जो इसके अलावा और कुछ नहीं है, जैसा कि उसकी नियमित साँसों से संकेत मिलता है जिसमें वह शुद्ध शारीरिक क्रिया व्यक्त होती है जो पूरी तरह से तरल है, जिसमें न तो वाणी की ठोसता है और न ही मौन की। और, तमाम बुराइयों से अनभिज्ञ, उसकी साँसें, जो (ऐसा लग रहा था) किसी खोखले सरकंडे से आ रही थीं न कि किसी इंसान से, सचमुच स्वर्गिक थीं, मेरे लिए स्वर्गदूतों का शुद्ध गीत थीं, क्योंकि इन पलों में मुझे ऐसा लग रहा था कि अल्बर्टीन हर चीज़ से अलग हो गई है, न केवल भौतिक रूप से बल्कि नैतिक रूप से भी। फिर भी उस साँस में, मैंने अचानक खुद से कहा कि शायद स्मृति की धारा में बहते कई लोगों के नाम गूंज रहे होंगे। कभी-कभी उस संगीत में सचमुच मानवीय आवाज़ भी जुड़ जाती थी। अल्बर्टीन ने कुछ शब्द कहे। मैं उनका अर्थ जानने के लिए कितना तरस रहा था! संयोग से, एक ऐसे व्यक्ति का नाम उसके होठों पर आया जिसके बारे में हम बात कर रहे थे और जिसने मेरी ईर्ष्या को जगाया था, लेकिन मुझे दुखी किए बिना, क्योंकि उसके साथ जो स्मृति आई वह केवल उस विषय पर मेरे साथ हुई उसकी बातचीत की ही थी। हालाँकि, आज शाम, जब उसकी आँखें अभी भी बंद थीं और वह आधी नींद में थी, उसने मुझसे कहा: "एंड्री।" मैंने अपनी भावनाओं को छिपा लिया। "तुम सपना देख रही हो, मैं एंड्री नहीं हूँ," मैंने मुस्कुराते हुए उससे कहा। वह भी मुस्कुराई। "बिल्कुल नहीं, मैं आपसे पूछना चाहती थी कि एंड्री आपसे क्या कह रही थी।" "मुझे लगा था कि आप उसके बगल में इस तरह लेटने की आदी हो गई होंगी।" "अरे नहीं, कभी नहीं," उसने कहा। बस, यह जवाब देने से पहले, उसने एक पल के लिए अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया था। तो उसकी चुप्पी महज़ एक पर्दा थी, उसका ऊपरी स्नेह बस उन हज़ारों यादों को छुपाए हुए था जो मेरे दिल को चीर देतीं, उसका जीवन उन घटनाओं से भरा था जिनका उपहासपूर्ण वर्णन, जिनका हास्यपूर्ण इतिहास हम रोज़ाना दूसरों के बारे में गपशप करते हैं, उन लोगों के बारे में जिनका कोई महत्व नहीं है, लेकिन जब तक कोई व्यक्ति हमारे दिल के अंधेरे जंगल में खोया रहता है, तब तक वे हमें उसके जीवन का इतना अनमोल रहस्योद्घाटन लगते हैं कि उस भूमिगत दुनिया को जानने के विशेषाधिकार के लिए हम खुशी-खुशी अपना बलिदान दे देते। फिर उसकी नींद

मुझे एक अद्भुत और जादुई दुनिया लगी जिसमें कुछ क्षणों में, मुश्किल से पारदर्शी तत्व की गहराई से एक ऐसे रहस्य का इकरार उभरता है जिसे हम कभी नहीं समझ पाएंगे। लेकिन आम तौर पर, जब अल्बर्टीन सो रही होती थी, तो ऐसा लगता था मानो उसने अपनी मासूमियत वापस पा ली हो। जिस मुद्रा में मैंने उसे देखा था, लेकिन जिसे उसने नींद में सहजता से अपना लिया था, उसमें वह मानो मुझ पर पूरी तरह से भरोसा कर रही थी! उसके चेहरे से चालाकी या अशिष्टता का कोई भाव नहीं था, और मेरे और उसके बीच, जिसकी ओर वह अपना हाथ उठा रही थी, जिस पर उसका हाथ टिका हुआ था, एक पूर्ण समर्पण, एक अटूट लगाव सा प्रतीत हो रहा था। इतना ही नहीं, नींद ने उसे मुझसे अलग नहीं किया और उसे हमारे स्नेह का एहसास बनाए रखने दिया; बल्कि इसका प्रभाव तो ऐसा था मानो उसने बाकी सब कुछ मिटा दिया हो; मैंने उसे गले लगाया, उससे कहा कि मैं बाहर जा रहा हूँ, उसने आधी आँखें खोलीं और आश्चर्य भरे लहजे में मुझसे कहा—दरअसल काफी रात हो चुकी थी: "लेकिन तुम कहाँ जा रहे हो, मेरे प्यारे—" मुझे मेरे नाम से पुकारते हुए, और तुरंत फिर से सो गई। उसकी नींद मानो उसके जीवन के बाकी हिस्सों को मिटा देने जैसी थी, एक निरंतर मौन जिस पर समय-समय पर अंतरंग स्नेह के शब्द उड़ते हुए गुजरते थे। इन शब्दों को एक साथ जोड़कर देखा जाए तो एक शुद्ध संवाद, एक पवित्र प्रेम की गुप्त अंतरंगता का सार मिलता था। यह शांत नींद मुझे उतनी ही प्रसन्न करती थी जितनी एक माँ अपने बच्चे की गहरी नींद देखकर प्रसन्न होती है, इसे वह अपना सद्गुण मानती है। और उसकी नींद सचमुच एक बच्चे जैसी थी। उसका जागना भी इतना स्वाभाविक, इतना प्रेमपूर्ण था कि उसे यह भी पता नहीं चलता था कि वह कहाँ है, कि कभी-कभी मैं भय से स्वयं से पूछती थी कि क्या मेरे साथ रहने से पहले उसकी आदत अकेले सोने की नहीं थी, बल्कि आँखें खोलने पर किसी को अपने बगल में लेटा हुआ पाती थी। लेकिन उसका बचकाना आकर्षण कहीं अधिक मनमोहक था। एक माँ की तरह, मैं आश्चर्यचकित होती थी कि वह हमेशा इतने अच्छे मूड में कैसे जागती थी। कुछ क्षणों बाद वह होश में आती, और मनमोहक शब्द बोलती, जो एक दूसरे से असंबद्ध थे, मानो चिड़ियों की चहचहाहट हों। एक तरह से 'सामान्य सूचना' के रूप में, उसका गला, जो आमतौर पर किसी का ध्यान नहीं खींचता था, अब लगभग आश्चर्यजनक रूप से सुंदर लग रहा था, और उसे वह अपार महत्व प्राप्त हो गया था जो नींद में बंद होने के कारण उसकी आँखों ने खो दिया था। उसकी आँखें,

मेरी नियमित सूचना देने वाली, जिनसे पलकें बंद होने के बाद मैं अब बात नहीं कर सकता था। जैसे बंद पलकें चेहरे को एक मासूम, गंभीर सुंदरता प्रदान करती हैं, आँखों द्वारा स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई हर बात को दबा देती हैं, वैसे ही अल्बर्टीन के जागने पर बोले गए शब्दों में, जो अर्थहीन नहीं थे, बल्कि मौन के क्षणों से बाधित थे, एक शुद्ध सुंदरता थी जो हर क्षण बातचीत की तरह बोलने की आदतों, सामान्यताओं, दोषों के निशानों से दूषित नहीं होती। खैर, जब मैंने अल्बर्टीन को जगाने का फैसला किया, तो मैं बिना किसी डर के ऐसा कर सका। मैं जानता था कि उसका जागना उस शाम से कोई संबंध नहीं रखेगा जो हमने साथ बिताई थी, बल्कि वह अपनी नींद से ऐसे निकलेगी जैसे सुबह रात से निकलती है। जैसे ही उसने मुस्कुराते हुए अपनी आँखें खोलनी शुरू कीं, उसने मुझे अपने होंठ आगे बढ़ा दिए, और इससे पहले कि वह एक शब्द भी बोल पाती, मैंने उनके ताजे स्वाद को चख लिया, जो दिन निकलने से पहले शांत बगीचे के स्वाद जितना ही सुखदायक था।

उस शाम के अगले दिन, जब अल्बर्टीन ने मुझे बताया था कि वह शायद वर्दुरिन परिवार से मिलने जाएगी, फिर कहा कि वह नहीं जाएगी, मैं जल्दी जाग गया, और जब मैं अभी भी आधी नींद में था, मेरी खुशी ने मुझे बताया कि सर्दियों के बीच में वसंत का एक दिन आ गया है। बाहर, विभिन्न वाद्ययंत्रों के लिए कुशलतापूर्वक रूपांतरित लोकप्रिय धुनें, चीनी मिट्टी के बर्तनों की मरम्मत करने वाले के हॉर्न से लेकर कुर्सी बुनने वाले के तुरही तक, और उस बकरी चराने वाले की बांसुरी तक, जो एक सुहावनी सुबह में सिसिली के बकरी चराने वाले जैसा लग रहा था, एक 'सार्वजनिक अवकाश के लिए प्रस्तावना' के साथ सुबह की धुन को हल्के से संजो रही थीं। हमारी श्रवण शक्ति, वह मनमोहक इंद्रिय, हमें सड़क का साथ देती है, जिसकी हर रेखा वह हमारे लिए खींचती है, उस पर से गुजरने वाले सभी लोगों का रेखाचित्र बनाती है, और हमें उनके रंग दिखाती है। बेकरी और डेयरी के लोहे के शटर, जो कल रात महिलाओं के सुख की हर संभावना पर गिर पड़े थे, अब एक ऐसे जहाज के पाल की तरह उठ रहे थे जो रवाना होने वाला हो और पारदर्शी समुद्र को पार करते हुए युवा महिला सहायकों के दृश्य के ऊपर से गुजर रहा हो। लोहे के पर्दे के उठने की यह आवाज़ शायद शहर के किसी दूसरे हिस्से में मेरा एकमात्र आनंद होती। इस इलाके में सौ अन्य आवाज़ें मेरे आनंद में योगदान दे रही थीं, और अगर मैं ज़्यादा देर सोता रहता तो उनमें से एक भी आवाज़ कम नहीं होती। पुराने कुलीन

इलाकों का यही जादुई आकर्षण है कि वे एक ही समय में आम लोगों के भी हैं। जैसे कभी-कभी गिरजाघरों के बरामदों से कुछ ही दूरी पर ये दुकानें हुआ करती थीं (जिनका नाम आज भी कायम है, जैसे रूएन के 'पुस्तक विक्रेताओं' के बरामदे का, क्योंकि ये दुकानदार अपनी वस्तुएँ खुले में दीवारों के सहारे प्रदर्शित करते थे), वैसे ही कई छोटे-मोटे, लेकिन नियमित व्यापार, भव्य होटल डी गुएरमांटेस के सामने से गुजरते थे और कभी-कभी पुराने जमाने के चर्च वाले फ्रांस की याद दिलाते थे। दोनों ओर के छोटे-छोटे घरों को लुभाने वाली उनकी आवाज़ में, कुछ अपवादों को छोड़कर, किसी गीत का अंश नहीं था। यह गीत से उतना ही अलग था जितना बोरिस गोडुनोव और पेलियास के भाषणों में, जिनमें सूक्ष्म उतार-चढ़ाव होते थे; लेकिन दूसरी ओर, यह किसी पुजारी के धार्मिक अनुष्ठान के दौरान गाए जाने वाले भजनों की याद दिलाता था, और ये गली के दृश्य उसी का सौम्य, धर्मनिरपेक्ष और कुछ हद तक धार्मिक प्रतिरूप हैं। अल्बर्टीन के मेरे साथ रहने आने के बाद से मुझे इनमें इतना आनंद कभी नहीं आया था। मुझे वे उसकी जागृति का एक आनंदमय संकेत प्रतीत हुए, और बाहरी दुनिया के जीवन में मेरी रुचि जगाकर उन्होंने मुझे एक प्रियजन की उपस्थिति के सुखदायक गुण के प्रति और भी अधिक सजग बना दिया, जो मेरी कामना के अनुरूप स्थिर थी। सड़क पर बिकने वाले कई खाद्य पदार्थ, जिनसे मुझे व्यक्तिगत रूप से घृणा थी, अल्बर्टीन को बहुत पसंद थे, इतना कि फ्रांस्वा अपने युवा नौकर को उन्हें खरीदने के लिए भेजा करती थी, शायद आम लोगों की भीड़ में शामिल होने पर थोड़ा शर्मिंदा महसूस करते हुए। इस शांत क्षेत्र में (जहाँ शोर अब फ्रांस्वा के लिए विलाप का कारण नहीं था और मेरे लिए आनंद का स्रोत बन गया था), मुझे अलग-अलग लय में, उन साधारण लोगों द्वारा गाए गए गीत सुनाई दिए, जैसे बोरिस के बेहद लोकप्रिय संगीत में होते हैं, जहाँ एक स्वर के दूसरे पर टिके होने से प्रारंभिक स्वर में शायद ही कोई परिवर्तन होता है, भीड़ का संगीत जो संगीत से कहीं अधिक एक भाषा है। "आह! ले बिगोर्न्यू, ड्यूक्स सू ले बिगोर्न्यू" की आवाज़ सुनकर लोग उन छोटे-छोटे घोंघे बेचने वाले बर्तनों की ओर दौड़ पड़े, जिनमें वे भयानक से शंख बिक रहे थे। अगर अल्बर्टीन वहाँ न होती, तो मुझे भी घिन आती, ठीक वैसे ही जैसे मुझे उन घोंघों से घिन आती थी जिन्हें उसी समय बिकने के लिए चिल्लाया जा रहा था। यहाँ भी विक्रेता ने मुझे मौसोर्स्की के लगभग बेसुरी लयबद्ध भाषण की याद दिला दी, लेकिन सिर्फ़ उसी की नहीं। लगभग "लेस

एस्कार्गोट्स, इल्स सोंट फ़्रेज़, इल्स सोंट ब्यूक्स" कहने के बाद, मेटरलिंक की अस्पष्ट उदासी के साथ, जिसे डेबुसी ने संगीत में ढाला था, घोंघा बेचने वाले ने उन मार्मिक अंतों में से एक में कहा, जिसमें पेलियास के संगीतकार रामेउ के साथ अपनी समानता दिखाते हैं: "अगर मुझे हारना ही है, तो क्या तुम मेरे विजेता बनोगे?" एक मधुर उदास स्वर में जोड़ा गया: "On les vend six sous la douzaine…."

मुझे हमेशा से यह समझना मुश्किल रहा है कि इन सरल शब्दों को इतने अनुचित, रहस्यमय स्वर में क्यों बोला गया, मानो उस रहस्य के समान जो उस पुराने महल में सबको उदास कर देता है जहाँ मेलिसांडे खुशी लाने में असफल रही है, और उस बूढ़े अर्केल के गहरे विचारों के समान जो सरलतम शब्दों में ज्ञान और भाग्य के पूरे वृत्तांत को व्यक्त करना चाहता है। ठीक उन्हीं स्वरों पर, जिन पर एलेमोंडे के बूढ़े राजा या गोलैंड की आवाज़ बढ़ती मधुरता के साथ उठती है, जैसे: "हमें नहीं पता कि यहाँ क्या हो रहा है, यह अजीब लग सकता है, शायद जो कुछ भी होता है वह व्यर्थ नहीं है," या फिर: "यहाँ घबराने की कोई बात नहीं है, यह एक बेचारा छोटा रहस्यमय प्राणी था, पूरी दुनिया की तरह," घोंघा बेचने वाले ने एक अंतहीन लय में फिर से शुरू किया: "On les vend six sous la douzaine…." लेकिन इस आध्यात्मिक विलाप को अनंत के तट पर समाप्त होने का समय नहीं मिला, यह एक तीखी तुरही की आवाज़ से बाधित हो गया। इस बार, भोजन का कोई सवाल नहीं था, लिब्रेटो के शब्द थे: "टोंड लेस चिएन्स, कूपे लेस चैट्स, लेस क्यूज़ एट लेस ओरेइल्स।"

यह सच था कि हर विक्रेता या विक्रेतानी की कल्पना और भावना अक्सर उन सभी मंत्रों के शब्दों में बदलाव ला देती थी जिन्हें मैं अपने बिस्तर से सुना करता था। फिर भी, किसी शब्द के बीच में मौन का आभास देने वाला एक रस्मी विराम, विशेष रूप से जब उसे दूसरी बार दोहराया जाता था, मुझे लगातार किसी पुराने गिरजाघर की याद दिलाता था। एक गधी द्वारा खींची जाने वाली अपनी छोटी गाड़ी में, जिसे वह आंगन में प्रवेश करने से पहले हर घर के सामने रोक देता था, पुराने कपड़ों का व्यापारी, चाबुक लहराते हुए, "हैबिट्स, मर्चैंड डी हैबिट्स, हा...बिट्स" का उच्चारण करता था, अंतिम अक्षरों के बीच उसी विराम के साथ जैसे वह सामान्य मंत्र में "पर ओमनिया सेकुला सेकुलो...रम" या "रेक्विस्केट इन पा...से" का उच्चारण कर रहा हो, हालांकि उसे अपने कपड़ों की अमरता में विश्वास करने का कोई कारण

नहीं था, न ही वह उन्हें परम शांति के लिए वस्त्र के रूप में अर्पित करता था। और इसी प्रकार, जैसे-जैसे इस सुबह के समय भी उद्देश्य भ्रमित होने लगे थे, एक सब्जी बेचने वाली महिला, अपनी छोटी सी हाथगाड़ी को धकेलते हुए, अपनी प्रार्थना के लिए ग्रेगोरियन विभाजन का उपयोग कर रही थी:
कोमलता के लिए, हरियाली के लिए,
कोमल और सुंदर आर्टिचोक,
चाउट्स का अर्थ...
हालांकि उसने शायद कभी एंटीफोनल के बारे में नहीं सुना था, या उन सात स्वरों के बारे में भी नहीं सुना था जो क्वाड्रिवियम के चार विज्ञानों और ट्रिवियम के तीन विज्ञानों का प्रतीक हैं।
एक आदमी, जो ब्लाउज पहने हुए था, हाथ में बैल का अंडकोष थामे और सिर पर बास्क टोपी पहने, बारी-बारी से हर घर के सामने रुकता था। वह दो कुत्तों के साथ बकरियों के झुंड को हांकते हुए चरवाहा था। दूर से आने के कारण वह हमारे इलाके में काफी देर से पहुँचा; और औरतें कटोरे लेकर दौड़ती हुई बाहर आईं ताकि वे अपने बच्चों को ताकत देने वाला दूध ले सकें। लेकिन इस अच्छे चरवाहे की पाइरेनीज़ धुनों के साथ अब चक्की की घंटी भी बजने लगी, जो चिल्ला रही थी: "कौटो, सीज़ो, रासोइर्स।" उसके साथ आरा मशीन चलाने वाला प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ था, क्योंकि उपकरण न होने के कारण उसे केवल इतना कहकर संतोष करना पड़ा: "Avez–vous des scies à repasser, v'là le repasseur," जबकि अधिक प्रसन्न मिस्त्री, अपने द्वारा मरम्मत किए गए बर्तनों, कड़ाही और अन्य सभी चीजों की गिनती करने के बाद, यह स्वर दोहराता था:
वहाँ, वहाँ, वहाँ
मैं ही इसे बर्बाद करने वाला हूँ।
यहां तक कि रनवे भी,
हर जगह पैसा लगाने वाला मैं ही हूं।
कौन सारे छेदों को भरता है?

और लाल रंग से रंगे बड़े लोहे के बक्से लिए हुए युवा इतालवी, जिन पर जीतने और हारने की संख्या अंकित थी, और अपने खड़खड़े बजाते हुए, निमंत्रण दे रहे थे: "मज़े करें, देवियों, आनंद लें।"

फ्रांस्वा फिगारो अखबार लेकर आई। एक नज़र में ही मुझे पता चल गया कि मेरा लेख अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ था। उसने बताया कि अल्बर्टीन ने पूछा था कि क्या वह मेरे कमरे में आ सकती है और उसने संदेश भेजा था कि उसने वर्दुरिन परिवार से मिलने का विचार पूरी तरह से छोड़ दिया है और मेरी सलाह मानकर ट्रोकाडेरो में 'विशेष' मैटिनी देखने जाने का फैसला किया है—जिसे आजकल, हालांकि काफी कम महत्व के साथ, 'गाला' मैटिनी कहा जाता है—एंड्री के साथ एक छोटी सी घुड़सवारी के बाद, जिसका उसने वादा किया था। अब जब मुझे पता चल गया था कि उसने श्रीमती वर्दुरिन से मिलने जाने की अपनी इच्छा, जो शायद बुरी थी, को त्याग दिया है, तो मैंने हंसते हुए कहा: "उसे अंदर आने के लिए कहो," और मन ही मन सोचा कि वह जहां चाहे जा सकती है और मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे पता था कि दोपहर ढलते-ढलते, जब शाम होने लगेगी, तो शायद मैं एक अलग ही इंसान बन जाऊँगा, उदास, अल्बर्टीन की हर हरकत को वो अहमियत देने लगूँगा जो सुबह के इस सुहावने मौसम में नहीं थी। मेरी इस उदासीनता का कारण मुझे साफ-साफ पता था, पर इससे मुझमें कोई बदलाव नहीं आया। कमरे में आते हुए अल्बर्टीन ने कहा, "फ्रांकोइस ने मुझे बताया था कि आप जाग रहे हैं और मैं आपको परेशान नहीं कर रही हूँ।" और चूंकि खिड़की गलत समय पर खोलकर मुझे सर्दी लगने के बाद, अल्बर्टीन को सबसे ज्यादा डर इस बात का था कि वह मेरे सोते हुए कमरे में न आ जाए: "मुझे उम्मीद है मैंने कुछ गलत नहीं किया है," उसने आगे कहा। "मुझे डर था कि आप मुझसे कहेंगे: कौन सा बदतमीज इंसान यहाँ अपनी मौत से मिलने आया है?" और वह उस हंसी के साथ हंसी जो मुझे हमेशा परेशान करती थी। मैंने उसी मजाकिया लहजे में जवाब दिया: "क्या यह कठोर फरमान तुम्हारे लिए ही जारी किया गया था?" और, कहीं वह इसे तोड़ने की हिम्मत न करे, इसलिए मैंने आगे कहा: "हालांकि अगर तुमने मुझे जगाया तो मैं बहुत क्रोधित हो जाऊंगी।" "मुझे पता है, मुझे पता है, डरो मत," अल्बर्टीन ने कहा। और, स्थिति को हल्का करने के लिए, मैं उसके साथ एस्तेर के दृश्य को दोहराता रहा, जबकि नीचे गली में चीखें जारी थीं, जो हमारी बातचीत में दब गई थीं:

"मुझे तुममें ही एक विशेष आकर्षण मिलता है जो मुझे मोहित करता है और जिससे मैं कभी नहीं थकता" (और मन ही मन मैंने सोचा: "हाँ, वह मुझे अक्सर थका देती है")। और रात भर में उसने मुझसे जो कहा था, उसे याद करते हुए, जब मैंने वर्दुरिन परिवार को छोड़ने के लिए उसका बहुत-बहुत धन्यवाद किया, ताकि अगली बार वह किसी और बात पर भी मेरी बात माने, तो मैंने कहा: "अल्बर्टीन, तुम मुझ पर, जो तुमसे प्यार करता हूँ, अविश्वास करती हो और उन लोगों पर भरोसा करती हो जो तुमसे प्यार नहीं करते" (जैसे कि उन लोगों पर अविश्वास करना स्वाभाविक न हो जो हमसे प्यार करते हैं और जिनका स्वार्थ हमसे झूठ बोलकर बातें जानने और हमें रोकने में होता है), और ये झूठे शब्द जोड़ दिए: "तुम्हें सच में विश्वास नहीं है कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, जो मज़ेदार है। असल में, मैं तुम्हारी पूजा नहीं करता।" उसने भी झूठ बोला जब उसने मुझसे कहा कि वह मुझ पर ही भरोसा करती है और फिर सच बोलकर मुझे आश्वस्त किया कि वह अच्छी तरह जानती है कि मैं उससे प्यार करता हूँ। लेकिन इस कथन से ऐसा नहीं लगा कि वह मुझे झूठा और जासूस नहीं मानती। और ऐसा लग रहा था मानो वह मुझे माफ़ कर रही हो, जैसे उसने इन कमियों को किसी तीव्र जुनून का कष्टदायक परिणाम समझा हो, या मानो उसने खुद को कमतर समझा हो। "मेरी प्यारी बच्ची, मैं तुमसे विनती करती हूँ, उस दिन जो तुम इतना जोश दिखा रही थी, अब और नहीं। सोचो, अल्बर्टीन, अगर तुम्हारा एक्सीडेंट हो जाए तो!" बेशक मैं उसका कोई बुरा नहीं चाहती थी। लेकिन कितना अच्छा होता अगर वह अपने घोड़ों के साथ कहीं भी, जहाँ चाहे, चली जाती और फिर कभी मेरे घर वापस न आती। कितना आसान हो जाता, कि वह कहीं और जाकर खुशी से रहती, मैं तो यह भी नहीं जानना चाहती थी कि कहाँ। "ओह! मुझे पता है तुम मेरे साथ एक दिन भी नहीं रह पाओगी; तुम आत्महत्या कर लोगी।"

तो हमने झूठे भाषणों का आदान-प्रदान किया। लेकिन जो सत्य हम ईमानदारी से कहते, उससे कहीं अधिक गहरा सत्य कभी-कभी ईमानदारी के अलावा किसी और माध्यम से भी व्यक्त और प्रकट किया जा सकता है। "बाहर के शोर से तुम्हें कोई परेशानी नहीं होती?" उसने मुझसे पूछा; "मुझे तो यह पसंद है। लेकिन तुम तो वैसे भी बहुत हल्की नींद सोते हो।" इसके विपरीत, मैं बहुत गहरी नींद सोता था (जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, लेकिन आगे की बात को देखते हुए मुझे इसे दोहराना पड़ रहा है), खासकर तब जब मैं सुबह तक सोता ही

नहीं था। इस तरह की नींद औसतन चार गुना अधिक ताजगी देती है, इसलिए जागने वाले को ऐसा लगता है कि नींद चार गुना लंबी चली, जबकि वास्तव में वह चार गुना कम ही रही होती है। गुणा में एक शानदार, सोलह गुना त्रुटि जो हमारे जागने को इतनी सुंदरता प्रदान करती है और जीवन को एक अलग पैमाने पर फिर से शुरू करती है, ठीक वैसे ही जैसे संगीत में लय के वे बड़े बदलाव होते हैं, जिनका अर्थ है कि एक एंडांटे में एक क्वेवर की अवधि प्रेस्टिसिमो में एक मिनिम के बराबर होती है, और जो हमारी जागृत अवस्था में अज्ञात होते हैं। वहाँ जीवन लगभग हमेशा एक जैसा ही रहता है, इसीलिए यात्रा में निराशा होती है। ऐसा लग सकता है कि हमारे सपने जीवन की सबसे कठोर चीजों से बने हैं, लेकिन उन चीजों को इतनी गहराई से गढ़ा और गूंथा जाता है, क्योंकि जागृत अवस्था की कोई भी समयबद्ध सीमाएँ उन्हें इतनी विशाल ऊँचाइयों तक पहुँचने से नहीं रोकतीं कि हम उन्हें पहचान भी नहीं पाते। इस सौभाग्य के बाद की सुबहों में, जब नींद की गहरी परत ने मेरे मस्तिष्क से रोजमर्रा के कामों के उन निशानों को मिटा दिया था जो उस पर ब्लैकबोर्ड की तरह अंकित होते हैं, तो मुझे अपनी स्मृति को फिर से जीवित करना पड़ा; अपनी इच्छाशक्ति के बल पर हम नींद या आघात के कारण भूली हुई चीजों को फिर से याद कर सकते हैं, जो धीरे-धीरे हमारी आँखें खुलने या लकवा ठीक होने पर हमें वापस मिल जाती हैं। कुछ ही मिनटों में मैंने इतने घंटे जी लिए थे कि, फ्रांस्वा (जिसके लिए मैंने फोन किया था) से वास्तविक जीवन की परिस्थितियों के अनुरूप और समय के अनुसार भाषा में बात करने की इच्छा से, मुझे अपने भीतर के सारे दमन को लगाना पड़ा ताकि मैं यह न कह दूं: "फ्रांस्वा, देखो शाम के पाँच बज गए हैं और मैंने तुम्हें कल दोपहर से नहीं देखा है।" और अपने सपनों को दूर भगाने की कोशिश करते हुए, उन्हें झूठा साबित करते हुए और खुद से भी झूठ बोलते हुए, मैंने साहसपूर्वक, खुद को पूरी ताकत से चुप कराते हुए, ठीक इसके विपरीत कहा: "फ्रांस्वा, कम से कम दस बज रहे होंगे!" मैंने सुबह के दस बजे भी नहीं कहा, बल्कि सिर्फ दस कहा, ताकि यह अविश्वसनीय समय अधिक स्वाभाविक लहजे में बोला जा सके। फिर भी, उन शब्दों को कहने के लिए जो मेरे अधजाने मन में गूंज रहे थे, मुझे उतनी ही संतुलन की आवश्यकता थी जितनी किसी चलती ट्रेन से कूदकर प्लेटफॉर्म पर कुछ गज दौड़ने पर होती है, ताकि वह गिर न जाए। वह एक पल के लिए दौड़ता है क्योंकि जिस वातावरण को उसने अभी-अभी छोड़ा है, वह बहुत तेज गति से भरा हुआ था और उस

निर्जीव मिट्टी से बिलकुल अलग था जिस पर उसके पैरों को संतुलन बनाए रखना मुश्किल हो रहा था।

क्योंकि स्वप्नलोक जागृतिलोक से भिन्न है, इसका यह अर्थ नहीं है कि जागृतिलोक कम वास्तविक है, बिलकुल नहीं। नींद के संसार में, हमारी धारणाएँ इतनी अतिभारित होती हैं, प्रत्येक धारणा एक ऐसे प्रतिरूप से बढ़ जाती है जो उसके आकार को दोगुना कर देती है और उसे व्यर्थ ही अंधा कर देती है, कि जागृति के भ्रम में हम यह भी नहीं समझ पाते कि वास्तव में क्या हो रहा है; क्या फ़्रांस्वा मेरे पास आई थी, या मैं, इंतज़ार करते-करते थककर, उसके पास गया था? उस क्षण मौन ही एकमात्र उपाय था कुछ भी प्रकट न करने का, ठीक वैसे ही जैसे उस क्षण जब हमें एक ऐसे मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जाता है जो हमारे विरुद्ध लगे सभी आरोपों से अवगत होता है, जबकि हमें स्वयं उन आरोपों की जानकारी नहीं होती। क्या फ़्रांस्वा आई थी, क्या मैंने उसे बुलाया था? क्या वास्तव में फ़्रांस्वा सो रही थी और मैंने ही उसे जगाया था? इतना ही नहीं, क्या फ्रांस्वा मेरे हृदय में समाई नहीं थी? क्योंकि व्यक्तियों और एक-दूसरे पर उनकी प्रतिक्रिया के बीच का अंतर उस धुंधली अस्पष्टता में लगभग न के बराबर रह जाता है, जिसमें वास्तविकता साही के शरीर की तरह अपारदर्शी होती है, और हमारी लगभग नगण्य धारणा शायद कुछ जानवरों की धारणा का आभास करा सकती है। इसके अलावा, इन गहरी नींदों से पहले आने वाली तर्कहीनता की निर्मल अवस्था में, यदि ज्ञान के अंश प्रकाशमान रूप से तैरते हैं, यदि टैने और जॉर्ज एलियट के नाम अज्ञात नहीं हैं, तो भी जागृत जीवन श्रेष्ठ बना रहता है, क्योंकि इसे हर सुबह जारी रखना संभव है, जबकि स्वप्न जीवन को हर रात जारी रखना संभव नहीं है। लेकिन क्या जागृत जगत से अधिक वास्तविक अन्य जगत भी हैं? भले ही हमने कलाओं में हर क्रांति से रूपांतरित होते देखा हो, और साथ ही साथ उस दक्षता और संस्कृति के स्तर से भी जो एक कलाकार को एक अज्ञानी मूर्ख से अलग करती है। और अक्सर एक घंटा ज़्यादा सोना एक लकवे जैसा होता है, जिसके बाद हमें अपने अंगों का इस्तेमाल फिर से हासिल करना पड़ता है, बोलना सीखना पड़ता है। हमारी इच्छाशक्ति इस काम के लिए काफ़ी नहीं होती। हम बहुत देर तक सो चुके होते हैं, हमारा अस्तित्व ही खत्म हो जाता है। हमारा जागना लगभग नामुमकिन सा लगता है, यंत्रवत और बिना चेतना के, जैसे पानी का पाइप नल बंद होने को महसूस करता है। जेलीफ़िश से भी ज़्यादा निर्जीव जीवन

आगे बढ़ता है, जिसमें हम यह मान सकते हैं कि हमें समुद्र की गहराई से निकाला गया है या जेल से रिहा किया गया है, अगर हम सोचने-समझने की क्षमता रखते। लेकिन फिर सर्वोच्च स्वर्ग से देवी स्मृतिकन्या नीचे झुकती हैं और हमें 'कॉफ़ी मंगवाने की आदत' के सूत्र में पुनरुत्थान की आशा देती हैं। हालाँकि, स्मृति का यह तात्कालिक उपहार हमेशा इतना सरल नहीं होता। अक्सर, उन पहले कुछ मिनटों में जब हम खुद को जागृत अवस्था में जाने देते हैं, हमारे सामने एक ऐसा सत्य होता है जो विभिन्न वास्तविकताओं से बना होता है, जिनमें से हम कल्पना करते हैं कि हम ताश के पत्तों में से चुन सकते हैं।

शुक्रवार की सुबह है और हम अभी-अभी सैर से लौटे हैं, या यूं कहें कि समुद्र किनारे चाय का समय हो गया है। नींद का ख्याल और बिस्तर पर नाइटशर्ट पहने लेटे होने का ख्याल अक्सर हमारे दिमाग में सबसे आखिर में आता है।

हमारा पुनरुत्थान तुरंत नहीं होता; हम सोचते हैं कि हमने घंटी बजा दी है, जबकि ऐसा नहीं होता, हम निरर्थक बातें करते हैं। केवल गति से ही हमारे विचार वापस आते हैं, और जब हम वास्तव में बिजली का बटन दबा देते हैं, तब हम धीरे-धीरे लेकिन स्पष्ट रूप से कह पाते हैं: "फ्रांकोइस, कम से कम दस बज गए होंगे, मेरी कॉफ़ी लाओ।" ओह, चमत्कार! फ्रांकोइस को उस अवास्तविकता के सागर का ज़रा भी आभास नहीं हो सकता था जिसमें मैं पूरी तरह डूबा हुआ था और जिसके बीच से मैंने अपना अजीब सवाल पूछने की हिम्मत जुटाई थी। उसका जवाब था: "दस बजकर दस मिनट हो गए हैं।" जिससे मेरी बात बिल्कुल तर्कसंगत लगी, और मैं उसे उन काल्पनिक बातों का पता नहीं चलने दे सका जिनसे मैं उन दिनों में लगातार बहलाया जाता था, जब अस्तित्वहीनता के पहाड़ ने मुझसे सारा जीवन छीन नहीं लिया था। दृढ़ इच्छाशक्ति से मैंने स्वयं को जीवन में पुनः स्थापित कर लिया था। मैं अब भी नींद के आखिरी अंशों का आनंद ले रहा था, यानी कहानी कहने की कला में मौजूद एकमात्र रचनात्मकता, एकमात्र नवीनता का, क्योंकि जागृत अवस्था में सुनाई गई हमारी कोई भी कहानी, चाहे वह साहित्यिक अलंकरणों से कितनी भी सुशोभित क्यों न हो, उन रहस्यमय भेदों को स्वीकार नहीं कर पाती जिनसे सौंदर्य उत्पन्न होता है। अफीम से उत्पन्न सौंदर्य की बात करना आसान है। लेकिन जो व्यक्ति केवल औषधियों के सहारे सोने का आदी है, उसके लिए प्राकृतिक नींद का एक अप्रत्याशित घंटा किसी देश के विशाल, सुबह के विस्तार को रहस्यमय और अधिक

ताजगी भरा प्रकट करेगा। सोने का समय बदलकर, सोने की जगह बदलकर, कृत्रिम रूप से नींद को आकर्षित करके, या इसके विपरीत एक बार प्राकृतिक नींद में लौटकर—जो उन लोगों के लिए सबसे विचित्र प्रकार की नींद है जो नींद की दवाइयों से सोने के आदी हैं—हम नींद की उतनी ही अधिक किस्में पैदा करने में सफल होते हैं जितनी एक माली कार्नेशन या गुलाब की किस्में पैदा कर सकता है। माली ऐसे फूल उगाते हैं जो सुखद सपने होते हैं, और कुछ ऐसे भी होते हैं जो बुरे सपने जैसे होते हैं। जब मैं एक खास तरह से सो जाता था, तो कांपते हुए जाग जाता था, यह सोचकर कि मुझे खसरा हो गया है, या उससे भी ज्यादा दर्दनाक बात यह थी कि मेरी दादी (जिनके बारे में मैं अब कभी सोचता भी नहीं था) को बुरा लगा होगा क्योंकि मैंने उस दिन उन पर हँसा था, जब बालबेक में, यह सोचकर कि वह मरने वाली हैं, उन्होंने मुझसे अपनी एक तस्वीर माँगी थी। तुरंत, हालांकि मैं जाग चुका था, मुझे लगा कि मुझे जाकर उन्हें समझाना चाहिए कि उन्होंने मुझे गलत समझा था। लेकिन, तब तक, मेरे शरीर में गर्मी वापस आ रही थी। खसरे का निदान एक तरफ रख दिया गया, और मेरी दादी इतनी दूर हो गईं कि अब उनके लिए मेरा दिल धड़कना बंद हो गया। कभी-कभी इन अलग-अलग तरह की नींदों के बीच अचानक अंधेरा छा जाता था। मैं पूरी तरह से अंधेरी सड़क पर चलना जारी रखने से डरता था, जहाँ मुझे दबे पांव कदमों की आहट सुनाई देती थी। अचानक एक पुलिसकर्मी और उन महिलाओं में से एक के बीच झगड़ा शुरू हो गया, जिन्हें अक्सर तांगा चलाते हुए देखा जाता था, और दूर से देखने पर उन्हें युवक समझ लिया जाता था। अंधेरे में अपनी गाड़ी के डिब्बे पर बैठी वह मुझे दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन उसने बात की और उसकी आवाज़ में उसके चेहरे की सुंदरता और शरीर की जवानी झलक रही थी। मैं अंधेरे में उसकी ओर बढ़ा ताकि उसके जाने से पहले उसकी गाड़ी में बैठ सकूँ। दूरी बहुत थी। सौभाग्य से, पुलिसवाले के साथ उसका झगड़ा जारी रहा। मैं उस गाड़ी के पास पहुँचा जो अभी भी खड़ी थी। सड़क का यह हिस्सा स्ट्रीट लैंप से रोशन था। ड्राइवर दिखाई दी। वह सचमुच एक महिला थी, लेकिन बूढ़ी और मोटी, उसके सफेद बाल टोपी के नीचे बिखरे हुए थे और उसके चेहरे पर एक लाल जन्मचिह्न था। मैं उसके पास से गुज़रा और सोचने लगा: क्या महिलाओं की जवानी का यही हाल होता है? जिनसे हम पहले मिल चुके हैं, अगर अचानक हम उन्हें फिर से देखना चाहें, तो क्या वे बूढ़ी हो गई हैं? क्या जिस युवती को हम चाहते हैं, वह

रंगमंच के किसी किरदार की तरह है, जब उस किरदार को निभाने वाली अभिनेत्री न मिलने पर मैनेजमेंट को वह किरदार किसी नए सितारे को सौंपना पड़ता है? लेकिन फिर वह पहले जैसी नहीं रहती।

इसके साथ ही उदासी की भावना मुझ पर हावी हो गई। इस प्रकार, हमें अपनी नींद में कई तरह की दया की भावनाएँ दिखाई देती हैं, जैसे पुनर्जागरण काल की 'पिएटा' मूर्तियाँ, लेकिन उनकी तरह संगमरमर में नहीं, बल्कि अमूर्त रूप में। फिर भी, उनका अपना उद्देश्य होता है, जो हमें चीजों के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण याद दिलाता है, जो अधिक कोमल, अधिक मानवीय होता है, जिसे हम जागृत अवस्था की सामान्य, ठंडी, कभी-कभी शत्रुतापूर्ण अवस्था में अक्सर भूल जाते हैं। इस प्रकार मुझे बालबेक में ली गई उस प्रतिज्ञा की याद आई कि मैं हमेशा फ्रांस्वा के साथ करुणा से पेश आऊँगा। और कम से कम उस पूरी सुबह के लिए, मैं खुद को फ्रांस्वा और बटलर के झगड़ों से चिढ़ने से रोकने का प्रयास करूँगा, फ्रांस्वा के प्रति कोमल रहूँगा, जिसके प्रति अन्य लोग बहुत कम दया दिखाते थे। केवल उस सुबह के लिए, और मुझे एक ऐसा नियम बनाना होगा जो थोड़ा अधिक स्थायी हो; क्योंकि जिस प्रकार राष्ट्रों का शासन लंबे समय तक केवल भावनाओं पर आधारित नीति से नहीं चलता, उसी प्रकार मनुष्य भी अपने सपनों की स्मृति से शासित नहीं होते। यह सपना पहले से ही धुंधला पड़ने लगा था। इसे याद करके चित्रित करने के प्रयास में मैंने इसे और भी तेज़ी से धुंधला कर दिया। मेरी पलकें अब पहले की तरह मज़बूती से बंद नहीं थीं। अगर मैं अपने सपने को फिर से बनाने की कोशिश करता, तो वे पूरी तरह खुल जातीं। हर क्षण हमें एक ओर स्वास्थ्य और विवेक तथा दूसरी ओर आध्यात्मिक सुखों के बीच चुनाव करना होता है। मैंने हमेशा कायरतापूर्ण मार्ग अपनाते हुए स्वास्थ्य और विवेक को चुना है। इसके अलावा, जिस खतरनाक शक्ति का मैं त्याग कर रहा था, वह हमारी कल्पना से भी कहीं अधिक खतरनाक थी। दया और सपने अकेले नहीं उड़ते। जब हम सोने की परिस्थितियों में इस प्रकार परिवर्तन करते हैं, तो न केवल हमारे सपने धुंधले पड़ते हैं, बल्कि कई दिनों तक, शायद वर्षों तक, न केवल सपने देखने की क्षमता, बल्कि सोने की क्षमता भी मिट जाती है। नींद दिव्य है, लेकिन स्थिर नहीं; ज़रा सा भी झटका इसे अस्थिर कर देता है। आदतों के प्रेमी होने के कारण, वे इसे हर रात अपने पास रखते हैं, स्वयं से भी अधिक स्थिर होकर, इसके लिए निर्धारित स्थान पर

इसे हर प्रकार के नुकसान से बचाते हैं, लेकिन यदि हम इसे विस्थापित कर दें, यदि यह हमारे अधीन न रहे, तो यह भाप की तरह पिघल जाता है। यह यौवन और प्रेम के समान है, जिसे कभी पुनः प्राप्त नहीं किया जा सकता।

नींद के इन विभिन्न रूपों में, ठीक संगीत की तरह, अंतराल के बढ़ने या घटने से ही सुंदरता उत्पन्न होती थी। मैंने इस सुंदरता का आनंद लिया, लेकिन दूसरी ओर, अपनी नींद में, चाहे वह कितनी भी संक्षिप्त क्यों न हो, मैंने पेरिस के व्यापारियों और भोजन विक्रेताओं के घुमंतू जीवन को दर्शाने वाली कई आवाज़ें खो दीं। और इसलिए, आदत के तौर पर (अफ़सोस, उस नाटकीय घटनाक्रम का अनुमान लगाए बिना जिसमें ये देर से जागना और रासिनियन असुएरस के कठोर, मेदो-फ़ारसी कानून मुझे फंसाने वाले थे) मैंने जल्दी जागने का प्रयास किया ताकि इन आवाज़ों में से कोई भी आवाज़ न खो जाऊं।

और, अल्बर्टीन को उनसे कितना लगाव था, यह जानकर और खुद बिस्तर से उठे बिना बाहर का आनंद लेने से भी कहीं अधिक, मुझे उनमें मानो बाहरी दुनिया के वातावरण का प्रतीक सुनाई देता था, उस खतरनाक हलचल भरी जिंदगी का जो मेरी नसों में दौड़ रही थी, जिसे मैंने उसे अपनी निगरानी के अलावा छूने नहीं दिया था, जिससे मैं उसे अपनी इच्छा अनुसार समय पर वापस खींच लेता था ताकि वह मेरे पास लौट आए। और इसलिए मैंने पूरी ईमानदारी से अल्बर्टीन को जवाब दिया: "इसके विपरीत, मुझे तो इनसे खुशी मिलती है क्योंकि मुझे पता है कि आपको ये पसंद हैं।" "आ ला बार्क, लेस हुइट्रेस, आ ला बार्क।" "ओह, सीप! मुझे तो इनकी बहुत लालसा थी!" सौभाग्य से अल्बर्टाइन, आंशिक रूप से असंगतता के कारण, आंशिक रूप से नम्रता के कारण, जल्दी से उन चीज़ों को भूल गई जिनके लिए वह तरस रही थी, और इससे पहले कि मेरे पास उसे यह बताने का समय होता कि उसे प्रूनियर में बेहतर सीपियाँ मिलेंगी, वह एक के बाद एक सभी चीज़ें चाहती थी जो उसने मछली बेचने वाले को चिल्लाते हुए सुनी थीं: "ए ला क्रेवेट, ए ला बोने क्रेवेट, जय दे ला राय टाउट एन वी, टाउट एन वी।" "मेर्लन्स ए फ़्रेरे, ए फ़्रेरे।" "आई अराइवल ले माकेरेउ, माकेरेउ फ़्रैस, माकेरेउ नोव्यू।" "वोइला ले माकेरेउ, मेसडैम्स, इल इस्ट ब्यू ले माकेरेउ।" "ए ला मौले फ्रैचे एट बोने, आ ला मौले!" मेरे बावजूद, चेतावनी: "आई अराइवल ले माकेरेउ" ने मुझे झकझोर कर रख दिया। लेकिन मुझे लगा कि यह चेतावनी हमारे ड्राइवर पर लागू नहीं हो सकती, इसलिए मैंने केवल

उसी नाम की मछली के बारे में सोचा, जिससे मुझे घृणा थी, और मेरी बेचैनी क्षणिक ही रही। "आह! मसल्स," अल्बर्टीन ने कहा, "काश मुझे कुछ मसल्स मिल जाएं।" "मेरी प्यारी! बालबेक में तो वे बहुत अच्छी थीं, यहाँ तो खाने लायक भी नहीं हैं; इसके अलावा, मैं तुमसे विनती करती हूँ, याद रखो कॉटार्ड ने तुम्हें मसल्स के बारे में क्या बताया था।" लेकिन मेरी यह टिप्पणी और भी अनुचित साबित हुई क्योंकि उसके बाद आने वाली सब्जी बेचने वाली महिला ने एक ऐसी बात बताई जिसे कॉटार्ड ने और भी सख्ती से मना किया था:
रोमन शैली में, रोमन शैली में!
हम इसे बेचते नहीं हैं, हम बस इसे सैर पर ले जाते हैं।
अल्बर्टीन ने अपनी सलाद पत्तियां कुर्बान करने की सहमति दे दी, इस शर्त पर कि मैं कुछ दिनों में उस महिला से उसके लिए सलाद पत्तियां खरीद लाऊं जो चिल्ला रही थी: "जे ऐ डे ला बेले एस्पर्ज डी अर्जेंटुइल, जे ऐ डे ला बेले एस्पर्ज।" एक रहस्यमयी आवाज, जिससे किसी अजनबी के उच्चारण की उम्मीद की जा सकती थी, ने संकेत दिया: "टोनो, टोनो!" हमें इस निराशा में डूबे रहना पड़ा कि हमें बैरल के अलावा और कुछ नहीं दिया जा रहा था, क्योंकि यह शब्द लगभग पूरी तरह से उस अपील में डूब गया था: "विट्री, विट्री-एर, कैरेक्स कैसस, वोइला ले विट्रियर, विट्री-एर," एक ग्रेगोरियन विभाजन जो मुझे किसी धार्मिक अनुष्ठान की याद कम दिलाता था, बल्कि उस कबाड़ विक्रेता की अपील की याद दिलाता था, जो अनजाने में प्रार्थना के बीच में ध्वनि के उन अचानक व्यवधानों में से एक को दोहराता था, जो चर्च के अनुष्ठान में काफी आम हैं: "प्रेसेप्टिस सैलुटारिबस मोनीटी एट डिवाइना इंस्टीट्यूशन फॉर्मैट ऑडेमस डिकेरे," पुजारी कहते हैं, 'डिकेरे' पर अचानक समाप्त करते हुए। अनादर किए बिना, जिस प्रकार मध्य युग के लोग चर्च की पवित्र भूमि पर नाटक और प्रहसन किया करते थे, उसी 'डाइसेरे' शब्द की याद इस कपड़े बेचने वाले को तब आती है जब वह अन्य शब्दों को धीरे-धीरे बोलने के बाद अंतिम अक्षर को सातवीं शताब्दी के महान पोप द्वारा निर्धारित उच्चारण के अनुरूप तीखेपन से उच्चारित करता है: "शिफॉन्स, फेरेल्स आ वेंड्रे" (यह सब धीरे-धीरे बोला जाता है, जैसे कि इसके बाद के दो अक्षर, जबकि अंतिम अक्षर 'डाइसेरे' की तुलना में अधिक तेज़ी से समाप्त होता है) "पेओक्स डी'ला-पिन्स।" "ला वैलेंस, ला बेले वैलेंस, ला फ्रैश ऑरेंज।" यहाँ तक कि साधारण लीक भी: "वोइला डी'बेओक्स पोइरोक्स," प्याज:

"हुइट सूस मोन ओइग्नन," मुझे ऐसा लगा जैसे यह लहरों की गूंज हो जिसमें, अगर अल्बर्टाइन को छोड़ दिया जाता, तो वह मर सकती थी, और इस प्रकार "सुवे मारी मैग्नो" की मिठास को अपना लेती। "वाह! दो गोल गाजरें हैं।" "ओह!" अल्बर्टीन ने कहा, "पत्तागोभी, गाजर, संतरे। खाने की सारी चीज़ें जो मैं चाहती हूँ। फ्रांस्वा को भेजो और कुछ खरीद लाओ। वो हमारे लिए मलाईदार गाजर की डिश बनाएगी। वैसे भी, इन सबको एक साथ खाना कितना अच्छा लगेगा। ये सारी आवाज़ें जो हम सुन रहे हैं, एक अच्छे खाने में बदल जाएँगी... ओह, कृपया, फ्रांस्वा से कहो कि हमें काले मक्खन वाली एक रे (एक प्रकार की सब्ज़ी) दे दे। ये बहुत स्वादिष्ट होती है!" "मेरी प्यारी बच्ची, ज़रूर कहूँगी, लेकिन इंतज़ार मत करो; अगर तुमने इंतज़ार किया, तो तुम सब्ज़ी की ठेलों पर रखी सारी चीज़ें माँगने लगोगी।" "ठीक है, मैं जा रही हूँ, लेकिन अब मैं रात के खाने में गली-मोहल्ले में सुनाई देने वाली आवाज़ों के अलावा कुछ और नहीं खाना चाहूँगी। कितना मज़ा आता है! और ये सोचकर कि हमें पूरे दो महीने इंतज़ार करना पड़ेगा ये सुनने के लिए: 'हरे और कोमल हरी बीन्स, हरी बीन्स, हरी बीन्स।' ये कितना सच है: कोमल हरी बीन्स; तुम्हें पता है मुझे ये बिल्कुल मुलायम पसंद हैं, सिरके की चटनी में डूबी हुई, तुम्हें लगेगा ही नहीं कि तुम खा रहे हो, ये मुँह में ओस की बूंदों की तरह पिघल जाती हैं। अरे बाप रे, क्रीम चीज़ के छोटे-छोटे टुकड़ों के साथ भी ऐसा ही है, कितना लंबा इंतज़ार करना पड़ता है: 'अच्छी चीज़, क्रीम, क्रीम, अच्छी चीज़।' और फॉन्टेनब्लू के पानी वाले अंगूर: 'मेरे पास अच्छे अंगूर हैं।'" और मैं ये सोचकर निराश हो गई कि पानी वाले अंगूरों का मौसम आने से पहले मुझे उसके साथ कितना समय बिताना पड़ेगा। "सुनो, मैंने कहा था कि मुझे सिर्फ वही चीज़ें चाहिए जिनके बारे में हमने सुना था, लेकिन बेशक मैं अपवाद भी करती हूँ। इसलिए यह बिलकुल भी असंभव नहीं है कि मैं रेबाटेट्स जाकर हम दोनों के लिए आइसक्रीम मंगवा लूँ। तुम कहोगी कि अभी आइसक्रीम का मौसम नहीं है, लेकिन मुझे तो आइसक्रीम चाहिए ही!" रेबाटेट्स जाने की इस योजना से मैं थोड़ी परेशान हो गई थी, और 'यह बिलकुल भी असंभव नहीं है' शब्दों ने मेरी नज़र में इस योजना को और भी निश्चित और संदिग्ध बना दिया था। उस दिन वर्दुरिन परिवार घर पर था, और जब से स्वान ने उन्हें बताया था कि रेबाटेट्स सबसे अच्छी जगह है, तब से वे वहीं से आइसक्रीम और पेस्ट्री मंगवाते थे। "मुझे आइसक्रीम से कोई आपत्ति नहीं है, मेरी प्यारी अल्बर्टीन, लेकिन मुझे तुम्हारे लिए

मंगवाने दो, मुझे खुद नहीं पता कि यह पोइरे-ब्लांच से होगी, या रेबाटेट्स से, या रिट्ज़ से, खैर मैं देख लूँगी।" "तो तुम बाहर जा रही हो?" उसने अविश्वास भरे लहजे में कहा। वह हमेशा कहती थी कि अगर मैं ज़्यादा बाहर जाऊँ तो उसे बहुत खुशी होगी, लेकिन अगर मेरी किसी बात से उसे यह लगे कि मैं घर में नहीं रहूँगा, तो उसके बेचैन हावभाव ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि मुझे हर दिन बाहर जाते देखकर उसे जो खुशी होती, शायद वह पूरी तरह सच्ची नहीं थी। "मैं शायद बाहर जाऊँ, शायद नहीं, तुम अच्छी तरह जानते हो कि मैं कभी पहले से योजना नहीं बनाता। वैसे भी, बर्फ तो कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे लोग सड़कों पर बेचते हों, तुम्हें एक क्यों चाहिए?" और फिर उसने ऐसे शब्दों में जवाब दिया जिससे मुझे पता चला कि बालबेक के समय से उसके भीतर कितनी बुद्धि और छिपी हुई रुचि विकसित हो गई थी, ऐसे शब्द जो, जैसा कि उसने दावा किया, पूरी तरह से मेरे प्रभाव और मेरे साथ लगातार रहने के कारण थे, ऐसे शब्द जो मुझे कभी नहीं बोलने चाहिए थे, मानो किसी अज्ञात शक्ति ने मुझे अपनी बातचीत को साहित्यिक रूपों से सजाने से मना कर दिया हो। शायद अल्बर्टीन का भविष्य मेरे जैसा नहीं था। मुझे इसका लगभग पूर्वाभास हो गया था जब मैंने उसे भाषण में इस तरह की 'लिखित' छवियों का उपयोग करने के लिए उत्सुक देखा, जो मुझे किसी अन्य, अधिक पवित्र उपयोग के लिए आरक्षित प्रतीत होती थीं, जिसके बारे में मैं अभी भी अनजान था। उसने मुझसे कहा (और मैं, सब कुछ के बावजूद, बहुत भावुक हो गया, क्योंकि मैंने मन ही मन सोचा: निश्चित रूप से मैं उसकी तरह नहीं बोलता, फिर भी, अगर मैं न होता तो वह इस तरह नहीं बोलती, वह मेरे गहरे प्रभाव में आ गई है, इसलिए वह मुझसे प्यार किए बिना नहीं रह सकती, वह मेरी रचना है): "मुझे इन स्वादिष्ट व्यंजनों के बारे में जो बात पसंद है, वह यह है कि जो चीज़ हमें किसी मधुर गीत की तरह सुनाई देती है, वह हमारी मेज पर आते ही अपना स्वरूप बदल लेती है और मेरे स्वाद को छू लेती है। जहाँ तक आइसक्रीम की बात है (क्योंकि मुझे उम्मीद है कि आप मेरे लिए ऐसी आइसक्रीम नहीं मंगवाएँगे जो उन पुराने ज़माने के सांचों में न बनी हो जिनमें हर तरह की वास्तुकला की आकृतियाँ बनी होती हैं), जब भी मैं कोई आइसक्रीम लेता हूँ, चाहे वह मंदिर हो, गिरजाघर हो, ओबिलिस्क हो, चट्टानें हों, वह एक सचित्र भूगोल की किताब की तरह होती है जिसे मैं पहले देखता हूँ और फिर उसके रसभरी या वेनिला रंग के स्मारकों को अपने गले में ठंडक में बदल देता हूँ।" मुझे

लगा कि यह कुछ ज्यादा ही अच्छे से व्यक्त किया गया था, लेकिन उसे लगा कि मुझे यह अच्छे से व्यक्त किया हुआ लगा, और वह बोलती रही, अपनी तुलना पूरी करने के बाद एक पल के लिए रुकी और अपनी उस खूबसूरत हंसी को हंसी जो मेरे लिए बहुत कष्टदायक थी क्योंकि वह बहुत ही मोहक थी। "ओह प्रिय, मुझे डर है कि रिट्ज़ में आपको बर्फ के वेंडोम स्तंभ मिलेंगे, चॉकलेट बर्फ या रास्पबेरी के, और फिर आपको उनमें से बहुत सारे चाहिए होंगे ताकि वे शीतलता की महिमा में किसी रास्ते के किनारे खड़े मन्नत के स्तंभों या तोरणों की तरह दिखें। वे रास्पबेरी के ओबिलिस्क भी बनाते हैं, जो मेरी प्यास के जलते रेगिस्तान में यहाँ-वहाँ उठेंगे, और मैं उनके गुलाबी ग्रेनाइट को चूर-चूर कर अपने गले में पिघला दूँगी, जिसे वे किसी भी नखलिस्तान से बेहतर ताज़गी देंगे" (और यहाँ ज़ोरदार हंसी फूट पड़ी, चाहे इतनी अच्छी तरह से बोलने की संतुष्टि से, या ऐसे घिसे-पिटे उपमाओं का उपयोग करने के लिए खुद पर उपहास से, या, अफसोस, अपने भीतर कुछ इतना अच्छा, इतना ठंडा महसूस करने के शारीरिक आनंद से, जो एक कामुक संतुष्टि के बराबर था)। "रिट्ज़ होटल में बर्फ के वे पहाड़ कभी-कभी मोंटे रोजा की याद दिलाते हैं, और वास्तव में, अगर यह नींबू रंग की बर्फ है, तो मुझे इसके विशाल आकार न होने, अनियमित, अचानक, एल्प्स्टिर के पहाड़ों की तरह होने पर कोई आपत्ति नहीं है। इसे बहुत सफेद नहीं होना चाहिए, बल्कि हल्का पीला होना चाहिए, जिसमें एल्प्स्टिर के पहाड़ों जैसी सुस्त, गंदी बर्फ की झलक हो। बर्फ का बहुत बड़ा होना ज़रूरी नहीं है, अगर आप चाहें तो आधी बर्फ ही काफी है, वे नींबू रंग की बर्फें अभी भी पहाड़ ही हैं, छोटे पैमाने पर सिमटी हुई, लेकिन हमारी कल्पना उनके आयामों को बहाल कर देती है, जैसे वे छोटे जापानी बौने पेड़, जो कि हम अच्छी तरह जानते हैं, अभी भी देवदार, ओक, मैनचिनेल हैं; इतना कि अगर मैं उनमें से कुछ को अपने कमरे में पानी की एक छोटी सी धारा के किनारे रख दूं तो मेरे पास एक विशाल जंगल होगा जो एक नदी तक फैला होगा, जिसमें बच्चे खो जाएंगे। उसी तरह, मेरी पीली नींबू रंग की बर्फ के नीचे, मैं स्पष्ट रूप से पोस्टिलियन, यात्रियों, पोस्ट चेज़ देख सकता हूँ जिन पर मेरी जीभ काम करना शुरू कर देती है और जमने वाले हिमस्खलन को नीचे लुढ़का देती है।" "उन्हें निगल जाऊंगी" (जिस क्रूर आनंद के साथ उसने यह कहा, उससे मेरी ईर्ष्या बढ़ गई); "ठीक वैसे ही," वह आगे बोली, "जैसे मैं अपने होठों को काम पर लगाती हूँ, एक-एक करके उन वेनिस के गिरजाघरों को, जो स्ट्रॉबेरी से बने

हैं, नष्ट करने के लिए, और जो कुछ बचता है उसे उपासकों पर गिरा देती हूँ। हाँ, वे सभी स्मारक अपनी पथरीली अवस्था से मेरे भीतर समा जाएँगे, जो पहले से ही उनकी पिघलती ठंडक से धड़क रहा है। लेकिन, आप जानते हैं, आइसक्रीम के बिना भी, खनिज झरनों के विज्ञापन इतने रोमांचक या प्यास जगाने वाले होते हैं। मोंटजोवेन में, मैडम विंटेउइल के यहाँ, आस-पास कोई अच्छा हलवाई नहीं था जो आइसक्रीम बनाता हो, लेकिन हम बगीचे में हर दिन एक अलग स्पार्कलिंग पानी पीकर फ्रांस का अपना ही दौरा करते थे, जैसे विची पानी, जिसे डालते ही गिलास के तल से एक सफेद बादल उठता है जो अगर आप उसे तुरंत न पिएं तो गायब हो जाता है।" लेकिन मोंटजोवेन के बारे में उसकी बातें सुनना बहुत कष्टदायक था, इसलिए मैंने उसकी बात बीच में ही काट दी। "मैं तुम्हें बोर कर रही हूँ, अलविदा, मेरे प्यारे लड़के।" बालबेक से कितना अलग! वहाँ तो मैं एल्स्टिर को भी चुनौती दे सकता था कि वह अल्बर्टीन में कविता का यह खजाना खोज पाता, जो उदाहरण के लिए सेलेस्टे अल्बारेट की कविताओं से कम विचित्र, कम व्यक्तिगत थी। अल्बर्टीन ने कभी उन बातों के बारे में नहीं सोचा होगा जो सेलेस्टे मुझसे कहा करती थीं, लेकिन प्यार, भले ही वह अपने अंत के करीब लगता हो, अधूरा ही रहता है। मुझे उसकी किताबों में छपी भूगोल की सचित्र पुस्तक ज़्यादा पसंद थी, जिसका सरल आकर्षण मुझे अल्बर्टीन से प्रेम करने का एक कारण और इस बात का प्रमाण लगता था कि मेरा उस पर प्रभाव था, कि वह मुझसे प्रेम करती थी।

जैसे ही अल्बर्टीन बाहर गई, मुझे एहसास हुआ कि यह निरंतर उपस्थिति, जो गति और जीवन की अतृप्त लालसा से भरी थी, मेरी नींद को अपनी हरकतों से भंग करती थी, दरवाजे खुले छोड़ने की आदत से मुझे लगातार ठंडक का एहसास कराती थी, और मुझे मजबूर करती थी —उसके साथ न जाने के बहाने खोजने के लिए, ताकि मैं बहुत अस्वस्थ न दिखूं, और साथ ही यह भी सुनिश्चित कर सकूं कि वह अकेली न रहे—हर दिन शेहेरज़ादे से भी अधिक चतुराई का प्रदर्शन करना। दुर्भाग्य से, यदि इसी तरह की चतुराई से फ़ारसी कहानीकार ने अपनी मृत्यु को टाल दिया, तो मैं अपनी मृत्यु को शीघ्र कर रही थी। इस प्रकार जीवन में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ होती हैं जो हमेशा प्रेम-भय और स्वास्थ्य की नाजुक स्थिति के कारण नहीं बनतीं, जो हमें एक युवा और सक्रिय व्यक्ति के जीवन में भागीदार होने की अनुमति नहीं देतीं; ऐसी परिस्थितियाँ जिनमें फिर भी यह समस्या उत्पन्न होती है कि उस व्यक्ति के साथ जीवन साझा

करना जारी रखा जाए या अतीत के अलग अस्तित्व में लौट जाया जाए; हमें दो प्रकार के विश्राम में से किस एक को अपना बलिदान देना चाहिए (दैनिक तनाव को जारी रखकर, या विरह की पीड़ाओं में लौटकर) - मस्तिष्क का विश्राम या हृदय का विश्राम?
बहरहाल, मुझे बहुत खुशी थी कि एंड्री अल्बर्टीन के साथ ट्रोकाडेरो जा रही थी, क्योंकि हाल ही में हुई कुछ मामूली घटनाओं के कारण, हालांकि मुझे ड्राइवर की ईमानदारी पर अभी भी उतना ही भरोसा था, लेकिन उसकी सतर्कता, या कम से कम उसकी सतर्कता की दूरदर्शिता, पहले जैसी नहीं रह गई थी। कुछ समय पहले ही मैंने अल्बर्टीन को अकेले ड्राइवर के भरोसे वर्साय भेजा था, और उसने मुझे बताया था कि उसने दोपहर का भोजन रिज़र्वॉयर में किया था; चूंकि ड्राइवर ने वेटेल रेस्टोरेंट का ज़िक्र किया था, जिस दिन मैंने इस विरोधाभास को देखा, मैंने बहाना बनाकर नीचे जाकर उससे बात की (वह वही आदमी था, जिससे हमारी मुलाकात बालबेक में हुई थी) जब अल्बर्टीन कपड़े पहन रही थी। "आपने मुझे बताया था कि आपने दोपहर का भोजन वेटेल में किया था। श्रीमती अल्बर्टीन रिज़र्वॉयर का ज़िक्र कर रही हैं। इसका क्या मतलब है?" ड्राइवर ने जवाब दिया: "ओह, मैंने कहा था कि मैंने वेटेल में दोपहर का भोजन कर लिया था, लेकिन मुझे नहीं पता कि मैडमोजेल ने अपना भोजन कहाँ किया। वर्साय पहुँचते ही वह मुझे छोड़कर घोड़े की गाड़ी में बैठ गईं, जिसे वह तब पसंद करती हैं जब समय की कोई पाबंदी न हो।" यह सोचकर ही मुझे गुस्सा आ रहा था कि वह अकेली थीं; फिर भी, वह केवल दोपहर के भोजन के दौरान ही अकेली थीं। "हो सकता है," मैंने धीरे से कहा (क्योंकि मैं अल्बर्टीन पर नज़र रखने का दिखावा नहीं करना चाहता था, जो मेरे लिए शर्मनाक होता, और उससे भी ज़्यादा, क्योंकि इससे यह पता चलता कि वह मुझसे अपनी गतिविधियाँ छिपा रही थीं), "आपने अपना दोपहर का भोजन, मैं यह नहीं कह रहा कि उनकी मेज़ पर, लेकिन उसी रेस्टोरेंट में किया होगा?" "लेकिन उन्होंने मुझे बस इतना बताया था कि मुझे शाम छह बजे प्लेस डी'आर्म्स पर मिलना है। मुझे दोपहर के भोजन के बाद उन्हें बुलाने का कोई आदेश नहीं था।" "आह!" मैंने अपनी निराशा छिपाने की कोशिश करते हुए कहा। और मैं वापस ऊपर चला गया। और इस तरह अल्बर्टीन लगातार सात घंटे से भी अधिक समय तक अकेली रही, अपने हाल पर छोड़ दी गई। मैं खुद को यह यकीन दिला सकता था, हालांकि यह सच है, कि टैक्सी सिर्फ ड्राइवर की निगरानी से बचने का एक जरिया नहीं थी।

शहर में, अल्बर्टीन टैक्सी में सफर करना पसंद करती थी, क्योंकि उसका कहना था कि टैक्सी से नज़ारा बेहतर दिखता है और हवा भी ज़्यादा सुहावनी होती है। फिर भी, उसने सात घंटे ऐसे बिताए थे जिनके बारे में मुझे कभी कुछ पता नहीं चलेगा। और मैं यह सोचने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था कि उसने उन घंटों का इस्तेमाल कैसे किया होगा। मुझे लगा कि ड्राइवर बेहद लापरवाह था, लेकिन अब मुझे उस पर पूरा भरोसा था। क्योंकि अगर वह ज़रा भी अल्बर्टीन के साथ मिला हुआ होता, तो वह कभी यह स्वीकार नहीं करता कि उसने उसे सुबह ग्यारह बजे से शाम छह बजे तक बिना किसी सुरक्षा के छोड़ दिया था। ड्राइवर के कबूलनामे का सिर्फ एक ही दूसरा स्पष्टीकरण हो सकता था, और वह भी बेतुका। बात यह थी कि अल्बर्टीन और उसके बीच किसी झगड़े के चलते उसने मुझे एक छोटी सी बात बताकर मेरी प्रेमिका को यह जताने की कोशिश की कि वह चुप रहने वाला आदमी नहीं है, और अगर इस पहली हल्की चेतावनी के बाद भी वह उसकी बात नहीं मानती, तो वह कानून अपने हाथ में ले लेगा। लेकिन यह स्पष्टीकरण बेतुका था; मुझे पहले तो यह मानना पड़ता कि उसके और अल्बर्टीन के बीच कोई झगड़ा हुआ ही नहीं था, और फिर इस अच्छे दिखने वाले मोटर चालक को, जो हमेशा इतना मिलनसार और मददगार दिखता था, एक माहिर ब्लैकमेलर कहना पड़ता। संयोग से, दो दिन बाद ही मुझे पता चला कि वह अल्बर्टीन पर मेरी शंकाओं से कहीं अधिक गहरी और दूरदर्शी निगरानी रखने में सक्षम था। क्योंकि, उन्हें एक तरफ ले जाकर उनसे वर्साय के बारे में उनकी बताई बातों पर चर्चा करने के बाद, मैंने उनसे बेफिक्री भरे, दोस्ताना लहजे में कहा: "वर्साय की वो यात्रा जिसके बारे में आपने मुझे उस दिन बताया था, बिल्कुल वैसी ही थी जैसी होनी चाहिए थी, आपने हमेशा की तरह बहुत अच्छा व्यवहार किया। लेकिन, अगर मैं आपको थोड़ा सा संकेत दूं, तो अब मुझ पर बहुत ज़िम्मेदारी है क्योंकि श्रीमती बोंटेम्प्स ने अपनी भतीजी को मेरे हवाले कर दिया है, मुझे दुर्घटनाओं का बहुत डर है, मुझे खुद पर बहुत पछतावा है कि मैं उनके साथ नहीं गया, इसलिए मैं चाहता हूं कि आप ही श्रीमती अल्बर्टीन को हर जगह ले जाएं, आप जो इतने सुरक्षित, इतने कुशल हैं, जिनके साथ कभी कोई दुर्घटना नहीं हो सकती। तब मुझे किसी बात का डर नहीं रहेगा।" उस आकर्षक, धर्मात्मा दिखने वाले ड्राइवर ने हल्की सी मुस्कान दी, उसका हाथ स्टीयरिंग व्हील पर बने पवित्र क्रॉस के निशान पर टिका हुआ था। फिर उन्होंने ये शब्द कहे (जिससे मेरे दिल से सारी

चिंता दूर हो गई और उसकी जगह तुरंत खुशी भर गई) और मेरा मन किया कि मैं अपनी बाहें उनके गले में डाल दूं: "डरो मत," उन्होंने मुझसे कहा। "उसका कुछ नहीं बिगड़ सकता, क्योंकि जब मेरा पहिया उसे रास्ता नहीं दिखाता, तो मेरी नज़र हर जगह उसका पीछा करती है। वर्साय में, मैं चुपचाप उसके साथ गया और उसके साथ शहर घूमा, जैसा कि आप कह सकते हैं। जलाशयों से वह महल गई, महल से ट्रायनॉन गई, और मैं हर समय उसके पीछे-पीछे चलता रहा, बिना उसे देखे, और आश्चर्य की बात यह है कि उसने मुझे कभी नहीं देखा। ओह, अगर उसने मुझे देख लिया होता, तो बहुत बड़ी मुसीबत हो जाती। यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि मेरे पास पूरा दिन खाली था, इसलिए मैंने महल का दौरा किया। खासकर इसलिए भी क्योंकि मैडमोजेल ने निश्चित रूप से देखा होगा कि मैंने खुद भी थोड़ा पढ़ा है और उन सभी पुरानी अनोखी चीजों में रुचि रखता हूँ" (यह सच था, वास्तव में मुझे आश्चर्य होता अगर मुझे पता चलता कि वह मोरेल का दोस्त था, क्योंकि उसका स्वाद वायलिन वादक से कहीं अधिक परिष्कृत था)। "खैर, उसने मुझे नहीं देखा।" “ज़रूर वो अपनी कुछ सहेलियों से मिली होगी, क्योंकि वो वर्साय में बहुत सी महिलाओं को जानती है।” “नहीं, वो तो हर समय अकेली ही थी।” “तो फिर लोग उसे घूरते ही होंगे, इतनी खूबसूरत लड़की को, अकेले में।” “हाँ, ज़रूर घूरते होंगे, पर उसे पता ही नहीं चला; वो तो हर समय अपनी गाइडबुक में आँखें गड़ाए या तस्वीरों को निहारती रहती थी।” मुझे ड्राइवर की कहानी और भी सटीक लगी क्योंकि अल्बर्टीन ने मुझे अपनी यात्रा के दिन सचमुच एक कार्ड भेजा था जिस पर शैतो और ट्रायनॉन की तस्वीरें थीं। उस विनम्र ड्राइवर ने जिस सावधानी से उसके हर कदम का ध्यान रखा था, उसने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैं कैसे मान लूँ कि दो दिन पहले दिए गए उसके बयान में ये सुधार—इतनी बढ़ा-चढ़ाकर कही गई बात—इस वजह से था कि उन दो दिनों में अल्बर्टीन, इस बात से घबराकर कि ड्राइवर ने मुझसे बात कर ली थी, हार मान चुकी थी और उससे सुलह कर ली थी। यह शक तो मेरे मन में कभी आया ही नहीं। इसमें कोई शक नहीं कि ड्राइवर की कहानी के इस संस्करण ने, अल्बर्टीन द्वारा मुझे धोखा दिए जाने के डर को पूरी तरह से दूर कर दिया, और स्वाभाविक रूप से मेरी प्रेमिका के प्रति मेरा रवैया ठंडा कर दिया और वर्साय में बिताए उसके दिन में मेरी दिलचस्पी कम हो गई। हालांकि, मुझे लगता है कि ड्राइवर के स्पष्टीकरण, जिन्होंने अल्बर्टीन को दोषमुक्त करके उसे पहले से भी अधिक

उबाऊ बना दिया, शायद मुझे इतनी जल्दी शांत करने के लिए पर्याप्त नहीं होते। मेरी प्रेमिका के माथे पर पिछले कुछ दिनों से जो दो छोटे दाने थे, उन्होंने शायद मेरे दिल की भावनाओं को बदलने में और भी अधिक प्रभाव डाला। अंततः, गिलबर्ट की नौकरानी, जिससे मेरी अचानक मुलाकात हुई, द्वारा मुझे दिए गए एक अजीब से भरोसे ने मेरी भावनाओं को उससे और भी दूर कर दिया (इतना दूर कि मुझे उसके अस्तित्व का एहसास तभी होता था जब मैं उसे देखता था)। मुझे पता चला कि जब मैं रोज़ गिलबर्ट से मिलने जाता था, तो वह एक युवक से प्यार करती थी, जिससे वह मुझसे कहीं ज़्यादा मिलती थी। मुझे उस समय कुछ पल के लिए इसका आभास हुआ था, वास्तव में मैंने इसी नौकरानी से इस बारे में पूछा था। लेकिन, चूंकि वह जानती थी कि मैं गिल्बर्ट से प्यार करता हूँ, उसने इनकार कर दिया, कसम खाकर कहा कि मैडम स्वान ने उस युवक को कभी नहीं देखा था। अब, हालांकि, यह जानते हुए कि मेरा प्यार बहुत पहले ही खत्म हो चुका था, कि पिछले कई सालों से मैंने उसके सभी पत्रों का जवाब नहीं दिया था—और शायद इसलिए भी कि वह अब गिल्बर्ट की सेवा में नहीं थी—उसने अपनी मर्जी से मुझे उस प्रेम प्रसंग का पूरा ब्योरा दिया जिसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था। यह उसे बिल्कुल स्वाभाविक लगा। मुझे लगा, उस समय उसकी कसमों को याद करते हुए, कि उसे पता नहीं था कि क्या चल रहा था। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं था, मैडम स्वान के आदेश पर, वह खुद ही जाकर उस युवक को तब सूचना देती थी जब मेरा प्रेमी अकेला होता था। यानी मेरा प्रेमी... लेकिन मैंने खुद से पूछा कि क्या उन दिनों का मेरा प्यार उतना ही मर चुका था जितना मैं सोच रहा था, क्योंकि यह कहानी मुझे बहुत दुख पहुँचा रही थी। चूंकि मैं यह नहीं मानता कि ईर्ष्या किसी मृत प्रेम को पुनर्जीवित कर सकती है, इसलिए मैंने सोचा कि मेरी पीड़ादायक अनुभूति का कुछ अंश मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुंचने के कारण था। कई ऐसे लोग जिन्हें मैं नापसंद करता था और जिन्होंने उस समय और कुछ समय बाद भी (हालांकि उनका रवैया अब बदल चुका है) मेरे प्रति तिरस्कारपूर्ण रवैया अपनाया था, वे अच्छी तरह जानते थे कि जब मैं गिल्बर्ट से प्रेम करता था, तब मैं उसका मोहरा था। और इससे मुझे यह प्रश्न पूछने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या गिल्बर्ट के प्रति मेरे प्रेम में स्वार्थ का भी अंश था, क्योंकि अब यह जानकर मुझे बहुत पीड़ा होती है कि स्नेहपूर्ण मिलन के वे सभी क्षण, जिन्होंने मुझे इतना सुख दिया था, मेरी प्रेमिका और उन लोगों द्वारा जानबूझकर किया गया छल मात्र थे

जिन्हें मैं नापसंद करता था। चाहे प्रेम हो या स्वार्थ, गिल्बर्ट मेरे दिल में लगभग मर चुकी थी, लेकिन पूरी तरह नहीं, और इस झुंझलाहट का परिणाम यह हुआ कि मैं अल्बर्टीन के बारे में अत्यधिक चिंता करने से बचता रहा, जिसका मेरे दिल में बहुत छोटा सा स्थान था। फिर भी, (इतने लंबे अंतराल के बाद) उसके और वर्साय की उसकी यात्रा पर लौटते हुए, वर्साय के पोस्टकार्ड (क्या यह संभव है कि किसी का दिल दो एक साथ चलने वाली और आपस में जुड़ी ईर्ष्याओं के फंदे में इस तरह फँस जाए, जिनमें से प्रत्येक अलग-अलग व्यक्ति से प्रेरित हो?) मुझे थोड़ा अप्रिय सा एहसास दिलाते थे, जब भी मैं अपने कागज़ात समेटते समय उन पर नज़र डालता था। और मैंने सोचा कि अगर ड्राइवर इतना नेक इंसान न होता, तो अल्बर्टीन के 'कार्डों' के साथ उसकी दूसरी कहानी का कोई खास तालमेल नहीं होता, क्योंकि वर्साय से लोग सबसे पहले आपको क्या भेजते हैं, सिवाय शैतो और ट्रायनॉन के, जब तक कि यह न कहा जाए कि कार्ड किसी परिष्कृत रुचि वाले व्यक्ति द्वारा चुना गया हो जो किसी विशेष मूर्ति की पूजा करता हो, या किसी मूर्ख द्वारा जिसने वर्साय के 'दृश्य' के रूप में घोड़े की ट्राम का स्टेशन या माल डिपो चुन लिया हो। फिर भी, किसी को मूर्ख कहना गलत होगा, क्योंकि इस तरह के पोस्टकार्ड हमेशा से ही वर्साय से आने के कारण, ऐसे ही किसी व्यक्ति द्वारा यूं ही नहीं खरीदे जाते थे। पूरे दो साल तक बुद्धिमान लोग, कलाकार, सिएना, वेनिस, ग्रेनाडा को उबाऊ समझते थे और सबसे साधारण बस या हर रेलगाड़ी के बारे में कहते थे: "यहीं तो सच्ची सुंदरता है।" फिर यह चलन भी बाकी चलन की तरह खत्म हो गया। वास्तव में, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि लोग अतीत की महान धरोहरों को नष्ट करने के घिनौने कृत्य पर वापस नहीं लौट आए। खैर, प्रथम श्रेणी की रेलगाड़ी को अब वेनिस के सेंट मार्क चर्च से कहीं अधिक सुंदर नहीं माना जाता था। लोग कहते रहे: "यहाँ तो असली जीवन है, अतीत की ओर लौटना कृत्रिम है," लेकिन बिना किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुंचे। ड्राइवर पर अपना भरोसा बनाए रखने के लिए, ताकि अल्बर्टीन उसे जासूस समझकर मना न कर दे, मैंने उसे एंड्री के बिना बाहर जाने की इजाज़त नहीं दी, जबकि कुछ समय से मुझे ड्राइवर ही काफी लग रहा था। मैंने उसे तब (जो मैं अब कभी नहीं करूँगा) ड्राइवर के साथ तीन दिन अकेले रहने और लगभग बालबेक तक जाने की भी इजाज़त दी थी, क्योंकि खुली कार में तेज़ गति से यात्रा करने की उसकी इतनी तीव्र इच्छा थी। तीन दिन तक मेरा मन बिल्कुल शांत रहा, हालाँकि उसने मुझे

जो डाक कार्डों की बौछार की थी, वे ब्रेटन डाक प्रणाली की दयनीय स्थिति के कारण मुझ तक नहीं पहुँचे (गर्मियों में तो ठीक, लेकिन सर्दियों में निश्चित रूप से अव्यवस्थित)। लेकिन एक सप्ताह बाद अल्बर्टीन और उसके ड्राइवर की वापसी हुई, वे इतने स्वस्थ और चुस्त-दुरुस्त थे कि वापसी की सुबह ही उन्होंने मानो कुछ हुआ ही न हो, अपने दैनिक सैर-सपाटे फिर से शुरू कर दिए। मुझे खुशी हुई कि अल्बर्टीन आज दोपहर ट्रोकाडेरो में इस 'विशेष' मैटिनी शो के लिए जा रही थी, लेकिन उससे भी अधिक तसल्ली हुई कि वहाँ एंड्री के रूप में उसका साथी भी होगा।

इन विचारों को दरकिनार करते हुए, अब जब अल्बर्टीन बाहर चली गई थी, मैं खिड़की पर जाकर कुछ देर के लिए खड़ा हो गया। पहले तो सन्नाटा छाया हुआ था, जिसके बीच में ट्राइप बेचने वाले की सीटी और ट्रामकार का हॉर्न हवा में अलग-अलग सुरों में गूंज रहे थे, मानो कोई अंधा पियानो-ट्यूनर हो। फिर धीरे-धीरे आपस में गुंथे हुए स्वर स्पष्ट होने लगे, और उनके साथ कुछ और स्वर भी जुड़ गए। एक नई सीटी भी सुनाई दी, एक ऐसे विक्रेता की पुकार जिसके सामान के बारे में मुझे आज तक पता नहीं चला, एक ऐसी सीटी जो बिल्कुल ट्राम की चीख जैसी थी, और क्योंकि वह अपनी गति के कारण सुनाई देने से ओझल नहीं हो रही थी, तो मन में एक ऐसी गाड़ी का ख्याल आया, जो गतिहीन हो गई हो, या खराब होकर रुक गई हो, और मरते हुए जानवर की तरह थोड़ी-थोड़ी देर में चीख रही हो। और मुझे लगा कि अगर मुझे कभी इस कुलीन इलाके को छोड़ना पड़े—जब तक कि मैं किसी ऐसे इलाके में न जाऊं जो पूरी तरह से आम लोगों का हो—तो मध्य पेरिस की सड़कें और चौड़ी गलियाँ (जहाँ फल, मछली और अन्य व्यापार बड़े-बड़े गोदामों में स्थिर थे, जिससे सड़क विक्रेताओं की आवाजें बेमानी हो जाती थीं, जो वैसे भी अपनी आवाज नहीं सुना पाते थे) मुझे बहुत नीरस, बिल्कुल निर्जन, खाली, छोटे-मोटे व्यापारों और घूमते-फिरते खाने-पीने की चीजों से रहित, उस संगीत से वंचित लगेंगी जो हर सुबह मुझे मंत्रमुग्ध करने के लिए लौटता था। फुटपाथ पर एक महिला गुजरी, जिसे फैशन की कोई समझ नहीं थी (या फिर वह किसी भद्दे फैशन का पालन कर रही थी), उसने बकरे की खाल का एक बहुत ही चमकीला ओवरकोट पहना हुआ था; लेकिन नहीं, वह एक महिला नहीं थी, वह एक ड्राइवर था जो अपने टट्टू की खाल के ओवरकोट में लिपटा हुआ पैदल अपने गैरेज की ओर जा रहा था। बड़े होटलों से निकलकर, उनके रंग-बिरंगे पंखों

वाले दूत, सुबह की ट्रेनों से आने वाले यात्रियों से मिलने के लिए, हैंडल पर झुके हुए, टर्मिनलों की ओर तेज़ी से बढ़ रहे थे। वायलिन की धड़कन कभी किसी मोटर-कार के गुजरने के कारण थी, तो कभी मेरे द्वारा इलेक्ट्रिक केतली में पर्याप्त पानी न डालने के कारण। सिम्फनी के बीच में एक पुराने ज़माने की धुन गूंजी; मिठाई बेचने वाली, जो आम तौर पर अपने गीत के साथ खड़खड़ाहट करती थी, की जगह खिलौने बेचने वाले ने ले ली, जिसकी बांसुरी से एक उछलती हुई कठपुतली बंधी होती थी जिसे वह चारों दिशाओं में उछालता था। वह इसी तरह की कठपुतलियाँ बेचने के लिए परेड करता था और ग्रेगरी द ग्रेट के अनुष्ठानिक उद्घोषणा, पैलेस्ट्रिना की सुधारित उद्घोषणा या आधुनिक संगीतकारों की गीतात्मक उद्घोषणा की परवाह किए बिना, शुद्ध धुन के एक देर से अनुयायी की तरह, अपनी पूरी आवाज़ में गाता था: "Allons les papas, allons les mamans, contentez vos petits enfants, c'est moi qui les fais, c'est moi qui les vends, et c'est moi qui boulotte l'argent. Tra la la la. Tra la la la laire, tra la la la la la la. Allons les petits!" कुछ इतालवी लड़के, जो फेल्ट बेरेट पहने हुए थे, इस जीवंत गीत से प्रतिस्पर्धा करने का कोई प्रयास नहीं करते थे, और बिना कुछ कहे ही वे अपनी छोटी-छोटी मूर्तियाँ भेंट कर देते थे। हालाँकि, जल्द ही, एक युवा फ़िफ़र ने खिलौना व्यापारी को आगे बढ़ने और अधिक अश्रव्य रूप से जप करने के लिए मजबूर किया, हालांकि तेज़ समय में: "एलोंस लेस पापा, एलन्स लेस मैमन्स।" यह युवा फ़िफ़र, क्या वह उन ड्रैगूनों में से एक था जिसे मैं सुबह डोन्सिएरेस में सुनता था? नहीं, इसके बाद जो हुआ वह था: "वोइला ले रेपेरेटर डे फ़ाइनेंस एट डी पोर्सिलेन। जे रेपेरे ले वेरे, ले मार्ब्रे, ले क्रिस्टल, ल'ओएस, ल'इवोइरे एट ओब्जेक्ट्स डी'एंटीकिट। वोइला ले रिपेरेटर।" एक कसाई की दुकान में, बाईं ओर धूप की एक किरण और दाईं ओर एक हुक से लटके हुए पूरे बैल के बीच, एक लंबा और पतला सहायक, सुनहरे बालों वाला और नीले कॉलर के ऊपर से झांकता हुआ गला लिए, बिजली की गति और धार्मिक निष्ठा का प्रदर्शन करते हुए, एक तरफ गोमांस के सबसे उत्तम टुकड़े और दूसरी तरफ सबसे मोटे कूल्हे रख रहा था। वह उन्हें एक क्रॉस से सजे चमकदार तराजू पर रख रहा था, जिससे कई सुंदर जंजीरें लटक रही थीं। हालांकि बाद में उसने खिड़की में गुर्दे, स्टेक और पसलियों को सजाने के अलावा कुछ नहीं किया, फिर भी वह वास्तव में एक सुंदर देवदूत की तरह लग रहा था, जो अंतिम न्याय के दिन,

अच्छे और बुरे को उनके गुणों के अनुसार अलग करने और आत्माओं का वजन करने की तैयारी करेगा। और एक बार फिर बांसुरी की धीमी, रेंगती हुई धुन हवा में गूंज उठी, जो अब उस विनाश की सूचना नहीं थी जिसका डर फ्रांस्वा को घुड़सवार सेना की किसी टुकड़ी के गुजरने पर सताता था, बल्कि एक 'पुरातत्वविद' द्वारा किए जाने वाले 'मरम्मत' के वादे की सूचना थी, चाहे वह सीधा-सादा हो या धूर्त, जो दोनों ही मामलों में, विशेषज्ञता हासिल करने के बजाय, अपनी कला को विभिन्न सामग्रियों पर आजमाता था। युवा रोटी ढोने वाली लड़कियाँ दोपहर के भोजन के लिए मंगाई गई लंबी रोटियों को अपनी टोकरियों में भरने के लिए जल्दी कर रही थीं, जबकि दूध बेचने वाली लड़कियाँ दूध की बोतलों को अपने कंधों पर टांग रही थीं। इन युवतियों को देखकर मेरी आँखों में जो लालसा का भाव था, क्या उसे उचित मानना चाहिए? क्या यह अलग नहीं होता अगर मैं कुछ पलों के लिए उनमें से किसी एक को करीब से देख पाता, जिन्हें मैं अपनी खिड़की की ऊँचाई से केवल उनकी दुकान के अंदर या चलते-फिरते ही देख पाता था? अपने एकांतवास से मुझे जो हानि हुई, उसका अनुमान लगाने के लिए, यानी उस दिन मेरे लिए जो धन-संपत्ति छिपी थी, उसका आकलन करने के लिए, मुझे उस जीवंत चित्र के लंबे विस्तार में किसी लड़की को अपने कपड़े या दूध ले जाते हुए रोकना पड़ता, उसे एक क्षण के लिए, किसी गतिशील सजावट योजना से निकली परछाई की तरह, मंच के किनारे से मंच तक, मेरे शयनकक्ष के दरवाजे के सामने से गुज़रने देना पड़ता, और उसे अपनी नज़रों के नीचे रखना पड़ता, उससे कुछ जानकारी प्राप्त किए बिना नहीं, जिससे मैं उसे किसी दिन फिर से ढूंढ सकूं, ठीक वैसे ही जैसे पक्षी विज्ञानी या मत्स्य विज्ञानी पक्षियों या मछलियों के पैरों या पेट में उत्कीर्ण अंगूठी बांधते हैं, जिन्हें वे उन पक्षियों या मछलियों के पैरों या पेट में छोड़ने से पहले बांधते हैं जिनके प्रवास का वे पता लगाने के लिए उत्सुक होते हैं।

और इसलिए मैंने फ्रांस्वा से विनती की, क्योंकि मेरा एक संदेश था जिसे मैं पहुँचाना चाहता था, कि यदि उनमें से कोई भी आए, तो वह मेरे कमरे में उन लड़कियों में से किसी एक को भेजने की कृपा करे जो हमेशा गंदे कपड़े ले जाने या साफ कपड़े वापस लाने, या रोटी या दूध की बोतलें लाने आती थीं, और जिन्हें वह स्वयं भी अक्सर कामों के लिए भेजा करती थी। ऐसा करके मैं एल्स्टिर की तरह था, जो वसंत ऋतु में कुछ दिनों के लिए अपने स्टूडियो में बंद रहने

के लिए बाध्य था, जब उसे यह जानकर कि जंगल वायलेट से भरे हुए हैं, उन्हें निहारने की तीव्र इच्छा होती थी, तो वह अपने कुली की पत्नी को उसके लिए एक गुच्छा लाने के लिए भेजा करता था; तब यह वह मेज नहीं थी जिस पर उसने सब्जी के छोटे मॉडल को रखा था, बल्कि झाड़ियों का वह पूरा कालीन था जहाँ उसने पिछले वर्षों में हजारों की संख्या में सर्पनुमा तने देखे थे, जो अपनी नीली चोंचों के भार से झुके हुए थे, जिसे एल्स्टिर अपनी आँखों के सामने एक काल्पनिक क्षेत्र की तरह देखता था, जो उसके स्टूडियो में मीठे, परिचित फूल की निर्मल सुगंध से परिभाषित होता था।

रविवार को कपड़े धोने वाली लड़की के आने की ज़रा भी उम्मीद नहीं थी। जहाँ तक रोटी लाने वाली लड़की की बात है, बदकिस्मती से उसने घंटी तब बजाई जब फ्रांस्वा घर पर नहीं थी, रोटी के रोल टोकरी में ही छोड़कर चली गई। फल लाने वाली लड़की भी बहुत देर बाद आई। एक बार मैं डेयरी से पनीर मंगवाने गया था, और वहाँ मौजूद कई युवा सहायिकाओं के बीच मेरी नज़र एक लड़की पर पड़ी, जो बेहद गोरी थी, कद में लंबी थी, हालाँकि अभी बच्ची ही थी। वह बाकी लड़कियों के बीच सपने देखती हुई लग रही थी, और उसका अंदाज़ भी बहुत घमंडी था। मैंने उसे दूर से ही देखा था, और वो भी इतने कम समय के लिए कि मैं उसके रूप-रंग का वर्णन नहीं कर सका, बस इतना कह सकता हूँ कि वह बहुत तेज़ी से बड़ी हुई होगी और उसके सिर पर जो रोएँ थे, वे किसी ग्लेशियर पर बर्फ की समानांतर परतों की अलग-अलग रेखाओं की मूर्तिकार की बनाई आकृति की तरह लग रहे थे। पतले चेहरे पर उभरी हुई नाक (जो बच्चों में दुर्लभ होती है) के अलावा मैं बस इतना ही देख पाया था, जो नन्हे गिद्धों की चोंच की याद दिलाता था। इसके अलावा, उसके चारों ओर उसके साथियों का जमावड़ा ही एकमात्र ऐसी चीज नहीं थी जिसने मुझे उसे स्पष्ट रूप से देखने से रोका था, बल्कि मुझे यह भी अनिश्चितता थी कि पहली नजर में और बाद में मेरे मन में जो भावनाएं उत्पन्न होंगी, वे आहत स्वाभिमान की होंगी, व्यंग्य की होंगी या फिर उस तिरस्कार की होंगी जिसे वह बाद में अपने मित्रों के सामने व्यक्त करेगी। उसके बारे में मैंने जो क्षण भर में ये अलग-अलग धारणाएं बना ली थीं, उन्होंने उसके चारों ओर उस अशांत वातावरण को सघन कर दिया जिसमें वह गायब हो गई, मानो गरजते बादलों में कोई देवी गायब हो गई हो। क्योंकि नैतिक अनिश्चितता किसी भी दृष्टि दोष से कहीं अधिक बड़ी बाधा है, जो किसी सटीक दृश्य बोध में रुकावट डालती है।

इस दुबली-पतली युवती में, जो ज़रूरत से ज़्यादा ध्यान आकर्षित करती थी, उसकी सुंदरता की अधिकता, जिसे शायद कोई और उसकी मोहकता कहता, ठीक वही थी जो मुझे उससे दूर करने के लिए बनी थी, लेकिन फिर भी इसका असर यह हुआ कि मैं दूसरी दूधवाली लड़कियों के बारे में कुछ भी देख नहीं पाया, बल्कि उन्हें याद भी नहीं रख पाया। इस लड़की की टेढ़ी नाक और उसकी निगाहें—कितनी भद्दी थी!—चिंतनशील, व्यक्तिगत, और निर्णय लेने जैसी भावपूर्ण, उन सबको हमेशा के लिए अंधेरे में डुबो देती थीं, जैसे बिजली की एक सफेद लकीर चारों ओर के नज़ारे को काला कर देती है। और इसलिए, डेयरी में पनीर मंगवाने के लिए मेरी पुकार के बारे में, मुझे याद रहा (अगर हम किसी चेहरे को इतनी लापरवाही से देखने के संदर्भ में 'याद रखना' कह सकते हैं कि हम उसके चेहरे की शून्यता को दस अलग-अलग नाक से जोड़कर देखते हैं), मुझे केवल यही लड़की याद रही जिसने मुझे आकर्षित नहीं किया था। इतना प्रेम उत्पन्न करने के लिए काफी है। फिर भी, मैं उस बेहद खूबसूरत लड़की को भूल चुका होता और उसे दोबारा देखने की इच्छा भी न करता, अगर फ्रांस्वा ने मुझे यह न बताया होता कि बच्ची होते हुए भी वह पूरी तरह समझदार है और जल्द ही अपने मालिक को छोड़कर चली जाएगी, क्योंकि वह बहुत तेज़ी से काम कर रही थी और पड़ोसियों से उसका कर्ज़ था। कहते हैं कि सुंदरता सुख की गारंटी होती है। इसके विपरीत, सुख की संभावना सुंदरता की शुरुआत हो सकती है।

मैंने माँ का पत्र पढ़ना शुरू किया। मैडम डी सेविग्ने के उद्धरणों के नीचे लिखा था: "अगर कॉम्ब्रे में मेरे विचार पूरी तरह से काले नहीं हैं, तो कम से कम गहरे भूरे तो हैं ही; मैं हर पल तुम्हारे बारे में सोचती हूँ; मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है; तुम्हारा स्वास्थ्य, तुम्हारे काम, तुम्हारी अनुपस्थिति, ये सब मेरे जीवन में किस तरह का दुख लाते हैं?" मुझे लगा कि मेरी माँ अल्बर्टीन के घर में लंबे समय तक रहने से नाराज़ थीं, और मेरी शादी की मंशा, जो मैंने अभी तक अपनी प्रेमिका को नहीं बताई थी, पक्की हो गई थी। उन्होंने अपनी नाराज़गी सीधे तौर पर ज़ाहिर नहीं की क्योंकि उन्हें डर था कि मैं उनके पत्र इधर-उधर छोड़ दूँगी। फिर भी, भले ही उनके पत्र अस्पष्ट थे, उन्होंने मुझे हर पत्र के बाद तुरंत यह न बताने के लिए फटकारा कि मुझे वह पत्र मिल गया है: "तुम्हें याद है मैडम डी सेविग्ने ने कैसे कहा था: 'जब हम दूर होते हैं, तो हम उन पत्रों पर नहीं हंसते जो 'मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया' से शुरू होते हैं।'" अपनी सबसे

बड़ी परेशानी का ज़िक्र किए बिना, उन्होंने कहा कि वह मेरे फिजूलखर्ची से नाराज़ थीं: "तुम्हारा सारा पैसा आखिर जाता कहाँ है? यह तो काफी दुखद है कि चार्ल्स डी सेविग्ने की तरह, तुम्हें पता नहीं है कि तुम क्या चाहते हो और 'एक साथ दो या तीन लोग' हो, लेकिन कम से कम पैसे खर्च करने में उनकी तरह मत बनो ताकि मुझे तुम्हारे बारे में कभी यह न कहना पड़े: 'उन्होंने खर्च करना और कुछ न दिखाना, बिना दांव लगाए हारना और कर्ज चुकाए बिना भुगतान करना सीख लिया है।'" मैंने अभी-अभी माँ का पत्र समाप्त किया ही था कि फ्रांस्वा ने लौटकर मुझे बताया कि उनके घर में वही थोड़ी ज़्यादा साहसी युवा दूधवाली है जिसके बारे में उन्होंने बात की थी। मुझे। "वह महाशय का नोट लेकर जवाब ला सकती है, अगर ज़्यादा दूर न हो। महाशय उसे देख लेंगे, वह बिल्कुल लिटिल रेड राइडिंगहुड जैसी है।" फ्रांस्वा लड़की को लाने के लिए चली गई, और मैं उसे आगे चलते हुए और कहते हुए सुन सकता था: "चलो अब, तुम एक गलियारे से डर रहे हो, बकवास और बेतुकी बातें, मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम इतने भोले होगे। क्या मुझे तुम्हारा हाथ पकड़कर ले जाना पड़ेगा?" और फ्रांस्वा, एक अच्छी और ईमानदार नौकरानी की तरह, जो यह सुनिश्चित करना चाहती है कि उसके मालिक का सम्मान हो, जैसा कि वह स्वयं करती है, उसने खुद को उस गरिमा से ढक लिया था जो किसी पुराने कलाकार की पेंटिंग में बिचौलिए को शोभा देती है, जहाँ उसकी तुलना में प्रेमी और उसकी प्रेमिका महत्वहीन हो जाते हैं। लेकिन एल्स्टर ने जब उन्हें देखा तो उसे इस बात की चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं थी कि वायलेट क्या कर रहे थे। युवा दूधवाली के प्रवेश ने तुरंत मेरी चिंतनशील शांति छीन ली; मैं बस यही सोच रहा था कि उस चिट्ठी की कहानी को कैसे विश्वसनीय बनाया जाए जो वह देने वाली थी, और मैंने जल्दी-जल्दी लिखना शुरू कर दिया, बिना उसकी तरफ एक नज़र भी डाले, ताकि ऐसा न लगे कि मैं उसे अपने कमरे में जांच-परख के लिए लाया हूँ। उसमें मेरे लिए एक ऐसा अनजाना आकर्षण था जो मुझे किसी ऐसी सुंदर लड़की में नहीं मिलता जिसे मैं उन घरों में पाता जहाँ लोग मिलने आते हैं। वह न तो नग्न थी और न ही भेस बदले हुए, बल्कि एक असली दूधवाली थी, उन लड़कियों में से एक जिन्हें हम बहुत सुंदर समझते हैं, जब हमारे पास उनसे मिलने का समय नहीं होता; उसमें जीवन की शाश्वत इच्छा और शाश्वत पछतावे का कुछ अंश था, जिसकी दोहरी धारा अंततः हमारी ओर मुड़ जाती है। दो पहलू हैं, क्योंकि यदि यह किसी अज्ञात व्यक्ति का प्रश्न है, जिसे

हम उसकी कद-काठी, शारीरिक बनावट, उदासीन दृष्टि और अभिमानी शांति से दिव्य मानते हैं, तो दूसरी ओर हम चाहते हैं कि वह स्त्री अपने पेशे में पूर्णतः निपुण हो, जिससे हम स्वयं से विमुख होकर उस संसार में खो सकें जिसे एक विशेष वेशभूषा हमें रोमांटिक रूप से भिन्न विश्वास दिलाती है। यदि हम अपने प्रेम संबंधी जिज्ञासाओं के नियम को किसी सूत्र में समाहित करना चाहें, तो हमें उसे उस स्त्री के बीच के अधिकतम अंतर में खोजना होगा जिसे हमने देखा है और जिसे हमने छुआ और स्पर्श किया है। यदि कभी 'बंद घर' कहे जाने वाले स्थानों की स्त्रियाँ, यदि वेश्याएँ स्वयं (यदि हम उन्हें वेश्या मानते हैं) हमें इतना कम आकर्षित करती हैं, तो इसका कारण यह नहीं है कि वे अन्य स्त्रियों से कम सुंदर हैं, बल्कि यह है कि वे तैयार और प्रतीक्षारत हैं; जिस वस्तु को हम प्राप्त करना चाहते हैं, वह हमें पहले से ही प्रदान करती है; इसका कारण यह है कि वे विजय नहीं हैं। अंतर न्यूनतम है। सड़क पर ही एक वेश्या हम पर मुस्कुराती है, ठीक वैसे ही जैसे वह हमारे कमरे में मुस्कुराएगी। हम मूर्तिकार हैं। हम एक स्त्री की ऐसी मूर्ति प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं जो उसके द्वारा हमें प्रस्तुत की गई मूर्ति से बिल्कुल भिन्न हो। हमने एक लड़की को समुद्र तट पर उदासीन, उद्दंडता से टहलते देखा है; हमने एक दुकानदार को अपने काउंटर के पीछे गंभीर और सक्रिय देखा है, जो हमें कठोर शब्दों में जवाब देती है, केवल अपने साथियों के व्यंग्य से बचने के लिए; और एक फल विक्रेता को देखा है जो मुश्किल से ही हमें जवाब देती है। खैर, हमें तब तक चैन नहीं मिलेगा जब तक हम प्रयोग करके यह पता न लगा लें कि क्या समुद्र तट पर बैठी अभिमानी लड़की, 'लोग क्या कहेंगे?' के डर से अकड़कर बैठी दुकानदार, या अपनी ही धुन में डूबी फल बेचने वाली को, अपने कुशल व्यवहार से, उनके सीधे खड़े रहने के रवैये को ढीला करने, फलों से लदी अपनी बाहों को हमारी गर्दन में डालने, और अब तक जमी हुई या बेसुध आँखों को हमारे होठों की ओर सहमति भरी मुस्कान के साथ मोड़ने के लिए मजबूर किया जा सकता है—ओह, काम के घंटों में कठोर आँखों की सुंदरता—जब कामगार अपने साथियों की गपशप से इतना डरती थी, वे आँखें जो हमारी घूरती निगाहों से बचती थीं और अब जब हमने उसे अकेले में आमने-सामने देखा है, तो जब हम प्रेम की बात करते हैं तो उनकी पुतलियाँ धूप से भरी हँसी के बोझ तले दब जाती हैं। एक ओर दुकान की नौकरानी, इस्त्री में व्यस्त धोबिन, फल बेचने वाली, दूधवाली और दूसरी ओर वही लड़की जब हमारी रखैल बनने वाली होती है, इन सबके बीच

चरम अंतर दिखाई देता है, वास्तव में यह अंतर अपनी चरम सीमा तक पहुँच जाता है, और उसके पेशे की उन अभ्यस्त मुद्राओं से विविधतापूर्ण हो जाता है जो परिश्रम के घंटों के दौरान बाहों को उन कोमल बंधनों से बिल्कुल अलग बना देती हैं जो हर शाम हमारे गले में कस जाते हैं जब होंठ चुंबन के लिए तैयार होते हैं। और इस तरह हम अपना पूरा जीवन उन सम्मानित लड़कियों के साथ बेचैन प्रयासों में बिताते हैं, जिन्हें उनका पेशा हमसे अलग करता प्रतीत होता है। एक बार जब वे हमारी बाहों में आ जाती हैं, तो वे अपने मूल स्वरूप से अधिक कुछ नहीं रह जातीं, जिस खाई को पार करने का हमने सपना देखा था, वह भर जाती है। लेकिन हम दूसरी महिलाओं के साथ नए सिरे से शुरुआत करते हैं, हम इन कामों में अपना सारा समय, सारा पैसा, सारी ताकत लगा देते हैं, हमारा खून उस अति सतर्क ड्राइवर पर खौल उठता है जो शायद हमें हमारी पहली मुलाकात से चूकवा देगा, हम खुद को बुखार की स्थिति में ले आते हैं। उस पहली मुलाकात में, हम जानते हैं कि इससे एक भ्रम का अंत होगा। भ्रम का अभी भी कायम रहना उतना मायने नहीं रखता; हम यह देखना चाहते हैं कि क्या हम उसे वास्तविकता में बदल सकते हैं, और फिर हमें उस धोबिन की याद आती है जिसकी शीतलता का हमने जिक्र किया था। प्रेम की जिज्ञासा वैसी ही होती है जैसे स्थानों के नाम सुनकर हमारे भीतर जागृत होती है; लगातार निराश होने के बाद, यह फिर से जागृत होती है और सदा अतृप्त रहती है।

हाय! जैसे ही वह मेरे सामने खड़ी हुई, लहराते बालों वाली सुंदर दूधवाली, मेरी कल्पनाओं और मेरे भीतर जागृत इच्छाओं से रहित होकर, अपने वास्तविक स्वरूप में सिमट गई। मेरी कल्पनाओं का धड़कता बादल अब उसे झिलमिलाते धुंध में नहीं लपेटे हुए था। उसके पास (दस की जगह, वे बीस जिन्हें मैं बारी-बारी से याद कर पा रहा था लेकिन उनमें से किसी को भी अपनी स्मृति में स्थिर नहीं कर पा रहा था) केवल एक ही नाक थी, जो मेरी सोच से कहीं अधिक गोल थी, जिससे वह कुछ हद तक मूर्ख प्रतीत हो रही थी और वैसे भी उसमें बढ़ने की क्षमता नहीं थी। यह उड़ती हुई चिड़िया, जो पंख फड़फड़ाते हुए, निष्क्रिय, कुचली हुई, अपने तुच्छ रूप में कुछ भी जोड़ने में असमर्थ थी, अब मेरी कल्पना का साथ भी नहीं पा रही थी। वास्तविकता की जड़ता में गिरकर, मैंने फिर से उठने का प्रयास किया; उसके गाल, जो मैंने दुकान में नहीं देखे थे, मुझे इतने सुंदर लगे कि मैं घबरा गया और अपनी बात को सही साबित

करने के लिए मैंने उस युवा दूधवाली से कहा: "क्या आप मुझे वहाँ पड़ा हुआ फिगारो अखबार दे देंगी? मुझे उस पते की पुष्टि करनी है जहाँ मैं आपको भेजने वाला हूँ।" इस पर, जैसे ही उसने अखबार उठाया, उसकी जर्सी की लाल आस्तीन कोहनी तक दिखाई दी और उसने बड़े ही सलीके से और विनम्रता से मुझे वह सादा अखबार थमा दिया। उसकी आत्मीयता, कोमलता और लाल रंग ने मुझे प्रसन्न कर दिया। फिगारो खोलते समय, कुछ कहने के लिए और बिना आँखें उठाए, मैंने उस लड़की से पूछा: "तुमने जो लाल बुना हुआ कपड़ा पहना है, उसे क्या कहते हो? यह बहुत अच्छा लग रहा है।" उसने उत्तर दिया: "यह मेरा गोल्फ का कपड़ा है।" क्योंकि, फैशन में आम तौर पर पाई जाने वाली थोड़ी गिरावट के कारण, जो कपड़े और स्टाइल कुछ साल पहले अल्बर्टीन की सहेलियों की अपेक्षाकृत संभ्रांत दुनिया से संबंधित लगते थे, वे अब कामकाजी लड़कियों का हिस्सा बन गए थे। मैंने फिगारो अखबार के पन्ने पलटने का नाटक करते हुए कहा, "क्या आपको यकीन है कि अगर मैं आपको थोड़ा दूर भेज दूं तो आपको ज़्यादा परेशानी नहीं होगी?" जैसे ही मुझे लगा कि मेरे लिए संदेश ले जाना उनके लिए एक मुश्किल काम होगा, उन्हें भी परेशानी होने लगी। "बात बस इतनी है कि मुझे अभी अपनी साइकिल पर निकलना है। हे भगवान, रविवार ही तो हमारे पास बचा है।" "लेकिन क्या आपको ऐसे बिना सिर ढके जाने से सर्दी नहीं लग जाएगी?" "अरे नहीं, मैं बिना सिर ढके नहीं जाऊंगी, मेरे पास पोलो शर्ट है, और मेरे इतने बाल हैं कि मैं उसके बिना भी काम चला सकती हूं।" मैंने अपनी नज़रें उनके लहराते बालों की चमक पर उठाईं और खुद को उनके भंवर में फंसा हुआ पाया, धड़कते दिल के साथ, बिजली और सुंदरता के तूफान के बीच बहता हुआ। मैं अखबार पढ़ता रहा, हालांकि यह सिर्फ दिखावा करने और समय बिताने के लिए था, जबकि मैं पढ़ने का सिर्फ नाटक कर रहा था। फिर भी, मेरे सामने लिखे शब्दों का अर्थ मेरे मन में बैठ गया और मेरा ध्यान निम्नलिखित वाक्य पर गया: "ट्रोकाडेरो के विशाल हॉल में आज दोपहर के लिए घोषित कार्यक्रम में मैडम लीया का नाम जोड़ा जाना चाहिए, जिन्होंने 'लेस फोरबेरीज़ डे नेरिन' में अभिनय करने की सहमति दी है। वह निश्चित रूप से नेरिन की भूमिका निभाएंगी, जिसमें वह अपने जोश और मनमोहक प्रसन्नता से सबको चकित कर देती हैं।" ऐसा लगा जैसे किसी ने बेरहमी से मेरे दिल से वह पट्टी फाड़ दी हो जिसके नीचे बालबेक से लौटने के बाद से मेरा घाव भरने के लिए था। मेरी पीड़ा का सैलाब उमड़ पड़ा,

लीया, यानी बालबेक में उन दो लड़कियों की अभिनेत्री दोस्त, जिन्हें अल्बर्टीन ने, बिना देखे, एक दोपहर कैसिनो में आईने में देखा था। यह सच था कि बालबेक में अल्बर्टीन ने, लीया के नाम पर, मुझसे बात करते हुए एक विशेष पश्चाताप का भाव अपनाया था, मानो इस बात से हैरान थी कि कोई उसके इतने सद्गुणी स्वभाव पर संदेह कैसे कर सकता है: "अरे नहीं, वह बिल्कुल भी उस तरह की महिला नहीं है, वह बहुत ही सम्मानित व्यक्ति है।" दुर्भाग्य से मेरे लिए, जब अल्बर्टीन इस तरह का बयान देती थी, तो यह अन्य, भिन्न बयानों की ओर पहला कदम होता था। पहले बयान के तुरंत बाद, दूसरा बयान आया: "मैं उसे नहीं जानती।" तीसरे चरण में, जब अल्बर्टीन ने मुझसे किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बात की जो 'संदेह से परे' था और जिसे (दूसरी बात) वह नहीं जानती थी, तो सबसे पहले तो वह यह भूल गई कि उसने कहा था कि वह उसे नहीं जानती और फिर, अनजाने में अपने ही कथन का खंडन करते हुए, मुझे बताया कि वह उसे जानती है। विस्मरण का यह पहला कार्य पूरा हुआ, और नया बयान दिया गया, जिससे दूसरा विस्मरण शुरू हुआ, यानी कि वह व्यक्ति संदेह से परे था। मैं पूछता, "क्या फलां-फलां उन महिलाओं में से एक नहीं है?" "अरे, बिल्कुल, यह तो सबको पता है!" तुरंत ही पश्चाताप का स्वर फिर से गूंज उठा और मैंने वही बात दोहराई जो मैंने पहले कही थी, बस थोड़ी-बहुत अस्पष्ट और संक्षिप्त रूप में। "मुझे कहना पड़ेगा कि उसने हमेशा मेरे साथ बहुत ही सही व्यवहार किया है। बेशक, वह जानती है कि अगर उसने मुझसे बदतमीज़ी करने की कोशिश की तो मैं उसे उसके काम से भगा दूंगा। फिर भी, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं उसके प्रति दिखाए गए सच्चे सम्मान के लिए उसका आभार व्यक्त करता हूं। यह आसानी से समझा जा सकता है कि वह जानती थी कि उसे किस तरह के व्यक्ति से निपटना है।" हम सच को याद रखते हैं क्योंकि उसका एक नाम होता है, वह अतीत से जुड़ा होता है, लेकिन एक बनावटी झूठ जल्दी भुला दिया जाता है। अल्बर्टीन अपना यह चौथा झूठ भूल गई और एक दिन जब वह मुझ पर भरोसा करके मेरा विश्वास जीतना चाहती थी, तो उसने मुझे उसी व्यक्ति के बारे में झूठ बोल दिया, जो शुरू में इतना सम्मानित लग रहा था और जिसे वह जानती भी नहीं थी। "एक समय वह मुझ पर बहुत मोहित हो गई थी। उसने मुझे तीन-चार बार अपने घर चलने और ऊपर अपने कमरे में आने के लिए कहा। मुझे उसके साथ घर जाने में कोई बुराई नहीं दिखी, जहाँ दिन के उजाले में, खुले में, सब हमें देख सकते थे। लेकिन जब हम

उसके दरवाजे पर पहुँचते, तो मैं हमेशा कोई न कोई बहाना बना देता और कभी ऊपर नहीं जाता।" इसके कुछ ही समय बाद, अल्बर्टीन ने उस महिला के कमरे में रखी खूबसूरत चीजों का जिक्र किया। एक-एक करके अनुमान लगाते हुए, मैं निस्संदेह उससे सच उगलवा लेता, जो शायद उतना गंभीर नहीं था जितना मुझे बताया गया था, क्योंकि हालाँकि वह महिलाओं के साथ सहज स्वभाव की थी, लेकिन वह एक पुरुष प्रेमी को प्राथमिकता देती थी, और अब जब वह मेरे साथ थी, तो वह लेआ के बारे में सोचती भी नहीं। खैर, इस व्यक्ति के बारे में, मैं अभी भी रहस्योद्घाटन के पहले चरण में था और मुझे नहीं पता था कि अल्बर्टीन उसे जानती थी या नहीं। कई महिलाओं के मामले में तो ऐसा ही होता था कि मैं अपनी प्रेमिका के विरोधाभासी कथनों को एकत्रित करके, एक सारांश के रूप में, उसके सामने प्रस्तुत कर उसे उसके कुकर्मों के लिए दोषी ठहरा सकूँ (ऐसे कुकर्म जिन्हें खगोलीय नियमों की तरह, देखकर या रंगे हाथों पकड़ने की बजाय तर्क से सिद्ध करना कहीं अधिक आसान होता है)। लेकिन तब वह यह कहना पसंद करती कि उसका एक कथन झूठ था, और उस कथन को वापस लेने से मेरे सारे प्रमाणों का आधार ही धराशायी हो जाता, बजाय इसके कि वह यह स्वीकार करे कि उसने शुरू से जो कुछ भी मुझसे कहा था वह सरासर झूठ का पुलिंदा था। 'हजार और एक रात' की कहानियों में भी ऐसे ही अंश हैं, जो हमें आकर्षक लगते हैं। ये हमें पीड़ा देते हैं, क्योंकि ये उस व्यक्ति से आते हैं जिसे हम प्यार करते हैं, और इस प्रकार हमें मानव स्वभाव के सतही ज्ञान से संतुष्ट होने के बजाय, उसके गहरे ज्ञान में उतरने में सक्षम बनाते हैं। दुःख हमारे भीतर समा जाता है और पीड़ादायक जिज्ञासा से प्रेरित होकर हमें दूसरों के जीवन में गहराई से उतरने के लिए विवश करता है। जिससे ऐसे सत्य उभरते हैं जिन्हें हम छिपाकर रखने का अधिकार नहीं समझते, इतना अधिक कि एक मरणासन्न नास्तिक जिसने उन्हें खोज लिया है, अपने अंत के प्रति निश्चित होते हुए, प्रसिद्धि के प्रति उदासीन होते हुए भी, पृथ्वी पर अपने अंतिम क्षणों को उन्हें ज्ञात कराने के प्रयास में समर्पित करेगा।

बेशक, लीया के बारे में मेरी समझ अभी शुरुआती दौर में ही थी। मुझे यह भी नहीं पता था कि अल्बर्टीन उसे जानती थी या नहीं। खैर, बात तो एक ही थी। मुझे हर हाल में उसे ट्रोकाडेरो में इस अजनबी से जान-पहचान बढ़ाने या उसे फिर से मिलाने से रोकना था। मैंने कहा कि मुझे नहीं पता था कि वह लीया को जानती थी या नहीं; लेकिन मुझे यह बात बालबेक में अल्बर्टीन

से ही पता चल जानी चाहिए थी। मेरी कमज़ोर याददाश्त की वजह से मेरे और अल्बर्टीन दोनों के दिमाग से लीया की कही हुई कई बातें मिट गई थीं। याददाश्त, हमारे जीवन की विभिन्न घटनाओं की हमेशा मौजूद रहने वाली प्रतिकृति होने के बजाय, एक ऐसी खाई है जहाँ से कभी-कभार कोई समानता हमें पुरानी यादों को फिर से ज़िंदा करने में मदद करती है; लेकिन फिर भी अनगिनत छोटी-छोटी बातें ऐसी होती हैं जो याददाश्त के उस भंडार में समा नहीं पातीं और हमेशा हमारे बस से बाहर रहती हैं। जिस व्यक्ति से हम प्रेम करते हैं, उसके वास्तविक जीवन से संबंधित किसी भी बात पर हम बहुत कम ध्यान देते हैं। हम तुरंत भूल जाते हैं कि उसने किसी घटना या अनजान लोगों के बारे में हमसे क्या कहा था, और उस समय उसके चेहरे के हाव-भाव कैसे थे। और इसलिए, जब समय आने पर इन्हीं लोगों के कारण हमारी ईर्ष्या जागृत होती है और हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि कहीं हम गलत तो नहीं हैं, कि हमारी प्रेमिका के घर से निकलने की जल्दबाजी और हमारे द्वारा समय से पहले घर लौटने पर उसकी नाराजगी के लिए वही लोग जिम्मेदार हैं; तो हमारी ईर्ष्या अतीत में सुराग की तलाश करती है, लेकिन उसे कुछ नहीं मिलता; हमेशा अतीत की ओर देखने वाली, यह उस इतिहासकार की तरह है जिसे एक ऐसे काल का इतिहास लिखना है जिसके लिए उसके पास कोई दस्तावेज नहीं हैं; हमेशा देर से, यह एक पागल बैल की तरह उस जगह पर दौड़ती है जहाँ उसे वह अभिमानी और प्रतिभाशाली प्राणी नहीं मिलेगा जो उसे अपने तीरों से क्रोधित कर रहा है और जिसकी शान और चालाकी की भीड़ प्रशंसा करती है। ईर्ष्या उस खालीपन से लड़ती है, अनिश्चितता से भरी उन सपनों में जिनमें हम व्याकुल होते हैं क्योंकि हम उसके खाली घर में उस व्यक्ति को नहीं पाते जिसे हम जीवन में अच्छी तरह जानते थे, लेकिन जो शायद यहाँ वास्तव में कोई और व्यक्ति है और उसने केवल हमारे मित्र के चेहरे के भाव उधार लिए हैं, और हम जागने के बाद और भी अनिश्चित हो जाते हैं जब हम अपने सपने के किसी विवरण को पहचानने की कोशिश करते हैं। जब हमारी प्रेमिका ने हमें यह बताया तो उसके चेहरे पर क्या भाव थे; क्या वह खुश नहीं दिख रही थी, क्या वह सचमुच सीटी नहीं बजा रही थी, ऐसा कुछ जो वह कभी नहीं करती जब तक कि उसके मन में कोई प्रेमपूर्ण विचार न हो? हमारे प्रेम के समय में, यदि हमारी उपस्थिति ने उसे थोड़ा चिढ़ाया और परेशान किया, तो क्या उसने हमें कुछ ऐसा नहीं बताया जो अब उसके द्वारा कही गई बात से विरोधाभासी है, कि

वह फलां व्यक्ति को जानती है या नहीं जानती है? हम नहीं जानते, हम कभी पता नहीं लगा पाएंगे; हम एक सपने के सारहीन टुकड़ों के पीछे भागते रहते हैं, और इस सब के दौरान हमारी प्रेमिका के साथ हमारा जीवन चलता रहता है, हमारा जीवन उन चीजों के प्रति उदासीन रहता है जिन्हें हम अपने लिए महत्वपूर्ण नहीं मानते, उन चीजों पर ध्यान देता है जिनका शायद कोई महत्व नहीं है, उन लोगों से घिरा रहता है जिनका हमसे कोई वास्तविक संबंध नहीं है, स्मृति की कमियों, अंतरालों, व्यर्थ की चिंताओं से भरा रहता है, हमारा जीवन एक सपने की तरह अवास्तविक होता है।

मुझे एहसास हुआ कि युवा दूधवाली अभी भी कमरे में थी। मैंने उससे कहा कि वह जगह बहुत दूर है, मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है। इस पर उसने भी यही सोचा कि यह बहुत झंझट होगा: "एक बढ़िया मैच होने वाला है, मैं उसे छोड़ना नहीं चाहती।" मुझे लगा कि वह पहले से ही खेल के प्रति समर्पित है और कुछ ही सालों में वह 'अपनी मनमर्जी से जीने' की बात करने लगेगी। मैंने उससे कहा कि अब मुझे उसकी बिल्कुल ज़रूरत नहीं है, और उसे पाँच फ्रैंक दे दिए। तुरंत ही, इस उदारता की कम ही उम्मीद करते हुए, और खुद से यह कहते हुए कि अगर उसे बिना कुछ किए पाँच फ्रैंक मिल रहे हैं तो मेरा संदेश पहुँचाने के लिए उसे कहीं ज़्यादा मिलेंगे, उसे लगने लगा कि उसका मैच कोई मायने नहीं रखता। "मैं आसानी से आपका संदेश पहुँचा सकती थी। मैं हमेशा समय निकाल सकती हूँ।" लेकिन मैंने उसे कमरे से बाहर धकेल दिया, मुझे अकेले रहना था, मुझे हर हाल में अल्बर्टीन को ट्रोकाडेरो में लीया की सहेलियों से मिलने से रोकना था। मुझे कोशिश करनी ही थी, और मुझे सफल होना ही था; सच कहूँ तो मुझे अभी तक समझ नहीं आया था कि कैसे, और इन शुरुआती पलों में मैंने अपने हाथ खोले, उन्हें निहारा, अपनी उंगलियों के जोड़ चटकाए, चाहे इसलिए कि मन, जिसे वह नहीं मिल रहा जो वह खोज रहा है, आलस्य में आकर एक पल के लिए उस जगह पर रुक जाता है जहाँ सबसे महत्वहीन चीजें उसे स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, जैसे तटबंध पर घास के तिनके जो हम गाड़ी की खिड़की से हवा में कांपते हुए देखते हैं, जब ट्रेन खुले मैदान में रुकती है—एक ऐसी स्थिरता जो हमेशा उस पकड़े गए जानवर की स्थिरता से अधिक फलदायी नहीं होती जो डर से लकवाग्रस्त या मोहित होकर बिना एक भी मांसपेशी हिलाए देखता रहता है—या इसलिए कि मैं अपने शरीर को तैयार रखूँ—जिसमें मेरा मन अंदर काम कर रहा हो और

मेरे मन में इस या उस व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई के साधन हों—मानो यह एक हथियार से ज्यादा कुछ न हो जिससे वह गोली चलाई जाएगी जो अल्बर्टीन को लेआ और उसके दो दोस्तों से अलग कर देगी। यह सच है कि सुबह-सुबह जब फ्रांस्वा ने आकर मुझे बताया कि अल्बर्टीन ट्रोकाडेरो जा रही है, तो मैंने मन ही मन कहा था: "अल्बर्टीन अपनी मर्ज़ी से कुछ भी करने को स्वतंत्र है" और सोचा था कि शाम तक, इस सुहावने मौसम में, उसके कार्यों का मेरे लिए कोई खास महत्व नहीं रहेगा; लेकिन जैसा मैंने सोचा था, केवल सुबह की धूप ही मेरी इस लापरवाही का कारण नहीं थी; बल्कि इसलिए थी क्योंकि मैंने अल्बर्टीन को उन योजनाओं को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया था जिन्हें वह शायद वर्दुरिन्स में शुरू या पूरा कर सकती थी, और उसे उस प्रदर्शन में जाने के लिए बाध्य कर दिया था जिसे मैंने खुद चुना था, ताकि वह कोई तैयारी न कर सके। इसलिए मुझे पता था कि वह जो भी करेगी, वह निश्चित रूप से निर्दोष ही होगा। ठीक वैसे ही, जैसे अगर अल्बर्टीन कुछ क्षण बाद कहती: "अगर मैं खुद को मार डालूँ, तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता," तो इसका मतलब यही होता कि उसे पूरा यकीन था कि वह खुद को नहीं मारेगी। आज सुबह मेरे और अल्बर्टीन के चारों ओर (हवा में सूर्य के प्रकाश से कहीं अधिक) वह वातावरण व्याप्त था जिसे हम देख नहीं सकते, परन्तु जिसके पारदर्शी और परिवर्तनशील माध्यम से हम देख पाते हैं - मैं उसके कार्यों को, वह अपने जीवन के महत्व को - अर्थात् उन विश्वासों को जिन्हें हम प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख पाते, परन्तु जो हमारे चारों ओर की हवा की तरह ही निर्वात में समाहित नहीं हो सकते; हमारे चारों ओर एक परिवर्तनशील वातावरण का निर्माण करते हुए, कभी उत्तम, कभी सांस लेने में कठिनाई, ये तापमान, बैरोमेट्रिक दाब, मौसम की तरह ही सावधानीपूर्वक अध्ययन और अभिलेख किए जाने योग्य हैं, क्योंकि हमारे दिनों की अपनी विशिष्टता होती है, भौतिक और नैतिक। मेरा वह विश्वास, जिसे मैं आज सुबह ध्यान नहीं दे पाया था, और फिर भी जिसमें मैं फिगारो को दूसरी बार देखने तक आनंदपूर्वक डूबा हुआ था, कि अल्बर्टीन कुछ भी ऐसा नहीं करेगी जो हानिरहित हो, वह विश्वास अब गायब हो गया था। मैं अब उस सुहावने धूप भरे दिन में नहीं जी रहा था, बल्कि उस दिन में जी रहा था जो मेरी इस चिंता से कटा हुआ था कि कहीं अल्बर्टीन, लीया से फिर से न मिलने लगे और उससे भी आसानी से उन दोनों लड़कियों से, अगर वे, जैसा कि मुझे लग रहा था, ट्रोकाडेरो में अभिनेत्री की सराहना करने जातीं, जहाँ उनके लिए किसी

अंतराल में अल्बर्टीन से मिलना मुश्किल नहीं होता। अब मैं मैडम विंटेइल के बारे में नहीं सोच रहा था, लीया का नाम मेरे मन में वापस आ गया था, जिससे मुझे जलन हो रही थी, कैसिनो में उन दोनों लड़कियों को देखती अल्बर्टीन की छवि। क्योंकि मेरी स्मृति में केवल अल्बर्टीन की कई छवियाँ थीं, एक-दूसरे से अलग, अधूरी, रूपरेखाएँ, स्नैपशॉट; और इसलिए मेरी जलन एक क्षणिक भाव तक सीमित थी, जो एक साथ क्षणिक और स्थिर था, और उन लोगों तक सीमित थी जिन्होंने अल्बर्टीन के चेहरे पर वह भाव प्रकट किया था। मुझे वह तब याद आई जब बालबेक में, उसे उन दोनों लड़कियों या उस तरह की महिलाओं से अनुचित ध्यान मिला था; मुझे वह बेचैनी याद आ गई जो मुझे तब होती थी जब मैं उसका चेहरा देखता था, मानो कोई चित्रकार रेखाचित्र बनाने की तैयारी कर रहा हो, पूरी तरह से रेखाचित्रों से ढका हुआ, और निस्संदेह मेरी उपस्थिति के कारण, वह इस संपर्क को बिना ध्यान दिए ही स्वीकार कर रही थी, एक ऐसी निष्क्रियता के साथ जो शायद गुप्त रूप से कामुक थी। और इससे पहले कि वह खुद को संभाल पाती और मुझसे बात करती, एक पल ऐसा आया जब अल्बर्टीन हिली नहीं, खाली हवा में मुस्कुराई, उसी बनावटी सहजता और छिपे हुए आनंद के भाव से जैसे वह किसी के लिए अपनी तस्वीर खिंचवाने के लिए पोज़ दे रही हो; या कैमरे के सामने और भी आकर्षक मुद्रा अपनाने की कोशिश कर रही हो—वही मुद्रा जो उसने डोंसिएरेस में अपनाई थी जब हम सेंट-लूप के साथ टहल रहे थे, और हंसते हुए और अपनी जीभ होठों पर फेरते हुए, उसने एक कुत्ते को चिढ़ाने का नाटक किया था। निश्चित रूप से ऐसे क्षणों में वह बिल्कुल वैसी नहीं होती थी जैसी तब होती थी जब वह हमारे पास से गुजरने वाली छोटी लड़कियों में दिलचस्पी लेती थी। फिर, इसके विपरीत, उसकी संकीर्ण मखमली निगाह राहगीर पर इस कदर टिक गई, मानो उससे चिपक गई हो, इतनी तीव्र, इतनी तीक्ष्ण कि ऐसा लगा मानो जब वह अपनी निगाहें हटाएगी तो त्वचा को चीर देगी। लेकिन उस क्षण, उसका यह दूसरा भाव, जिसने कम से कम उसे गंभीर बना दिया था, मानो वह दर्द में हो, मुझे उन दो लड़कियों की उपस्थिति में उसके भावहीन आनंदमयी चेहरे के बाद एक सुखद राहत जैसा लगा, और मैं उस इच्छा के गंभीर भाव को पसंद करता जो शायद वह कभी-कभी महसूस करती थी, बजाय उस हँसी भरे भाव के जो वह दूसरों में जगाती थी। चाहे वह अपनी चेतना को कितना भी छिपाने की कोशिश करे, वह उसे घेर लेती थी, उसे धुएँ की तरह, कामुकता से भर देती थी,

उसके पूरे चेहरे को गुलाबी बना देती थी। लेकिन अल्बर्टीन के भीतर उन क्षणों में जो कुछ भी रुका हुआ था, जो उसके चारों ओर फैलकर मुझे इतना गहरा आघात पहुँचाता था, मैं कैसे कह सकता था कि मेरे पीठ फेरते ही वह उसे अपने तक ही सीमित रखेगी, क्या उन दो लड़कियों की ओर से, अब जब मैं उसके साथ नहीं था, वह कोई दुस्साहसी प्रतिक्रिया नहीं देगी। वास्तव में, इन यादों ने मुझे बहुत दुख पहुँचाया, ये अल्बर्टीन की कमियों की एक तरह से पूर्ण स्वीकारोक्ति थीं, उसकी बेवफाई की एक सामान्य स्वीकारोक्ति जिसके सामने वे सभी शपथें बेकार थीं जो उसने मुझसे खाई थीं और जिन पर मैं विश्वास करना चाहता था, मेरे अधूरे शोध के नकारात्मक परिणाम, और एंड्री द्वारा, शायद उसकी मिलीभगत से दिए गए आश्वासन। अल्बर्टीन विशिष्ट विश्वासघातों से इनकार कर सकती थी; अपने शब्दों से, जो उसके विपरीत बयानों से कहीं अधिक प्रभावशाली थे, केवल उस तीक्ष्ण दृष्टि से ही, उसने उस बात को स्वीकार कर लिया था जिसे वह किसी भी विशिष्ट घटना से कहीं अधिक छिपाना चाहती थी, जिसे वह स्वीकार करने से पहले खुद को मरते देखना पसंद करती: उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति। क्योंकि कोई भी स्वेच्छा से अपनी आत्मा का बलिदान नहीं करेगा। इन यादों से मुझे जो दुख हो रहा था, उसके बावजूद क्या मैं इस बात से इनकार कर सकता था कि ट्रोकाडेरो में दोपहर के शो के कार्यक्रम ने ही अल्बर्टीन की मेरी ज़रूरत को फिर से जगा दिया था? वह उन महिलाओं में से एक थी जिनके कुकर्म भी उनकी अनुपस्थित सुंदरता की जगह ले सकते हैं, और उनके कुकर्मों से कम नहीं, उनके साथ आने वाली दयालुता हमें उस आराम का एहसास दिलाती है जिसे हम उनकी संगति में, एक ऐसे बीमार व्यक्ति की तरह जो लगातार दो दिनों तक ठीक नहीं होता, बार-बार पाने के लिए मजबूर होते हैं। और फिर, जब हम उनसे प्यार करते हैं, तब उनके कुकर्मों से भी कहीं अधिक, उनसे परिचय होने से पहले के उनके कुकर्म होते हैं, और सबसे महत्वपूर्ण: उनका स्वभाव। इस प्रकार के प्रेम को पीड़ादायक बनाने वाली बात वास्तव में यह है कि स्त्री का एक प्रकार का मूल पाप पहले से मौजूद होता है, एक ऐसा पाप जो हमें उनसे प्रेम करने के लिए मजबूर करता है, ताकि जब हम इसे भूल जाते हैं, तो हमें उनकी कम आवश्यकता महसूस होती है, और नए सिरे से प्रेम करने के लिए हमें नए सिरे से पीड़ा सहनी पड़ती है। इस समय, मेरे मन में मुख्य रूप से यही विचार चल रहा था कि वह उन दोनों लड़कियों से दोबारा नहीं मिल पाएगी और क्या वह लीया को

जानती थी या नहीं। नियम यह है कि हमें किसी विशेष तथ्य में तब तक रुचि नहीं लेनी चाहिए जब तक कि उसका सामान्य महत्व न हो। यात्रा करने या महिलाओं से दोस्ती करने की तीव्र इच्छा जैसी बचकानी प्रवृत्ति के बावजूद, मैं अपनी जिज्ञासा को उन अदृश्य पीड़ादायक वास्तविकताओं के सैलाब के तत्वों के प्रति कुचलने की कोशिश कर रहा था जो हमेशा हमारे लिए अज्ञात रहेंगी और जो हमारे मन में जम गई हैं। लेकिन, अगर हम उस जमी हुई वास्तविकता को नष्ट करने में सफल भी हो जाएं, तो उसकी जगह तुरंत कोई और उभर आएगी। कल मुझे डर था कि कहीं अल्बर्टीन श्रीमती वर्दुरिन से मिलने न चली जाए। अब मेरा सारा ध्यान लीया पर था। ईर्ष्या, जो अपनी आँखों पर पट्टी बाँधे रहती है, न केवल अपने चारों ओर छाए अंधकार में कुछ भी खोजने में असमर्थ है, बल्कि यह उन पीड़ाओं में से एक है जहाँ काम को लगातार दोहराना पड़ता है, जैसे कि दानाइड्स या इक्सियन की पीड़ा। भले ही उसके दोस्त वहाँ न हों, लेआ की क्या छवि उसके मन में न बने, जो मंच के परिधानों से सुशोभित थी, सफलता के प्रकाश से जगमगा रही थी, अल्बर्टीन के मन में वह क्या विचार छोड़ जाती, कौन सी इच्छाएँ, जिन्हें भले ही वह दबा दे, मेरे घर में उसे ऐसे जीवन से घृणा उत्पन्न कर देती जिसमें वह उन्हें पूरा करने में असमर्थ थी।

इसके अलावा, मुझे कैसे पता चलता कि वह लीया से परिचित नहीं थी और उसके ड्रेसिंग रूम में उससे मिलने नहीं जाती; और, अगर लीया उसे नहीं जानती भी थी, तो कौन मुझे यकीन दिला सकता था कि बालबेक में उसे देखने के बाद, वह उसे पहचान नहीं लेगी और मंच से उसे कोई इशारा नहीं करेगी जिससे अल्बर्टीन को पर्दे के पीछे जाने का अधिकार मिल जाए? खतरा टल जाने के बाद उससे बचना आसान लगता है। यह खतरा अभी तक दूर नहीं हुआ था, मुझे डर था कि शायद यह कभी दूर न हो पाए, और यह मुझे और भी भयानक लग रहा था। फिर भी अल्बर्टीन के लिए मेरा यह प्यार, जो मैंने महसूस किया था कि जब मैंने इसे साकार करने की कोशिश की तो लगभग गायब हो गया था, इस समय मेरे गहरे दुख से कुछ हद तक अपने अस्तित्व का प्रमाण प्राप्त कर रहा था। मुझे अब किसी और बात की परवाह नहीं थी, मैं केवल यही सोच रहा था कि मैं उसे ट्रोकाडेरो में रहने से कैसे रोकूँ, मैं लीया को वहाँ न जाने के लिए मनाने के लिए दुनिया की कोई भी रकम देने को तैयार था। यदि हम अपने चुनाव को अपने द्वारा किए गए कार्यों से सिद्ध करें, न कि अपने द्वारा बनाए गए विचार

से, तो मैं अल्बर्टीन से प्रेम करता रहा हूँगा। लेकिन मेरे इस नए कष्ट ने अल्बर्टीन की मेरी छवि को और अधिक पुष्ट नहीं किया। वह मेरी विपत्तियों का कारण थी, मानो कोई अदृश्य देवता हो। अनगिनत अटकलें लगाते हुए, मैं अपने प्रेम को साकार किए बिना ही अपने कष्टों से बचने की कोशिश करता रहा। सबसे पहले, मुझे यह सुनिश्चित करना था कि लीया वास्तव में ट्रोकाडेरो में प्रस्तुति देने जा रही है। दूधवाली को विदा करने के बाद, मैंने ब्लोच को फोन किया, जिसके बारे में मुझे पता था कि वह लीया के मित्रवत हैं, ताकि उससे पूछ सकूँ। उसे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था और वह आश्चर्यचकित था कि यह मामला मेरे लिए इतना महत्वपूर्ण कैसे हो सकता है। मैंने तुरंत काम पर लगने का फैसला किया, मुझे याद आया कि फ्रांस्वा बाहर जाने के लिए तैयार थी और मैं नहीं, और जैसे ही मैं उठा और कपड़े पहने, मैंने उसे एक कार में बैठने को कहा; उसे ट्रोकाडेरो जाना था, एक सीट बुक करनी थी, अल्बर्टीन को हर जगह ढूंढना था और उसे मेरी ओर से एक नोट देना था। इस पत्र में मैंने उसे बताया कि मैं उस महिला के पत्र से बहुत परेशान हूँ, जिसके कारण उसे याद होगा कि बालबेक में एक रात मैं बहुत दुखी थी। मैंने उसे याद दिलाया कि अगले दिन उसने मुझे उसे न बुलाने के लिए फटकारा था। इसलिए मैंने उसे बताया कि मैं उससे अनुरोध कर रही हूँ कि वह अपना कार्यक्रम छोड़कर मेरे घर आ जाए ताकि हम थोड़ी ताज़ी हवा ले सकें, जिससे मुझे सदमे से उबरने में मदद मिल सके। लेकिन तैयार होने में मुझे काफी समय लगेगा, इसलिए वह मेरी मदद करेगी, क्योंकि उसके साथ फ्रांस्वा भी है, और वह ट्रोइस-क्वार्टियर्स (यह दुकान छोटी होने के कारण मुझे बॉन मार्शे से कम खतरनाक लगी) जाकर अपने लिए सफेद ट्यूल का स्कार्फ खरीद लेगी। मेरा यह पत्र शायद अनावश्यक नहीं था। सच कहूँ तो, मुझे अल्बर्टीन के बारे में तब से लेकर अब तक या उससे पहले भी कुछ पता नहीं था कि उसने क्या किया था। लेकिन उसकी बातचीत में (अगर मैंने उससे इस बारे में बात की होती, तो शायद वह कहती कि मैंने उसे गलत समझा है) कुछ विरोधाभास और कुछ अलंकारिक बातें थीं, जो मुझे उसे रंगे हाथों पकड़ने जितनी निर्णायक लगती थीं, लेकिन अल्बर्टीन के सामने कम कारगर साबित होती थीं, जो अक्सर एक बच्चे की तरह गलतियाँ करते पकड़ी जाती थी और हमेशा अचानक, रणनीतिक रूप से अपनी रणनीति बदलकर मेरे क्रूर हमले को नाकाम कर देती थी और अपनी स्थिति फिर से स्थापित कर लेती थी। सबसे ज़्यादा क्रूर, मेरे प्रति। वह शैली की किसी

परिष्करण के लिए नहीं, बल्कि अपनी नासमझी को सुधारने के लिए वाक्य रचना में अचानक ऐसे उल्लंघन करती थी, जैसे व्याकरणविदों द्वारा वर्णित एनाकोलुथॉन या इसी तरह का कोई और शब्द। महिलाओं के बारे में बात करते हुए, जब वह कहती, "मुझे याद है, उस दिन, मैंने...", तो वह तुरंत अपनी साँस रोक लेती, जिसके बाद 'मैं' 'वह' बन जाता: यह कुछ ऐसा था जिसे उसने एक निर्दोष दर्शक के रूप में देखा था, न कि वह चीज़ जो उसने खुद की थी। वह खुद उस किस्से की नायिका नहीं थी। मुझे यह याद करना अच्छा लगता कि वाक्य ठीक कैसे शुरू हुआ था, ताकि मैं खुद यह निष्कर्ष निकाल सकूँ कि बीच में रुकने के कारण वह कैसे समाप्त हुआ होगा। लेकिन चूंकि मैंने अंत सुन लिया था, इसलिए मुझे शुरुआत याद रखना मुश्किल लगा, जिससे शायद मेरी दिलचस्पी भरी बातों ने उसे विचलित कर दिया था, और मैं अब भी यह जानने के लिए उत्सुक था कि वह वास्तव में क्या सोच रही थी, उसे वास्तव में क्या याद था। हमारी प्रेमिका द्वारा झूठ बोलने के शुरुआती चरण हमारे अपने प्रेम या धार्मिक जीवन की शुरुआत के चरणों के समान हैं। वे आकार लेते हैं, जमा होते हैं, और बीत जाते हैं, बिना हमारा ध्यान दिए। जब हम यह याद करना चाहते हैं कि हमने किसी महिला से कैसे प्रेम करना शुरू किया, तब तक हम उससे प्रेम कर चुके होते हैं; जब हमने प्रेम में पड़ने से पहले उसके बारे में सपने देखे, तो हमने खुद से यह नहीं कहा: यह प्रेम प्रसंग की शुरुआत है, हमें ध्यान देना चाहिए!—और हमारे सपने हमें चौंका देते हैं, और हम उन पर मुश्किल से ही ध्यान देते हैं। इसी प्रकार, कुछ दुर्लभ मामलों को छोड़कर, मैंने अपनी कहानी को सुगम बनाने के लिए ही इन पृष्ठों में अल्बर्टीन के झूठे कथनों का उनके पहले के कथन से मिलान किया है। यह पिछला कथन, अक्सर मेरी समझ से परे था, क्योंकि मैं भविष्य नहीं जान सकता था और उस समय यह अनुमान नहीं लगा पाया था कि इसके साथ कौन सा विरोधाभासी कथन जुड़ जाएगा। यह कथन मेरे कानों तक तो पहुंचा, लेकिन अल्बर्टीन के निरंतर भाषण में इसे अलग नहीं कर पाया। बाद में, स्पष्ट झूठ का सामना करने पर, या किसी चिंताजनक संदेह से घिरकर, मैं इसे याद करना चाहता था; लेकिन व्यर्थ; मेरी स्मृति समय रहते सचेत नहीं हुई थी, और मैंने इसकी प्रति सहेज कर रखना अनावश्यक समझा था।

जब फ्रांस्वा ने अल्बर्टीन को हॉल से बाहर निकाल लिया, तो मैंने उससे आग्रह किया कि वह मुझे फोन करके बता दे और चाहे वह आना चाहे या न चाहे, उसे घर ले आए। फ्रांस्वा ने जवाब

दिया, "अगर वह महाशय से मिलने के लिए न आए तो यह आखिरी हद होगी। लेकिन मुझे नहीं पता कि वह मुझसे मिलने के लिए इतनी उत्सुक है।" फ्रांस्वा ने आगे कहा, "तो वह ज़रूर एक कृतघ्न होगी।" इतने वर्षों बाद अल्बर्टीन उसके मन में उसी ईर्ष्या की भावना को फिर से जगा रही थी, जो कभी मेरी चाची के बीमार कमरे में यूलाली उसे देती थी। मुझे इस बात का एहसास नहीं था कि अल्बर्टीन का मेरे घर में स्थान उसकी अपनी इच्छा से नहीं बल्कि मेरे द्वारा तय किया गया था (एक तथ्य जिसे मैंने आत्मसम्मान के कारण और फ्रांस्वा को नाराज़ करने के लिए उससे छिपाना बेहतर समझा)। वह लड़की की चतुराई की प्रशंसा और निंदा दोनों करती थी, जब वह अन्य नौकरों से उसके बारे में बात करती तो उसे 'नाटककार' कहती, एक ऐसी चालाक औरत जो मुझे अपनी उंगली पर नचा सकती है। उसने अभी तक उसके खिलाफ खुलकर युद्ध छेड़ने की हिम्मत नहीं की थी, उसे मुस्कुराता हुआ चेहरा दिखाती और मेरे साथ अपने संबंधों में उसके लिए जो सेवाएँ करती थी, उनसे मेरी नज़र में सम्मान पाने की कोशिश करती, यह सोचकर कि मुझसे कुछ कहना व्यर्थ है और ऐसा करने से उसे कुछ भी हासिल नहीं होगा; लेकिन अगर कभी मौका मिला, अगर कभी उसे अल्बर्टीन की कमजोरी का पता चला, तो वह उसे और बढ़ाने और हमें हमेशा के लिए अलग करने के लिए पूरी तरह दृढ़ थी। "अकृतज्ञ? नहीं, फ्रांस्वा, मुझे लगता है कि मैं ही अकृतज्ञ हूँ, तुम नहीं जानती कि वह मेरे लिए कितनी अच्छी है।" (प्यार का एहसास दिलाना कितना सुकून देने वाला था।) "जितनी जल्दी हो सके, करो।" "ठीक है, मैं जल्दी करती हूँ।" बेटी का प्रभाव फ्रांस्वा की शब्दावली पर धीरे-धीरे हावी होने लगा था। ऐसा ही होता है कि नए शब्दों के आने से सभी भाषाएँ अपनी शुद्धता खो देती हैं। फ्रांस्वा की भाषा के इस पतन के लिए, जिसे मैंने उसके स्वर्णिम काल में देखा था, मैं स्वयं अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार थी। अगर फ्रांस्वा की बेटी अपनी माँ से स्थानीय बोली में बात करने से संतुष्ट होती, तो वह उनकी शास्त्रीय भाषा को इतनी घटिया गालियों में नहीं बदलती। उन्होंने कभी भी स्थानीय बोली का प्रयोग नहीं छोड़ा था, और जब वे दोनों एक साथ मेरे कमरे में होतीं, अगर उन्हें कुछ निजी बात करनी होती, तो रसोई में खुद को बंद करने के बजाय, वे मेरे कमरे के बीचोंबीच, सबसे सावधानी से बंद दरवाजे से भी अधिक अभेद्य पर्दे की तरह, स्थानीय बोली में बात करके खुद को सुरक्षित कर लेतीं। मुझे लगा कि माँ और बेटी के बीच हमेशा अच्छे संबंध नहीं थे, क्योंकि वे बार-बार एक ही शब्द का इस्तेमाल

करती थीं जिसे मैं समझ पाया: 'm'esasperate' (शायद उनकी झुंझलाहट का कारण मैं ही था)। दुर्भाग्य से, कोई भी अपरिचित भाषा समय के साथ समझ में आने लगती है जब हम उसे लगातार सुनते रहते हैं। मुझे दुख हुआ कि यह एक स्थानीय बोली थी, क्योंकि मैं इसे सीखने में सफल रहा, और अगर फ्रांस्वा फारसी में बात करती तो भी मैं इतना ही सफल होता। जब फ्रांस्वा को मेरी प्रगति का पता चला, तो उसने अपनी बोलने की गति बढ़ा दी, और उसकी बेटी ने भी, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। माँ को बहुत बुरा लगा कि मैं उनकी स्थानीय बोली समझ गया, फिर मुझे उसे बोलते हुए सुनकर उन्हें बहुत खुशी हुई। मुझे यह स्वीकार करना ही होगा कि उसकी खुशी दिखावटी खुशी थी, क्योंकि भले ही मैं समय रहते शब्दों का उच्चारण लगभग उसी तरह करने लगा था जैसे वह खुद करती थी, फिर भी हमारे उच्चारण के दो तरीकों में उसे इतना बड़ा अंतर दिखाई दिया जिससे उसे असीम आनंद मिला, और उसे इस बात का अफसोस होने लगा कि अब वह उन लोगों से नहीं मिल पा रही थी जिनके बारे में उसने वर्षों से सोचा भी नहीं था, लेकिन ऐसा लगता था कि अगर वे मुझे उनकी बोली इतनी बुरी तरह बोलते हुए सुन पाते तो वे खिलखिलाकर हंसते, जिसे सुनकर उसे बहुत अच्छा लगता। खैर, इस बात से उसका दुख कम नहीं हुआ कि चाहे मैं कितना भी गलत उच्चारण करूं, मैं उसे अच्छी तरह समझ जाता था। चाबियां तब बेकार हो जाती हैं जब जिसे हम अंदर आने से रोकना चाहते हैं उसके पास कोई गुप्त चाबी या कोई और जुगाड़ हो। बोली को बचाव का साधन न मानकर, उसने अपनी बेटी से ऐसी फ्रेंच में बात करना शुरू कर दिया जो तेजी से सबसे घटिया युग की फ्रेंच बन गई।

मैं अब तैयार थी, लेकिन फ्रांस्वा ने अभी तक फोन नहीं किया था; शायद मुझे संदेश का इंतजार किए बिना ही बाहर चले जाना चाहिए। लेकिन मैं कैसे जान सकती थी कि वह अल्बर्टीन को ढूंढ लेगी, कि अल्बर्टीन कहीं छिपकर नहीं गई होगी, या अगर फ्रांस्वा उसे ढूंढ भी लेती, तो क्या वह खुद को उसके साथ ले जाने देगी? आधे घंटे बाद टेलीफोन की घंटी बजी और मेरा दिल उम्मीद और डर से ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। ऑपरेटर के इशारे पर, कई आवाज़ें एक साथ मेरे कानों में आईं और पल भर में मुझे टेलीफोन ऑपरेटर के शब्द सुनाई दिए, फ्रांस्वा के नहीं, जिसे अपने पिता से अनजान किसी भी चीज़ को देखकर जन्मजात झिझक और उदासी के कारण टेलीफोन के पास जाने से भी हिचक होती थी, हालांकि वह

किसी संक्रामक बीमारी से पीड़ित व्यक्ति से मिलने के लिए हमेशा तैयार रहती थी। उसने अल्बर्टीन को लॉबी में अकेले पाया था, और अल्बर्टीन बस एंड्री को यह बताने गई थी कि वह अब और नहीं रुकेगी और फिर जल्दी से फ्रांस्वा के पास वापस आ गई थी। "क्या वह नाराज़ नहीं थी? ओह, मुझे माफ़ करना; क्या आप कृपया उस व्यक्ति से पूछेंगे कि क्या वह युवती नाराज़ थी?" "महिला ने मुझसे कहा है कि मैं कहूँ कि वह बिल्कुल भी नाराज़ नहीं थी, बल्कि इसके विपरीत; खैर, अगर वह नाखुश भी थी, तो उसने ज़ाहिर नहीं किया। वे अब ट्रोइस-क्वार्टियर्स के लिए निकल रहे हैं और दो बजे तक घर पहुँच जाएँगे।" मैंने समझा कि दो बजे का मतलब तीन था, क्योंकि दो बज चुके थे। लेकिन फ़्रांस्वा को एक अजीब, स्थायी, लाइलाज कमी थी, जिसे हम बीमारियाँ कहते हैं; वह न तो समय सही से पढ़ पाती थी और न ही बता पाती थी। मैं कभी समझ नहीं पाया कि उसके दिमाग में क्या चल रहा था। जब फ़्रांस्वा, अपनी घड़ी देखकर, अगर दो बज रहे होते, तो कहती: "एक बज रहा है" या "तीन बज रहे हैं", तो मैं कभी समझ नहीं पाया कि यह घटना उसकी दृष्टि में थी या उसके विचारों में या उसकी वाणी में; एक बात निश्चित है कि यह घटना हमेशा घटित होती थी। मानवता एक बहुत पुरानी संस्था है। वंशानुक्रम और संकरण ने बुरी आदतों और दुष्ट प्रतिक्रियाओं को अदम्य शक्ति प्रदान की है। कोई गुलाब की झाड़ी के पास से गुजरते ही छींकने और हांफने लगता है, तो कोई गीले रंग की गंध से भड़क उठता है, किसी को यात्रा शुरू करने पर बार-बार पेट दर्द होने लगता है, और खुद करोड़पति और उदार चोरों के पोते-पोतियां भी पचास फ्रैंक लूटने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर पाते। जहाँ तक फ़्रांस्वा की समय सही से न बता पाने की अक्षमता का सवाल है, उसने खुद कभी इस समस्या पर कोई प्रकाश नहीं डाला। क्योंकि, हालांकि मैं आमतौर पर उसके गलत उत्तरों पर गुस्सा दिखाता था, फ़्रांस्वा ने कभी अपनी गलती के लिए माफी नहीं मांगी और न ही उसे समझाने की कोशिश की। वह चुप रही, मानो उसने सुना ही न हो, और इस तरह मुझे और भी गुस्सा आ गया। मैं कुछ स्पष्टीकरण सुनना चाहता था, काश मैं उसकी कमर और जांघ पर एक घूंसा मार पाता; लेकिन एक शब्द भी नहीं, एक उदासीन चुप्पी। किसी भी सूरत में, आज के कार्यक्रम के बारे में कोई संदेह नहीं था; अल्बर्टीन तीन बजे फ्रांस्वा के साथ घर आ रही थी, अल्बर्टीन लेआ या उसके दोस्तों से नहीं मिलने वाली थी। इस प्रकार, उनके साथ उसके फिर से संबंध स्थापित करने का खतरा टल जाने से, मेरी नज़र में उसका

महत्व कम होने लगा और मैं यह देखकर चकित रह गया कि यह खतरा कितनी आसानी से टल गया था, कि मैंने यह कैसे सोचा कि मैं इसे टाल नहीं पाऊंगा। मुझे अल्बर्टीन के प्रति गहरी कृतज्ञता का अनुभव हुआ, जो, जैसा कि मैंने देखा, लेआ के दोस्तों से मिलने के लिए ट्रोकाडेरो नहीं गई थी, और मेरे कहने पर ही प्रदर्शन छोड़कर घर आकर उसने मुझे यह दिखाया कि वह मेरे लिए मेरी कल्पना से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। मेरी कृतज्ञता तब और भी बढ़ गई जब एक साइकिल सवार ने मुझे उसका एक पत्र दिया जिसमें उसने मुझे धैर्य रखने के लिए कहा था, और जो उसके हमेशा के प्यारे भावों से भरा हुआ था। "मेरे प्यारे मार्सेल, मैं इस साइकिल सवार से भी धीमी गति से लौट रही हूँ, जिसकी साइकिल मैं उधार लेना चाहती हूँ ताकि तुम्हारे साथ जल्दी पहुँच सकूँ। तुम यह कैसे सोच सकते हो कि मैं नाराज़ हो सकती हूँ या तुम्हारे साथ रहने से ज़्यादा मुझे किसी और चीज़ में आनंद आ सकता है? हम दोनों का साथ में बाहर जाना कितना अच्छा होगा; और भी अच्छा होगा अगर हम हमेशा साथ ही बाहर जाएँ। तुम्हारे दिमाग में क्या-क्या विचार आते रहते हैं! क्या मार्सेल है! क्या मार्सेल है! तुम्हारी अल्बर्टीन।"
मैंने उसके लिए जो फ्रॉक खरीदी थीं, जिस नौका के बारे में मैंने उससे बात की थी, फोर्टुनी के जो रैपर खरीदे थे, अल्बर्टीन की इस आज्ञाकारिता में ये सभी चीजें प्रतिफल नहीं बल्कि पूरक थीं, और अब मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं कई विशेषाधिकारों का आनंद ले रहा हूँ; क्योंकि स्वामी के कर्तव्य और व्यय उसके प्रभुत्व का हिस्सा होते हैं, और उसके अधिकारों की तरह ही उसे परिभाषित और सिद्ध करते हैं। और ये अधिकार जिन्हें उसने मुझमें पहचाना, वही मेरे व्यय को उसका वास्तविक स्वरूप देते थे: मेरे पास अपनी एक स्त्री थी, जिसने मेरे द्वारा अचानक भेजे गए पहले संदेश पर ही मेरे दूत से विनम्रतापूर्वक फोन करवाकर कहा कि वह आ रही है, कि वह तुरंत घर आने की अनुमति दे रही है। मैं जितना सोचता था उससे कहीं अधिक स्वामी बन गया था। दूसरे शब्दों में, अधिक स्वामी, अधिक दास। अब मुझे अल्बर्टीन से मिलने की जरा भी बेचैनी नहीं थी। मुझे यह पक्का यकीन था कि वह इस समय फ्रांस्वा के साथ खरीदारी कर रही होगी, या वह कुछ देर बाद उसके साथ वापस आएगी, जिसे मैं खुशी-खुशी टालना चाहता था। इस यकीन ने उस समय को एक शांत और चमकदार तारे की तरह रोशन कर दिया, जिसे मैं अब अकेले बिताना ज़्यादा पसंद करता। अल्बर्टीन के लिए मेरे प्यार ने मुझे उठकर बाहर जाने के लिए तैयार कर दिया था, लेकिन यह मेरे घूमने-फिरने का मज़ा

किरकिरा कर रहा था। मैंने सोचा कि रविवार की ऐसी दोपहर में छोटी-छोटी दुकानदार लड़कियाँ, छोटी-छोटी वेश्याएँ, वेश्याएँ जंगल में घूम रही होंगी। और 'छोटी-छोटी दुकानदार लड़कियाँ' (जैसा कि अक्सर मेरे साथ होता था, किसी लड़की के नाम के साथ, जो मैंने किसी पार्टी के बारे में पढ़ते समय सुना था) शब्दों के साथ, सफेद चोली और छोटी स्कर्ट की छवि के साथ, क्योंकि उनके नीचे मैंने एक अजनबी को रखा था जो शायद मुझसे प्यार कर बैठे, मैंने कुछ भी नहीं से आकर्षक महिलाओं की कल्पना की और खुद से कहा: "वे कितनी मनमोहक होंगी!" लेकिन उनके मनमोहक होने का मुझे क्या फायदा, क्योंकि मैं अकेला बाहर नहीं जा रहा था। अकेले होने का फायदा उठाते हुए, और धूप से बचने के लिए पर्दों को खींचकर, मैं पियानो पर बैठ गया। वहाँ विंटेइल की सोनाटा की पन्ने पलटे और बजाना शुरू कर दिया। अल्बर्टीन का आना अभी कुछ समय की बात थी, लेकिन निश्चित भी था, इसलिए मेरे पास समय भी था और मन की शांति भी। फ्रांस्वा के साथ उसकी वापसी की उम्मीद में, और उसकी आज्ञाकारिता पर विश्वास में, जो सूर्य के प्रकाश के समान एक गर्मजोशी भरे आंतरिक प्रकाश का आशीर्वाद था, मैं अपने विचारों को अल्बर्टीन से कुछ पल के लिए अलग कर सका और उन्हें सोनाटा पर केंद्रित कर सका। वास्तव में, सोनाटा में मैंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि कैसे कामुक और चिंतित भावों का मेल अब अल्बर्टीन के प्रति मेरे प्रेम से और भी अधिक मेल खा रहा था, जिससे ईर्ष्या इतने लंबे समय से दूर थी कि मैं स्वान के सामने उस भावना के बारे में अपनी अज्ञानता स्वीकार कर चुका था। नहीं, सोनाटा को एक अलग दृष्टिकोण से देखते हुए, इसे एक महान कलाकार की रचना मानते हुए, मैं संगीत की लहरों के साथ कॉम्ब्रे के दिनों में वापस चला गया—मेरा मतलब मोंटजोवेन और मेसेग्लिस मार्ग से नहीं, बल्कि गुएरमांटेस मार्ग पर की गई सैर से है—जब मैं स्वयं एक कलाकार बनने की ख्वाहिश रखता था। क्या उस महत्वाकांक्षा को पूरी तरह से त्यागकर मैंने कुछ वास्तविक खो दिया था? क्या जीवन कला के खोने के दुख में मुझे सांत्वना दे सकता है, क्या कला में कोई अधिक गहन वास्तविकता है, जिसमें हमारे सच्चे व्यक्तित्व को वह अभिव्यक्ति मिलती है जो जीवन की गतिविधियों से नहीं मिलती? हर महान कलाकार वास्तव में बाकी सभी से इतना अलग लगता है, और हमें व्यक्तित्व की वह अनुभूति इतनी दृढ़ता से देता है जिसकी हम अपने रोजमर्रा के जीवन में व्यर्थ ही तलाश करते हैं। जब मैं ऐसा सोच रहा था, तभी सोनाटा के एक अंश ने मुझे

झकझोर दिया, एक ऐसा अंश जिससे मैं पूरी तरह परिचित था, लेकिन कभी-कभी हमारा ध्यान उन चीजों पर एक अलग रोशनी डालता है जिन्हें हम लंबे समय से जानते हैं, और हम उनमें वह देखते हैं जो हमने पहले कभी नहीं देखा था। जब मैं उस अंश को बजा रहा था, और हालाँकि उसमें विंटेइल एक ऐसी कल्पना को व्यक्त करने की कोशिश कर रहे थे जो वैगनर के लिए पूरी तरह से अपरिचित होती, मैं अनजाने में 'ट्रिस्टन' बुदबुदाने लगा, ठीक वैसे ही जैसे परिवार का कोई पुराना दोस्त किसी पोते के लहजे या हावभाव में दादाजी की झलक पा लेता है, जबकि पोते ने उन्हें कभी देखा भी नहीं था। और जैसे ही वह दोस्त एक तस्वीर को देखकर समानता का अनुमान लगाता है, वैसे ही विंटेइल की सोनाटा के सामने, मैंने ट्रिस्टन का संगीत-विराम वाला स्कोर रखा, जिसका एक अंश संयोगवश उसी दोपहर लैमोरक्स के संगीत कार्यक्रम में प्रस्तुत किया जा रहा था। बायरेउथ के उस्ताद की प्रशंसा करते समय, मेरे मन में उन लोगों जैसी कोई संशय नहीं थी, जो नीत्शे की तरह, अपने कर्तव्य बोध के कारण कला और जीवन दोनों में उस सुंदरता से दूर रहते हैं जो उन्हें लुभाती है, और जो पार्सिफ़ल का त्याग करने के साथ-साथ ट्रिस्टन से भी खुद को अलग कर लेते हैं, और अपनी आध्यात्मिक तपस्या में, एक कष्ट से दूसरे कष्ट की ओर बढ़ते हुए, क्रूस के सबसे रक्तरंजित मार्ग का अनुसरण करते हुए, स्वयं को ले पोस्टिलॉन डी लोंगजुमेउ के शुद्ध ज्ञान और पूर्ण आराधना तक पहुंचाते हैं। मुझे वैगनर के काम में कितनी वास्तविकता समाहित है, इसका अहसास तब होने लगा, जब मैंने अपने मन में उन निरंतर, क्षणभंगुर धुनों को देखा जो किसी रचना में आती हैं, फिर चली जाती हैं और लौट आती हैं, और कभी-कभी दूर, सुस्त, लगभग अलग-थलग सी लगती हैं, तो कभी-कभी अस्पष्ट रहते हुए भी इतनी दबावयुक्त और इतनी निकट, इतनी आंतरिक, इतनी जैविक, इतनी सहज होती हैं कि उन्हें संगीतमय प्रेरणा की पुनरावृत्ति के बजाय तंत्रिका पीड़ा के हमले की पुनरावृत्ति कहा जा सकता है।

संगीत, जो इस मायने में अल्बर्टीन के समाज से बिल्कुल अलग था, ने मुझे अपने भीतर उतरने में मदद की, और वहाँ एक नई खोज करने का अवसर दिया: वह अंतर जिसकी मैंने जीवन और यात्राओं में व्यर्थ ही तलाश की थी, और जिसकी लालसा मुझे इस मधुर संगीत की लहर ने पूरी की, जिसकी धूप से चमकती लहरें मेरे चरणों में आकर विलीन हो गईं। एक दोहरा अंतर। जिस प्रकार स्पेक्ट्रम हमें प्रकाश की संरचना दिखाता है, उसी प्रकार वैगनर की संगीतमयता

और एल्स्टर के रंग हमें किसी दूसरे व्यक्ति की भावनाओं के उस मूलभूत गुण को जानने में सक्षम बनाते हैं, जिसमें किसी दूसरे व्यक्ति के प्रति प्रेम हमें प्रवेश करने की अनुमति नहीं देता। फिर रचना के भीतर ही विविधता है, केवल इसी माध्यम से कि यह प्रभावी रूप से विविध है, अर्थात् विभिन्न व्यक्तित्वों का संयोजन। जहां एक साधारण संगीतकार किसी सरदार या शूरवीर का चित्रण करने का दिखावा करता है और दोनों से एक ही संगीत गवाता है, वहीं वैगनर इसके विपरीत प्रत्येक भूमिका को एक अलग वास्तविकता प्रदान करते हैं। जब भी कोई सरदार प्रकट होता है, वह एक विशिष्ट व्यक्तित्व होता है, जो एक साथ जटिल और सरल दोनों होता है, और युद्धरत ध्वनियों के आनंदमय, सामंती टकराव के साथ विशाल, मधुर संगीत में अपनी छाप छोड़ता है। यही कारण है कि संगीत में इतनी विविधता है, जो वास्तव में अनेक संगीतों से परिपूर्ण है, जिनमें से प्रत्येक एक व्यक्ति है। एक व्यक्ति या प्रकृति के क्षणिक पहलू से हमें मिलने वाला आभास। यहां तक कि जो भावना हमें महसूस कराती है, उससे सबसे अधिक स्वतंत्र होने के बावजूद भी, वह अपनी बाहरी और पूर्णतः निश्चित वास्तविकता को बनाए रखती है; एक पक्षी का गीत, एक शिकारी के सींग की झंकार, एक चरवाहे द्वारा अपनी बांसुरी पर बजाई जाने वाली धुन, क्षितिज के समक्ष अपनी ध्वनि की आकृति उकेर देती हैं। यह सच है कि वैगनर को अभी भी इन सभी को एक साथ लाना था, इनका उपयोग करना था, इन्हें एक ऑर्केस्ट्रल समग्रता में शामिल करना था, इन्हें उच्चतम संगीत आदर्शों के अधीन करना था, लेकिन हमेशा इनकी मूल प्रकृति का सम्मान करते हुए, जैसे एक बढ़ई लकड़ी के रेशों, उसकी विशिष्ट सार का सम्मान करता है जिसे वह तराश रहा होता है।

लेकिन इन रचनाओं की समृद्धि के बावजूद, जिनमें प्रकृति का चिंतन कर्म के साथ-साथ, उन व्यक्तियों के साथ भी अपना स्थान रखता है जो मात्र नाम मात्र नहीं हैं, मैंने सोचा कि ये रचनाएँ कितनी स्पष्ट रूप से उस अपूर्णता के गुण में भागीदार हैं - भले ही आश्चर्यजनक रूप से - जो उन्नीसवीं शताब्दी की सभी महान रचनाओं की विशेषता है, जिससे उस शताब्दी के महानतम लेखकों ने अपनी पुस्तकों पर अपनी छाप छोड़ी है, लेकिन स्वयं को एक साथ लेखक और आलोचक के रूप में देखते हुए, उन्होंने इस आत्म-चिंतन से एक नई सुंदरता प्राप्त की है, जो कृति से परे और श्रेष्ठ है, और उस पर पूर्वव्यापी रूप से एक ऐसी एकता, एक ऐसी महानता थोपती है जो उसमें नहीं है। उन लोगों पर विचार किए बिना, जिन्होंने उनके उपन्यासों के

प्रकाशित होने के बाद उनमें एक मानवीय हास्य देखा, और न ही उन लोगों पर जिन्होंने उनकी विविध कविताओं या निबंधों को युगों की गाथा या मानवता की बाइबिल का नाम दिया, क्या हम मिकेलेट के बारे में यह नहीं कह सकते कि वे उन्नीसवीं सदी के इतने परिपूर्ण अवतार हैं कि उनकी सबसे बड़ी खूबियाँ उनके काम में उतनी नहीं, जितनी उनके काम पर विचार करते समय उनके द्वारा अपनाए गए दृष्टिकोण में पाई जाती हैं - न तो उनके 'फ्रांस का इतिहास' में, न ही 'क्रांति का इतिहास' में, बल्कि उनकी पुस्तकों की प्रस्तावनाओं में? प्रस्तावनाएँ, अर्थात् पुस्तकों के बाद लिखे गए पृष्ठ, जिनमें वे पुस्तकों पर विचार करते हैं, और जिनमें हमें जगह-जगह कुछ ऐसे वाक्यांश भी शामिल करने होंगे जो आमतौर पर "क्या मैं कहूँ?" से शुरू होते हैं - जो किसी विद्वान की सावधानी नहीं, बल्कि एक संगीतकार की लय है। दूसरे संगीतकार, जो इस समय मुझे आनंदित कर रहे थे, वैगनर, अपनी लेखन-मेज़ की दराज से कुछ उत्कृष्ट अंश निकालकर उसे एक विषय के रूप में प्रस्तुत कर रहे थे, जो उस रचना में आवश्यक प्रतीत होता था जिसके बारे में उन्होंने रचना करते समय नहीं सोचा था। तब तक वे एक पौराणिक ओपेरा, फिर दूसरा और उसके बाद कई अन्य ओपेरा की रचना कर चुके थे, और अचानक उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने एक चतुर्ग्रंथी लिख डाली है। उन्हें शायद बाल्ज़ाक के समान ही उत्साह का अनुभव हुआ होगा, जब उन्होंने अपनी रचनाओं को एक अजनबी और एक पिता की दृष्टि से देखा, एक में राफेल की पवित्रता और दूसरे में सुसमाचार की सादगी पाई, और अचानक उन पर पूर्वव्यापी प्रकाश डालते हुए निर्णय लिया कि उन्हें एक ऐसे चक्र में एक साथ लाना बेहतर होगा जिसमें वही पात्र पुनः प्रकट हों, और इस संयोजन के कार्य में उन्होंने अपने काम में ब्रश का एक ऐसा स्ट्रोक जोड़ा, जो अंतिम और सबसे उदात्त था। एक ऐसी एकता जो अंतर्निहित थी, कृत्रिम नहीं; अन्यथा यह उन साधारण लेखकों की अन्य सभी व्यवस्थित रचनाओं की तरह धूल में मिल जाती, जो शीर्षकों और उपशीर्षकों की जटिल सहायता से स्वयं को एक एकल और उत्कृष्ट उद्देश्य का अनुसरण करने का आभास देते हैं। काल्पनिक नहीं, बल्कि अंतर्निहित होने के कारण शायद और भी अधिक वास्तविक, उत्साह के उस क्षण से जन्मी जब यह उन टुकड़ों के बीच विद्यमान पाई जाती है जिन्हें केवल एक साथ जोड़ने की आवश्यकता होती है। एक ऐसी एकता जो स्वयं से अनभिज्ञ रही है, इसलिए जीवंत है, तार्किक नहीं; जिसने विविधता को प्रतिबंधित नहीं किया है,

न ही निष्पादन को ठंडा किया है। यह (इस बार केवल संपूर्ण कृति पर लागू होते हुए) एक अलग से रचित टुकड़े की तरह उभरती है, एक प्रेरणा से जन्मी, किसी विषय के कृत्रिम विकास द्वारा आवश्यक नहीं, जो शेष भाग का एक अभिन्न अंग बन जाती है। यिसेल्ट की वापसी से पहले आने वाले महान ऑर्केस्ट्रल आंदोलन से पहले, यह स्वयं कृति ही है जिसने चरवाहे की बांसुरी की लगभग भूली हुई ध्वनि को अपनी ओर आकर्षित किया है। और, निःसंदेह, जैसे जहाज के आने पर ऑर्केस्ट्रा की ध्वनि बढ़ती है, जब वह बांसुरी की इन धुनों को पकड़ लेती है, तो उन्हें रूपांतरित कर देती है, उनमें अपना नशा भर देती है, उनकी लय तोड़ देती है, उनके स्वर को स्पष्ट कर देती है, उनकी गति को तेज कर देती है, उनके वाद्ययंत्रों की संख्या बढ़ा देती है, ठीक उसी प्रकार वैगनर स्वयं भी आनंद से भर उठे होंगे जब उन्होंने अपनी स्मृति में एक चरवाहे की धुन को पाया, उसे अपनी रचना में शामिल किया, और उसे अर्थ की पूरी समृद्धि प्रदान की। यह आनंद उन्हें कभी नहीं छोड़ता। उनमें, कवि का कितना भी गहरा दुख क्यों न हो, उसे शिल्पकार के आनंद से सांत्वना मिलती है, उसे पार कर लिया जाता है—अर्थात्, अफसोस, बहुत जल्द ही नष्ट हो जाता है। लेकिन फिर, विंटेइल के वाक्यांश और वैगनर के बीच मैंने अभी जिस समानता का उल्लेख किया था, उससे कम नहीं, मैं इस ज्वालामुखी जैसी शिल्पकारी के विचार से विचलित हो गया। क्या यही वह चीज़ हो सकती है जिसने महान कलाकारों को मौलिकता का भ्रामक आभास दिया, जो किसी और से अतुलनीय है, एक ऐसी वास्तविकता का प्रतिबिंब जो मानवीय वास्तविकता से परे है, जबकि वास्तव में यह परिश्रम का परिणाम है? यदि कला इससे अधिक कुछ नहीं है, तो यह जीवन से अधिक वास्तविक नहीं है और मुझे कम ही पछतावा होता है। मैं ट्रिस्टन बजाता रहा। ध्वनि की दीवार से वैगनर से अलग होकर, मैं उनकी खुशी सुन सकता था, मुझे अपनी खुशी में शामिल होने के लिए आमंत्रित कर सकता था, मैं अमर युवा हंसी और सिगफ्रीड के प्रहारों को और भी ज़ोर से गूंजते हुए सुन सकता था, जिनमें वे वाक्यांश और भी अद्भुत ढंग से अंकित थे, शिल्पकार का तकनीकी कौशल केवल उन्हें धरती से ऊपर उठने में आसानी प्रदान करता था, ऐसे पक्षी जो लोहेनग्रिन के हंस से नहीं बल्कि उस हवाई जहाज से मिलते-जुलते थे जिसे मैंने बालबेक में अपनी ऊर्जा को ऊर्ध्वाधर गति में परिवर्तित करते हुए, समुद्र के ऊपर तैरते हुए और आकाश में विलीन होते हुए देखा था। शायद, जिस प्रकार सबसे ऊँची उड़ान भरने वाले और सबसे तेज़

उड़ने वाले पक्षियों के पंख अधिक मजबूत होते हैं, उसी प्रकार अनंत का अन्वेषण करने के लिए इन भौतिक वाहनों में से एक की आवश्यकता होती है, इन 120 हॉर्सपावर वाली मशीनों में से एक, जिन पर 'रहस्य' अंकित है, जिसमें फिर भी, चाहे कोई कितनी भी ऊँचाई पर उड़ जाए, इंजन की प्रचंड गर्जना के कारण अंतरिक्ष की शांति का आनंद लेने में कुछ हद तक बाधा आती है!

किसी कारणवश, मेरे चिंतन का प्रवाह, जो अब तक संगीत की यादों में भटक रहा था, अब उन लोगों की ओर मुड़ गया जो हमारे समय के सर्वश्रेष्ठ संगीतकार रहे हैं, जिनमें मैंने मोरेल को भी शामिल किया, हालांकि उनकी योग्यता को थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर बताया। अचानक मेरे विचार एक नया मोड़ ले गए, और मैं मोरेल के चरित्र, उनकी कुछ विलक्षणताओं पर विचार करने लगा। संयोगवश—और यह उस न्यूरोस्थेनिया से संबंधित हो सकता है जिसके वे शिकार थे, हालांकि इसे उससे भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए—मोरेल अपने जीवन के बारे में बात करने के आदी थे, लेकिन हमेशा उसका इतना अस्पष्ट चित्र प्रस्तुत करते थे कि कुछ भी समझना मुश्किल होता था। उदाहरण के लिए, उन्होंने एम. डी चार्लस के समक्ष स्वयं को पूरी तरह से इस शर्त पर प्रस्तुत किया कि उन्हें अपनी शामें खाली रखनी होंगी, क्योंकि वे रात के खाने के बाद बीजगणित पर व्याख्यानों की एक श्रृंखला में भाग लेना चाहते थे। एम. डी चार्लस ने यह मान लिया, लेकिन व्याख्यानों के बाद उनसे मिलने पर जोर दिया। "असंभव, यह एक पुरानी इतालवी पेंटिंग है" (यह व्यंग्य जब इस तरह लिखा जाता है तो इसका कोई अर्थ नहीं रह जाता; लेकिन एम. डी चार्लस ने मोरेल को 'ल'एजुकेशन सेंटीमेंटल' पढ़ने के लिए कहा था, जिसके अंतिम अध्याय से पहले वाले अध्याय में फ्रेडरिक मोरो ने इस अभिव्यक्ति का प्रयोग किया है, इसलिए मोरेल का मज़ाक करने का तरीका यह था कि 'असंभव' शब्द का उच्चारण करते ही उसके बाद "यह एक पुरानी इतालवी पेंटिंग है" कहना न भूलें।) "व्याख्यान बहुत देर तक चलते हैं, और मैंने व्याख्याता को पहले ही बहुत परेशान कर दिया है, जो स्वाभाविक रूप से नाराज़ होंगे अगर मैं बीच में ही चला जाऊं।" "लेकिन व्याख्यानों में भाग लेने की कोई आवश्यकता नहीं है, बीजगणित तैराकी या अंग्रेजी जैसी कोई चीज़ नहीं है, जिसे आप किताब से भी उतनी ही अच्छी तरह सीख सकते हैं," एम. डी चार्लस ने उत्तर दिया, जिन्होंने शुरू से ही अनुमान लगा लिया था कि ये बीजगणित के व्याख्यान उन छवियों में से एक हैं जिन्हें समझना

असंभव है। शायद उसका किसी महिला से कोई संबंध था, या अगर मोरेल संदिग्ध तरीकों से पैसा कमाना चाहता था और गुप्त पुलिस से जुड़ गया था, तो जासूसों के साथ कोई रात्रिकालीन अभियान, या शायद, इससे भी बदतर, किसी वेश्यालय में काम करने वाले युवकों में से एक के रूप में काम करना। मोरेल ने एम. डी चार्लस को आश्वासन दिया, "किताब से पढ़ना कहीं ज्यादा आसान है, क्योंकि व्याख्यानों का कोई मतलब ही नहीं निकलता।" एम. डी चार्लस शायद जवाब दे सकते थे, "तो फिर मेरे घर में क्यों नहीं पढ़ते, जहाँ आप कहीं ज्यादा सहज महसूस करेंगे?" लेकिन उन्होंने ऐसा न करने का ध्यान रखा, क्योंकि वे जानते थे कि शाम के समय को अलग रखने के मूल तत्व को बरकरार रखते हुए, काल्पनिक बीजगणित का पाठ्यक्रम नृत्य या चित्रकारी के अनिवार्य पाठ में बदल जाएगा। एम. डी चार्लस को शायद यह एहसास हो गया होगा कि वे कम से कम आंशिक रूप से गलत थे, क्योंकि मोरेल अक्सर बैरन के घर में समीकरण हल करने में समय बिताता था। एम. डी. चार्लस ने यह आपत्ति उठाई कि एक वायलिन वादक के लिए बीजगणित का कोई खास उपयोग नहीं हो सकता। मोरेल ने जवाब दिया कि यह एक ऐसा साधन था जिससे उनका समय कटता था और वे अपने न्यूरोस्टेनिया (शरीर पर होने वाला तनाव) पर काबू पा लेते थे। निस्संदेह एम. डी. चार्लस ने पूछताछ की होगी, यह जानने की कोशिश की होगी कि आखिर ये रहस्यमय और अनिवार्य बीजगणित के व्याख्यान क्या थे जो केवल रात में ही दिए जाते थे। लेकिन एम. डी. चार्लस मोरेल के कामों की पेचीदगियों को सुलझाने में सक्षम नहीं थे, क्योंकि वे स्वयं सामाजिक जीवन की उलझनों में बहुत अधिक उलझे हुए थे। जो मुलाकातें वह करता था या जिसके लिए वह जाता था, अपने क्लब में बिताया गया समय, डिनर पार्टियां, थिएटर में बिताई गई शामें, ये सब उसे समस्या के बारे में सोचने से रोकते थे, या उस हिंसक और प्रतिशोधी दुश्मनी के बारे में भी नहीं, जिसमें मोरेल ने (कथित तौर पर) लिप्त होकर उसे उन विभिन्न परिवेशों, उन विभिन्न शहरों में छिपाने की कोशिश की थी, जहां उसने अपना जीवन व्यतीत किया था, और जहां लोग आज भी उसके बारे में कांपते हुए, दबी हुई आवाज़ में बात करते हैं, कभी भी उसके बारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं करते।

दुर्भाग्य से, उस दिन मुझे मोरेल की इस सनकी चिड़चिड़ाहट का एक ऐसा ही प्रकोप सुनने को मिला, जब मैं पियानो से उठकर अल्बर्टीन से मिलने आंगन में गया, जो अभी तक नहीं आई

थी। जब मैं जुपियन की दुकान के पास से गुजरा, जहाँ मोरेल और वह लड़की, जो शायद जल्द ही उसकी पत्नी बनने वाली थी, अकेले थे, मोरेल ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था, जिससे उसकी बोली में एक ऐसा लहजा झलक रहा था जो मैंने पहले कभी नहीं सुना था, एक देहाती लहजा, जो आमतौर पर दबा हुआ होता था, और वाकई बहुत अजीब था। उसके शब्द भी कम अजीब नहीं थे, फ्रांसीसी भाषा के हिसाब से तो त्रुटिपूर्ण थे ही, लेकिन उसका ज्ञान भी अपूर्ण था। "क्या तुम यहाँ से निकल जाओगी, बड़ी गद्दी, बड़ी गद्दी, बड़ी गद्दी," वह उस बेचारी लड़की से बार-बार कह रहा था, जो पहले तो उसकी बात समझ ही नहीं पाई थी, और अब कांपती और गुस्से से भरी उसके सामने बेसुध खड़ी थी। "मैंने तुम्हें यहाँ से चले जाने को कहा था ना, बड़े बदमाश, बड़े बदमाश; जाओ और अपने चाचा को बुला लाओ, नहीं तो मैं उन्हें तुम्हारी असलियत बता दूँगी, वेश्या।" ठीक उसी क्षण, आँगन में जुपियन की आवाज़ सुनाई दी, जो अपने एक दोस्त से बात करते हुए घर लौट रहा था। और जैसा कि मैं जानती थी कि मोरेल बिलकुल कायर है, मैंने सोचा कि जुपियन और उसके दोस्त का साथ देना बेकार है, क्योंकि वे अगले ही पल दुकान में घुस जाते। मैं मोरेल से बचने के लिए फिर से ऊपर चली गई। मोरेल ने जुपियन को बुलाने का इतना नाटक किया (शायद लड़की को डराने और वश में करने के लिए, जो कि ब्लैकमेल का एक निराधार प्रयास था), लेकिन आँगन में उसकी आवाज़ सुनते ही वह तुरंत वहाँ से भाग गया। मैंने जो शब्द यहाँ लिखे हैं, वे कुछ भी नहीं हैं, वे यह नहीं समझा सकते कि ऊपर जाते समय मेरा दिल इतनी ज़ोर से क्यों धड़क रहा था। जिन दृश्यों के हम वास्तविक जीवन में साक्षी हैं, उनमें सैनिकों द्वारा सैन्य आक्रमण के संदर्भ में "आश्चर्य का लाभ" कहे जाने वाले तत्व में एक अतुलनीय शक्ति निहित है, और यद्यपि मुझे यह जानकर सुखद राहत मिली कि अल्बर्टीन ट्रोकाडेरो में रहने के बजाय मेरे पास घर लौट रही थी, फिर भी मेरे कानों में उन शब्दों की गूंज दस बार सुनाई दे रही थी: "ग्रैंड पिएड डे ग्रू, ग्रैंड पिएड डे ग्रू," जिसने मुझे इतना भयभीत कर दिया था।

धीरे-धीरे मेरी बेचैनी कम हो गई। अल्बर्टीन घर आ रही थी। मुझे थोड़ी देर में उसकी घंटी सुनाई देगी। मुझे लगा कि मेरा जीवन अब वैसा नहीं रहा जैसा हो सकता था, और घर में ऐसी स्त्री का होना, जिसके साथ स्वाभाविक रूप से, उसके घर लौटने पर मुझे बाहर जाना पड़ता, जिसके सौंदर्य में मेरी सारी शक्ति और ऊर्जा अधिकाधिक लग जाती, मुझे एक ऐसे पेड़ की

तरह बना रहा था जो खिल तो चुका है, लेकिन फलों के बोझ से दबकर झुक गया है और उसकी सारी शक्ति उसी में समा गई है। एक घंटे पहले की चिंता के विपरीत, अल्बर्टीन के लौटने की उम्मीद में अब जो शांति मुझे महसूस हो रही थी, वह सुबह उसके घर से निकलने से पहले की शांति से कहीं अधिक थी। भविष्य की आशंका से, जिस पर मेरी मालकिन की विनम्रता ने मुझे व्यावहारिक रूप से प्रभुत्व स्थापित करने में सक्षम बना दिया था, मैं और अधिक दृढ़ हो गया, मानो यह आसन्न, आग्रहपूर्ण, अपरिहार्य, सौम्य उपस्थिति से भरा और स्थिर हो गया हो। यह शांति (जो हमें स्वयं में सुख खोजने के दायित्व से मुक्त करती है) पारिवारिक भावना और घरेलू सुख से उत्पन्न होती है। परिवार और घर: यही भावना फिर से, उसी भावना से कम नहीं थी जिसने मुझे अल्बर्टीन की प्रतीक्षा करते समय इतनी शांति प्रदान की थी, वही भावना जो मैंने बाद में उसके साथ गाड़ी में जाते समय महसूस की। उसने एक पल के लिए अपना दस्ताना उतारा, शायद मेरे हाथ को छूने के लिए, या मुझे अपनी छोटी उंगली पर, मैडम बोंटेम्प्स द्वारा दी गई अंगूठी के बगल में, एक और अंगूठी दिखाकर चकित करने के लिए, जिस पर एक साफ माणिक की बड़ी और चिकनी सतह दिखाई दे रही थी। "वाह! एक और अंगूठी, अल्बर्टीन। तुम्हारी चाची तो उदार हैं!" "नहीं, यह मुझे मेरी चाची से नहीं मिली," उसने हंसते हुए कहा। "इसे मैंने ही खरीदा था, अब तुम्हारी वजह से मैं काफी पैसे बचा पा रही हूँ। मुझे तो यह भी नहीं पता कि यह पहले किसकी थी। एक यात्री, जिसके पास पैसों की कमी थी, इसे ले मैन्स के उस होटल के मालिक के पास छोड़ गया था जहाँ मैं ठहरी थी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इसका क्या करे, और वह इसे इसकी कीमत से बहुत कम में भी दे देता। लेकिन फिर भी यह मेरे लिए बहुत महंगी थी। अब तुम्हारी वजह से मैं समझदार बन रही हूँ, इसलिए मैंने उसे पत्र लिखकर पूछा कि क्या यह अभी भी उसके पास है। और यह रही।" "अल्बर्टीन, अब तो बहुत सारी अंगूठियाँ हो गईं। जो अंगूठी मैं तुम्हें देने वाली हूँ, उसे तुम कहाँ रखोगी? खैर, यह एक खूबसूरत अंगूठी है, मुझे माणिक के चारों ओर जो खुदा हुआ है, वह ठीक से समझ नहीं आ रहा, यह किसी मुस्कुराते हुए आदमी के सिर जैसा दिखता है। लेकिन मेरी आँखें इतनी तेज़ नहीं हैं।" "तुम्हारी आँखें जितनी भी तेज़ हों, कोई फर्क नहीं पड़ेगा। मुझे भी समझ नहीं आ रहा।" अतीत में अक्सर ऐसा होता था, जब मैं किसी के संस्मरण या उपन्यास पढ़ता था, जिसमें एक पुरुष हमेशा किसी महिला के साथ गाड़ी में घूमने

जाता है, उसके साथ चाय पीता है, तो मेरा भी ऐसा करने का मन करता था। कई बार मुझे लगता था कि मैं सफल हो गया हूँ, जैसे कि जब मैं सेंट-लूप की प्रेमिका को अपने साथ बाहर ले गया या उसके साथ रात के खाने पर गया। लेकिन यह विचार कि मैं उस क्षण वास्तव में उपन्यास के उस पात्र का अभिनय कर रहा था, जिसे मैं ईर्ष्या करता था, व्यर्थ ही मेरी सहायता करता था। इस विचार ने मुझे आश्वस्त किया कि मुझे राहेल की संगति में आनंद मिलना चाहिए, लेकिन मुझे कोई आनंद नहीं मिला। क्योंकि, जब भी हम किसी ऐसी चीज़ की नकल करने का प्रयास करते हैं जो वास्तव में मौजूद है, तो हम भूल जाते हैं कि यह चीज़ नकल करने की इच्छा से नहीं, बल्कि एक अचेतन शक्ति से उत्पन्न हुई थी जो स्वयं भी वास्तविक है; लेकिन राहेल के साथ बाहर जाने के उस नाजुक आनंद को चखने की मेरी सारी इच्छा के बावजूद, जो विशेष अनुभूति मुझे नहीं मिल पा रही थी, अब मैं उसे बिना किसी प्रयास के चख रहा था, लेकिन बिल्कुल अलग, सच्चे और गहरे कारणों से। एक उदाहरण लीजिए, क्योंकि मेरी ईर्ष्या ने मुझे अल्बर्टीन को अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दिया, और जैसे ही मैं घर से बाहर निकलने में सक्षम हुआ, मैंने उसे अपने बिना कहीं भी जाने नहीं दिया। मैंने इसका अनुभव अभी किया है, क्योंकि हमारा ज्ञान उन बाहरी वस्तुओं का नहीं है जिन्हें हम देखने का प्रयास करते हैं, बल्कि अनैच्छिक संवेदनाओं का है। क्योंकि पहले भले ही कोई स्त्री मेरे साथ एक ही गाड़ी में बैठी हो, वह वास्तव में मेरे साथ नहीं होती थी, जब तक कि वह हर पल मेरे लिए वैसी ही आवश्यकता से पुनर्जीवित न हो जाती थी जैसी मैं अल्बर्टीन के लिए महसूस करता था। जब तक मेरी निगाहों का निरंतर स्पर्श उसे वे रंग नहीं लौटाता था जिन्हें निरंतर ताज़ा करने की आवश्यकता होती है। जब तक मेरी इंद्रियाँ, भले ही संतुष्ट हों लेकिन स्मृति से संपन्न हों, उन रंगों के नीचे स्वाद और सार नहीं रखती थीं। जब तक, इंद्रियों और उन्हें ऊंचा उठाने वाली कल्पना के साथ मिलकर, ईर्ष्या उस स्त्री को मेरे साथ गुरुत्वाकर्षण के नियम के समान शक्तिशाली आकर्षण से संतुलित नहीं रखती थी। हमारी कार तेजी से उन चौड़ी सड़कों पर आगे बढ़ रही थी, जिन पर बने घरों की कतारें, धूप और ठंड के गुलाबी मिश्रण जैसी लग रही थीं, मुझे श्रीमती स्वान से उनके गुलदाउदी के कोमल प्रकाश में मिलने की याद दिला रही थीं, इससे पहले कि लैंप जलाने का समय हो जाए।

मुझे उन्हें ठीक से देखने का भी समय नहीं मिला, क्योंकि कार का शीशा और मेरे बेडरूम की खिड़की का शीशा, दोनों के बीच का फासला था। एक युवा फल बेचने वाली, एक दूधवाली, अपनी दुकान के दरवाजे पर खड़ी थी, सूरज की रोशनी में किसी नायिका की तरह चमक रही थी, जिसे मेरी इच्छा ही रोमांच से भर देने के लिए काफी थी, एक ऐसे प्रेम प्रसंग की दहलीज पर जिसे मैं शायद कभी जान ही न पाऊं। मैं अल्बर्टीन से रुकने के लिए नहीं कह सका, और अब वे युवतियां दिखना बंद हो चुकी थीं जिनके चेहरे मेरी आंखों ने मुश्किल से ही देखे थे, सुनहरी धूप में उनके ताज़े रंग को मुश्किल से ही छुआ था। जब मैंने किसी शराब व्यापारी की नौकरानी को उसकी मेज पर या किसी धोबिन को सड़क पर बातें करते देखा, तो मेरे मन में जो भावना उमड़ी, वही भावना किसी देवी को पहचानने पर उमड़ती है। अब जब ओलंपस का अस्तित्व नहीं रहा, तो उसके निवासी धरती पर ही निवास करते हैं। और जब चित्रकार किसी पौराणिक दृश्य को चित्रित करते समय वीनस या सेरेस के रूप में साधारण कुल की युवतियों को चित्रित करते हैं, जो सबसे घिनौने काम करती हैं, तो वे अपवित्रता करने के बजाय, केवल उनमें वे गुण और विशेषताएँ जोड़ देते हैं, उन्हें वापस लौटा देते हैं जो उन्होंने खो दी थीं। "ट्रोकाडेरो के बारे में तुम्हारा क्या विचार था, तुम नन्हे आवारा?" "मुझे बहुत खुशी है कि मैं वहाँ से तुम्हारे साथ घूमने आई। वास्तुकला के लिहाज से, यह बहुत ही घटिया है, है ना? मुझे लगता है कि यह डेविड ने बनाया है।" "लेकिन मेरी नन्ही अल्बर्टीन कितनी ज्ञानी हो रही है! बेशक इसे डेविड ने ही बनाया था, लेकिन मैं तुम्हें तुरंत नहीं बता सकती थी।" "जब तुम सो रहे होते हो, मैं तुम्हारी किताबें पढ़ती हूँ, तुम बूढ़े आलसी।" "सुनो, बच्ची, तुम इतनी तेज़ी से बदल रही हो और इतनी समझदार हो रही हो" (यह सच था, लेकिन अगर यह सच न भी होता तो भी मुझे इस बात का कोई अफ़सोस नहीं था कि उसे कम से कम यह तसल्ली तो मिल रही थी कि मेरे घर में बिताया गया समय पूरी तरह से व्यर्थ नहीं जा रहा है) "कि मुझे तुम्हें ऐसी बातें बताने में कोई आपत्ति नहीं है जिन्हें आम तौर पर झूठा माना जाता है और जो उस सत्य की ओर ले जाती हैं जिसकी मैं खोज कर रहा हूँ। तुम्हें पता है प्रभाववाद का क्या मतलब होता है?" "बेशक!" ठीक है, तो मेरा मतलब यही है: आपको मार्कोविल ल'ऑर्ग्यूइल्यूज़ का वह गिरजाघर याद है जिसे एल्स्टिर नापसंद करते थे क्योंकि वह नया था। क्या यह उनके अपने प्रभाववाद का खंडन नहीं है जब वे ऐसी इमारतों को उस सामान्य प्रभाव से अलग कर देते हैं

जिसमें वे समाहित हैं, ताकि उन्हें उस प्रकाश से बाहर निकाला जा सके जिसमें वे घुलमिल जाती हैं और एक पुरातत्वविद् की तरह उनके आंतरिक गुणों की जांच की जा सके? जब वे चित्रकारी शुरू करते हैं, तो क्या एक अस्पताल, एक स्कूल, एक होर्डिंग पर लगा एक पोस्टर उतना ही मूल्यवान नहीं है जितना कि उनके बगल में एक अविभाज्य छवि में खड़ा एक अमूल्य गिरजाघर? याद कीजिए कैसे अग्रभाग सूरज की गर्मी से तप रहा था, कैसे संतों की नक्काशीदार पट्टी प्रकाश के सागर पर तैर रही थी। क्या फर्क पड़ता है कि कोई इमारत नई है, अगर वह पुरानी दिखती है, या भले ही वह पुरानी न दिखे। पुराने इलाकों में समाई सारी कविता आखिरी बूंद तक निचोड़ ली गई है, लेकिन अगर आप नए इलाकों में अमीर व्यापारियों के लिए हाल ही में बने कुछ घरों को देखें, जहां पत्थर सभी ताज़ी कटी हुई और अभी भी बिल्कुल सफेद, क्या वे जुलाई की दोपहर की उमस भरी हवा को चीरती हुई प्रतीत नहीं होतीं, उस समय जब दुकानदार उपनगरों में दोपहर के भोजन के लिए घर जाते हैं, एक ऐसी कर्कश चीख के साथ जो अंधेरे भोजन कक्ष में भोजन शुरू होने की प्रतीक्षा कर रही चेरी की गंध जितनी तीखी होती है, जहाँ इंद्रधनुषी कांच के चाकू रखने के स्टैंड चार्ट्रेस की खिड़कियों जितनी सुंदर बहुरंगी आग को प्रक्षेपित करते हैं? "आप कितने अद्भुत हैं! अगर मैं कभी बुद्धिमान बनूँ, तो यह पूरी तरह से आपकी वजह से होगा।" "इतने अच्छे दिन में आप ट्रोकाडेरो से अपनी नज़रें क्यों हटाते हैं, जिसके जिराफ़ की गर्दन जैसे मीनारें पाविया के चार्टरहाउस की याद दिलाती हैं?" "मुझे भी, अपनी पहाड़ी पर इस तरह खड़े होकर, आपके पास मौजूद एक मांटेग्ना की याद आई, मुझे लगता है कि यह सेंट सेबेस्टियन का है, जहाँ पृष्ठभूमि में एक एम्फीथिएटर जैसा शहर है, और आप कसम खा सकते हैं कि आपने ट्रोकाडेरो को देखा है।" "देखो! लेकिन तुम्हें मेरा मंटेग्ना कैसे मिला? तुम तो कमाल हो!" अब हम एक अधिक साधारण इलाके में पहुँच चुके थे, और प्रत्येक काउंटर के पीछे एक सहायक वीनस की मूर्ति स्थापित होने से यह एक उपनगरीय वेदी जैसा लग रहा था, जिसके चरणों में मैं अपना शेष जीवन सहर्ष व्यतीत करना चाहता था।

जैसे कोई व्यक्ति असमय मृत्यु की पूर्व संध्या पर करता है, मैंने मन ही मन उन सुखों की एक सूची बनाई जिनसे अल्बर्टीन द्वारा मेरी स्वतंत्रता पर विराम लगाने के कारण मैं वंचित रह गया था। पासी में खुली सड़क पर, जहाँ पैदल मार्ग इतने भीड़भाड़ वाले थे, लड़कियों के एक समूह

ने, एक-दूसरे की कमर में बाहें डाले हुए, अपनी मुस्कान से मुझे विस्मित कर दिया। मेरे पास इसे स्पष्ट रूप से देखने का समय नहीं था, लेकिन यह शायद ही संभव है कि मैंने इसे बढ़ा-चढ़ाकर बताया हो; आखिरकार, किसी भी भीड़ में, युवाओं की किसी भी भीड़ में, एक नेक चेहरे की छवि देखना कोई असामान्य बात नहीं है। इसलिए सार्वजनिक अवकाशों पर एकत्रित ये भीड़ विलासिताप्रिय व्यक्ति के लिए उतनी ही अनमोल है जितनी कि पुरातत्वविद् के लिए उस जमीन का भीड़भाड़ वाला टुकड़ा जिसमें खुदाई से प्राचीन पदक मिल सकते हैं। हम बोइस पहुँचे। मैंने सोचा कि अगर अल्बर्टीन मेरे साथ बाहर न आई होती, तो शायद इस समय मैं शैंप्स-एलिसी के परिसर में वैगनर के संगीत की गर्जना सुन रहा होता, मानो वो तूफ़ान पूरे ऑर्केस्ट्रा को चीर रहा हो, और मेरे द्वारा गुनगुनाई जा रही चरवाहे की बांसुरी की धुन को, जो हल्की फुहार की तरह थी, अपनी ओर खींच रहा हो, उड़ा रहा हो, उसे नया रूप दे रहा हो, बिगाड़ रहा हो, बांट रहा हो, और एक बढ़ते हुए बवंडर में बहा ले जा रहा हो। मैंने ठान लिया था कि हमारी यात्रा छोटी होगी और हम जल्दी घर लौट आएंगे, क्योंकि अल्बर्टीन को बिना बताए मैंने उस शाम वर्दुरिन के घर जाने का फैसला कर लिया था। उन्होंने हाल ही में मुझे निमंत्रण भेजा था जिसे मैंने बाकी सभी निमंत्रणों के साथ कूड़ेदान में फेंक दिया था। लेकिन मैंने आज शाम के लिए अपना इरादा बदल दिया, क्योंकि मैं यह पता लगाने की कोशिश करना चाहता था कि दोपहर में अल्बर्टीन वहां किन लोगों से मिलने की उम्मीद कर रही होगी। सच कहूँ तो, अल्बर्टीन के साथ मेरे रिश्ते उस मुकाम पर पहुँच चुके थे, जहाँ अगर सब कुछ ऐसा ही चलता रहा, अगर हालात सामान्य रहे, तो एक औरत हमारे लिए सिर्फ़ एक शुरुआती बिंदु बनकर रह जाती है, किसी दूसरी औरत की ओर बढ़ने का ज़रिया। वो अब भी हमारे दिल में एक छोटी सी जगह रखती है; हम हर शाम अनजान औरतों की तलाश में निकल पड़ते हैं, खासकर उन अनजान औरतों की जो उसे जानती हों और जो हमें उसके जीवन के बारे में बता सकें। आख़िरकार, हमने उसे पा लिया है, उससे वो सब कुछ जान लिया है जो उसने हमें बताने की सहमति दी थी। उसका जीवन अब भी वही है, लेकिन उसका वो हिस्सा जिसे हम नहीं जानते, वो बातें जिनके बारे में हमने उससे व्यर्थ ही सवाल किए हैं और जिन्हें हम नए लोगों से जान पाएँगे।

अगर अल्बर्टीन के साथ मेरा जीवन मुझे वेनिस जाने, यात्रा करने से रोक रहा था, तो कम से कम इस बीच, अगर मैं अकेला होता, तो इस सुहावने रविवार की धूप में बिखरी हुई उन युवतियों से जान-पहचान कर लेता, जिनकी सुंदरता में मैंने उनके भीतर छिपे अनजान जीवन को भी एक महत्वपूर्ण स्थान दिया। क्या वे आँखें, जिन्हें हम देखते हैं, एक ऐसी दृष्टि से भेदी नहीं होतीं, जिसके बारे में हम नहीं जानते कि उसमें कौन सी छवियाँ, यादें, उम्मीदें, तिरस्कार छिपे हैं, एक ऐसी दृष्टि जिससे हम उन्हें अलग नहीं कर सकते? क्या राहगीर का जीवन, अपने आप में, उन भौंहों के सिकुड़ने, उन नथुनों के फैलने को एक अलग अर्थ नहीं देता? अल्बर्टीन की उपस्थिति ने मुझे उनके पास जाने से रोक दिया और शायद उन्हें चाहने की इच्छा को भी नहीं छोड़ा। जो व्यक्ति अपने भीतर जीने की इच्छा और रोजमर्रा की जिंदगी की चीजों से कहीं अधिक सुखद किसी चीज में विश्वास बनाए रखना चाहता है, उसे बाहर निकलना चाहिए; क्योंकि सड़कें, गलियाँ देवियों से भरी हैं। लेकिन देवियाँ हमें उनके पास आने नहीं देतीं। इधर-उधर, पेड़ों के बीच, किसी कैफे के प्रवेश द्वार पर, एक वेट्रेस किसी पवित्र उपवन के किनारे बैठी अप्सरा की तरह देख रही थी, जबकि उसके पीछे तीन लड़कियाँ अपने बगल में रखी साइकिलों के घुमावदार चाप के पास बैठी थीं, मानो तीन अमर देवियाँ बादलों या उन शानदार घोड़ों के सहारे बैठी हों जिन पर वे अपनी पौराणिक यात्राएँ करती हैं। मैंने गौर किया कि जब भी अल्बर्टीन एक पल के लिए इन लड़कियों को गहरी एकाग्रता से देखती, तो तुरंत मेरी ओर देखने लगती। लेकिन मैं न तो इस गहन चिंतन से और न ही इसकी संक्षिप्तता से, जिसके लिए इसकी तीव्रता ने क्षतिपूर्ति की; बाद वाले के लिए, अक्सर ऐसा होता था कि अल्बर्टीन, चाहे थकावट के कारण हो या इसलिए कि यह एक गहन व्यक्ति का दूसरों को देखने का तरीका था, मेरे पिता को, या शायद फ्रांस्वा को, एक प्रकार के गहन अध्ययन में इस तरह देखती रहती थी; और जिस तेज़ी से उसने मेरी ओर मुड़कर देखा, उसका कारण शायद यह था कि अल्बर्टीन, मेरे संदेह को जानते हुए, भले ही वे निराधार हों, उन्हें कोई आधार न देना चाहती हो। इसके अलावा, अल्बर्टीन का यह ध्यान, जो मुझे अपराध जैसा लगता (और अगर यह ध्यान पुरुषों की ओर होता तो और भी ज़्यादा अपराध जैसा), मैंने बिना एक पल भी खुद को दोषी समझे, बल्कि लगभग यह तय करते हुए कि अल्बर्टीन मुझे अपनी उपस्थिति से कार रोककर उनके साथ जाने से रोककर सभी मिडिनेट्स पर केंद्रित कर दिया। हम किसी चीज़

की इच्छा को निर्दोष और दूसरे व्यक्ति की उस चीज़ की इच्छा को घृणित मानते हैं। और एक ओर हमारी अपनी चिंताएँ और दूसरी ओर जिस व्यक्ति से हम प्रेम करते हैं, उसके बीच का यह विरोधाभास केवल इच्छा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि झूठ तक भी फैला हुआ है। झूठ से ज़्यादा आम बात क्या है? चाहे यह उस शारीरिक कमज़ोरी को छुपाने की बात हो जिसे हम मज़बूत दिखाना चाहते हैं, किसी बुराई को छिपाना हो, या दूसरे को नाराज़ किए बिना अपनी मनपसंद चीज़ की ओर जाना हो? यह बातचीत का सबसे ज़रूरी और सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होने वाला ज़रिया है। लेकिन यही वह चीज़ है जिसे हम अपने प्रियजन के जीवन से मिटाना चाहते हैं; हम इसकी तलाश करते हैं, इसे महसूस करते हैं, हर जगह इससे नफ़रत करते हैं। यह हमें डराता है, यह रिश्ते में दरार पैदा करने के लिए काफ़ी है, हमें लगता है कि यह सबसे गंभीर दोषों को छुपा रहा है, सिवाय तब जब यह उन्हें इतनी प्रभावी ढंग से छुपाता है कि हमें उनके अस्तित्व का शक ही नहीं होता। यह एक अजीब स्थिति है जिसमें हम एक रोगजनक के प्रति इतने ज़्यादा संवेदनशील हो जाते हैं कि उसका व्यापक प्रसार दूसरों के लिए हानिरहित हो जाता है, लेकिन उस अभागे के लिए इतना गंभीर हो जाता है जो पाता है कि वह अब इससे अछूता नहीं है।

इन खूबसूरत लड़कियों का जीवन (मेरे लंबे समय तक एकांत में रहने के कारण, मैं उनमें से किसी से बहुत कम ही मिल पाता था) मुझे उन सभी लोगों की तरह प्रतीत होता था, जिनमें अनुभूति की सुगमता ने कल्पना शक्ति को नष्ट नहीं किया है, एक ऐसी चीज जो मेरे लिए जानी-पहचानी किसी भी चीज से बिल्कुल अलग थी, उतनी ही वांछनीय जितनी कि यात्रा के दौरान हमारे लिए मिलने वाले सबसे अद्‌भुत शहर।

जिन महिलाओं से मैं मिला था, जिन शहरों में मैं गया था, उनसे मुझे जो निराशा हुई थी, उसके बावजूद मैं दूसरों के आकर्षण में फंसने या उनकी वास्तविकता पर विश्वास करने से नहीं रुका; ठीक वैसे ही जैसे वेनिस को देखना—वही वेनिस जिसके लिए बसंत का मौसम भी मुझे तरसने पर मजबूर कर देता था, और जिसे अल्बर्टीन से शादी के कारण मैं देख नहीं पाता—वेनिस को ऐसे नज़ारे में देखना जिसे स्की शायद स्वयं उस जगह से भी ज़्यादा खूबसूरत बताती, मेरे लिए वेनिस की उस यात्रा का विकल्प नहीं होता, जिसकी लंबाई, बिना किसी स्वार्थ के तय की गई थी, मुझे एक अनिवार्य प्रारंभिक कदम लगती थी; ठीक वैसे ही, चाहे वह

कितनी भी सुंदर क्यों न हो, जिसे एक दलाल ने मेरे लिए कृत्रिम रूप से उपलब्ध कराया था, वह उस लड़की का विकल्प नहीं हो सकती जो इस समय अपने भद्दे शरीर के साथ पेड़ों के नीचे टहल रही थी और एक सहेली के साथ हंस रही थी। किसी गुप्त ठिकाने पर मिलने वाली लड़की, चाहे वह इससे भी अधिक सुंदर क्यों न हो, वही नहीं हो सकती, क्योंकि हम किसी अनजान लड़की की आँखों को वैसे नहीं देखते जैसे हम ओपल या अगेट के छोटे-छोटे गोल पत्थरों को देखते हैं। हम जानते हैं कि उन्हें रंग देने वाली छोटी सी किरण या उन्हें चमकाने वाली हीरे की धूल ही एक ऐसे मन, इच्छाशक्ति और स्मृति का सार है जिसमें वह घरेलू जीवन समाहित है जिसे हम नहीं जानते, वे घनिष्ठ मित्र हैं जिनसे हम ईर्ष्या करते हैं। इन सब पर अधिकार करने का प्रयास, जो इतना कठिन और इतना दृढ़ है, वही इसे दृष्टि के लिए इसकी शारीरिक सुंदरता से कहीं अधिक मूल्यवान बनाता है (जो शायद यह समझाने में सहायक हो कि वही युवक किसी ऐसी महिला की कल्पना में एक पूरा रोमांस क्यों जगा सकता है जिसने किसी को यह कहते सुना हो कि वह वेल्स का राजकुमार है, जबकि अपनी गलती का पता चलने के बाद वह उस पर ध्यान देना बंद कर देती है); उस गुप्त घर में उस युवती को ढूंढना, उस अज्ञात जीवन से खाली होना है जो उसमें व्याप्त है और जिसे हम उसके साथ प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं; यह उन आंखों के एक जोड़े के पास जाना है जो वास्तव में केवल कीमती पत्थरों के समान हो गई हैं, एक नाक जिसका कांपना फूल के कांपने की तरह अर्थहीन है। नहीं, उस समय जो अनजानी युवती वहाँ से गुज़र रही थी, मुझे ऐसा लगा कि अगर मैं उसकी वास्तविकता में विश्वास बनाए रखना चाहता हूँ, तो उसके प्रतिरोध को परखने के लिए अपने व्यवहार को उसके अनुरूप ढालना, अस्वीकृति को चुनौती देना, फिर से प्रयास करना, मिलने का समय तय करना, उसके काम से लौटते समय उसका इंतज़ार करना, लड़की के जीवन के हर पहलू को धीरे-धीरे जानना, उस स्थान को पार करना जो उसके लिए उस आनंद को समाहित करता था जिसकी मैं तलाश कर रहा था, और उस दूरी को पार करना जो उसकी अलग आदतों, उसकी विशेष जीवनशैली ने मेरे और उस ध्यान, उस कृपा के बीच बना रखी थी जिसे मैं पाना और हासिल करना चाहता था, ठीक वैसे ही जैसे ट्रेन में लंबी यात्रा करना, अगर मैं वेनिस की उस वास्तविकता में विश्वास करना चाहता हूँ जिसे मैं देखूंगा और जो केवल विश्व प्रदर्शनी में एक मनोरम दृश्य नहीं होगा। लेकिन इच्छा और यात्रा

के बीच इसी समानता ने मुझे स्वयं से यह प्रतिज्ञा करने के लिए प्रेरित किया कि एक दिन मैं इस अदृश्य शक्ति की प्रकृति को थोड़ा और गहराई से समझूंगा, जो किसी भी आस्था जितनी शक्तिशाली है, या भौतिकी की दुनिया में वायुमंडलीय दबाव जितनी शक्तिशाली है, जो शहरों और महिलाओं को तब तक इतनी ऊँचाई तक ले जाती है जब तक मैं उन्हें नहीं जानता, और जैसे ही मैं उनके पास पहुँचता हूँ, वह उनके नीचे से फिसल जाती है, उन्हें एक ही पल में ढहा देती है और सबसे सामान्य वास्तविकता के निर्जीव स्तर पर गिरा देती है।

आगे चलकर एक और लड़की अपनी साइकिल के पास घुटनों के बल बैठी उसे ठीक कर रही थी। मरम्मत पूरी होने पर, युवा रेसर अपनी साइकिल पर सवार हो गई, लेकिन पुरुषों की तरह उस पर पैर फैलाकर नहीं बैठी। एक पल के लिए साइकिल एक तरफ झुकी, और ऐसा लगा जैसे उस युवा शरीर पर एक पाल, एक विशाल पंख लग गया हो; और देखते ही देखते हम उस युवा प्राणी को पूरी गति से दौड़ते हुए देख पाए - आधा इंसान, आधा पंख, देवदूत या परी - अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती हुई।

यही वो चीज़ थी जिसका आनंद अल्बर्टीन के साथ रहने से मैं नहीं ले पाया। क्या मैंने कहा कि उसने मुझे रोका? बल्कि मुझे यह सोचना चाहिए था कि उसने मुझे किस चीज़ का आनंद लेने का अवसर दिया। अगर अल्बर्टीन मेरे साथ न रहती, आज़ाद होती, तो मैं हर स्त्री को उसकी इच्छा और आनंद का संभावित लक्ष्य मानता, और यह तर्कसंगत भी होता। वे मुझे उन नर्तकियों की तरह लगतीं जो किसी शैतानी नृत्य में, एक व्यक्ति के लिए प्रलोभन का चित्रण करते हुए, दूसरे के दिल में अपने तीर चुभो देती हैं। छोटी लड़कियाँ, स्कूली लड़कियाँ, अभिनेत्रियाँ, मैं उन सभी से कितनी नफ़रत करता! भय की वस्तुएँ, मैं उन्हें ब्रह्मांड की सुंदरता से बाहर कर देता। अल्बर्टीन के बंधन ने मुझे उनके कारण अब और कष्ट न सहने की अनुमति देकर, उन्हें दुनिया की सुंदरता में वापस ला दिया। ईर्ष्या से दिल को चुभने वाली सुई खो देने के कारण, मैं उन्हें निहार सका, अपनी आँखों से उन्हें प्यार से निहार सका, शायद किसी और दिन और भी अंतरंगता से। अल्बर्टीन को एकांत में रखकर, मैंने उसी क्षण ब्रह्मांड को वे सभी इंद्रधनुषी पंख लौटा दिए जो सार्वजनिक उद्यानों, नृत्यशालाओं, रंगमंचों में हमारे सामने से गुज़रते हैं, और जो मुझे एक बार फिर लुभाने लगे क्योंकि अब वह उनके प्रलोभन में नहीं आ सकती थी। वे ही संसार की सुंदरता का निर्माण करते थे। एक समय वे ही अल्बर्टीन

की सुंदरता का भी निर्माण करते थे। मैंने उसे एक रहस्यमयी चिड़िया के रूप में देखा था, फिर समुद्र तट की एक महान अभिनेत्री के रूप में, जिसे चाहा गया था, शायद जीता गया था, इसीलिए मैंने उसे अद्भुत समझा था। जैसे ही वह मेरे घर में कैद हुई, वह चिड़िया जिसे मैंने एक दोपहर आगे की ओर धीरे-धीरे कदम बढ़ाते हुए देखा था, अन्य लड़कियों के समूह से घिरी हुई, जैसे कि कहीं से आए समुद्री पक्षी, अल्बर्टीन ने अपने सारे रंग खो दिए, और दूसरों के उसे पाने के सारे मौके भी। धीरे-धीरे उसने अपनी सुंदरता खो दी। मुझे ऐसी यात्राओं की ज़रूरत पड़ती थी, जिनमें मैं उसकी कल्पना करता था, लेकिन मेरी उपस्थिति के कारण, कोई महिला या कोई युवक मुझे समुद्र तट की भव्यता के बीच उसे फिर से देखने के लिए प्रेरित करता था, भले ही मेरी ईर्ष्या मेरी कल्पना के सुखों के पतन से अलग स्तर की थी। लेकिन इन अचानक उलटफेरों के बावजूद, जिनमें अन्य लोगों द्वारा चाही जाने पर वह मेरी नज़रों में फिर से सुंदर हो जाती थी, मैं उसके मेरे पास आने को दो अवधियों में बाँट सकता था: पहली अवधि जिसमें वह अभी भी, हालाँकि हर दिन कम होती जा रही थी, समुद्र तट की चमकती हुई अभिनेत्री थी, और दूसरी अवधि जिसमें, एक धूसर कैदी बनकर, अपने नीरस रूप में सिमटकर, मुझे उन क्षणों की आवश्यकता होती थी जिनमें मुझे अतीत की याद आती थी ताकि मैं उसे फिर से रंगीन रूप में देख सकूँ।

कभी-कभी, जब मैं उसके प्रति सबसे अधिक उदासीन महसूस करता था, तो मुझे एक दूर का क्षण याद आ जाता था। समुद्र तट पर, उससे जान-पहचान होने से पहले, एक महिला उसके पास खड़ी थी, जिससे मेरे संबंध अच्छे नहीं थे और जिसके साथ अब मुझे लगभग यकीन था कि उसके संबंध थे। तभी वह अचानक हंस पड़ी और मुझे घूरते हुए अभद्र ढंग से मेरी ओर देखने लगी। उसके चारों ओर नीला और चमकीला समुद्र सुलग रहा था। समुद्र तट की धूप में, अल्बर्टीन अपने दोस्तों के बीच सबसे सुंदर थी। वह एक शानदार लड़की थी, जिसने असीम जल के अपने परिचित परिवेश में—उस महिला की नज़रों में अनमोल, जो उसकी प्रशंसा करती थी—मुझ पर यह अक्षम्य अपमान किया था। यह अक्षम्य था, क्योंकि वह महिला शायद बालबेक लौट जाती, शायद उस जगमगाते और गूंजते समुद्र तट पर देखती कि अल्बर्टीन वहां नहीं है। लेकिन उसे यह पता नहीं होता कि वह लड़की मेरे साथ रह रही थी, पूरी तरह से मेरी थी। नीले पानी का विशाल विस्तार, उस विशेष लड़की के प्रति उसके स्नेह की विस्मृति और

उसे दूसरों की ओर मोड़ देने की प्रवृत्ति ने अल्बर्टाइन द्वारा मेरे साथ किए गए अपमान को ढक दिया था, उसे एक चमकदार और अटूट ताबूत में बंद कर दिया था। फिर उस स्त्री के प्रति घृणा मेरे हृदय को कुतरने लगी; अल्बर्टाइन के प्रति भी, लेकिन यह घृणा उस सुंदर, प्रशंसित लड़की के प्रति प्रशंसा के साथ मिश्रित थी, जिसके अद्भुत बाल थे, जिसकी समुद्र तट पर हंसी एक अपमान थी। शर्म, ईर्ष्या, मेरी प्रारंभिक इच्छाओं की स्मृति और उस शानदार दृश्य ने अल्बर्टाइन को उसके पुराने दिनों की सुंदरता, उसके आंतरिक गुणों को लौटा दिया था। और इस प्रकार, उसकी संगति में मुझे जो कुछ हद तक दमनकारी ऊब महसूस होती थी, उसके साथ एक धड़कती हुई इच्छा भी थी, जो शानदार तूफानों और पछतावों से भरी थी; चाहे वह मेरे बेडरूम में मेरे बगल में थी या मैंने उसे अपनी स्मृति में समुद्र तट पर, उसके रंगीन समुद्री वस्त्रों में, समुद्र के संगीत वाद्ययंत्रों की ध्वनि के बीच, मुक्त कर दिया था—अल्बर्टिन, अब उस वातावरण से अलग होकर, अधिकार में और महत्वहीन, अब वापस उसी में डूब गई, मुझसे एक ऐसे अतीत में भाग गई जिसे मैं कभी जान नहीं पाऊंगा, मुझे अपने दोस्त की उपस्थिति में उतना ही दुख पहुंचा रही थी जितना लहर का छींटा या सूरज की गर्मी—अल्बर्टिन को समुद्र तट पर लौटा दिया गया या मेरे कमरे में वापस लाया गया, एक प्रकार के उभयचर प्रेम में।

आगे चलकर, कई लड़कियाँ गेंद खेल रही थीं। ये सभी लड़कियाँ धूप का भरपूर आनंद लेने के लिए बाहर आई थीं, क्योंकि फरवरी के ये दिन, चाहे कितने भी चमकीले क्यों न हों, लंबे समय तक नहीं टिकते और उनकी चमक ढलने के समय को टाल नहीं पाती। उस समय के आने से पहले, हमने कुछ समय गोधूलि बेला में बिताया, क्योंकि जब हम सीन नदी तक पहुँच गए, जहाँ अल्बर्टीन ने लाल पाल की परछाइयों को निहारा और अपनी उपस्थिति से मुझे भी निहारने से रोका, जो पानी के बर्फीले नीले रंग पर पड़ रही थीं, दूर क्षितिज पर एक अकेला घर एक लाल खसखस के फूल की तरह लग रहा था, जिसकी दूर से सेंट-क्लाउड एक खंडित, टूटती-बिखरती, पथरीली चट्टान जैसी लग रही थी, तब हमने अपनी कार छोड़ दी और साथ में काफी दूर तक पैदल चले; वास्तव में कुछ क्षणों के लिए मैंने उसे अपना हाथ दिया, और मुझे ऐसा लगा जैसे उसके हाथ ने मेरे हाथ के चारों ओर जो घेरा बनाया था, उसने हम दोनों को एक कर दिया और हमारे अलग-अलग भाग्य को एक साथ जोड़ दिया।

हमारे पैरों के नीचे, हमारी समानांतर परछाइयाँ, जहाँ वे पास आकर मिलती थीं, एक सुंदर आकृति बना रही थीं। निस्संदेह, घर पर ही मुझे यह एक अद्भुत बात लग रही थी कि अल्बर्टीन मेरे साथ रह रही है, कि वही आकर मेरे बिस्तर पर लेटती है। लेकिन उस अद्भुतता का मानो घर से बाहर, प्रकृति के हृदय में, उस झील के किनारे, जिससे मुझे बहुत लगाव था, पेड़ों के नीचे, केवल उसकी परछाई, उसके पैर की, उसके वक्ष की शुद्ध और सरल परछाई, जिसे सूर्य ने मेरे बगल में पथ की बजरी पर एकरंगी आकृति में चित्रित किया। और मुझे एक ऐसा आकर्षण मिला जो निस्संदेह अधिक अमूर्त था, लेकिन उतना ही अंतरंग था, जितना कि हमारे शरीरों के एक साथ आने, हमारे परछाइयों के विलय में। फिर हम अपनी कार में लौट आए। और घर वापसी के लिए, इसने घुमावदार गलियों की एक श्रृंखला को चुना, जिनके किनारे सर्दियों के पेड़, खंडहरों की तरह, बेलों और कंटीली झाड़ियों से ढके हुए, किसी जादूगर के घर का रास्ता दिखाते हुए प्रतीत हो रहे थे। जैसे ही हम उनके धुंधले आवरण से बाहर निकले, बोइस से निकलते ही हमने पाया कि दिन का उजाला अभी भी इतना तेज था कि मुझे लगा कि रात के खाने से पहले मेरे पास वह सब करने का समय होगा जो मैं करना चाहता था, लेकिन कुछ ही मिनटों बाद, जब हमारी कार आर्क डी ट्रायम्फ के पास पहुँची, तो अचानक आश्चर्य और निराशा के साथ मैंने पेरिस के ऊपर चाँद को समय से पहले पूरा देखा, मानो कोई घड़ी रुक गई हो और हमें यह एहसास दिला रही हो कि हम किसी कार्यक्रम के लिए देर हो रहे हैं। हमने ड्राइवर को हमें घर ले जाने के लिए कहा था। अल्बर्टीन के लिए, इसका मतलब मेरे घर आना भी था। चाहे वे महिलाएं कितनी भी प्रिय क्यों न हों, जिन्हें हमें छोड़कर घर लौटना पड़ता है, उनकी संगति वह शांति प्रदान नहीं करती जो मुझे कार में मेरे बगल में बैठी अल्बर्टीन की संगति में मिली थी। वह संगति हमें उस शून्य में नहीं ले जा रही थी जिसमें प्रेमियों को बिछड़ना पड़ता है, बल्कि मेरे घर में एक और भी स्थिर और सुरक्षित मिलन की ओर ले जा रही थी, जो उसका भी घर था, मेरे उस पर अधिकार का भौतिक प्रतीक। निश्चित रूप से, अधिकार प्राप्त करने के लिए, पहले इच्छा होनी चाहिए। हम किसी रेखा, सतह या द्रव्यमान पर तब तक अधिकार नहीं कर सकते जब तक वह हमारे प्रेम से भरा न हो। लेकिन हमारी यात्रा के दौरान अल्बर्टीन मेरे लिए वैसी नहीं थी, जैसी राहेल पहले थी, मांस और कपड़ों की एक व्यर्थ धूल। बालबेक में मेरी आँखों, मेरे होठों, मेरे हाथों की कल्पना ने उसके

शरीर को इतनी दृढ़ता से गढ़ा था, इतनी कोमलता से तराशा था कि अब इस कार में, उस शरीर को छूने के लिए, उसे अपने भीतर समा लेने के लिए, मुझे अल्बर्टीन से अपने शरीर को सटाने या उसे देखने की भी आवश्यकता नहीं थी; उसे सुनना ही काफी था, और अगर वह चुप भी होती तो यह जानना काफी था कि वह मेरे बगल में है। मेरी अंतर्विमीकृत इंद्रियों ने उसे पूरी तरह से घेर लिया और जब हम मुख्य द्वार पर पहुँचे, तो वह स्वाभाविक रूप से नीचे उतरी। मैं एक पल के लिए रुका और ड्राइवर से बाद में मुझे बुलाने के लिए कहा, लेकिन मेरी निगाहें अब भी उस पर टिकी हुई थीं जब वह मेहराब के नीचे से मेरे आगे से गुज़री। और वही निष्क्रिय, घरेलू शांति मेरे भीतर थी जो मैंने उसे इस तरह देखकर महसूस की थी - ठोस, लालिमा लिए, समृद्ध और बंदी, मेरे साथ स्वाभाविक रूप से घर लौट रही थी, मानो वह मेरी अपनी संपत्ति हो, और अपनी दीवारों से सुरक्षित होकर हमारे घर में विलीन हो रही हो। दुर्भाग्य से, ऐसा लग रहा था कि वह वहाँ खुद को एक कैदी महसूस कर रही थी, और श्रीमती डी ला रोशेफौकॉल्ड की राय से सहमत थी, जिन्होंने किसी के यह पूछे जाने पर कि क्या उन्हें लियानकोर्ट जैसे इतने सुंदर घर में रहने की खुशी नहीं है, उत्तर दिया था: "सुंदर जेल जैसी कोई चीज नहीं होती"; अगर मैं उस शाम मेरे कमरे में साथ भोजन करते समय उसके दयनीय, थके हुए चेहरे को देखकर अंदाजा लगाऊं। मैंने इसे पहले तो नोटिस नहीं किया था; और मैं इस विचार से दुखी था कि अगर अल्बर्टीन न होती (क्योंकि उसके साथ मुझे उस होटल में ईर्ष्या से बहुत अधिक पीड़ा होती जहाँ वह पूरे दिन अजनबियों की भीड़ के संपर्क में रहती), तो शायद मैं उस समय वेनिस में उन छोटे-छोटे रेस्तरां में से किसी एक में भोजन कर रहा होता, जो जहाज के निचले हिस्से की तरह मेहराबदार होते हैं, जहाँ से मूरिश नक्काशी से सजी मेहराबदार खिड़कियों के माध्यम से ग्रांड कैनाल का नजारा दिखता है।

मुझे यह भी बताना चाहिए कि अल्बर्टीन मेरे कमरे में बारबेडीन की एक बड़ी कांस्य प्रतिमा की बहुत प्रशंसा करती थी, जिसे ब्लोच ने पूरी तरह से सही ही बेहद बदसूरत माना था। शायद उसे मेरे द्वारा उसे रखे जाने पर आश्चर्य होने का कम ही कारण था। मैंने कभी भी उसकी तरह कलात्मक प्रभाव के लिए सजावट करने या अपने परिवेश को संवारने की कोशिश नहीं की, मैं बहुत आलसी था, उन चीजों के प्रति बहुत उदासीन था जिन्हें मैं हर दिन देखने का आदी था। चूंकि मेरी रुचि इसमें शामिल नहीं थी, इसलिए मुझे अपने इंटीरियर को सामंजस्यपूर्ण न बनाने

का अधिकार था। शायद, इसके बिना भी, मैं उस कांस्य प्रतिमा को फेंक देता। लेकिन बदसूरत और महंगी चीजें बहुत उपयोगी होती हैं, क्योंकि वे उन लोगों के बीच प्रतिष्ठा का आनंद लेती हैं जो हमें नहीं समझते, जिनकी रुचि हमारी जैसी नहीं है और जिनसे हम प्यार नहीं कर सकते, जो किसी ऐसी दिखावटी वस्तु को नहीं मिल सकती जो अपनी सुंदरता प्रकट नहीं करती। अब, जो लोग हमें नहीं समझते, वे ठीक वही लोग हैं जिनके संबंध में हमारे लिए उस प्रतिष्ठा का उपयोग करना उपयोगी हो सकता है जिसे हमारी बुद्धि ही हमें श्रेष्ठ लोगों के बीच आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त है। अल्बर्टीन शायद वाकई में कलात्मक रुचि दिखाने लगी थी, लेकिन वह अब भी कांस्य के प्रति एक निश्चित सम्मान रखती थी, और यह सम्मान मुझ पर भी प्रतिबिंबित हुआ। अल्बर्टीन की ओर से आया यह विचार मेरे लिए उस कांस्य को रखने के प्रश्न से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था जो थोड़ा अपमानजनक था, क्योंकि मैं अल्बर्टीन से प्यार करता था।

लेकिन अचानक ही मेरे बंधन का विचार मुझ पर से हल्का हो गया और मैं इसे और भी लंबा खींचने के लिए उत्सुक हो गया, क्योंकि मुझे ऐसा लग रहा था कि अल्बर्टीन अपने बंधन को लेकर बहुत सचेत थी। यह सच था कि जब भी मैंने उससे पूछा कि क्या वह मेरे घर में ऊब नहीं रही है, तो उसने हमेशा यही जवाब दिया था कि उसे नहीं पता कि इससे अधिक सुखद समय कहाँ मिल सकता है। लेकिन अक्सर इन शब्दों के पीछे मानसिक थकावट और भाग निकलने की तीव्र इच्छा झलकती थी।

निश्चित रूप से, यदि उसकी रुचियाँ वैसी ही थीं जैसा मैंने उसके बारे में सोचा था, तो उन्हें कभी भी संतुष्ट न कर पाने की यह रोक उसके लिए उतनी ही उत्तेजक रही होगी जितनी मेरे लिए, इतनी अधिक सुकून देने वाली कि मैंने यह मान लिया होता कि उस पर मेरा आरोप लगाना ही सबसे अधिक संभावित है, बशर्ते कि इस परिकल्पना में अल्बर्टीन के असाधारण प्रयासों को शामिल करना इतना कठिन न होता: कभी भी अकेले न रहना, कभी भी अलग न होना, अंदर आते समय एक पल के लिए भी सामने के दरवाजे के बाहर न रुकना, जब भी वह टेलीफोन पर जाती, तो किसी ऐसे व्यक्ति को साथ रखने पर जोर देना जो मुझे उसकी कही हुई बातें दोहरा सके, जैसे कि फ्रांस्वा या एंड्री, और हमेशा मुझे (बिना जानबूझकर ऐसा करते हुए दिखाए) बाद वाली के साथ अकेला छोड़ देना, जब वे साथ बाहर से लौटती थीं, ताकि मैं

उनकी सैर का विस्तृत विवरण प्राप्त कर सकूँ। इस अद्भुत आज्ञाकारिता के विपरीत, अधीरता के कुछ ऐसे झटके भी थे जिन्हें वह तुरंत दबा देती थी, जिससे मुझे खुद से यह पूछना पड़ा कि क्या अल्बर्टीन अपनी इस बेड़ियों को तोड़ने की योजना तो नहीं बना रही थी। कुछ छोटी-मोटी घटनाओं से मेरी धारणा पुष्ट होती प्रतीत हुई। एक दिन जब मैं अकेले पासी की तरफ गया और गिज़ेल से मिला, तो हम इधर-उधर की बातें करने लगे। थोड़ी देर बाद, थोड़ा गर्व महसूस करते हुए, मैंने उसे बताया कि मैं अल्बर्टीन से लगातार मिल रहा हूँ। गिज़ेल ने मुझसे पूछा कि वह उसे कहाँ मिल सकती है, क्योंकि उसे उससे कुछ बताना ही था। "क्या बात है?" "उसकी कुछ युवा सहेलियों से संबंधित।" "कौन सी सहेलियाँ? शायद मैं आपको बता सकूँ, हालाँकि इससे आपको उससे मिलने में कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए।" "ओह, वो लड़कियाँ जिन्हें वो सालों पहले जानती थी, मुझे उनके नाम याद नहीं हैं," गिज़ेल ने अस्पष्ट रूप से उत्तर दिया और चली गई। वह मुझे छोड़कर चली गई, यह सोचकर कि उसने इतनी समझदारी से बात की है कि पूरी कहानी मुझे बिल्कुल सीधी-सादी लग रही होगी। लेकिन झूठ इतना सरल होता है, उसे खुद को प्रकट करने के लिए बहुत कम मदद की ज़रूरत होती है! अगर यह बहुत पुराने दोस्तों का सवाल होता, जिनके नाम तक उसे याद नहीं थे, तो उसे अल्बर्टीन से उनके बारे में बात करने की क्या ज़रूरत थी? यह 'ज़रूरत', जो मैडम कॉटार्ड के पसंदीदा मुहावरे 'ठीक समय पर' से मिलती-जुलती है, केवल किसी खास, उपयुक्त, शायद ज़रूरी बात पर ही लागू हो सकती है, जो निश्चित व्यक्तियों से संबंधित हो। इसके अलावा, जिस तरह से उसने अपना मुँह खोला, मानो वह जम्हाई लेने वाली हो, और अस्पष्ट भाव से, जब उसने मुझसे कहा (लगभग अपना शरीर पीछे खींचते हुए, मानो हमारी बातचीत के इस मोड़ पर वह अपनी गति धीमी कर रही हो): "ओह, मुझे नहीं पता, मुझे उनके नाम याद नहीं हैं," तो उसके चेहरे और उसके साथ उसकी आवाज़ में झूठ की उतनी ही स्पष्ट तस्वीर थी, जितनी कि उसके पहले के 'ज़रूरत' का बिल्कुल अलग, तनावपूर्ण, उत्तेजित भाव सच्चाई की तस्वीर थी। मैंने गिज़ेल से सवाल नहीं किया। मेरे लिए इसका क्या फायदा होता? निश्चित रूप से, वह अल्बर्टीन की तरह झूठ नहीं बोल रही थी। और निश्चित रूप से अल्बर्टीन के झूठ ने मुझे ज़्यादा दुख पहुँचाया था। लेकिन उनमें एक बात स्पष्ट रूप से समान थी: झूठ का तथ्य, जो कुछ मामलों में स्वतः स्पष्ट होता है। झूठ के पीछे छिपी सच्चाई का कोई प्रमाण नहीं। हम जानते हैं

कि हर हत्यारा यह सोचता है कि उसने सब कुछ इतनी चतुराई से व्यवस्थित किया है कि वह पकड़ा नहीं जाएगा, और झूठ बोलने वालों के साथ भी ऐसा ही होता है, खासकर उस स्त्री के साथ जिससे हम प्रेम करते हैं। हम नहीं जानते कि वह कहाँ थी, क्या कर रही थी। लेकिन जिस क्षण वह बोलती है, जब वह किसी ऐसी बात का जिक्र करती है जिसके नीचे वह चीज छिपी होती है जिसका वह उल्लेख नहीं करती, उसी क्षण झूठ तुरंत प्रकट हो जाता है, और हमारी ईर्ष्या बढ़ जाती है, क्योंकि हम झूठ के प्रति सचेत होते हैं, और सच्चाई का पता लगाने में सफल नहीं हो पाते। अल्बर्टीन के मामले में, उसके झूठ बोलने का आभास उन कई विशेषताओं से मिलता है जिन्हें हमने इस वृत्तांत के दौरान पहले ही देखा है, लेकिन विशेष रूप से इस बात से कि जब वह झूठ बोल रही होती थी, तो उसकी कहानी या तो अपर्याप्तता, चूक, असंभाव्यता के कारण, या इसके विपरीत उसे विश्वसनीय दिखाने के उद्देश्य से छोटी-छोटी बातों की अधिकता के कारण टूट जाती थी। संभावना, भले ही झूठा व्यक्ति इसे लेकर जो धारणा बना ले, किसी भी तरह से सत्य के समान नहीं होती। जब भी हम कोई सत्य सुनते समय कोई ऐसी बात सुनते हैं जो केवल संभावित है, जो शायद सत्य से भी अधिक संभावित है, या शायद बहुत अधिक संभावित है, तो हमारा संवेदनशील कान उसे गलत समझ लेता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई पंक्ति लयबद्ध न हो या कोई शब्द गलती से दूसरे शब्द के स्थान पर पढ़ दिया जाए। हमारा कान इसे महसूस करता है, और यदि हम प्रेम में हैं तो हमारा हृदय चिंतित हो जाता है। हम उस समय क्यों नहीं सोचते, जब हम अपने जीवन की पूरी दिशा बदल देते हैं क्योंकि हमें नहीं पता कि कोई महिला रू डे बेरी से गई थी या रू वाशिंगटन से? हम क्यों नहीं सोचते कि ये कुछ सौ गज का अंतर, और वह महिला स्वयं, अपने आप में एक करोड़वें हिस्से तक सिमट जाएगी (अर्थात् हमारी समझ से परे आयामों तक), यदि हम कुछ वर्षों तक उस महिला को देखे बिना रहने की समझदारी दिखाएं, और वह जो हमारी नजरों में गुलीवर से भी आगे निकल गई है, एक बौने की तरह सिमट जाएगी जिसे कोई सूक्ष्मदर्शी—कम से कम हृदय का सूक्ष्मदर्शी तो नहीं, क्योंकि निष्पक्ष स्मृति का सूक्ष्मदर्शी अधिक शक्तिशाली और कम नाजुक होता है—फिर कभी नहीं देख पाएगा! चाहे जो भी हो, अगर अल्बर्टीन और गिज़ेल के झूठ में कोई एक बात समान भी थी—यानी झूठ—तो भी गिज़ेल ने अल्बर्टीन की तरह झूठ नहीं बोला, न ही एंड्री की तरह। लेकिन उनके झूठ इतनी कुशलता से

एक-दूसरे में समा गए थे, और साथ ही उनमें इतनी विविधता भी थी, कि उनका यह छोटा सा समूह कुछ व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, जैसे कि किताबों की दुकानों या छपाईघरों की तरह अभेद्य रूप से मजबूत था, जहाँ बेचारा लेखक, चाहे वहाँ कितने भी अलग-अलग लोग काम करते हों, यह पता लगाने में कभी सफल नहीं हो पाता कि उसके साथ धोखा हो रहा है या नहीं। अखबार या पत्रिका का संपादक ईमानदारी का दिखावा करते हुए झूठ बोलता है, और यह दिखावा इसलिए भी गंभीर होता है क्योंकि उसे अक्सर यह तथ्य छिपाना पड़ता है कि वह खुद भी वही काम करता है और उन्हीं व्यावसायिक गतिविधियों में लिप्त रहता है जिनकी उसने दूसरे संपादकों, थिएटर प्रबंधकों या प्रकाशकों के खिलाफ निंदा की थी, जब उसने ईमानदारी का नारा लगाया था। किसी व्यक्ति द्वारा (किसी राजनीतिक दल के नेता के रूप में, या किसी अन्य पद पर रहते हुए) यह घोषित करना कि झूठ बोलना बुराई है, उसे आम तौर पर अन्य लोगों की तुलना में अधिक झूठ बोलने के लिए बाध्य करता है, फिर भी वह अपने गंभीर मुखौटे को नहीं छोड़ता और ईमानदारी का मुकुट नहीं उतारता। 'ईमानदार' सज्जन का साथी एक अलग और अधिक सरल तरीके से झूठ बोलता है। वह अपने लेखक को उसी तरह धोखा देता है जैसे वह अपनी पत्नी को धोखा देता है, मंच के तमाशों की तरह। फर्म का सचिव, एक स्पष्टवादी और ईमानदार व्यक्ति, बड़ी सरलता से झूठ बोलता है, ठीक उसी तरह जैसे कोई वास्तुकार आपके घर के तैयार होने का वादा उस तारीख तक कर देता है जब तक कि उसका निर्माण कार्य शुरू भी नहीं हुआ होता। मुख्य पाठक, एक देवदूत आत्मा, तीनों में से एक-एक के पास जाता रहता है, और बिना यह जाने कि मामला क्या है, भाईचारे की भावना और स्नेहपूर्ण एकजुटता से उन्हें एक ऐसा अनमोल सहारा देता है जिस पर संदेह नहीं किया जा सकता। ये चारों व्यक्ति निरंतर कलह की स्थिति में रहते हैं जिसे लेखक के आगमन से विराम मिलता है। अपने निजी झगड़ों के अलावा, उनमें से हर कोई खतरे में पड़ी 'सैन्य टुकड़ी' की रक्षा के लिए एकजुट होने के अपने सर्वोपरि सैन्य कर्तव्य को याद रखता है। अनजाने में ही, मैं उस छोटे से समूह में लंबे समय से इस लेखक की भूमिका निभा रहा था। अगर गिज़ेल ने 'जरूर' शब्द का इस्तेमाल करते समय अल्बर्टीन की किसी सहेली के बारे में सोचा होता, जो मेरी मालकिन के मुझे छोड़ने का कोई बहाना ढूंढते ही उसके साथ विदेश जाने का प्रस्ताव रख रही थी, और अल्बर्टीन को यह चेतावनी देने का इरादा रखती कि अब वह घड़ी आ गई है

या जल्द ही आ जाएगी, तो गिज़ेल मुझे यह बताने के बजाय खुद को टुकड़े-टुकड़े कर देना पसंद करती; इसलिए उससे सवाल पूछना बिल्कुल बेकार था। गिज़ेल के साथ इस तरह की मुलाकातों ने ही मेरे संदेह को और नहीं बढ़ाया। उदाहरण के लिए, मैं अल्बर्टीन के रेखाचित्रों की प्रशंसा करता था। अल्बर्टीन के रेखाचित्र, बंदी के मार्मिक भावों से भरे हुए, मुझे इतना प्रभावित करते थे कि मैंने उन्हें बधाई दी। "नहीं, वे बहुत खराब हैं, लेकिन मैंने अपने जीवन में कभी चित्रकला का पाठ नहीं लिया है।" "लेकिन बालबेक में एक शाम तुमने मुझे संदेश भेजा था कि तुम ड्राइंग की क्लास लेने घर पर ही रुकी थी।" मैंने उसे उस दिन की याद दिलाई और बताया कि मुझे उस समय एहसास हुआ था कि शाम को उस समय लोग ड्राइंग की क्लास नहीं लेते। अल्बर्टीन शर्मा गई। "यह सच है," उसने कहा, "मैं ड्राइंग की क्लास नहीं ले रही थी, मैंने पहले तुमसे बहुत झूठ बोले थे, यह मैं मानती हूँ। लेकिन अब मैं तुमसे कभी झूठ नहीं बोलती।" मैं यह जानना चाहता था कि उसने पहले मुझसे कौन-कौन से झूठ बोले थे, लेकिन मुझे पहले से ही पता था कि उसके जवाब भी नए झूठ ही होंगे। इसलिए मैंने उसे चूमकर ही संतोष कर लिया। मैंने उससे उन झूठों में से सिर्फ एक बताने को कहा। उसने जवाब दिया: "अच्छा, ठीक है; उदाहरण के लिए जब मैंने कहा था कि समुद्र की हवा मेरे लिए हानिकारक है।" उसकी इस अनिच्छा को देखकर मैंने और ज़ोर देना बंद कर दिया।

उसकी जंजीर को हल्का दिखाने के लिए, सबसे अच्छा तरीका यही था कि उसे यह यकीन दिलाया जाए कि मैं खुद उसे तोड़ने वाला हूँ। खैर, उस समय मैं उसे अपनी यह झूठी योजना नहीं बता सकता था, क्योंकि वह उस दोपहर ट्रोकाडेरो से लौटते समय बहुत दयालु थी; मैं उसे टूटने की धमकी देकर परेशान करने के बजाय, बस इतना ही कर सकता था कि अपने कृतज्ञ हृदय में पनप रहे शाश्वत जीवन के सपनों को अपने तक ही सीमित रखूँ। जब मैंने उसकी ओर देखा, तो खुद को रोक पाना मुश्किल हो रहा था ताकि मैं अपने सपने उसके सामने प्रकट न कर दूँ, और शायद उसने भी यह महसूस किया होगा। दुर्भाग्य से, ऐसे सपनों का इज़हार संक्रामक नहीं होता। एम. डी. चार्लस जैसी एक अभिमानी बूढ़ी औरत का मामला, जो अपनी कल्पना में हमेशा एक हष्ट-पुष्ट युवक को ही देखती है और खुद को हष्ट-पुष्ट युवक समझने लगती है, और यह भ्रम उसके अभिमान और भी बढ़ता जाता है, तो और भी बढ़ जाता है। यह मामला अधिक सामान्य है, और एक भावुक प्रेमी की त्रासदी यह है कि वह इस तथ्य

को नज़रअंदाज़ कर देता है कि जहाँ वह अपने सामने एक सुंदर चेहरा देखता है, वहीं उसकी प्रेमिका उसका चेहरा देख रही होती है जो सुंदरता के दर्शन से उत्पन्न आनंद के कारण विकृत हो जाता है, बल्कि उससे भी कहीं अधिक सुंदर हो जाता है। वास्तव में, प्रेम ही इस मामले का संपूर्ण सार नहीं है; हम अपना शरीर नहीं देखते, जिसे दूसरे लोग देखते हैं, और हम अपने ही विचारों का अनुसरण करते हैं, जो वस्तु दूसरों के लिए अदृश्य है, जबकि वह हमारी आँखों के सामने होती है। कलाकार कभी-कभी अपनी कृति में हमें इस वस्तु को देखने में सक्षम बनाता है। इसी कारण से कलाकार के प्रशंसक उसके रचनाकार से निराश हो जाते हैं, जिसके चेहरे पर वह आंतरिक सुंदरता अपूर्ण रूप से प्रतिबिंबित होती है।

हम जिनसे भी प्रेम करते हैं, वास्तव में एक हद तक हर व्यक्ति हमारे लिए जानूस के समान होता है, जो हमें वह चेहरा दिखाता है जो हमें तब पसंद आता है जब वह हमें छोड़कर चला जाता है, और वह घृणित चेहरा तब जब हम जानते हैं कि वह हमेशा हमारे अधीन रहेगा। अल्बर्टीन के मामले में, उसके निरंतर साथ रहने की संभावना मेरे लिए एक अलग तरह से पीड़ादायक थी जिसे मैं इस वर्णन में स्पष्ट नहीं कर सकता। किसी दूसरे व्यक्ति का जीवन हमारे जीवन से एक बम की तरह जुड़ा होना भयावह है जिसे हम अपने हाथों में थामे रहते हैं, और बिना अपराध किए उससे छुटकारा पाना असंभव है। लेकिन आइए एक समानांतर उदाहरण के रूप में उतार-चढ़ाव, खतरों, चिंताओं, भविष्य में झूठी और संभावित मानी जाने वाली चीजों को देखने के भय को लें, जिन्हें हम तब समझा नहीं पाएंगे, ये वे भावनाएँ हैं जो एक पागल व्यक्ति के घनिष्ठ समाज में रहने पर अनुभव होती हैं। उदाहरण के लिए, मुझे एम. डी चार्लस पर दया आई क्योंकि वह मोरेल के साथ रह रहा था (उस दोपहर के दृश्य की स्मृति ने तुरंत मुझे अपने सीने का बायां हिस्सा दूसरे से भारी महसूस कराया); उनके बीच जो संबंध रहे हों या न रहे हों, उन्हें छोड़ दें तो एम. डी चार्लस को शुरू में यह पता नहीं रहा होगा कि मोरेल पागल था। मोरेल की सुंदरता, उसकी मूर्खता और उसका अहंकार बैरन को इतनी गहराई से पड़ताल करने से रोकते रहे होंगे, जब तक कि उदासी के दिनों में मोरेल ने एम. डी चार्लस पर अपने दुखों का आरोप नहीं लगाया, बिना कोई स्पष्टीकरण दिए, झूठे लेकिन बेहद चालाकी भरे तर्कों से उन पर अविश्वास का आरोप लगाया, उन्हें विनाशकारी निर्णयों की धमकी दी,

और इन सबके बावजूद अपने तात्कालिक हितों के प्रति सबसे धूर्ततापूर्ण रवैया बनाए रखा। लेकिन यह सब तो सिर्फ एक तुलना है। अल्बर्टाइन पागल नहीं थी।

मुझे पता चला कि आज एक मृत्यु हुई है, जिससे मुझे बहुत दुख हुआ। वह मृत्यु बर्गोट की थी। यह ज्ञात था कि वह काफी समय से बीमार थे। बेशक, उस बीमारी से नहीं जिससे वे शुरू में पीड़ित थे और जो स्वाभाविक थी। प्रकृति शायद ही हमें अल्पकालिक बीमारियों के अलावा कोई और बीमारी दे पाती है। लेकिन चिकित्सा ने बीमारियों को लंबा खींचने की कला को अपना लिया है। दवाइयाँ, उनसे मिलने वाली राहत, और उन्हें अस्थायी रूप से बंद करने पर होने वाले रोग के फिर से उभरने, ये सब मिलकर एक ऐसी झूठी बीमारी का निर्माण करते हैं जिससे रोगी इतना अभ्यस्त हो जाता है कि अंततः उसे स्थायी बना लेता है, ठीक वैसे ही जैसे बच्चे काली खांसी से ठीक होने के काफी समय बाद भी खांसी के दौरे से पीड़ित होते रहते हैं। फिर दवाओं का असर कम होने लगता है, खुराक बढ़ा दी जाती है, उनसे कोई लाभ नहीं होता, बल्कि उस स्थायी अस्वस्थता के कारण वे नुकसान पहुँचाने लगती हैं। प्रकृति उन्हें इतना लंबा समय नहीं देती। यह एक बड़ा चमत्कार है कि चिकित्सा किसी व्यक्ति को बिस्तर पर पड़े रहने के लिए मजबूर करने में लगभग प्रकृति के बराबर हो सकती है, उसे मृत्यु के भय से किसी दवा का उपयोग जारी रखने के लिए मजबूर कर सकती है। उस क्षण से कृत्रिम रूप से रोपित बीमारी जड़ पकड़ चुकी है, एक गौण लेकिन वास्तविक बीमारी बन गई है, केवल यही अंतर है कि प्राकृतिक बीमारियों का इलाज हो जाता है, लेकिन दवाओं द्वारा उत्पन्न बीमारियों का कभी नहीं, क्योंकि दवा को उनके इलाज का रहस्य नहीं पता।

कई सालों से बर्गोट घर से बाहर निकलना छोड़ चुका था। वैसे भी, उसे समाज से कोई लगाव नहीं था, या शायद एक दिन के लिए ही सही, और फिर वह समाज को उसी तरह तुच्छ समझता था जैसे वह हर चीज़ को तुच्छ समझता था, और उसी अंदाज़ में, यानी किसी चीज़ को इसलिए तुच्छ समझना कि वह उसकी पहुँच से बाहर नहीं थी, बल्कि जैसे ही वह उस तक पहुँच जाता था। वह इतनी सादगी से रहता था कि किसी को भी उसके धनवान होने का शक नहीं होता था, और अगर किसी को पता भी होता तो वह गलत ही होता, क्योंकि वह उसे कंजूस समझता, जबकि उससे ज़्यादा उदार कोई नहीं था। वह सबसे ज़्यादा उदार महिलाओं के प्रति था—लड़कियों के प्रति, बल्कि कहना ज़्यादा सही होगा—जो इतने कम के बदले

इतना कुछ पाकर शर्म महसूस करती थीं। वह खुद को यह कहकर माफ कर देता था कि वह जानता है कि प्रेम-भाव के माहौल में वह कभी भी इतना अच्छा काम नहीं कर सकता। प्रेम एक बहुत ही कठोर शब्द है, शरीर में गहराई से निहित सुख साहित्यिक कार्यों के लिए सहायक होता है क्योंकि यह अन्य सभी सुखों को समाप्त कर देता है, उदाहरण के लिए समाज के सुख, जो सबके लिए एक जैसे होते हैं। और भले ही यह प्रेम निराशा की ओर ले जाए, कम से कम ऐसा करके भी यह आत्मा की उस सतह को हिला देता है जो अन्यथा स्थिर होने के कगार पर होती। इसलिए इच्छा लेखक के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उसे सबसे पहले अपने साथी मनुष्यों से और उनके मानकों के अनुरूप ढलने से अलग करती है, और बाद में उस आध्यात्मिक यंत्र को कुछ हद तक गति प्रदान करती है जो एक निश्चित उम्र के बाद निष्क्रिय हो जाता है। हम सुखी तो नहीं हो पाते, लेकिन हम उन कारणों को देख पाते हैं जो हमें सुखी होने से रोकते हैं और जो निराशा से उत्पन्न इन खामियों के बिना हमारे लिए अदृश्य ही रहते। हम जानते हैं कि सपने वास्तविकता में परिवर्तित नहीं होते; शायद हम इच्छा के बिना कोई सपना ही न देखते, और हमारे लिए सपने देखना इसलिए उपयोगी है ताकि हम उन्हें असफल होते देख सकें और उनकी असफलता से सीख सकें। और इसलिए बर्गोट ने स्वयं से कहा: "मैं लड़कियों पर एक करोड़पति से भी अधिक खर्च कर रहा हूँ, लेकिन उनसे मिलने वाले सुख या निराशा मुझे एक किताब लिखने के लिए प्रेरित करते हैं जिससे मुझे पैसा मिलता है।" आर्थिक दृष्टि से यह तर्क बेतुका था, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि सोने को स्नेह में और स्नेह को सोने में परिवर्तित करने में उन्हें कुछ आकर्षण अवश्य मिला होगा। मेरी दादी की मृत्यु के समय हमने देखा कि कैसे थका हुआ बुढ़ापा विश्राम चाहता है। अब समाज में केवल बातचीत ही होती है। यह मूर्खतापूर्ण हो सकती है, लेकिन इसमें उन महिलाओं को दबाने की क्षमता होती है जो केवल प्रश्न और उत्तर बनकर रह जाती हैं। समाज से अलग होकर, महिलाएं एक बार फिर वही बन जाती हैं जो एक थके हुए बूढ़े व्यक्ति को विश्राम देती है, चिंतन का विषय। किसी भी मामले में, अब इस तरह की कोई बात नहीं रह गई थी। मैंने कहा है कि बर्गोट कभी घर से बाहर नहीं निकलते थे, और जब वे अपने कमरे में एक घंटे के लिए बिस्तर से उठते थे, तो वे शॉल, प्लेड, उन सभी चीजों से खुद को ढक लेते थे जिनसे कोई व्यक्ति खुद को कड़ाके की ठंड में निकलने या रेलगाड़ी में चढ़ने से पहले ढक लेता है। वह

अपने उन कुछ मित्रों से क्षमा मांगता जिन्हें उसने अपने एकांतवास में आने की अनुमति दी थी, और अपने टार्टन प्लेड, अपने यात्रा-कालीनों की ओर इशारा करते हुए प्रसन्नतापूर्वक कहता: "अंततः, मेरे प्रिय मित्र, जीवन, जैसा कि अनाक्सागोरस ने कहा है, एक यात्रा है।" इस प्रकार वह लगातार ठंडा होता चला गया, एक छोटा सा ग्रह जो विशाल ग्रह का भविष्यसूचक चित्र प्रस्तुत करता था, जब धीरे-धीरे पृथ्वी से ऊष्मा विलीन हो जाएगी, और फिर स्वयं जीवन भी। तब पुनरुत्थान का अंत हो जाएगा, क्योंकि यदि आने वाली पीढ़ियों में मनुष्यों के कार्यों को चमकना है, तो सबसे पहले मनुष्य का होना आवश्यक है। यदि कुछ प्रकार के जानवर आक्रमणकारी ठंड के विरुद्ध लंबे समय तक टिके रहते हैं, जब कोई मनुष्य नहीं रह जाएगा, और यदि हम मान लें कि बर्गोट की प्रसिद्धि इतने लंबे समय तक बनी रही, तो अचानक वह हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगी। यह अंतिम जानवर नहीं होंगे जो उसे पढ़ेंगे, क्योंकि यह शायद ही संभव है कि, पेंटेकोस्ट के दिन प्रेरितों की तरह, वे मानव जाति की विभिन्न नस्लों की भाषा को बिना सीखे समझ पाएंगे।

अपनी मृत्यु से पहले के महीनों में, बर्गोट अनिद्रा से पीड़ित थे, और इससे भी बुरी बात यह थी कि जब भी वे सो पाते थे, उन्हें बुरे सपने आते थे, जिनसे जागने पर उन्हें दोबारा सोने की इच्छा नहीं होती थी। वे लंबे समय से सपनों के प्रेमी थे, यहाँ तक कि बुरे सपनों के भी, क्योंकि उनके कारण और हमारे सामने मौजूद वास्तविकता के विपरीत होने के कारण, वे हमें जागने के क्षण में, या उससे पहले भी, गहरी नींद का अहसास कराते हैं। लेकिन बर्गोट के बुरे सपने ऐसे नहीं थे। जब वे बुरे सपनों की बात करते थे, तो पहले उनका मतलब उन अप्रिय चीजों से होता था जो उनके दिमाग में आती थीं। बाद में, उनका मतलब ऐसा होता था मानो कहीं बाहर से आ रही हों, जिसमें एक दुष्ट स्त्री गीले कपड़े से उनके चेहरे पर हाथ फेरकर उन्हें जगाए रखती हो, उनकी जांघों में असहनीय खुजली होती हो, और एक पागल टैक्सी ड्राइवर का क्रोध उन पर टूट पड़ता हो—क्योंकि बर्गोट ने नींद में बड़बड़ाया था कि वे गाड़ी ठीक से नहीं चला रहे हैं—जो लेखक पर झपट पड़ता है और उनकी उंगलियों को काटता और कुतरता है। अंततः, जैसे ही उनकी नींद में पर्याप्त अंधेरा छा गया, प्रकृति ने उस भयानक आघात का एक तरह से पूर्वाभ्यास आयोजित किया जो उन्हें मृत्यु के घाट उतारने वाला था: बर्गोट स्वान के नए घर के बरामदे के नीचे एक गाड़ी में पहुंचे और उतरने की कोशिश की। तीव्र चक्कर आने से वे

अपनी सीट पर ही जकड़ गए, कुली उन्हें गाड़ी से बाहर निकालने में मदद करने के लिए आगे आया, लेकिन वे बैठे ही रहे, उठने में असमर्थ—अपने पैरों को सीधा करने में असमर्थ। उन्होंने अपने बगल में स्थित पत्थर के खंभे का सहारा लेकर खुद को ऊपर उठाने की कोशिश की, लेकिन उन्हें खड़े होने के लिए पर्याप्त सहारा नहीं मिला।

उन्होंने डॉक्टरों से सलाह ली, जो उनके बुलावे से प्रसन्न हुए और उनकी अथक परिश्रमशीलता (उन्होंने बीस वर्षों से कुछ नहीं लिखा था) और अत्यधिक तनाव को उनकी बीमारियों का कारण माना। डॉक्टरों ने उन्हें रोमांचक कहानियाँ न पढ़ने की सलाह दी (वे कभी कुछ नहीं पढ़ते थे), धूप का अधिक लाभ उठाने को कहा, जो 'जीवन के लिए अपरिहार्य' थी (उनका कुछ वर्षों का अपेक्षाकृत स्वस्थ जीवन केवल घर के अंदर कठोर एकांतवास के कारण ही था), और पौष्टिक आहार लेने को कहा (जिससे वे दुबले हो गए, और उनके दुष्परिणामों के अलावा कुछ भी पोषित नहीं हुआ)। उनके एक चिकित्सक में विरोधाभास की भावना कूट-कूटकर भरी थी, और जब भी बर्गोट अन्य चिकित्सकों की अनुपस्थिति में उनसे परामर्श करते, और उन्हें नाराज न करने के लिए, अन्य चिकित्सकों द्वारा दी गई सलाह को अपने विचारों के रूप में प्रस्तुत करते, तो यह चिकित्सक, यह सोचकर कि बर्गोट उनके लिए कुछ ऐसा लिखवाना चाहते हैं जो उन्हें स्वयं पसंद हो, तुरंत उसे मना कर देते, और अक्सर मामले को सुलझाने के लिए इतने जल्दबाजी में गढ़े गए कारणों से कि बर्गोट द्वारा उठाए गए ठोस आपत्तियों के सामने, इस तर्कशील चिकित्सक को एक ही वाक्य में अपने ही कथन का खंडन करना पड़ता, लेकिन नए कारणों से, वे मूल निषेध को दोहरा देते। बर्गोट इन डॉक्टरों में से एक पहले डॉक्टर के पास वापस गए, जो अपनी चतुराई पर गर्व करते थे, खासकर जब वे किसी प्रतिष्ठित साहित्यकार के सामने होते थे। अगर बर्गोट इशारे में कहते, "मुझे याद है कि डॉक्टर एक्स ने मुझे बहुत पहले बताया था कि इससे मेरे गुर्दे और दिमाग में रुकावट आ सकती है...", तो वे व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ उंगली उठाकर कहते, "मैंने उपयोग कहा था, दुरुपयोग नहीं। स्वाभाविक रूप से, हर दवा, अगर अधिक मात्रा में ली जाए, तो दोधारी तलवार बन जाती है।" मानव शरीर में एक सहज प्रवृत्ति होती है जो हमारे लिए लाभकारी होती है, जैसे हृदय में नैतिक कर्तव्य की भावना होती है, एक ऐसी प्रवृत्ति जिसे किसी चिकित्सक या धर्मशास्त्री की अनुमति से बदला नहीं जा सकता। हम जानते हैं कि ठंडे पानी से नहाना हमारे

लिए हानिकारक है, फिर भी हमें यह पसंद है, और हमें हमेशा कोई न कोई डॉक्टर मिल जाता है जो इसकी सलाह देता है, लेकिन इससे होने वाले नुकसान को नहीं रोकता। बर्गोट ने इन सभी डॉक्टरों से कुछ ऐसा सीखा जिसे उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता से वर्षों से अपने लिए वर्जित रखा था। कुछ हफ़्तों बाद, उसकी पुरानी परेशानियाँ फिर से उभर आईं, और नई परेशानियाँ और भी बदतर हो गईं। लगातार दर्द से पागल होकर, जिसमें अनिद्रा भी जुड़ गई थी और जो केवल थोड़े समय के लिए आने वाले बुरे सपनों से ही टूटती थी, बर्गोट ने और डॉक्टरों को नहीं बुलाया और सफलता तो पाई, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा कई तरह की नशीली दवाएँ आज़माईं। उसने उम्मीद से हर दवा के साथ दिए गए विवरण को पढ़ा, जिसमें नींद की आवश्यकता बताई गई थी, लेकिन यह भी संकेत दिया गया था कि नींद लाने वाली सभी दवाएँ (विवरण वाली बोतल को छोड़कर, जिसका कभी कोई ज़हरीला प्रभाव नहीं हुआ) ज़हरीली थीं, और इसलिए इलाज बीमारी से भी बदतर हो गया था। बर्गोट ने सभी दवाएँ आज़माईं। कुछ दवाएँ उन दवाओं से अलग थीं जिनसे हम परिचित हैं, उदाहरण के लिए एमाइल और एथिल। जब हम कोई नई दवा लेते हैं, जो संरचना में पूरी तरह से अलग होती है, तो हमेशा एक अनजानी सी उम्मीद होती है। हमारा दिल ऐसे धड़कता है जैसे पहली बार मिल रहा हो। नींद और सपनों के किन अनजान रूपों में यह नई दवा हमें ले जाएगी? वह अब हमारे अंदर है, उसने हमारे विचारों पर नियंत्रण कर लिया है। हम किस तरह सोएँगे? और, एक बार जब हम सो जाते हैं, तो वह हमें किन विचित्र रास्तों से, किन चोटियों तक, किन अथाह गहराइयों में ले जाएगा? इस यात्रा में हम किन नई संवेदनाओं से परिचित होंगे? क्या यह अंत में हमें बीमारी की ओर ले जाएगा? परम सुख की ओर? या मृत्यु की ओर? बर्गोट की मृत्यु रातोंरात आ गई, जब उन्होंने स्वयं को अपने एक मित्र (मित्र? या बल्कि शत्रु?) के हवाले कर दिया, जो उनके लिए बहुत शक्तिशाली साबित हुआ। उनकी मृत्यु की परिस्थितियाँ इस प्रकार थीं। यूरेमिया का एक दौरा, जो बिल्कुल भी गंभीर नहीं था, जिसके कारण उन्हें आराम करने का आदेश दिया गया था। लेकिन एक आलोचक ने कहीं लिखा था कि वर्मीर की 'डेल्फ़्ट की गली' (जिसे हेग गैलरी ने डच चित्रकला की एक प्रदर्शनी के लिए उधार दिया था) नामक चित्र में, जिसे वह बहुत पसंद करते थे और जिसे वह कंठस्थ समझते थे, पीले रंग की दीवार का एक छोटा सा हिस्सा (जिसका नाम उन्हें याद नहीं था) इतनी खूबसूरती से चित्रित किया गया था कि अगर

उसे अकेले देखा जाए तो वह चीनी कला के किसी अनमोल नमूने जैसा लगता था, जिसकी सुंदरता अपने आप में ही पर्याप्त थी। यह सुनकर बर्गोट ने कुछ आलू खाए, घर से निकले और प्रदर्शनी देखने चले गए। जैसे ही उन्हें सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ीं, उन्हें चक्कर आने लगे। वे कई चित्रों के सामने से गुजरे और उस कृत्रिम शैली की कठोरता और निरर्थकता से चकित रह गए, जो वेनिस के किसी महल या समुद्र किनारे के किसी साधारण घर की ताजी हवा और धूप के बराबर नहीं थी। अंततः वह उस वर्मीर की पेंटिंग पर पहुँचा जिसे वह पहले से कहीं अधिक प्रभावशाली और अपने द्वारा जानी गई किसी भी अन्य पेंटिंग से अलग मानता था, लेकिन आलोचक के लेख के कारण ही उसने पहली बार उसमें नीले रंग की कुछ छोटी आकृतियाँ देखीं, गुलाबी पृष्ठभूमि देखी और अंत में पीले रंग की दीवार के उस छोटे से टुकड़े की अनमोल सुंदरता को पहचाना। उसका चक्कर और बढ़ गया; उसने अपनी आँखें उस अनमोल छोटे से दीवार के टुकड़े पर गड़ा दीं, जैसे कोई बच्चा किसी पीली तितली को पकड़ने की कोशिश कर रहा हो। "मुझे इसी तरह लिखना चाहिए था," उसने कहा। "मेरी पिछली किताबें बहुत नीरस हैं, मुझे उन पर कई परतें रंग चढ़ानी चाहिए थीं, अपनी भाषा को इस पीले रंग की दीवार के छोटे से टुकड़े की तरह अपने आप में उत्कृष्ट बनाना चाहिए था।" इस बीच वह अपनी स्थिति की गंभीरता से अवगत था। एक दिव्य तराजू में, उसके एक पलड़े पर उसका अपना जीवन था, जबकि दूसरे पलड़े पर पीले रंग में खूबसूरती से रंगा हुआ दीवार का वह छोटा सा टुकड़ा था। उसे लगा कि उसने जल्दबाजी में पहले को दूसरे के लिए त्याग दिया है। "फिर भी," उसने मन ही मन कहा, "मेरी इस प्रदर्शनी की 'विशेष खबर' शाम के अखबारों के लिए उपलब्ध कराने की कोई इच्छा नहीं है।"

वह मन ही मन दोहराता रहा: "पीली दीवार का छोटा सा टुकड़ा, ढलान वाली छत के साथ, पीली दीवार का छोटा सा टुकड़ा।" ऐसा करते हुए वह एक गोल दीवान पर बैठ गया; और फिर अचानक उसने यह सोचना बंद कर दिया कि उसकी जान खतरे में है और अपने स्वाभाविक आशावाद में लौटकर उसने खुद से कहा: "यह तो बस उन आलूओं से हुई मामूली बदहजमी है; वे ठीक से पके नहीं थे; कुछ नहीं है।" तभी उसे फिर से दौरा पड़ा; वह दीवान से लुढ़ककर ज़मीन पर गिर गया, और आगंतुक और सेवक उसकी सहायता के लिए दौड़ पड़े। उसकी मृत्यु हो गई। क्या वह हमेशा के लिए मर गया? कौन कह सकता है? निश्चित रूप से

अध्यात्मवाद में हमारे प्रयोग धर्म के उन सिद्धांतों से अधिक कुछ साबित नहीं करते कि आत्मा मृत्यु के बाद भी जीवित रहती है। हम बस इतना ही कह सकते हैं कि इस जीवन में सब कुछ इस तरह व्यवस्थित है मानो हम पिछले जीवन में लिए गए दायित्वों का बोझ ढोते हुए इसमें प्रवेश कर रहे हों; इस धरती पर जीवन की परिस्थितियों में ऐसा कोई अंतर्निहित कारण नहीं है जो हमें अच्छा करने, सावधानी बरतने, यहाँ तक कि विनम्र होने के लिए बाध्य करे, न ही किसी प्रतिभाशाली कलाकार को किसी कृति को बीस बार फिर से बनाने के लिए बाध्य करे, जिसकी प्रशंसा उसके उस शरीर के लिए नगण्य होगी जो कीड़ों द्वारा खा लिया गया है, ठीक उसी तरह जैसे पीले रंग की दीवार पर एक ऐसा धब्बा जिसे एक ऐसे कलाकार ने अत्यंत ज्ञान और कौशल से चित्रित किया है जो हमेशा के लिए अज्ञात रहेगा और जिसे मुश्किल से वर्मीर के नाम से पहचाना जाता है। ये सभी दायित्व, जिनका हमारे वर्तमान जीवन में कोई औचित्य नहीं है, एक अलग दुनिया से संबंधित प्रतीत होते हैं, जो दया, सावधानी और आत्म-बलिदान पर आधारित है, एक ऐसी दुनिया जो इस दुनिया से पूरी तरह भिन्न है, जिसे हम इस दुनिया में जन्म लेने के लिए छोड़ते हैं, और फिर शायद दूसरी दुनिया में लौटकर उन अज्ञात नियमों के अधीन फिर से जीने के लिए, जिनका हमने पालन किया है क्योंकि हमने उनके उपदेशों को अपने हृदय में धारण किया है, यह जाने बिना कि उन्हें किसने अंकित किया है—वे नियम जिनके करीब बुद्धि का प्रत्येक गहन कार्य हमें लाता है और जो केवल—और अभी भी!—मूर्खों के लिए अदृश्य हैं। इसलिए यह विचार कि बर्गोट पूरी तरह से और स्थायी रूप से मृत नहीं थे, किसी भी तरह से असंभव नहीं है।

उन्होंने उसे दफना दिया, लेकिन शोक की पूरी रात, रोशन खिड़कियों में, उसकी किताबें तीन-तीन करके इस तरह रखी हुई थीं जैसे पंख फैलाए देवदूत हों और ऐसा लग रहा था मानो जो अब इस दुनिया में नहीं है, वह उसके पुनरुत्थान का प्रतीक हो।

मैंने पहले भी कहा है कि मुझे उसी दिन पता चला कि बर्गोट की मृत्यु हो गई है। और मुझे अखबारों की लापरवाही पर आश्चर्य हुआ, जिन्होंने—हर एक ने एक ही पैराग्राफ को दोहराते हुए—बताया कि उनकी मृत्यु एक दिन पहले हुई थी। दरअसल, एक दिन पहले अल्बर्टीन उनसे मिली थीं, जैसा कि उन्होंने मुझे उसी शाम बताया था, और वास्तव में उन्हें घर आने में थोड़ी देर हो गई थी, क्योंकि वह कुछ देर उनसे बात करने में रुक गई थीं। निस्संदेह वह

आखिरी व्यक्ति थीं जिनसे उन्होंने बात की थी। वह उन्हें मेरे माध्यम से जानती थीं, क्योंकि मैंने उनसे बहुत पहले मिलना बंद कर दिया था, लेकिन, चूंकि वह उनसे मिलने के लिए उत्सुक थीं, इसलिए मैंने एक साल पहले ही उस बूढ़े गुरु को पत्र लिखकर पूछा था कि क्या मैं उन्हें उनसे मिलवाने ला सकता हूँ। उन्होंने मेरा अनुरोध मान लिया था, शायद उन्हें थोड़ा बुरा लगा था कि मैं उनसे केवल किसी और को खुश करने के लिए मिलने आया था, जो उनके प्रति मेरी उदासीनता का प्रमाण था। ऐसे मामले अक्सर होते हैं: कभी-कभी जिस पुरुष या महिला से हम दोबारा बातचीत करने के लिए नहीं, बल्कि किसी तीसरे व्यक्ति की ओर से मिलने का अनुरोध करते हैं, वह इतनी हठपूर्वक इनकार कर देता है कि हमारा आश्रित यह निष्कर्ष निकाल लेता है कि हमने ऐसे प्रभाव का दावा किया है जो हमारे पास नहीं है; अक्सर प्रतिभाशाली व्यक्ति या प्रसिद्ध सुंदरी मान जाते हैं, लेकिन अपनी प्रसिद्धि में अपमानित और अपने स्नेह में आहत होकर, बाद में हमारे प्रति उनका लगाव कम, दुखी और लगभग तिरस्कारपूर्ण हो जाता है। मुझे बहुत बाद में पता चला कि मैंने अखबारों पर गलत जानकारी देने का आरोप लगाया था, क्योंकि उस दिन अल्बर्टीन की मुलाकात बर्गोट से नहीं हुई थी, लेकिन उस समय मुझे इस बात का जरा भी संदेह नहीं हुआ था, क्योंकि उसने मुझे घटना के बारे में इतनी सहजता से बताया था, और बहुत बाद में ही मुझे उसकी सरलता से झूठ बोलने की अद्भुत कला का पता चला। जो बातें उसने कहीं, जो बातें उसने कबूल कीं, वे औपचारिक सबूतों से इतनी मिलती-जुलती थीं—जो हम देखते हैं, जो हम एक निर्विवाद स्रोत से सीखते हैं —कि उसने अपने जीवन के खालीपन में एक दूसरे जीवन के प्रसंग बो दिए, जिसकी झूठी प्रकृति का मुझे तब संदेह नहीं था और जिसे मैं बहुत बाद में समझ पाया। मैंने 'कबूल किया' शब्द का प्रयोग निम्नलिखित कारण से किया है। कभी-कभी एक आकस्मिक मुलाकात से मेरे मन में एक ईर्ष्यापूर्ण संदेह पैदा हो जाता था कि उसके साथ अतीत में, या दुर्भाग्य से भविष्य में, कोई दूसरा व्यक्ति मौजूद था। अपने तथ्यों को लेकर आश्वस्त दिखने के लिए, मैंने उस व्यक्ति का नाम लिया, और अल्बर्टीन ने कहा: "हाँ, मैं उससे एक हफ्ते पहले, घर के ठीक बाहर मिली थी। मुझे विनम्रता दिखानी पड़ी और जब उसने मुझसे बात की तो मुझे जवाब देना पड़ा। मैं उसके साथ थोड़ी दूर चली। लेकिन हमारे बीच कभी कुछ नहीं था। कभी नहीं होगा।" अब अल्बर्टीन उस व्यक्ति से मिली भी नहीं थी, क्योंकि वह व्यक्ति पिछले दस महीनों से पेरिस में

नहीं था। लेकिन मेरी मालकिन को लगा कि पूरी तरह से इनकार करना शायद ही विश्वसनीय लगेगा। इस काल्पनिक संक्षिप्त मुलाकात का वर्णन इतनी सरलता से किया गया है कि मैं उस महिला को रुकते, उसे शुभ दिन कहते और उसके साथ थोड़ी दूर चलते हुए देख सका। अगर मैं उस समय सड़क पर होता, तो शायद मेरी इंद्रियों के अनुभव से मुझे पता चल जाता कि वह महिला अल्बर्टीन के साथ नहीं थी। लेकिन अगर मुझे इस तथ्य की जानकारी थी भी, तो वह उन तर्क-वितर्कों में से एक के माध्यम से थी जिनमें विश्वास रखने वाले लोगों के शब्द मजबूत कड़ी जोड़ते हैं, न कि मेरी इंद्रियों के अनुभव से। इस अनुभव के लिए मुझे उस विशेष क्षण में सड़क पर होना चाहिए था, और मैं वहां नहीं था। हालांकि, हम कल्पना कर सकते हैं कि ऐसी परिकल्पना असंभव नहीं है: हो सकता है मैं बाहर गया होता और उस समय सड़क से गुजर रहा होता जब अल्बर्टीन ने शाम को मुझे बताया (मुझे वहां देखे बिना) कि वह उस महिला के साथ थोड़ी दूर गई थी, और तब मुझे पता चल जाता कि अल्बर्टीन झूठ बोल रही है। लेकिन क्या तब भी यह पूरी तरह निश्चित है? धार्मिक भ्रम मेरे मन को घेर लेता, मुझे संदेह होने लगता कि क्या मैंने उसे अकेले देखा था, मैं शायद ही यह समझने की कोशिश करता कि किस दृष्टि भ्रम के कारण मैं उस महिला को देख नहीं पाया, और अपनी गलती पर मुझे ज्यादा आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि खगोलीय ब्रह्मांड को समझना उतना कठिन नहीं है जितना कि अन्य लोगों के वास्तविक कार्यों को समझना, विशेषकर उन लोगों के कार्यों को जिनसे हम प्रेम करते हैं, जो अपनी सुरक्षा के लिए गढ़ी गई कहानियों से हमारे संदेहों को दूर करते हैं। वे कितने वर्षों तक हमारे उदासीन प्रेम को यह विश्वास करने नहीं देंगे कि किसी दूसरे देश में उनकी कोई बहन, भाई या भाभी है, जिनका कभी अस्तित्व ही नहीं था!

इंद्रियों से प्राप्त प्रमाण भी मन की एक क्रिया है जिसमें दृढ़ विश्वास प्रमाण उत्पन्न करता है। हमने अक्सर देखा है कि फ्रांकोइस की श्रवण शक्ति उसे बोले गए शब्द को नहीं, बल्कि उसके द्वारा समझे गए सही रूप को ही बताती है, जो उसे बेहतर उच्चारण में निहित सुधार को सुनने से रोक देता है। हमारा बटलर भी कुछ इसी तरह का था। एम. डी चार्लस उस समय बहुत हल्के पतलून पहनने के आदी थे—क्योंकि वे लगातार कपड़े बदलते रहते थे—जो दूर से ही पहचाने जा सकते थे। अब हमारा बटलर, जो सोचता था कि पिसोटियर (वह शब्द जिसका अर्थ एम. डी रामबुटो द्वारा ड्यूक डी गुएरमांटेस द्वारा रामबुटो के अस्तबल को कहे जाने पर

इतना नाराज़ हुआ था) वास्तव में पिस्टियर है, उसने अपने पूरे जीवन में कभी किसी को पिसोटियर कहते नहीं सुना, हालाँकि यह शब्द अक्सर उसके सामने बोला जाता था। लेकिन त्रुटि विश्वास से भी अधिक हठी होती है और अपने विश्वास के आधार की जाँच नहीं करती। अक्सर बटलर कहता था: "मुझे यकीन है कि एम. ले बैरन डी चार्लस को कोई बीमारी हो गई होगी, तभी तो वो इतनी देर तक घुड़सवारी मैदान में खड़े रहते हैं। इस उम्र में लड़कियों के पीछे भागने का यही नतीजा होता है। उनकी पैंट देखकर ही पता चल जाता है कि वो कैसे इंसान हैं। आज सुबह, मैडम ने मुझे न्यूइली में एक संदेश लेकर भेजा था। जब मैं रू डे बरगंडी में घुड़सवारी मैदान के पास से गुजरा, तो मैंने एम. ले बैरन डी चार्लस को अंदर जाते देखा। जब मैं लगभग एक घंटे बाद न्यूइली से लौटा, तो मैंने उनकी पीली पैंट उसी घुड़सवारी मैदान में, उसी जगह पर, बीच वाले स्टॉल में देखी, जहाँ वो हमेशा जाते हैं ताकि कोई उन्हें देख न सके।" मुझे मैडम डी गुएरमांटेस की भतीजी से ज्यादा खूबसूरत, नेक और जवान कोई और नहीं लगता। लेकिन मैंने उस रेस्तरां के पोर्टर को, जहाँ मैं कभी-कभी खाना खाने जाया करता था, जाते हुए कहते सुना है: "ज़रा उस बुढ़िया को देखो, क्या स्टाइल है! और वो अस्सी साल की होगी, अगर एक दिन भी हुई हो तो।" उम्र के लिहाज़ से, मुझे यकीन करना मुश्किल है कि उसने जो कहा, वो सच था। लेकिन उसके चारों ओर जमा हुए नौकर, जो जब भी होटल के पास से गुज़रते हुए पड़ोस में स्थित अपने घर, श्रीमती डी फेज़ेन्साक और डी बेलेरी से मिलने जाती थीं, तो खिलखिलाकर हंसते थे, उस युवती के चेहरे पर अस्सी साल की उम्र देख लेते थे, जो पोर्टर ने मज़ाक में या गंभीरता से उस 'बुढ़िया' को दी थी। अगर आप उन्हें बताते कि वह होटल की दो कैशियरों में से एक से ज़्यादा संजीदा थीं, जो एक्ज़िमा से ग्रस्त, हद से ज़्यादा मोटी, उन्हें देखने में सुंदर लगती थीं, तो वे ज़ोर से हंस पड़ते। शायद यौन इच्छा ही उनकी इस गलती को आकार लेने से रोक सकती थी, अगर उस कथित बूढ़ी औरत के गुजरने पर उसका असर पड़ता, और अगर पन्नों में अचानक उस युवती के लिए लालसा जाग उठती। लेकिन अज्ञात कारणों से, जो संभवतः सामाजिक प्रकृति के थे, यह इच्छा जागृत नहीं हुई। इसके अलावा, चर्चा के लिए पर्याप्त गुंजाइश है। ब्रह्मांड हम सभी के लिए सत्य है और हममें से प्रत्येक के लिए भिन्न है। अगर हमें अपनी कहानी की निरंतरता बनाए रखने के लिए तुच्छ कारणों तक सीमित न रहना पड़ता, तो कितने और गंभीर कारण हमें इस पुस्तक के

शुरुआती पन्नों की झूठी और खोखली बातों को साबित करने की अनुमति देते, जिसमें मैं अपने बिस्तर से दुनिया को जागते हुए सुनता हूँ, कभी एक तरह के मौसम में, कभी दूसरे तरह के मौसम में। हाँ, मुझे तथ्यों को कम करके पेश करने और झूठ बोलने के लिए मजबूर होना पड़ा है, लेकिन यह एक ब्रह्मांड नहीं है, लाखों ब्रह्मांड हैं, लगभग उतने ही जितने मानव आँखें और मस्तिष्क अस्तित्व में हैं, जो हर सुबह जागते हैं।

अल्बर्टीन की बात पर लौटते हुए, मैंने उसके जैसी किसी और स्त्री को झूठ बोलने की इतनी निपुणता से संपन्न नहीं देखा, जो जीवंत और जीवन के रंगों से सराबोर हो, सिवाय उसकी एक सहेली के—मेरी एक प्यारी सी सहेली, अल्बर्टीन की तरह गुलाबी रंग की, लेकिन जिसका अनियमित चेहरा, एक जगह धंसा हुआ, फिर उभरा हुआ, बिल्कुल गुलाबी फूलों के कुछ गुच्छों जैसा था, जिनका नाम मैं भूल गया हूँ, लेकिन जिनमें लंबी और घुमावदार गुहाएँ होती हैं। कहानी सुनाने के लिहाज से यह लड़की अल्बर्टीन से श्रेष्ठ थी, क्योंकि वह कभी भी उन पीड़ादायक पलों, उन तीखे व्यंग्यों का जिक्र नहीं करती थी, जो मेरी मालकिन के साथ अक्सर होते थे। हालाँकि, मैंने कहा है कि जब वह कोई ऐसी कहानी गढ़ती थी जिसमें संदेह की कोई गुंजाइश न हो, तो वह बहुत आकर्षक लगती थी, क्योंकि तब उसके सामने वह चीज—भले ही काल्पनिक हो—स्पष्ट दिखाई देती थी, जिसे वह अपने भाषण के उदाहरण के रूप में इस्तेमाल करती थी। अल्बर्टीन को केवल संभावना से प्रेरणा मिलती थी, मुझे ईर्ष्या दिलाने की इच्छा से कभी नहीं। अल्बर्टीन को शायद कोई भौतिक स्वार्थ न होते हुए भी, लोगों का उसके प्रति विनम्र व्यवहार पसंद था। और इस रचना के दौरान मुझे कई बार यह दिखाने का अवसर मिला है और आगे भी मिलेगा कि ईर्ष्या प्रेम को कैसे तीव्र करती है, और मैंने प्रेमी के दृष्टिकोण को ही अपनाया है। लेकिन अगर वह प्रेमी जरा सा भी अभिमानी हो, और वियोग से मर भी जाए, तो वह कथित विश्वासघात का जवाब विनम्रता से नहीं देगा, बल्कि मुँह मोड़ लेगा, या बिना जाए ही अपने ऊपर शीतलता का मुखौटा चढ़ा लेगा। और इसलिए, उसकी प्रेमिका द्वारा उसे इतना कष्ट पहुँचाना पूरी तरह से उसके अपने ही नुकसान में है। इसके विपरीत, यदि वह एक चतुर शब्द से, प्रेम भरे स्पर्श से, उन शंकाओं को दूर कर देती है जो उसकी उदासीनता के दिखावे के बावजूद उसे सता रही थीं, तो निःसंदेह प्रेमी को प्रेम की वह निराशाजनक वृद्धि महसूस नहीं होती जिसकी ओर ईर्ष्या उसे धकेलती है, बल्कि वह पल भर में पीड़ा से मुक्त

होकर, प्रसन्न, स्नेही और तनावमुक्त हो जाता है, ठीक वैसे ही जैसे तूफान के बाद बारिश रुक जाती है और लंबे अंतराल पर ऊंचे शाहबलूत के पेड़ों से टपकती बूंदों की हल्की-हल्की आवाज सुनाई देती है, जिन पर फिर से उगते सूरज ने रंग चढ़ा दिया होता है। ऐसे में वह उस महिला के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त नहीं कर पाता जिसने उसे इस पीड़ा से मुक्त किया है। अल्बर्टीन जानती थी कि मुझे उसकी दयालुता के लिए उसे पुरस्कृत करना अच्छा लगता था, और शायद यही कारण था कि वह खुद को निर्दोष साबित करने के लिए ऐसी मनगढ़ंत बातें गढ़ती थी, जैसे ये कहानियां, जिनकी सच्चाई पर मुझे कभी संदेह नहीं हुआ, जिनमें से एक कहानी बर्गोट से उसकी मुलाकात की थी जब वह पहले ही मर चुका था। पहले मुझे अल्बर्टीन के झूठों के बारे में कुछ भी पता नहीं था, सिवाय उन झूठों के जो उदाहरण के तौर पर बालबेक में फ्रांस्वा मुझे बताया करती थी, जिन्हें मैंने इन पन्नों से हटा दिया है, हालांकि उनसे मुझे बहुत गहरा दुख पहुंचा था: "चूंकि वह आना नहीं चाहती थी, इसलिए उसने मुझसे कहा: 'क्या आप महाशय से यह नहीं कह सकते थे कि आप मुझे नहीं ढूंढ पाए, कि मैं बाहर चली गई थी?'" लेकिन हमारे 'अधीनस्थ', जो हमें उसी तरह प्यार करते हैं जैसे फ्रांस्वा मुझे करती थी, हमारे आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाने में आनंद लेते हैं।

अध्याय II

एम. डी चार्लस के साथ वर्डुरिन्स का झगड़ा

रात के खाने के बाद, मैंने अल्बर्टीन से कहा कि चूंकि मैं बिस्तर से उठ गई हूँ, तो क्यों न इस मौके का फायदा उठाकर अपने कुछ दोस्तों से मिलने जाऊँ, जैसे श्रीमती डी विलेपारिसिस, श्रीमती डी गुएरमांटेस, कैम्ब्रेमर्स, और संक्षेप में कहूँ तो घर पर जो भी मिल जाए। मैंने सिर्फ उन लोगों का ज़िक्र नहीं किया जिनसे मैं सच में मिलना चाहती थी, वर्दुरिन परिवार। मैंने उससे पूछा कि क्या वह मेरे साथ नहीं आएगी। उसने कहा कि उसके पास पहनने के लिए उपयुक्त कपड़े नहीं हैं। "इसके अलावा, मेरे बाल बहुत खराब लग रहे हैं। क्या आप सच में चाहती हैं कि मैं इन्हें ऐसे ही रखती रहूँ?" और विदाई के तौर पर उसने अपना हाथ मेरी ओर उसी अचानक अंदाज़ में बढ़ाया, बांह फैली हुई, कंधे पीछे की ओर झुके हुए, जैसा वह बालबेक के समुद्र तट पर किया करती थी और जिसे उसने तब से पूरी तरह छोड़ दिया था। इस भूले हुए इशारे ने उस शरीर को फिर से बदल दिया जिसमें यह भाव था, और उसे उस अल्बर्टीन में बदल दिया जो मुझे अभी तक ठीक से जानती भी नहीं थी। इसने अल्बर्टीन को, जो रूखेपन के पीछे औपचारिक थी, उसकी पहली नवीनता, उसका अजनबीपन, यहाँ तक कि उसका परिवेश भी लौटा दिया। मैंने उस लड़की के पीछे समुद्र देखा, जिसे मैंने समुद्र किनारे आने के बाद से कभी इस तरह मुझसे हाथ मिलाते नहीं देखा था। "मेरी चाची सोचती हैं कि इससे मैं बूढ़ी दिखती हूँ," उसने उदास स्वर में कहा। "काश उसकी चाची सही हों!" मैंने सोचा। "अल्बर्टीन का बच्ची जैसा दिखना, श्रीमती बोंटेम्प्स को उनकी उम्र से छोटा दिखाना, बस यही उसकी चाची चाहती हैं, और यह भी कि अल्बर्टीन पर अब से लेकर उस दिन तक कोई खर्च न हो जब वह मुझसे शादी करके उस पर खर्च किए गए पैसे चुका देंगी।" लेकिन इसके विपरीत, मैं तो यही चाहता था कि अल्बर्टीन कम जवान, कम सुंदर दिखे, सड़क पर कम लोगों का ध्यान खींचे। क्योंकि एक दाई की उम्र एक ईर्ष्यालु प्रेमी के लिए उस स्त्री के चेहरे की उम्र से कम सुकून देने वाली होती है जिससे वह प्यार करता है। मुझे बस इस बात का अफसोस था कि जिस तरह से मैंने उसे अपने बाल बनाने के लिए कहा था, वह अल्बर्टीन को उसकी कैद के दरवाजे पर एक और कुंडी की तरह लगा। और इसके बाद से यह नई घरेलू भावना कभी

खत्म नहीं हुई, यहां तक कि जब मैं अल्बर्टीन से अलग हो गया था तब भी, इसने मुझे उससे जोड़े रखने वाला एक बंधन बना दिया।

मैंने अल्बर्टीन से कहा, जिसने कपड़े नहीं पहने थे, या उसने मुझे ऐसा बताया था, कि वह मेरे साथ गुएरमांटेस या कैम्ब्रेमर्स के यहाँ चले, क्योंकि मुझे पक्का पता नहीं था कि मुझे कहाँ जाना चाहिए, और मैं वर्दुरिन्स के लिए निकल पड़ा। जिस क्षण उस संगीत कार्यक्रम का ख्याल मेरे मन में आया जिसे मैं सुनने जा रहा था, उसी समय मुझे उस दोपहर का दृश्य याद आ गया: "ग्रैंड पीड डे ग्रू, ग्रैंड पीड डे ग्रू,"—एक निराश प्रेम का दृश्य, शायद ईर्ष्यालु प्रेम का, लेकिन अगर ऐसा है तो उतना ही क्रूर जितना कि एक स्त्री को किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा प्रताड़ित किया जा सकता है जो, अगर कोई इस अभिव्यक्ति का प्रयोग करे, तो उससे प्यार करता है—उसी क्षण जब सड़क पर पहुँचकर मैं टैक्सी बुलाने ही वाला था, तभी मैंने एक आदमी के सिसकने की आवाज़ सुनी जो फुटपाथ पर बैठा था और अपनी सिसकियों को दबाने की कोशिश कर रहा था। मैं पास गया; जिस व्यक्ति ने अपना चेहरा हाथों में छिपा रखा था, वह काफी युवा लग रहा था, और उसके लबादे के खुले हिस्से में चमकती सफेदी देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया कि उसने शाम के कपड़े और सफेद टाई पहन रखी थी। जैसे ही उसने मेरे कदमों की आहट सुनी, उसने आंसुओं से भीगा अपना चेहरा खोला, लेकिन मुझे पहचानते ही वह तुरंत दूसरी तरफ मुड़ गया। वह मोरेल था। उसने अनुमान लगाया कि मैंने उसे पहचान लिया है और बड़ी मुश्किल से अपने आंसू रोकते हुए मुझे बताया कि वह दर्द से इतना व्याकुल था कि थोड़ी देर आराम करने के लिए रुक गया था। उसने कहा, "आज ही मैंने उस व्यक्ति का घोर अपमान किया है, जिसके लिए मेरे मन में बहुत सम्मान था। यह कायरतापूर्ण कार्य था, क्योंकि वह मुझसे प्यार करती है।" मैंने जवाब दिया, "शायद समय के साथ वह भूल जाएगी," मुझे यह एहसास नहीं था कि इस तरह बोलकर मैंने यह स्पष्ट कर दिया कि मैंने उस दोपहर की घटना सुन ली थी। लेकिन वह अपने दुख में इतना डूबा हुआ था कि उसे यह ख्याल भी नहीं आया कि मुझे इस मामले के बारे में कुछ पता हो सकता है। उसने कहा, "शायद वह भूल जाए।" "पर मैं खुद कभी नहीं भूल सकता। मैं अपनी गिरावट के प्रति बहुत सचेत हूँ, मैं खुद से घृणा करता हूँ! खैर, जो मैंने कह दिया सो कह दिया, और उसे कोई वापस नहीं ले सकता। जब लोग मुझे क्रोधित करते हैं, तो मुझे नहीं पता कि मैं क्या कर रहा हूँ। और यह मेरे लिए बहुत बुरा है, मेरी

नसें तनाव में हैं," क्योंकि, सभी न्यूरोस्टेनिक्स की तरह, वह अपने स्वास्थ्य के प्रति बहुत चिंतित था। यदि दोपहर में मैंने एक क्रोधित जानवर के प्रेम-उन्माद को देखा था, तो आज शाम, कुछ ही घंटों में, सदियाँ बीत चुकी थीं और एक नई भावना, शर्म, पछतावा, दुःख की भावना ने दिखाया कि उस जानवर के विकास में एक महान चरण बीत चुका है जिसे मनुष्य में परिवर्तित होना था। फिर भी, मेरे कानों में अभी भी उसका 'ग्रैंड पाइड डे ग्रू' गूंज रहा था और मुझे उस जंगली अवस्था में लौटने का डर सता रहा था। मुझे जो कुछ घटित हुआ था, उसका बहुत धुंधला सा आभास था, और यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि स्वयं एम. डी चार्लस को भी इस बात की बिल्कुल जानकारी नहीं थी कि पिछले कुछ दिनों से, और विशेष रूप से उस दिन से, यहाँ तक कि उस शर्मनाक घटना से पहले भी, जो वायलिन वादक की हालत का सीधा परिणाम नहीं थी, मोरेल को न्यूरोस्थेनिया का दौरा फिर से पड़ गया था। वास्तव में, पिछले महीने वह जुपियन की भतीजी को बहकाने की कोशिश में अपनी पूरी क्षमता से आगे बढ़ रहा था, हालाँकि वह जितनी तेज़ी से चाहता था, उससे कहीं धीमी गति से। अब जब उनकी सगाई हो चुकी थी, तो वह जब चाहे उसके साथ बाहर जा सकता था। लेकिन जब भी वह अपने दुराचार के प्रयासों में ज़रा भी आगे बढ़ जाता था, और विशेष रूप से जब वह अपनी मंगेतर को सुझाव देता था कि वह अन्य लड़कियों से दोस्ती कर ले, जिन्हें वह उसके लिए उपलब्ध कराएगी, तो उसे ऐसे प्रतिरोध का सामना करना पड़ता था जिससे वह क्रोधित हो जाता था। अचानक (चाहे वह बहुत पवित्र साबित होती, या इसके विपरीत खुद को समर्पित कर देती) उसकी इच्छा शांत हो जाती थी। उसने उससे संबंध तोड़ने का फैसला कर लिया था, लेकिन यह सोचकर कि बैरन, चाहे कितना भी क्रूर क्यों न हो, उससे कहीं अधिक नैतिक है, उसे डर था कि संबंध टूटने की स्थिति में एम. डी चार्लस उसे घर से निकाल देगा। इसलिए उसने दो सप्ताह पहले ही तय कर लिया था कि वह उस लड़की से दोबारा नहीं मिलेगा, एम. डी चार्लस और जुपियन को इस गड़बड़ को खुद ही संभालने देगा (उसने अधिक यथार्थवादी शब्द का प्रयोग किया), और संबंध तोड़ने की घोषणा करने से पहले किसी अज्ञात स्थान की ओर निकल जाएगा।

हालांकि जुपियन की भतीजी के प्रति उसका व्यवहार, सेंट-मार्स ले वेतु में बैरन के साथ भोजन करते समय उसने जो योजना बताई थी, उससे बिल्कुल मेल खाता था, फिर भी संभव है कि

उसका इरादा पूरी तरह से अलग था, और व्यवहार में कुछ कम जघन्य भावनाएँ हावी हो गई थीं, जिनका उसने अपने आचरण के सिद्धांत में अनुमान नहीं लगाया था। एकमात्र बिंदु जिसमें व्यवहार सिद्धांत से बदतर था, वह यह था कि सिद्धांत में उसे यह संभव नहीं लग रहा था कि वह इस तरह के विश्वासघात के बाद पेरिस में रह पाएगा। अब, इसके विपरीत, इतने छोटे से मामले के लिए 'चले जाना' उसे बिल्कुल अनावश्यक लग रहा था। इसका मतलब था बैरन को छोड़ना, जो शायद क्रोधित होगा, और अपनी स्थिति खो देना। वह बैरन द्वारा उसे दिए जा रहे सभी पैसे खो देगा। यह सोचकर कि यह अपरिहार्य है, मोरेल पूरी तरह से टूट गया। वह घंटों तक रोता रहा और इस बारे में और न सोचने के लिए उसने सावधानीपूर्वक मॉर्फिन की खुराक ली। तभी अचानक उसके मन में एक विचार आया जो निस्संदेह कुछ समय से उसके दिमाग में धीरे-धीरे आकार ले रहा था और मजबूत होता जा रहा था। वह विचार यह था कि उस लड़की से संबंध टूटने का मतलब एम. डी चार्लस से पूरी तरह से अलग होना नहीं होगा। बैरन का सारा पैसा खोना अपने आप में एक गंभीर बात थी। मोरेल अपनी अनिश्चितता में कुछ दिनों तक बुरे विचारों में डूबा रहा, जैसे कि ब्लोच को देखकर उसके मन में आते थे। फिर उसने फैसला किया कि जुपियन और उसकी भतीजी उसके लिए जाल बिछाने की कोशिश कर रहे थे, ताकि वे खुद को भाग्यशाली समझें कि वे उससे इतनी आसानी से छुटकारा पा गए। संक्षेप में, उसे समझ आया कि लड़की की गलती थी कि वह इतनी नासमझ थी, कि वह उसे अपने प्रति कामुक आकर्षण से बांधे रखने में सफल नहीं हो पाई। एम. डी चार्लस के साथ अपने पद का त्याग करना उन्हें न केवल बेतुका लगा, बल्कि सगाई के बाद से उन्होंने उस लड़की को जो महंगे भोज दिए थे, उनका भी उन्हें अफ़सोस था। इन भोजों का सटीक खर्च उन्हें मुंह ज़बानी याद था, क्योंकि वे एक ऐसे नौकर के सच्चे बेटे थे जो हर महीने अपने चाचा के निरीक्षण के लिए अपनी 'किताब' लेकर आता था। क्योंकि आम तौर पर 'किताब' शब्द का अर्थ मुद्रित पुस्तक होता है, लेकिन शाही राजकुमारों और नौकरों के बीच इसका अर्थ बदल जाता है। नौकरों के लिए इसका अर्थ उनकी गृह-पुस्तिका होता है, जबकि राजकुमारों के लिए वह रजिस्टर जिसमें हम अपना नाम लिखते हैं। (एक दिन बालबेक में जब लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी ने मुझसे कहा कि वह अपने साथ कोई किताब नहीं लाई हैं, तो मैं उन्हें 'ले पेचेउर डी'इसलैंड' और 'टार्टारिन डी तारास्कॉन' देने ही वाला था, तभी मुझे एहसास हुआ कि उनका

मतलब यह नहीं था कि उनका समय कम सुखद बीतेगा, बल्कि यह था कि उनसे मिलने जाना मेरे लिए अधिक कठिन हो जाएगा।)

अपने व्यवहार के परिणामों के बारे में मोरेल के दृष्टिकोण में बदलाव के बावजूद, हालांकि दो महीने पहले, जब वह जुपियन की भतीजी के प्रेम में डूबा हुआ था, तो उसे वह व्यवहार घृणित लगता था, जबकि पिछले पखवाड़े में वह लगातार खुद को यही विश्वास दिलाता रहा कि वही व्यवहार स्वाभाविक और प्रशंसनीय है, फिर भी इससे उसकी मानसिक बेचैनी और बढ़ गई, जिसके कारण अंततः उसने उस दोपहर संबंध तोड़ने की घोषणा की। और वह अपना क्रोध निकालने के लिए पूरी तरह तैयार था, यदि उस लड़की पर नहीं (केवल क्षणिक आवेश में), जिसके लिए उसके मन में अब भी वह भय और प्रेम का अंतिम अंश बाकी था, तो कम से कम बैरन पर ही निकालता। हालांकि, उसने रात के खाने से पहले उससे कुछ भी न कहने का ध्यान रखा, क्योंकि अपनी पेशेवर कुशलता को सर्वोपरि मानते हुए, जब भी उसे कोई कठिन संगीत बजाना होता था (जैसे कि उस शाम वर्दुरिन के यहाँ), तो वह (जहाँ तक संभव हो, और उस दोपहर का माहौल पहले से ही काफी चुनौतीपूर्ण था) ऐसी किसी भी चीज़ से बचता था जो उसकी कलाई की लचीलता को प्रभावित कर सकती थी। इसी तरह, एक सर्जन जो गाड़ी चलाने का शौकीन है, ऑपरेशन के दिन गाड़ी नहीं चलाता। मुझे लगता है कि इसी वजह से जब वह मुझसे बात कर रहा था, तो वह अपनी उंगलियों को धीरे-धीरे एक-एक करके मोड़कर देख रहा था कि क्या उनमें लचीलापन वापस आ गया है। उसके चेहरे पर हल्की सी शिकन से लग रहा था कि उसके चेहरे पर अभी भी थोड़ी सी घबराहट है। लेकिन, इसे और न बढ़ाने के लिए, उसने अपने चेहरे के भावों को शांत कर लिया, जैसे हम नींद न आने या किसी स्त्री को मनाने में असमर्थ होने पर चिढ़ने से खुद को रोकते हैं, कहीं ऐसा न हो कि हमारा गुस्सा ही नींद या संतुष्टि के क्षण को विलंबित कर दे। और इसलिए, अपनी शांति वापस पाने के लिए बेचैन, ताकि वह अपनी आदत के अनुसार, वर्दुरिन्स में जो बजाने वाला था, उसमें पूरी तरह से लीन हो सके, और जब तक मैं उसे देख रहा था, मुझे यह दिखाने के लिए बेचैन कि वह कितना दुखी है, उसने फैसला किया कि सबसे आसान तरीका यही है कि वह मुझसे तुरंत चले जाने की विनती करे। उसकी विनती बेकार थी, और उससे दूर जाना मेरे लिए राहत की बात थी। मुझे डर सता रहा था कि कहीं हम कुछ ही मिनटों में एक ही घर पर न पहुँचने लगें और

वो मुझे अपने साथ चलने के लिए न कह दे। उस दोपहर का दृश्य मुझे इतना स्पष्ट था कि मोरेल को अपने साथ ले जाने का ख्याल ही मुझे असहज कर रहा था। यह संभव है कि जुपियन की भतीजी के लिए मोरेल का प्यार, और बाद में उसकी उदासीनता या नफ़रत, सच्ची रही हो। दुर्भाग्य से, यह पहली बार नहीं था जब उसने ऐसा व्यवहार किया था, कि उसने उस लड़की को अचानक छोड़ दिया था जिससे उसने अमर प्रेम की कसम खाई थी, यहाँ तक कि एक भरी हुई रिवाल्वर निकालकर उसे धमकी दी थी कि अगर उसने कभी उसे छोड़ने की नीच हरकत की तो वो खुद को गोली मार लेगा। फिर भी, उसने समय आने पर उसे छोड़ दिया, और पछतावे के बजाय, उसके प्रति एक तरह की द्वेष भावना महसूस की। यह पहली बार नहीं था जब उसने ऐसा व्यवहार किया था, और न ही यह आखिरी बार था। इसका नतीजा यह हुआ कि कई लड़कियों के सिर - वे लड़कियां जो उसे उससे कहीं ज़्यादा नहीं भूली थीं जितना वह उन्हें - पीड़ा झेलने लगा - जैसे जुपियन की भतीजी का सिर लंबे समय बाद तक पीड़ा झेलता रहा, जो मोरेल से नफरत करते हुए भी उससे प्यार करती थी - एक अंदरूनी दर्द से फटने को तैयार था क्योंकि उनमें से हर एक में - किसी यूनानी नक्काशी के टुकड़े की तरह - मोरेल के चेहरे का एक पहलू, संगमरमर की तरह कठोर और किसी प्राचीन मूर्ति की तरह सुंदर, उसके दिमाग में बस गया था, उसके खिलते बाल, उसकी सुंदर आंखें, उसकी सीधी नाक, एक ऐसी खोपड़ी में उभार बना रहे थे जो उसे धारण करने के लिए नहीं बनी थी, जिस पर कोई ऑपरेशन संभव नहीं था। लेकिन समय के साथ ये पत्थर के टुकड़े ऐसी जगह चले जाते हैं जहां वे कोई खास तकलीफ नहीं देते, जहां से वे फिर कभी नहीं उठते; हम अब उनकी उपस्थिति के प्रति सचेत नहीं रहते: मेरा मतलब है विस्मृति, या एक उदासीन स्मृति।

इस बीच, दिनभर में मुझे दो बातें सीखने को मिलीं। एक ओर, अल्बर्टीन की विनम्रता से मुझे जो शांति मिली, उसके फलस्वरूप मैंने उससे संबंध तोड़ने का फैसला कर लिया। दूसरी ओर, पियानो पर उसके इंतज़ार में बिताए समय के दौरान मेरे मन में ये विचार आए कि कला, जिसके लिए मैं अपनी पुनः प्राप्त स्वतंत्रता समर्पित करने का प्रयास करूंगा, कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो बलिदान को उचित ठहराती हो, जीवन से परे कोई वस्तु नहीं है, जो जीवन की मूर्खता और निरर्थकता में भागीदार न हो; कलाकृतियों में दिखाई देने वाली वास्तविक व्यक्तित्व की झलक मात्र कलाकार के तकनीकी कौशल द्वारा निर्मित भ्रम के कारण होती है।

यदि मेरी दोपहर ने कुछ और गहरी बातें भी छोड़ी हों, तो वे मुझे बहुत बाद में ही पता चलेंगी। जहाँ तक उन दो बातों का सवाल है जिनका मैंने इस प्रकार मूल्यांकन किया, वे स्थायी नहीं थीं; क्योंकि, ठीक उसी शाम से कला के बारे में मेरे विचार उस अवसाद से ऊपर उठने वाले थे, जिसके वे दोपहर में शिकार हुए थे, जबकि दूसरी ओर मेरी शांति, और परिणामस्वरूप वह स्वतंत्रता जो मुझे इसमें खुद को समर्पित करने में सक्षम बनाती, एक बार फिर मुझसे छीन ली जाने वाली थी।

मेरी टैक्सी, तटबंध के समानांतर चलते हुए, वर्दुरिन के घर के पास पहुँच रही थी, तभी मैंने ड्राइवर को गाड़ी रोकने के लिए कहा। मैंने अभी-अभी ब्रिचोट को रू बोनापार्ट के निचले हिस्से में ट्राम से उतरते देखा था, जिसके बाद उन्होंने एक पुराने अखबार से अपने जूतों की धूल झाड़ी और मोती जैसे भूरे रंग के दस्ताने पहने। मैं पैदल ही उनके पास गया। कुछ समय से उनकी दृष्टि लगातार कमजोर होती जा रही थी, इसलिए उन्हें एक वेधशाला की तरह ही शक्तिशाली और जटिल प्रकार के नए चश्मे मिले थे, जो खगोलीय यंत्रों की तरह उनकी आँखों में जकड़े हुए प्रतीत होते थे; उन्होंने अपनी तेज चमक से मेरी ओर देखा और मुझे पहचान लिया। वे चश्मे अद्भुत स्थिति में थे। लेकिन उनके पीछे मैं देख सकता था, एक सूक्ष्म, पीला, कंपकंपाता हुआ, मरणासन्न, एक दूरस्थ दृष्टि जो इस शक्तिशाली उपकरण के नीचे रखी गई थी, मानो किसी प्रयोगशाला में, जो उसमें किए जाने वाले काम के अनुपात से कहीं अधिक सुसज्जित हो, आप किसी नगण्य जीव की अंतिम पीड़ा को नवीनतम और सबसे उत्तम प्रकार के सूक्ष्मदर्शी से देख रहे हों। मैंने उसे आगे बढ़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया। "इस बार हम महान चेरबर्ग के पास नहीं, बल्कि छोटे डंकरक के पास मिल रहे हैं," उसने मुझसे कहा, "यह टिप्पणी मुझे बेहद थकाऊ लगी, क्योंकि मैं समझ नहीं पाया कि उसका क्या मतलब था; और फिर भी मैंने ब्रिचोट से पूछने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि मुझे उसके तिरस्कार से ज़्यादा उसकी व्याख्याओं का डर था। मैंने उत्तर दिया कि मैं उस कमरे को देखने के लिए तरस रहा हूँ जहाँ स्वान हर शाम ओडेट से मिलता था। "क्या, तो तुम वह पुरानी कहानी जानते हो?" उसने कहा। "और फिर भी उन दिनों से लेकर स्वान की मृत्यु तक, कवि ने जिसे सही कहा है: 'ग्रैंड स्पेसियम मोर्टेलिस एवी' है।"

उस समय स्वान की मृत्यु मेरे लिए एक गहरा आघात थी। स्वान की मृत्यु! इस वाक्यांश में स्वान केवल एक संज्ञा नहीं है, बल्कि इससे कहीं अधिक है। मेरा तात्पर्य उसकी अपनी विशेष मृत्यु से है, वह मृत्यु जो नियति ने स्वान की सेवा के लिए निर्धारित की थी। हम सुविधा के लिए 'मृत्यु' शब्द का प्रयोग करते हैं, लेकिन लगभग उतने ही प्रकार की मृत्यु होती हैं जितने मनुष्य। हमारे पास ऐसी समझ नहीं है जो हमें इन मृत्युओं को, नियति द्वारा किसी व्यक्ति पर लक्षित सक्रिय मृत्युओं को, हर गति और हर दिशा में घटित होते हुए देखने में सक्षम बनाए। अक्सर ऐसी मृत्युएँ होती हैं जो दो या तीन वर्ष बाद तक अपने कर्तव्यों से पूरी तरह मुक्त नहीं होतीं। वे जल्दी से आती हैं, किसी स्वान के शरीर में ट्यूमर डालती हैं, फिर अपने अन्य कर्तव्यों को पूरा करने के लिए चली जाती हैं, और तभी लौटती हैं जब सर्जन अपना ऑपरेशन कर चुके होते हैं और वहाँ फिर से ट्यूमर डालना आवश्यक होता है। फिर वह क्षण आता है जब हम गॉलॉइस अखबार में पढ़ते हैं कि स्वान का स्वास्थ्य चिंता का विषय था, लेकिन अब वह तेजी से स्वस्थ हो रहा है। फिर, हमारे शरीर से सांस निकलने से कुछ मिनट पहले, मृत्यु, मानो कोई दया की बहन हो जो हमें नष्ट करने के बजाय हमारी देखभाल करने आई हो, हमारे अंतिम क्षणों पर अपना अधिकार जमाती है, और उस ठंडे और अकड़ चुके प्राणी को, जिसका हृदय धड़कना बंद हो चुका है, एक सर्वोच्च आभा से सुशोभित कर देती है। और मृत्यु की यही विविधता, उनके रहस्यमय मार्ग, उनके घातक चिन्ह का रंग, समाचार पत्रों में इस तरह के अनुच्छेद को इतना प्रभावशाली बनाता है:

हमें यह जानकर गहरा दुख हुआ कि श्री चार्ल्स स्वान का कल पेरिस स्थित उनके निवास पर लंबी और कष्टदायक बीमारी के बाद निधन हो गया। एक ऐसे पेरिसवासी जिनकी बौद्धिक प्रतिभा की व्यापक रूप से सराहना की जाती थी, एक विवेकशील लेकिन अटूट निष्ठावान मित्र, उनकी कमी उन सभी साहित्यिक और कलात्मक मंडलों में सर्वत्र खलेगी जहाँ उनके सुविचार और रुचि ने उन्हें एक सुखद और स्वागत योग्य अतिथि बना दिया था, साथ ही जॉकी क्लब में भी, जिसके वे सबसे पुराने और सम्मानित सदस्यों में से एक थे। वे यूनियन और एग्रीकोल के भी सदस्य थे। उन्होंने हाल ही में रू रॉयल की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया था। संगीत और कला के सभी बड़े आयोजनों में, विशेष रूप से निजी कार्यक्रमों में, जहाँ वे नियमित रूप से उपस्थित रहते थे, उनकी उपस्थिति और विशिष्ट आचरण ने हमेशा लोगों का

ध्यान आकर्षित किया। वे अपने जीवन के अंतिम वर्षों में लगभग पूरी तरह से घर तक ही सीमित हो गए थे। अंतिम संस्कार की रस्में जल्द ही पूरी होंगी, इत्यादि।

इस दृष्टिकोण से देखें तो, यदि कोई व्यक्ति 'कोई खास' नहीं है, तो किसी प्रसिद्ध उपाधि का अभाव उसके पतन की प्रक्रिया को और भी तीव्र बना देता है। निस्संदेह, बिना किसी व्यक्तिगत पहचान के, लगभग गुमनाम रूप से ही कोई व्यक्ति ड्यूक डी'उज़ेस बना रहता है। लेकिन ड्यूक का मुकुट कुछ समय के लिए सभी तत्वों को एक साथ बांधे रखता है, जैसे साँचे उन कलात्मक रूप से डिज़ाइन की गई बर्फों को एक साथ रखते हैं जिनकी अल्बर्टाइन प्रशंसा करते थे, जबकि अति-फैशन वाले आम लोगों के नाम, मरते ही घुल जाते हैं और अपना आकार खो देते हैं। हमने एम. डी ब्रेउटे को कार्टियर के बारे में ड्यूक डी ला ट्रेमोइल के सबसे घनिष्ठ मित्र के रूप में, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में बात करते देखा है जिसकी कुलीन वर्ग में बहुत मांग थी। बाद की पीढ़ी के लिए, कार्टियर इतना निराकार हो गया है कि उसे जौहरी कार्टियर से संबंधित बताना लगभग उसके महत्व को बढ़ा देगा, जिसके साथ वह यह सोचकर मुस्कुराता कि कोई इतना अज्ञानी कैसे हो सकता है कि उसे भ्रमित कर दे! इसके विपरीत, स्वान बौद्धिक और कलात्मक दोनों ही क्षेत्रों में एक असाधारण व्यक्तित्व थे; और भले ही उन्होंने कुछ भी 'निर्मित' न किया हो, फिर भी उनके पास कुछ और समय तक जीवित रहने का मौका था। और फिर भी, मेरे प्रिय चार्ल्स——, जिन्हें मैं तब जानता था जब मैं बहुत छोटा था और आप अपनी मृत्यु के करीब थे, यह इसलिए है क्योंकि जिसे आप शायद एक मूर्ख समझते थे, उसने आपको अपनी एक रचना का नायक बनाया है, इसलिए लोग आपके बारे में फिर से बात करने लगे हैं और शायद आपका नाम अमर हो जाएगा। यदि टिसोट के उस चित्र में, जो रू रॉयल क्लब की बालकनी को दर्शाता है, जहाँ आप गैलिफ़ेट, एडमंड पोलिग्नैक और सेंट-मौरिस के साथ दिखाई देते हैं, लोग हमेशा आपकी ओर ध्यान आकर्षित करते हैं, तो यह इसलिए है क्योंकि वे जानते हैं कि स्वान के चरित्र में आपके कुछ अंश मौजूद हैं।

अधिक सामान्य वास्तविकताओं पर लौटते हुए, स्वान की इसी पूर्व-निर्धारित और फिर भी अप्रत्याशित मृत्यु के बारे में मैंने उन्हें डचेस डी गुएरमांटेस से उनकी चचेरी बहन की पार्टी की शाम को बात करते हुए सुना था। यह वही मृत्यु थी जिसकी विचित्रता और विशिष्टता एक शाम मुझे फिर से याद आ गई, जब अखबार पढ़ते समय अचानक मेरी नज़र उस मृत्यु की घोषणा

पर पड़ी, मानो रहस्यमय ढंग से उसे कहीं बेतरतीब ढंग से उकेरा गया हो। उन पंक्तियों ने एक जीवित व्यक्ति को ऐसा बना दिया जो अब कभी भी आपकी बातों का जवाब नहीं दे सकता, उसे महज़ एक नाम, एक लिखित नाम तक सीमित कर दिया, जो एक पल में वास्तविक दुनिया से मौन के लोक में चला गया। उन्हीं पंक्तियों ने मुझे आज भी उस घर से परिचित होने के लिए उत्सुक कर दिया है जिसमें वर्दुरिन परिवार रहता था, और जहाँ स्वान, जो उस समय केवल अखबार में छपे पाँच अक्षरों की एक पंक्ति नहीं थे, ओडेट के साथ अक्सर भोजन करते थे। मुझे यह भी जोड़ना होगा (और यही वह बात है जिसने लंबे समय तक स्वान की मृत्यु को अन्य सभी मृत्युओं से अधिक पीड़ादायक बना दिया, हालांकि इन कारणों का उनकी मृत्यु की व्यक्तिगत विचित्रता से कोई संबंध नहीं था) कि मैं गिलबर्ट से मिलने कभी नहीं गया, जैसा कि मैंने प्रिंसेस डी गुएरमांटेस के यहाँ उनसे वादा किया था, कि उन्होंने मुझे कभी नहीं बताया कि 'दूसरा कारण' क्या था, जिसका उन्होंने उस शाम जिक्र किया था, जिसके कारण उन्होंने राजकुमार के साथ अपनी बातचीत के लिए मुझे चुना था, कि मेरे मन में हजारों प्रश्न उठे (जैसे तालाब की तलहटी से बुलबुले उठते हैं) जो मैं उनसे विभिन्न विषयों पर पूछना चाहता था: वर्मीर, एम. डी मौची, स्वयं स्वान, एक बूचर टेपेस्ट्री, कॉम्ब्रे, ऐसे प्रश्न जो निस्संदेह बहुत महत्वपूर्ण नहीं थे क्योंकि मैंने उन्हें दिन-प्रतिदिन टाल दिया था, लेकिन अब मुझे अत्यंत महत्वपूर्ण लग रहे थे क्योंकि उनके होंठ बंद थे, और कोई उत्तर कभी नहीं मिलेगा।

ब्रिचोट ने आगे कहा, "नहीं, स्वान की मुलाकात अपनी भावी पत्नी से यहाँ नहीं हुई थी, या यूँ कहें कि यह मुलाकात श्रीमती वर्दुरिन के पूर्व घर को आंशिक रूप से नष्ट करने वाली आपदा के ठीक बाद के समय में ही हुई थी।"

दुर्भाग्यवश, ब्रिचोट के सामने कोई ऐसी फिजूलखर्ची प्रदर्शित करने के डर से, जो मुझे अनुचित लग रही थी, क्योंकि प्रोफेसर को उसमें कोई हिस्सा नहीं मिल रहा था, मैं गाड़ी से बहुत जल्दी उतर गया और ड्राइवर मेरी बात नहीं समझ पाया। मैंने पीछे मुड़कर उसे ये शब्द कहे थे ताकि ब्रिचोट की नज़र पड़ने से पहले मैं गाड़ी से काफी दूर निकल जाऊं। नतीजा ये हुआ कि ड्राइवर हमारे पीछे आया और मुझसे पूछा कि क्या वो मुझे बाद में बुलाएगा; मैंने जल्दी से हां में जवाब दिया, और बस से आए प्रोफेसर ने मेरा बहुत सम्मान किया।

“आह! तो आप गाड़ी में थीं,” उन्होंने गंभीर स्वर में कहा। “महज़ संयोगवश। मैं आमतौर पर गाड़ी नहीं लेता। मैं हमेशा बस से या पैदल ही यात्रा करता हूँ। खैर, अगर आप मेरी उस खटारा गाड़ी में बैठने की कृपा करें, तो शायद मुझे आज रात आपको घर छोड़ने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है; हम काफी ठसाठस भर जाएँगे। लेकिन आप हमेशा मेरे प्रति इतनी दयालु रहती हैं।” अफसोस, उन्हें यह प्रस्ताव देकर मैं खुद को किसी चीज़ से वंचित नहीं कर रहा हूँ (मैंने सोचा), क्योंकि वैसे भी मुझे अल्बर्टीन के लिए घर जाना ही पड़ेगा। मेरे घर में उनकी उपस्थिति, ऐसे समय में जब उनसे मिलने कोई नहीं आ सकता था, ने मुझे अपने समय का उतना ही स्वतंत्र रूप से उपयोग करने की अनुमति दी, जितना उस दोपहर, जब मैं पियानो पर बैठा था और जानता था कि वह ट्रोकाडेरो से वापस आ रही हैं और मुझे उनसे दोबारा मिलने की कोई जल्दी नहीं थी। लेकिन इसके अलावा, दोपहर की तरह ही, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि घर में एक महिला है और घर लौटने पर मुझे एकांत का रोमांच नहीं मिलेगा। ब्रिचोट ने उत्तर दिया, "मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ। जिस समय की आप बात कर रहे हैं, उस समय हमारे मित्र रुए मोंटालिवेट में एक शानदार भूतल अपार्टमेंट में रहते थे, जिसमें एक ऊपरी लैंडिंग और पीछे एक बगीचा था, जो बेशक कम भव्य था, फिर भी मेरी राय में पुराने वेनिस दूतावास से बेहतर था।" ब्रिचोट ने मुझे बताया कि आज शाम 'क्वाई कोंटी' (वर्दुरिन ड्राइंग-रूम को उस पते पर स्थानांतरित किए जाने के बाद से श्रद्धालु इसी नाम से पुकारते थे) में एम. डी चार्लस द्वारा आयोजित एक भव्य संगीतमय कार्यक्रम होने वाला है। उन्होंने आगे कहा कि जिन पुराने दिनों का मैंने जिक्र किया था, उस समय छोटा समूह अलग था, और उसका स्वर बिल्कुल अलग था, न केवल इसलिए कि तब श्रद्धालु युवा थे। उन्होंने मुझे एल्स्टिर द्वारा किए गए विस्तृत मज़ाकों के बारे में बताया (जिन्हें वे 'शुद्ध मसखरेपन' कहते थे), जैसे कि एक दिन जब चित्रकार ने अंतिम क्षण में असफल होने का नाटक किया, तो वह एक अतिरिक्त वेटर के वेश में आया और जैसे ही उसने व्यंजन परोसे, अत्यंत शालीन बैरोनेस पुटबस के कान में वीरतापूर्ण भाषण फुसफुसाए, जो क्रोध और भय से लाल हो गई थीं; फिर रात के खाने के अंत से पहले गायब हो गया और ड्राइंग रूम में एक हिप-बाथ ले जाया गया, जिसमें से, जब मेहमान मेज से उठे, तो वह पूरी तरह नग्न अवस्था में बाहर निकला और भयानक गालियाँ बकने लगा; और उन रात्रिभोज पार्टियों के बारे में भी बताया जिनमें मेहमान कागज़ के

परिधान पहनकर आते थे, जिन्हें एल्स्टिर द्वारा डिज़ाइन, काटा और रंगा गया था, जो अपने आप में उत्कृष्ट कृतियाँ थीं, ब्रिचोट ने एक बार चार्ल्स सप्तम के दरबार के एक महान रईस का परिधान पहना था, जिसके जूतों के लंबे नुकीले सिरे थे, और दूसरी बार नेपोलियन प्रथम का, जिसके लिए एल्स्टिर ने सीलिंग-वैक्स से लीजन ऑफ ऑनर का एक भव्य कॉर्डन बनाया था। संक्षेप में, ब्रिचोट ने स्मृति की दृष्टि से उन दिनों के ड्राइंग रूम को फिर से देखा, जिसमें ऊँची खिड़कियाँ थीं, दोपहर की धूप से तपते हुए नीची सोफे थे जिन्हें बदलना पड़ा था। उन्होंने कहा कि उन्हें आज के ड्राइंग रूम की तुलना में वह ड्राइंग रूम अधिक पसंद था। बेशक, मैं अच्छी तरह समझ गया था कि ब्रिचोट का 'ड्राइंग रूम' से तात्पर्य—जैसे कि चर्च शब्द का अर्थ केवल धार्मिक भवन ही नहीं बल्कि उपासकों का समूह भी होता है—केवल कमरा नहीं, बल्कि वहाँ आने वाले लोग, वहाँ मिलने वाले विशेष आनंद थे, जिन्हें उनकी स्मृति में वे सोफे अपना रूप देते थे। जब आप दोपहर में श्रीमती वर्दुरिन से मिलने जाते थे, तो आप उनके तैयार होने तक प्रतीक्षा करते थे, जबकि बाहर लगे हॉर्स चेस्टनट के पेड़ और मेंटलपीस पर रखे गुलदस्ते में खिले कार्नेशन, आगंतुक के प्रति एक आकर्षक और दयालु भाव से भरे अपने गुलाबी रंग के मुस्कुराते स्वागत में, घर की मालकिन के देर से आने की बेसब्री से प्रतीक्षा करते प्रतीत होते थे। लेकिन अगर ड्राइंग रूम उन्हें वर्तमान से बेहतर लगता था, तो शायद इसलिए कि हमारा मन पुराने प्रोटियस की तरह है जो किसी एक रूप का गुलाम नहीं रह सकता और सामाजिक जगत में भी, धीरे-धीरे और कठिनाई से पूर्णता की ऊँचाई तक पहुँचे घर को अचानक छोड़कर किसी कम आकर्षक घर को पसंद करने लगता है, ठीक वैसे ही जैसे ओटो के यहाँ ओडेट द्वारा ली गई 'संशोधित' तस्वीरें, जिनमें वह 'राजकुमारी' गाउन में रानी की तरह दिख रही थीं और लेंथेरिक ने उनके बालों को लहराया था, स्वान को उतनी पसंद नहीं आईं जितनी नीस में ली गई एक छोटी सी 'कैबिनेट तस्वीर', जिसमें वह कपड़े के लबादे में थीं, उनके ढीले-ढाले बाल पैंसी फूलों से सजी और काले रिबन के धनुष वाली पुआल की टोपी के नीचे से बाहर निकले हुए थे, बीस साल छोटी दिखने के बजाय (क्योंकि महिलाएं आमतौर पर तस्वीर में जितनी पुरानी होती हैं, उतनी ही बड़ी दिखती हैं), वह अपनी वर्तमान उम्र से बीस साल बड़ी एक नौकरानी जैसी लग रही थीं। शायद उन्हें मुझे उन चीजों की प्रशंसा करने में भी कुछ आनंद मिलता था जिन्हें मैं स्वयं कभी नहीं जान पाया था, मुझे यह दिखाने में कि उन्होंने उन

सुखों का स्वाद चखा था जिनका आनंद मैं कभी नहीं ले सकता था। यदि ऐसा था, तो वे सफल रहे, क्योंकि केवल दो-तीन लोगों के नाम लेकर, जो अब जीवित नहीं थे और जिनमें से प्रत्येक के बारे में अपने उल्लेख के तरीके से उन्होंने कुछ रहस्यमय सा भाव व्यक्त किया, उस मधुर आत्मीयता के बारे में, उन्होंने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि वह कैसा रहा होगा; मुझे लगा कि वर्दुरिन परिवार के बारे में मुझे जो कुछ भी बताया गया था वह बहुत ही भद्दा था; और वास्तव में, स्वान के मामले में, जिन्हें मैं जानता था, मैंने खुद को इस बात के लिए दोषी ठहराया कि मैंने उन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया, पर्याप्त रूप से निष्पक्ष भाव से उनकी बात नहीं सुनी, जब वे मुझे अपनी पत्नी के दोपहर के भोजन के लिए घर आने का इंतजार करते हुए मनोरंजन करते थे और मुझे अपने खजाने दिखाते थे, तब मैंने उनकी बात ठीक से नहीं सुनी, अब जब मैं जानता था कि वे अतीत के सबसे प्रतिभाशाली वक्ताओं में गिने जाने योग्य थे। जैसे ही हम श्रीमती की ओर बढ़ रहे थे... वर्दुरिन के द्वार पर, मेरी नज़र एम. डी चार्लस पर पड़ी, जो अपने विशाल शरीर को हमारी ओर बढ़ा रहे थे, और अनिच्छा से अपने पीछे उन ब्लैकमेलरों या भिखारियों में से एक को खींच रहे थे जो आजकल, जब भी वह दिखाई देते थे, बिना किसी चूक के सबसे सुनसान कोनों में भी प्रकट हो जाते थे। यह शक्तिशाली राक्षस, स्पष्ट रूप से अपनी इच्छा के विरुद्ध, हमेशा एक निश्चित दूरी पर, उसी तरह साथ रहता था जैसे शार्क अपने नाविक के साथ रहती है। संक्षेप में, यह बालबेक की मेरी पहली यात्रा के अभिमानी अजनबी से इतना अलग था, अपने कठोर चेहरे और पौरुष के दिखावे के साथ, कि मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी ग्रह को उसके उपग्रह के साथ, उसकी परिक्रमा के एक बिल्कुल अलग चरण में देख रहा हूँ, जब उसे पूर्ण रूप से देखा जाने लगता है, या किसी बीमार व्यक्ति को जो अब उस बीमारी से ग्रसित है जो कुछ साल पहले एक छोटा सा धब्बा मात्र थी जिसे आसानी से छिपाया जा सकता था और जिसकी गंभीरता का कभी अनुमान नहीं लगाया जा सकता था। हालांकि ब्रिचोट की सर्जरी से उनकी दृष्टि का एक छोटा सा हिस्सा वापस आ गया था, जिसे वे हमेशा के लिए खोया हुआ मान रहे थे, मुझे नहीं लगता कि उन्होंने बैरन के पीछे-पीछे चल रहे उस बदमाश को देखा होगा। वैसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि ला रास्पेलियर की घटना के बाद से, और एम. डी चार्लस के प्रति प्रोफेसर के मैत्रीपूर्ण व्यवहार के बावजूद, बाद वाले को देखते ही उन्हें हमेशा बेचैनी महसूस होती थी। निस्संदेह, हर व्यक्ति के लिए दूसरे

व्यक्ति का जीवन उन रहस्यमय रास्तों पर फैला होता है जिन पर उसे संदेह नहीं होता। लेकिन झूठ, जो अक्सर कपटपूर्ण होता है और जिस पर सारी बातचीत आधारित होती है, शत्रुता की भावना, या घिनौने स्वार्थ, या किसी ऐसी मुलाकात जिसे हम अनदेखा करना चाहते हैं, या किसी प्रेमिका के साथ किसी ऐसे प्रसंग को जिसे हम अपनी पत्नी से छुपाना चाहते हैं, को उतनी अच्छी तरह से नहीं छुपाता जितना कि अच्छी प्रतिष्ठा बुरी आदतों को छुपाती है ताकि उनके अस्तित्व का अनुमान न लगाया जा सके। वे जीवन भर हमसे अनजान रह सकते हैं; रात में घाट पर अचानक हुई मुलाकात उन्हें उजागर कर देगी; फिर भी, इस आकस्मिक खोज को अक्सर गलत समझा जाता है और हमें एक तीसरे व्यक्ति की आवश्यकता होती है, जो इस रहस्य में वाकिफ हो, ताकि वह उस अनसुलझे सुराग की जानकारी दे सके जिससे हर कोई अनजान है। लेकिन, एक बार जब हमें उनके बारे में पता चल जाता है, तो वे हमें चिंतित कर देते हैं क्योंकि हमें लगता है कि उनकी अनैतिकता से कहीं अधिक, उस रास्ते पर पागलपन का खतरा मंडरा रहा है। श्रीमती डी सर्जिस में नैतिक भावना का जरा सा भी अंश नहीं था, और वह अपने बेटों की किसी भी ऐसी बात को स्वीकार कर लेतीं जिसे भौतिक स्वार्थ से समझाया जा सकता था, जो कि सभी मनुष्यों के लिए समझ में आता है! लेकिन जब उन्हें पता चला कि एक तरह की आंतरिक क्रिया के कारण, एम. डी चार्लस हर बार उनके आने पर उनकी ठुड्डी पकड़ने और उनमें से प्रत्येक से अपने भाई की ठुड्डी पकड़ने के लिए खिंचा चला आता था, तो उन्होंने उन्हें एम. डी चार्लस के पास जाने से मना कर दिया। उन्हें उस शारीरिक रहस्य की बेचैनी महसूस हुई जो हमें यह सोचने पर मजबूर कर देती है कि क्या वह पड़ोसी जिसके साथ हमारे मैत्रीपूर्ण संबंध रहे हैं, नरभक्षण से ग्रसित तो नहीं है, और बैरन के बार-बार पूछे जाने वाले इस प्रश्न पर भी: "मैं आपके बेटों को फिर कब देख पाऊंगा?" वह जवाब देती, अपने निहत्थे सिर पर आने वाले घोर झटकों से बेखबर, कि वे परीक्षा की तैयारी में, विदेश जाने की तैयारी में, इत्यादि में बहुत व्यस्त हैं। चाहे कोई कुछ भी कहे, गैरजिम्मेदारी गलतियों को, और यहाँ तक कि अपराधों को भी बढ़ा देती है। लैंड्रू (यह मानते हुए कि उसने वास्तव में अपनी पत्नियों की हत्या की थी) यदि उसने ऐसा आर्थिक स्वार्थ से किया हो, जिसका विरोध किया जा सकता है, तो उसे क्षमा किया जा सकता है, लेकिन यदि उसका अपराध अनियंत्रित क्रूरता के कारण था, तो उसे क्षमा नहीं किया जा सकता।

खंड II

अध्याय II (जारी)

एम. डी चार्लस के साथ वर्डुरिन्स का झगड़ा

ब्रिचोट की शुरुआती दिनों में बैरन के साथ उनकी मित्रता के दौरान की गई भद्दी हंसी-मजाक, जैसे ही सामान्य बातों के बजाय समझदारी की बात पर आई, एक अजीब सी भावना में बदल गई, जिसके भीतर एक तरह की खुशी छिपी थी। उन्होंने प्लेटो के ग्रंथों और वर्जिल की पंक्तियों को याद करके खुद को तसल्ली दी, क्योंकि मानसिक और शारीरिक रूप से अंधे होने के कारण वे यह नहीं समझ पाए कि उन दिनों किसी युवक से प्रेम करना, आज के समय में (सुकरात के चुटकुले प्लेटो के सिद्धांतों से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से यह बात बताते हैं) शादी से पहले किसी नर्तकी को रखने जैसा था। एम. डी चार्लस भी इसे नहीं समझ पाते, जिन्होंने अपने इस जुनून को मित्रता समझ लिया, जबकि मित्रता इससे बिल्कुल अलग है, और प्रैक्सिटेल्स के खिलाड़ियों को विनम्र मुक्केबाज समझ लिया। उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि पिछले उन्नीस सौ वर्षों में (जैसा कि ला ब्रुयेर हमें याद दिलाते हैं, "एक धर्मनिष्ठ राजकुमार के अधीन एक धर्मनिष्ठ दरबारी एक नास्तिक राजकुमार के अधीन नास्तिक होता") सभी पारंपरिक समलैंगिकता—प्लेटो के युवा मित्रों की समलैंगिकता और वर्जिल के चरवाहों की समलैंगिकता—लुप्त हो गई है, और जो बचा है और बढ़ रहा है वह केवल अनैच्छिक, विक्षिप्त प्रकार की समलैंगिकता है, जिसे हम दूसरों से छिपाते हैं और स्वयं से छुपाते हैं। और एम. डी चार्लस का मूर्तिपूजक वंश को स्पष्ट रूप से नकारना गलत होता। थोड़ी सी कृत्रिम सुंदरता के बदले, नैतिक श्रेष्ठता कितनी विशाल है! थियोक्रिटस में वह चरवाहा जो एक लड़के के प्यार में आहें भरता है, बाद में उसके पास अमरीलिस के लिए बांसुरी बजाने वाले दूसरे चरवाहे की तुलना में कम कठोर हृदय और कम बुद्धि वाला होने का कोई कारण नहीं होगा। क्योंकि पहला किसी बीमारी से पीड़ित नहीं है, वह अपने समय के रीति-रिवाजों का पालन कर रहा है। समलैंगिकता ही है जो बाधाओं के बावजूद जीवित रहती है, तिरस्कार और घृणा की वस्तु है, वही एकमात्र सच्चा रूप है, एकमात्र रूप जो किसी व्यक्ति में उसके नैतिक गुणों की वृद्धि के साथ पाया जा सकता है। हम इन गुणों और हमारे शारीरिक गुणों के बीच स्पष्ट रूप से घनिष्ठ संबंध को देखकर भयभीत हो जाते हैं, जब हम विशुद्ध

शारीरिक रुचि के मामूली विचलन, इंद्रियों में से एक में मामूली दोष के बारे में सोचते हैं, जो यह स्पष्ट करता है कि कवियों और संगीतकारों की दुनिया, जो ड्यूक डी गुएरमांटेस के लिए इतनी दृढ़ता से बंद थी, एम. डी चार्लस के लिए अपने द्वार क्यों खोलती है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि बाद वाला अपने घर की साज-सज्जा में रुचि दिखाता है, जो एक बहुमुखी गृहिणी का घर है; लेकिन बीथोवेन और वेरोनीज़ के लिए खुलने वाला संकीर्ण रास्ता! इससे समझदार लोगों को भी चिंता होने से छूट नहीं मिलती, जब एक पागल व्यक्ति, जिसने एक उत्कृष्ट कविता की रचना की है, उन्हें सबसे तार्किक तरीके से समझाता है कि उसकी पत्नी की साजिशों के कारण उसे गलती से बंद कर दिया गया है, पागलखाने के गवर्नर से उसके लिए मध्यस्थता करने की विनती करता है, उस अनैतिक संगति की शिकायत करता है जो उस पर थोपी गई है, और अंत में इस प्रकार कहता है: "आप उस आदमी को देखिए जो लॉन पर मुझसे बात करने के लिए इंतजार कर रहा है, जिसे मैं बर्दाश्त करने के लिए विवश हूं; वह सोचता है कि वह यीशु मसीह है। इससे ही आपको पता चल जाएगा कि मुझे किस तरह के पागलों के बीच रहना पड़ता है; वह मसीह नहीं हो सकता, क्योंकि मैं स्वयं मसीह हूं!" एक क्षण पहले, आप गवर्नर को यह आश्वासन देने ही वाले थे कि गलती हुई है। इस अंतिम भाषण पर, भले ही आप उस प्रशंसनीय कविता को ध्यान में रखें जिस पर वही व्यक्ति प्रतिदिन काम कर रहा है, आप उससे कतराते हैं, जैसे कि श्रीमती। डी सर्जिस के पुत्र एम. डी चार्लस से कतराते थे, इसलिए नहीं कि वह उन्हें कोई हानि पहुँचाते, बल्कि इसलिए कि उनके लगातार निमंत्रणों का अंतिम उद्देश्य उनकी ठुड्डी नोचना था। उस कवि पर दया आती है, जिसे वर्जिल के मार्गदर्शन के बिना, गंधक और गंधक के नरक के चक्रों से गुज़रना पड़ता है, और फिर स्वर्ग से गिरने वाली आग में कूदना पड़ता है, ताकि सोडोम के कुछ निवासियों को बचाया जा सके! उनके काम में कोई आकर्षण नहीं; उनका जीवन उतना ही कठोर था जितना कि उन पदच्युत पुजारियों का जो ब्रह्मचर्य के कड़े नियमों का पालन करते हैं, ताकि कोई भी उनके चोगे को त्यागने का कारण विश्वास की कमी के अलावा कुछ और न बता सके।

अपने पीछे-पीछे चल रहे उस घिनौने आदमी को अनदेखा करने का दिखावा करते हुए (जब भी बैरन बुलेवार्ड में निकलते या सेंट-लाज़ारे स्टेशन के वेटिंग रूम से गुज़रते, तो उनके पीछे दर्जनों लोग होते, जो 'एक डॉलर के लिए उन्हें छूने' की उम्मीद में उन्हें कभी नज़रों से ओझल

नहीं होने देते थे), और साथ ही इस डर से कि कहीं दूसरा उन्हें परेशान करने की हिम्मत न कर ले, बैरन ने अपनी काली पलकें झुका ली थीं, जो उनके चावल के पाउडर से सने गालों के विपरीत, उन्हें एल ग्रेको द्वारा चित्रित किसी ग्रैंड इनक्विज़िटर जैसा रूप दे रही थीं। लेकिन इस पुजारी जैसे भाव ने चिंता पैदा कर दी, और वह एक पदच्युत पुजारी की तरह दिख रहे थे, जिन्हें अपने स्वाद के लिए माफ़ी मांगने और उसे गुप्त रखने की ज़रूरत के कारण कई समझौते करने पड़े थे, जिनका असर यह हुआ कि उनके चेहरे पर वही बात उभर आई जिसे बैरन छिपाना चाहते थे - नैतिक पतन से भरा एक भ्रष्ट जीवन। यह अंतिम लक्षण, चाहे इसका कारण कुछ भी हो, आसानी से पहचाना जा सकता है, क्योंकि यह शारीरिक रूप लेने में कभी देर नहीं करता और चेहरे पर, विशेषकर गालों और आँखों के आसपास, उसी तरह फैलता है जैसे पीलिया में पीलापन या त्वचा रोग में लालिमा जमा हो जाती है। यह केवल गालों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इस चित्रित चेहरे के स्तनों और कूल्हों तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इस सुडौल छाती, मोटापे से ग्रस्त शरीर के आक्रामक नितंबों तक भी फैला हुआ था, जिस पर अब तेल की एक परत की तरह चमक रहा था, वह बुराई जिसे कभी एम. डी चार्लस ने अपने हृदय के सबसे गुप्त कक्ष में बड़ी सावधानी से छिपाकर रखा था। अब यह उनके सभी शब्दों में झलक रहा था।

"तो ब्रिचोट, तुम इस तरह रात में सड़कों पर एक सुंदर युवक के साथ घूमते हो," उसने हमारे पास आते हुए कहा, जबकि निराश बदमाश भाग गया। "वाह, क्या बढ़िया उदाहरण है। हमें सोरबोन में तुम्हारे युवा छात्रों को बताना चाहिए कि इस तरह व्यवहार किया जाता है। लेकिन, मुझे कहना होगा, लगता है युवाओं की संगति तुम्हारे लिए अच्छी है, प्रोफेसर महोदय, तुम गुलाब की कली की तरह ताज़े हो। मैंने तुम्हें बीच में टोका, तुम दोनों चंचल लड़कियों की तरह मजे कर रहे थे और तुम्हें मुझ जैसी बूढ़ी दादी की ज़रूरत नहीं थी। मैं इसे कन्फेशनल में नहीं ले जाऊंगा, क्योंकि तुम लगभग अपनी मंज़िल पर पहुँच चुके हो।" बैरन का मूड और भी खुश था क्योंकि उन्हें उस दोपहर की घटना के बारे में कुछ भी पता नहीं था, जुपियन ने फैसला किया था कि एम. डी चार्लस को बताने से बेहतर है कि अपनी भतीजी को उस हमले की पुनरावृत्ति से बचाया जाए। और इसलिए बैरन अभी भी शादी का इंतज़ार कर रहे थे और इसके विचार से खुश थे। कोई सोच सकता है कि इन महान एकांतवासियों के लिए अपनी

दुखद ब्रह्मचर्य को एक काल्पनिक पितृत्व का सहारा देना एक सांत्वना है। "लेकिन, सच कहूँ तो, ब्रिचोट," वह हँसते हुए हमारी ओर देखते हुए बोले, "जब मैं तुम्हें इतनी शानदार संगति में देखता हूँ तो मुझे बहुत अजीब लगता है। तुम दोनों प्रेमी जोड़े की तरह लग रहे थे। हाथ में हाथ डालकर चलते हुए, ब्रिचोट, तुम दोनों कमाल की गति से चल रहे थे!" क्या इस भाषण को एक विशेष प्रकार की मानसिक स्थिति की बुढ़ापे की कमजोरी का परिणाम माना जाना चाहिए, जो पहले की तुलना में अपनी प्रतिक्रियाओं को नियंत्रित करने में कम सक्षम है, और जो स्वचालितता के क्षणों में उस रहस्य को उजागर कर देती है जिसे चालीस वर्षों से बड़ी सावधानी से छिपाया गया था? या फिर उस आम राय के प्रति तिरस्कार का, जो सभी गुएरमांटे अपने दिलों में महसूस करते थे, और जिसका एक भिन्न रूप एम. डी चार्लस के भाई, ड्यूक, तब प्रदर्शित कर रहे थे, जब मेरी माँ के उन्हें देख लेने की परवाह किए बिना, वे अपनी बिना बटन वाली नाइटशर्ट में अपने बेडरूम की खिड़की के पास खड़े होकर शेव किया करते थे। क्या डॉन्सिएरेस और डौविल के बीच की भीषण यात्राओं के दौरान एम. डी चार्लस को आराम करने की खतरनाक आदत पड़ गई थी, और ठीक वैसे ही जैसे वह अपने विशाल माथे को ठंडा करने के लिए अपनी पुआल की टोपी को पीछे धकेलते थे, वैसे ही अपने असली चेहरे पर लंबे समय से सख्ती से लगाए गए मुखौटे को कुछ क्षणों के लिए ही सही, उतारने की आदत भी लग गई थी? मोरेल के प्रति उनका वैवाहिक रवैया किसी को भी आश्चर्यचकित कर सकता था जिसने इसे पूरी तरह से देखा होता। लेकिन एम. डी चार्लस उस अवस्था में पहुँच चुके थे जब उनकी इस बुरी आदत से मिलने वाले सुखों की एकरसता उन्हें थका देने लगी थी। उन्होंने सहज रूप से नए प्रदर्शनों की तलाश की, और जिन अजनबियों से वह मिलते थे उनसे ऊबकर, वह बिल्कुल विपरीत दिशा में चले गए, उस चीज़ की ओर जिसे वह हमेशा घृणा करते थे, यानी पारिवारिक जीवन या पितृत्व का अनुकरण। कभी-कभी तो इससे भी उसका मन नहीं भरता था; उसे कुछ नया चाहिए होता था, और वह किसी स्त्री के साथ रात बिताने चला जाता था, ठीक वैसे ही जैसे कोई सामान्य पुरुष अपने जीवन में कभी न कभी किसी लड़के के साथ सोने की इच्छा रखता हो, वैसी ही जिज्ञासा से, हालांकि विपरीत रूप से, और दोनों ही मामलों में समान रूप से अस्वस्थ। चार्ली की खातिर, बैरन का 'वफादार' के रूप में रहना, और पूरी तरह से उस छोटे से कबीले के बीच रहना, उसके वर्षों से झूठ बोलने के

दिखावे को बनाए रखने के प्रयासों को विफल करने में वही प्रभाव डालता था, जो किसी खोज यात्रा या उपनिवेशों में निवास करने का उन कुछ यूरोपीय लोगों पर पड़ता है जो अपने देश में जिन सिद्धांतों का पालन करते थे, उन्हें त्याग देते हैं। फिर भी, मन की आंतरिक क्रांति, जो पहले तो अपने शरीर में निहित विसंगति से अनभिज्ञ थी, फिर खोज के बाद उससे भयभीत हुई, और अंत में इतनी अभ्यस्त हो गई कि यह समझने में असमर्थ हो गई कि दूसरों के सामने उस बात को स्वीकार करना सुरक्षित नहीं है जिसे पापी समय आने पर बिना किसी शर्म के स्वयं स्वीकार कर लेता है, एम. डी चार्लस को सामाजिक बंधनों के अंतिम अवशेषों से मुक्त करने में वर्दुरिन्स के यहाँ बिताए समय से भी कहीं अधिक प्रभावी साबित हुई। वास्तव में, न तो दक्षिणी ध्रुव पर निर्वासन, न ही मोंट ब्लैंक की चोटी पर, हमें अपने साथी मनुष्यों से इतना अलग कर सकता है जितना कि किसी गुप्त दुर्गुण के एकांत में लंबे समय तक रहना, यानी ऐसी मानसिकता में रहना जो उनसे भिन्न हो। एक दुर्गुण (जैसा कि एम. डी चार्लस एक समय इसे कहा करते थे) जिसे बैरन ने अब एक मात्र कमी का सौम्य रूप दिया, जो अत्यंत सामान्य, कुल मिलाकर आकर्षक और लगभग मनोरंजक है, जैसे आलस्य, अन्यमनस्कता या लालच। अपने विशिष्ट व्यक्तित्व से उत्पन्न जिज्ञासा से अवगत, एम. डी चार्लस को इसे संतुष्ट करने, बढ़ाने और बनाए रखने में एक विशेष प्रकार का आनंद मिलता था। जिस प्रकार एक यहूदी पत्रकार प्रतिदिन कैथोलिक धर्म के समर्थक के रूप में सामने आता है, संभवतः गंभीरता से लिए जाने की किसी आशा के साथ नहीं, बल्कि केवल अपने पाठकों के सौम्य मनोरंजन को निराश न करने के लिए, उसी प्रकार एम. डी चार्लस छोटे से यहूदी समुदाय की बुरी आदतों की सौम्यता से निंदा करते थे, जैसे वे बिना पूछे ही किसी अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति की नकल करते या माउनेट-सुली की नकल करते, ताकि समाज में अपनी शौकिया प्रतिभा का प्रदर्शन करके शालीनता से अपना योगदान दे सकें; इसलिए एम. डी चार्लस ने ब्रिचोट को धमकी दी कि वह सोरबोन को रिपोर्ट कर देगा कि ब्रिचोट नौजवानों के साथ घूमता रहता है, ठीक उसी तरह जैसे खतना किया हुआ शास्त्री समय-समय पर 'चर्च की सबसे बड़ी बेटी' और 'यीशु का पवित्र हृदय' का जिक्र करता रहता है, यानी बिना किसी पाखंड के, लेकिन स्पष्ट रूप से नाटकीय प्रभाव के साथ। न केवल शब्दों में आया परिवर्तन, जो अतीत में उसके द्वारा प्रयोग किए जाने वाले शब्दों से इतना भिन्न था, जिसके लिए कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता प्रतीत

होती थी, बल्कि उसके स्वर और हाव-भाव में भी आया परिवर्तन था, जो अब एम. डी चार्लस द्वारा सबसे अधिक निंदा किए जाने वाले प्रकार से विशिष्ट रूप से मिलता-जुलता था; वह अब अनजाने में लगभग वही छोटी-छोटी चीखें (उसके भीतर अचेतन, और कहीं अधिक गहरी जड़ें जमा चुकी) निकालता था जो सचेत रूप से उन समलैंगिकों द्वारा निकाली जाती हैं जो एक-दूसरे को 'वह' कहकर संबोधित करते हैं; ऐसा लग रहा था मानो यह जानबूझकर किया गया 'कैंपिंग', जिसके विरुद्ध एम. डी. चार्लस ने इतने लंबे समय तक अपना रुख कड़ा रखा था, वास्तव में चार्लस जैसे लोगों के तौर-तरीकों की एक शानदार और सटीक नकल मात्र थी, जो चाहे कुछ भी कहें, अपनी बीमारी के एक निश्चित चरण तक पहुँचने पर उन्हें अपनाना ही पड़ता है, ठीक वैसे ही जैसे सामान्य पक्षाघात या लोकोमोटर एटैक्सिया से पीड़ित लोग अंततः कुछ लक्षण प्रदर्शित करने लगते हैं। वास्तव में—और यही इस विशुद्ध रूप से अचेतन 'कैंपिंग' ने प्रकट किया—गंभीर चार्लस, जो पूरी तरह से काले वस्त्र पहने हुए थे और जिनके बाल कड़े कंघी किए हुए थे, जिन्हें मैं जानता था, और रंग-बिरंगे, अंगूठियों से लदे हुए युवकों के बीच का अंतर केवल एक काल्पनिक अंतर था, जो एक उत्तेजित व्यक्ति, जो तेजी से बोलता है और हर समय चलता रहता है, और एक न्यूरोटिक व्यक्ति, जो धीरे बोलता है, हमेशा शांत रहता है, लेकिन चिकित्सक की दृष्टि में उसी न्यूरोस्टेनिया से ग्रस्त होता है, जो जानता है कि दोनों एक ही पीड़ा से ग्रस्त हैं और एक ही दोषों से ग्रस्त हैं। साथ ही, एम. डी चार्लस की उम्र में आए बदलावों के कुछ अलग ही संकेत स्पष्ट हो रहे थे, जैसे कि उनकी बातचीत में कुछ खास अभिव्यक्तियों का बार-बार प्रयोग होना, जो उनकी बातचीत का हिस्सा बन चुकी थीं और अब हर क्षण सामने आती थीं (उदाहरण के लिए: 'परिस्थितियों की श्रृंखला')। बैरन का भाषण वाक्य दर वाक्य इन अभिव्यक्तियों पर टिका रहता था, मानो ये कोई आवश्यक सहारा हों। "क्या चार्ली अभी तक आया है?" दरवाजे के पास पहुँचते ही ब्रिचोट ने एम. डी चार्लस से पूछा। "ओह, मुझे नहीं पता," बैरन ने अपनी बाहें ऊपर उठाते हुए और आँखें आधी बंद करते हुए कहा, मानो वह नहीं चाहता कि कोई उस पर अविवेकी होने का आरोप लगाए, खासकर इसलिए क्योंकि शायद मोरेल ने उन्हें उन बातों के लिए फटकारा था जो उन्होंने कही थीं और जिन्हें दूसरे ने, जो जितना डरपोक था उतना ही घमंडी भी, और जो एम. डी चार्लस की दोस्ती को जितना नकारने को तैयार था उतना ही अपनी दोस्ती का बखान करने को भी, गंभीर

समझा था, जबकि वे बातें बिल्कुल महत्वहीन थीं। "आप जानते हैं, वह मुझे कभी नहीं बताता कि वह क्या करने वाला है।" यदि घनिष्ठता के बंधन से बंधे दो लोगों की बातचीत झूठ से भरी हो, तो यह उतनी ही सहजता से उन बातचीत में भी घटित होता है जो एक तीसरा व्यक्ति प्रेमी से उस व्यक्ति के विषय पर करता है जिससे प्रेमी प्रेम करता है, चाहे वह व्यक्ति किसी भी लिंग का हो।

“क्या आपने उसे हाल ही में देखा है?” मैंने एम. डी चार्लस से पूछा, ताकि ऐसा लगे कि मुझे मोरेल का ज़िक्र करने में कोई झिझक नहीं है और मुझे यह भी यकीन नहीं है कि वे सचमुच साथ रह रहे हैं। “आज सुबह जब मैं आधी नींद में थी, वह पाँच मिनट के लिए अंदर आया और मेरे बिस्तर के किनारे बैठ गया, मानो वह मुझे ज़बरदस्ती करना चाहता हो।” मैं तुरंत समझ गई कि एम. डी चार्लस ने चार्ली को पिछले एक घंटे के भीतर देखा होगा, क्योंकि अगर हम किसी महिला से पूछें कि उसने उस आदमी को आखिरी बार कब देखा था जिसे हम जानते हैं —और शायद वह सोचती है कि हम उस पर शक कर रहे हैं—उसका प्रेमी, अगर उसने अभी-अभी उसके साथ चाय पी है, तो वह जवाब देगी: “मैंने उसे दोपहर के भोजन से ठीक पहले एक पल के लिए देखा था।” इन दोनों घटनाओं में बस इतना ही अंतर है कि एक झूठी है और दूसरी सच्ची, लेकिन दोनों बराबर निर्दोष हैं, या यूँ कहें कि बराबर दोषी हैं। और इसलिए हम यह समझने में असमर्थ होंगे कि प्रेमिका (इस मामले में, एम. डी चार्लस) हमेशा झूठा कथन क्यों चुनती है, यदि हमें यह न पता होता कि ऐसे उत्तर कई कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं, जो उन्हें कहने वाले व्यक्ति को ज्ञात नहीं होते, और जो घटना की तुच्छता के अनुपात में इतने असंगत प्रतीत होते हैं कि हम उन पर विचार करने की जहमत नहीं उठाते। परन्तु एक भौतिक विज्ञानी के लिए, सार के सबसे छोटे गोले द्वारा घेरा गया स्थान क्रिया की सामंजस्यता, संघर्ष या संतुलन, आकर्षण या प्रतिकर्षण के नियमों द्वारा समझाया जा सकता है जो कहीं अधिक विशाल जगतों को नियंत्रित करते हैं। ठीक उसी प्रकार, विपरीत दिशाओं में कार्य करने वाले अनेक विभिन्न नियम, निर्दोषता, 'प्लेटोवाद', या इसके विपरीत, उस व्यक्ति के साथ संबंधों की शारीरिक वास्तविकता के संबंध में अधिक सामान्य प्रतिक्रियाओं को निर्धारित करते हैं, जिसे हम कहते हैं कि हमने सुबह देखा था जबकि वास्तव में हमने उसे शाम को देखा था। यहां हमें बिना विचार किए, केवल इन बातों को दर्ज करना है: स्वाभाविक और

निडर दिखने की इच्छा, किसी गुप्त मुलाकात को छुपाने की सहज प्रवृत्ति, विनम्रता और आडंबर का मिश्रण, जो कुछ भी आनंददायक लगता है उसे स्वीकार करने और यह दिखाने की आवश्यकता कि कोई आपसे प्रेम करता है, दूसरे व्यक्ति के ज्ञान या अनुमान का अनुमान लगाना—जो वह कहता नहीं—एक ऐसा अनुमान जो दूसरे व्यक्ति के अनुमान से अधिक या कम होता है, जिसके कारण व्यक्ति कभी उसे बढ़ा-चढ़ाकर बताता है तो कभी कम करके आंकता है, आग से खेलने की सहज लालसा और आग से कुछ बचाने का दृढ़ संकल्प। साथ ही, सामान्य रूप से कहें तो, एम. डी चार्लस, अपनी बीमारी की गंभीरता के बावजूद, जो उन्हें लगातार खुलासा करने, संकेत देने और कभी-कभी साहसपूर्वक आपत्तिजनक विवरण गढ़ने के लिए प्रेरित करती थी, अपने जीवन के इस दौर में यह स्पष्ट करना चाहते थे कि चार्ली उनके जैसा व्यक्ति नहीं था और वे केवल मित्र थे, इससे अधिक कुछ नहीं। हालांकि यह बात काफी हद तक सच हो सकती थी, फिर भी वह कभी-कभी खुद का ही खंडन कर देता था (जैसे कि पिछली मुलाकात के समय के बारे में), चाहे ऐसे क्षणों में वह खुद को भूलकर सच बोल देता हो, या फिर शेखी बघारते हुए, भावुकतावश या फिर अपने प्रश्नकर्ता को उलझन में डालने में उसे मज़ा आता हो, झूठ गढ़ लेता हो। बैरन ने आगे कहा, "आप जानते हैं कि वह मेरे लिए सबसे अच्छा साथी है, जिसके लिए मेरे मन में सबसे गहरा स्नेह है, जैसा कि मुझे पूरा यकीन है" (क्या उसे इस बात का यकीन नहीं था कि उसे यह कहने की ज़रूरत क्यों पड़ी?) "मेरे लिए तो है, लेकिन हमारे बीच कुछ भी नहीं है, ऐसा कुछ भी नहीं, आप समझते हैं, ऐसा कुछ भी नहीं," बैरन ने इतनी सहजता से कहा जैसे वह किसी महिला के बारे में बात कर रहा हो। "हाँ, वो आज सुबह मुझे बिस्तर से उठाने आया था। हालाँकि वो जानता है कि मुझे बिस्तर पर किसी को देखना बिल्कुल पसंद नहीं है। आपको कोई आपत्ति नहीं है? ओह, ये तो बहुत बुरा है, बहुत परेशान करने वाला है, मैं बिल्कुल बदसूरत दिखती हूँ, बेशक मैं अब 22 साल की नहीं हूँ, मुझे मई की रानी तो नहीं चुना जाएगा, फिर भी अच्छा लगता है जब मैं सबसे अच्छी दिखती हूँ।"
यह संभव है कि बैरन ने मोरेल को एक अच्छा साथी बताते समय गंभीरता दिखाई हो, और जब उन्होंने कहा: "मुझे कभी पता नहीं चलता कि वह क्या कर रहा है; वह मुझे अपने जीवन के बारे में कुछ नहीं बताता," तो वह जितना सोचते थे उससे कहीं अधिक सच बोल रहे थे।

दरअसल, हम यह उल्लेख कर सकते हैं (कुछ क्षणों के लिए अपनी कहानी को रोकते हुए, जिसे इस विराम के समाप्त होने के तुरंत बाद फिर से शुरू किया जाएगा, जो उस समय शुरू होता है जब एम. डी चार्लस, ब्रिचोट और मैं श्रीमती वर्दुरिन के घर के सामने पहुँचते हैं), कि आज शाम से कुछ ही समय पहले बैरन एक पत्र से गहरे शोक और स्तब्ध हो गए थे, जिसे उन्होंने गलती से खोल दिया था और जो मोरेल को संबोधित था। यह पत्र, जिसके परिणामस्वरूप मुझे भी बहुत दुख हुआ, अभिनेत्री लीया द्वारा लिखा गया था, जो महिलाओं में अपनी विशेष रुचि के लिए कुख्यात थी। फिर भी मोरेल को लिखा गया उनका पत्र (जिसके बारे में एम. डी चार्लस को कभी संदेह भी नहीं था कि वह उसे जानते हैं) अत्यंत भावुक लहजे में लिखा गया था। इसकी अभद्रता के कारण हम इसे यहाँ पुनः प्रस्तुत नहीं कर सकते, लेकिन हम यह उल्लेख कर सकते हैं कि लीया ने पूरे पत्र में उन्हें स्त्रीलिंग में संबोधित किया, जैसे: "आगे बढ़ो, तुम बुरी औरत!" या "बेशक तुम हो, मेरे प्यारे, तुम जानते हो कि तुम हो।" और इस पत्र में कई अन्य महिलाओं का भी ज़िक्र था जो मोरेल की उतनी ही करीबी दोस्त लगती थीं जितनी लीया की। दूसरी ओर, बैरन पर मोरेल का व्यंग्य और लीया का अपने रखवाले अधिकारी पर व्यंग्य, जिसके बारे में उसने कहा था: "वह मुझे लगातार पत्र लिखकर सावधान रहने की गुहार लगाता रहता है! इस पर तुम्हारा क्या कहना है, मेरी छोटी सी बिल्ली!" ने एम. डी चार्लस के सामने ऐसी स्थिति का खुलासा कर दिया, जिसकी उन्हें मोरेल और लीया के बीच के विचित्र और घनिष्ठ संबंधों से कम आशंका नहीं थी। बैरन को सबसे ज़्यादा परेशान करने वाला शब्द 'सो' था। पहले तो वह इसके प्रयोग से अनभिज्ञ था, लेकिन बाद में, काफी समय पहले, उसे पता चला कि वह स्वयं 'सो' है। और अब इस शब्द के बारे में उसकी धारणा फिर से चुनौती के घेरे में आ गई। जब उसे पता चला कि वह 'सो' है, तो उसने सोचा था कि इसका मतलब यह है कि उसकी रुचियाँ, जैसा कि सेंट-साइमन कहते हैं, महिलाओं की ओर नहीं हैं। और यहाँ मोरेल पर 'ऐसा' शब्द इस तरह से लागू किया गया था कि एम. डी चार्लस को इसके अर्थ की इतनी व्यापक व्याख्या का ज्ञान नहीं था। यहाँ तक कि मोरेल ने इस पत्र के अनुसार, कुछ महिलाओं की तरह ही दूसरी महिलाओं के प्रति रुचि रखकर अपने 'ऐसा' होने का प्रमाण दिया। उस क्षण से बैरन की ईर्ष्या अब मोरेल के परिचित पुरुषों तक ही सीमित नहीं रही, बल्कि महिलाओं तक भी फैलने लगी। अब 'ऐसा' लोग केवल वे ही नहीं थे जिन्हें बैरन

'ऐसा' मानता था, बल्कि ग्रह के निवासियों का एक पूरा और विशाल वर्ग था, जिसमें पुरुष और महिलाएं दोनों शामिल थीं, जो न केवल पुरुषों से बल्कि महिलाओं से भी प्रेम करती थीं। बैरन, अपने लिए इतने परिचित शब्द के इस नए अर्थ को देखकर, मन और हृदय दोनों की चिंता से व्याकुल हो गया, जो इस दोहरे रहस्य से उत्पन्न हुई थी, जिसमें उसकी ईर्ष्या के क्षेत्र का विस्तार और परिभाषा की अचानक अपर्याप्तता दोनों शामिल थे।

एम. डी चार्लस अपने जीवन में हमेशा एक शौकिया लेखक ही रहे। कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रकार की घटनाएँ उनके लिए कभी उपयोगी नहीं रहीं। वे इन घटनाओं के संभावित आघात से उबरने के लिए हिंसक दृश्यों में अपनी वाक्पटुता का प्रदर्शन करते थे, या फिर धूर्त षड्यंत्र रचते थे। लेकिन उदाहरण के लिए, बर्गोट जैसे गुणों से संपन्न व्यक्ति के लिए ये घटनाएँ अमूल्य हो सकती थीं। यह बात कुछ हद तक यह समझा सकती है (चूंकि हमें अंधे होकर ही सही रास्ता खोजना पड़ता है, लेकिन हम निम्न प्राणियों की तरह अपने लिए लाभकारी जड़ी-बूटी का चुनाव करते हैं), कि बर्गोट जैसे लोग आमतौर पर साधारण, झूठे और द्वेषपूर्ण लोगों की संगति में क्यों रहे। उनकी सुंदरता लेखक की कल्पना को संतुष्ट करती है, उसकी उदारता को बढ़ाती है, लेकिन उसके साथी के स्वभाव को किसी भी तरह से नहीं बदलती, जिसका जीवन, लेखक के जीवन से हजारों फीट नीचे स्थित है, उसकी अविश्वसनीय कहानियाँ, उसके झूठ जो दूर तक फैले हुए हैं, और उससे भी बढ़कर, जो अपेक्षा से परे एक अलग दिशा में जाते हैं, कभी-कभार झलकते हैं। वह झूठ, एकदम सटीक झूठ, उन लोगों के बारे में जिन्हें हम जानते हैं, उन रिश्तों के बारे में जो हमारे उनके साथ रहे हैं, किसी काम के पीछे की हमारी मंशा के बारे में, एक ऐसी मंशा जिसे हम बिल्कुल अलग शब्दों में व्यक्त करते हैं, वह झूठ कि हम क्या हैं, हम किससे प्यार करते हैं, उस व्यक्ति के बारे में जो हमसे प्यार करती है और मानती है कि उसने हमें अपनी ही छवि में ढाला है क्योंकि वह हमें सुबह, दोपहर और रात चूमती रहती है, वह झूठ दुनिया की उन गिनी-चुनी चीजों में से एक है जो हमारे लिए नई, अनजानी चीजों का द्वार खोल सकती है, जो हमारी सोई हुई इंद्रियों को उन ब्रह्मांडों के चिंतन के लिए जगा सकती है जिन्हें हम अन्यथा कभी नहीं जान पाते। एम. डी चार्लस के संदर्भ में, हम यह कहने के लिए बाध्य हैं कि यदि मोरेल के बारे में कुछ ऐसी बातें जानकर वे स्तब्ध रह गए जिन्हें मोरेल ने उनसे सावधानीपूर्वक छिपाया था, तो उनका यह निष्कर्ष निकालना उचित

नहीं था कि निम्न वर्ग के लोगों के साथ बहुत अधिक मेलजोल रखना एक गलती थी। इस कृति के अंतिम भाग में हम देखेंगे कि एम. डी चार्लस स्वयं ऐसे कार्यों में संलग्न हैं जो उनके परिवार और मित्रों को लीया के खुलासों से कहीं अधिक स्तब्ध कर देते। (वह खुलासा जिसने उन्हें सबसे अधिक पीड़ा पहुँचाई थी, वह मोरेल द्वारा लीया के साथ की गई यात्रा का था, जबकि उस समय मोरेल ने एम. डी चार्लस को आश्वासन दिया था कि वह जर्मनी में संगीत का अध्ययन कर रहा है। उसने अपने इस झूठ का समर्थन जर्मनी में अपने उन मित्रों से प्राप्त किया था जिन्हें उसने पत्र भेजे थे, और जिन्हें वहाँ से एम. डी चार्लस को अग्रेषित किया गया था। संयोगवश, एम. डी चार्लस को इतना यकीन था कि मोरेल वहाँ है कि उन्होंने डाक टिकट भी नहीं देखा था।) लेकिन अब समय आ गया है कि हम बैरन से मिलें, जो ब्रिचोट और मेरे साथ वर्दुरिन्स के दरवाजे की ओर बढ़ रहे हैं।

“और,” मेरी ओर मुड़ते हुए उन्होंने आगे कहा, “डौविल में मिले आपके उस युवा यहूदी मित्र का क्या हुआ? मुझे लगा कि अगर आप चाहें तो शायद उसे एक शाम घर पर आमंत्रित किया जा सकता है।” एम. डी चार्लस, जो मोरेल की हर बात और हरकत पर नज़र रखने के लिए एक निजी जासूस रखने से भी नहीं हिचकिचाते थे, मानो किसी पति या प्रेमी की तरह ही, दूसरे युवकों पर भी नज़र रखते थे। उन्होंने अपने एक पुराने नौकर को एक एजेंट के ज़रिए मोरेल पर इतनी कड़ी निगरानी रखने को कहा था कि उनके नौकरों को लगता था कि उन पर नज़र रखी जा रही है, और घर की एक नौकरानी इस डर के मारे कभी सड़क पर नहीं निकलती थी, हमेशा उसे लगता था कि कोई पुलिसवाला उसके पीछे पड़ा है। “वह जो चाहे कर सकती है! उसका पीछा करना समय और पैसे की बर्बादी होगी! जैसे कि उसकी हरकतों से हमें कोई फ़र्क पड़ता हो!” बूढ़े नौकर ने व्यंग्यपूर्वक कहा, क्योंकि वह अपने स्वामी के प्रति इतना समर्पित था कि यद्यपि वह बैरन की रुचियों से बिल्कुल भी मेल नहीं खाता था, फिर भी समय के साथ-साथ उसने इतनी लगन से उनकी सेवा की कि वह उनके बारे में ऐसे बात करने लगा मानो वे उसके अपने हों। "वह सबसे उत्तम व्यक्ति है," एम. डी चार्लस उस बूढ़े नौकर के बारे में कहते थे, क्योंकि हम किसी की इतनी सराहना नहीं करते जितनी उन लोगों की जो अन्य महान गुणों के साथ-साथ हमारी दुर्गुणों को निःस्वार्थ भाव से सहन करने का गुण भी रखते हैं। इसके अलावा, एम. डी चार्लस केवल पुरुषों के प्रति ही ईर्ष्या महसूस कर पाते थे, जहाँ तक

मोरेल का सवाल था। महिलाओं के प्रति उनमें ज़रा भी ईर्ष्या नहीं थी। यह वास्तव में चार्लस जैसे लोगों के लिए लगभग एक सार्वभौमिक नियम है। जिस पुरुष से वे प्रेम करते हैं, उसका महिलाओं के प्रति प्रेम एक अलग ही बात है, जो अन्य पशु प्रजातियों में नहीं पाई जाती (शेर बाघों के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता); यह उन्हें परेशान नहीं करता; बल्कि उन्हें आश्वस्त करता है। कभी-कभी, यह सच है कि जो लोग अपने इस विकृत प्रेम को पुरोहिती का दर्जा दे देते हैं, उनके लिए यह प्रेम घृणा उत्पन्न करता है। ये लोग अपने मित्रों के इस प्रेम में लिप्त होने से नाराज़ होते हैं, विश्वासघात के रूप में नहीं, बल्कि सदाचार से भटकने के रूप में। बैरन से भिन्न स्वभाव का चार्लस, मोरेल के किसी स्त्री से संबंध का पता चलने पर उतना ही क्रोधित होता जितना कि किसी अखबार में यह पढ़कर कि बाख और हैंडल के वादक पुचीनी की रचना करने जा रहे हैं। वैसे, इसी कारण से वे युवक जो अपने स्वार्थ के लिए चार्लस जैसे पुरुषों के प्रेम के आगे झुक जाते हैं, उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि स्त्रियाँ उन्हें केवल घृणा से भर देती हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे किसी डॉक्टर को बताते हैं कि वे कभी शराब नहीं पीते और केवल झरने का पानी ही पसंद करते हैं। लेकिन एम. डी चार्लस इस मामले में सामान्य नियम से कुछ हद तक अलग थे। मोरेल की हर बात की वो तारीफ़ करते थे, इसलिए महिलाओं के साथ उनकी कामयाबी से उन्हें ज़रा भी चिढ़ नहीं होती थी, बल्कि उन्हें उतनी ही खुशी मिलती थी जितनी मंच पर या घुड़दौड़ में। “लेकिन जानते हो, मेरे प्यारे दोस्त, उसके पास औरतें हैं,” वो बड़े ही खुलेआम, शायद ईर्ष्या से, और सबसे बढ़कर तारीफ़ भरे लहजे में कहते। “वो असाधारण है,” वो आगे कहते। “हर जगह, सबसे मशहूर औरतें सिर्फ़ उसे ही देखती हैं। हर जगह, चाहे मेट्रो हो या थिएटर, वो उसे ही घूरती रहती हैं। ये तो झंझट बन गया है! मैं उसके साथ किसी रेस्टोरेंट में जा भी नहीं सकता, वेटर कम से कम तीन औरतों के नाम लेकर उसके पास आ जाता है। और हमेशा खूबसूरत औरतें ही। इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है। मैंने उसे कल देखा था, मैं समझ सकता हूँ, वो इतना खूबसूरत हो गया है, बिल्कुल ब्रोंज़िनो जैसा दिखता है, वो सच में कमाल का है।” लेकिन एम. डी चार्लस को यह दिखाना अच्छा लगता था कि वह मोरेल से प्यार करता है, ताकि वह दूसरों को, और शायद खुद को भी, यह यकीन दिला सके कि मोरेल उससे प्यार करता है। मोरेल को हमेशा अपने साथ रखने के उद्देश्य से (भले ही वह युवक बैरन की सामाजिक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा सकता था), वह एक तरह का

आत्मसम्मान बनाए रखता था। (और यह अक्सर उच्च पदस्थ, अभिमानी और घमंडी पुरुषों में देखा जाता है, जो अपने अहंकार में, अपनी प्रेमिका के साथ हर जगह देखे जाने के लिए अपने सभी सामाजिक संबंधों को तोड़ देते हैं, चाहे वह संदिग्ध या कलंकित प्रतिष्ठा वाली महिला हो, जिसे कोई आमंत्रित नहीं करता, और फिर भी जिसके साथ जुड़ना उन्हें सम्मान की बात लगती है) वह उस स्तर पर पहुँच चुका था जहाँ आत्मसम्मान अपनी सारी ऊर्जा उन लक्ष्यों को नष्ट करने में लगा देता है जिन्हें उसने प्राप्त किया है, चाहे इसलिए कि प्रेम के प्रभाव में, एक व्यक्ति अपने प्रिय के साथ दिखावटी संबंधों में वह प्रतिष्ठा पाता है जिसे वह अकेला ही अनुभव करता है, या इसलिए कि संतुष्ट हो चुकी सामाजिक महत्वाकांक्षाओं के कम होने और सहायक जिज्ञासाओं की लहर के उदय के कारण, जो जितनी अधिक प्लेटोनिक होती हैं, उतनी ही अधिक आकर्षक होती जाती हैं, बाद वाले न केवल उस स्तर तक पहुँच चुके हैं बल्कि उसे पार भी कर चुके हैं जहाँ पहले वाले के लिए टिके रहना मुश्किल था।

आम तौर पर युवा पुरुषों के बारे में बात करें तो, एम. डी चार्लस ने पाया कि उनके प्रति मोरेल का स्नेह उनके लिए कोई बाधा नहीं था, बल्कि एक वायलिन वादक के रूप में उनकी शानदार प्रतिष्ठा या एक संगीतकार और पत्रकार के रूप में उनकी बढ़ती प्रसिद्धि कुछ मामलों में आकर्षण का कारण बन सकती थी। जब भी कोई बैरन को किसी अच्छे स्वभाव के युवा संगीतकार से मिलवाता, तो मोरेल अपनी प्रतिभा में ही अजनबी की मदद करने का अवसर ढूंढते थे। वे उनसे कहते, "आपको अपनी कुछ रचनाएँ लानी होंगी ताकि मोरेल उन्हें किसी संगीत कार्यक्रम या दौरे पर बजा सकें। आजकल वायलिन के लिए शायद ही कोई अच्छा संगीत लिखा जाता है। कुछ नया मिलना किसी वरदान से कम नहीं है। और विदेशों में लोग इस तरह की चीजों की बहुत सराहना करते हैं। यहाँ तक कि प्रांतों में भी छोटे-छोटे संगीत समूह हैं जहाँ लोग संगीत के प्रति एक ऐसे उत्साह और बुद्धिमत्ता से प्रेम करते हैं जो वाकई सराहनीय है।" बिना किसी अधिक ईमानदारी के (क्योंकि यह सब केवल एक प्रलोभन के रूप में काम कर सकता था और मोरेल शायद ही कभी इन वादों को पूरा करने की कृपा करते थे), ब्लोच ने स्वीकार किया कि वह कुछ हद तक कवि थे (जब उनका मूड होता था, तो उन्होंने व्यंग्यात्मक हंसी के साथ कहा, जब उन्हें कुछ भी मौलिक नहीं सूझता था), एम. डी चार्लस ने मुझसे कहा: "आपको अपने युवा इज़राइली को बताना चाहिए, क्योंकि वह कविताएँ

लिखते हैं, कि वह वास्तव में मोरेल के लिए कुछ कविताएँ लाएँ। एक संगीतकार के लिए, संगीत में ढालने के लिए कुछ अच्छा खोजना हमेशा एक बाधा होती है। एक लिब्रेटो पर भी विचार किया जा सकता है। यह दिलचस्प होगा, और कवि की विशिष्टता, मेरे संरक्षण, और कई अन्य सहायक परिस्थितियों के कारण इसका एक विशेष महत्व होगा, जिनमें मोरेल की प्रतिभा का प्रमुख स्थान होगा, क्योंकि वह आजकल बहुत रचना कर रहे हैं, और लिख भी रहे हैं, और बहुत ही सुखद रूप से, मुझे इस बारे में आपसे बात करनी चाहिए। एक कलाकार के रूप में उनकी प्रतिभा के लिए (जैसा कि आप जानते हैं, वह पहले से ही एक (पास्ट-मास्टर), आप आज शाम देखेंगे कि यह लड़का विंटेइल का संगीत कितनी खूबसूरती से बजाता है; वह मुझे अभिभूत कर देता है; उसकी उम्र में, इतना कम उम्र में, इतना कम उम्र में इतनी समझ होना! ओह, आज शाम तो बस एक छोटा सा पूर्वाभ्यास है। असली कार्यक्रम तो दो-तीन दिन बाद होगा। लेकिन आज शाम यह कहीं अधिक भव्य होगा। और इसलिए हमें खुशी है कि आप आए हैं," उन्होंने आगे कहा, संभवतः बहुवचन सर्वनाम का प्रयोग करते हुए क्योंकि एक राजा कहता है: "यह हमारी इच्छा है।" "कार्यक्रम इतना भव्य है कि मैंने श्रीमती वर्दुरिन को दो पार्टियां देने की सलाह दी है। एक कुछ दिनों में, जिसमें उनके सभी दोस्त होंगे, और दूसरी आज रात, जिसमें मेज़बान, कानूनी भाषा में कहें तो, 'बेघर' हैं।" मैंने ही निमंत्रण भेजे हैं, और मैंने दूसरे क्षेत्र से कुछ लोगों को इकट्ठा किया है, जो चार्ली के लिए उपयोगी हो सकते हैं, और जिनसे वर्दुरिन परिवार को मिलना अच्छा लगेगा। क्या आप सहमत नहीं हैं? महानतम कलाकारों द्वारा सर्वश्रेष्ठ संगीत प्रस्तुत करना बहुत अच्छा है, लेकिन अगर श्रोता केवल सामने वाले घर की टोपी बेचने वाली और कोने वाले घर के दुकानदार हों, तो प्रदर्शन का प्रभाव फीका पड़ जाता है। आप जानते हैं कि मैं समाज के लोगों के बौद्धिक स्तर के बारे में क्या सोचता हूँ, फिर भी वे कुछ महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभा सकते हैं, जिनमें से एक वह है जो सार्वजनिक कार्यक्रमों में प्रेस पर निर्भर करती है, और जो है प्रचार का माध्यम बनना। आप जानते हैं मेरा मतलब क्या है; उदाहरण के लिए, मैंने अपनी भाभी ओरियान को आमंत्रित किया है; यह निश्चित नहीं है कि वह आएगी, लेकिन दूसरी ओर यह निश्चित है कि यदि वह आती है, तो उसे कुछ भी समझ नहीं आएगा। लेकिन उससे समझने की अपेक्षा नहीं की जाती, जो उसकी क्षमता से परे है, बल्कि बोलने की अपेक्षा की जाती है, एक ऐसा कार्य जो उसके

लिए पूरी तरह से उपयुक्त है, और जिसे वह कभी असफल नहीं होने देती। नतीजा? कल हमेशा की तरह, टोपी बनाने वाले और दुकानदार की खामोशी के बजाय, मोर्टेमार्ट्स के घर पर एक जीवंत बातचीत होगी, जिसमें ओरियान सबको बताएगी कि उसने कितना अद्भुत संगीत सुना है, किसी मोरेल के बारे में सुना है, और इसी तरह की बातें; जिन लोगों को आमंत्रित नहीं किया गया है, उनका असहनीय गुस्सा होगा, जो कहेंगे: 'पालामेडे ने शायद सोचा होगा कि हम इसके लायक नहीं हैं; खैर, ये लोग कौन हैं जो पार्टी दे रहे थे?' ओरियान की प्रशंसाओं की तरह ही एक करारा जवाब, क्योंकि मोरेल का नाम बार-बार सामने आता रहता है और अंततः स्मृति में इस तरह अंकित हो जाता है जैसे कोई पाठ जिसे दर्जनों बार पढ़ा गया हो। यह सब मिलकर परिस्थितियों की एक ऐसी श्रृंखला बनाता है जो कलाकार, मेज़बान, दोनों के लिए मूल्यवान हो सकती है, और एक ऐसे प्रदर्शन के लिए लाउडस्पीकर का काम कर सकती है जो इस प्रकार दूरस्थ श्रोताओं तक सुनाई देगा। सचमुच, यह प्रयास सार्थक है; आप देखेंगे कि चार्ली ने कितनी प्रगति की है। और तो और, हमने उसमें एक नई प्रतिभा खोजी है, मेरे प्रिय मित्र, वह किसी देवदूत की तरह लिखता है। बिल्कुल देवदूत की तरह, मैं आपको बता रहा हूँ। एम. डी चार्लस यह कहना भूल गए कि कुछ समय से वे मोरेल को, सत्रहवीं शताब्दी के उन महान रईसों की तरह, जो अपने निंदनीय हमलों पर हस्ताक्षर करने और यहाँ तक कि उन्हें स्वयं लिखने से भी घृणा करते थे, कॉम्टेस मोले की निंदा में कुछ बेहद निंदनीय छोटे-छोटे पैराग्राफ लिखने के लिए नियुक्त कर रहे थे। उनकी धृष्टता उन लोगों को भी स्पष्ट थी जिन्होंने उन पर सरसरी नज़र डाली थी, तो वे उस युवती के प्रति कितने क्रूर रहे होंगे, जिसने उनमें अपने ही पत्रों के कुछ अंश पाए, जिन्हें इतनी कुशलता से प्रस्तुत किया गया था कि केवल वही उसे समझ पाई, ये अंश हूबहू उद्धृत तो किए गए थे, लेकिन उनकी व्याख्या इस तरह की गई थी कि वे सबसे क्रूर प्रतिशोध के समान घातक थे। उन्होंने उस महिला को मार डाला। लेकिन बाल्ज़ाक हमें बताते हैं कि पेरिस में प्रतिदिन एक प्रकार का मौखिक समाचार पत्र प्रकाशित होता है, जो अपने मुद्रित प्रतिद्वंद्वियों से कहीं अधिक भयानक है। हम आगे देखेंगे कि इस मौखिक प्रेस ने एक ऐसे चार्लस की शक्ति को पूरी तरह से नष्ट कर दिया जो प्रचलन से बाहर हो चुका था, और उससे कहीं अधिक मोरेल को ऊंचा उठा दिया, जो अपने पूर्व संरक्षक के दस लाखवें हिस्से के भी लायक नहीं था। क्या यह बौद्धिक प्रचलन

वास्तव में इतना सरल है, और क्या यह वास्तव में एक प्रतिभाशाली चार्लस की निरर्थकता और एक अशिष्ट मोरेल के निर्विवाद अधिकार में विश्वास करता है? बैरन अपने निर्मम प्रतिशोध में इतना निर्दोष नहीं था। इसीलिए, निस्संदेह, उसकी जीभ पर वह कड़वा जहर था, जिसके फैलने से क्रोध में आने पर उसके गाल पीलिया से लाल हो जाते थे। "आप जो बर्गोट को जानते थे," एम. डी चार्लस ने आगे कहा, "मैंने एक बार सोचा था कि आप शायद उस नौजवान की रचनाओं के बारे में उसकी याददाश्त ताज़ा करके, संक्षेप में मेरे साथ सहयोग कर सकते हैं, और एक संगीतकार और लेखक के रूप में उसकी दोहरी प्रतिभा को निखारने में मेरी मदद कर सकते हैं, जो एक दिन बर्लियोज़ के समान प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकती है। जैसा कि आप जानते हैं, प्रतिष्ठित लोगों के पास अक्सर सोचने के लिए और भी बहुत कुछ होता है, वे चापलूसी में डूबे रहते हैं, वे अपने अलावा किसी और में रुचि नहीं रखते। लेकिन बर्गोट, जो वास्तव में सरल और विनम्र थे, ने मुझसे वादा किया था कि वे गॉलॉइस या ऐसे ही किसी अखबार में उन छोटे लेखों को प्रकाशित करवाएंगे, जो हास्यकार और संगीतकार का मिश्रण थे, और जो वे अब वास्तव में बहुत ही आकर्षक ढंग से करते हैं, और मुझे वास्तव में बहुत खुशी है कि चार्ली अपने वायलिन के साथ इंग्रेस की कलम की इस छोटी सी रचना को जोड़ रहे हैं। मुझे पता है कि जब उनकी बात आती है तो मैं अतिशयोक्ति करने लगता हूँ, जैसे संगीत विद्यालय की सभी पुरानी परी माँएँ करती हैं। क्या, मेरे प्रिय मित्र, आपको यह नहीं पता था? उन्होंने मेरी इस छोटी सी कमजोरी पर कभी ध्यान नहीं दिया। मैं परीक्षा हॉल के बाहर घंटों इधर-उधर चक्कर लगाती रहती हूँ। मैं रानी की तरह खुश हूँ। जहाँ तक चार्ली के गद्य की बात है, बर्गोट ने मुझे आश्वासन दिया कि यह वास्तव में बहुत अच्छा है।

एम. डी चार्लस, जो स्वान के माध्यम से बर्गोट से लंबे समय से परिचित थे, उनकी मृत्यु से कुछ दिन पहले उनसे मिलने गए थे, ताकि मोरेल के लिए किसी समाचार पत्र में उस समय के संगीत पर एक हास्यपूर्ण टिप्पणी लिखने का अवसर मिल सके। ऐसा करते हुए एम. डी चार्लस को कुछ खेद हुआ, क्योंकि स्वयं बर्गोट के प्रशंसक होने के नाते, वे जानते थे कि वे उनसे अपने स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि बर्गोट के प्रति उनके सम्मान (जो आंशिक रूप से बौद्धिक और आंशिक रूप से सामाजिक था) के कारण मोरेल या उनके किसी अन्य मित्र की सेवा करने के लिए गए थे। एम. डी चार्लस को इस बात से कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि बर्गोट अब

समाज के लोगों का किसी अन्य उद्देश्य के लिए उपयोग नहीं करते थे, लेकिन बर्गोट के साथ ऐसा व्यवहार उन्हें अधिक आपत्तिजनक लगा, क्योंकि उनका मानना था कि बर्गोट में समाज के लोगों की तरह चालाक स्वभाव नहीं था और वे बेहतर व्यवहार के पात्र थे। लेकिन उनका जीवन व्यस्त था और उन्हें किसी भी चीज़ के लिए समय नहीं मिल पाता था, सिवाय तब जब वे किसी चीज़ में बहुत रुचि रखते थे, उदाहरण के लिए, जब वह मोरेल को प्रभावित करती थी। इसके अलावा, चूंकि वह स्वयं अत्यंत बुद्धिमान थे, इसलिए एक बुद्धिमान व्यक्ति की बातचीत उन्हें अपेक्षाकृत उदासीन लगती थी, विशेषकर बर्गोट की, जो उनकी पसंद से कहीं अधिक विद्वान थे और एक अलग वर्ग से थे, और उनके दृष्टिकोण से सहमत नहीं थे। बर्गोट ने एम. डी चार्लस की यात्राओं के पीछे की सोची-समझी मंशा को भांप लिया था, लेकिन उन्हें कोई नाराजगी नहीं थी, क्योंकि वह अपने पूरे जीवन में निरंतर उदारता दिखाने में असमर्थ रहे थे, बल्कि दूसरों को प्रसन्न करने के लिए उत्सुक, उदार और फटकार लगाने के आनंद से बेपरवाह थे। एम. डी चार्लस की दुर्गुणता की बात करें तो, उन्होंने कभी भी उसमें जरा भी भाग नहीं लिया था, बल्कि एक कलाकार के लिए, इसमें प्रभावित व्यक्ति के व्यक्तित्व में एक रंग का तत्व पाया था, जो नैतिक उदाहरणों में नहीं, बल्कि प्लेटो या सोडोम की स्मृतियों में निहित था। "लेकिन तुम, प्यारे युवक, हम तुम्हें क्राई कोंटी में कभी नहीं देखते। तुम उनकी मेहमाननवाजी का दुरुपयोग मत करो!" मैंने समझाया कि मैं आमतौर पर अपने चचेरे भाई के साथ बाहर जाता हूँ। "सुनो! वो अपनी चचेरी बहन के साथ बाहर जाता है! कितना पवित्र नौजवान है!" एम. डी चार्लस ने ब्रिचोट से कहा। फिर, अपनी ओर मुड़ते हुए: "लेकिन हम तुमसे तुम्हारे जीवन का हिसाब नहीं मांग रहे हैं, मेरे बेटे। तुम जो चाहो वो करने के लिए स्वतंत्र हो। हमें बस इस बात का अफसोस है कि हम इसमें शामिल नहीं हैं। इसके अलावा, तुम्हारा स्वाद बहुत अच्छा है, तुम्हारी चचेरी बहन आकर्षक है, ब्रिचोट से पूछ लो, उसने डौविल में उसका दिल जीत लिया था। आज शाम हमें उसकी अनुपस्थिति का अफसोस होगा। लेकिन शायद तुमने उसे साथ न लाकर अच्छा ही किया। विंटेइल का संगीत बहुत ही मनमोहक है। लेकिन मैंने सुना है कि हम संगीतकार की बेटी और उसकी सहेली से मिलने वाले हैं, जिनकी बहुत बुरी प्रतिष्ठा है। इस तरह की बातें लड़कियों के लिए हमेशा असहज होती हैं। वे ज़रूर वहाँ होंगी, जब तक कि बाकी महिलाएं गाँव में न रुकी हों, क्योंकि उन्हें आज दोपहर श्रीमती

वर्दुरिन के पूर्वाभ्यास में अवश्य उपस्थित रहना था, जिसमें उन्होंने केवल उबाऊ लोगों, अपने परिवार, उन लोगों को आमंत्रित किया था जिन्हें वे आज शाम नहीं बुला सकती थीं। लेकिन अभी कुछ देर पहले, खाने से पहले, चार्ली ने हमें बताया कि विंटेइल बहनें, जैसा कि हम उन्हें कहते हैं, जिनके लिए वे सब इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन कभी आए ही नहीं।" अल्बर्टीन की उस दोपहर वहाँ मौजूद रहने की बेचैनी के कारण, जिसका अंततः पता चला, और मैडम विंटेइल और उनकी सहेली की सार्वजनिक रूप से घोषित उपस्थिति (जिसके बारे में मुझे जानकारी नहीं थी), के अचानक प्रभाव से मुझे जो तीव्र पीड़ा हुई थी, उसके बावजूद मेरा मन इतना तटस्थ था कि मैं यह देख सकूँ कि एम. डी चार्लस, जिन्होंने कुछ मिनट पहले हमसे कहा था कि उन्होंने चार्ली को सुबह से नहीं देखा है, अब बेशर्मी से स्वीकार कर रहे थे कि उन्होंने उसे रात के खाने से पहले देखा था। मेरी पीड़ा स्पष्ट हो गई। "अरे, तुम्हें क्या हुआ है?" बैरन ने कहा। "तुम बिल्कुल पीली पड़ गई हो; चलो, अंदर चलते हैं, तुम्हें सर्दी लग जाएगी, तुम बिल्कुल ठीक नहीं लग रही हो।" एम. डी चार्लस के शब्दों ने मेरे मन में अल्बर्टीन के सद्गुण के बारे में कोई संदेह नहीं जगाया था। मेरे मन में पहले से ही कई अन्य संदेह घर कर चुके थे; हर नए संदेह के साथ हमें लगता है कि बोझ बहुत बढ़ गया है, हम इसे संभाल नहीं सकते, फिर भी हम किसी तरह इसके लिए जगह बना लेते हैं, और एक बार जब यह हमारे भीतर समा जाता है, तो यह विश्वास करने की इतनी सारी इच्छाओं और भूलने के इतने सारे कारणों से प्रतिस्पर्धा करने लगता है कि हम जल्दी ही इसके अभ्यस्त हो जाते हैं, और अंत में इस पर ध्यान देना बंद कर देते हैं। केवल आंशिक रूप से ठीक हुए दर्द की तरह, संभावित पीड़ा का खतरा ही रह जाता है, जो इच्छा का प्रतिरूप, उसी प्रकार की भावना, और उसी की तरह हमारे विचारों का केंद्र बन जाता है, और उनके माध्यम से अनंत परिधि में एक उदास उदासी फैलाता है, जैसे इच्छा उन सुखों को फैलाती है जिनका स्रोत हम समझ नहीं पाते, जहाँ कहीं भी कोई चीज उस व्यक्ति का विचार लाती है जिससे हम प्रेम करते हैं। लेकिन जैसे ही कोई नया संदेह हमारे मन में पूरी तरह से प्रवेश करता है, दर्द फिर से जीवित हो उठता है; भले ही हम लगभग तुरंत खुद को आश्वस्त कर लें: "मैं इससे निपट लूँगा, कोई न कोई तरीका जरूर होगा जिससे मुझे पीड़ा न सहनी पड़े, यह सच नहीं हो सकता," फिर भी एक ऐसा क्षण जरूर आया होगा जब हमने पीड़ा सहन की, मानो हमने इस पर विश्वास कर लिया हो। यदि हमारे

पास केवल पैर और हाथ जैसे अंग होते, तो जीवन सहनीय होता; दुर्भाग्य से हमारे भीतर वह छोटा सा अंग है जिसे हम हृदय कहते हैं, जो कुछ बीमारियों के अधीन होता है और जिसके दौरान यह किसी व्यक्ति के जीवन से संबंधित हर चीज से अत्यंत प्रभावित होता है। इसलिए, उस व्यक्ति द्वारा बोला गया झूठ—जो कि सबसे हानिरहित चीज है, जिसके बीच हम इतने बेपरवाह होकर जीते हैं, चाहे वह झूठ हम खुद बोलें या कोई अजनबी—उस छोटे से हृदय को, जिसे वास्तव में शल्यचिकित्सकों द्वारा हमारे शरीर से निकाला जा सकता है, असहनीय पीड़ा देता है। मस्तिष्क की बात न करें, क्योंकि इस पीड़ा के दौरान हमारा मन अंतहीन तर्क करता रह सकता है, यह इसे कम करने के लिए उतना ही कुछ नहीं करता जितना कि सोचने से हम दर्द वाले दांत को शांत नहीं कर सकते। यह सच है कि उस व्यक्ति को हमसे झूठ बोलने के लिए दोषी ठहराया जाना चाहिए, क्योंकि उसने हमसे सच बोलने की शपथ ली थी। लेकिन हम दूसरों के प्रति अपनी कमियों से जानते हैं कि शपथ का कितना कम महत्व होता है। और हमने जानबूझकर उन बातों पर विश्वास किया जब वे उससे आईं, वही व्यक्ति जिसका हित हमेशा हमसे झूठ बोलने में रहा है, और जिसे हमने उसके गुणों के कारण नहीं चुना था। यह सच है कि बाद में, जब हमारा हृदय उसके झूठ के प्रति उदासीन हो जाएगा, तब उसे हमसे झूठ बोलने की लगभग कोई आवश्यकता नहीं रहेगी, क्योंकि तब हमें उसके जीवन में कोई रुचि नहीं रहेगी। हम यह जानते हैं, और फिर भी, हम जानबूझकर अपने जीवन का बलिदान देते हैं, या तो उसके लिए आत्महत्या करके, या उसकी हत्या के लिए मृत्युदंड भुगतकर, या बस कुछ ही शामों में अपनी सारी संपत्ति उस पर लुटाकर, जो हमें जल्द ही आत्महत्या करने के लिए विवश कर देगी क्योंकि हमारे पास दुनिया में एक पैसा भी नहीं बचेगा। इसके अलावा, प्रेम में होने पर हम खुद को कितना भी शांत क्यों न समझें, हमारे हृदय में प्रेम हमेशा अस्थिर संतुलन की स्थिति में रहता है। एक छोटी सी बात भी खुशी का रूप ले लेती है, हम खुशी बिखेरते हैं, हम अपने स्नेह में उसे नहीं डुबोते जिससे हम प्यार करते हैं, बल्कि उन लोगों को डुबो देते हैं जिन्होंने उसकी नजरों में हमें सम्मान दिलाया है, जिन्होंने उसे हर बुरी लालसा से बचाया है; हम सोचते हैं कि हमारा मन शांत है, और एक शब्द ही काफी है: 'गिल्बर्ट नहीं आ रही है,' 'मैडमोजेल विंटेउइल आने वाली हैं,' और हमारी पूर्वकल्पित खुशी को चकनाचूर कर देता है, सूरज को अपना चेहरा छुपाने पर मजबूर कर देता है, हवाओं का

थैला खोलकर उस आंतरिक तूफान को बाहर निकाल देता है जिसका सामना हम एक दिन नहीं कर पाएंगे। उस दिन, जिस दिन दिल इतना कमजोर हो जाता है, हमारे आदर करने वाले मित्र दुखी होते हैं कि ऐसी छोटी-छोटी बातें, कुछ खास लोग, हमें इतना प्रभावित कर सकते हैं, हमें मौत के कगार पर ला सकते हैं। लेकिन वे क्या करें? अगर कोई कवि सेप्टिक निमोनिया से मर रहा हो, तो क्या कोई कल्पना कर सकता है कि उसके मित्र निमोनिया के वायरस को समझाएंगे कि कवि एक प्रतिभाशाली व्यक्ति है और उसे ठीक होने देना चाहिए? मैडम विंटेइल के बारे में मेरा संदेह पूरी तरह से नया नहीं था। लेकिन कुछ हद तक, दोपहर में लीया और उसकी सहेलियों से उपजे मेरे ईर्ष्या भाव ने इसे खत्म कर दिया था। ट्रोकाडेरो का वह खतरा टलते ही मुझे लगा कि मुझे हमेशा के लिए मन की पूर्ण शांति मिल गई है। लेकिन मेरे लिए जो बात बिल्कुल नई थी, वह एक खास सैर थी जिसके बारे में एंड्री ने मुझे बताया था: "हम इधर-उधर गए, किसी से नहीं मिले," और जिसके दौरान, इसके विपरीत, मैडम विंटेइल ने जाहिर तौर पर मैडम वर्दुरिन के यहाँ अल्बर्टीन से मिलने का इंतजाम किया था। इस समय मैं खुशी-खुशी अल्बर्टीन को अकेले बाहर जाने देता, जहाँ चाहे वहाँ जाने देता, बशर्ते कि मैं मैडम विंटेइल और उसकी सहेली को कहीं बंद कर दूं और यह सुनिश्चित कर लूं कि अल्बर्टीन उनसे न मिले। असल बात यह है कि ईर्ष्या आम तौर पर आंशिक होती है, रुक-रुक कर प्रकट होती है, चाहे इसका कारण यह हो कि यह उस चिंता का कष्टदायक विस्तार है जो कभी एक व्यक्ति द्वारा, कभी किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा उत्पन्न होती है जिससे हमारी प्रेमिका प्रेम करती हो, या फिर हमारी विचार शक्ति की कमी के कारण जो केवल वही समझ पाती है जो वह स्वयं को प्रस्तुत कर सकती है और बाकी सब कुछ अस्पष्टता में छोड़ देती है जिससे हमें केवल आनुपातिक रूप से कम पीड़ा ही होती है।

जैसे ही हम घंटी बजाने वाले थे, सैनीएट ने हमें रोक लिया और बताया कि राजकुमारी शेरबाटोफ़ का निधन छह बजे हो गया है, और यह भी कहा कि उसने हमें पहले पहचाना नहीं था। "हालांकि, मैंने आपको कुछ देर से देखा था," उसने हांफती हुई आवाज़ में कहा। "क्या यह अजीब नहीं है कि मैं हिचकिचाया?" "क्या यह अजीब नहीं है" कहना उसे गलत लगता, और वह अप्रचलित भाषा के तरीकों से इतना परिचित हो गया था कि अब उसे चिढ़ होने लगी थी। "बिल्कुल नहीं, आप ऐसे लोग हैं जिन्हें दोस्त माना जा सकता है।" उसका पीला चेहरा

किसी तूफान की तेज रोशनी से जगमगा रहा था। उसकी सांस फूलना, जो पिछली गर्मियों तक केवल तब दिखाई देती थी जब एम. वर्दुरिन उस पर चिल्लाते थे, अब लगातार हो रही थी। "मुझे पता चला है कि विंटेउइल की एक अज्ञात कृति का प्रदर्शन उत्कृष्ट कलाकारों द्वारा, और विशेष रूप से मोरेल द्वारा किया जाना है।" "विशेष रूप से क्यों?" बैरन ने पूछा, जिसने क्रियाविशेषण में एक आलोचना देखी। "हमारे मित्र सैनियेट," ब्रिचोट ने दुभाषिया की भूमिका निभाते हुए जल्दबाजी में कहा, "एक उत्कृष्ट विद्वान होने के नाते, उस युग की भाषा बोलने के आदी हैं जिसमें 'अद्वितीय रूप से' हमारे 'विशेष रूप से' के बराबर था।"

जैसे ही हम वर्दुरिन्स के हॉल में दाखिल हुए, एम. डी चार्लस ने मुझसे पूछा कि क्या मैं किसी काम में व्यस्त हूँ। जब मैंने उन्हें बताया कि मैं किसी काम में व्यस्त नहीं हूँ, बल्कि इस समय पुराने चांदी और चीनी मिट्टी के बर्तनों में मेरी बहुत रुचि है, तो उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि वर्दुरिन्स के पास जो बर्तन हैं, उनसे बेहतर बर्तन मुझे कहीं नहीं मिलेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि मैं उन्हें ला रास्पेलियर में भी देख सकता था, क्योंकि इस बहाने कि अपनी संपत्ति को अपना मित्र समझकर वे सब कुछ अपने साथ वहाँ ले गए थे; किसी पार्टी की शाम को मेरे लिए सब कुछ लाना सुविधाजनक नहीं होता। फिर भी, उन्होंने कहा कि वे मुझे वह सब कुछ दिखाएंगे जो मैं देखना चाहता हूँ। मैंने उनसे ऐसा न करने की विनती की। एम. डी चार्लस ने अपना ओवरकोट खोला, अपनी टोपी उतारी, और मैंने देखा कि उनके सिर के ऊपरी हिस्से पर जगह-जगह चांदी के धब्बे पड़ गए थे। लेकिन एक कीमती झाड़ी की तरह, जो न केवल पतझड़ के रंगों से रंगी होती है, बल्कि जिसकी कुछ पत्तियों को रुई की पट्टियों या प्लास्टर की परत से सुरक्षित रखा जाता है, श्री डी चार्लस के सिर के इन कुछ सफेद बालों ने उनके चेहरे की विविधता को और बढ़ा दिया। फिर भी, विभिन्न भावों, रंग और पाखंड की परतों के नीचे, जो एक खराब 'मेक-अप' का रूप ले चुके थे, उनका चेहरा लगभग हर किसी से उस रहस्य को छुपाए हुए था जो मुझे ऐसा लग रहा था मानो ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा हो। मैं उनकी आँखों से लगभग शर्मिंदा हो गया था, जिनमें मुझे डर था कि कहीं वे मुझे खुली किताब की तरह उसे पढ़ते हुए न देख लें, उनकी आवाज़ से जो मुझे ऐसा लग रहा था मानो हर स्वर में उसे दोहरा रही हो, एक अथक अभद्रता के साथ। लेकिन ऐसे लोग रहस्य बड़ी कुशलता से छिपाकर रखते हैं, क्योंकि जो भी उनके संपर्क में आता है, वह बहरा और अंधा हो जाता है। जिन लोगों

ने किसी और से, उदाहरण के लिए वर्दुरिन परिवार से, सच्चाई जानी, उन्होंने उस पर विश्वास किया, लेकिन केवल तब तक जब तक वे श्री डी चार्लस से नहीं मिले थे। उनका चेहरा, अफवाहों को फैलाने के बजाय, हर तरह की बदनामी को दूर कर देता था। क्योंकि हम कुछ लोगों के बारे में इतनी अतिरंजित धारणाएँ बना लेते हैं कि हम उनमें से किसी एक को अपने परिचित व्यक्ति के चेहरे से मिलाना असंभव समझते हैं। और हमें ऐसे व्यक्ति के अवगुणों पर विश्वास करना मुश्किल लगता है, ठीक वैसे ही जैसे हम उस व्यक्ति की प्रतिभा पर कभी विश्वास नहीं कर सकते जिसके साथ हम कल रात ओपेरा देखने गए थे।

एम. डी चार्लस एक परिचित अतिथि के निर्देशों के अनुसार अपना ओवरकोट सौंपने में व्यस्त थे। लेकिन जिसे वे ओवरकोट सौंप रहे थे, वह नया और काफी युवा था। अब तक एम. डी चार्लस, जैसा कि लोग कहते हैं, 'अपना संतुलन खोने' लगे थे और उन्हें हमेशा यह याद नहीं रहता था कि क्या किया जा सकता है और क्या नहीं। बालबेक में उन्होंने जो सराहनीय इच्छा दिखाई थी, यह दिखाने की कि कुछ विषय उन्हें विचलित नहीं करते, कि वे किसी के बारे में यह कहने से नहीं डरते थे: "वह एक सुंदर लड़का है," संक्षेप में, वही शब्द जो कोई अन्य व्यक्ति कह सकता था, अब वे इस इच्छा को विपरीत बातें कहकर व्यक्त करने लगे थे, जो कोई अन्य व्यक्ति कभी नहीं कह सकता था, ऐसी बातें जिन पर उनका मन इतना अधिक केंद्रित था कि वे भूल गए थे कि ये आम लोगों की दिनचर्या का हिस्सा नहीं हैं। और फिर, नए नौकर को घूरते हुए, उसने धमकी भरे अंदाज़ में अपनी तर्जनी उंगली हवा में उठाई और यह सोचते हुए कि वह एक बढ़िया मज़ाक कर रहा है: "तुम मुझे इस तरह से आँखें मत मारो, समझे?" बैरन ने कहा, और ब्रिचोट की ओर मुड़कर बोला: "उस लड़के का चेहरा कितना अजीब है, उसकी नाक तो बड़ी मज़ेदार है," और अपना मज़ाक पूरा करते हुए, या अपनी इच्छा के आगे झुकते हुए, उसने अपनी तर्जनी उंगली को क्षैतिज रूप से नीचे किया, एक पल के लिए हिचकिचाया, फिर खुद को और रोक न पाने के कारण, उसने उसे ज़बरदस्ती नौकर की ओर बढ़ाया और उसकी नाक की नोक को छूते हुए कहा "पिफ!" "यह तो अजीब बात है," नौकर ने मन ही मन कहा, और अपने साथियों से पूछा कि यह मज़ाक था या कुछ और। "यह बस उनका स्वभाव है," बटलर ने कहा (जो बैरन को थोड़ा 'सनकी' और 'थोड़ा सनकी' मानता

था), "लेकिन वह मैडम के उन दोस्तों में से एक हैं जिनके लिए मेरे मन में हमेशा से बहुत सम्मान रहा है, उनका दिल बहुत अच्छा है।"

ब्रिचोट ने मुझसे पूछा, "क्या आप इस साल इनकार्विल वापस आ रहे हैं?" मैंने कहा, "मुझे लगता है कि हमारी मालकिन ने ला रास्पेलियर फिर से ले ली है, भले ही मकान मालिकों से उनकी थोड़ी अनबन हुई हो। लेकिन यह कोई बड़ी बात नहीं है, यह एक ऐसा संकट है जो टल जाएगा।" उन्होंने अखबारों के उस आशावादी लहजे में कहा, "गलतियाँ हुई हैं, यह सच है, लेकिन कौन कभी-कभी गलतियाँ नहीं करता?" लेकिन मुझे बालबेक छोड़ते समय की अपनी पीड़ा याद आ गई और वहाँ वापस जाने की कोई इच्छा नहीं हुई। मैंने अल्बर्टाइन जाने की अपनी योजनाएँ कल पर टाल दीं। "क्यों, बिल्कुल वह वापस आ रहा है, हमें उसकी ज़रूरत है, वह हमारे लिए अपरिहार्य है," एम. डी चार्लस ने मित्रता के दिखावे वाले अधिकारपूर्ण और अविवेकी अहंकार के साथ घोषणा की।

इसी क्षण एम. वर्दुरिन हमारा स्वागत करने के लिए प्रकट हुए। जब हमने राजकुमारी शेरबातोफ़ के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की, तो उन्होंने कहा: "हाँ, मुझे लगता है कि वह काफी बीमार हैं।" "नहीं, नहीं, उनकी मृत्यु छह बजे हुई थी," सैनीएट ने कहा। "अरे, तुम तो हर बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हो," एम. वर्दुरिन का कठोर जवाब था, क्योंकि उन्होंने अपनी पार्टी रद्द नहीं की थी, इसलिए उन्होंने बीमारी की परिकल्पना को प्राथमिकता दी, अनजाने में ड्यूक डी गुएरमांटेस की नकल करते हुए। सैनीएट, ठंड लगने के डर से, क्योंकि बाहरी दरवाजा लगातार खोला जा रहा था, धैर्यपूर्वक किसी के द्वारा अपनी टोपी और कोट लेने का इंतजार कर रहे थे। "तुम वहाँ पिटे हुए कुत्ते की तरह क्यों घूम रहे हो?" एम. वर्दुरिन ने उनसे पूछा। "मैं तब तक इंतजार कर रहा हूँ जब तक कि क्लोकरूम के प्रभारी व्यक्तियों में से कोई मेरा कोट लेकर मुझे एक नंबर न दे दे।" "तुम क्या कह रहे हो?" एम. वर्दुरिन ने सख्त चेहरे से पूछा। "'क्लोकरूम के प्रभारी?'" क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? अगर हमें तुम्हें तुम्हारी अपनी भाषा सिखानी पड़े, तो हम यही कहते हैं, 'क्लॉकरूम का इंचार्ज', जैसे किसी को स्ट्रोक आ गया हो। "किसी चीज़ का इंचार्ज होना सही शब्द है," सैनीएट ने दबी हुई आवाज़ में कहा; "एब्बे ले बैटेक्स..." "तुम मुझे थका देते हो," एम. वर्दुरिन गरजती आवाज़ में चिल्लाए। "तुम्हारी खरखराहट कितनी तेज़ है! क्या तुम ऊपर अटारी में दौड़ रहे थे?" एम. वर्दुरिन की बदतमीज़ी

का असर यह हुआ कि क्लॉकरूम के नौकरों ने सैनीएट से पहले दूसरे मेहमानों को जाने दिया और जब उसने अपना सामान देने की कोशिश की, तो उन्होंने जवाब दिया: "अपनी बारी का इंतज़ार कीजिए, महोदय, इतनी जल्दी मत कीजिए।" "ये लो, तुम जैसे काबिल लोगों के लिए एक सिस्टम है, है ना, मेरे लड़कों," एम. वर्दुरिन ने मुस्कुराते हुए कहा, ताकि वे सैनीएट को अंत तक इंतज़ार कराने की अपनी आदत को बढ़ावा दे सकें। “चलो,” उसने हमसे कहा, “वह प्राणी चाहता है कि हम सब उसकी प्यारी ठंडी हवा में लटकते हुए मर जाएँ। आओ और ड्राइंग रूम में गर्म हो जाओ। ‘क्लोकरूम का काम सौंपा गया है,’ वाकई, कितना बेवकूफ है!” “वह थोड़ा नखरेबाज़ है, लेकिन बुरा आदमी नहीं है,” ब्रिचोट ने कहा। “मैंने कभी नहीं कहा कि वह बुरा आदमी है, मैंने कहा कि वह बेवकूफ है,” एम. वर्दुरिन ने तीखे शब्दों में जवाब दिया।

इस बीच, श्रीमती वर्दुरिन कॉटार्ड और स्की के साथ व्यस्त थीं। मोरेल ने अभी-अभी (क्योंकि एम. डी चार्लस उपस्थित नहीं हो सके) उनके कुछ मित्रों का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया था, जिन्हें उन्होंने वायलिन वादक की सेवाएं देने का वादा किया था। वर्दुरिन के मित्रों द्वारा दी जा रही पार्टी में मोरेल के प्रदर्शन से इनकार करने का कारण, जिसे हम अभी और भी गंभीर कारणों से पुष्ट होते देखेंगे, शायद अवकाशप्रिय वर्गों में आम तौर पर पाई जाने वाली, लेकिन विशेष रूप से उस छोटे समूह की विशिष्ट आदत में निहित हो सकता है। निश्चित रूप से, यदि श्रीमती वर्दुरिन ने एक नवागंतुक और एक वफादार साथी के बीच फुसफुसाते हुए हुई बातचीत को रोक दिया, जिससे ऐसा लग सकता था कि वे पहले से ही एक-दूसरे को जानते थे, या अधिक घनिष्ठ होना चाहते थे ("तो शुक्रवार को, फलां-फलां के यहाँ," या "जब भी आप चाहें स्टूडियो आ जाइए; मैं हमेशा पाँच बजे तक वहाँ रहती हूँ, मुझे आपसे मिलने का इंतज़ार रहेगा")। उत्तेजित होकर, यह सोचकर कि नवागंतुक एक ऐसी 'स्थिति' में है जो उसे छोटे से समूह में एक प्रतिभाशाली सदस्य बना देगी, मालकिन ने कुछ भी न सुनने का नाटक करते हुए, और अपनी सुंदर आँखों में, जो कोकीन सूंघने से भी अधिक डेबुसी को सुनने की आदत से धुंधली हो गई थीं, केवल संगीत के नशे से उत्पन्न होने वाले कोमल भावों को बनाए रखते हुए, फिर भी उनके शानदार माथे के पीछे, जो उन सभी चौकड़ियों और उनके परिणामस्वरूप होने वाले सिरदर्द से फूला हुआ था, उनके विचार केवल बहुध्वनिक नहीं थे,

और अब और खुद को रोक न पाने के कारण, इंजेक्शन को एक और पल के लिए भी टाल न पाने के कारण, उन्होंने खुद को स्पीकरों पर फेंक दिया, उन्हें अलग किया, और कहा नए आने वाले व्यक्ति से, 'वफादार' व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए: "क्या आप अगले शनिवार को, या कहें कि किसी भी दिन, कुछ बहुत अच्छे लोगों के साथ उनसे मिलने के लिए भोजन पर आना पसंद नहीं करेंगे? ज़्यादा ज़ोर से मत बोलिएगा, क्योंकि मैं इस भीड़ को आमंत्रित नहीं करना चाहता" (यह शब्द पाँच मिनट के लिए उस छोटे समूह को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया गया था, जिसे फिलहाल उस नए व्यक्ति के पक्ष में नज़रअंदाज़ कर दिया गया था, जिस पर इतनी उम्मीदें टिकी थीं)।

लेकिन इस मोहक आवेग, इस दोस्ताना व्यवहार की चाहत का एक विपरीत पहलू भी था। बुधवार को उनके यहाँ नियमित रूप से उपस्थित रहने से वर्दुरिन परिवार में एक विपरीत प्रवृत्ति जागृत हो गई। यह प्रवृत्ति थी झगड़ा करने की, अलग-थलग रहने की। ला रास्पेलियर में बिताए महीनों के दौरान यह प्रवृत्ति और भी प्रबल हो गई थी, लगभग उन्माद की स्थिति तक पहुँच गई थी, जहाँ वे सभी सुबह, दोपहर और रात साथ रहते थे। श्री वर्दुरिन अपने किसी मेहमान को गलत साबित करने के लिए हर संभव प्रयास करते थे, ऐसे बहाने बनाते थे जिनमें वे अपने साथी मकड़ी को कोई निर्दोष मक्खी सौंप सकें। अगर कोई शिकायत न होती, तो वे कोई बेतुकी बात गढ़ लेते। जैसे ही कोई वफादार व्यक्ति आधे घंटे के लिए घर से बाहर जाता, वे दूसरों के सामने उसका मज़ाक उड़ाते, आश्चर्य जताते कि उनके मेहमानों ने ध्यान क्यों नहीं दिया कि उसके दाँत कभी साफ नहीं रहते, या इसके विपरीत उसे दिन में बीस बार दाँत साफ करने का जुनून सवार था। अगर कोई खिड़की खोलने की हिम्मत करता, तो शिष्टाचार की इस कमी के कारण मेज़बान और मेज़बानी करने वाली के बीच घृणा भरी नज़रें एक-दूसरे पर पड़तीं। कुछ ही देर बाद श्रीमती वर्दुरिन शॉल माँगतीं, जिससे श्री वर्दुरिन को गुस्से में यह कहने का बहाना मिल जाता: "नहीं, मैं खिड़की बंद कर दूँगा, पता नहीं किसने इसे खोलने की गुस्ताखी की," और यह सब उस दोषी व्यक्ति के सामने होता जो शर्म से लाल हो गया था। आपको अप्रत्यक्ष रूप से पी गई शराब की मात्रा के लिए फटकारा जाता था। "इससे आपको कोई नुकसान नहीं होगा। मजदूर तो इसी पर पलते-बढ़ते हैं!" यदि दो वफादार लोग मालकिन से अनुमति लिए बिना बाहर जाते, तो उनकी सैर पर अंतहीन टिप्पणियाँ होतीं, चाहे वे कितनी

भी मासूम क्यों न हों। श्री डी चार्लस और मोरेल की सैर मासूम नहीं थी। श्री डी चार्लस का ला रास्पेलियर में न रहना (क्योंकि मोरेल को उनकी बैरक के पास रहना पड़ता था) ही भूख, घृणा और उल्टी आने के समय को कुछ देर के लिए टाल रहा था। लेकिन वह समय अब आने ही वाला था।

मदाम वर्दुरिन बहुत गुस्से में थीं और उन्होंने ठान लिया था कि वह मोरेल को 'समझाएंगी' कि एम. दे शार्लस उनसे कितना बेतुका और घिनौना काम करवा रहे हैं। "मुझे यह भी कहना होगा," उन्होंने आगे कहा (मदाम वर्दुरिन को जब भी लगता था कि उन पर किसी का एहसान है जो उस व्यक्ति के लिए बोझ बन सकता है, और वह उसे मारकर उस एहसान से छुटकारा नहीं पा सकती थीं, तो वह उस व्यक्ति में कोई गंभीर कमी ढूंढ लेती थीं, जिससे उन्हें सम्मानजनक तरीके से अपना आभार व्यक्त करने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी), "मुझे यह भी कहना होगा कि वह मेरे घर में जिस तरह का नखरा दिखाते हैं, वह मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है।" सच तो यह था कि एम. दे शार्लस से झगड़ा करने के पीछे मदाम वर्दुरिन के पास मोरेल के दोस्तों की पार्टी में खेलने से मना करने से भी ज़्यादा गंभीर कोई और वजह थी। एम. दे शार्लस को इस बात का बहुत गर्व था कि वह मालकिन (मदाम वर्दुरिन) पर कितना बड़ा एहसान कर रहे हैं, क्योंकि वह 'क्वे कोंटी' में ऐसे लोगों को ला रहे थे जो असल में कभी भी सिर्फ़ उनके (मदाम वर्दुरिन के) लिए वहाँ नहीं आते। जब मदाम वर्दुरिन ने कुछ लोगों के नाम सुझाए जिन्हें वह पार्टी में बुलाना चाहती थीं, तो एम. दे शार्ल स ने उन्हें तुरंत और पूरी तरह से मना कर दिया। उनका लहजा बहुत ही सख़्त और हुक्म चलाने वाला था; उसमें एक सनकी रईस का घमंड और एक माहिर कलाकार का हठ मिला हुआ था—एक ऐसा कलाकार जो मनोरंजन के मामलों में कोई समझौता करने के बजाय अपना पूरा कार्यक्रम रद्द कर देगा और अपना सहयोग वापस ले लेगा, अगर उसे लगे कि किसी समझौते से पूरी पार्टी की सफलता खतरे में पड़ सकती है। एम. दे शार्लस ने सिर्फ़ 'सैंटाइन' को बुलाने की मंज़ूरी दी थी, लेकिन वह भी कुछ शर्तों के साथ। सैंटाइन के साथ ही मदाम दे ग्वेरमांत ने—ताकि उन्हें सैंटाइन की पत्नी से परेशान न होना पड़े—पहले रोज़ाना की मुलाक़ातें बंद कर दी थीं और फिर उनसे पूरी तरह से सारे रिश्ते तोड़ लिए थे; लेकिन एम. दे शार्लस को सैंटाइन बुद्धिमान लगता था, इसलिए वह उससे मिलते रहे। यह सच है कि सैंटाइन—जो कभी ग्वेरमांत के रईस लोगों के

बीच बहुत लोकप्रिय था—अब एक ऐसे मध्यम-वर्गीय समूह में चला गया था जहाँ छोटे-मोटे रईसों का भी मेल-जोल था। इस समूह में लोग सिर्फ़ बहुत अमीर होते थे और ऐसे रईसों से जुड़े होते थे जिन्हें असली रईस लोग जानते भी नहीं थे; सैंटाइन ने इसी समूह में जाकर अपनी किस्मत आज़माने और समाज में अपनी जगह बनाने की सोची थी। लेकिन मदाम... Verdurin, अपनी पत्नी के सामाजिक दायरे के ऊँचे खानदान होने के दिखावों को जानती थी, और पति की हैसियत को नज़रअंदाज़ कर बैठी (क्योंकि हमें ऊँचाई का एहसास उस चीज़ से होता है जो ठीक हमारे सिर के ऊपर होती है, न कि उससे जो हमें लगभग दिखाई ही नहीं देती—जो बादलों में इतनी खो चुकी होती है कि नज़र ही नहीं आती)। उसे लगा कि Saintine को बुलाने के अपने फ़ैसले को सही ठहराने के लिए उसे यह बताना चाहिए कि Saintine बहुत सारे लोगों को जानता है, "क्योंकि उसने Mlle. —— से शादी की है।" इस बात से—जो सच के बिल्कुल उलट थी—Mme. Verdurin की जो नासमझी ज़ाहिर हुई, उसे देखकर Baron के रंगे हुए होंठ एक ऐसी मुस्कान में खुल गए जिसमें थोड़ी-सी उपेक्षा और गहरी समझ दोनों झलक रही थीं। उसने सीधे-सीधे जवाब देना ज़रूरी नहीं समझा; लेकिन चूँकि वह हमेशा सामाजिक उदाहरणों के ज़रिए ऐसे सिद्धांत बताने को तैयार रहता था जिनसे उसके तेज़ दिमाग़ और उसके घमंड की झलक मिलती थी—और साथ ही उसके कामों में उसके खानदानी हल्केपन की भी—तो उसने कहा: "Saintine को शादी करने से पहले मेरे पास आना चाहिए था," उसने कहा, "समाज में सामाजिक और शारीरिक, दोनों तरह के 'सुजनन-शास्त्र' (eugenics) होते हैं, और शायद मैं ही अकेला ऐसा विशेषज्ञ हूँ। Saintine के मामले पर कोई बहस नहीं हुई; यह साफ़ था कि उसने जिस औरत से शादी की थी, उससे शादी करके उसने अपने गले में एक पत्थर बाँध लिया था, और अपनी काबिलियत को छिपा दिया था। उसका सामाजिक करियर वहीं खत्म हो गया था। मुझे उसे यह बात समझानी चाहिए थी, और वह मेरी बात समझ भी जाता, क्योंकि वह काफ़ी समझदार है। दूसरी तरफ़, एक ऐसा भी इंसान था जिसके पास अपनी हैसियत को ऊँचा, सबसे ऊपर और दुनिया भर में मशहूर बनाने के लिए ज़रूरी सब कुछ था—बस एक भयानक बंधन उसे ज़मीन से बाँधे हुए था। मैंने उसकी मदद की—कुछ दबाव डालकर, कुछ ज़ोर-ज़बरदस्ती करके—ताकि वह अपने बंधन तोड़ सके; और अब उसने एक ज़बरदस्त खुशी के साथ वह आज़ादी और वह ताक़त हासिल कर

ली है, जिसका श्रेय मुझे जाता है। शायद उसे खुद भी थोड़ी हिम्मत दिखानी पड़ी होगी, लेकिन उसका इनाम कितना शानदार मिला! इस तरह, अगर कोई इंसान मेरी बात सुनने की समझ रखता हो, तो वह खुद ही अपनी किस्मत का रचयिता बन सकता है।" यह बात बिल्कुल साफ़ थी कि M. de Charlus अपनी खुद की किस्मत पर कोई असर नहीं डाल पाया था; काम करना, सिर्फ़ बातें करने से—चाहे वे कितनी भी ज़ोरदार क्यों न हों—और सिर्फ़ सोचने से—चाहे वे विचार कितने भी शानदार क्यों न हों—बिल्कुल अलग बात है। "लेकिन, जहाँ तक मेरी बात है, मैं एक ऐसे दार्शनिक की तरह ज़िंदगी जीता हूँ जो उन सामाजिक प्रतिक्रियाओं को दिलचस्पी से देखता है जिनकी मैंने पहले से भविष्यवाणी की थी, लेकिन जो उनमें कोई मदद नहीं करता। और इसलिए मैं सेंटाइन से मिलने जाता रहा हूँ, जिसने हमेशा मेरा पूरे दिल से वैसा ही आदर-सत्कार किया है जैसा कि मुझे मिलना चाहिए। मैंने तो उसके नए घर में उसके साथ खाना भी खाया है—जहाँ, इतनी शानदार शान-शौकत के बीच भी, इंसान बहुत ज़्यादा बोर हो जाता है; ठीक वैसे ही जैसे पुराने दिनों में, जब वह बड़ी मुश्किल से गुज़ारा करता था और एक टूटी-फूटी अटारी में समाज के सबसे बेहतरीन लोगों को इकट्ठा करता था, तब लोगों का खूब मनोरंजन होता था। तो फिर, आप उसे बुला सकते हैं—मैं आपको इसकी इजाज़त देता हूँ—लेकिन बाकी जितने भी नाम आपने बताए हैं, उन सभी को मैं अपनी वीटो पावर से पूरी तरह से खारिज करता हूँ। और आप इसके लिए मेरा शुक्रिया अदा करेंगे, क्योंकि अगर मैं शादियाँ तय करवाने में माहिर हूँ, तो पार्टियाँ आयोजित करवाने में भी मैं कुछ कम माहिर नहीं हूँ। मैं उन उभरते हुए लोगों को जानता हूँ जो किसी भी महफ़िल में जान डाल देते हैं, उसे ज़बरदस्त बना देते हैं; और मैं उन नामों को भी जानता हूँ जो किसी भी महफ़िल का मज़ा किरकिरा कर देते हैं, उसे पूरी तरह से फ़्लॉप कर देते हैं।" ये सभी नाम खारिज करने के पीछे हमेशा बैरन की अपनी निजी नाराज़गियाँ या उसकी कलात्मक पसंद ही वजह नहीं होती थीं, बल्कि इसके पीछे एक अभिनेता के तौर पर उसकी अपनी कुशलता काम करती थी।

जब वह किसी व्यक्ति या चीज़ की कीमत पर, कोई पूरी तरह से सफल चुटकुला या व्यंग्य तैयार कर लेता था, तो वह उसे ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए बेचैन रहता था; लेकिन वह इस बात का खास ख्याल रखता था कि दूसरी बार सुनाते समय, पहली बार सुनने वाले लोग वहाँ मौजूद न हों—क्योंकि वे गवाही दे सकते थे कि यह बात कोई नई नहीं है। तब

वह अपने ड्राइंग-रूम को फिर से सजाता था—सिर्फ इसलिए क्योंकि वह अपने कार्यक्रम में कोई बदलाव नहीं करता था—और जब बातचीत में उसे सफलता मिल जाती थी, तो ज़रूरत पड़ने पर वह एक दौरा भी आयोजित करता था और अलग-अलग प्रांतों में जाकर अपने प्रदर्शन दिखाता था। इन लोगों को बाहर रखने के पीछे चाहे जो भी अलग-अलग मकसद रहे हों, उनसे न सिर्फ़ मैडम वेरडुरिन को झुंझलाहट होती थी—जिन्हें लगता था कि एक मेज़बान के तौर पर उनके अधिकार को ठेस पहुँची है—बल्कि इससे उन्हें सामाजिक रूप से भी बहुत नुकसान होता था, और इसके दो कारण थे। पहला कारण यह था कि एम. डी चार्लस—जो जूपियन से भी कहीं ज़्यादा संवेदनशील थे—अक्सर उन लोगों से झगड़ा कर बैठते थे जो उनके सबसे अच्छे दोस्त बन सकते थे; और किसी को कभी पता भी नहीं चलता था कि झगड़े की वजह क्या है। ज़ाहिर है, उन्हें सज़ा देने का जो पहला तरीका वह अपनाते थे, वह यह था कि उन्हें उस पार्टी में न बुलाया जाए जो वह वेरडुरिन के यहाँ दे रहे होते थे। अब, ये 'बहिष्कृत' लोग अक्सर ऐसे लोग होते थे जिनकी आदत हर जगह अपनी धाक जमाने की होती थी—जैसा कि कहावत है—लेकिन एम. डी चार्लस की नज़र में, जिस दिन से उनका उन लोगों से झगड़ा हुआ, उसी दिन से उन लोगों की सारी धाक खत्म हो जाती थी। क्योंकि उनकी कल्पनाशक्ति—लोगों से झगड़ा करने के लिए उनमें कमियाँ ढूँढ़ने के अलावा—इस बात में भी उतनी ही माहिर थी कि जैसे ही कोई व्यक्ति उनका दोस्त नहीं रहता, वह तुरंत उस व्यक्ति को पूरी तरह से बे-अहमियत बना देती थी। उदाहरण के लिए, अगर वह 'दोषी' व्यक्ति किसी बहुत पुराने और प्रतिष्ठित परिवार से ताल्लुक रखता हो—भले ही उस परिवार को 'ड्यूक' का खिताब सिर्फ़ उन्नीसवीं सदी में ही मिला हो (जैसे कि मोंटेस्क्यू परिवार)—तो उस पल से एम. डी चार्लस के लिए सिर्फ़ उस 'ड्यूक' के खिताब की ही अहमियत रह जाती थी, और वह पूरा परिवार उनकी नज़र में बिल्कुल बे-अहमियत हो जाता था। वह चिल्लाकर कहते थे, "वे तो असल में 'ड्यूक' भी नहीं हैं!" यह 'एबे डी मोंटेस्क्यू' का खिताब है जो अस्सी साल से भी कम समय पहले, एक दूर के रिश्तेदार को बहुत ही अनियमित तरीके से मिला था। मौजूदा ड्यूक—अगर उन्हें ड्यूक कहा भी जा सकता है—तीसरे हैं। आप चाहें तो मुझसे 'उज़ेस', 'ला ट्रेमोइल', 'लुइन्स' जैसे लोगों के बारे में बात कर सकते हैं, जो दसवें या चौदहवें ड्यूक हैं; या मेरे भाई के बारे में, जो बारहवें 'ड्यूक डी गुएरमांटेस' और सत्रहवें 'प्रिंस ऑफ कोर्डोवा' हैं।

मोंटेस्क्यू लोग एक पुराने खानदान से ताल्लुक रखते हैं—लेकिन इससे क्या साबित होता है? मान लीजिए यह साबित हो भी जाए, तो भी क्या? वे अपनी शान-शौकत से इतने नीचे गिर चुके हैं कि मानो वे चौदहवीं मंज़िल नीचे, तहखाने में पहुँच गए हों। इसके विपरीत, अगर उनका झगड़ा किसी ऐसे रईस से हुआ होता जिसके पास कोई प्राचीन रियासत होती, जो अपने शानदार संपर्कों पर इतराता, जिसका संबंध राज करने वाले राजकुमारों से होता—लेकिन जिसके खानदान को यह सम्मान अचानक ही मिल गया हो, बिना किसी लंबी वंशावली के—जैसे कि 'लुइन्स'—तो मामला बिल्कुल अलग होता; वहाँ सिर्फ़ वंशावली ही मायने रखती। "मैं आपसे पूछता हूँ—श्री अल्बर्टी, जिनका नाम लुई तेरहवें के ज़माने से पहले तो कीचड़ से बाहर ही नहीं निकलता। हमारे लिए इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि दरबार में मिली कृपा की वजह से उन्हें ऐसी रियासतें हथियाने का मौका मिल गया, जिन पर उनका कोई हक़ नहीं था?" इससे भी बढ़कर, श्री डी चार्लस के मामले में, ऊँचाई पर पहुँचने के ठीक बाद ही पतन भी आ गया। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि 'गुएरमांटेस' खानदान की एक अजीब आदत होती है: वे बातचीत या दोस्ती से ऐसी चीज़ों की उम्मीद करते हैं जो ये चीज़ें दे ही नहीं सकतीं; साथ ही, उन्हें हमेशा यह डर भी सताता रहता है कि कहीं लोग उनकी बुराई न करने लगें। और यह पतन उतना ही ज़्यादा भयानक होता था, जितनी ऊँचाई पर वे पहले पहुँचे होते थे। अब, किसी को भी बैरन की इतनी कृपा कभी नहीं मिली थी, जितनी उन्होंने 'काउंटेस मोले' पर खुलकर बरसाई थी। फिर, एक दिन अचानक, उन्होंने अपनी किस बेरुखी से यह ज़ाहिर कर दिया कि वे उस कृपा के लायक नहीं थीं? काउंटेस हमेशा यही कहती रहीं कि वे इस पहेली को कभी सुलझा ही नहीं पाईं। सच तो यह है कि उनके नाम की महज़ आहट सुनते ही बैरन के मन में ज़बरदस्त गुस्सा उमड़ पड़ता था, और वे उनके ख़िलाफ़ बेहद ज़ोरदार, लेकिन बेहद कड़वी और तीखी बातें कहने लगते थे। श्रीमती वेर्दुरिन—जिनसे श्रीमती... मोले बहुत ही दयालु थीं, और जैसा कि हम आगे देखेंगे, उन्होंने उस पर बहुत बड़ी उम्मीदें लगा रखी थीं। उन्हें इस बात की पहले से ही बहुत खुशी थी कि कोम्टेस के घर में फ्रांस और नवारे के सभी सबसे ऊँचे नामों वाले लोग एक साथ मिलेंगे—जैसा कि मालकिन ने कहा था—और इसलिए उन्होंने तुरंत "मैडम डी मोले" को आमंत्रित करने का प्रस्ताव रखा। "ओह, मेरे ईश्वर! हर किसी का अपना-अपना स्वाद होता है," एम. डी चार्लस ने जवाब दिया, "और अगर आपको, मैडम, मैडम पिपलेट, मैडम गिबाउट

और मैडम जोसेफ प्रुधोम से बातचीत करने की इच्छा है, तो मुझे इससे बेहतर और कुछ नहीं चाहिए; लेकिन ऐसा उस शाम को हो जब मैं वहाँ मौजूद न रहूँ। जैसे ही आपने अपना मुँह खोला, मैं समझ गया कि हम एक ही भाषा नहीं बोल रहे हैं; क्योंकि मैं तो कुलीन वर्ग के लोगों के नाम ले रहा था, और आप जवाब में पेशेवर और व्यापारी वर्ग के सबसे अनजान नाम गिना रही हैं—गंदे, बदनामी फैलाने वाले छोटे-मोटे लोग; ऐसी छोटी औरतें जो खुद को कला की संरक्षक समझने लगती हैं, सिर्फ इसलिए क्योंकि वे मेरी गुएरमांटेस भाभी के तौर-तरीकों को एक सप्तक नीचे दोहराती हैं—ठीक उस 'जे' पक्षी की तरह, जिसे लगता है कि वह मोर की नकल कर रहा है। मुझे यह भी कहना होगा कि जिस पार्टी का आयोजन मैं मैडम वेर्दुरिन के यहाँ खुशी-खुशी कर रहा हूँ, उसमें ऐसे किसी व्यक्ति को शामिल करना सरासर अशोभनीय होगा जिसे मैंने—पूरी तरह से उचित कारणों से—अपने सामाजिक दायरे से बाहर रखा हुआ है; एक ऐसी 'भेड़' जिसमें न तो कोई कुलीनता है, न वफादारी, और न ही कोई बुद्धिमत्ता; जो इतनी मूर्ख है कि उसे लगता है कि वह 'डचेस डी गुएरमांटेस' की भूमिका निभाने में सक्षम है।"

...और प्रिंसेस डी गुएरमांटेस—यह एक ऐसा मेल है जो अपने आप में ही बेतुका है, क्योंकि डचेस डी गुएरमांटेस और प्रिंसेस डी गुएरमांटेस एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। यह कुछ ऐसा है, मानो कोई व्यक्ति एक ही समय में राइचेनबर्ग और सारा बर्नहार्ड्ट—दोनों होने का दिखावा करे। बहरहाल, अगर यह असंभव न भी होता, तो भी यह बेहद हास्यास्पद होता। भले ही मैं खुद कभी-कभार एक की अतिशयोक्ति पर मुस्कुरा देता हूँ और दूसरे की सीमाओं पर अफ़सोस करता हूँ—लेकिन यह मेरा अधिकार है। मगर वह तुच्छ, छोटी-सी मेंढकी, जो खुद को फुलाकर उन दो महान महिलाओं के बराबर दिखाने की कोशिश कर रही है—जिनमें, हर हाल में, हमेशा खानदानी बड़प्पन की बेजोड़ झलक दिखाई देती है—यह नज़ारा, जैसा कि कहावत है, किसी बिल्ली को भी हँसाने के लिए काफ़ी है। मोले! "यह एक ऐसा नाम है जिसे मेरी मौजूदगी में नहीं लिया जाना चाहिए, वरना मुझे वहाँ से चले जाना पड़ेगा," उन्होंने मुस्कुराते हुए, एक डॉक्टर के लहजे में अपनी बात खत्म की; ठीक उस डॉक्टर की तरह, जो अपने मरीज़ के विरोध के बावजूद उसके हित के बारे में सोचते हुए, यह साफ़ कर देता है कि वह किसी होम्योपैथ के दखल को बर्दाश्त नहीं करेगा। दूसरी ओर, कुछ ऐसे लोग जिन्हें एम.

डी शार्लस तुच्छ मानते थे, वे शायद उनके लिए तो तुच्छ रहे हों, लेकिन एमएमई. वर्दुरिन के लिए नहीं। एम. डी शार्लस, अपने ऊँचे खानदान के कारण, उन बेहद फैशनेबल लोगों की संगति के बिना भी काम चला सकते थे, जिनकी मौजूदगी एमएमई. वर्दुरिन के ड्राइंग-रूम को पेरिस के सबसे बेहतरीन ड्राइंग-रूम में से एक बना सकती थी। वहीं दूसरी ओर, उन्हें अब यह महसूस होने लगा था कि वह पहले भी कई मौकों पर पीछे छूट चुकी हैं—और तो और, ड्रेफस मामले से जुड़ी सामाजिक चूक ने उन्हें जो भारी नुकसान पहुँचाया था, उसकी तो बात ही छोड़िए; हालाँकि, इस चूक ने अनजाने में ही सही, उनकी कुछ मदद भी की थी। मुझे ठीक से याद नहीं कि मैंने इस बात का ज़िक्र किया है या नहीं कि डचेस डी गुएरमांटेस ने अपने ही समाज के कुछ लोगों को किस नज़र से देखा था—वे लोग जिन्होंने ड्रेफस मामले को हर चीज़ से ऊपर रखते हुए, फैशनेबल महिलाओं को अपने ड्राइंग-रूम से बाहर कर दिया था और उन महिलाओं को अंदर आने दिया था जो फैशनेबल नहीं थीं, सिर्फ इसलिए क्योंकि वे इस नए मुकदमे के पक्ष में या विपक्ष में थीं; और फिर उन्हीं महिलाओं ने डचेस की आलोचना की थी, उन्हें 'ठंडा' (उदासीन), अपने विचारों में कमज़ोर, और राष्ट्रीय हितों के ऊपर सामाजिक भेदभाव को रखने का दोषी ठहराया था। क्या मैं पाठकों से एक दोस्त की तरह अपील कर सकता हूँ—ठीक उस दोस्त की तरह, जिसके साथ बातचीत खत्म होने पर हमें यह याद ही नहीं रहता कि हमने उसे कोई ज़रूरी बात बताई थी या नहीं? चाहे मैंने इसका ज़िक्र किया हो या न किया हो, डचेस डी गुएरमांटेस के रवैये का अंदाज़ा आसानी से लगाया जा सकता है; और सच तो यह है कि अगर हम इसे बाद के इतिहास के नज़रिए से देखें, तो सामाजिक दृष्टिकोण से उनका रवैया पूरी तरह से सही भी लग सकता है। एम. डी कैम्ब्रेमर, ड्रेफस मामले को एक विदेशी साज़िश मानते थे—एक ऐसी साज़िश जिसका मकसद खुफिया विभाग को तबाह करना, अनुशासन को कमज़ोर करना, सेना को शक्तिहीन बनाना, फ्रांसीसी लोगों को आपस में बाँटना और देश पर हमले का रास्ता साफ़ करना था। साहित्य की दुनिया, ला फॉन्टेन की कुछ कहानियों को छोड़कर, मार्क्विस के लिए एक 'बंद किताब' (पूरी तरह से अनजान विषय) के समान थी; इसलिए उन्होंने यह ज़िम्मेदारी अपनी पत्नी पर छोड़ दी थी कि वह यह साबित करे कि उस ज़माने के वे लेखक, जो अपनी रचनाओं में बड़ी बेरहमी से आत्म-निरीक्षण करते थे... उन्होंने, अनादर की भावना पैदा करके, एक समानांतर रास्ते से चलते हुए,

लगभग वैसा ही नतीजा हासिल कर लिया था। वह कहती थीं, "एम. रेनाक और एम. हरव्यू इस साज़िश में शामिल हैं।" कोई भी ड्रेफस मामले पर यह आरोप नहीं लगाएगा कि उसने समाज के लिए पहले से ऐसी कोई बुरी योजना बनाई थी। लेकिन, यह बात तो पक्की है कि इस मामले ने समाज की पुरानी बंदिशों को तोड़ दिया है। जो सामाजिक नेता समाज में राजनीति को घुसने नहीं देना चाहते, वे उतने ही दूरदर्शी हैं जितने कि वे सैनिक जो सेना में राजनीति को हावी नहीं होने देना चाहते। समाज भी यौन इच्छा की तरह ही होता है; एक बार जब हम अपनी पसंद को केवल सौंदर्य-संबंधी विचारों के आधार पर तय करने लगते हैं, तो हमें पता ही नहीं चलता कि यह किस हद तक विकृत हो सकता है। राष्ट्रवादी होने की वजह से, फ़ॉबर्ग सेंट-जर्मेन के लोगों को समाज के दूसरे तबके की महिलाओं को अपने यहाँ बुलाने की आदत पड़ गई थी; जब राष्ट्रवाद का दौर खत्म हुआ, तो वह वजह तो चली गई, लेकिन वह आदत बनी रही। ड्रेफस मामले से जुड़े होने की वजह से, श्रीमती वर्दुरिन ने कुछ ऐसे जाने-माने लेखकों को अपने घर बुलाया, जिनसे उस समय उन्हें सामाजिक तौर पर कोई फ़ायदा नहीं था, क्योंकि वे सभी ड्रेफस के समर्थक थे। लेकिन, राजनीतिक जुनून भी बाकी सभी चीज़ों की तरह ही होते हैं—वे हमेशा नहीं टिकते। नई पीढ़ियाँ आती हैं, जो उन पुराने जुनूनों को समझ ही नहीं पातीं। यहाँ तक कि जिस पीढ़ी ने उन जुनूनों को महसूस किया था, वह भी बदल जाती है; वह ऐसे नए राजनीतिक जुनून महसूस करने लगती है जो पिछली पीढ़ी के जुनूनों से बिल्कुल अलग होते हैं, और इसी वजह से वह उन लोगों को फिर से अपना लेती है जिन्हें पहले समाज से बाहर कर दिया गया था—क्योंकि अब उन्हें बाहर करने की वजह ही खत्म हो चुकी होती है। ड्रेफस मामले के समय, राजशाही समर्थक (Monarchists) इस बात की परवाह नहीं करते थे कि कोई व्यक्ति पहले कभी गणतंत्रवादी (Republican)—यानी कट्टरपंथी (Radical), या फिर चर्च-विरोधी (Anticlerical)—रहा है या नहीं; बस शर्त यह होती थी कि वह यहूदी-विरोधी (Anti-Semite) और राष्ट्रवादी होना चाहिए। अगर कभी कोई युद्ध छिड़ जाता, तो देशभक्ति का रूप ही बदल जाता; और अगर कोई लेखक बहुत ज़्यादा राष्ट्रवादी (Chauvinistic) होता, तो कोई भी इस बात पर ज़रा भी नहीं सोचता कि वह पहले कभी ड्रेफस का समर्थक रहा था या नहीं। इसी तरह, हर राजनीतिक संकट के समय और हर बार कला के क्षेत्र में नई जान आने पर, श्रीमती वर्दुरिन ने—ठीक वैसे ही जैसे कोई चिड़िया अपना

घोंसला बनाती है—एक-एक करके उन तमाम चीज़ों को इकट्ठा किया, जो उस समय तो शायद बेकार लगती थीं, लेकिन एक दिन चलकर उन्हीं से उनका 'सालोन' (साहित्यिक-कलात्मक जमावड़ा) तैयार होने वाला था। ड्रेfस मामला तो गुज़र गया, लेकिन अनातोले फ़्रांस वहीं बने रहे। श्रीमती वर्दुरिन की असली ताकत कला के प्रति उनके सच्चे प्रेम में थी, अपने वफ़ादार साथियों के लिए उनकी मेहनत में थी, और उस अद्‌भुत...

...शानदार दावतें जो वह सिर्फ़ उनके लिए देती थी, बिना फ़ैशन की दुनिया से किसी को बुलाए। उसके मेज़ पर हर वफ़ादार मेहमान के साथ वैसा ही बर्ताव होता था जैसा Mme. Swann के यहाँ Bergotte के साथ होता था। जब इस तरह का कोई पक्का दोस्त एक मशहूर हस्ती बन जाता था जिससे हर कोई मिलना चाहता था, तो Mme. Verdurin के यहाँ उसकी मौजूदगी में वह बनावटी, मिला-जुला असर नहीं होता था जो किसी सरकारी या विदाई भोज में Potel या Chabot के बनाए पकवानों में होता है; बल्कि यह बस एक स्वादिष्ट 'साधारण' खाना होता था जो आपको वहाँ उसी बेहतरीन अंदाज़ में उस दिन भी मिलता जब कोई पार्टी नहीं होती थी। Mme. Verdurin के यहाँ कलाकारों की टोली को पूरी तरह से तराशा गया था, उनका प्रदर्शन-भंडार बहुत ही चुनिंदा था; बस एक चीज़ की कमी थी—दर्शक। और अब जब लोगों का ज़ौक़ Bergotte जैसी तर्कसंगत और फ़्रांसीसी कला से हटकर, सबसे ज़्यादा, संगीत के विदेशी रूपों की तरफ़ मुड़ने लगा था, तो Mme. Verdurin—जो पेरिस में सभी विदेशी कलाकारों की एक तरह से आधिकारिक प्रतिनिधि थी—जल्द ही वहाँ नज़र आने लगी। वह शानदार Princess Yourbeletief के बगल में खड़ी होती थी—एक बूढ़ी 'परी-माँ' की तरह—जो दिखने में सख़्त पर पूरी तरह से ताक़तवर थी और रूसी नर्तकों की संरक्षक थी। इस मनमोहक 'हमले' का विरोध सिर्फ़ सबसे बेवकूफ़ आलोचकों ने ही किया; जैसा कि हम जानते हैं, इसने पेरिस में कौतूहल का एक ऐसा जुनून पैदा कर दिया जो Dreyfus मामले से पैदा हुए जुनून जितना ही तेज़ था—भले ही थोड़ा कम उग्र, पर ज़्यादा विशुद्ध रूप से कलात्मक। वहाँ भी Mme. Verdurin ने अपनी जगह सबसे आगे की कतार में बनाई—लेकिन इस बार सामाजिक तौर पर इसका नतीजा बिल्कुल अलग था। ठीक वैसे ही जैसे Assize Court में मुक़दमे के दौरान उन्हें Mme. Zola के बगल में, ठीक कटघरे के नीचे बैठे देखा गया था; वैसे ही जब इंसानों की नई पीढ़ी, रूसी बैले के प्रति अपने उत्साह में, Opera की तरफ़ उमड़ पड़ी

—अपने सिर पर सबसे नए फ़ैशन के 'एग्रेट' (पंखों वाले गहने) सजाए हुए—तो उन्हें हमेशा मंच के पास वाले एक ख़ास बक्से में Mme. Verdurin, Princess Yourbeletief के बगल में बैठी हुई नज़र आती थी। और ठीक वैसे ही, जैसे अदालतों के हंगामे के बाद, लोग शाम को Mme. के यहाँ जाते थे... Verdurin के यहाँ, Picquart या Labori से आमने-सामने मिलने के लिए—और इससे भी बढ़कर, उस 'केस' (मामले) से जुड़ी ताज़ा खबरें जानने के लिए; यह जानने के लिए कि Zurlinden, Loubet, Colonel Jouaust, या नियमों से कितनी उम्मीदें रखी जा सकती हैं—अब, Scheherazade या Prince Igor के प्रदर्शन से पैदा हुए उत्साह के बाद, जब उन्हें नींद आने का ज़्यादा मन नहीं था, तो वे Mme. Verdurin के यहाँ पहुँचे। वहाँ, Princess Yourbeletief और उनकी मेज़बान की देखरेख में, हर रात एक शानदार दावत का आयोजन होता था। इस दावत में वे नर्तक खुद शामिल होते थे—जिन्होंने रात के खाने से परहेज़ किया होता था ताकि वे ज़्यादा चुस्त-फुर्तीले रह सकें—साथ ही उनके निर्देशक, उनके डिज़ाइनर, और महान संगीतकार Igor Stravinski और Richard Strauss भी मौजूद रहते थे। यह एक छोटा-सा स्थायी समूह था, जिसके इर्द-गिर्द—ठीक वैसे ही जैसे M. और Mme. Helvétius की खाने की मेज़ के इर्द-गिर्द—पेरिस की सबसे बड़ी हस्तियाँ और विदेशी राजघराने के लोग भी इकट्ठा होने में कोई हिचक या संकोच महसूस नहीं करते थे। यहाँ तक कि समाज के वे लोग भी—जो खुद को 'कला-प्रेमी' (अच्छे ज़ौक़ वाला) होने का दावा करते थे और अलग-अलग रूसी बैले के बीच बेवजह के फ़र्क निकालते थे (जैसे कि वे Sylphides की प्रस्तुति को Scheherazade की प्रस्तुति से किसी तरह 'ज़्यादा शुद्ध' मानते थे, जिसे वे लगभग 'नीग्रो' (अश्वेत) प्रेरणा का नतीजा मानने को तैयार बैठे थे)—वे भी रंगमंच की कला में नई जान फूँकने वाले उन महान कलाकारों से आमने-सामने मिलकर मंत्रमुग्ध हो गए। इन कलाकारों ने एक ऐसी कला के क्षेत्र में—जो शायद चित्रकला (easel) की तुलना में थोड़ी ज़्यादा 'कृत्रिम' (artificial) होती है—एक ऐसी गहरी क्रांति ला दी थी, जो खुद 'प्रभाववाद' (Impressionism) जितनी ही ज़बरदस्त थी।

एम. डी चार्लस की बात पर वापस आते हुए, श्रीमती वर्दुरिन को इतनी आपत्ति नहीं होती अगर उन्होंने अपनी सूची में केवल कोम्टेस मोल और श्रीमती बोंटेम्प्स को ही शामिल किया होता,

जिन्हें उन्होंने ललित कलाओं के प्रति अपने प्रेम के बल पर ओडेट के यहाँ चुना था, और जो ड्रेफस मामले के दौरान कभी-कभी अपने पति के साथ भोजन पर आती थीं, जिन्हें श्रीमती वर्दुरिन 'उदासीन' कहती थीं, क्योंकि वह नए मुकदमे के लिए कोई कदम नहीं उठा रहे थे, लेकिन जो अत्यंत बुद्धिमान थे और हर पक्ष में संबंध बनाने के लिए उत्सुक थे, लेबोरी के साथ एक ही मेज पर भोजन करके अपनी स्वतंत्रता दिखाने में प्रसन्न थे, जिनकी बातें वह बिना एक भी शब्द बोले सुनते थे जिससे उनकी छवि खराब हो सकती थी, लेकिन सही समय पर जौरेस की वफादारी की प्रशंसा करने में कामयाब रहे, जिसे सभी पक्षों ने मान्यता दी थी। लेकिन बैरन ने इसी तरह अभिजात वर्ग की कई महिलाओं को प्रतिबंधित कर दिया था, जिनसे श्रीमती वर्दुरिन की जान-पहचान थी। किसी संगीतमय उत्सव या दान-पुण्य के लिए चंदा इकट्ठा करने के अवसर पर, वर्दुरिन ने हाल ही में कुछ लोगों का समूह बनाया था, जिनके बारे में एम. डी चार्लस चाहे जो भी सोचते हों, वे मैडम वर्दुरिन के यहाँ एक नए कुलीन समूह के गठन में, खुद से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते। मैडम वर्दुरिन वास्तव में इस पार्टी का इंतज़ार कर रही थीं, जिसमें एम. डी चार्लस अपने ही वर्ग की महिलाओं को ला रहे थे, ताकि वे अपनी नई सहेलियों से मिल सकें। उन्हें इस बात की बेसब्री से उम्मीद थी कि क्वाई कोंटी में बैरन द्वारा आमंत्रित अपने दोस्तों या रिश्तेदारों से मिलने पर उन्हें कितना आश्चर्य होगा। लेकिन उनके इस इनकार से वे निराश और क्रोधित हुईं। अब देखना यह था कि इन परिस्थितियों में वह शाम उनके लिए लाभप्रद साबित होगी या हानिप्रद। हानि इतनी गंभीर नहीं होती अगर एम. डी चार्लस के मेहमान मैडम वर्दुरिन के प्रति इतना मैत्रीपूर्ण भाव रखते कि वे भविष्य में उनके मित्र बन जाते। इस मामले में तो शरारत आधी ही हुई होती, फैशनेबल दुनिया के ये दो वर्ग, जिन्हें बैरन ने अलग रखने पर ज़ोर दिया था, बाद में एकजुट हो जाते, और समय आने पर वे स्वयं इससे अलग हो जाते। इसलिए श्रीमती वर्दुरिन बैरन के मेहमानों का कुछ भावों के साथ इंतज़ार कर रही थीं। वे जल्द ही यह जान लेंगी कि वे किस मन की स्थिति में आए हैं और उनसे कितनी आत्मीयता हासिल करने की उम्मीद कर सकती हैं। इंतज़ार करते हुए श्रीमती वर्दुरिन ने अपने साथियों से सलाह ली, लेकिन जब उन्होंने एम. डी चार्लस को ब्रिचोट और मेरे साथ कमरे में प्रवेश करते देखा, तो वे अचानक रुक गईं। हम सभी को बहुत आश्चर्य हुआ जब ब्रिचोट ने उन्हें बताया कि उनके प्रिय मित्र की गंभीर बीमारी की खबर सुनकर उन्हें कितना

दुख हुआ, तो श्रीमती वर्दुरिन ने उत्तर दिया: "सुनिए, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मुझे बिल्कुल भी दुख नहीं है। जो महसूस नहीं होता, उसे महसूस करने का दिखावा करना व्यर्थ है।" निस्संदेह उन्होंने ऊर्जा की कमी के कारण ऐसा कहा, क्योंकि वे अपनी पूरी पार्टी में उदास चेहरा दिखाने से कतरा रही थीं, गर्व के कारण, ताकि ऐसा न लगे कि वे अपने निमंत्रण रद्द न करने के लिए बहाने ढूंढ रही हैं, आत्मसम्मान और सामाजिक शिष्टाचार के कारण भी, क्योंकि उनके द्वारा प्रदर्शित शोक का अभाव अधिक सम्मानजनक होता यदि इसे राजकुमारी के प्रति अचानक प्रकट हुई एक विशेष घृणा के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता, न कि एक सार्वभौमिक असंवेदनशीलता के लिए, और क्योंकि उनके श्रोता उनकी उस ईमानदारी से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे जिस पर कोई संदेह नहीं हो सकता था। यदि श्रीमती वर्दुरिन राजकुमारी की मृत्यु से वास्तव में अप्रभावित न होतीं, तो क्या वे पार्टी देने के लिए खुद को किसी कहीं अधिक गंभीर गलती का दोषी ठहराकर अपना बचाव करतीं? इसके अलावा, यह भूलना आसान था कि श्रीमती वर्दुरिन ने अपने शोक को स्वीकार करते हुए यह भी माना होगा कि उनमें किसी सुख को त्यागने की मानसिक शक्ति नहीं थी; जबकि मित्र की उदासीनता मेज़बान की तुच्छता की तुलना में कहीं अधिक चौंकाने वाली, अधिक अनैतिक, लेकिन कम अपमानजनक और इसलिए स्वीकार करना आसान थी। अपराध के मामलों में, जहाँ अपराधी खतरे में होता है, उसका भौतिक हित ही उसे स्वीकारोक्ति के लिए प्रेरित करता है। जहाँ गलती के लिए कोई दंड नहीं होता, वहाँ आत्मसम्मान ही कारण होता है। क्या यह इसलिए था कि श्रीमती वर्दुरिन ने, शायद इस बहाने को उन लोगों का घिसा-पिटा बहाना समझते हुए, जो किसी अपने की मृत्यु के कारण अपने सुखमय जीवन में बाधा न आने देने के लिए यह कहते फिरते हैं कि उन्हें अपने दिल में बसे दुख के बाहरी लक्षण दिखाना व्यर्थ लगता है, उन बुद्धिमान अपराधियों की नकल करना बेहतर समझा जो निर्दोषता के सामान्य सिद्धांतों से घृणा करते हैं और जिनका बचाव—एक आंशिक स्वीकारोक्ति, भले ही वे इसे न जानते हों —यह कहने में निहित है कि उन्हें वह करने में कोई हानि नहीं दिखती जिसका उन पर आरोप लगाया गया है, हालाँकि, जैसा कि होता है, उन्हें ऐसा करने का कोई अवसर नहीं मिला है; या फिर, अपने आचरण को समझाने के लिए उदासीनता का सिद्धांत अपनाने के बाद, जब वह अपनी अस्वाभाविक भावनाओं के उतार-चढ़ाव में उतरीं, तो उन्हें एहसास हुआ कि ऐसी

भावना महसूस करना बिल्कुल मौलिक था, कि उन्होंने अपने लक्षणों का निदान करने में असाधारण दूरदर्शिता दिखाई और उन्हें घोषित करने में एक विशेष साहस भी। खैर, श्रीमती वर्दुरिन एक विरोधाभासी मनोवैज्ञानिक और साहसी नाटककार की तरह, एक विशेष प्रकार के गर्व और संतुष्टि के साथ, अपने शोक की कमी पर लगातार विचार करती रहीं। "हाँ, यह बहुत हास्यास्पद है," उन्होंने कहा, "मुझे तो इसका ज़रा भी एहसास नहीं हुआ। बेशक, मेरा यह मतलब नहीं है कि मैं नहीं चाहती कि वह अभी भी जीवित होती, वह बुरी इंसान नहीं थीं।" "हाँ, वह थीं," श्रीमती वर्दुरिन ने कहा। "आह! वह उन्हें पसंद नहीं करते क्योंकि उन्हें लगता था कि उन्हें यहाँ रखकर मैं खुद को नुकसान पहुँचा रही हूँ, लेकिन वह इस मामले में बिल्कुल अड़ियल हैं।" "कृपा करके यह स्वीकार करो," एम. वर्दुरिन ने कहा, "कि मुझे कभी भी तुम्हारा उसके साथ रहना पसंद नहीं था। मैंने हमेशा तुमसे कहा था कि उसकी बदनामी है।" "लेकिन मैंने उसके खिलाफ कभी कुछ नहीं सुना," सैनीएट ने विरोध किया। "क्या!" श्रीमती वर्दुरिन ने हैरानी से कहा, "सबको पता था; बदनामी शब्द काफी नहीं है, यह तो शर्मनाक, भयानक था। नहीं, इसका उससे कोई लेना-देना नहीं है। मैं खुद भी नहीं बता सकती थी कि मुझे कैसा महसूस हो रहा था; मुझे उससे नफरत नहीं थी, लेकिन मुझे उसमें इतनी कम दिलचस्पी थी कि जब हमें पता चला कि वह गंभीर रूप से बीमार है, तो मेरे पति खुद काफी हैरान हुए और बोले: 'कोई भी सोचेगा कि तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।' आज शाम तो उन्होंने पार्टी टालने का प्रस्ताव रखा, लेकिन मैंने पार्टी करने पर जोर दिया, क्योंकि मुझे लगता था कि जिस दुख को मैं महसूस नहीं करती, उसे दिखाना एक तमाशा होगा।" उन्होंने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उन्हें लगा कि इसमें 'स्वतंत्र रंगमंच' की एक अजीब सी झलक है, और साथ ही यह बेहद सुविधाजनक भी था; क्योंकि स्वीकार्य असंवेदनशीलता या अनैतिकता जीवन को उतना ही सरल बना देती है जितना सहज सद्गुण; यह निंदनीय कार्यों को, जिनके लिए अब किसी बहाने की आवश्यकता नहीं होती, ईमानदारी द्वारा थोपे गए कर्तव्य में बदल देती है। और श्रद्धालु श्रीमती वर्दुरिन के भाषण को प्रशंसा और आशंका के मिश्रण के साथ सुन रहे थे, जैसा कि कुछ क्रूरतापूर्ण यथार्थवादी नाटक, जो गहन अवलोकन दिखाते थे, एक समय में पैदा करते थे, और जबकि वे अपनी प्रिय स्वामिनी को उनकी सत्यनिष्ठा और स्वतंत्रता का एक नया पहलू प्रदर्शित करते हुए देखकर आश्चर्यचकित थे, उनमें से एक से अधिक, हालांकि उन्होंने

खुद को आश्वस्त किया कि अंततः यह वही बात नहीं होगी, अपनी मृत्यु के बारे में सोचा, और खुद से पूछा कि जिस दिन मृत्यु आएगी, क्या वे पर्दे गिरा देंगे या क्राई कोंटी में एक पार्टी देंगे। "मुझे बहुत खुशी है कि मेरे मेहमानों के लिए पार्टी स्थगित नहीं की गई है," एम. डी चार्लस ने कहा, यह महसूस किए बिना कि इस तरह खुद को व्यक्त करके वह श्रीमती वर्दुरिन को नाराज कर रहे थे। इस बीच मैं स्तब्ध रह गया, जैसा कि श्रीमती के पास आने वाला हर कोई था। उस शाम, वेरदुरिन को गैंडे की दुर्गंध से बहुत अप्रिय गंध आई। इसका कारण कुछ इस प्रकार था। हम जानते हैं कि श्रीमती वेरदुरिन अपनी कलात्मक भावनाओं को कभी नैतिक रूप से नहीं, बल्कि हमेशा शारीरिक रूप से व्यक्त करती थीं, ताकि वे अधिक स्वाभाविक और गहन प्रतीत हों। इसलिए, यदि कोई उनसे उनके पसंदीदा विंटेइल के संगीत के बारे में बात करता, तो वे अविचलित रहतीं, मानो उन्हें उससे कोई भावना उत्पन्न होने की उम्मीद ही न हो। लेकिन कुछ मिनटों तक एकटक, लगभग खोई हुई निगाहों से देखने के बाद, तीखे, सीधे-सादे, लगभग असभ्य लहजे में (जैसे मानो वह आपसे कह रही हो: "मुझे आपके धूम्रपान से ज़रा भी आपत्ति नहीं है, यह कालीन की वजह से है; यह बहुत बढ़िया है (वैसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता), लेकिन यह बहुत ज्वलनशील है, मुझे आग से बहुत डर लगता है, और मैं नहीं चाहूंगी कि आप सब जल जाएं क्योंकि किसी ने लापरवाही से इस पर सिगरेट का टुकड़ा गिरा दिया था"), उसने जवाब दिया: "मुझे विंटेउइल में कोई कमी नहीं दिखती; मेरी राय में, वह इस युग के सबसे महान संगीतकार हैं, बस मैं इस तरह का संगीत बिना रोए कभी नहीं सुन सकती" (उसने 'रोना' शब्द में कोई करुणा नहीं दिखाई, वह 'सोना' के लिए भी ठीक यही लहजा इस्तेमाल करती; कुछ चुगलखोर तो यह भी कहते थे कि बाद वाला शब्द ज़्यादा उपयुक्त होता, हालांकि कोई भी निश्चित नहीं हो सकता, क्योंकि वह अपना चेहरा हाथों में छिपाकर संगीत सुनती थी, और खर्राटे जैसी आवाज़ें आती थीं) (शायद ये सिसकियाँ ही थीं)। "मुझे रोने में कोई आपत्ति नहीं है, बिल्कुल भी नहीं; बस उसके बाद मुझे बहुत भयानक सर्दी लग जाती है। इससे मेरी नाक बंद हो जाती है, और अगले दिन मैं बिलकुल बेजान दिखती हूँ। मुझे कई दिनों तक साँस लेनी पड़ती है, तब जाकर मैं कुछ बोल पाती हूँ। हालाँकि, कॉटार्ड के एक शिष्य, जो बहुत ही मिलनसार व्यक्ति हैं, मेरा इलाज कर रहे हैं। उनका एक अनोखा नियम है: 'इलाज से बेहतर रोकथाम है।' और संगीत शुरू होने से पहले वे मेरी नाक पर तेल

लगा देते हैं। यह बहुत ही अद्भुत है। मैं उन सभी माताओं की तरह रो सकती हूँ जिन्होंने कभी अपना बच्चा खोया हो, मुझे ज़रा भी सर्दी नहीं लगती। कभी-कभी थोड़ी सी कंजंक्टिवाइटिस हो जाती है, बस इतना ही। यह बिल्कुल कारगर है। वरना मैं विंटेइल का संगीत कभी नहीं सुन पाती। मैं बस एक ब्रोंकाइटिस से दूसरे ब्रोंकाइटिस की ओर बढ़ रही थी।" मैं मैडम विंटेइल का ज़िक्र करने से खुद को रोक नहीं पाई। "क्या संगीतकार की बेटी यहाँ नहीं आ रही हैं," मैंने मैडम वर्दुरिन से पूछा, "अपनी किसी सहेली के साथ?" “नहीं, मुझे अभी-अभी एक टेलीग्राम मिला है,” श्रीमती वर्दुरिन ने टालमटोल करते हुए कहा, “उन्हें देश में ही रुकना पड़ा है।” मुझे क्षण भर के लिए आशा हुई कि शायद उनके देश छोड़ने का कोई सवाल ही नहीं था और श्रीमती वर्दुरिन ने संगीतकार के इन प्रतिनिधियों की उपस्थिति की घोषणा केवल कलाकारों और दर्शकों पर अच्छा प्रभाव डालने के लिए की थी। “क्या, वे आज दोपहर के पूर्वाभ्यास में नहीं आए थे?” बैरन ने बनावटी जिज्ञासा से पूछा, जो यह जताना चाह रहे थे कि उन्होंने चार्ली को नहीं देखा है। चार्ली मुझसे मिलने आए। मैंने उनके कान में श्रीमती विंटेउइल के बारे में एक सवाल फुसफुसाया; मुझे लगा कि उन्हें उनके बारे में बहुत कम या कुछ भी नहीं पता था। मैंने उन्हें इशारा किया कि वे अपनी आवाज़ न सुनाएँ और कहा कि हम इस विषय पर बाद में चर्चा करेंगे। उन्होंने झुककर अभिवादन किया और मुझे आश्वासन दिया कि वे मेरी सेवा में पूरी तरह से तत्पर रहेंगे। मैंने देखा कि वे पहले की तुलना में कहीं अधिक विनम्र और सम्मानजनक थे। मैंने एम. डी चार्लस से उनके बारे में बड़ी प्रशंसा की—शायद वे मेरी शंकाओं को दूर करने में मेरी मदद कर सकें—जिस पर उन्होंने उत्तर दिया: "वे तो बस स्वाभाविक व्यवहार करते हैं, अगर वे अच्छे शिष्टाचार नहीं सीखते तो सभ्य लोगों के बीच रहने का कोई अर्थ नहीं है।" एम. डी चार्लस के अनुसार, ये फ्रांस के पुराने शिष्टाचार थे, जिन पर ब्रिटिश रूखेपन का कोई प्रभाव नहीं था। इस प्रकार जब चार्ली प्रांतों या विदेश की यात्रा से लौटकर अपने यात्रा वस्त्रों में बैरन के घर पहुँचता, तो बैरन, यदि वहाँ ज़्यादा लोग मौजूद न होते, तो बिना किसी औपचारिकता के उसके दोनों गालों पर चुंबन करते। शायद थोड़ा इसलिए ताकि स्नेह के इस दिखावटी प्रदर्शन से किसी को यह न लगे कि यह कोई अपराध है, शायद इसलिए कि वे स्वयं को इस आनंद से वंचित नहीं कर सकते थे, लेकिन निस्संदेह, साहित्यिक दृष्टि से भी, क्योंकि वे फ्रांस के पारंपरिक शिष्टाचारों को बनाए रखते और दर्शाते

थे। ठीक वैसे ही जैसे वे म्यूनिख या आधुनिक शैली के फर्नीचर का मुकाबला अपने कमरों में अपनी परदादी से मिली पुरानी कुर्सियों से करते थे, वैसे ही वे अठारहवीं सदी के एक स्नेही पिता के प्रेम से ब्रिटिश रूढ़िवादिता का मुकाबला करते थे, जो अपने बेटे को एक बार फिर देखकर अपनी खुशी नहीं छिपा पाते थे। क्या इस पितृ स्नेह में वास्तव में अनाचार का कोई अंश था? यह अधिक संभावना है कि एम. डी चार्लस जिस तरह से अपनी बुरी इच्छाओं को शांत करते थे, जिसके बारे में हमें आगे चलकर कुछ जानकारी मिलेगी, वह उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद से अधूरी रह गई स्नेह की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था; तथ्य यह है कि दूसरी शादी के बारे में एक से अधिक बार सोचने के बाद, अब वे एक उत्तराधिकारी को गोद लेने की उन्मादी इच्छा से ग्रस्त थे। लोग कहते थे कि वे मोरेल को गोद लेने वाले हैं, और इसमें कुछ भी असामान्य नहीं था। वह विक्षिप्त व्यक्ति जो महिलाओं से प्रेम करने वाले पुरुषों के लिए लिखे गए साहित्य के अलावा अपनी वासना को संतुष्ट करने में असमर्थ रहा है, जो मुसेल की 'नुइट्स' पढ़ते समय पुरुषों के बारे में सोचता था, फिर भी एक सामान्य व्यक्ति की सभी सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की आवश्यकता महसूस करता है, एक प्रेमिका रखने की, जैसे ओपेरा का पुराना नियमित दर्शक बैले-लड़कियों को रखता है, बसने की, शादी करने या स्थायी संबंध बनाने की, पिता बनने की।

एम. डी चार्लस ने मोरेल को यह बताने के बहाने एक तरफ ले गए कि क्या बजाया जाने वाला है, लेकिन सबसे बढ़कर उन्हें इस बात से बहुत सुकून मिला कि चार्ली ने उन्हें अपना संगीत दिखाया और इस तरह सार्वजनिक रूप से उनकी गुप्त घनिष्ठता का प्रदर्शन किया। इसी बीच मुझे भी एक अजीब सा आकर्षण महसूस हुआ। हालांकि उस छोटे से समूह में लड़कियां कम थीं, फिर भी बड़ी शामों में लड़कियों को भरपूर आमंत्रित किया जाता था। कई लड़कियां मौजूद थीं, और उनमें से कुछ बहुत सुंदर थीं, जिन्हें मैं जानता था। वे कमरे के उस पार से मुझे मुस्कुराकर अभिवादन कर रही थीं। इस प्रकार हर पल किसी न किसी लड़की की मनमोहक मुस्कान से वातावरण सुशोभित रहता था। यही शाम की पार्टियों का एक विविध, सामयिक आभूषण है, जैसा कि दिन के समय होता है। हम किसी माहौल को इसलिए याद रखते हैं क्योंकि उसमें लड़कियां मुस्कुरा रही होती हैं।

अगर कई लोगों ने इस पार्टी में एम. डी चार्लस और कई महत्वपूर्ण सज्जनों के बीच हुई दबी-दबी बातों को सुना होता, तो वे शायद बहुत हैरान रह जाते। ये सज्जन दो ड्यूक, एक प्रतिष्ठित जनरल, एक महान लेखक, एक महान चिकित्सक और एक महान वकील थे। और वो बातें थीं: "वैसे, क्या आपने उस नौकर पर ध्यान दिया? मेरा मतलब है, उस छोटे से आदमी पर जिसे गाड़ी में बिठाते हैं? हमारे चचेरे भाई गुएरमांटेस के यहाँ, आप किसी को नहीं जानते?" "अभी तो नहीं।" "वैसे, दरवाजे के बाहर, जहाँ गाड़ियाँ रुकती हैं, वहाँ एक सुंदर सी छोटी लड़की, पैंट पहने, खड़ी रहती थी, जो मुझे बहुत आकर्षक लगती थी। उसने मेरी गाड़ी को बड़े ही प्यारे अंदाज़ में बुलाया, मैं उससे और देर तक बात करना चाहता था।" "हाँ, लेकिन मुझे लगता है कि वो इसके बिल्कुल खिलाफ है, और वैसे भी, वो नखरे दिखाती है। आप सीधे मुद्दे पर आना चाहते हैं, आपको वो बिल्कुल पसंद नहीं आएगी। खैर, मुझे पता है कि कुछ नहीं हो सकता, मेरे एक दोस्त ने कोशिश की थी।" "अफ़सोस की बात है, मुझे उसका चेहरा बहुत अच्छा लगा था, और बाल भी शानदार थे।" "सच में, इतना ज़्यादा? मुझे लगता है, अगर आपने उसे थोड़ा और देखा होता, तो आप निराश हो जाते। नहीं, भोजन कक्ष में, केवल दो महीने पहले आपने एक अद्भुत व्यक्ति को देखा होता, एक शानदार आदमी, छह फुट छह इंच लंबा, एकदम साफ़ त्वचा वाला, और उसे यह पसंद भी था। लेकिन वह पोलैंड चला गया है।" "आह, यह तो काफ़ी दूर है।" "क्या पता, वह वापस आ जाए। हर कोई कहीं न कहीं फिर मिलता है।" कोई भी बड़ा सामाजिक समारोह, अगर हम उसका एक हिस्सा लें और गहराई से देखें, तो उन पार्टियों जैसा लगता है जिनमें डॉक्टर अपने मरीज़ों को बुलाते हैं, जो बड़ी समझदारी भरी बातें करते हैं, उनका व्यवहार उत्तम होता है, और अगर वे हमारे कान में फुसफुसाते हुए, किसी गुज़रते हुए बुज़ुर्ग सज्जन की ओर इशारा करते हुए यह न कहें कि "यह जोन ऑफ आर्क है", तो वे कभी यह नहीं दिखाएंगे कि वे पागल हैं।

"मुझे लगता है कि उन्हें ज्ञान देना हमारा कर्तव्य है," श्रीमती वर्दुरिन ने ब्रिचोट से कहा। "ऐसा नहीं है कि मुझे चार्लस से कोई शिकायत है, बिलकुल नहीं। वह एक मिलनसार व्यक्ति है और जहाँ तक उसकी प्रतिष्ठा की बात है, मैं यह कहने में संकोच नहीं करती कि वह ऐसी नहीं है जिससे मुझे कोई नुकसान हो! जहाँ तक मेरा सवाल है, हमारे छोटे से समूह में, हमारी बातचीत में, क्योंकि मुझे इश्कबाज़ों से नफ़रत है, वे पुरुष जो किसी कोने में बैठी महिला से

दिलचस्प विषयों पर चर्चा करने के बजाय बकवास करते हैं, मुझे चार्लस के साथ कभी भी उस तरह का डर नहीं रहा जैसा स्वान, एल्स्टिर और ऐसे ही कई लोगों के साथ मेरे साथ हुआ था। उसके साथ मैं पूरी तरह सुरक्षित थी, वह मेरे डिनर पर आता था, दुनिया की सारी औरतें वहाँ मौजूद हो सकती थीं, आप निश्चिंत रह सकते थे कि आम बातचीत इश्कबाज़ी और फुसफुसाहट से बाधित नहीं होगी। चार्लस अपनी ही श्रेणी का है, चिंता की कोई बात नहीं, वह भले ही पुजारी हो। बस, उसे घर आने वाले नौजवानों को आदेश देने की इजाज़त नहीं दी जानी चाहिए जो हमारे छोटे से समूह में उपद्रव करते हैं, वरना वह महिलाओं के पीछे भागने वाले आदमी से भी बदतर होगा।" और श्रीमती... वेरदुरिन ने चार्लीवाद के प्रति अपनी उदारता का इस प्रकार खुलकर इज़हार किया। हर चर्च की शक्ति की तरह, वह मानवीय कमज़ोरियों को किसी भी ऐसी चीज़ से कम खतरनाक मानती थी जो सत्ता के सिद्धांत को कमज़ोर कर सकती हो, रूढ़िवादिता को भंग कर सकती हो या उसके छोटे से चर्च के प्राचीन सिद्धांतों को बदल सकती हो। "अगर वह ऐसा करता है, तो मैं अपने दाँत दिखाऊँगी। आप उस सज्जन से क्या कहेंगे जिसने चार्ली को रिहर्सल में आने से रोकने की कोशिश की क्योंकि उसे खुद आमंत्रित नहीं किया गया था? इसलिए उसे सबक सिखाया जाएगा, मुझे उम्मीद है कि वह इससे लाभ उठाएगा, अन्यथा वह अपनी टोपी लेकर जा सकता है। वह लड़के को ताला लगाकर रखता है, मेरी कसम, वह ऐसा करता है।" और, ठीक उन्हीं भावों का प्रयोग करते हुए जो लगभग कोई भी अन्य व्यक्ति प्रयोग कर सकता था, क्योंकि कुछ ऐसे भाव हैं जो आम प्रचलन में नहीं हैं, लेकिन कोई विशेष विषय, कोई विशेष परिस्थिति वक्ता के मन में लगभग अनिवार्य रूप से आ जाते हैं, जो यह सोचता है कि वह अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर रहा है जबकि वह केवल सार्वभौमिक पाठ को यंत्रवत दोहरा रहा होता है, उसने आगे कहा: "आजकल मोरेल को उस बड़े बदमाश के बिना देखना असंभव है जो उसके चारों ओर सशस्त्र अंगरक्षकों की तरह मंडराता रहता है।" श्री वर्दुरिन ने चार्ली को कुछ समझाने के बहाने, उससे एक सवाल पूछने के लिए उसे एक मिनट के लिए कमरे से बाहर ले जाने का प्रस्ताव रखा। श्रीमती वर्दुरिन को डर था कि इससे चार्ली नाराज़ हो सकता है और परिणामस्वरूप वह खराब प्रदर्शन करेगा। बेहतर होगा कि इस प्रदर्शन को अगले प्रदर्शन के बाद तक के लिए टाल दिया जाए। शायद किसी और अवसर तक के लिए भी। क्योंकि श्रीमती

वर्दुरिन को भले ही यह जानकर कितना भी अच्छा लगता कि उनके पति अगले कमरे में चार्ली को समझा रहे हैं, उन्हें डर था कि अगर उनका प्रयास विफल रहा, तो चार्ली अपना आपा खो देगा और सोलह तारीख को वापस नहीं आएगा।

उस शाम एम. डी चार्लस का सारा मज़ा किरकिरा करने वाली बात उन लोगों का बदतमीज़ी भरा व्यवहार था, जिन्हें उन्होंने आमंत्रित किया था और जो अब आने लगे थे। एम. डी चार्लस के प्रति मित्रता और साथ ही इस नए परिवेश को जानने की जिज्ञासा के कारण वहाँ आई प्रत्येक डचेस सीधे बैरन के पास गई, मानो वही पार्टी दे रहे हों, और वर्दुरिन परिवार से एक गज की दूरी पर, जो हर शब्द सुन सकते थे, बोलीं: "मुझे दिखाओ कि माँ वर्दुरिन कौन हैं; क्या आपको लगता है कि मुझे सच में उनसे बात करने की ज़रूरत है? कम से कम मुझे उम्मीद है कि वह कल मेरा नाम अखबार में नहीं डालेंगी, वरना कोई मुझसे फिर कभी बात नहीं करेगा। क्या! वह सफेद बालों वाली औरत, लेकिन वह देखने में काफी सभ्य लगती है।" मैडम के बारे में कुछ सुनकर... हालांकि, विंटेइल कमरे में मौजूद नहीं थे, उनमें से एक से अधिक ने कहा: "आह! सोनाटा गाने वाले की बेटी? मुझे उसे दिखाओ" और, प्रत्येक ने उसके कुछ दोस्तों को ढूंढकर, अपना एक समूह बनाया और व्यंग्यात्मक जिज्ञासा से चमकते हुए, वफादारों के आगमन को देखा, जो अधिक से अधिक उस व्यक्ति के बालों के अजीबोगरीब तरीके पर उंगली उठा सकते थे, जो कुछ वर्षों बाद इसे उच्च समाज में फैशन बनाने वाली थी, और संक्षेप में, उन्हें इस बात का अफसोस था कि उन्हें यह घर उन घरों से उतना अलग नहीं मिला जितना उन्होंने उम्मीद की थी, समाज के उन लोगों की निराशा को महसूस करते हुए जो बोइट आ ब्रुआंट में इस उम्मीद में गए थे कि गायिका उनका मजाक उड़ाएगी, लेकिन आगमन पर उनका स्वागत अपेक्षित अभिवादन के बजाय एक विनम्र प्रणाम से किया गया।

अरे! उस चेहरे को देखो, उस चेहरे को देखो।

अरे! उसके चेहरे को तो देखो!

बालबेक में एम. डी चार्लस ने मुझे श्रीमती डी वोगौबर्ट की तीखी आलोचना की थी, जिन्होंने अपनी तीव्र बुद्धि के बावजूद, अपने पति की अप्रत्याशित समृद्धि के बाद, उन्हें अपूरणीय बदनामी दिलाई थी। जिन शासकों के दरबार में एम. डी वोगौबर्ट को नियुक्त किया गया था, राजा थियोडोसियस और रानी यूडोक्सिया, पेरिस लौट आए थे, लेकिन इस बार एक लंबी यात्रा

के लिए। उनके सम्मान में प्रतिदिन उत्सव आयोजित किए गए थे, जिसके दौरान रानी, श्रीमती डी वोगौबर्ट के साथ अत्यंत मैत्रीपूर्ण संबंध रखती थीं, जिनसे वह पिछले दस वर्षों से अपनी राजधानी में मिलती रही थीं, और गणतंत्र के राष्ट्रपति की पत्नी या उनके मंत्रियों की पत्नियों को न जानते हुए, उन्होंने इन महिलाओं की उपेक्षा की और राजदूत से पूरी तरह से दूरी बनाए रखी। यह महिला, अपनी स्थिति को अजेय मानते हुए—एम. डी वोगौबर्ट राजा थियोडोसियस और फ्रांस के बीच गठबंधन के लिए जिम्मेदार थे। रानी ने अपने समाज के प्रति जो प्राथमिकता दिखाई, उससे उन्हें गर्व और संतुष्टि तो मिली, लेकिन उन पर मंडरा रहे खतरे के प्रति कोई चिंता नहीं हुई। कुछ महीनों बाद, अति आत्मविश्वास से भरे दंपति द्वारा असंभव समझी गई घटना के रूप में, एम. डी वोगौबर्ट को सेवा से निर्दयतापूर्वक बर्खास्त कर दिया गया। एम. डी चार्लस ने अपने आजीवन मित्र के पतन पर टिप्पणी करते हुए 'क्रॉलर' में आश्चर्य व्यक्त किया कि ऐसी परिस्थितियों में एक बुद्धिमान महिला ने राजा और रानी पर अपने पूरे प्रभाव का इस्तेमाल क्यों नहीं किया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उनका कोई प्रभाव न दिखे, और वे राष्ट्रपति और उनके मंत्रियों की पत्नियों के प्रति ऐसा शिष्टाचार प्रदर्शित करें जिससे वे महिलाएं और भी प्रसन्न हों, यानी वे संतुष्टि के कारण वोगौबर्ट दंपति के प्रति अधिक कृतज्ञ हों, क्योंकि वे उस शिष्टाचार को स्वाभाविक मानतीं, न कि उनके द्वारा निर्देशित। लेकिन जो व्यक्ति दूसरों की गलतियों को देख सकता है, वह परिस्थितियों से उत्तेजित होकर स्वयं भी उन्हीं गलतियों का शिकार हो सकता है। और एम. डी चार्लस, जब उनके मेहमान उन्हें बधाई देने और धन्यवाद देने के लिए धक्का-मुक्की करते हुए उनकी ओर बढ़ रहे थे, मानो वे घर के मालिक हों, उन्होंने कभी भी उनसे श्रीमती वर्दुरिन से कुछ शब्द कहने के लिए नहीं कहा। केवल नेपल्स की रानी, जिनके रक्त में वही कुलीन रक्त जीवित था जो उनकी बहनों महारानी एलिजाबेथ और डचेस डी'एलेनकॉन की रगों में बहता था, ने श्रीमती वर्दुरिन से इस प्रकार बात की मानो वे संगीत और एम. डी चार्लस के लिए नहीं बल्कि उनसे मिलने की खुशी के लिए आई हों। उन्होंने अपनी मेज़बान से लगातार सुंदर-सुंदर बातें कीं, उन्हें यह बताना बंद नहीं किया कि वे कब से उनसे मिलना चाहती थीं, घर के प्रति अपनी प्रशंसा व्यक्त की और उनसे हर विषय पर इस प्रकार चर्चा की मानो वे किसी से मिलने आई हों। उन्होंने कहा कि वह अपनी भतीजी एलिज़ाबेथ को लाना चाहती थीं (वही भतीजी जिसकी कुछ समय

बाद बेल्जियम के राजकुमार अल्बर्ट से शादी होने वाली थी), जिसे बहुत दुख होता। जब उन्होंने संगीतकारों को मंच पर आते देखा तो वह चुप हो गईं और पूछा कि उनमें से मोरेल कौन है। उन्हें शायद ही इस बात का भ्रम रहा होगा कि एम. डी चार्लस क्यों चाहते थे कि युवा प्रतिभाशाली संगीतकार को इतनी प्रसिद्धि मिले। लेकिन एक ऐसी शासक की आदरणीय बुद्धिमत्ता, जिसकी रगों में इतिहास की सबसे महान जातियों में से एक, अनुभव, संशय और गौरव से समृद्ध जाति का रक्त बहता था, ने उन्हें अपने प्रिय लोगों, जैसे कि उनके चचेरे भाई चार्लस (जिनकी माँ, उनकी ही तरह, 'बवेरिया की डचेस' थीं) की अपरिहार्य कमियों को केवल दुर्भाग्य के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया, जिसने उनके लिए खुद से मिलने वाले समर्थन को और भी मूल्यवान बना दिया और परिणामस्वरूप उन्हें वह समर्थन प्रदान करना और भी सुखद लगा। वह जानती थी कि इन परिस्थितियों में उसके आने की तकलीफ देखकर एम. डी चार्लस दुगना प्रभावित होंगे। दरअसल, जैसा कि उसने बहुत पहले ही अपनी बहादुरी साबित कर दी थी, यह वीर महिला, जो एक सैनिक-रानी थी और जिसने खुद गैटा की प्राचीर से अपनी बंदूक चलाई थी, हमेशा कमजोर पक्ष का वीरतापूर्वक साथ देने के लिए तैयार रहती थी, श्रीमती वर्दुरिन को अकेला और बेसहारा देखकर, और इस बात से अनभिज्ञ होकर कि उसे रानी को नहीं छोड़ना चाहिए, उसने यह जताने की कोशिश की कि उसके लिए, नेपल्स की रानी, जो इस समारोह का केंद्र थी, वह आकर्षण का केंद्र श्रीमती वर्दुरिन ही थीं, जिनके कारण वह यहाँ आई थीं। उसने खेद व्यक्त किया कि वह अंत तक नहीं रुक पाएगी, क्योंकि वह, हालांकि वह कहीं नहीं जाती थी, फिर भी दूसरे समारोह में चली जाती थी, और विनती की कि जब उसे जाना पड़े तो उसके लिए किसी भी तरह का हंगामा न किया जाए, जिससे श्रीमती वर्दुरिन उन सम्मानों से वंचित न हो जाएं, जिनके बारे में उन्हें पता भी नहीं था कि उन्हें उन्हें देना चाहिए।

हालांकि, एम. डी चार्लस के साथ न्याय करते हुए यह कहना उचित होगा कि, यदि उन्होंने श्रीमती वर्दुरिन को पूरी तरह से भुला दिया और अपने आमंत्रित 'अपने ही दायरे' के लोगों द्वारा उन्हें शर्मनाक हद तक नजरअंदाज होने दिया, तो दूसरी ओर, उन्हें यह भी एहसास था कि उन्हें 'सिम्फोनिक वादन' के दौरान इन लोगों को उस तरह का दुर्व्यवहार प्रदर्शित करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए, जैसा वे मालकिन के प्रति दिखा रहे थे। मोरेल पहले ही मंच पर चढ़

चुके थे, संगीतकार इकट्ठा हो रहे थे, और अभी भी बातचीत सुनाई दे रही थी, हंसी की तो बात ही छोड़िए, ऐसे भाषण जैसे "ऐसा लगता है, इसे समझने के लिए दीक्षा लेनी पड़ती है।" तुरंत ही एम. डी चार्लस, सीधे खड़े हो गए, मानो उन्होंने उस शरीर से अलग शरीर में प्रवेश कर लिया हो जिसे मैंने एक घंटे पहले देखा था, और श्रीमती वर्दुरिन की ओर रेंगने लगे। वर्दुरिन के द्वार पर एक भविष्यवाणीय भाव प्रकट हुआ और उसने सभा को ऐसी गंभीरता से देखा जिससे संकेत मिलता था कि यह हँसी का समय नहीं है। इसके बाद, सार्वजनिक रूप से फटकार खाई कई महिलाओं के गालों पर तुरंत लाली छा गई, मानो कोई स्कूली छात्रा अपनी शिक्षिका द्वारा पूरी कक्षा के सामने डांटे जाने पर लाल हो जाती है। मेरे विचार से, एम. डी चार्लस का रवैया, यद्यपि महान था, फिर भी कुछ हद तक हास्यास्पद था; क्योंकि एक क्षण में उन्होंने अपने मेहमानों को तीखी निगाहों से घूरा, दूसरे क्षण में, उन्हें धार्मिक मौन का पाठ पढ़ाने के लिए, हर सांसारिक विचार से विरक्ति का संकेत देने के लिए, उन्होंने अपने सफेद दस्ताने पहने हाथों को अपने माथे तक उठाते हुए, गंभीरता का एक आदर्श रूप धारण किया (जिसका उन्हें पालन करना चाहिए), जो लगभग परमानंद की स्थिति में था, और देर से आने वाले उन असभ्य लोगों के अभिवादन को अनसुना कर दिया जो यह नहीं समझ पाए कि अब उच्च कला का समय है। वे सभी सम्मोहित हो गए थे; किसी ने भी आवाज निकालने या कुर्सी हिलाने की हिम्मत नहीं की; पलामेडे की प्रतिष्ठा के कारण संगीत के प्रति सम्मान उस भीड़ में तुरंत पैदा हो गया था जो जितनी विशिष्ट थी उतनी ही असभ्य भी थी।

जब मैंने छोटे से मंच पर न केवल मोरेल और एक पियानोवादक को, बल्कि अन्य वाद्य यंत्रों पर भी वादकों को देखा, तो मुझे लगा कि कार्यक्रम की शुरुआत विंटेइल के अलावा अन्य संगीतकारों की रचनाओं से होगी। क्योंकि मुझे लगा था कि उनकी एकमात्र रचना जो मौजूद है, वह पियानो और वायलिन के लिए उनका सोनाटा है।

श्रीमती वर्दुरिन एक अलग स्थान पर बैठी थीं, उनके पीले, हल्के गुलाबी माथे के दोनों गोलार्ध भव्य रूप से घुमावदार थे, उनके बाल पीछे की ओर बंधे हुए थे, आंशिक रूप से अठारहवीं सदी के चित्र की नकल में, आंशिक रूप से बुखार से पीड़ित रोगी की शीतलता की इच्छा से, जिसे अपनी स्थिति प्रकट करने की अनुमति नहीं है, एकांत में, संगीत अनुष्ठानों की अध्यक्षता करने वाली एक देवी, वैगनरवाद और सिरदर्द की संरक्षक संत, एक प्रकार की लगभग दुखद

नॉर्न, इन सभी उबाऊ लोगों के बीच प्रतिभा के जादू से प्रकट हुई, जिनकी उपस्थिति में वह संगीत की एक रचना को सुनकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने से सामान्य से अधिक घृणा करती थीं, जिसे वह उनसे बेहतर जानती थीं। संगीत कार्यक्रम शुरू हुआ, मुझे नहीं पता था कि वे क्या बजा रहे थे, मैंने खुद को एक अजीब जगह पर पाया। मैं इसे कहाँ ढूँढूँ? मैं किस संगीतकार के देश में आ गई थी? मुझे जानकर खुशी होती, और चूंकि मेरे आस-पास कोई ऐसा नहीं था जिससे मैं सवाल कर सकूँ, तो मैं उन अरेबियन नाइट्स के किरदारों में से एक बनना चाहता, जिन्हें मैं बार-बार पढ़ता था और जिनमें अनिश्चितता के क्षणों में एक जिन्न या एक बेहद खूबसूरत युवती प्रकट होती थी, जो बाकी सभी को दिखाई नहीं देती थी, सिवाय उस शर्मिंदा नायक के जिसे वह ठीक वही बताती थी जो वह जानना चाहता था। खैर, ठीक इसी क्षण मुझे ठीक ऐसा ही एक जादुई दर्शन हुआ। जैसे, किसी ऐसे इलाके में जिसे हम अनजान समझते हैं और वास्तव में जहाँ हम एक नए कोण से पहुँचे हैं, जब एक सड़क से मुड़ने के बाद हम अचानक दूसरी सड़क पर आ जाते हैं, जिसका हर इंच जाना-पहचाना होता है, बस हमने उस तरफ से आने की आदत नहीं होती, तो हम तुरंत खुद से कहते हैं: "अरे, यह वही गली है जो मेरे दोस्तों X—— के बगीचे के द्वार तक जाती है; मैं एक मिनट में वहाँ पहुँच जाऊँगा," और वास्तव में, वहाँ उनकी बेटी द्वार पर खड़ी होती है, हमारा स्वागत करने के लिए बाहर आई होती है; अचानक ही मैंने खुद को इस संगीत के बीचोंबीच पाया, जो मेरे लिए बिल्कुल नया था, ठीक विंटेइल के सोनाटा के केंद्र में; और किसी भी युवती से कहीं अधिक अद्भुत, वह छोटा सा वाक्यांश, चांदी में लिपटा हुआ, ध्वनि के शानदार प्रभावों से जगमगाता हुआ, रेशमी स्कार्फ की तरह हल्का और कोमल, मेरी ओर आया, इस नए रूप में पहचानने योग्य। इसे फिर से पाकर मेरी खुशी उस लहजे से और भी बढ़ गई, जो इतना दोस्ताना और परिचित था, जो मुझसे बात करते हुए इतना प्रेरक और सरल था, फिर भी उसकी झिलमिलाती सुंदरता को कम नहीं कर रहा था। हालाँकि, इस बार उसका इरादा केवल मुझे रास्ता दिखाना था, जो सोनाटा का रास्ता नहीं था, क्योंकि यह विंटेइल की एक अप्रकाशित रचना थी जिसमें उन्होंने केवल मनोरंजन किया था, एक संकेत के माध्यम से जिसे कार्यक्रम के एक वाक्य द्वारा समझाया गया था जिसे साथ-साथ पढ़ा जाना चाहिए था, ताकि वह छोटा सा वाक्यांश एक क्षण के लिए फिर से प्रकट हो सके। जैसे ही मुझे इसकी याद आई, यह गायब हो गया, और मैंने

खुद को एक बार फिर एक अनजान दुनिया में पाया, लेकिन अब मैं जानता था, और इसके बाद जो कुछ भी हुआ उसने मेरे ज्ञान की पुष्टि ही की, कि यह दुनिया उन दुनियाओं में से एक थी जिनकी कल्पना भी मैं कभी नहीं कर सकता था कि विंटेइल ने बनाई होगी। क्योंकि जब मैं उस सोनाटा से ऊब गया था जो मेरे लिए एक पूर्ण रूप से खोजा हुआ ब्रह्मांड था, और मैंने उतनी ही सुंदर लेकिन अलग अन्य सोनाटा की कल्पना करने की कोशिश की, तो मैं बस वही कर रहा था जो वे कवि करते हैं जो अपने कृत्रिम स्वर्ग को उन मैदानों, फूलों और झरनों से भर देते हैं जो पृथ्वी पर पहले से मौजूद चीजों की नकल करते हैं। जो अब मेरे सामने था उसने मुझे उतना ही तीव्र आनंद दिया जितना सोनाटा ने मुझे दिया होता अगर मैं उसे पहले से न जानता होता, और इसलिए, हालांकि वह कम सुंदर नहीं था, फिर भी अलग था। जहां एक ओर सोनाटा की शुरुआत लिली से भरे घास के मैदानों की सुबह से हुई, जहां उसकी हल्की सफेदी छटपटाती हुई, हनीसकल और सफेद जेरेनियम के देहाती लताओं के नाजुक लेकिन निरंतर मिश्रण पर छा गई, वहीं दूसरी ओर, समुद्र जैसी समतल सतहों पर, एक तूफानी सुबह के बीच, पहले से ही भयावह आकाश के नीचे, एक रहस्यमय सन्नाटे में, एक अनंत शून्य में, इस अद्भुत रचना का जन्म हुआ। और एक गुलाबी भोर में, मेरे सामने धीरे-धीरे खुद को समेटने के लिए, यह अज्ञात ब्रह्मांड सन्नाटे और रात से निकला। यह अनोखी लालिमा, जो कोमल, देहाती, फीकी सोनाटा में अनुपस्थित थी, भोर की तरह पूरे आकाश को एक रहस्यमय आशा से भर देती है। और एक गीत हवा में गूंज रहा था, सात सुरों वाला एक गीत, लेकिन सबसे विचित्र, मेरी कल्पना से परे, मेरी कल्पना से भी परे, एक साथ अवर्णनीय और मर्मस्पर्शी, अब सोनाटा में कबूतर की गुटरगू नहीं, बल्कि हवा को चीरता हुआ, शुरुआती धुनों में छाए लाल रंग की तरह जीवंत, मुर्गे की रहस्यमयी बांग जैसा, शाश्वत सुबह की एक अवर्णनीय लेकिन अति-तीखी अपील। बारिश से भीगा ठंडा वातावरण, बिजली की तरह - एक ऐसी अलग गुणवत्ता का, पूरी तरह से अलग दबावों को महसूस करते हुए, उस दुनिया से बिल्कुल अलग, जो सोनाटा की पवित्र और केवल वनस्पति जीवन से परिपूर्ण थी - हर पल बदल रहा था, भोर के बैंगनी रंग के वादे को मिटा रहा था। दोपहर के समय, चिलचिलाती धूप में, जो क्षणिक थी, ऐसा लगा मानो यह एक नीरस, लगभग देहाती आनंद में परिणत हो रहा हो। उस आनंद में, झनझनाती, दौड़ती घंटियों की गूंज (ठीक वैसी ही घंटियाँ जो कॉम्ब्रे चर्च के बाहर चौक की

आग को प्रज्वलित करती थीं, जिन्हें विन्ट्यूइल ने, जिन्होंने शायद अक्सर सुना होगा, उस क्षण अपनी स्मृति में एक ऐसे रंग की तरह पाया होगा जिसे चित्रकार के हाथ ने अपने पैलेट पर उतारा हो) सबसे भद्दे आनंद को साकार करती प्रतीत हो रही थी। सच कहूँ तो, सौंदर्यबोध की दृष्टि से, यह आनंदमय भाव मुझे आकर्षित नहीं कर पाया; मुझे यह लगभग कुरूप लगा। इसकी लय इतनी श्रमसाध्य थी कि कोई मेज पर ड्रमस्टिक थपथपाकर, केवल शोर मचाकर, ध्वनियाँ निकालकर भी इसके लगभग सभी आवश्यक तत्वों की नकल कर सकता था। मुझे लगा कि विन्ट्यूइल में यहाँ प्रेरणा की कमी थी, और परिणामस्वरूप मुझमें भी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता थोड़ी कम थी।

मैंने स्वामिनी की ओर देखा, जिनकी उदास और स्थिर मुद्रा, फ़ॉबूर्ग की महिलाओं के संगीत की धुन पर हिलते हुए खाली सिरों का विरोध करती प्रतीत हो रही थी। उन्होंने यह नहीं कहा: "आप समझते हैं कि मैं इस संगीत के बारे में कुछ जानती हूँ, और थोड़ा नहीं, बल्कि बहुत कुछ! अगर मुझे अपने सारे भाव व्यक्त करने हों, तो आप कभी भी उनका अंत नहीं सुन पाएंगे!" उन्होंने यह नहीं कहा। लेकिन उनका सीधा, गतिहीन शरीर, उनकी भावहीन आँखें, उनके बिखरे बाल उनके लिए यह सब कह रहे थे। वे उनके साहस की भी गवाही दे रहे थे, यह कह रहे थे कि संगीतकार आगे बढ़ सकते हैं, उन्हें अपने धैर्य की परवाह करने की ज़रूरत नहीं है, कि वह एंडांटे पर नहीं हिचकेंगी, एलेग्रो पर नहीं चिल्लाएंगी। मैंने संगीतकारों की ओर देखा। वायलिन वादक अपने घुटनों के बीच पकड़े हुए वाद्य यंत्र पर पूरी तरह हावी था, अपना सिर झुकाए हुए था, जिसके खुरदुरे चेहरे कभी-कभी, अनायास ही घृणा का भाव प्रकट करते थे; वह उस पर झुक गया, उसे उसी घरेलू धैर्य से सहलाने लगा जैसे वह पत्तागोभी तोड़ रहा हो, जबकि उसके बगल में छोटी स्कर्ट पहने वीणा वादिका (एक साधारण लड़की), जिसके दोनों ओर सुनहरे चतुर्भुज की रेखाएँ थीं, मानो किसी भविष्यवक्ता के जादुई कक्ष में पवित्र नियमों के अनुसार आकाश को दर्शाती हों, किसी मधुर ध्वनि की खोज में इधर-उधर भटक रही हो, मानो स्वर्ग के सुनहरे आवरण के सामने रखी कोई छोटी प्रतीकात्मक देवी, एक-एक करके उसके तारों को इकट्ठा कर रही हो। मोरेल की बात करें तो, उसके बालों में अब तक छिपा हुआ एक लट, अब गिरकर उसके माथे पर एक घुंघराले बाल की तरह हो गया था। मैंने अपना सिर थोड़ा सा दर्शकों की ओर घुमाया यह जानने के लिए कि एम. डी चार्लस इस लट को

देखकर कैसा महसूस कर रहे होंगे। लेकिन मेरी नज़र केवल मैडम के चेहरे, या यूँ कहें कि हाथों पर पड़ी। वर्दुरिन, क्योंकि पहला वाला पूरी तरह से दूसरे वाले में समाहित था।
लेकिन बहुत जल्द, घंटियों की विजयी ध्वनि अन्य ध्वनियों द्वारा विलीन हो जाने पर, मैं एक बार फिर संगीत में डूब गया; और मुझे यह एहसास होने लगा कि यदि इस सप्तक के भीतर, विभिन्न तत्व बारी-बारी से प्रस्तुत होकर अंत में संयोजित होते हैं, तो विंटेइल का सोनाटा, और जैसा कि मुझे बाद में पता चला, उनकी अन्य रचनाएँ भी, उस विजयी और पूर्ण कृति की ओर मात्र डरपोक प्रयास थे, जो इस क्षण मेरे सामने प्रकट हुई। और इसी तरह, मैं यह याद किए बिना नहीं रह सका कि मैंने विंटेइल द्वारा रचित अन्य संसारों को अनेक ब्रह्मांडों के समान ही एकांत में बसे हुए माना था, ठीक वैसे ही जैसे मेरे अपने प्रेम प्रसंग थे। जबकि वास्तविकता में मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि मेरे नवीनतम प्रेम, अर्थात् अल्बर्टीन के प्रति मेरे प्रेम में, उसके लिए मेरे प्रेम के पहले संकेत (बालबेक में बिल्कुल शुरुआत में, फिर नेवला के खेल के बाद, फिर उस रात जब वह होटल में रुकी थी, फिर पेरिस में धुंध भरी दोपहर में, फिर गुएरमांटेस की पार्टी की रात, फिर से बालबेक में, और अंत में पेरिस में जहाँ मेरा जीवन अब उसके जीवन से घनिष्ठ रूप से जुड़ गया था) मात्र प्रयोग थे; वास्तव में, यदि मैं अल्बर्टीन के प्रति अपने प्रेम को नहीं, बल्कि अपने जीवन को समग्र रूप से देखूँ, तो मेरे पहले के प्रेम प्रसंग भी मात्र मामूली और संकोची प्रयास, प्रयोग थे, जिन्होंने इस विशाल प्रेम, अल्बर्टीन के प्रति मेरे प्रेम का मार्ग प्रशस्त किया। और मैंने संगीत सुनना बंद कर दिया, ताकि मैं खुद से एक बार फिर पूछ सकूँ कि क्या अल्बर्टीन ने पिछले कुछ दिनों में मैडम विंटेइल को देखा था या नहीं, क्योंकि हम एक आंतरिक पीड़ा से फिर से जूझ रहे हैं, जिससे हमारा ध्यान कुछ पल के लिए भटक गया था। क्योंकि अल्बर्टीन की संभावित क्रियाएँ मुझमें ही घटित हो रही थीं। हम जिन लोगों को जानते हैं, उनमें से प्रत्येक का एक प्रतिरूप हमारे भीतर होता है, लेकिन यह आमतौर पर हमारी कल्पना, हमारी स्मृति के क्षितिज पर स्थित होता है; यह कमोबेश हमसे अलग रहता है, और इसने जो किया है या कर सकता है, वह हमें उतना ही दर्द पहुँचा सकता है जितना कि एक निश्चित दूरी पर स्थित कोई वस्तु, जो हमें केवल दृष्टि की दर्द रहित संवेदनाएँ प्रदान करती है। इन लोगों को प्रभावित करने वाली चीजों को हम चिंतनशील ढंग से समझते हैं, हम उचित भाषा में उनका शोक व्यक्त करने में सक्षम होते हैं जो दूसरों को हमारे हृदय की

दयालुता का एहसास कराती है, हम उन्हें महसूस नहीं करते; लेकिन बालबेक में मुझ पर लगे घाव के बाद से, मेरे हृदय में, एक गहरी, जिसे निकालना मुश्किल है, अल्बर्टीन का प्रतिरूप बस गया था। मैंने उसे जिस हालत में देखा, उससे मुझे बहुत दुख हुआ, ठीक वैसे ही जैसे किसी बीमार व्यक्ति को होता है जिसकी इंद्रियाँ इतनी बुरी तरह से विक्षिप्त हो गई हों कि किसी रंग को देखना भी उसके भीतर ऐसे चुभता हो जैसे कोई चाकू उसके जीवित शरीर में घुसा रहा हो। यह सौभाग्य की बात थी कि मैंने अल्बर्टीन से संबंध तोड़ने के प्रलोभन में अभी तक कदम नहीं रखा था; घर लौटने पर उसे फिर से देखने का उबाऊ विचार उस चिंता के मुकाबले कुछ भी नहीं था जो मुझे तब होती जब यह अलगाव स्थायी हो जाता, जबकि उस समय मुझे उसके बारे में संदेह होने लगा था, इससे पहले कि वह मेरे लिए महत्वहीन हो पाती। जिस क्षण मैंने उसकी कल्पना घर पर मेरा इंतज़ार करते हुए की, एक प्रिय पत्नी की तरह जिसे इंतज़ार का समय लंबा लग रहा हो और शायद वह अपने कमरे में एक पल के लिए सो गई हो, उसी क्षण सप्तक के एक कोमल, घरेलू और मधुर वाक्यांश ने मुझे सुकून दिया। शायद—हमारे अंतर्मन में सब कुछ इतना आपस में गुंथा और समाहित है—यह विन्ट्यूइल में उनकी बेटी की नींद से प्रेरित हुआ था—उनकी बेटी, जो आज मेरी सारी परेशानियों का कारण है—जब इसने शांत शामों में संगीतकार की रचना को अपने शांत स्वर में समेट लिया था, उस वाक्यांश ने मुझे इतना शांत कर दिया था, उसी मौन की कोमल पृष्ठभूमि से जो शुमान के कुछ दिवास्वप्नों को शांत करती है, जिसके दौरान, जब 'कवि बोल रहा होता है,' तब भी कोई बता सकता है कि 'बच्ची सो रही है।' सोई हुई हो या जागती हुई, मुझे आज शाम फिर से उसे पाना चाहिए, जब मैंने घर लौटने का फैसला किया, अल्बर्टीन, मेरी नन्ही बच्ची। और फिर भी, मैंने खुद से कहा, अल्बर्टीन के प्यार से भी कहीं अधिक रहस्यमय कुछ इस रचना की शुरुआत में, भोर की उन पहली चीखों में, वादा किया गया प्रतीत होता था। मैंने अपनी प्रेमिका के विचार को दूर करने का प्रयास किया, ताकि मैं केवल संगीतकार के बारे में सोच सकूँ। वास्तव में, वह उपस्थित प्रतीत होता था। कोई कह सकता था कि, पुनर्जन्म लेकर, संगीतकार अपने संगीत में हमेशा के लिए जीवित रहा; किसी ध्वनि के रंग का चुनाव करते हुए, उसे बाकी ध्वनियों के साथ सामंजस्य बिठाते हुए, उनके आनंद को महसूस किया जा सकता था। विन्ट्यूइल ने अन्य और अधिक गहन प्रतिभाओं के साथ-साथ वह कौशल भी समाहित किया था जो कुछ ही

संगीतकारों और वास्तव में कुछ ही चित्रकारों के पास होता है - रंगों का ऐसा प्रयोग जो न केवल इतना स्थायी हो बल्कि इतना व्यक्तिगत भी हो कि जिस प्रकार समय उन्हें फीका नहीं कर पाता, उसी प्रकार उनके शिष्य जो उनकी खोजकर्ता का अनुकरण करते हैं, और यहाँ तक कि उनसे आगे निकलने वाले उस्ताद भी उनकी मौलिकता को फीका नहीं पड़ने देते। उनके आगमन से जो क्रांति आई है, वह आने वाली पीढ़ियों के कार्यों में अनदेखे रूप से विलीन नहीं हो जाती; यह मुक्त हो जाती है, यह फिर से प्रकट होती है, और अकेले ही, जब भी भविष्य में इस नवप्रवर्तक की रचनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। प्रत्येक स्वर एक ऐसे रंग में निखरता था जिसे दुनिया के सारे नियम भी सबसे विद्वान संगीतकारों को अनुकरण करना नहीं सिखा सकते थे। परिणामस्वरूप, विन्ट्यूइल, यद्यपि वे अपने समय में प्रकट हुए थे और संगीत के विकास में अपना स्थान बना चुके थे, फिर भी जब भी उनकी कोई रचना प्रस्तुत की जाती थी, तो वे उस स्थान को छोड़कर सबसे आगे खड़े हो जाते थे। उनकी रचनाएँ, जो देखने में विरोधाभासी और वास्तव में भ्रामक, शाश्वत नवीनता के इस गुण के कारण ही अन्य हाल के संगीतकारों की रचनाओं के बाद खिली हुई प्रतीत होती थीं, उनमें एक अलग ही नवीनता झलकती थी। विन्ट्यूइल के सिम्फनी संगीत का एक पृष्ठ, जो पियानो पर पहले से ही परिचित है, जब उसे ऑर्केस्ट्रा द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, तो ऐसा लगता है मानो गर्मी की धूप की एक किरण खिड़की के प्रिज्म से बिखरकर एक अंधेरे भोजन कक्ष में प्रवेश कर रही हो, मानो एक अनपेक्षित, असंख्य रंगों वाले खजाने में अरेबियन नाइट्स के सारे रत्न प्रकट हो रहे हों। लेकिन प्रकाश की उस गतिहीन चमक की तुलना जीवन से कैसे की जा सकती है, जो निरंतर और आनंदमय गति है? यह विंटेउइल, जिसे मैं इतना डरपोक और उदास जानता था, जब उसे एक स्वर का चयन करना होता था, तो उसमें दूसरे स्वर को मिलाने की क्षमता रखता था, और उसने शब्द के पूर्ण अर्थों में सौभाग्य का आनंद लिया था, जिसके बारे में उसकी किसी भी रचना को सुनने से कोई संदेह नहीं रह जाता था। उन सुरों से उत्पन्न आनंद, उनसे मिली शक्ति जिससे वे अन्य सुरों को खोज सके, श्रोता को भी एक खोज से दूसरी खोज की ओर ले जाता था, या यूँ कहें कि स्वयं संगीतकार ही उनका मार्गदर्शन करते थे। उनके द्वारा रचित रंगों से एक ऐसा प्रचंड आनंद प्राप्त होता था जो उन्हें खोज करने की शक्ति देता था, उन अन्य सुरों पर खुद को समर्पित करने की शक्ति देता था जिन्हें वे प्रेरित करते प्रतीत होते थे। वे मंत्रमुग्ध,

कांपते हुए, मानो बिजली के झटके से कांप रहे हों, जब पीतल की झंकार से उदात्तता अनायास ही जीवंत हो उठती थी, हांफते हुए, मदहोश, पागल, चक्कर खाते हुए, वे अपनी महान संगीतमय भित्तिचित्र बना रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे माइकल एंजेलो अपने मचान पर बंधे हुए, लेटे हुए, सिस्टिन चैपल की छत पर उग्र ब्रश-स्ट्रोक मार रहे हों। विंटेइल की मृत्यु कई वर्षों पहले हो चुकी थी; लेकिन जिन वाद्ययंत्रों को उन्होंने जीवंत किया था, उनकी ध्वनि में उन्हें अपने जीवन के कम से कम एक हिस्से को अनिश्चित काल के लिए लंबा करने का वरदान मिला था। क्या यह केवल एक मनुष्य के रूप में उनके जीवन का एक हिस्सा था? यदि कला वास्तव में जीवन का विस्तार मात्र है, तो क्या इसके लिए कुछ भी बलिदान करना उचित है? क्या यह स्वयं जीवन की तरह ही अवास्तविक नहीं है? यदि मैं इस सप्तक को ध्यानपूर्वक सुनूँ, तो मैं इस प्रश्न पर विचार करने के लिए रुक नहीं सकता। निःसंदेह, यह तेजस्वी सप्तक, इस सरल सोनाटा से बिलकुल भिन्न था; वह संकोची प्रश्न जिसका उत्तर इस छोटे से वाक्यांश ने दिया, उस निर्भीक प्रार्थना से जो उस विचित्र वादे की पूर्ति की कामना करती थी जो गूंज उठा था, इतना कठोर, इतना अलौकिक, इतना संक्षिप्त, जिसने समुद्र के ऊपर सुबह के शांत लाल आकाश को स्पंदित कर दिया था। और फिर भी ये इतने भिन्न-भिन्न वाक्यांश एक ही तत्वों से बने थे, क्योंकि जिस प्रकार एक निश्चित ब्रह्मांड था, जिसे हम निजी घरों में, सार्वजनिक दीर्घाओं में इधर-उधर बिखरे हुए उन टुकड़ों में देख सकते थे, जो एल्स्टिर का ब्रह्मांड था, वह ब्रह्मांड जिसे उसने देखा, जिसमें वह रहता था, उसी प्रकार विंटेइल के संगीत में, स्वर दर स्वर, कुंजी दर कुंजी, एक अमूल्य, अनपेक्षित ब्रह्मांड के अज्ञात रंग फैलते थे, जो उसके काम को सुनने के विभिन्न अवसरों के बीच उत्पन्न अंतरालों से खंडित हो गया था; सोनाटा और सप्तक की भिन्न-भिन्न गतियों को निर्देशित करने वाले वे दो अत्यंत भिन्न प्रश्न, जिनमें से एक निरंतर और शुद्ध लय को संक्षिप्त निवेदनों में तोड़ता है, जबकि दूसरा बिखरे हुए टुकड़ों के मिश्रण को एक अविभाज्य संरचना में पिरोता है, फिर भी, एक इतना शांत और संकोची, लगभग पृथक और मानो दार्शनिक, जबकि दूसरा इतना चिंतित, दबावयुक्त, याचनापूर्ण, फिर भी एक ही प्रार्थना थे, जो अंतर्मुखी सूर्य के विभिन्न उदय के समक्ष अर्पित की गई थी और केवल अन्य विचारों, उन कलात्मक शोधों के विभिन्न माध्यमों से अपवर्तित हुई थी जो उन्होंने वर्षों तक कुछ नया बनाने के प्रयास में किए थे। एक प्रार्थना, एक आशा जो हृदय से एक ही थी, विंटेइल की विभिन्न

रचनाओं में इन आवरणों के नीचे पहचानी जा सकती थी, और दूसरी ओर, उनकी रचनाओं के अलावा कहीं और नहीं पाई जा सकती थी। संगीत के इतिहासकार इन वाक्यांशों में अन्य महान संगीतकारों की रचनाओं में समानताएँ, एक वंशावली पा सकते हैं, लेकिन केवल गौण कारणों से, बाहरी समानताओं से, उन उपमाओं से जो प्रत्यक्ष अनुभव के बजाय तर्क द्वारा चतुराई से खोजी गई थीं। विन्ट्यूइल के इन वाक्यांशों का प्रभाव अन्य किसी भी वाक्यांश से भिन्न था, मानो विज्ञान जिन निष्कर्षों की ओर इशारा करता प्रतीत होता है, उनके बावजूद, वह वाक्यांश वास्तव में अस्तित्व में था। और ठीक उसी समय जब वह कुछ नया करने के लिए पूरी लगन से प्रयास कर रहा था, तब किसी ने स्पष्ट भिन्नताओं के नीचे गहरी समानताओं को पहचाना; और किसी रचना में मौजूद जानबूझकर बनाई गई समानताएँ, जब विन्ट्यूइल ने एक ही वाक्यांश को बार-बार दोहराया, उसमें विविधता लाई, उसकी लय को बदलकर, उसे उसके मूल रूप में पुनः प्रकट करके खुद को आनंदित किया, ये जानबूझकर बनाई गई समानताएँ, बुद्धि का कार्य, अनिवार्य रूप से सतही, कभी भी उन छिपी हुई, अनैच्छिक समानताओं जितनी प्रभावशाली नहीं हो सकीं, जो दो अलग-अलग उत्कृष्ट कृतियों के बीच विभिन्न रंगों में उभर कर सामने आईं; तब विन्ट्यूइल, कुछ नया करने की चाह में, अपनी रचनात्मक शक्ति के बल पर स्वयं से प्रश्न करने लगे, और अपने मूल स्वरूप की उन गहराइयों तक पहुँचे, जहाँ चाहे कोई भी प्रश्न पूछा जाए, उनका उत्तर एक ही लहजे में, यानी अपने ही लहजे में, मिलता है। विन्ट्यूइल का यह लहजा अन्य संगीतकारों के लहजों से उस अंतर से कहीं अधिक भिन्न है जो हम दो व्यक्तियों की आवाज़ों में, यहाँ तक कि दो प्रजातियों के जानवरों की आवाज़ों में भी महसूस करते हैं: यह अंतर उन अन्य संगीतकारों के विचारों और विन्ट्यूइल की शाश्वत खोजों में मौजूद है, वह प्रश्न जो उन्होंने स्वयं से अनेक रूपों में पूछा, उनका नियमित चिंतन, लेकिन तर्क के विश्लेषणात्मक सूत्रों से इतना मुक्त कि मानो यह स्वर्गदूतों की दुनिया में किया जा रहा हो, जिससे हम इसकी गहराई को माप सकते हैं, लेकिन इसे मानवीय भाषा में अनुवाद करने में उतने ही असमर्थ हैं जितना कि आत्माएँ, जब किसी माध्यम द्वारा आह्वान किए जाने पर, मृत्यु के रहस्यों के बारे में उनसे प्रश्न करती हैं। और जब मैंने उस दोपहर मुझे प्रभावित करने वाली अर्जित मौलिकता को ध्यान में रखा, उस आत्मीयता को जिसे संगीत समीक्षक उनमें खोज सकते हैं, तो वास्तव में यह एक अनूठा स्वर है जिसके

साथ महान गायक उभरते हैं और फिर भी लौट आते हैं, जो मौलिक संगीतकारों की आत्मा के अविभाज्य व्यक्तिगत अस्तित्व का प्रमाण है। यद्यपि विंटेइल अपने श्रोताओं के मन में प्रतिबिंबित भाव को अधिक गंभीर, अधिक भव्य या अधिक जीवंत और प्रसन्नतापूर्ण बनाने का प्रयास कर सकते थे, फिर भी, अनजाने में ही, उन्होंने इसे एक ऐसी अंतर्धारा के नीचे दबा दिया जो उनके गीत को शाश्वत और तुरंत पहचानने योग्य बनाती है। यह गीत, अन्य गायकों के गीतों से भिन्न, फिर भी उनके अपने गीत के समान, विंटेइल ने इसे कहाँ से सीखा था, कहाँ सुना था? ऐसा लगता है कि प्रत्येक कलाकार एक अज्ञात देश का मूल निवासी है, जिसे वह स्वयं भूल चुका है, उस देश से भिन्न जिससे निकलकर पृथ्वी के लिए एक और महान कलाकार बनेगा। अंततः, विंटेइल अपनी नवीनतम रचनाओं में उस अज्ञात देश के और करीब पहुँचते हुए प्रतीत हुए। वातावरण अब सोनाटा जैसा नहीं रहा था, प्रश्नवाचक वाक्य अधिक तीखे, अधिक बेचैन हो गए थे, उत्तर अधिक रहस्यमय हो गए थे; सुबह और शाम की स्वच्छ हवा का प्रभाव वाद्ययंत्रों पर भी पड़ता प्रतीत हो रहा था। मोरेल शायद अद्भुत वादन कर रहे थे, उनके वायलिन से निकलने वाली ध्वनियाँ मुझे विलक्षण रूप से मर्मस्पर्शी, लगभग स्पष्ट लग रही थीं। यह कठोरता मनभावन थी, और कुछ आवाजों की तरह, इसमें एक प्रकार का नैतिक गुण और बौद्धिक श्रेष्ठता का आभास होता था। लेकिन यह आपत्ति का कारण बन सकता था। जब ब्रह्मांड के प्रति उनका दृष्टिकोण परिवर्तित, शुद्ध और उनके हृदय के देश की स्मृति के अनुरूप हो जाता है, तो यह स्वाभाविक ही है कि संगीतकार की ध्वनियों में, चित्रकार के रंगों की तरह, एक सामान्य परिवर्तन आ जाए। फिर भी, जनता का अधिक बुद्धिमान वर्ग गुमराह नहीं हुआ, क्योंकि लोगों ने बाद में घोषणा की कि विंटेइल की अंतिम रचनाएँ सबसे गहन थीं। अब कोई कार्यक्रम, कोई विषय निर्णय के लिए कोई बौद्धिक आधार प्रदान नहीं करता था। इसलिए अनुमान लगाया जा सकता था कि यह ध्वनि के स्थानांतरण का प्रश्न था, ध्वनि की बढ़ती गहनता का।

इस खोए हुए देश को संगीतकार वास्तव में याद नहीं करते, लेकिन उनमें से प्रत्येक जीवन भर किसी न किसी रूप में इससे जुड़ा रहता है; अपने वतन के गीत गाते समय वे आनंद से झूम उठते हैं, कभी-कभी प्रसिद्धि की लालसा में इसे त्याग देते हैं, लेकिन फिर प्रसिद्धि की तलाश में इससे मुंह मोड़ लेते हैं, और जब वे इसे तुच्छ समझते हैं तभी वे इसे पाते हैं, चाहे वे किसी भी

विषय पर गीत गा रहे हों, उस विशिष्ट स्वर को जिसकी एकरसता—क्योंकि विषय चाहे जो भी हो, वह अपने आप में एक समान रहती है—उन तत्वों की स्थायित्व को सिद्ध करती है जो उनकी आत्मा का निर्माण करते हैं। लेकिन क्या यह सच नहीं है कि उन तत्वों से, वह सारा वास्तविक अवशेष जिसे हम अपने तक ही सीमित रखने के लिए बाध्य हैं, जिसे बातचीत के माध्यम से, यहाँ तक कि मित्र से मित्र, गुरु से शिष्य, प्रेमी से प्रेमिका के बीच भी व्यक्त नहीं किया जा सकता, वह अवर्णनीय तत्व जो हममें से प्रत्येक के अनुभव और उन शब्दों की सीमा पर पीछे छूट जाने वाले भावों के बीच अंतर पैदा करता है, जिनके माध्यम से वह अपने साथियों से केवल उन बाहरी बिंदुओं तक ही सीमित रहकर संवाद कर सकता है जो हम सभी के लिए सामान्य हैं और जिनका कोई महत्व नहीं है, कला, विंटेउइल जैसी एल्स्टर की कला, मनुष्य को स्वयं प्रकट करती है, स्पेक्ट्रम के रंगों में उन संसारों की अंतरंग संरचना को बाह्य रूप से दृश्यमान बनाती है जिन्हें हम व्यक्तिगत व्यक्ति कहते हैं और जिन्हें कला की सहायता के बिना हम कभी नहीं जान सकते? पंखों का एक जोड़ा, साँस लेने का एक अलग तरीका, जो हमें अनंत अंतरिक्ष को पार करने में सक्षम बनाएगा, किसी भी तरह से हमारी मदद नहीं करेगा, क्योंकि यदि हम उन्हीं इंद्रियों के साथ मंगल या शुक्र ग्रह पर जाएँ, तो वे पृथ्वी की वस्तुओं के समान ही हर उस चीज़ को प्रदर्शित करेंगे जिसे हम देखने में सक्षम होंगे। सच्ची खोज यात्रा, शाश्वत यौवन का एकमात्र स्रोत, परदेसियों की यात्रा करना नहीं, बल्कि दूसरों की दृष्टि पाना, ब्रह्मांड को दूसरों की, सौ अन्यों की आँखों से देखना, उन सौ ब्रह्मांडों को देखना जो उनमें से प्रत्येक देखता है, जो उनमें से प्रत्येक है; और यह हम एल्स्टिर, विंटेइल जैसे लोगों के साथ कर सकते हैं; ऐसे लोगों के साथ हम सचमुच एक तारे से दूसरे तारे तक उड़ान भरते हैं। एंडांटे एक ऐसे कोमल भाव से भरे वाक्यांश पर समाप्त हुआ जिसमें मैं पूरी तरह खो गया था; अगले भाग से पहले एक छोटा सा अंतराल था जिसके दौरान कलाकारों ने अपने वाद्ययंत्र रख दिए और श्रोताओं ने अपने विचार साझा किए। एक ड्यूक ने यह दिखाने के लिए कि वह जानता है कि वह क्या कह रहा है, घोषणा की: "अच्छा बजाना एक कठिन काम है।" कुछ अन्य मनोरंजक लोगों ने मुझसे थोड़ी देर बातचीत की। लेकिन उनके शब्द, जो हर मानवीय और बाहरी शब्द की तरह, मुझे उस दिव्य संगीत की धुन के सामने उदासीन छोड़ गए, जिसमें मैं अभी-अभी खो गया था, क्या मायने रखते थे? मैं सचमुच एक ऐसे देवदूत के समान था जो

स्वर्ग के मदहोश कर देने वाले आनंद से गिरकर सबसे नीरस वास्तविकता में समा जाता है। और, जिस प्रकार कुछ जीव प्रकृति द्वारा त्यागे गए जीवन के किसी रूप के अंतिम जीवित प्रमाण होते हैं, मैंने स्वयं से पूछा कि क्या संगीत उस संभावना का अनूठा उदाहरण नहीं है जो हो सकती थी—यदि भाषा का आविष्कार, शब्दों का निर्माण, विचारों का विश्लेषण—एक आत्मा से दूसरी आत्मा के बीच संवाद का माध्यम न होता। यह एक ऐसी संभावना के समान है जो निरर्थक ही रह गई; मानवता ने अन्य दिशाओं में विकास किया है, बोली जाने वाली और लिखित भाषा की दिशा में। लेकिन विश्लेषणहीनता की ओर यह वापसी इतनी मदहोश कर देने वाली थी कि उस स्वर्ग से बाहर आने पर, कमोबेश बुद्धिमान लोगों से संपर्क मुझे असाधारण रूप से महत्वहीन लगा। लोग—मैं संगीत के दौरान उन्हें याद रख पाता था, उन्हें संगीत में विलीन कर पाता था; या यूँ कहें कि मैं संगीत में केवल एक ही व्यक्ति की स्मृति को विलीन कर पाया था, जो अल्बर्टीन थी। और वह वाक्यांश जिसने एंडांटे का समापन किया, मुझे इतना उदात्त लगा कि मैंने मन ही मन कहा कि यह अफ़सोस की बात है कि अल्बर्टीन इसे नहीं जानती थी, और अगर वह जानती भी तो वह यह नहीं समझ पाती कि इस महान वाक्यांश के साथ जुड़ना कितना बड़ा सम्मान था, जिसने हमें एक साथ लाया, और उस मार्मिक आवाज़ के साथ, जिसे उसने मानो उधार लिया था। लेकिन, संगीत के रुकने के बाद, वहाँ मौजूद लोग बिल्कुल बेजान से लग रहे थे। जलपान परोसा गया। एम. डी चार्लस बीच-बीच में एक नौकर से पूछते रहे: "कैसे हो? क्या तुम्हें मेरा संदेश मिला? क्या तुम आ सकते हो?" निस्संदेह इन टिप्पणियों में उस महान रईस की स्वतंत्रता थी जो सोचता है कि वह अपने श्रोता की चापलूसी कर रहा है और खुद को मध्यम वर्ग के व्यक्ति से कहीं अधिक आम आदमी समझता है; साथ ही उस अपराधी की धूर्तता भी थी जो सोचता है कि उसकी स्वेच्छा से कही गई कोई भी बात इसी कारण निर्दोष मानी जाएगी। और उन्होंने मैडम के गुएरमांटेस लहजे में कहा... डी विलेपारिसिस: "वह एक अच्छा नौजवान है, इतना नेक इंसान कि मैं अक्सर उसे घर पर काम पर रखता हूँ।" लेकिन उसकी चतुराई बैरन के लिए मुसीबत बन गई, क्योंकि लोग नौकरों के साथ उसकी अंतरंग बातचीत और पत्राचार को असाधारण मानते थे। नौकर खुद अपने साथियों की मौजूदगी में खुश होने के बजाय शर्मिंदा महसूस करते थे। इसी बीच सप्तक फिर से शुरू हो गया था और अपने समापन की ओर बढ़ रहा था; सोनाटा

का कोई न कोई वाक्यांश बार-बार दोहराया जा रहा था, लेकिन हमेशा बदला हुआ, उसकी लय और सामंजस्य अलग, वही और फिर भी कुछ और, जैसे जीवन में चीजें दोहराई जाती हैं; और वे ऐसे वाक्यांश थे जिन्हें हम समझ नहीं पाते कि किस प्रकार से उनका एकमात्र और आवश्यक घर किसी संगीतकार का भूतकाल है, लेकिन वे केवल उसी के काम में पाए जाते हैं, और उसमें लगातार दिखाई देते हैं, जहाँ वे परियाँ, अप्सराएँ, गृहस्थ देवता हैं; मैंने शुरुआत में ही सप्तक में दो-तीन ऐसे वाक्यांश पहचान लिए थे जो मुझे सोनाटा की याद दिलाते थे। वर्तमान में—विंटेउइल के बाद के कार्यों में विशेष रूप से उभरने वाली बैंगनी धुंध में डूबा हुआ—इतना अधिक कि, जब उन्होंने एक नृत्य धुन को शामिल किया, तब भी वह एक ओपल के हृदय में कैद रही—मैंने सोनाटा के एक और वाक्यांश की ध्वनि सुनी, जो अभी भी इतनी दूर मंडरा रही थी कि मैं उसे मुश्किल से पहचान पाया; हिचकिचाते हुए, वह पास आई, मानो भयभीत होकर गायब हो गई, फिर लौटी, दूसरों के साथ हाथ मिलाया, जैसा कि मैंने बाद में जाना, अन्य रचनाओं से आई, और अन्य को बुलाया जो बदले में आकर्षक और प्रेरक बन गए, जैसे ही वे वश में हुए, और घेरे में अपना स्थान ग्रहण कर लिया, एक दिव्य घेरा जो अधिकांश दर्शकों के लिए स्थायी रूप से अदृश्य था, जिनकी आँखों के सामने केवल एक मोटा पर्दा था जिसके माध्यम से वे कुछ भी नहीं देख पा रहे थे, और प्रशंसात्मक उद्गारों के साथ मनमाने ढंग से एक निरंतर ऊब को तोड़ रहे थे जो घातक होती जा रही थी। फिर वे चले गए, सिवाय एक के जिसे मैंने पाँच-छह बार फिर से प्रकट होते देखा, हालाँकि मैं उसके चेहरे के भावों को पहचान नहीं पाया, फिर भी वह इतना कोमल, इतना अलग था—जैसा कि स्वान के सोनाटा में वह छोटा सा वाक्यांश निस्संदेह था—किसी भी स्त्री ने मुझे कभी भी जो चाहत जगाई थी, उससे बिल्कुल अलग। यह वाक्यांश, जिसने मुझे इतनी मधुर आवाज़ में ऐसी खुशी दी, जिसके लिए संघर्ष करना भी सार्थक होता, शायद—यह अदृश्य प्राणी जिसकी भाषा मैं नहीं जानता था और जिसे मैं इतनी अच्छी तरह समझ पाया—एकमात्र अजनबी है जिससे मिलना मेरा सौभाग्य रहा है। फिर यह वाक्यांश टूट गया, सोनाटा के उस छोटे से वाक्यांश की तरह रूपांतरित हो गया, और शुरुआत की रहस्यमय अपील बन गया। इसके विपरीत एक विलापपूर्ण वाक्यांश उभरा, लेकिन इतना गहरा, इतना अस्पष्ट, इतना आंतरिक, लगभग इतना जैविक और सहज कि इसकी प्रत्येक पुनरावृत्ति पर यह बताना मुश्किल था कि यह किसी धुन

का वाक्यांश है या तंत्रिका दर्द का। कुछ ही क्षणों में ये दोनों भाव आपस में एक कड़ा संघर्ष कर रहे थे, जिसमें कभी एक पूरी तरह गायब हो जाता था, और कभी श्रोता दूसरे का केवल एक अंश ही पकड़ पाता था। सच कहूँ तो, यह केवल ऊर्जाओं का एक संघर्ष था; क्योंकि यदि ये प्राणी एक-दूसरे पर हमला करते, तो उनके भौतिक शरीर, उनके रूप, उनके नाम, सब कुछ गायब हो जाता, और वे मुझमें एक आंतरिक दर्शक पाते, जो स्वयं भी उनके नामों और सभी विवरणों से बेपरवाह था, केवल उनके अमूर्त और गतिशील संघर्ष में रुचि रखता था और उसके मधुर परिवर्तनों का उत्साहपूर्वक अनुसरण करता था। अंत में आनंदमय भाव विजयी हुआ; यह अब खाली आकाश को संबोधित एक लगभग चिंतित अपील नहीं थी, यह एक अवर्णनीय आनंद था जो स्वर्ग से आता हुआ प्रतीत होता था, एक ऐसा आनंद जो सोनाटा के आनंद से उतना ही भिन्न था जितना बेलिनी द्वारा थियोर्बो बजाते हुए एक गंभीर और सौम्य देवदूत का आनंद, मांटेग्ना द्वारा तुरही बजाते हुए किसी महादूत के आनंद से भिन्न होता। मुझे यकीन था कि आनंद का यह नया स्वर, अलौकिक आनंद की यह अपील, एक ऐसी चीज थी जिसे मैं कभी नहीं भूलूंगा। लेकिन क्या मैं कभी इसे साकार कर पाऊंगा? यह प्रश्न मुझे और भी महत्वपूर्ण लगा, क्योंकि यह वाक्यांश मेरे जीवन के बाकी हिस्सों, दृश्य जगत से इसके तीव्र विरोधाभास के कारण, उन छापों को सबसे निश्चित रूप से चित्रित करता प्रतीत होता था जिन्हें मैंने अपने जीवन में समय-समय पर पुनः प्राप्त किया था, एक सच्चे जीवन के निर्माण के लिए आरंभिक बिंदुओं, आधारशिलाओं के रूप में: मार्टिनविले के चर्चों को देखकर या बालबेक के पास पेड़ों की एक पंक्ति को देखकर मैंने जो छाप महसूस की थी। किसी भी मामले में, इस वाक्यांश के विशेष लहजे पर लौटें तो, यह कितना विचित्र था कि पृथ्वी पर जीवन हमें जो पूर्वाभास देता है उससे सबसे भिन्न पूर्वाभास, परलोक के आनंद के सबसे साहसिक सन्निकटन को ठीक उसी उदास, सम्मानित छोटे बूढ़े व्यक्ति में साकार किया गया था जिससे हम मैरी के महीने में कॉम्ब्रे में मिला करते थे; लेकिन, इससे भी अजीब बात यह थी कि यह रहस्योद्घाटन, जो मुझे अब तक प्राप्त हुए सबसे विचित्र रहस्योद्घाटनों में से एक था, एक अज्ञात प्रकार के आनंद का, मुझे उनसे कैसे मिला, क्योंकि यह समझा जाता था कि जब उनकी मृत्यु हुई तो उन्होंने अपने पीछे केवल अपनी सोनाटा ही छोड़ी थी, बाकी सब कुछ अस्पष्ट लिखावटों में मौजूद नहीं था। वे अस्पष्ट अवश्य ही रहे हों, लेकिन अंततः धैर्य, बुद्धिमत्ता और सम्मान के बल

पर उन्हें उस एकमात्र व्यक्ति द्वारा समझा गया था जो विंटेइल के साथ पर्याप्त समय बिताकर उनकी कार्यशैली को समझ सके, उनके ऑर्केस्ट्रल संकेतों की व्याख्या कर सके: श्रीमती विंटेइल की सहेली। महान संगीतकार के जीवनकाल में ही, उन्होंने उनकी बेटी से वह आदर प्राप्त कर लिया था जो उनकी बेटी अपने पिता के प्रति रखती थी। इसी आदर के कारण, उन क्षणों में जब लोग अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के विपरीत चलते हैं, दोनों लड़कियां उन अपवित्रताओं में एक अजीब आनंद पा सकीं जिनका वर्णन पहले ही किया जा चुका है। (पिता के प्रति उनकी अपवित्रता ही उनकी पुत्री के इस अपवित्र कृत्य का मुख्य कारण थी। और निस्संदेह उन्हें इस अपवित्र कृत्य के आनंद से दूर रहना चाहिए था, परन्तु यह उनके संपूर्ण स्वभाव को व्यक्त नहीं करता था।) और तो और, उनके विकृत शारीरिक संबंध, वह अशांत, सुलगती आग, एक शुद्ध और उदात्त मित्रता की लौ में परिवर्तित हो जाने के साथ-साथ, उनकी अपवित्रता धीरे-धीरे कम होती गई और अंततः पूरी तरह लुप्त हो गई। श्रीमती विंटेइल की सहेली कभी-कभी इस विचार से चिंतित रहती थीं कि शायद उन्होंने विंटेइल की मृत्यु को शीघ्र कर दिया था। बहरहाल, उनके द्वारा छोड़े गए रहस्यमय ग्रंथ का वर्षों तक अध्ययन करके, उन अपठनीय चित्रलिपि के सही अर्थ को स्थापित करके, श्रीमती विंटेइल की सहेली को इस बात का संतोष मिला कि उन्होंने उस संगीतकार को, जिनके सफेद बालों को उन्होंने शोक में मृत्यु को विदा किया था, एक अमर और प्रतिपूरक गौरव प्रदान किया। जो रिश्ते कानूनों द्वारा पवित्र नहीं किए जाते, वे भी विवाह से उत्पन्न होने वाले रिश्तों की तुलना में कहीं अधिक बहुआयामी, जटिल और मजबूत बंधन स्थापित करते हैं। वास्तव में, ऐसे विशेष प्रकार के रिश्तों पर विचार किए बिना भी, क्या हम प्रतिदिन यह नहीं देखते कि जब व्यभिचार सच्चे प्रेम पर आधारित होता है, तो वह पारिवारिक भावनाओं और रिश्तेदारी के कर्तव्यों को ठेस नहीं पहुँचाता, बल्कि उन्हें पुनर्जीवित करता है। व्यभिचार उस रिश्ते में जान डाल देता है जिसे अक्सर विवाह बेजान बना देता है। एक नेक दिल लड़की जो केवल परंपरा के कारण अपनी माँ के दूसरे पति के लिए शोक मनाती है, उसके पास उस व्यक्ति के लिए पर्याप्त आँसू नहीं होते जिसे उसकी माँ ने पूरी दुनिया में से अपना प्रेमी चुना है। खैर, मैडम विंटेउइल ने केवल क्रूरता की भावना से प्रेरित होकर ऐसा किया था, जो उसे क्षमा नहीं करता, लेकिन बाद में ऐसा सोचने से मुझे कुछ सांत्वना मिली। मैंने मन ही मन सोचा, जब उसने और उसकी सहेली ने

अपने पिता की तस्वीर का अपमान किया, तो उसे ज़रूर यह एहसास हो गया होगा कि वे जो कर रही थीं वह महज़ कुटिलता और मूर्खता थी, न कि वह सच्ची और आनंददायक दुष्टता जिसे वह महसूस करना चाहती थी। यह विचार कि यह केवल दुष्टता का दिखावा था, उसके आनंद को भंग कर दिया। लेकिन अगर यह विचार बाद में उसके मन में फिर आया, तो जिस तरह इसने उसके आनंद को भंग किया था, उसी तरह इसने उसके दुःख को भी कम कर दिया होगा। "यह मैं नहीं थी," उसने खुद से कहा होगा, "मैं होश में नहीं थी। मैं अब भी अपने पिता की आत्मा के लिए प्रार्थना करना चाहती हूँ, उनकी क्षमा की उम्मीद नहीं छोड़ूँगी।" लेकिन यह संभव है कि यह विचार, जो निश्चित रूप से उसके आनंद में उसके मन में आया था, दुःख में उसके मन में न आया हो। मैं यह बात उसके मन में डालना चाहती थी। मुझे यकीन है कि मैं उसका भला कर सकती थी और उसके और उसके पिता की स्मृति के बीच एक सुखद संवाद स्थापित कर सकती थी।

जैसे किसी प्रतिभाशाली रसायनज्ञ की उन अस्पष्ट नोट-पुस्तकों में, जिन्हें मृत्यु का भय नहीं होता, वे ऐसी खोजें लिख लेते हैं जो शायद हमेशा के लिए अज्ञात ही रह जाएँगी, उसी प्रकार मैडम विंटेइल की सहेली ने, पपाइरस की पट्टियों से भी अधिक अस्पष्ट, कीलाकार लिपि से बिंदीदार कागजों से, इस अज्ञात आनंद के शाश्वत सत्य, सदा उर्वर, सूत्र को, भोर के लाल देवदूत की रहस्यमय आशा को, उजागर किया था। और मैं, जिसके लिए, शायद विंटेइल जितना नहीं, वह भी कुछ थी, आज शाम एक बार फिर अल्बर्टाइन के प्रति मेरी ईर्ष्या को फिर से जगाकर, वह भविष्य में कई कष्टों का कारण बनने वाली थी, उसी की बदौलत, क्षतिपूर्ति के रूप में, मेरे कानों तक वह विचित्र अपील पहुँच पाई जिसे मैं एक पल के लिए भी सुनना बंद नहीं करूँगा, एक वादे और प्रमाण के रूप में कि कुछ और भी मौजूद है, जिसे निस्संदेह कला द्वारा साकार किया जा सकता है, उस शून्यता के अलावा जो मैंने अपने सभी सुखों और प्रेम में पाई थी, और यह कि यदि मेरा जीवन मुझे इतना खाली लगता है, तो कम से कम अभी भी कुछ क्षेत्र अनछुए हैं।

उनके परिश्रम के फलस्वरूप हमें विंटेइल के बारे में जो कुछ जानने को मिला, वह सच कहें तो विंटेइल के संपूर्ण कार्य के बराबर था। इस सप्तक की तुलना में, सोनाटा के कुछ ऐसे वाक्यांश, जिन्हें केवल आम जनता ही जानती थी, इतने साधारण प्रतीत होते थे कि यह

समझना मुश्किल था कि वे इतनी प्रशंसा कैसे बटोर सकते थे। इसी प्रकार, हमें आश्चर्य होता है कि वर्षों से, 'ईवनिंग स्टार' या 'एलिज़ाबेथ की प्रार्थना' जैसी साधारण रचनाएँ भी संगीत सभागारों में ऐसे कट्टर प्रशंसकों को आकर्षित करती रही हैं, जो तालियाँ बजाते-बजाते और अंत में बार-बार 'और गाने की मांग' करते-करते थक जाते थे, जबकि अंततः ये रचनाएँ हमारे लिए, जो ट्रिस्टन, राइनगोल्ड और मीस्टरसिंगर को जानते हैं, तुच्छ और घिसी-पिटी लगती हैं। हम यह मानने को मजबूर हैं कि उन सरल धुनों में भी, अत्यंत सूक्ष्म मात्रा में, और शायद इसी कारण से अधिक आसानी से आत्मसात होने योग्य मात्रा में, उन उत्कृष्ट कृतियों की मौलिकता का अंश समाहित था, जो पीछे मुड़कर देखने पर केवल हमारे लिए ही महत्वपूर्ण हैं, लेकिन जिनकी पूर्णता ने शायद उन्हें समझने से रोक दिया हो। उन्होंने हमारे दिलों में उनके लिए रास्ता तैयार कर दिया है। फिर भी यह सच है कि, यदि उन्होंने आने वाली सुंदरताओं का एक अस्पष्ट पूर्वाभास दिया, तो उन्होंने उन्हें पूर्ण अस्पष्टता की स्थिति में छोड़ दिया। विंटेइल के साथ भी ऐसा ही हुआ; यदि अपनी मृत्यु के समय उन्होंने सोनाटा के कुछ हिस्सों को छोड़कर केवल वही छोड़ा होता जो वे पूरा कर पाए थे, तो उनके बारे में हम उनकी वास्तविक महानता के संदर्भ में उतना ही कम जानते जितना कि, मान लीजिए, विक्टर ह्यूगो के मामले में, यदि उनकी मृत्यु पास डी'आर्म्स डू रोई जीन, द फिआंसी डू टिंबालियर और सारा ला बैग्नेउज़ के बाद हुई होती, और उन्होंने लेजेंड डेस सिएकल्स या कंटेंप्लेशन्स की एक भी पंक्ति नहीं लिखी होती: उनका वास्तविक कार्य हमारे लिए विशुद्ध रूप से संभावित ही रहता, उतना ही अज्ञात जितना कि वे ब्रह्मांड जिनकी हमारी अनुभूति नहीं होती, जिनके बारे में हम कभी कोई विचार नहीं बना पाएंगे।

बहरहाल, प्रतिभा (यद्यपि और सद्गुण भी) और दुर्गुणों के आवरण के बीच का स्पष्ट विरोधाभास, वह गहरा जुड़ाव जिसमें, जैसा कि विंटेउइल के मामले में हुआ था, यह अक्सर समाहित और संरक्षित रहता है, एक लोकप्रिय रूपक की तरह, उन मेहमानों की सभा में स्पष्ट था जिनके बीच मैंने संगीत समाप्त होने के बाद खुद को एक बार फिर पाया। यह सभा, यद्यपि इस बार श्रीमती वर्दुरिन के ड्राइंग-रूम तक सीमित थी, कई अन्य सभाओं से मिलती-जुलती थी, जिनके तत्व आम जनता के लिए अज्ञात हैं, और जिन्हें दार्शनिक पत्रकार, यदि वे वास्तव में अच्छी तरह से सूचित हैं, तो पेरिसियन, या पनामिस्ट, या ड्रेफसार्ड कहते हैं, कभी यह संदेह

नहीं करते कि वे सेंट पीटर्सबर्ग, बर्लिन, मैड्रिड और हर युग में समान रूप से पाए जा सकते हैं; यदि वास्तव में ललित कला के अवर सचिव, एक कुशल कलाकार, सुसंस्कृत और बुद्धिमान, कई डचेस और तीन राजदूत अपनी पत्नियों के साथ आज शाम श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ उपस्थित थे। वर्दुरिन के अनुसार, उनकी उपस्थिति का तात्कालिक कारण एम. डी चार्लस और मोरेल के बीच के संबंध थे, जिनके कारण बैरन अपने युवा आदर्श की कलात्मक उपलब्धियों को यथासंभव व्यापक प्रसिद्धि दिलाने और उन्हें लीजन ऑफ ऑनर का क्रॉस दिलाने के लिए उत्सुक थे; इस सभा को संभव बनाने वाला दूरस्थ कारण यह था कि बैरन जिस प्रकार चार्ली के साथ रहते थे, उसी प्रकार मैडम विंटेइल के साथ रहने वाली एक लड़की ने प्रतिभा के कई उत्कृष्ट कार्यों को उजागर किया था, जो इतनी महत्वपूर्ण खोज थी कि जल्द ही शिक्षा मंत्री के संरक्षण में विंटेइल की प्रतिमा स्थापित करने के उद्देश्य से चंदा इकट्ठा किया जाना था। इसके अलावा, इन कार्यों में मैडम विंटेइल ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया था। विंटेइल के अपने मित्र के साथ संबंध, बैरन के चार्ली के साथ संबंध, एक तरह का चौराहा, एक शॉर्टकट, जिसके कारण दुनिया इन कृतियों को प्रारंभिक चरण में जाने बिना ही समझ पाई, भले ही यह समझ की कमी न हो जो लंबे समय तक बनी रहती, कम से कम उस पूर्ण अज्ञानता से तो ज़रूर जो वर्षों तक बनी रह सकती थी। जब भी कोई ऐसी घटना घटित होती है जो उपदेशक पत्रकार के सामान्य मानसिकता के दायरे में आती है, आमतौर पर कोई राजनीतिक घटना, तो उपदेशक पत्रकार आश्वस्त हो जाते हैं कि फ्रांस में कोई बड़ा बदलाव आया है, कि हम ऐसी शामें फिर कभी नहीं देखेंगे, कि इब्सन, रेनन, दोस्तोयेव्स्की, डी'अनुंजियो, टॉल्स्टॉय, वैगनर, स्ट्रॉस की प्रशंसा फिर कभी कोई नहीं करेगा। उपदेशक पत्रकार इन आधिकारिक अभिव्यक्तियों की अस्पष्ट अंतर्धाराओं से अपना आधार बनाते हैं, ताकि वहाँ सराही जाने वाली कला में कुछ पतित तत्व खोज सकें, जो अक्सर अन्य कलाओं की तुलना में अधिक कठोर होती है। लेकिन इन उपदेशक पत्रकारों द्वारा सबसे अधिक सम्मानित नामों में से ऐसा कोई नाम नहीं है जिसने स्वाभाविक रूप से इस तरह की किसी विचित्र सभा को जन्म न दिया हो, हालांकि इसकी विचित्रता शायद कम स्पष्ट और बेहतर ढंग से छिपी हुई रही हो। इस सभा के मामले में, इससे जुड़े अशुद्ध तत्वों ने मुझे एक अलग दृष्टिकोण से प्रभावित किया; निश्चित रूप से, मैं उन्हें अलग-अलग जानने के कारण, किसी और की तरह ही

उन्हें अलग करने में सक्षम था, लेकिन फिर भी ऐसा हुआ कि उनमें से कुछ, वे जो मैडम विंटेइल और उनकी सहेली से संबंधित थीं, मुझसे कॉम्ब्रे के बारे में बात करते हुए, मुझे अल्बर्टाइन, यानी बालबेक के बारे में भी बता रही थीं, क्योंकि मैंने बहुत पहले मैडम विंटेइल को देखा था। मोंटजोवेन में विंटेउइल से मिलने और अपनी सहेली की अल्बर्टाइन के साथ घनिष्ठता के बारे में जानने के बाद, मुझे पता चला कि जब मैं घर लौटूँगा, तो एकांत के बजाय अल्बर्टाइन मेरा इंतज़ार कर रही होगी, और अन्य लोग, जिनमें मोरेल और एम. डी चार्लस शामिल थे, मुझसे बालबेक के बारे में बात कर रहे थे, जहाँ मैंने डोंसिएरेस के चबूतरे पर उनकी घनिष्ठता की शुरुआत देखी थी, और मुझसे कॉम्ब्रे और उसके दो 'मार्गों' के बारे में बात कर रहे थे, क्योंकि एम. डी चार्लस उन गुएरमांटेस में से एक थे, कॉम्ब्रे के काउंट, जो कॉम्ब्रे में बिना किसी निवास के रहते थे, धरती और स्वर्ग के बीच, गिल्बर्ट द बैड की तरह अपनी खिड़की में: जबकि, मोरेल उस पुराने नौकर का बेटा था जिसने मुझे गुलाबी पोशाक वाली महिला से परिचित कराया था, और जिसने मुझे वर्षों बाद, उसे श्रीमती स्वान के रूप में पहचानने की अनुमति दी थी।

M. de Charlus ने वही गलती दोहराई, जो उन्होंने मेहमानों के आने पर की थी, जब संगीत खत्म होने के बाद, मेहमान उन्हें अलविदा कहने आए। उन्होंने मेहमानों से यह नहीं कहा कि वे अपनी मेज़बान से हाथ मिलाएँ, या उन्हें और उनके पति को भी उस तारीफ़ में शामिल करें जो सिर्फ़ उन्हीं पर बरसाई जा रही थी। वहाँ एक लंबी कतार लगी थी, लेकिन वह कतार सिर्फ़ बैरन तक ही जाती थी; इस बात का उन्हें ज़रूर एहसास रहा होगा, क्योंकि थोड़ी देर बाद उन्होंने मुझसे कहा: "इस कलात्मक समारोह का समापन 'वेस्टी में कुछ शब्द' कहने जैसे अंदाज़ में हुआ, जो काफ़ी मज़ेदार था।" मेहमानों ने अपनी तारीफ़ों को और लंबा खींचने के लिए इधर-उधर की बातें भी कीं, ताकि वे बैरन की मौजूदगी में थोड़ी देर और रुक सकें; जबकि जिन लोगों ने अभी तक पार्टी की सफलता पर उन्हें बधाई नहीं दी थी, वे पीछे थके-हारे खड़े इंतज़ार कर रहे थे। शायद एक-दो पतियों ने जाने की इच्छा ज़ाहिर की हो; लेकिन उनकी पत्नियों ने—जो एक डचेस होने के साथ-साथ दिखावा करने वाली भी थीं—विरोध करते हुए कहा: "नहीं, नहीं; भले ही हमें एक घंटा इंतज़ार करना पड़े, हम Palamède को धन्यवाद दिए बिना नहीं जा सकते, जिन्होंने इतनी मेहनत की है। अब कोई और ऐसा बचा ही नहीं है जो इस

तरह के शानदार समारोह आयोजित कर सके।" किसी के मन में भी Mme. Verdurin से परिचय करने का विचार नहीं आया होगा—ठीक वैसे ही, जैसे किसी थिएटर में मौजूद उस अटेंडेंट से परिचय करने का विचार नहीं आता, जहाँ कोई बड़ी हस्ती एक शाम के लिए पूरे कुलीन वर्ग को ले आई हो। "क्या आप कल Eliane de Montmorency की पार्टी में गई थीं, चचेरी बहन?" Mme. de Mortemart ने बातचीत को और लंबा खींचने का बहाना ढूँढ़ते हुए पूछा। "हे भगवान, नहीं! मुझे Eliane पसंद है, लेकिन मुझे उसके निमंत्रण कभी समझ नहीं आते। मुझे लगता है कि मैं बहुत बेवकूफ़ हूँ," उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए, होंठों पर एक चौड़ी मुस्कान बिखेर दी; वहीं Mme. de Mortemart को एहसास हो गया था कि अब उन्हें 'Palamède के खास अंदाज़' का पहला अनुभव मिलने वाला है—ठीक वैसे ही, जैसे उन्हें अक्सर 'Oriane के खास अंदाज़' का अनुभव मिलता रहा था। "हाँ, मुझे सच में दो हफ़्ते पहले प्यारी Eliane की तरफ़ से एक कार्ड मिला था। 'Montmorency' नाम के ऊपर—जिसकी प्रामाणिकता पर थोड़ा शक था—यह प्यारा-सा निमंत्रण लिखा था: 'मेरी प्यारी चचेरी बहन, क्या तुम अगले शुक्रवार को रात साढ़े नौ बजे मुझे याद करोगी?'" उसके नीचे दो कम संतोषजनक शब्द लिखे थे: 'चेक चौकड़ी' (Czech Quartet)। ये शब्द मुझे समझ से बाहर लगे, और वैसे भी, इनका ऊपर लिखे वाक्य से कोई ज़्यादा लेना-देना नहीं था—ठीक वैसे ही, जैसे किसी चिट्ठी के पीछे लिखे शब्द 'मेरे प्रिय ——' का होता है; जिनके आगे कुछ और नहीं लिखा होता, क्योंकि लिखने वाला दूसरी तरफ लिखना शुरू कर चुका होता है, और उसने या तो लापरवाही में, या कागज़ बचाने के लिए, कोई नई शीट नहीं ली होती। मैं एलियन को पसंद करता हूँ: इसलिए मुझे कोई झुंझलाहट नहीं हुई; मैंने बस 'चेक चौकड़ी' के उस अजीब और बेतुके ज़िक्र को नज़रअंदाज़ कर दिया। और, क्योंकि मैं एक कायदे-कानून से चलने वाला इंसान हूँ, इसलिए मैंने अपनी चिमनी के ऊपर वह निमंत्रण-पत्र रख दिया, जिसमें शुक्रवार को साढ़े नौ बजे मैडम डी मोंटमोरेंसी को याद करने की बात लिखी थी। हालाँकि मैं अपने आज्ञाकारी, समय का पाबंद और विनम्र स्वभाव के लिए मशहूर हूँ—जैसा कि बफ़न ऊँट के बारे में कहते हैं—"इस बात पर, एम. डी चार्लस के चेहरे से हँसी फूट पड़ी; वह जानते थे कि असल में तो लोग उन्हें साथ रहने के लिए सबसे मुश्किल इंसान मानते थे"—"मैं कुछ मिनट देर से पहुँचा (कपड़े बदलने में मुझे कुछ मिनट लग गए)। और बिना किसी खास पछतावे के

—यह सोचते हुए कि 'साढ़े नौ' का मतलब 'दस' ही होता है—ठीक दस बजे, एक आरामदायक ड्रेसिंग-गाउन पहने और पैरों में गर्म चप्पलें डाले, मैं अपनी चिमनी के पास बैठ गया। मैंने एलियन को ठीक वैसे ही याद किया, जैसा उसने मुझसे कहा था; और मेरा ध्यान तब तक नहीं भटका, जब तक कि घड़ी में साढ़े दस नहीं बज गए। कृपया उसे बता देना कि मैंने उसकी उस 'गुस्ताख़' (बोल्ड) गुज़ारिश का पूरी तरह से पालन किया। मुझे यकीन है कि उसे यह जानकर बहुत अच्छा लगेगा।" मैडम डी मोर्टेमार्ट हँसी के मारे बेहाल हो गईं, और एम. डी चार्लस भी उनके साथ हँसने लगे। "और कल," वह आगे बोलीं—यह भूलते हुए कि वह पहले ही अपने लिए तय समय-सीमा से काफी ज़्यादा बोल चुकी थीं—"क्या आप हमारे ला रोशफ़ूको कज़न्स (चचेरे-मौसेरे भाई-बहनों) के यहाँ जा रहे हैं?" "ओह, वह तो अब बिल्कुल ही नामुमकिन है। उन्होंने मुझे—और जैसा कि मैं देख रहा हूँ, आपको भी—एक ऐसी चीज़ के लिए बुलाया है, जिसकी कल्पना करना भी असंभव है। अगर मैं उनके निमंत्रण-पत्र पर यकीन करूँ, तो उस चीज़ का नाम है—'डांसिंग टी' (नाच-गाने वाली चाय-पार्टी)!" जब मैं जवान था, तो मुझे काफी फुर्तीला माना जाता था, लेकिन मुझे शक है कि क्या मैं नाचते हुए कभी ठीक से एक कप चाय पी पाता। नहीं, मुझे कभी भी अजीब-गरीब स्थितियों में खाने-पीने का शौक नहीं रहा। आप मुझे याद दिलाएँगे कि मेरे नाचने-गाने के दिन अब लद चुके हैं। लेकिन, आराम से बैठकर अपनी चाय पीते हुए भी—जिसकी गुणवत्ता पर मुझे शक है, क्योंकि इसे 'डांसिंग' चाय कहा जाता है—मुझे इस बात का डर रहेगा कि कहीं दूसरे मेहमान, जो मुझसे उम्र में छोटे हैं (और शायद अपनी जवानी में मुझसे कम फुर्तीले रहे होंगे), अपनी चाय के कप मेरे कपड़ों पर न गिरा दें; जिससे मेरी अपनी चाय पीने के आनंद में खलल पड़ जाएगा। और सच कहूँ तो, एम. डी शार्लस सिर्फ़ मैडम वर्दुरिन को बातचीत से बाहर रखने से ही संतुष्ट नहीं थे; वे हर तरह के विषयों पर बात करते थे, जिन्हें विस्तार देने और उनमें विविधता लाने में उन्हें बड़ा मज़ा आता था—वह क्रूर आनंद, जिसका वे हमेशा से लुत्फ़ उठाते आए थे: अपने उन दोस्तों को अनिश्चित काल तक पैरों पर खड़ा रखना, जो अपनी बारी आने का इंतज़ार बड़ी ही सब्र-आज़मा (कष्टदायक) बेसब्री से कर रहे होते थे। उन्होंने तो मनोरंजन के उस पूरे हिस्से की भी आलोचना की, जिसकी ज़िम्मेदारी मैडम वर्दुरिन पर थी। "लेकिन, कपों की बात चली ही है, तो

ज़रा बताइए कि ये अजीब-सी छोटी-छोटी कटोरियाँ आख़िर हैं क्या? ये मुझे उन बर्तनों की याद दिलाती हैं, जिनमें—जब मैं जवान था—लोग..."

"मैं Poiré–Blanche से सोरबे (sorbets) मंगवाया करता था। अभी-अभी किसी ने मुझसे कहा कि ये 'आइसड कॉफ़ी' के लिए हैं। लेकिन अगर बात यहाँ तक आ गई है, तो मैंने न तो कॉफ़ी देखी है और न ही बर्फ़। कितनी अजीब छोटी-छोटी चीज़ें हैं—बहुत ही अस्पष्ट।" यह कहते हुए M. de Charlus ने अपने सफ़ेद दस्ताने पहने हाथों को अपने होठों पर सीधा रखा और अपनी इशारा करने वाली नज़र को विनम्रता से सीमित कर लिया, मानो उन्हें डर हो कि उनके मेज़बान और मेज़बान-पत्नी उन्हें सुन लेंगे, या देख भी लेंगे। लेकिन यह महज़ एक दिखावा था, क्योंकि कुछ ही मिनटों में वह मालकिन से ही यही आलोचनाएँ कर रहे होंगे, और थोड़ी देर बाद ढिठाई से यह हिदायत देंगे: "अब और आइसड-कॉफ़ी कप नहीं, याद रखना! इन्हें अपनी किसी ऐसी सहेली को दे देना जिसके घर को तुम बदसूरत बनाना चाहती हो। लेकिन उसे चेतावनी दे देना कि वह इन्हें ड्राइंग-रूम में न रखे, वरना लोग सोच सकते हैं कि वे ग़लत कमरे में आ गए हैं; ये चीज़ें बिल्कुल 'चैंबरपॉट' (रात में इस्तेमाल होने वाले बर्तन) जैसी दिखती हैं।" "लेकिन, कज़िन," मेहमान ने भी अपनी आवाज़ धीमी करते हुए और M. de Charlus पर एक सवालिया नज़र डालते हुए कहा—क्योंकि उसे Mme. Verdurin को नहीं, बल्कि उन्हें नाराज़ करने का डर था—"शायद उसे अभी पूरी तरह पता नहीं है..." "उसे सिखाया जाएगा।" "ओह!" मेहमान हँसी, "उसे इससे बेहतर शिक्षक नहीं मिल सकता! वह कितनी खुशकिस्मत है! अगर आप ज़िम्मेदारी संभाल रहे हैं, तो इस बात का पक्का भरोसा किया जा सकता है कि कोई भी 'बेसुरापन' नहीं होगा।" "अगर बात संगीत की करें, तो उसमें भी कोई बेसुरापन नहीं था।" "ओह! वह तो बहुत ही शानदार था। उन सुखों में से एक जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।" "उस शानदार वायलिन वादक की बात करें," वह आगे बोलीं, अपनी नादानी में यह सोचते हुए कि M. de Charlus को वायलिन में 'पूरी तरह से और सीधे तौर पर' दिलचस्पी है, "क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसे मैंने कुछ दिन पहले Fauré का एक सोनाटा बहुत ही अद्भुत ढंग से बजाते हुए सुना था? उसका नाम Frank है..." "ओह, वह तो एक आफ़त है," M. de Charlus ने जवाब दिया, उस असभ्यता को नज़रअंदाज़ करते हुए जो उनके खंडन में छिपी थी—जिसका मतलब यह था कि उनकी चचेरी बहन में

'सलीके' की कमी है। "जहाँ तक वायलिन वादकों का सवाल है, मैं आपको सलाह दूँगा कि आप केवल मेरे वायलिन वादक तक ही सीमित रहें।" इस बात ने M. de Charlus और उनकी चचेरी बहन के बीच नज़रों के एक नए आदान-प्रदान का रास्ता खोल दिया—जो एक ही समय पर चोरी-छिपे और बारीकी से एक-दूसरे को जाँचने वाला था; क्योंकि, शरमाते हुए और अपनी गलती का प्रायश्चित करने की कोशिश में, Mme. de Mortemart ने M. de Charlus को सुझाव दिया कि वह एक पार्टी दे सकती हैं, ताकि लोग Morel को बजाते हुए सुन सकें। अब, जहाँ तक उनका सवाल था, इस पार्टी का उद्देश्य किसी अनजान प्रतिभा को सुर्खियों में लाना नहीं था—एक ऐसा उद्देश्य जिसका दिखावा तो वह करतीं, लेकिन जो असल में M. de Charlus का उद्देश्य था। वह इसे केवल एक बहुत ही शानदार पार्टी देने के अवसर के रूप में देख रही थीं, और मन ही मन हिसाब लगा रही थीं कि वह किसे आमंत्रित करेंगी और किसे नहीं। चयन का यह काम—जो पार्टियाँ देने वाले लोगों (यहाँ तक कि उन लोगों का भी जिन्हें 'सोसाइटी' के पत्रकार इतनी ढिठाई या मूर्खता से 'अभिजात वर्ग' कहते हैं) की मुख्य चिंता होती है—किसी भी सम्मोहन सुझाव से कहीं ज़्यादा गहराई से एक मेज़बान के चेहरे के हाव-भाव—और यहाँ तक कि उसकी लिखावट—को भी तुरंत बदल देता है। इससे पहले कि वह यह सोच पातीं कि Morel क्या बजाएगा (जिसे वह—और सही ही—एक गौण बात मानती थीं, क्योंकि अगर उस शाम M. de Charlus के डर से हर कोई संगीत के दौरान शिष्टतापूर्ण चुप्पी भी साधे रखता, तब भी किसी के मन में उसे सचमुच सुनने का विचार कभी नहीं आता), Mme. de Mortemart ने—यह तय करने के बाद कि Mme. de Valcourt उन 'चुने हुए लोगों' में शामिल नहीं होंगी—अपने आप ही एक ऐसी 'साज़िश' या 'गुप्त योजना' वाला रवैया अपना लिया, जो समाज की उन महिलाओं को भी नीचा दिखाता है जो यह परवाह न करने की सबसे ज़्यादा हैसियत रखती हैं कि 'लोग क्या कहेंगे'। "क्या यह मुमकिन नहीं होगा कि मैं एक पार्टी दूँ, ताकि लोग आपके दोस्त को बजाते हुए सुन सकें?" Mme. de Mortemart ने दबी आवाज़ में कहा, जो—हालाँकि वह विशेष रूप से M. de Charlus को ही संबोधित कर रही थीं— M. de Charlus, मानो किसी जादू के असर में हों, Mme. de Valcourt (जिन्हें नज़रअंदाज़ किया गया था) पर एक नज़र डालने से खुद को रोक नहीं पाए, ताकि यह पक्का कर सकें कि वह दूसरी महिला इतनी दूर है कि उनकी बातें सुन नहीं सकती। "नहीं, वह मेरी

बातें बिल्कुल नहीं सुन सकती," Mme. de Mortemart ने मन ही मन सोचा; अपनी ही नज़र से उन्हें तसल्ली मिल गई थी—हालाँकि असल में उनकी उस नज़र का Mme. de Valcourt पर बिल्कुल ही अलग असर हुआ था, जैसा उन्होंने सोचा भी नहीं था: "अरे," Mme. de Valcourt ने खुद से कहा, जब उनकी नज़रें मिलीं, "Marie–Thérèse, Palamède के साथ मिलकर कुछ ऐसा प्लान बना रही है जिसके बारे में मुझे नहीं बताया जाना है।" "तुम्हारा मतलब है, मेरा 'प्रोटेजी' (संरक्षित व्यक्ति)," M. de Charlus ने उन्हें टोका; वह अपनी चचेरी बहन के शब्दों के चुनाव को लेकर उतने ही निर्मम थे, जितने कि उसकी संगीत की प्रतिभा को लेकर। फिर, उसकी खामोश मिन्नतों पर ज़रा भी ध्यान दिए बिना—जब वह मुस्कुराते हुए माफी मांग रही थी—उन्होंने ऊँची आवाज़ में कहा, जो पूरे कमरे में गूँज गई: "अरे, हाँ..." उन्होंने कहा, "हालाँकि इस तरह किसी आकर्षक व्यक्तित्व को ऐसे माहौल में ले जाने में हमेशा एक खतरा रहता है, जहाँ उसके असाधारण गुण निश्चित रूप से कमज़ोर पड़ जाएँगे, और जिसे किसी भी हाल में उस व्यक्तित्व के हिसाब से ढलना ही पड़ेगा।" Madame de Mortemart ने मन ही मन सोचा कि उनकी बात का वह फुसफुसाहट भरा अंदाज़—सवाल पूछने का वह धीमा स्वर—बिल्कुल बेकार गया; क्योंकि जवाब तो मानो किसी मेगाफोन से चीखकर दिया गया था। लेकिन उनका सोचना गलत था। Mme. de Valcourt ने कुछ भी नहीं सुना, और इसकी सीधी सी वजह यह थी कि उसे एक भी शब्द समझ में नहीं आया। उसकी घबराहट कम हो गई, और अगर Mme. de Mortemart को यह डर न होता कि कहीं उनकी पोल न खुल जाए—और अगर उन्हें इस बात का डर न होता कि...

मैडम डी वालकॉर्ट को बुलाना उसकी मजबूरी थी—जिनसे उसके इतने गहरे संबंध थे कि अगर उन्हें पार्टी के बारे में पहले से पता चल जाता, तो वह उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी—इसलिए उसने एक बार फिर एडिथ की तरफ़ अपनी पलकें उठाईं, मानो किसी आने वाले ख़तरे पर नज़र रख रही हो; और फिर तुरंत ही उन्हें नीचे कर लिया, ताकि उसकी मंशा ज़ाहिर न हो जाए। उसका इरादा था कि पार्टी के अगली सुबह वह एडिथ को एक ऐसा ख़त लिखेगी—जो उसकी उस भेद खोलने वाली नज़र का ही पूरक होगा—एक ऐसा ख़त जिसे लोग भले ही बहुत बारीक या कूटनीतिक समझें, लेकिन जो असल में एक पूरे और दस्तख़त किए हुए इक़बालनामे जैसा ही होता है। उदाहरण के लिए: "प्रिय एडिथ, मुझे तुम्हारे लिए

बहुत अफ़सोस है; मुझे सच में कल रात तुम्हारी उम्मीद नहीं थी" ("वह मुझसे उम्मीद कैसे कर सकती थी?" एडिथ मन ही मन सोचती, "जब उसने मुझे कभी बुलाया ही नहीं?") "क्योंकि मुझे पता है कि तुम्हें इस तरह की पार्टियाँ ज़्यादा पसंद नहीं हैं, बल्कि वे तुम्हें बोर करती हैं। फिर भी, अगर तुम आतीं तो तुम्हारी मौजूदगी से हमें बहुत सम्मान मिलता" (मैडम डी मोर्टेमार्ट 'सम्मान' शब्द का इस्तेमाल कभी नहीं करती थीं, सिवाय उन ख़तों के जिनमें वह किसी झूठ को सच का जामा पहनाने की कोशिश करती थीं)। "तुम जानती हो कि हमारा घर हमेशा तुम्हारा ही घर है; फिर भी, तुमने जो किया वह बिल्कुल सही था, क्योंकि वह पार्टी पूरी तरह से फ़्लॉप रही—ठीक वैसे ही, जैसे कि अचानक, बिना किसी तैयारी के की गई हर चीज़ फ़्लॉप होती है।" लेकिन एडिथ ने पहले ही उसकी तरफ़ डाली गई दूसरी चोरी-छिपे वाली नज़र से वह सब कुछ भाँप लिया था, जो एम. डी चार्लस की उस पेचीदा भाषा के पीछे छिपा हुआ था। वह नज़र इतनी तीखी और ज़ोरदार थी कि, जब वह मैडम डी वालकॉर्ट पर पड़ी, तो उसमें छिपी साफ़-साफ़ दिखने वाली गोपनीयता और शरारती मंशा, उछलकर एक युवा पेरूवासी पर जा पड़ी—जिसे मैडम डी मोर्टेमार्ट, इसके ठीक विपरीत, अपनी पार्टी में बुलाने का इरादा रखती थीं। लेकिन उस पेरूवासी का स्वभाव कुछ शक्की था; उसने उस रहस्य को बहुत साफ़-साफ़ होते हुए देख लिया—बिना यह समझे कि वह रहस्य उसे भ्रमित करने के लिए नहीं रचा गया था—और नतीजतन, उसके मन में मैडम के प्रति तुरंत ही एक ज़बरदस्त नफ़रत पैदा हो गई। डी मोर्टेमार्ट और उस पर हर तरह की शरारतें करने पर आमादा था—जैसे, जिस दिन वह कोई पार्टी नहीं दे रही होती, उस दिन उसके घर पचास आइस्ड कॉफ़ी भिजवा देना; या, जब वह पार्टी दे रही होती, तो अख़बारों में एक पैराग्राफ़ छपवा देना जिसमें यह घोषणा हो कि पार्टी स्थगित कर दी गई है; और उसकी दूसरी पार्टियों के बारे में झूठी रिपोर्टें प्रकाशित करना, जिनमें उन सभी बदनाम लोगों के नाम शामिल होते जिन्हें, अलग-अलग कारणों से, कोई मेज़बान न तो आमंत्रित करती है और न ही उनसे अपना परिचय होने देती है। मादाम डी मोर्टेमार्ट को मादाम डी वालकोर्ट के बारे में चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। एम. डी चार्लस उस प्रस्तावित पार्टी को—दूसरे की मौजूदगी से कहीं ज़्यादा असरदार ढंग से—खराब करने ही वाला था। "लेकिन, मेरी प्यारी चचेरी बहन," उसने 'माहौल को अपने हिसाब से ढालने' वाली बात के जवाब में कहा—जिसका अर्थ, उसकी उस पल की

अत्यधिक संवेदनशीलता (hyperaesthesia) की स्थिति के कारण, वह समझ गई थी—"हम तुम्हें सारी तकलीफ़ से बचा लेंगे। मैं गिल्बर्ट से सब कुछ व्यवस्थित करवाने की ज़िम्मेदारी लेती हूँ।" "बिल्कुल नहीं, और खासकर इसलिए भी क्योंकि उसे तो आमंत्रित ही नहीं किया जाना है। मेरे अलावा कोई और कुछ भी व्यवस्थित नहीं कर सकता। सबसे पहली बात तो यह है कि उन सभी लोगों को बाहर रखा जाए जिनके कान तो हैं, पर वे सुनते नहीं।" एम. डी चार्लस की चचेरी बहन—जो मोरेल को एक आकर्षण के तौर पर इस्तेमाल करके एक ऐसी पार्टी देने की सोच रही थी जिसमें वह यह कह सके कि, अपनी कई अन्य रिश्तेदारों के विपरीत, उसे 'पालामेदे' (Palamède) को बुलाने का सौभाग्य मिला है—अचानक अपने विचारों को एम. डी चार्लस की इस प्रतिष्ठा से हटाकर उन तमाम तरह के लोगों की ओर ले गई, जिनके कारण एम. डी चार्लस, अगर मेहमानों की सूची में दखल देने लगा, तो उसे मुश्किल में डाल सकता था। यह विचार कि प्रिंस डी गुएरमांटेस (जिनके कारण ही, कुछ हद तक, वह मादाम डी वालकोर्ट को पार्टी से बाहर रखने को उत्सुक थी—क्योंकि प्रिंस ने मादाम से मिलने से इनकार कर दिया था) को आमंत्रित नहीं किया जाना है, उसे घबरा गया। उसकी आँखों में बेचैनी के भाव आ गए। "क्या यह रोशनी—जो थोड़ी ज़्यादा तेज़ है—तुम्हें परेशान कर रही है?" एम. डी चार्लस ने ऐसी ऊपरी गंभीरता के साथ पूछा, जिसकी तह में छिपे व्यंग्य को वह समझ नहीं पाई। "नहीं, बिल्कुल नहीं; मैं तो उस मुश्किल के बारे में सोच रही थी—ज़ाहिर है, अपने लिए नहीं, बल्कि अपने परिवार के लिए—जो तब खड़ी हो जाएगी अगर गिल्बर्ट को यह पता चला कि मैंने उसे आमंत्रित किए बिना ही पार्टी दे दी, जबकि वह तो अपने घर की छत पर एक बिल्ली को भी तब तक नहीं चढ़ने देता जब तक कि..." "हाँ, बिल्कुल, हमें शुरुआत छत पर बैठी उस बिल्ली को हटाने से करनी चाहिए, जो बस 'म्याऊँ' ही कर सकती थी; मुझे लगता है कि बातचीत के शोर-शराबे में आप यह समझ ही नहीं पाईं कि यहाँ बात एक मेज़बान के तौर पर शिष्टाचार निभाने की नहीं, बल्कि किसी भी सच्चे उत्सव में निभाई जाने वाली पारंपरिक रस्मों को पूरा करने की थी।" फिर, यह सोचकर नहीं कि अगली बारी वाले व्यक्ति को बहुत ज़्यादा इंतज़ार करवाया गया है, बल्कि यह सोचकर कि उस व्यक्ति पर ज़रूरत से ज़्यादा मेहरबानी दिखाना ठीक नहीं होगा—जिसके मन में मोरेल से ज़्यादा अपनी 'विज़िटिंग-लिस्ट' (मिलने-जुलने वालों की सूची) ही चल रही थी—एम. डी चार्लस ने, ठीक उस

डॉक्टर की तरह जो यह महसूस होते ही कि परामर्श का समय पूरा हो गया है, उसे बीच में ही रोक देता है, अपनी चचेरी बहन को वहाँ से जाने का इशारा किया; उन्होंने उसे 'शुभ रात्रि' कहकर विदा नहीं किया, बल्कि सीधे उसके ठीक पीछे खड़े व्यक्ति की ओर मुड़ गए। "शुभ संध्या, मैडम डी मोंटेस्क्यू, यह सब कितना शानदार रहा, है ना? मेरी हेलेन से मुलाक़ात नहीं हो पाई, उसे मेरा यह संदेश दीजिएगा कि हर तरह के 'आम परहेज़' (यानी किसी चीज़ से दूर रहने के फ़ैसले)—भले ही वह कितना ही नेक क्यों न हो, जैसा कि हेलेन का अपना फ़ैसला है—में कुछ अपवादों की गुंजाइश ज़रूर होनी चाहिए; बशर्ते वे अपवाद बेहद शानदार हों, ठीक वैसे ही जैसा कि आज रात देखने को मिला। खुद को 'दुर्लभ' (यानी आसानी से उपलब्ध न होने वाला) साबित करना तो अच्छी बात है, लेकिन अपनी उस 'दुर्लभता' को—जो कि असल में एक नकारात्मक चीज़ ही है—किसी 'कीमती' चीज़ के आगे गौण (कम महत्वपूर्ण) मान लेना, उससे भी कहीं ज़्यादा बेहतर है। आपकी बहन के मामले में—और मैं तो किसी भी अन्य व्यक्ति के मुक़ाबले उसकी..."

उन जगहों से जान-बूझकर दूर रहना जहाँ उसे जो मिलता है, वह उसके लायक नहीं होता; इसके विपरीत, आज रात यहाँ, इस तरह की यादगार प्रदर्शनी में उसकी मौजूदगी एक सम्मान की बात होती, और तुम्हारी बहन को—जो पहले से ही इतनी मशहूर है—एक और खास पहचान दिलाती।" फिर वह एक तीसरे व्यक्ति की ओर मुड़ा, एम. डी'आर्जेनकोर्ट। मैं इस कमरे में उसे देखकर बहुत हैरान था—एम. डी चार्लस के प्रति वह यहाँ जितना दोस्ताना और तारीफ़ करने वाला था, दूसरी जगहों पर उतना ही सख़्त होता था; वह ज़ोर देकर कह रहा था कि मोरेल से उसकी जान-पहचान कराई जाए, और उससे कह रहा था कि उसे उम्मीद है कि वह उससे मिलने आएगा—यह था एम. डी'आर्जेनकोर्ट, जो एम. डी चार्लस जैसे लोगों के लिए एक भयानक आफ़त जैसा था। उस समय वह उन्हीं लोगों के बीच रह रहा था। ऐसा इसलिए बिल्कुल नहीं था कि वह किसी भी तरह से खुद उन्हीं लोगों में से एक बन गया था। बल्कि कुछ समय से उसने अपनी पत्नी को लगभग छोड़ ही दिया था और समाज की एक जवान औरत के पीछे पड़ गया था, जिसे वह बहुत चाहता था। वह औरत खुद भी बहुत समझदार थी, इसलिए उसने एम. डी'आर्जेनकोर्ट में भी समझदार लोगों को पसंद करने का शौक जगा दिया था, और वह एम. डी चार्लस को अपने घर बुलाने के लिए बहुत बेताब थी। लेकिन सबसे बढ़कर, एम.

डी'आर्जेनकोर्ट—जो बेहद ईर्ष्यालु था और जिसकी मर्दानगी भी कुछ खास नहीं थी—यह महसूस करता था कि वह अपनी प्रेमिका को पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर पा रहा है; इसलिए वह उसे लोगों से मिलवाने और उसका मनोरंजन करने के लिए बेचैन रहता था, और ऐसा वह अपने लिए बिना किसी खतरे के तभी कर सकता था, जब वह अपनी प्रेमिका के आस-पास ऐसे पुरुषों को रखे जिनसे उसे कोई खतरा न हो—इस तरह उसने उन पुरुषों को अपनी प्रेमिका की रखवाली करने वालों की भूमिका सौंप दी थी। उन पुरुषों को लगा कि एम. डी'आर्जेनकोर्ट अब काफी अच्छा इंसान बन गया है, और उन्होंने कहा कि वह उनकी सोच से कहीं ज़्यादा समझदार है—इस बात का पता चलने पर एम. डी'आर्जेनकोर्ट और उसकी प्रेमिका, दोनों ही बहुत खुश हुए।

एम. डी चार्लस के शेष अतिथि बड़ी तेज़ी से चले गए। उनमें से कई ने कहा: "मैं वेस्टरी (वह छोटा कमरा जिसमें बैरन, चार्ली के साथ, बधाई स्वीकार कर रहे थे, और जिसे उन्होंने स्वयं यह नाम दिया था) में नहीं जाना चाहता, लेकिन मुझे पलामेडे को दिखाना होगा ताकि उन्हें पता चले कि मैं अंत तक रुका रहा।" किसी ने भी श्रीमती वर्दुरिन पर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। कुछ ने यह दिखावा किया कि वे उन्हें नहीं जानते और गलती से श्रीमती कॉटार्ड को शुभ रात्रि कह दिया, और मुझसे पुष्टि के लिए पूछा, "क्या यह श्रीमती वर्दुरिन हैं?" श्रीमती डी अर्पाजोन ने हमारी मेज़बान के सामने मुझसे पूछा: "मुझे बताइए, क्या कभी कोई श्री वर्दुरिन थे?" डचेस को इस जगह पर कोई विचित्रता नहीं मिली, जिसकी उन्हें उम्मीद थी, और जिसे वे अपने पहले से परिचित किसी भी चीज़ से अधिक अलग पाने की आशा कर रही थीं, इसलिए उन्होंने एल्स्टिर के चित्रों के सामने ठहाके लगाकर इस स्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश की; बाकी सभी मनोरंजन के लिए, जो उन्हें उनकी परिचित शैली के अनुरूप उम्मीद से कहीं अधिक उपयुक्त लगा, उन्होंने एम. डी चार्लस को श्रेय देते हुए कहा: "पालामेडे चीजों को व्यवस्थित करने में कितने चतुर हैं; अगर वे किसी अस्तबल या स्नानघर में भी ओपेरा का मंचन करें, तो भी वह बेहद आकर्षक होगा।" सबसे कुलीन महिलाएं वे थीं जिन्होंने एम. डी चार्लस को पार्टी की सफलता पर बधाई देने में सबसे अधिक उत्साह दिखाया, जिसके गुप्त उद्देश्य से उनमें से कुछ अनजान नहीं थीं, फिर भी इस बात से शर्मिंदा नहीं थीं कि समाज का यह वर्ग—

शायद इतिहास के कुछ युगों को याद करते हुए जब उनका अपना परिवार भी इसी तरह की निर्भीकता और बेशर्मी के स्तर तक पहुँच चुका था—नैतिकता के प्रति अपने सम्मान के लगभग बराबर ही अवमानना कर रहा था। उनमें से कई ने चार्ली को अलग-अलग शामों के लिए तुरंत बुक कर लिया, जिन शामों में उन्हें विंटेइल का सप्तक बजाना था, लेकिन उनमें से किसी को भी श्रीमती वर्दुरिन को आमंत्रित करने का विचार नहीं आया। यह आखिरी महिला पहले से ही क्रोध से अंधी हो चुकी थी, तभी एम. डी चार्लस, जो अपने ख्यालों में खोया हुआ था और उसकी हालत को समझ नहीं पा रहा था, ने सोचा कि मालकिन को अपनी खुशी में शामिल करना ही उचित होगा। और शायद अपने साहित्यिक संशय के कारण, न कि अहंकार के कारण, कलात्मक मनोरंजन के इस विशेषज्ञ ने श्रीमती से कहा... वर्दुरिन: "अच्छा, क्या आप संतुष्ट हैं? मुझे लगता है कि आपके पास संतुष्ट होने का कारण है; आप देख रहे हैं कि जब मैं कोई पार्टी आयोजित करने का काम शुरू करता हूँ तो उसमें कोई कमी नहीं छोड़ता। मुझे नहीं पता कि आपका राजसी ज्ञान आपको इस आयोजन के सटीक महत्व, मेरे द्वारा उठाए गए भार और आपके लिए की गई मेहनत को समझने में सक्षम बनाता है या नहीं। आपके यहाँ नेपल्स की रानी, बवेरिया के राजा के भाई और तीन प्रमुख सरदार उपस्थित थे। यदि विंटेउइल मुहम्मद हैं, तो हम कह सकते हैं कि हम उनके लिए कुछ सबसे कम हिलने वाले पहाड़ों को लेकर आए हैं। ध्यान रखें कि आपकी पार्टी में शामिल होने के लिए नेपल्स की रानी न्यूइली से आई हैं, जो उनके लिए दो सिसिली को खाली करने से कहीं अधिक कठिन है," रानी के प्रति अपनी प्रशंसा के बावजूद, उन्होंने जानबूझकर व्यंग्य करते हुए कहा। "यह एक ऐतिहासिक घटना है। ज़रा सोचिए कि गैटा के पतन के बाद शायद यह पहली बार है जब वह कहीं गई हैं। संभव है कि तिथियों के शब्दकोश गैटा के पतन और वर्दुरिन परिवार के पतन के दिन को महत्वपूर्ण घटनाओं के रूप में दर्ज करेंगे। विंटेइल की सराहना करने के लिए उन्होंने जो पंखा नीचे रख दिया था, वह उस पंखे से कहीं अधिक प्रसिद्ध होने का हकदार है जिसे श्रीमती डी मेटर्निच ने वैगनर पर दर्शकों की हूटिंग के कारण तोड़ दिया था।" "अरे, उन्होंने इसे यहीं छोड़ दिया है," श्रीमती वर्दुरिन ने रानी की अपने प्रति दयालुता की याद से क्षण भर के लिए शांत होते हुए कहा, और उन्होंने एम. डी चार्लस को कुर्सी पर पड़ा पंखा दिखाया। "ओह! कितना मार्मिक दृश्य!" एम. डी चार्लस ने श्रद्धापूर्वक उस अवशेष के पास आते हुए कहा। "यह और

भी मार्मिक है, क्योंकि यह इतना भयानक है; बेचारी छोटी वायलेट अविश्वसनीय है!" और उनके भीतर भावनाओं और व्यंग्य के झटके बारी-बारी से दौड़ पड़े। "अरे बाप रे, मुझे नहीं पता कि आप भी मेरी तरह ही सोचते हैं या नहीं। स्वान तो इसे देखकर ज़रूर मर ही जाता। मुझे पूरा यकीन है, चाहे जो भी कीमत मिले, मैं रानी की नीलामी में पंखा ज़रूर खरीद लूंगा। क्योंकि रानी तो बिकने ही वाली है, उसके पास एक पैसा भी नहीं है," वह बोलता रहा, क्योंकि वह कभी भी सबसे कड़वी निंदाओं के बीच सबसे सच्ची श्रद्धा को मिलाने से नहीं रुकता था, हालांकि ये दो विपरीत स्वभावों से उपजी थीं, जो उसमें एक साथ मौजूद थे। यहां तक कि एक ही घटना पर बारी-बारी से इनका प्रयोग भी किया जा सकता था। एम. डी चार्लस, जो एक धनी व्यक्ति के रूप में अपनी सुख-सुविधाओं में रानी की गरीबी का उपहास उड़ाते थे, स्वयं अक्सर उसी गरीबी की प्रशंसा करते सुने जाते थे। जब कोई दो सिसिली की रानी, प्रिंसेस मूरत की बात करता, तो वे उत्तर देते: "मुझे नहीं पता कि आप किसकी बात कर रहे हैं। नेपल्स की केवल एक ही रानी हैं, जो एक महान व्यक्तित्व हैं और उनके पास कोई घोड़ागाड़ी नहीं है। लेकिन अपनी बस से वे सड़क पर हर वाहन को पीछे छोड़ देती हैं और उन्हें गुजरते हुए देखकर कोई भी धूल में घुटने टेक सकता है।" "मैं इसे एक संग्रहालय को दान कर दूंगा। इस बीच, इसे उन्हें वापस भेज दिया जाना चाहिए, ताकि उन्हें इसे लेने के लिए टैक्सी किराए पर न लेनी पड़े। ऐसी वस्तु के ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए, सबसे बुद्धिमानी का काम पंखा चुराना होगा। लेकिन यह उनके लिए असुविधाजनक होगा - क्योंकि संभवतः उनके पास दूसरा पंखा नहीं होगा!" उन्होंने ठहाके लगाते हुए कहा। खैर, आप देख ही रहे हैं कि वह मेरे लिए आई। और यह एकमात्र चमत्कार नहीं है जो मैंने किया है। मुझे नहीं लगता कि आज के समय में किसी के पास इतनी शक्ति है कि वह उन लोगों को प्रभावित कर सके जिन्हें मैं यहाँ लाया हूँ। फिर भी, हर किसी को उसका हक मिलना चाहिए। चार्ली और बाकी संगीतकारों ने दिव्य वादन किया। और, मेरी प्रिय स्वामिनी," उन्होंने विनम्रतापूर्वक कहा, "आपने भी इस अवसर पर अपनी भूमिका निभाई है। आपका नाम भुलाया नहीं जाएगा। इतिहास ने उस सेवक का नाम दर्ज किया है जिसने जोन ऑफ आर्क को युद्ध के लिए निकलते समय हथियारबंद किया था; वास्तव में आपने एक कड़ी का काम किया है, आपने विंटेइल के संगीत और उसके प्रेरित व्याख्याकार के बीच सामंजस्य स्थापित किया है, आपने उन सभी

परिस्थितियों की महत्वपूर्ण श्रृंखला को समझने की बुद्धिमत्ता दिखाई है जिनसे व्याख्याकार को एक महत्वपूर्ण—यदि मैं स्वयं का जिक्र नहीं कर रहा होता, तो मैं कहता कि ईश्वरीय—व्यक्तित्व का पूरा लाभ मिल सके, जिसे आपने सभा की सफलता सुनिश्चित करने के लिए, मोरेल के वायलिन के सामने उन कानों को लाने के लिए कहा जो सीधे उन जीभों से जुड़े हैं जिनकी सुनने की क्षमता सबसे व्यापक है; नहीं, नहीं, यह कोई छोटी बात नहीं है। इतनी पूर्ण समझ में कोई बात छोटी नहीं हो सकती। हर चीज़ का अपना महत्व है। दुरास अद्भुत थीं। वास्तव में, सब कुछ; इसीलिए," उन्होंने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा, क्योंकि उन्हें फटकार लगाना पसंद था, "मैंने आपके उन लोगों को आमंत्रित करने का विरोध किया—वे लोग जो आपके द्वारा लाए गए इतने सारे लोगों के बीच किसी योग में दशमलव बिंदुओं की भूमिका निभाते, और बाकी को केवल आंशिक मान तक सीमित कर देते। मुझे इस तरह की चीजों की बहुत सटीक समझ है। आप समझते हैं, हमें गलतियों से बचना चाहिए जब हम एक ऐसी पार्टी दे रहे हैं जो विंटेउइल, उनके प्रतिभाशाली व्याख्याकार, आपके और, मैं कहने का साहस करता हूँ, मेरे योग्य होनी चाहिए। आप मोले को आमंत्रित करने के लिए तैयार थे, और सब कुछ बिगड़ जाता। यह वह छोटी सी विपरीत, बेअसर करने वाली बूंद होती जो किसी पेय को उसके गुण से वंचित कर देती है। बिजली की बत्तियाँ फ्यूज हो जातीं, पेस्ट्री समय पर नहीं आती, संतरे का रस सबको पेट दर्द दे देता। वह एकमात्र ऐसी व्यक्ति थीं जो आमंत्रित करने के लिए। मानो किसी परीकथा में, उसके नाम की ध्वनि मात्र से ही पीतल के वाद्ययंत्रों से एक भी स्वर नहीं निकलता; बांसुरी और हौटबॉय अचानक सन्नाटे में डूब जाते। मोरेल स्वयं, यदि कुछ धुनें बजाने में सफल भी हो जाते, तो भी सुर में नहीं होते, और विंटेइल के सप्तक के स्थान पर बेकमेसर द्वारा उसकी एक पैरोडी होती, जो तालियों की गड़गड़ाहट के बीच समाप्त होती। मैं, जो व्यक्तिगत प्रभाव में दृढ़ विश्वास रखता हूँ, एक विशेष लार्गो के विस्तार में, जो एक फूल की तरह खिल उठा, और समापन की परम संतुष्टि में, जो केवल एलेग्रो नहीं बल्कि अतुलनीय रूप से एलेग्रो था, स्पष्ट रूप से महसूस कर सकता था कि मोरेल की अनुपस्थिति संगीतकारों को प्रेरित कर रही थी और वाद्ययंत्रों में ही आनंद का संचार कर रही थी। वैसे भी, जब कोई रानियों के घर पर होता है तो वह अपनी दरबारी को आमंत्रित नहीं करता। उन्हें 'मोले' कहकर (और इसी तरह उन्होंने बड़े स्नेह से 'दुरास' भी कहा था) एम. डी चार्लस ने

उनके साथ न्याय किया था। ये सभी महिलाएं समाज की अभिनेत्रियां थीं और यह भी सच है कि, इस दृष्टिकोण से भी देखें तो, काउंटेस मोले ने अपनी असाधारण बुद्धिमत्ता की प्रतिष्ठा को उचित नहीं ठहराया, जो उन साधारण अभिनेताओं या उपन्यासकारों की याद दिलाती है जिन्हें कुछ समय के लिए प्रतिभावान माना जाता है, या तो उनके प्रतिस्पर्धियों की साधारणता के कारण, जिनमें कोई भी कलाकार सच्ची प्रतिभा का अर्थ प्रकट करने में सक्षम नहीं होता, या फिर जनता की साधारणता के कारण, जो अगर कोई असाधारण व्यक्तित्व भी हो तो उसे समझने में असमर्थ होगी। श्रीमती मोले के मामले में, यदि पूर्णतः उचित न भी हो, तो पहले वाले स्पष्टीकरण पर ही रुकना बेहतर है। सामाजिक जगत शून्यता का क्षेत्र है, इसलिए समाज में महिलाओं के गुणों में केवल मामूली अंतर है, जो ज़्यादा से ज़्यादा एम. डी. चार्लस की घृणा या कल्पना को पागलपन की हद तक ही जगा सकता है। और निश्चित रूप से, यदि उन्होंने कलात्मक और सामाजिक तत्वों के अनमोल मिश्रण वाली इस भाषा में अभी-अभी जो कहा, वह इसलिए था क्योंकि उनके पुराने स्त्री-समान क्रोध और एक विश्व नागरिक के रूप में उनकी संस्कृति ने उन्हें तुच्छ विषयों पर भी वास्तविक वाक्पटुता प्रदान की थी। चूंकि भिन्नताओं का संसार पृथ्वी की सतह पर, उन सभी देशों के बीच मौजूद नहीं है जिन्हें हमारी धारणा एकसमान मानती है, इसलिए यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि यह सामाजिक 'जगत' में भी मौजूद नहीं होना चाहिए। क्या यह कहीं और मौजूद है? विंटेइल के सप्तक ने मुझे ऐसा प्रतीत कराया था कि यह मौजूद है। लेकिन कहाँ? एम. डी चार्लस को भी एक व्यक्ति द्वारा दूसरे के बारे में कही गई बातों को दोहराने में आनंद आता था, जिसका उद्देश्य झगड़े भड़काना और फूट डालकर शासन करना था। उन्होंने आगे कहा: "आपने उन्हें आमंत्रित न करके श्रीमती मोले को यह कहने का अवसर छीन लिया है: 'मुझे समझ नहीं आता कि श्रीमती वर्दुरिन मुझे क्यों आमंत्रित कर रही हैं। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि ये लोग कौन हैं, मैं उन्हें नहीं जानता।'" एक साल पहले वो कह रही थी कि तुम अपनी हरकतों से उसे बोर कर रहे हो। वो बेवकूफ है, उसे फिर कभी मत बुलाना। आखिर वो कोई इतनी खास भी नहीं है। मेरे यहाँ आने की वजह से वो बिना किसी झंझट के तुम्हारे घर आ सकती है। संक्षेप में," उसने निष्कर्ष निकाला, "मुझे लगता है कि तुम्हें मेरा शुक्रिया अदा करने का पूरा हक है, क्योंकि अब तक सब कुछ ठीक रहा है। डचेस डी गुएरमांटेस नहीं आईं, लेकिन कुछ कहा नहीं जा

सकता, शायद उनका न आना ही बेहतर था। हम उनसे कोई शिकायत नहीं रखेंगे, और उन्हें फिर कभी याद करेंगे, वैसे भी उन्हें याद किए बिना रहा नहीं जा सकता, उनकी आँखें ही हमसे कहती हैं 'मुझे मत भूलना!', क्योंकि वे मानो चमकती हैं" (यहाँ मैंने मन ही मन सोचा कि गुएरमांटेस का हौसला कितना मजबूत होगा—एक घर जाने का फैसला और दूसरे घर न जाने का फैसला—कि डचेस के मन में पलामेडे के डर पर उन्होंने कैसे भारी पड़ गईं)। "इतनी बड़ी सफलता को देखकर, बर्नार्डिन डी सेंट-पियरे की तरह हर जगह ईश्वर की कृपा ही नज़र आने लगती है। डचेस डी ड्यूरास तो मंत्रमुग्ध हो गईं। उन्होंने तो मुझसे आपको यह बताने के लिए भी कहा," एम. डी चार्लस ने आगे कहा, मानो श्रीमती वर्दुरिन के लिए यह सम्मान ही पर्याप्त हो। पर्याप्त तो था, लेकिन वास्तव में मुश्किल से ही विश्वास करने योग्य था, क्योंकि अगर उनकी बात पर विश्वास किया जाना था, तो उन्होंने आगे कहा, उन लोगों के पागलपन में पूरी तरह बहकते हुए जिन्हें बृहस्पति ने बर्बाद करने का फैसला किया था: "उन्होंने मोरेल को अपने घर बुलाया है, जहाँ वही कार्यक्रम दोहराया जाएगा, और मैं तो एम. वर्दुरिन के लिए भी निमंत्रण मांगने की सोच रहा हूँ।" हालांकि एम. डी चार्लस के मन में ऐसा कोई विचार भी नहीं आया था, लेकिन केवल पति के प्रति यह शिष्टाचार पत्नी के लिए सबसे बड़ा आहत करने वाला अपमान था, जो यह मानती थी कि छोटे से परिवार में प्रचलित एक प्रकार के आदेश के आधार पर उसे वायलिन वादक के संबंध में उसे अपनी स्पष्ट अनुमति के बिना कहीं और प्रदर्शन करने से रोकने का अधिकार है, और वह श्रीमती डी ड्यूरास की पार्टी में उसकी उपस्थिति को पूरी तरह से रोकने के लिए दृढ़ थी।

बैरन की बहुत ज़्यादा बोलने की आदत अपने आप में मैडम वेरडुरिन के लिए एक चिढ़ का सबब थी, जिन्हें यह बिल्कुल पसंद नहीं था कि लोग उनके छोटे से ग्रुप के अंदर ही अलग-अलग गुट बना लें। कितनी बार, यहाँ तक कि 'ला रास्पेलियर' में भी, जब वह मिस्टर डी चार्लस को ग्रुप के उस बेहद मेल-जोल वाले माहौल में अपनी भूमिका निभाने के बजाय चार्ली से लगातार बातें करते सुनती थीं, तो वह उनकी तरफ इशारा करके चिल्ला उठती थीं: "यह कितना बड़बोला है! कितना बड़बोला! ओह, अगर बड़बोलेपन की बात करें, तो यह तो बड़बोलेपन का उस्ताद है!" लेकिन इस बार तो बात और भी ज़्यादा बिगड़ गई थी। अपनी ही आवाज़ के नशे में चूर, मिस्टर डी चार्लस यह समझ ही नहीं पाए कि मैडम वेरडुरिन के लिए

तय की गई भूमिका को कम करके और उसे बहुत ही सीमित दायरे में बाँधकर, वह उनके अंदर नफ़रत की उस भावना को जगा रहे थे, जो असल में उनके लिए ईर्ष्या का ही एक खास, सामाजिक रूप थी। मैडम वेरडुरिन अपने यहाँ नियमित रूप से आने वाले मेहमानों, यानी अपने छोटे से ग्रुप के वफ़ादार सदस्यों को सचमुच पसंद करती थीं, लेकिन वह चाहती थीं कि वे पूरी तरह से अपनी 'मालकिन' (यानी उन्हीं) के प्रति समर्पित रहें। उन ईर्ष्यालु प्रेमियों की तरह जो कुछ भी कुर्बान करने को तैयार रहते हैं—जो बेवफ़ाई को भी बर्दाश्त कर लेते हैं, लेकिन सिर्फ़ अपनी ही छत के नीचे और अपनी ही आँखों के सामने (यानी ऐसी स्थिति में जब असल में कोई बेवफ़ाई हो ही नहीं रही होती)—वह भी पुरुषों को अपनी प्रेमिकाएँ या माशूक़ रखने की इजाज़त दे देती थीं; लेकिन शर्त यह होती थी कि इस प्रेम-प्रसंग का उनके अपने घर के बाहर समाज में कोई असर न पड़े, और यह रिश्ता सिर्फ़ उनके यहाँ बुधवार को होने वाली महफ़िलों की पनाह में ही बने और फले-फूले। पुराने दिनों में, जब ओडेट स्वान से बातें करती थी, तो उसके मुँह से निकलने वाली हँसी की हर दबी हुई गूँज मैडम वेरडुरिन के दिल को कचोटती थी; और ठीक वैसे ही, हाल के दिनों में मोरेल और बैरन के बीच होने वाली हर कानाफूसी भी उन्हें अंदर तक परेशान कर देती थी। अपने इस दुख का उन्हें बस एक ही दिलासा मिलता था—दूसरों की खुशियों को तबाह कर देना। वह बैरन की खुशियों को भी ज़्यादा दिनों तक बर्दाश्त नहीं कर पाई थीं। और अब, यह नासमझ इंसान उनके छोटे से ग्रुप में 'मालकिन' की हैसियत को कम करके, इस तबाही को और भी तेज़ी से नज़दीक खींच रहा था। उन्हें तो अभी से यह साफ़ दिखाई देने लगा था कि मोरेल, बैरन के सहारे, उनके बिना ही समाज की ऊँची महफ़िलों में अपनी जगह बना रहा है। बस एक ही उपाय था—मोरेल से बैरन और अपने बीच किसी एक को चुनने के लिए कहना। और ऐसा करने के लिए, वह उस प्रभाव पर निर्भर थी जो उसने मोरेल पर अपनी असाधारण समझ-बूझ का प्रदर्शन करके जमा लिया था—यह सब उन रिपोर्टों की बदौलत था जो उसने इकट्ठा की थीं, और उन झूठी बातों की बदौलत जो उसने गढ़ी थीं; ये सभी बातें उस चीज़ की पुष्टि करती थीं जिस पर मोरेल को विश्वास दिलाया गया था, और जो समय आने पर उसके सामने स्पष्ट हो जाती—उन जाल की बदौलत जो वह बिछा रही थी, जिनमें उसके भोले-भाले शिकार फँस जाते। इसी प्रभाव पर भरोसा करते हुए, वह चाहती थी कि मोरेल बैरन के बजाय उसे ही चुने। जहाँ तक उन संभ्रांत

महिलाओं की बात थी जो वहाँ मौजूद थीं और जिन्होंने उससे परिचय करने की ज़रा भी इच्छा नहीं जताई थी—जैसे ही उसने उनकी हिचकिचाहट या उदासीनता को भाँप लिया, उसने कहा: "आह! मैं समझ गई कि वे कैसी औरतें हैं—बिल्कुल बेकार, किसी काम की नहीं; वे हमारे मिज़ाज की नहीं हैं। अब वे इस घर में दोबारा कभी कदम नहीं रखेंगी।" क्योंकि वह यह स्वीकार करने के बजाय मर जाना ज़्यादा पसंद करती कि किसी ने उसके साथ उसकी उम्मीद से कम दोस्ताना व्यवहार किया है। "आह! मेरे प्यारे जनरल," एम. डी चार्लस ने अचानक उत्साह से कहा—मैडम वर्दुरिन को छोड़कर—जैसे ही उनकी नज़र जनरल डेल्टूर पर पड़ी। जनरल डेल्टूर गणतंत्र के राष्ट्रपति के सचिव थे, और चार्ली को उसका 'क्रॉस' (सम्मान-पदक) दिलाने में वे बहुत मददगार साबित हो सकते थे। जनरल डेल्टूर, कॉटार्ड से कुछ सवाल पूछने के बाद, तेज़ी से वहाँ से निकल रहे थे। "शुभ संध्या, मेरे प्यारे, delightful मित्र। तो इस तरह तुम मुझसे अलविदा कहे बिना ही चुपके से निकल रहे हो?" बैरन ने एक सौम्य, आत्म-संतुष्ट मुस्कान के साथ कहा; क्योंकि वह भली-भांति जानता था कि लोग हमेशा उसके साथ बातचीत करने के लिए एक पल और रुकने में खुशी महसूस करते थे। और अपनी मौजूदा उत्तेजना की स्थिति में, वह अपने ही सवालों के जवाब एक तीखी आवाज़ में दे रहा था: "तो, क्या तुम्हें मज़ा आया? क्या यह सचमुच शानदार नहीं था? वह 'अंदांते' (धीमी धुन)—क्या कमाल की चीज़ थी, है ना? यह अब तक लिखी गई सबसे अधिक हृदय-स्पर्शी रचना है। मैं किसी को भी चुनौती देता हूँ कि वह इसे अंत तक बिना आँखों में आँसू लाए सुन सके। तुम्हारा यहाँ आना बहुत अच्छा लगा। सुनो, आज सुबह मुझे फ्रोबरविल से एक बेहतरीन टेलीग्राम मिला है; उसने मुझे बताया है कि जहाँ तक 'ग्रैंड चांसरी' (उच्च कार्यालय) का सवाल है, तो जैसा कि कहावत है—सारी मुश्किलें अब दूर हो गई हैं।" M. de Charlus की आवाज़ इसी तीखी पिच पर गूंजती रही; यह उनकी सामान्य आवाज़ से इतनी अलग थी, जितनी एक वकील की ज़ोरदार दलील उसकी रोज़मर्रा की बातचीत से अलग होती है। यह अत्यधिक उत्तेजना और मानसिक तनाव के कारण आवाज़ के तेज़ होने का एक ऐसा ही उदाहरण था, जैसा कि Mme. de Guermantes की अपनी डिनर पार्टियों में देखने को मिलता था—जहाँ इसी वजह से उनकी आवाज़ और नज़र, दोनों ही एक बहुत ऊँचे सुर पर पहुँच जाती थीं। "मेरा इरादा तो कल किसी संदेशवाहक के ज़रिए आपको एक चिट्ठी भेजने का था, ताकि मैं आपको

अपनी खुशी के बारे में बता सकूँ—जब तक कि मुझे आपसे सीधे बात करने का मौका न मिल जाए; लेकिन आप तो हर तरफ से लोगों से घिरे हुए थे! Froberville का समर्थन भी कोई कम कीमती नहीं है, लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, तो मेरे पास तो सीधे मंत्री जी का वादा है," जनरल ने कहा। "आह! बहुत बढ़िया। इसके अलावा, आपने खुद भी तो देखा है कि ऐसी प्रतिभा को तो यही सम्मान मिलना चाहिए। Hoyos तो बहुत खुश थे; लेकिन मैं राजदूत-पत्नी (Ambassadress) से मिल नहीं पाया—क्या वह भी खुश थीं? भला कौन खुश न होता? सिवाय उन लोगों के जिनके पास कान तो हैं, पर वे सुनते नहीं—हालाँकि इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता, जब तक कि उनके पास ज़बान है और वे बोल सकते हैं।" Baron के जनरल से बात करने के लिए एक तरफ हट जाने का फायदा उठाते हुए, Mme. Verdurin ने Brichot को एक इशारा किया। उसने, कोई

यह न जानते हुए कि मादाम वेर्दुरिन क्या कहने वाली थीं, उसने उन्हें खुश करने की कोशिश की, और इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा न लगाते हुए कि वह मुझे कितना दुख पहुँचा रहा है, उसने मालकिन से कहा: "बैरन इस बात से बहुत खुश हैं कि मादमोइज़ेल विंटुइल और उनकी सहेली नहीं आईं। वे उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं हैं। उनका कहना है कि उनका चरित्र बहुत ही खराब है। आप सोच भी नहीं सकतीं कि नैतिक मामलों में बैरन कितने ज़्यादा कट्टर और सख़्त हैं।" ब्रिशो की उम्मीद के विपरीत, मादाम वेर्दुरिन को इसमें कोई मज़ा नहीं आया: "वह एक अश्लील आदमी है," उन्होंने जवाब दिया। "उसे कमरे से बाहर ले जाओ ताकि वह तुम्हारे साथ सिगरेट पी सके, और इस बीच मेरे पति, बैरन को पता चले बिना, उसकी 'दुलसीनिया' (प्रेमिका) से बात कर सकें और उसे उस खतरे के बारे में चेतावनी दे सकें जो उसके पैरों के नीचे मुँह बाए खड़ा है।" ब्रिशो कुछ हिचकिचाता हुआ लगा। "मुझे तुम्हें यह बताने में कोई हिचकिचाहट नहीं है," मादाम वेर्दुरिन ने उसकी आखिरी हिचकिचाहट दूर करने के लिए आगे कहा, "कि ऐसे आदमी के घर में होने पर मैं खुद को बिल्कुल भी सुरक्षित महसूस नहीं करती। मुझे पता है, उसके बारे में तरह-तरह की भयानक कहानियाँ मशहूर हैं, और पुलिस भी उस पर नज़र रखे हुए है।" और, क्योंकि जब मादाम वेर्दुरिन के मन में किसी के प्रति द्वेष जागता था, तो उनमें तुरंत मनगढ़ंत बातें बनाने की एक खास कला थी, इसलिए वह यहीं नहीं रुकीं: "ऐसा लगता है कि वह जेल भी जा चुका है। हाँ, हाँ, मुझे उन लोगों ने

बताया है जो उसके बारे में सब कुछ जानते थे। मुझे एक ऐसे व्यक्ति से भी पता चला है जो उसकी गली में ही रहता है, कि तुम सोच भी नहीं सकते कि किस तरह के गुंडे-बदमाश उसके घर आते-जाते हैं।" और जब ब्रिशो, जो अक्सर बैरन के यहाँ जाता था, ने इस बात का विरोध करना शुरू किया, तो मादाम वेर्डुरिन और भी जोश में आकर चिल्लाईं: "लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ! यह मैं हूँ जो तुम्हें यह बात बता रही हूँ," यह एक ऐसा जुमला था जिसका इस्तेमाल वह अक्सर अपनी कही हुई किसी भी बात को, चाहे वह कितनी भी बेतुकी क्यों न हो, वज़न देने के लिए किया करती थीं। "किसी न किसी दिन वह अपने बिस्तर पर ही मारा हुआ मिलेगा, जैसा कि ऐसे लोगों के साथ अक्सर होता है। शायद बात इतनी आगे न बढ़े, क्योंकि वह उस जूपियन के चंगुल में फंसा हुआ है—जिसे उसने इतनी हिम्मत करके मेरे पास भेजा था—और जो एक पुराना अपराधी है; यह मैं भी जानता हूँ, और तुम भी जानते हो—हाँ, यह पक्की बात है। जूपियन ने उसे कुछ खतों के ज़रिए अपने काबू में कर रखा है—जो सुनने में बेहद भयानक लगते हैं। यह बात मुझे किसी ऐसे व्यक्ति से पता चली है जिसने वे खत देखे हैं, और जिसने मुझसे कहा था: 'अगर तुम उन्हें देख लो, तो तुम्हें वहीं पर उल्टी आ जाएगी।' इसी तरह जूपियन उसे अपनी उंगलियों पर नचाता है, और उससे जितना चाहे उतना पैसा ऐंठ लेता है। मैं तो शार्लस की तरह हर पल खौफ के साए में जीने के बजाय हज़ार बार मरना पसंद करूँगी। खैर, अगर मोरेल का परिवार उसके खिलाफ कोई कानूनी कार्रवाई करने का फैसला करता है, तो मेरी ज़रा भी इच्छा नहीं है कि मुझे भी एक साथी-अपराधी के तौर पर इस मामले में घसीटा जाए। अगर वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आता, तो इसका नतीजा उसे खुद भुगतना पड़ेगा; लेकिन मैंने तो अपना फर्ज़ निभा दिया है। भला कोई क्या करे? यह कोई मज़ाक नहीं है—मैं तुम्हें सच बता रही हूँ।" और, अपने पति की उस वायलिन-वादक के साथ होने वाली बातचीत के विचार से ही पहले से ही उत्साहित होकर, मादाम वर्दुरिन ने मुझसे कहा: "ज़रा ब्रिशो से पूछो कि क्या मैं एक बहादुर दोस्त नहीं हूँ? और क्या मैं अपने साथियों को बचाने के लिए खुद को कुर्बान करने की हिम्मत नहीं रखती?" (वह उन परिस्थितियों का ज़िक्र कर रही थीं, जिनमें उन्होंने—ठीक सही समय पर—ब्रिशो का झगड़ा पहले उसकी धोबिन से, और फिर मादाम दे कैम्ब्रेमर से करवा दिया था; इन झगड़ों का नतीजा यह हुआ कि ब्रिशो लगभग पूरी तरह से अंधा हो गया था, और (जैसा कि लोग कहते थे) उसने मॉर्फिया का नशा

करना शुरू कर दिया था।) "एक बेमिसाल दोस्त—दूरदर्शी और बहादुर," प्रोफेसर ने बड़ी ही मासूमियत और भावुकता के साथ जवाब दिया। "मादाम वर्दुरिन ने मुझे एक बहुत बड़ी बेवकूफी करने से बचा लिया," ब्रिशो ने मुझे तब बताया, जब वह (मादाम वर्दुरिन) हमारे पास से चली गईं। "वह बिना एनेस्थीसिया के ऑपरेशन करने में कभी नहीं हिचकिचाती। जैसा कि हमारा दोस्त कॉटार्ड कहता है, वह एक 'इंटरवेंशनिस्ट' (हस्तक्षेप करने वाली) है। हालाँकि, मैं यह मानता हूँ कि यह सोचकर मुझे बहुत दुख होता है कि बेचारा बैरन अभी भी उस चोट से अनजान है जो उस पर गिरने वाली है। वह उस लड़के के लिए पूरी तरह से पागल है। अगर मैडम वेरडुरिन सफल हो जाती हैं, तो एक आदमी है जो बहुत दुखी होने वाला है। हालाँकि, यह पक्का नहीं है कि वह असफल नहीं होगी। मुझे डर है कि वह शायद उनके बीच सिर्फ़ एक गलतफहमी पैदा करने में ही सफल हो पाएगी, जो अंत में, उन्हें अलग किए बिना, सिर्फ़ उन्हें उससे झगड़ने पर मजबूर कर देगी।" मैडम वेरडुरिन और उनके वफादारों के साथ अक्सर ऐसा ही होता था। लेकिन यह साफ़ था कि उनमें अपनी दोस्ती को बनाए रखने की ज़रूरत पर, इस बात की ज़रूरत ज़्यादा हावी होती जा रही थी कि इस दोस्ती को कभी भी उस भावना से चुनौती न मिले जो वे एक-दूसरे के लिए महसूस कर सकते थे। समलैंगिकता से उसे तब तक कोई नफ़रत नहीं थी जब तक वह रूढ़िवादिता से छेड़छाड़ नहीं करती थी, लेकिन चर्च की तरह, वह रूढ़िवादिता से समझौता करने के बजाय कोई भी बलिदान देना पसंद करती थी। मुझे डर लगने लगा था कि कहीं उसकी मुझसे नाराज़गी का कारण यह तो नहीं है कि उसने सुन लिया हो कि मैंने उस दोपहर अल्बर्टिन को उसके पास जाने से रोक दिया था, और कहीं वह अब उसी काम में न जुट जाए—अगर उसने पहले से ही शुरू नहीं कर दिया है—यानी उसे मुझसे अलग करने के काम में; ठीक वैसे ही जैसे उसका पति, चार्लस के मामले में, अब उस संगीतकार के साथ करने वाला था। "चलो, चार्लस को पकड़ो, कोई बहाना ढूँढ़ो, अब समय बर्बाद करने का समय नहीं है," मैडम वेरडुरिन ने कहा, "और तुम जो भी करो, उसे तब तक यहाँ वापस मत आने देना जब तक मैं तुम्हें बुला न लूँ। ओह! क्या शाम थी," मैडम वेरडुरिन आगे बोलीं, और इस तरह उसने अपने गुस्से का असली कारण ज़ाहिर कर दिया। "उन लकड़ी की मूर्तियों के सामने एक बेहतरीन कलाकृति पेश करना। मैं नेपल्स

की रानी को इसमें शामिल नहीं करती, वह समझदार है, वह एक अच्छी औरत है" (जिसका मतलब था: "वह मेरे प्रति दयालु रही है")। "लेकिन बाकी लोग। ओह! यह..."
यह किसी को भी पागल करने के लिए काफी है। आप और क्या उम्मीद कर सकते हैं? मैं अब कोई लड़की नहीं रही। जब मैं जवान थी, तो लोग मुझसे कहते थे कि बोरियत को बर्दाश्त करना चाहिए। मैंने कोशिश भी की, लेकिन अब—नहीं, अब यह मेरे बस की बात नहीं है। अब मैं इतनी बड़ी हो चुकी हूँ कि अपनी मर्ज़ी से जी सकूँ; ज़िंदगी बहुत छोटी है। मैं खुद को बोर क्यों करूँ? बेवकूफों की बातें क्यों सुनूँ? क्यों मुस्कुराऊँ? और क्यों यह दिखावा करूँ कि वे बहुत समझदार हैं? नहीं, मैं ऐसा बिल्कुल नहीं कर सकती। चलो, ब्रिशो, अब और समय बर्बाद करने का कोई मतलब नहीं है।" "मैं जा रहा हूँ, मैडम... मैं जा रहा हूँ," ब्रिशो ने कहा, तभी जनरल डेल्टूर वहाँ से चले गए। लेकिन सबसे पहले, प्रोफेसर मुझे एक पल के लिए एक तरफ ले गए। उन्होंने कहा, "नैतिक कर्तव्य—जैसा कि हमारी नैतिकता हमें सिखाती है—उतना स्पष्ट रूप से अनिवार्य नहीं होता। थियोसोफिकल कैफे और कांट के विचारों वाले बीयर-हाउस चाहे कुछ भी कहें, हम 'भलाई' (Good) के असली स्वरूप से पूरी तरह अनजान हैं। मैं खुद—बिना अपनी बड़ाई किए कह रहा हूँ—अपने छात्रों को पूरी ईमानदारी से इम्मैनुएल कांट के दर्शन पर लेक्चर देता रहा हूँ; लेकिन आज जिस सामाजिक नैतिक दुविधा का सामना मुझे करना पड़ रहा है, उसका कोई सटीक समाधान मुझे कांट की किताब 'क्रिटिक ऑफ़ प्रैक्टिकल रीज़न' में कहीं नज़र नहीं आता। यह वही किताब है जिसमें प्रोटेस्टेंट धर्म के उस महान 'विद्रोही' ने—जर्मन शैली में—एक ऐसे जर्मनी के लिए अपने विचार पेश किए थे जो ऐतिहासिक रूप से भावुक और दरबारी संस्कृति वाला था, और जिसमें पोमेरेनियन रहस्यवाद की तमाम झलकियाँ मिलती हैं। यह आज भी प्लेटो के 'सिम्पोजियम' जैसा ही है, लेकिन इस बार यह कोनिग्सबर्ग में—वहाँ की स्थानीय शैली में—आयोजित हुआ है; यह पचाने में मुश्किल है, इसमें 'सॉरक्राउट' (खट्टी गोभी) की तेज़ गंध आती है, और इसमें कोई भी सुंदर लड़का मौजूद नहीं है। एक तरफ तो यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मैं अपनी इस बेहतरीन मेज़बान की उस छोटी सी मदद से इनकार नहीं कर सकता, जो वह मुझसे माँग रही हैं—और यह मदद पारंपरिक नैतिकता के पूरी तरह अनुरूप भी है। सबसे बढ़कर, हमें एक बात से हमेशा बचना चाहिए—क्योंकि बहुत कम चीज़ें ऐसी हैं जो इंसान को इतनी बेवकूफी भरी बातें कहने पर

मजबूर करती हैं—और वह है सिर्फ़ शब्दों के जाल में फँस जाना। लेकिन आखिर में, हमें यह स्वीकार करने में ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए कि अगर परिवारों की माताओं को वोट देने का अधिकार होता, तो 'सद्गुणों की कुर्सी' (Chair of Virtue) के लिए बैरन को शायद बुरी तरह से नकार दिया जाता। यह दुर्भाग्य की बात है कि वह एक शिक्षक का पेशा तो अपनाते हैं, लेकिन उनका स्वभाव बिल्कुल एक 'लंपट' (rake) जैसा है; ध्यान रहे, मैं बैरन की बुराई नहीं कर रहा हूँ; वह भला आदमी, जो दुनिया में किसी और से बेहतर मांस काट सकता है, अपनी गालियों की अद्भुत प्रतिभा के साथ-साथ अच्छाई के खजाने भी समेटे हुए है। वह एक बेहतरीन किस्म के मज़ाकिया इंसान के तौर पर बेहद मनोरंजक हो सकता है; जबकि मेरे एक सहकर्मी—जो एक अकादमिक विद्वान भी हैं—के साथ मैं इतना ऊब जाता हूँ कि, जैसा कि ज़ेनोफ़ोन कहते, "मुझे हर घंटे के सौ ड्रेकमा भी मिलें तो भी मैं बोर हो जाऊँ।" लेकिन मुझे डर है कि वह मोरेल पर ज़रूरत से ज़्यादा ही ध्यान दे रहा है—जितना कि एक स्वस्थ नैतिकता की माँग होती है—और यह जाने बिना कि वह युवा प्रायश्चित करने वाला, अपने गुरु द्वारा प्रायश्चित के तौर पर दिए गए विशेष अभ्यासों के प्रति कितना आज्ञाकारी या विद्रोही साबित होता है, यह समझने के लिए किसी बहुत बड़े विद्वान होने की ज़रूरत नहीं है कि हम एक बड़ी गलती कर रहे होंगे। जैसा कि कोई और कह सकता है, हम इस "रोसिक्रुशियन" (रहस्यवादी) के मामले में ज़रूरत से ज़्यादा नरमी बरत रहे होंगे—जो सेंट-साइमन के रास्ते से होता हुआ, पेट्रोनियस के ज़माने से हमारे बीच आया लगता है—अगर हम उसे आँखें मूँदकर, पूरी तरह से दस्तखत और मुहर लगाकर, "शैतानी करने" की इजाज़त दे दें। और फिर भी, उस आदमी को व्यस्त रखते हुए—जबकि मैडम वेरडुरिन, उस पापी की भलाई के लिए (और सच कहूँ तो, आत्माओं के ऐसे उपचार के लालच में आकर), उस युवा मूर्ख से बिना कुछ छिपाए सीधे-सीधे बात करके—उससे वह सब कुछ छीनने की कोशिश कर रही हैं जिससे उसे प्यार है, और शायद उसे एक जानलेवा चोट पहुँचाने वाली हैं—मुझे ऐसा लगता है कि मैं उसे एक ऐसे जाल में फँसा रहा हूँ जिसे "इंसानों को फँसाने वाला जाल" (man-trap) कहा जा सकता है; और मैं इस काम से ऐसे पीछे हटता हूँ, मानो कोई नीच हरकत करने जा रहा हूँ। यह कहने के बाद भी, उसने वह काम करने में ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई; बल्कि, उसका हाथ पकड़कर उसने कहना शुरू किया: "चलो, बैरन, आओ हम

जाकर एक सिगरेट पीते हैं; इस नौजवान ने अभी तक इस घर के सारे अजूबे नहीं देखे हैं।" मैंने यह बहाना बनाया कि मुझे घर जाना ज़रूरी है। "बस एक पल रुकिए," ब्रिशो ने कहा। "आपको याद है न, आप मुझे घर तक छोड़ने वाले थे? और मैं आपका वह वादा भूला नहीं हूँ।" "क्या आप सचमुच यह नहीं चाहेंगे कि मैं उनसे उनके चाँदी के बर्तन बाहर लाने को कहूँ? इससे आसान तो कुछ हो ही नहीं सकता," मिस्टर डी चार्लस ने कहा। "आपने मुझसे वादा किया था, याद है न? मोरेल के 'सम्मान' (decoration) के बारे में एक भी शब्द नहीं कहना है।" "मेरा इरादा उसे अभी, जब लोग जाने लगे हैं, यह घोषणा करके सरप्राइज़ देने का है; हालाँकि वह कहता है कि एक कलाकार के लिए इसका कोई महत्व नहीं है, लेकिन उसके अंकल चाहेंगे कि यह उसे मिले।" (मैं शरमा गया, क्योंकि मैंने मन ही मन सोचा कि वर्दुरिन लोगों को मेरे दादाजी के ज़रिए पता चल ही जाएगा कि मोरेल के अंकल असल में कौन थे।) "तो फिर आप यह नहीं चाहेंगे कि मैं उनसे सबसे बेहतरीन चीज़ें बाहर लाने को कहूँ?" एम. डी चार्लस ने कहा। "बेशक, आप उन्हें पहले से जानते हैं; आपने उन्हें 'ला रास्पेलिएर' में दर्जनों बार देखा है।" मैं उन्हें यह बताने की हिम्मत नहीं कर पाया कि जिस चीज़ में मेरी दिलचस्पी हो सकती थी, वह किसी मध्यम-वर्गीय परिवार की सबसे शानदार प्लेट की भी साधारणता नहीं थी, बल्कि कोई ऐसा नमूना था—भले ही वह किसी बेहतरीन नक्काशी में ही क्यों न बना हो—जो मैडम डू बैरी से जुड़ा हो। मैं बहुत ज़्यादा गंभीर सोच में डूबा हुआ था—भले ही मुझे मिस विंटुइल के आने की उम्मीद वाली इस नई जानकारी से कोई फ़र्क न भी पड़ा होता—फिर भी, समाज में रहते हुए, मेरा ध्यान हमेशा इतना ज़्यादा बँटा हुआ और बेचैन रहता था कि मैं उन चीज़ों पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पाता था जो कमोबेश सुंदर थीं। मेरा ध्यान केवल किसी ऐसी वास्तविकता की पुकार पर ही टिक सकता था जो मेरी कल्पना को सीधे तौर पर संबोधित करती हो—जैसा कि आज शाम, वेनिस की कोई तस्वीर हो सकती थी, जिसके बारे में मैंने दोपहर में बहुत सोचा था; या फिर कोई ऐसा सामान्य तत्व, जो कई अलग-अलग रूपों में मौजूद हो और ज़्यादा सच्चा हो।

उनसे भी ज़्यादा, जिसने अपने आप ही मेरे अंदर एक ऐसी आंतरिक सराहना जगा दी, जो आमतौर पर सुप्त अवस्था में रहती थी; जब वह सराहना मेरी चेतना की सतह पर उभरकर

आई, तो मैं असीम आनंद से भर गया। खैर, जब मैं उस कमरे से बाहर निकला जिसे 'कन्सर्ट-रूम' के नाम से जाना जाता था, और ब्रिशो तथा एम. डी शार्लस के साथ दूसरे ड्राइंग-रूम से गुज़रा, तो मुझे वहाँ कुछ ऐसे फर्नीचर दिखाई दिए जो मैंने 'ला रास्पेलियर' में देखे थे, और जिन पर मैंने पहले कभी ध्यान नहीं दिया था; उन्हें दूसरों के बीच रखा देखकर मैंने शहर के घर और गाँव के घर की साज-सज्जा के बीच पारिवारिक जीवन की एक साझा झलक, एक स्थायी समानता महसूस की। तब मैं समझ गया कि ब्रिशो का क्या मतलब था, जब उन्होंने मुस्कुराते हुए मुझसे कहा था: "ज़रा इस कमरे को देखो; शायद इससे तुम्हें अंदाज़ा हो जाए कि पच्चीस साल पहले 'रू मोंटालिवेट' में चीज़ें कैसी हुआ करती थीं।" उनकी मुस्कान से—जो उस अब-न-रहे ड्राइंग-रूम को एक श्रद्धांजलि थी जिसे वे अपनी मन की आँखों से देख रहे थे—मैं समझ गया कि ब्रिशो, शायद खुद बिना यह महसूस किए, उस पुराने कमरे में किन चीज़ों को सबसे ज़्यादा पसंद करते थे; वहाँ की बड़ी खिड़कियों से भी ज़्यादा, अपने मेज़बानों की हँसमुख जवानी और उनके वफ़ादार साथियों से भी ज़्यादा, वे उस 'अवास्तविक हिस्से' को पसंद करते थे (जिसे मैं खुद 'ला रास्पेलिएर' और 'क्वे कोंटी' के बीच कुछ समानताओं से पहचान सकता था)—वह हिस्सा जो, एक ड्राइंग-रूम में हो या किसी भी और चीज़ में, उसके बाहरी, वास्तविक हिस्से का—जिस पर हर किसी का नियंत्रण होता है—महज़ एक विस्तार मात्र होता है। वह हिस्सा अब पूरी तरह से काल्पनिक बन चुका था, उसका रंग ऐसा था जो अब मौजूद नहीं था, सिवाय मेरे उस बुज़ुर्ग मार्गदर्शक के लिए; वह रंग जिसे वे मुझे दिखा पाने में असमर्थ थे। वह हिस्सा जो बाहरी दुनिया से अलग होकर हमारी आत्मा में शरण ले लेता है, जिसे वह एक अतिरिक्त मूल्य प्रदान करता है, जहाँ वह अपने सामान्य सार में घुल-मिल जाता है, और खुद को रूपांतरित कर लेता है—वे घर जो अब ढहा दिए गए हैं, वे लोग जो बहुत पहले गुज़र चुके हैं, रात के खाने की मेज़ पर रखे फलों के वे कटोरे जिन्हें हम याद करते हैं—हमारी यादों के उस पारदर्शी संगमरमर में बदल जाता है। उस संगमरमर का रंग ऐसा होता है जिसे हम दूसरों को दिखा पाने में असमर्थ होते हैं, क्योंकि उसे केवल हम ही देख सकते हैं; यही चीज़ हमें दूसरों से, अतीत की बातों के बारे में चर्चा करते हुए, पूरी सच्चाई के साथ यह कहने में सक्षम बनाती है कि वे उन चीज़ों के बारे में कोई कल्पना भी नहीं कर सकते, कि वे चीज़ें किसी भी ऐसी चीज़ जैसी नहीं हैं जिसे उन्होंने कभी देखा हो। वहीं दूसरी ओर, हम खुद

भी उन चीज़ों के बारे में सोचते समय एक खास तरह की भावुकता से बच नहीं पाते—यह याद करते हुए कि हमारे विचारों के अस्तित्व पर ही, अभी कुछ और समय के लिए ही सही, उन चीज़ों का अस्तित्व टिका हुआ है—उन बुझ चुके दीपकों की चमक और उन लताओं की महक, जो अब कभी नहीं खिलेंगी। और संभवतः, इसी कारण से, 'रू मोंटालीवेट' वाला वह पुराना ड्राइंग-रूम, ब्रिशो की नज़रों में, 'वरडुरिन' परिवार के मौजूदा घर को कहीं कमतर साबित करता था। लेकिन दूसरी ओर, प्रोफेसर की नज़रों में, उस पुराने ड्राइंग-रूम ने इस नए घर में एक ऐसी सुंदरता जोड़ दी थी, जो किसी बाहरी व्यक्ति की नज़रों में इस घर में कभी हो ही नहीं सकती थी। असली फ़र्नीचर के जो टुकड़े यहाँ लाए गए थे—और कभी-कभी उन्हें वैसे ही समूहों में सजाया गया था—और जिन्हें मुझे खुद 'ला रास्पेलिएर' से याद था, उन्होंने नए ड्राइंग-रूम में पुरानी दुनिया के ऐसे अंशों को ला खड़ा किया, जो कुछ पलों के लिए इतनी जीवंतता से पुरानी यादें ताज़ा कर देते थे कि मानो कोई मतिभ्रम हो रहा हो; और फिर, अपने आस-पास की असलियत के बीच एक खोई हुई दुनिया के अंशों को जगा देने के कारण—जो उनके चारों ओर फैली हुई प्रतीत होती थी—वे खुद भी शायद ही असली लगते थे। एक सोफ़ा, जो सपनों की दुनिया से निकलकर दो नई और बेहद ठोस आर्मचेयर के बीच आ खड़ा हुआ था; गुलाबी रेशम से मढ़ी हुई छोटी कुर्सियाँ; एक ताश की मेज़ की कपड़े की सतह, जिसे एक इंसान जैसा सम्मान मिल गया था—क्योंकि एक इंसान की तरह ही उसका भी एक अतीत और एक याददाश्त थी; 'क्काई कोंटी' की ठंड और उदासी के बीच भी, वह 'रू मोंटालीवेट' की खिड़कियों से और 'ला रास्पेलिएर' के शीशे वाले दरवाज़ों से छनकर आती सूरज की रोशनी में तपकर पाए गए अपने सुनहरे रंग को आज भी संजोए हुए थी (जहाँ वह दिन का समय उतनी ही सटीकता से बता सकती थी, जितनी कि खुद मैडम वर्दुरिन); और 'ला रास्पेलिएर' में —जहाँ उसे ले जाया गया था और जहाँ वह सारा दिन बगीचे की फूलों की क्यारियों के ऊपर से दूर नीचे घाटी को निहारती रहती थी—तब तक, जब तक कि कोटार्ड और संगीतकार के लिए ताश खेलने का समय नहीं हो जाता था; वायलेट और पैन्ज़ी फूलों का एक गुलदस्ता, जो हल्के रंगों में रंगा था—एक चित्रकार दोस्त का तोहफ़ा, जो अब इस दुनिया में नहीं था; उस जीवन का एकमात्र बचा हुआ अंश, जो बिना कोई निशान छोड़े ही मिट गया था—जो एक महान प्रतिभा और एक लंबी दोस्ती का सार समेटे हुए था, और जो उस चित्रकार की तेज़,

कोमल आँखों और उसके सुडौल, भरे-भरे और कुछ उदास हाथों की याद दिलाता था, जब वह इसे बना रहा था; वफ़ादार लोगों द्वारा दिए गए तोहफ़ों की वह अव्यवस्थित, फिर भी मनमोहक जमावट—जो घर की मालकिन के साथ उसकी सभी यात्राओं में उसके साथ रही थी, और समय के साथ-साथ जिसने अब एक चरित्र-विशेषता या नियति की एक लकीर जैसी स्थिरता पा ली थी; कटे हुए फूलों और चॉकलेट के डिब्बों की वह बहुतायत—जो यहाँ भी, ठीक वैसे ही जैसे गाँव में, अपने खिलने के एक ही ढंग में व्यवस्थित रूप से सजे हुए थे; उन अनोखी और अनावश्यक चीज़ों का वह विचित्र समावेश—जो आज भी ऐसी लगती हैं, मानो उन्हें अभी-अभी उस डिब्बे से निकाला गया हो जिसमें वे तोहफ़े के रूप में मिली थीं, और जो हमेशा वैसी ही बनी रहती हैं, जैसी वे शुरू में थीं—यानी, नए साल के तोहफ़े। संक्षेप में कहें तो, वे सभी चीज़ें जिन्हें बाकी चीज़ों से अलग नहीं किया जा सकता था—लेकिन जो ब्रिशो के लिए (जो वर्दुरिन की पार्टियों में अक्सर आते-जाते रहते थे) एक खास चमक, एक मखमली आभा लिए हुए थीं—जिनमें एक तरह की गहराई और एक 'आध्यात्मिक काया' जुड़ गई थी; ये सभी चीज़ें उनके सामने बिखरी हुई थीं, और उनके कानों में गूँज रही थीं।

जैसे कई गूंजती हुई चाबियाँ उसके दिल में संजोई हुई यादों को जगा देती हैं—कुछ उलझी हुई यादें, जो आज के इस ड्राइंग-रूम में, जहाँ वे बिखरी पड़ी थीं, एकदम साफ़ और स्पष्ट होकर उभर आईं; ठीक वैसे ही जैसे किसी साफ़ दिन सूरज की एक किरण हवा को चीरते हुए किसी एक हिस्से को रोशन कर देती है। यह किरण फ़र्नीचर और कालीनों पर पड़ी, और फिर एक गद्दे से फूलों के गुलदस्ते तक, एक पाँव रखने की चौकी से किसी lingering खुशबू तक, रोशनी के इंतज़ाम से लेकर रंगों की योजना तक—हर चीज़ को तराशते हुए, जगाते हुए, एक आध्यात्मिक रूप देते हुए, एक ऐसी आकृति को जीवंत कर दिया जिसे 'आदर्श रूप' कहा जा सकता है—एक ऐसा रूप जो Verdurin परिवार के हर नए घर में हमेशा मौजूद रहता था। "हमें कोशिश करनी चाहिए," Brichot ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा, "कि हम Baron को उनके पसंदीदा विषय पर ले आएँ। वे कमाल के हैं।" अब, एक तरफ़ तो मैं इस मौके से खुश था कि मैं M. de Charlus से Mlle. Vinteuil और उनकी सहेली के आने के बारे में जानकारी हासिल करने की कोशिश कर सकता था। दूसरी तरफ़, मैं Albertine को ज़्यादा देर तक अकेला नहीं छोड़ना चाहता था—ऐसा नहीं था कि वह मेरी गैर-मौजूदगी का कोई

गलत फ़ायदा उठा सकती थी (क्योंकि उसे मेरे लौटने का ठीक समय पता नहीं था, और यह भी कि इतनी देर रात वह बिना किसी की नज़र में आए न तो किसी मेहमान से मिल सकती थी और न ही खुद घर से बाहर जा सकती थी), बल्कि मैं बस यह चाहता था कि उसे अकेलापन ज़्यादा लंबा न लगे। और इसलिए मैंने Brichot और M. de Charlus से कहा कि मुझे अब जल्द ही उनसे विदा लेनी होगी। "फिर भी, तुम हमारे साथ ही चलो," Baron ने कहा—जिनका सामाजिक उत्साह अब थोड़ा ठंडा पड़ने लगा था, लेकिन फिर भी उन्हें बातचीत को लंबा खींचने, उसे जारी रखने की वैसी ही ज़रूरत महसूस हो रही थी, जैसी मैंने पहले Duchesse de Guermantes में और खुद उनमें भी देखी थी। यह आदत, जो उनके परिवार की एक खास पहचान थी, उन सभी लोगों में भी आम तौर पर पाई जाती है जो अपने दिमाग को बातचीत के अलावा कोई और संतुष्टि नहीं दे पाते—यानी एक अधूरी संतुष्टि—और जो किसी के साथ घंटों बिताने के बाद भी असंतुष्ट ही रहते हैं; वे अपने थके-हारे साथी से और भी ज़्यादा बेसब्री से चिपके रहते हैं, और उससे उस संतुष्टि की उम्मीद करते हैं जो सामाजिक मेल-जोल से कभी मिल ही नहीं सकती। "आओ ना," उसने दोहराया, "पार्टी का सबसे सुखद पल यही होता है—वह पल जब सारे मेहमान जा चुके होते हैं; यह 'डोना सोल' का समय है। उम्मीद करते हैं कि इसका अंत उतना दुखद नहीं होगा। बदकिस्मती से, तुम्हें बहुत जल्दी है—शायद उन कामों को करने की जल्दी, जिन्हें न करना ही तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर होता। लोग हमेशा जल्दबाज़ी में रहते हैं—वे ठीक उस समय चले जाते हैं, जब उन्हें आना चाहिए। हम यहाँ 'कौचर' के दार्शनिकों की तरह हैं—यह वह पल है, जब हम शाम की घटनाओं पर विचार-विमर्श कर सकते हैं; जिसे फ़ौजी भाषा में 'ऑपरेशन्स की समीक्षा' करना कहते हैं। हम मैडम वेरडुरिन से हमारे लिए थोड़ा-सा रात का खाना भेजने को कह सकते हैं—बशर्ते हम उन्हें खाने पर न बुलाएँ। और हम चार्ली से—जो अभी भी 'हर्नानी' के किरदार में है—हमारे लिए वह शानदार 'अडाजियो' बजाने की गुज़ारिश कर सकते हैं। है ना वह 'अडाजियो' कमाल का? लेकिन वह युवा वायलिन-वादक कहाँ है? मैं उसे बधाई देना चाहता हूँ—यह तो कोमल शब्दों और आलिंगन का पल है। मानो, ब्रिशो, कि उन्होंने देवताओं जैसा बजाया—खासकर मोरेल ने। क्या तुमने वह पल देखा, जब उसके बालों की लट खुल गई थी? आह! अगर तुमने वह नहीं देखा, मेरे दोस्त, तो तुमने कुछ भी नहीं देखा। उसमें एक ऐसा 'F-sharp'

था, जिसे सुनकर एनेस्को, कैपेट और थिबो जैसे दिग्गज भी ईर्ष्या से मर सकते थे। मैं भले ही ऊपर से शांत दिख रहा था, लेकिन मैं तुम्हें बता सकता हूँ कि उस धुन को सुनकर मेरा दिल इस कदर भर आया था कि मैं मुश्किल से ही अपने आँसू रोक पाया। पूरा कमरा साँस थामे बैठा था। ब्रिशो, मेरे दोस्त!" बैरन ने दूसरे का हाथ ज़ोर से पकड़कर हिलाते हुए कहा, "वह पल सचमुच शानदार था। सिर्फ़ युवा चार्ली ही पत्थर की मूरत की तरह स्थिर बैठा रहा—तुम उसे साँस लेते हुए भी नहीं देख सकते थे। वह उन निर्जीव वस्तुओं जैसा लग रहा था, जिनके बारे में 'थियोडोर रूसो' बात करते हैं—वे वस्तुएँ जो हमें सोचने पर मजबूर करती हैं, लेकिन खुद नहीं सोचतीं। और फिर, अचानक!" एम. डी. चार्लस ने पूरे उत्साह के साथ, एक नाटकीय हाव-भाव बनाते हुए कहा, "फिर... वह बालों की लट! और इस सबके साथ-साथ, 'एलेग्रो विवासे' की वह प्यारी-सी ग्रामीण धुन भी बजती रही। तुम्हें पता है, वह बालों की लट एक 'रहस्योद्घाटन' का प्रतीक थी—यहाँ तक कि सबसे मंदबुद्धि लोगों के लिए भी। 'ताओरमिना की राजकुमारी'—जो तब तक बहरी बनी हुई थी (क्योंकि दुनिया में उससे ज़्यादा बहरा कोई नहीं होता, जिसके पास कान तो हों, पर वह सुने नहीं)..." नहीं, ताओरमिना की राजकुमारी ने, उस चमत्कारी ताले के संदेश का सामना करते हुए, यह महसूस किया कि वे संगीत बजा रहे थे, पोकर नहीं। "ओह, वह सचमुच एक गंभीर क्षण था।" "माफ़ कीजिए, सर, मैंने आपको बीच में टोका," मैंने एम. डी चार्लस से कहा, इस उम्मीद में कि मैं उन्हें उस विषय पर ला सकूँ जिसमें मेरी दिलचस्पी थी, "आपने मुझे बताया था कि संगीतकार की बेटी वहाँ मौजूद होगी। मुझे उससे मिलकर बहुत खुशी होती। क्या आपको पक्का पता है कि उसके आने की उम्मीद थी?" "ओह, यह तो मैं नहीं कह सकता।" एम. डी चार्लस ने इस तरह, शायद अनजाने में ही, उस सार्वभौमिक नियम का पालन किया जिसके तहत लोग एक ईर्ष्यालु प्रेमी से जानकारी छिपाते हैं—चाहे वह किसी बेतुकी 'दोस्ती' दिखाने के लिए हो, या सम्मान की बात मानकर (भले ही वे उस औरत से नफ़रत करते हों जिसने उस प्रेमी में ईर्ष्या जगाई है), या फिर उस औरत के प्रति द्वेष के कारण (क्योंकि उन्हें अंदाज़ा होता है कि ईर्ष्या से प्यार और भी गहरा होता है), या फिर दूसरों को परेशान करने की उस आदत के कारण—जिसमें वे सच पूरी दुनिया को बता देते हैं, लेकिन उस ईर्ष्यालु प्रेमी से छिपाकर रखते हैं, जिससे उसकी अज्ञानता और भी बढ़ जाती है।

...उनकी तकलीफ़, या कम-से-कम सताने वालों को तो यही लगता है; जो दूसरों को दुख पहुँचाने की चाह में, उसी चीज़ से निर्देशित होते हैं जिसे वे खुद—शायद ग़लती से—सबसे ज़्यादा तकलीफ़देह मानते हैं। "तुम्हें पता है," उसने आगे कहा, "इस घर में लोग बातों को थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर कहने के आदी हैं; वे लोग बड़े प्यारे हैं, फिर भी उन्हें किसी-न-किसी तरह की मशहूर हस्तियों को अपने यहाँ बुलाना पसंद है। लेकिन तुम ठीक नहीं लग रहे हो, और इस सीलन भरे कमरे में तुम्हें ज़ुकाम हो जाएगा," उसने मेरी तरफ़ एक कुर्सी खिसकाते हुए कहा। "चूँकि तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं रही है, इसलिए तुम्हें अपना ख़याल रखना चाहिए; मुझे जाने दो और तुम्हारे लिए तुम्हारा कोट ढूँढ़ने दो। नहीं, खुद मत जाओ, तुम रास्ता भटक जाओगे और तुम्हें ज़ुकाम हो जाएगा। लोग कितने लापरवाह होते हैं; तुम तो मानो गोद में खेलने वाले बच्चे हो—तुम्हें तो मेरी जैसी किसी बुज़ुर्ग दाई की ज़रूरत है जो तुम्हारी देखभाल करे।" "तकलीफ़ मत कीजिए, बैरन साहब, मुझे जाने दीजिए," ब्रिशो ने कहा, और तुरंत ही हमारे पास से चला गया; शायद उसे इस बात का ठीक-ठीक अंदाज़ा नहीं था कि एम. दे शार्लस मेरे लिए अपने दिल में कितना गहरा स्नेह रखते थे—और न ही उसे उन प्यारे, सरल और समर्पित पलों का पता था, जो उनके बड़प्पन और सताए जाने के भ्रम वाले उन्मादी दौरों के बीच-बीच में आते रहते थे। उसे डर था कि एम. दे शार्लस—जिन्हें मैडम वेर्दुरिन ने किसी कैदी की तरह उसकी निगरानी में सौंपा हुआ था—कहीं मेरे ओवरकोट को मँगवाने के बहाने, असल में मोरेल के पास वापस जाने की जुगत में न हों, और इस तरह मालकिन की सारी योजना ही चौपट न कर दें।

[* श्रीमती वर्दुरिन ने यहाँ टैपेट शब्द का प्रयोग किया है, संभवतः वे इसके प्रचलित अर्थ से अनभिज्ञ थीं। सी. के. एस. एम.]

इसी बीच स्की बिना बुलाए पियानो पर बैठ गया और अपनी भौंहों को शरारती अंदाज़ में सिकोड़ते हुए, एक रहस्यमयी निगाहों और होठों को हल्के से मरोड़ते हुए, मानो कलात्मकता का परिचय दे रहा हो, मोरेल से बिज़ेट की कोई रचना बजाने का आग्रह करने लगा। "क्या, तुम्हें बिज़ेट का वो बचकाना संगीत पसंद नहीं है? अरे मेरे प्यारे," उसने 'र' अक्षर को घुमाते हुए, जो उसकी एक खास आदत थी, कहा, "ये तो बेहद मनमोहक है।" मोरेल, जिसे बिज़ेट

पसंद नहीं था, ने यह बात बढ़ा-चढ़ाकर कही और (क्योंकि छोटे से समूह में उसकी छवि एक मजाकिया इंसान की थी, हालांकि यह अविश्वसनीय लग सकता है) स्की ने वायलिन वादक की बातों को विरोधाभासी मानते हुए ज़ोर से हंस पड़ा। उसकी हंसी एम. वर्दुरिन की तरह धूम्रपान करने वाले की दबी हुई हंसी नहीं थी। स्की ने पहले तो एक सौम्य भाव धारण किया, फिर मानो अपनी इच्छा के विरुद्ध, एक हल्की सी हंसी निकाली, जैसे किसी घंटाघर से पहली घंटी की आवाज आती है, उसके बाद एक सन्नाटा छा गया जिसमें उनकी सौम्य निगाहें कही गई बातों की निरर्थकता का कुशलतापूर्वक विश्लेषण करती प्रतीत हुईं, फिर हंसी की एक दूसरी गूंज ने हवा को हिला दिया, जिसके तुरंत बाद एक आनंदमय एंजेलस सुनाई दिया।

मैंने M. de Charlus से इस बात पर अफ़सोस ज़ाहिर किया कि M. Brichot इतनी तकलीफ़ उठा रहे हैं। "बिल्कुल नहीं, वह तो बहुत खुश हैं; वह आपको बहुत पसंद करते हैं—असल में, हर कोई आपको पसंद करता है। अभी कुछ ही दिन पहले कोई कह रहा था: 'अब तो वह हमें कभी दिखाई ही नहीं देते; उन्होंने तो खुद को सबसे अलग-थलग कर लिया है!'" M. de Charlus ने आगे कहा, "इसके अलावा, Brichot बहुत ही नेक इंसान हैं।" शायद उन्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था—खासकर जिस स्नेहपूर्ण और खुले अंदाज़ में 'नैतिक दर्शन' के प्रोफ़ेसर उनसे बातचीत कर रहे थे—कि उनकी पीठ पीछे उनकी बुराई करने में उन्हें ज़रा भी हिचकिचाहट नहीं होती थी। "वह बहुत ही काबिल इंसान हैं—बेहद विद्वान—और उनमें ज़रा भी घमंड नहीं है। उनकी विद्वत्ता ने उन्हें 'किताबी कीड़ा' नहीं बना दिया है—जैसा कि अक्सर ऐसे लोगों के साथ होता है, जिनसे हमेशा स्याही की गंध आती रहती है। उन्होंने अपनी सोच में एक खुलापन और सहनशीलता बनाए रखी है—जो कि उनके जैसे लोगों में बहुत कम देखने को मिलती है। कभी-कभी, जब कोई यह देखता है कि वह ज़िंदगी को कितनी अच्छी तरह समझते हैं—और कितने सहज और शालीन अंदाज़ में हर किसी को उसका उचित मान-सम्मान देते हैं—तो इंसान खुद से यह सवाल पूछता है कि Sorbonne का एक मामूली-सा प्रोफ़ेसर (जो पहले एक स्कूल-मास्टर हुआ करता था) इतनी बेहतरीन तहज़ीब और शिष्टाचार कहाँ से सीख सकता है? मैं खुद इस बात पर हैरान हूँ।" मुझे तो और भी ज़्यादा हैरानी तब हुई, जब मैंने देखा कि Brichot की बातचीत—जिसे Mme. de Guermantes के कम-से-कम परिष्कृत दोस्त भी बेहद उबाऊ और बोझिल पाते—उन्हीं दोस्तों में से सबसे ज़्यादा

आलोचनात्मक व्यक्ति, M. de Charlus को कितनी पसंद आई। लेकिन इस नतीजे तक पहुँचने में—अन्य प्रभावों के साथ-साथ (जो अपने आप में भी अलग-अलग थे)—कुछ ऐसे प्रभावों का भी हाथ था, जिनकी बदौलत एक तरफ़ तो Swann को—जब वह Odette के प्यार में थे—उस छोटे से 'खास गुट' में लंबे समय तक स्वीकार्यता मिली; और दूसरी तरफ़, शादी के बाद, उन्हें Mme. Bontemps में एक अलग ही आकर्षण नज़र आने लगा। Mme. Bontemps, जो Swann दंपति की बहुत बड़ी प्रशंसक होने का दिखावा करती थीं, अक्सर Swann की पत्नी से मिलने आती थीं और Swann के बारे में कही-सुनी बातों और किस्सों का खूब लुत्फ़ उठाती थीं। ठीक वैसे ही जैसे कोई लेखक बुद्धिमत्ता का श्रेय सबसे बुद्धिमान व्यक्ति को नहीं देता, बल्कि उस सांसारिक व्यक्ति को देता है जो किसी पुरुष के किसी स्त्री के प्रति जुनून पर एक साहसी और सहिष्णु टिप्पणी करता है—एक ऐसी टिप्पणी जो लेखक की पढ़ी-लिखी प्रेमिका को भी उससे सहमत होने पर मजबूर कर देती है कि उसके घर आने वाले सभी लोगों में, सबसे कम मूर्ख आखिरकार यही बूढ़ा आशिक है जो प्रेम के मामलों में अपनी अनुभव-संपन्नता दिखाता है—ठीक वैसे ही, एम. डी शार्लस को अपने बाकी दोस्तों की तुलना में ब्रिशो अधिक बुद्धिमान लगा। ब्रिशो न केवल मोरेल के प्रति दयालु था, बल्कि वह यूनानी दार्शनिकों, लातिनी कवियों और प्राच्य कथाओं के लेखकों से ऐसे उपयुक्त उद्धरण चुनकर लाता था, जो बैरन की विशेष प्रवृत्ति को एक विचित्र और आकर्षक संकलन से सजा देते थे। एम. डी शार्लस उस उम्र में पहुँच चुके थे, जिस उम्र में विक्टर ह्यूगो जैसे लोग अपने आस-पास, सबसे बढ़कर, वैक्वेरी और म्युरिस जैसे लोगों को रखना पसंद करते हैं। वह बाकी सभी लोगों की तुलना में उन पुरुषों को अधिक पसंद करते थे, जो जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण को सहन कर लेते थे। "मैं उससे बहुत मिलता-जुलता हूँ," उन्होंने एक संतुलित, लयबद्ध स्वर में कहना जारी रखा; उनके होंठों की कोई भी हरकत उनके गंभीर, पाउडर लगे मुखौटे को ज़रा भी विचलित नहीं करती थी, जिसके ऊपर उनकी पादरी-नुमा पलकें जान-बूझकर झुकी हुई रहती थीं। "मैं उसके व्याख्यानों में जाता हूँ; लैटिन क्वार्टर का वह वातावरण मुझे तरोताज़ा कर देता है। वहाँ युवा बुर्जुआ वर्ग के लोगों में एक अध्ययनशील, विचारमग्न किशोरावस्था दिखाई देती है—वे मेरे अपने समकालीनों की तुलना में (जो एक अलग परिवेश से आते थे) कहीं अधिक बुद्धिमान और अधिक पढ़े-लिखे हैं। यह एक अलग ही दुनिया है, जिसे शायद

आप मुझसे बेहतर जानते हैं; वे युवा बुर्जुआ हैं," उन्होंने कहा। उन्होंने इस अंतिम शब्द को बाकी शब्दों से अलग करके कहा—जिसके आगे उन्होंने 'b' अक्षरों की एक पूरी शृंखला जोड़ दी थी—और उच्चारण की एक विशेष आदत के चलते उस शब्द पर ज़ोर दिया। यह आदत अतीत के इतिहास में सूक्ष्म भेदों को समझने की उनकी अपनी विशेष रुचि के अनुरूप थी; लेकिन शायद ऐसा उन्होंने मुझे अपनी उद्दंडता का एक हल्का-सा झटका देने के सुख का विरोध न कर पाने के कारण भी किया था। इस बात से एम. डी शार्लस के प्रति मेरे मन में उमड़ रही उस महान और स्नेहपूर्ण करुणा में (जो एमएम. वर्दुरिन द्वारा मेरे सामने अपनी योजना का खुलासा किए जाने के बाद मेरे मन में जागी थी) किसी भी तरह की कमी नहीं आई; इससे मुझे केवल मनोरंजन ही मिला। सच कहूँ तो, किसी अन्य अवसर पर—जब मैं उनके प्रति इतना अधिक सहानुभूतिपूर्ण भाव न रखता होता—तो भी इस बात से मुझे कोई ठेस न पहुँचती। मुझे अपनी दादी से आत्म-महत्व की भावना का ऐसा पूर्ण अभाव विरासत में मिला था कि लोग आसानी से यह मान सकते थे कि मुझमें गरिमा की कमी है। निस्संदेह, मुझे इस बात का शायद ही कोई एहसास था। अपने स्कूली दिनों से ही, मैंने अपने सबसे सम्मानित साथियों को अक्सर इस बात पर नाराज़ होते देखा और सुना था कि अगर कोई तय समय पर मिलने न पहुँचे, तो वे इसे अपनी बेइज़्ज़ती समझते थे और किसी भी तरह के बेवफ़ा व्यवहार को माफ़ करने से साफ़ इनकार कर देते थे। इसी माहौल में रहते-रहते, समय के साथ मेरे बोलचाल और व्यवहार में एक ऐसी दूसरी प्रकृति (स्वभाव) उभर आई, जिस पर गर्व की गहरी छाप थी। सच कहूँ तो, लोग मुझे बेहद घमंडी समझते थे; क्योंकि मैं स्वभाव से कभी डरपोक नहीं रहा, इसलिए मैं आसानी से द्वंद्व-युद्ध (duels) के लिए तैयार हो जाता था। हालाँकि, मैं इन द्वंद्व-युद्धों को कोई खास अहमियत नहीं देता था, जिससे इनकी नैतिक गरिमा कम हो जाती थी और दूसरे लोग भी आसानी से यह मान लेते थे कि ये सब बेतुकी बातें हैं। लेकिन हमारा जो असली स्वभाव होता है, जिसे हम अक्सर अपने पैरों तले रौंद देते हैं, वह फिर भी हमारे भीतर ही कहीं न कहीं ज़िंदा रहता है। यही कारण है कि कभी-कभी, जब हम किसी महान प्रतिभाशाली व्यक्ति की कोई नई उत्कृष्ट रचना पढ़ते हैं, तो हमें उसमें अपने ही वे सारे विचार देखकर बड़ी खुशी होती है, जिन्हें हमने हमेशा तुच्छ समझा था—वे सारी खुशियाँ और गम, जिन्हें हमने अपने मन में ही दबा रखा था। उस किताब में हमें अपनी ही भावनाओं का एक

पूरा संसार फिर से देखने को मिलता है, जिन्हें हमने कभी ठुकरा दिया था; और उस किताब के ज़रिए ही हमें उन भावनाओं का असली मोल भी समझ में आता है। जीवन के अनुभवों से मैंने समय के साथ यह सीखा था कि जब कोई मुझे मूर्ख बना रहा हो, तो नाराज़ होने के बजाय, उस पर एक दोस्ताना मुस्कान बिखेर देना मेरी एक बड़ी भूल थी। लेकिन यह कमी...
आत्म-महत्व और नाराज़गी—भले ही मैंने उन्हें ज़ाहिर करना इतना कम कर दिया था कि मुझे लगभग पता ही नहीं चलता था कि वे मेरे अंदर मौजूद हैं—फिर भी वे ही मेरे अंदर के सबसे पुराने और ज़रूरी तत्व थे, जिनमें मैं पूरी तरह डूबा हुआ था। गुस्सा और द्वेष मुझमें बिल्कुल ही अलग तरीके से आते थे—अचानक और ज़बरदस्त आवेश के रूप में। इससे भी बढ़कर, मुझमें न्याय की भावना इतनी कम थी कि उसे नैतिक समझ की पूरी तरह कमी ही कहा जा सकता था। अपने दिल की गहराइयों में, मैं पूरी तरह से कमज़ोर पक्ष के साथ था, और हर उस इंसान के साथ था जो किसी मुसीबत में फँसा हो। मोरेल और एम. डी शार्लस के आपसी रिश्तों में अच्छाई और बुराई का कितना मेल था, इस बारे में मेरी कोई राय नहीं थी; लेकिन एम. डी शार्लस के लिए जो तकलीफ़ें तैयार हो रही थीं, उनके बारे में सोचकर ही मुझे बहुत ज़्यादा बेचैनी होती थी। मैं उन्हें आगाह करना चाहता था, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह कैसे करूँ। "उस छोटी सी, मेहनती दुनिया को देखना मेरे जैसे बूढ़े आदमी के लिए बहुत सुखद अनुभव है। मैं उन्हें जानता तो नहीं हूँ," उन्होंने अपना हाथ थोड़ा संकोच के साथ ऊपर उठाते हुए कहा—ताकि ऐसा न लगे कि वह अपनी जीतों के बारे में शेखी बघार रहे हैं, बल्कि अपनी पवित्रता का प्रमाण दे सकें और छात्रों की पवित्रता पर कोई शक न होने दें—"लेकिन वे बहुत ही विनम्र हैं; वे अक्सर मेरे लिए जगह भी बचाकर रखते हैं, क्योंकि मैं एक बहुत ही बुज़ुर्ग इंसान हूँ। हाँ, सचमुच, मेरे प्यारे बच्चे, इस बात पर ऐतराज़ मत करो—मैं चालीस साल से ऊपर का हो चुका हूँ," बैरन ने कहा, जबकि वह साठ साल से भी ज़्यादा के थे। "जिस हॉल में ब्रिशो लेक्चर देते हैं, वहाँ थोड़ी घुटन ज़रूर होती है, लेकिन वहाँ हमेशा कुछ न कुछ दिलचस्प सुनने को मिलता है।" हालाँकि बैरन को स्कूलों के युवाओं के साथ घुलना-मिलना ज़्यादा पसंद था—यानी उनके बीच धक्का-मुक्की खाना—फिर भी कभी-कभी, लेक्चर-रूम में उन्हें लंबे इंतज़ार से बचाने के लिए, ब्रिशो उन्हें अपने निजी दरवाज़े से अंदर ले जाते थे। सोरबोन में ब्रिशो का अपना ही दबदबा था; जब दरवाज़े का रखवाला—अपने पद की निशानी

वाली ज़ंजीरों से लदा हुआ—उनके आगे-आगे चलता था, और उनके युवा छात्र उनकी तारीफ़ करते हुए उनके पीछे-पीछे चलते थे, तब भी वह अपने अंदर की थोड़ी-सी घबराहट को दबा नहीं पाते थे। हालाँकि वह उस पल का फ़ायदा उठाकर—जब वह खुद को इतना महत्वपूर्ण महसूस कर रहे थे—शार्लस के प्रति अपना लिहाज़ दिखाना चाहते थे, फिर भी वह थोड़े-बहुत संकोच में पड़ ही जाते थे। ताकि चौकीदार उसे अंदर जाने दे, उसने एक बनावटी लहजे में और कुछ खोए-खोए से अंदाज़ में उससे कहा: "मेरे पीछे आओ, बैरन, वे तुम्हारे लिए कोई जगह ढूँढ़ देंगे," फिर, उसकी तरफ़ और कोई ध्यान दिए बिना, खुद अंदर जाने के लिए, वह तेज़ी से गलियारे में आगे बढ़ गया। दोनों तरफ़, युवा लेक्चररों की एक दोहरी कतार ने उसका स्वागत किया; ब्रिशो, जो इन युवा लोगों की नज़रों में दिखावा करने वाला नहीं दिखना चाहता था—क्योंकि वह जानता था कि इन लोगों के लिए वह एक बहुत बड़ा विद्वान था—उसने उन पर हज़ारों नज़रें डालीं, हज़ारों छोटी-छोटी सहमति भरी मुस्कानें दीं, जिन्हें उसकी फ़ौजी और पूरी तरह से फ़्रांसीसी बने रहने की चाहत ने एक पुराने सैनिक की तरफ़ से मिलने वाले दिली हौसले जैसा असर दे दिया, मानो वह कह रहा हो: "अरे, कोई बात नहीं, हम दुश्मन का सामना कर सकते हैं।" फिर उसके छात्रों की तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी। ब्रिशो कभी-कभी एम. डी शार्लस के अपने लेक्चरों में आने के इस मौके का इस्तेमाल दूसरों को खुश करने के लिए करता था, मानो वह उनकी मेहमाननवाज़ी का बदला चुका रहा हो। वह किसी अभिभावक से, या अपने किसी मध्यम-वर्गीय दोस्त से कहता: "अगर आपकी पत्नी या बेटी को इसमें दिलचस्पी हो, तो मैं आपको बता दूँ कि बैरन डी शार्लस, प्रिंस डी कैरेंसी—जो कोंडे घराने के वंशज हैं—मेरे लेक्चरों में आते हैं। यह याद रखने लायक बात है कि आपने हमारे कुलीन वर्ग के उन आखिरी वंशजों में से एक को देखा है, जो उस पुरानी शान को आज भी बनाए हुए हैं। अगर वे आना चाहें, तो वे उन्हें पहचान जाएँगे क्योंकि वे मेरी कुर्सी के ठीक बगल में बैठे होंगे। इसके अलावा, वे वहाँ अकेले होंगे—एक भारी-भरकम शरीर वाले आदमी, जिनके बाल सफ़ेद और मूँछें काली होंगी, और जिन्होंने फ़ौजी तमगा पहना होगा।" "ओह, धन्यवाद," पिता ने कहा। और, हालाँकि उसकी पत्नी के पास दूसरे काम थे, फिर भी ब्रिशो को नाराज़ न करने के लिए, उसने अपनी पत्नी को लेक्चर में शामिल होने के लिए भेजा; जबकि बेटी, जो गर्मी और भीड़ से परेशान थी, फिर भी कोंडे के उस वंशज को अपनी आँखों से बड़े

चाव से निहारती रही—और साथ ही इस बात पर हैरान भी होती रही कि उसके सिर पर कोई शाही ताज नहीं था, और वह आज के ज़माने के किसी भी आम आदमी जैसा ही दिख रहा था। इस बीच, उस आदमी ने उसकी तरफ़ बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया; लेकिन एक से ज़्यादा छात्र, जो यह नहीं जानते थे कि वह कौन है, उसकी दोस्ताना नज़रों को देखकर हैरान रह गए, और खुद को लेकर थोड़ा असहज और अकड़े हुए से महसूस करने लगे; और इस तरह, बैरन सपनों और उदासी से भरा हुआ उस कमरे से बाहर निकल गया। "अगर मैं फिर से उसी विषय पर लौट रहा हूँ, तो मुझे माफ़ करना," मैंने M. de Charlus से जल्दी से कहा, क्योंकि मुझे Brichot के लौटने की आहट सुनाई दे रही थी, "लेकिन क्या आप मुझे तार से बता सकते हैं, अगर आपको पता चले कि Mlle. Vinteuil या उनकी सहेली के पेरिस आने की उम्मीद है? मुझे ठीक-ठीक बता देना कि वे कितने समय तक रुकेंगी, और किसी को यह मत बताना कि मैंने आपसे यह पूछा था।" मुझे अब लगभग यकीन होना बंद हो गया था कि उनके आने की कोई उम्मीद है, लेकिन मैं भविष्य के लिए इस तरह खुद को सुरक्षित रखना चाहता था। "हाँ, मैं तुम्हारे लिए यह ज़रूर करूँगा; सबसे पहले तो इसलिए, क्योंकि मैं तुम्हारा बहुत एहसानमंद हूँ। बहुत समय पहले, मैंने तुम्हें जो पेशकश की थी, उसे न मानकर तुमने—भले ही इसमें तुम्हारा अपना नुकसान हुआ हो—मेरी बहुत बड़ी मदद की; तुमने मुझे मेरी आज़ादी लौटा दी। यह सच है कि मैंने उस आज़ादी को किसी और ही तरीके से गँवा दिया है," उसने उदास लहजे में आगे कहा—जिसके पीछे मुझे अपना हमराज़ बनाने की उसकी इच्छा साफ़ झलक रही थी; "और इसी बात को मैं अब भी सबसे अहम मानता हूँ—हालातों का एक ऐसा पूरा ताना-बाना, जिसका तुम अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल नहीं कर पाए।"

शायद इसलिए कि किस्मत ने ठीक उसी पल तुम्हें आगाह कर दिया था कि मेरे रास्ते में मत आना। क्योंकि इंसान तो हमेशा योजनाएँ बनाता है, पर होता वही है जो ईश्वर चाहता है। कौन जाने, जिस दिन हम Mme. के यहाँ से साथ निकले थे, उस दिन अगर... "डी विलेपैरिसिस की बात, अगर आपने मान ली होती, तो शायद बाद में जो इतनी सारी चीज़ें हुईं, वे कभी होती ही नहीं?" थोड़ी झिझक के साथ, मैंने बातचीत का रुख बदल दिया; मैंने मैडम डी विलेपैरिसिस का नाम उठाया और उनसे यह जानने की कोशिश की—जो हर लिहाज़ से इस बारे में बताने के लिए सबसे काबिल थे—कि आखिर किन वजहों से मैडम डी विलेपैरिसिस को कुलीन वर्ग

(aristocratic world) से अलग-थलग रखा जाता था। उन्होंने न सिर्फ़ मुझे इस छोटी-सी सामाजिक पहेली का हल नहीं बताया, बल्कि ऐसा भी नहीं लगा कि उन्हें इस समस्या के अस्तित्व के बारे में कोई जानकारी भी है। तब मुझे एहसास हुआ कि मैडम डी विलेपैरिसिस की जो हैसियत थी—भले ही आने वाले सालों में वह अगली पीढ़ियों को बहुत बड़ी लगे, और यहाँ तक कि मार्कीज़ के जीते-जी भी अनजान अमीरों को बहुत बड़ी लगी हो—समाज के दूसरे छोर पर, यानी उस छोर पर जहाँ से मैडम डी विलेपैरिसिस का सीधा जुड़ाव था—यानी 'गुएरमांटेस' परिवार में—उनकी हैसियत उससे कहीं ज़्यादा बड़ी मानी जाती थी। वह उनकी बुआ थीं; वे सबसे पहले और सबसे ज़्यादा उनके जन्म, शादी-ब्याह के रिश्तों और अपनी भाभी या ननद पर अपने परिवार की अहमियत का रोब जमाने के मौकों को ही तवज्जो देते थे। वे इस बात को सामाजिक नज़रिए से कम, बल्कि पारिवारिक नज़रिए से ज़्यादा देखते थे। और मैडम डी विलेपैरिसिस के मामले में यह बात मेरी सोच से कहीं ज़्यादा शानदार थी। जब मैंने सुना था कि 'विलेपैरिसिस' की उपाधि उन्होंने झूठी ही अपना रखी है, तो मैं काफ़ी हैरान हुआ था। लेकिन ऐसी कई और महान महिलाओं के भी उदाहरण मिलते हैं, जिन्होंने अपनी हैसियत से नीचे के दर्जे में शादी की, लेकिन फिर भी समाज में अपनी ऊँची और प्रभावशाली जगह बनाए रखी। एम. डी चार्लस ने मुझे सबसे पहले यह बताया कि मैडम डी विलेपैरिसिस, मशहूर 'डचेस डी ——' की भतीजी थीं—जो 'जुलाई राजशाही' (July Monarchy) के दौर में कुलीन वर्ग की सबसे मशहूर हस्ती थीं; हालाँकि उन्होंने 'नागरिक राजा' (Citizen King) और उनके परिवार के साथ मेल-जोल रखने से साफ़ इनकार कर दिया था। मैं इस डचेस के बारे में कहानियाँ सुनने के लिए कितना बेताब था! और मैडम डी विलेपैरिसिस—वही नेकदिल मैडम डी विलेपैरिसिस, जिनके गाल मुझे किसी आम औरत के गालों जैसे ही लगते थे—वही मैडम डी विलेपैरिसिस जो मुझे इतने सारे तोहफ़े भेजा करती थीं और जिनसे मैं रोज़ाना इतनी आसानी से मिल सकता था—वही मैडम डी विलेपैरिसिस असल में उस डचेस की भतीजी थीं, और उन्हीं के घर में, 'होटल डी ——' में पली-बढ़ी थीं। एम. डी चार्लस ने मुझे बताया, "उन्होंने ड्यूक डी डूडोविल से पूछा—उन तीन बहनों का ज़िक्र करते हुए—'इन तीनों बहनों में से आपको सबसे ज़्यादा कौन पसंद है?'" और जब Doudeauville ने कहा: 'Madame de Villeparisis,' तो Duchesse de —— ने जवाब दिया 'सूअर!' "क्योंकि Duchess बहुत ही

हाज़िरजवाब थीं," M. de Charlus ने कहा, और इस शब्द को वह महत्व और खास उच्चारण दिया जो Guermantes लोगों में प्रचलित था। हालाँकि, मुझे इस बात पर कोई हैरानी नहीं हुई कि उन्होंने इस बात को इतना 'हाज़िरजवाब' समझा; क्योंकि मैंने कई दूसरे मौकों पर भी लोगों में एक ऐसी प्रवृत्ति देखी थी—एक बाहरी, वस्तुनिष्ठ झुकाव—जो उन्हें दूसरों की हाज़िरजवाबी का मज़ा लेते समय, अपनी खुद की बातों की आलोचना करने वाली सख्ती को छोड़ देने पर मजबूर कर देता है; और वे उन बातों को ध्यान से देखते और याद रखते हैं, जिन्हें खुद बनाने में उन्हें शर्म आती। "लेकिन आखिर वह कर क्या रहा है? वह तो मेरा ओवरकोट ला रहा है," उन्होंने कहा, जब उन्होंने देखा कि Brichot ने इतनी लंबी खोज की, लेकिन उसका कोई खास नतीजा नहीं निकला। "बेहतर होता कि मैं खुद ही जाकर उसे ले आता। खैर, अब तुम इसे पहन सकते हो। क्या तुम्हें पता है, मेरे प्यारे लड़के, कि यह बहुत ही 'आपत्तिजनक' बात है? यह तो एक ही गिलास से पानी पीने जैसा है; मैं तुम्हारे मन की बातें पढ़ सकूँगा।" "नहीं, ऐसे नहीं, आओ, मुझे करने दो," और जैसे ही उसने मुझे अपने बड़े कोट में डाला, उसने उसे मेरे कंधों पर दबाया, मेरे गले के चारों ओर बांधा, और अपने हाथ से मेरी ठुड्डी को सहलाते हुए माफ़ी मांगी: "इस उम्र में, उसे कोट पहनना नहीं आता, किसी को उसे ठीक से पहनाना पड़ता है; मैंने अपना सही काम छोड़ दिया है, ब्रिचोट; मेरा जन्म तो एक आया (nursery-maid) बनने के लिए हुआ था।" मैं घर जाना चाहता था, लेकिन चूंकि M. de Charlus ने Morel को खोजने जाने का इरादा ज़ाहिर किया था, इसलिए Brichot ने हम दोनों को रोक लिया। इसके अलावा, यह पक्का यकीन कि जब मैं घर जाऊंगा तो मुझे Albertine वहीं मिलेगी—एक ऐसा यकीन जो उतना ही पक्का था जितना कि दोपहर में मुझे महसूस हुआ था कि Albertine Trocadéro से घर लौट आएगी—ने मुझे इस पल उसे देखने के लिए उतना ही कम बेचैन कर दिया था, जितना कि मैं तब था जब मैं पियानो पर बैठा था, Françoise के फ़ोन संदेश भेजने के बाद। और इसी शांति ने मुझे इस बातचीत के दौरान, जब भी मैंने उठने की कोशिश की, Brichot की हिदायतों का पालन करने में मदद की; Brichot को डर था कि मेरे जाने से Charlus शायद तब तक उसके साथ न रुके, जब तक कि Mme. Verdurin हमें लेने न आ जाएं। "आओ," उसने Baron से कहा, "थोड़ी देर हमारे साथ यहीं रुको; तुम उसे थोड़ी देर में 'accolade' (सम्मान का आलिंगन) दे देना," Brichot ने आगे

कहा, अपनी लगभग अंधी आँखों को मुझ पर गड़ाते हुए—जिनमें कई ऑपरेशनों के बाद कुछ जान तो लौट आई थी, लेकिन उनमें वह चपलता नहीं थी जो किसी की ओर तिरछी नज़र से देखते हुए शरारत ज़ाहिर करने के लिए ज़रूरी होती है। "'Accolade'? कितना बेतुका है!" Baron ने एक तीखी और जोश भरी आवाज़ में कहा। "मेरे लड़के, मैं तुमसे कहता हूँ, उसे लग रहा है कि वह किसी इनाम-वितरण समारोह में है; वह अपने युवा छात्रों के सपने देख रहा है। मैं खुद से पूछता हूँ कि कहीं वह उनके साथ सोता तो नहीं है?" "तुम Mlle. Vinteuil से मिलना चाहते हो," Brichot ने कहा, जिसने o के आखिरी शब्द सुन लिए थे।
आपकी बातचीत। "मैं वादा करता हूँ कि अगर वह आती है, तो मैं आपको ज़रूर बताऊँगा; मुझे यह बात Mme. Verdurin से पता चल जाएगी," क्योंकि उसे यकीनन यह अंदाज़ा था कि Baron पर उस छोटे से ग्रुप से तुरंत बाहर निकाले जाने का खतरा मंडरा रहा है। "मैं समझा, तो आपको लगता है कि Mme. Verdurin पर मेरा हक आपसे कम है," M. de Charlus ने कहा, "कि मुझे इन बेहद बदनाम लोगों के आने की खबर दी जाए। आप जानते हैं कि ये लोग काफी बदनाम हैं। Mme. Verdurin का इन्हें यहाँ आने देना गलत है; ये लोग तो बस 'फास्ट सेट' (आधुनिक और बेपरवाह लोगों के समूह) के लिए ही ठीक हैं। इनकी दोस्ती औरतों के एक बेहद बुरे गिरोह से है। ये लोग बहुत ही घटिया जगहों पर मिलते-जुलते हैं।" इन शब्दों में से हर एक शब्द के साथ, मेरी तकलीफ़ और भी बढ़ गई, क्योंकि हर बार एक नई तरह की तकलीफ़ जुड़ जाती थी। "बिल्कुल नहीं, मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि Mme. Verdurin पर मेरा हक आपसे ज़्यादा है," Brichot ने अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा, क्योंकि उसे डर था कि कहीं उसने Baron के मन में शक पैदा न कर दिया हो। और जब उसने देखा कि मैं जाने पर अड़ा हुआ हूँ, तो उसने मुझे उस वादे का लालच देकर रोकने की कोशिश की: "एक बात ऐसी है जिस पर Baron ने शायद ध्यान नहीं दिया, जब वह इन दोनों औरतों की इज़्ज़त-शोहरत की बात कर रहा था; वह बात यह है कि किसी इंसान की इज़्ज़त-शोहरत एक ही समय पर बहुत खराब और बिल्कुल बेबुनियाद भी हो सकती है। मिसाल के तौर पर, उस ज़्यादा बदनाम ग्रुप में जिसे मैं 'समानांतर' (parallel) ग्रुप कहूँगा, यह पक्का है कि न्याय में बहुत सारी गलतियाँ होती हैं; इतिहास में ऐसे कई मशहूर लोगों को 'सोडोमी' (अप्राकृतिक यौन संबंध) के आरोप में दोषी ठहराया गया है, जो असल में उस आरोप से पूरी तरह बेकसूर

थे। Michelangelo का एक औरत के लिए गहरा प्यार, जिसकी हाल ही में खोज हुई है, एक ऐसा नया सच है जिसके आधार पर Leo X के उस दोस्त को मरणोपरांत दोबारा सुनवाई का हक मिलना चाहिए। मुझे लगता है कि Michelangelo का मामला उन लोगों को (जो खुद को बहुत ऊँचा समझते हैं) और 'Villette' के लोगों को भड़काने और एकजुट करने के लिए बिल्कुल सही है; खासकर तब, जब एक दूसरा मामला—जिसमें 'अराजकतावाद' (anarchism) ने अपना सिर उठाया था और जो हमारे 'शौकीन' (dilettantes) लोगों के लिए एक 'फैशनेबल पाप' बन गया था—अब खत्म हो चुका है; और अब तो उस मामले का ज़िक्र भी नहीं किया जाता, कहीं झगड़ा न खड़ा हो जाए।" जिस पल ब्रिचोट ने पुरुषों की शोहरत के बारे में बात करना शुरू किया, M. de Charlus के चेहरे के हर हाव-भाव से एक खास तरह की बेसब्री झलकने लगी—वैसी ही बेसब्री जो किसी मेडिकल या मिलिट्री एक्सपर्ट के चेहरे पर तब दिखती है, जब समाज के ऐसे लोग, जिन्हें उस विषय के बारे में कुछ भी पता नहीं होता, इलाज या रणनीति के मामलों पर बेतुकी बातें करने लगते हैं। "तुम्हें इस मामले के बारे में बिल्कुल भी कुछ नहीं पता," आखिरकार उन्होंने ब्रिचोट से कहा। "मुझे एक भी ऐसी शोहरत बताओ जो बेबुनियाद हो। नाम बताओ।" "ओह हाँ, मुझे पूरी कहानी पता है," ब्रिचोट की एक दबी-दबी सी बात पर उन्होंने बेरुखी से जवाब दिया, "वे लोग जिन्होंने बहुत पहले, बस जिज्ञासावश या किसी गुज़र चुके दोस्त के प्रति स्नेहवश एक बार ऐसा करके देखा था; और वह आदमी, जिसे डर रहता है कि कहीं वह बहुत आगे न निकल गया हो—अगर आप उससे किसी पुरुष की सुंदरता के बारे में बात करें, तो वह जवाब देता है कि यह सब उसके लिए 'चीनी भाषा' जैसा है, कि वह एक सुंदर पुरुष और एक बदसूरत पुरुष के बीच वैसे ही फर्क नहीं कर सकता, जैसे दो मोटरकारों के इंजनों के बीच फर्क नहीं कर सकता—क्योंकि मैकेनिक्स उसके बस की बात नहीं है। यह सब कोरी बकवास है। ध्यान रहे, मेरा यह कहने का मतलब बिल्कुल नहीं है कि कोई 'बुरी' (या जिसे आम तौर पर ऐसा कहा जाता है) और फिर भी बेबुनियाद शोहरत बिल्कुल ही असंभव है। यह इतनी असाधारण और इतनी दुर्लभ है कि व्यावहारिक तौर पर इसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। साथ ही, मैं—जिसे चीज़ों की तह तक जाने की एक खास जिज्ञासा रहती है—ऐसे कुछ मामलों से वाकिफ हूँ जो मनगढ़ंत नहीं थे। हाँ, अपनी ज़िंदगी के दौरान, मैंने (ज़ाहिर है, वैज्ञानिक नज़रिए से कह रहा हूँ—मेरी बातों

को एकदम शाब्दिक अर्थ में मत लेना) दो ऐसी शोहरतें पकड़ी हैं जो बेबुनियाद थीं। ये आम तौर पर नामों की एक जैसी होने की वजह से, या कुछ बाहरी निशानों की वजह से पैदा होती हैं —जैसे, ढेर सारी अंगूठियाँ पहनना—जिन्हें देखकर वे लोग, जो सही-गलत का फैसला करने के काबिल नहीं होते, यह मान बैठते हैं कि ये वही चीज़ें हैं जिनका ज़िक्र तुम अभी कर रहे थे; ठीक वैसे ही, जैसे वे लोग यह मान लेते हैं कि कोई किसान बिना 'Jarnignié' कहे कोई वाक्य पूरा नहीं करता, या कोई अंग्रेज बिना 'Goddam' कहे कोई बात नहीं करता।" बुलेवार्ड थिएटरों के लिए संवाद। जो बात आपको हैरान करेगी, वह यह है कि जो लोग सबसे ज़्यादा 'गलत' होते हैं, वे ही जनता की नज़र में सबसे ज़्यादा 'सही'' माने जाते हैं। खुद आप, ब्रिशो—जो इस घर में आने वाले किसी भी व्यक्ति के 'सदाचार' की गारंटी देने के लिए आग में हाथ डालने को भी तैयार रहते हैं, जबकि जानकार लोग जानते हैं कि वह तो 'भेड़ की खाल में भेड़िया' है—आप भी आम लोगों की तरह, किसी ऐसे मशहूर व्यक्ति के बारे में कही गई बातों पर आँख मूँदकर विश्वास कर लेते हैं, जिसे आम जनता 'सदाचार का अवतार' मानती है; जबकि असलियत यह है कि उस व्यक्ति को इन सब बातों से रत्ती भर भी फ़र्क नहीं पड़ता। मैं 'रत्ती भर' इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि अगर हम ऐसे लोगों को पच्चीस लुई (सोने के सिक्के) देने का प्रस्ताव रखें, तो हम देखेंगे कि ये 'तथाकथित संत' पल भर में ही गायब हो जाएँगे। मौजूदा हालात में, 'पवित्रता' की औसत दर—अगर आप इस तरह की चीज़ों में कोई पवित्रता देखते भी हैं—तो वह कहीं तीस से चालीस प्रतिशत के बीच ही है।" अगर ब्रिशो ने 'बदनामी' के इस मुद्दे को पुरुषों के संदर्भ में देखा था, तो मेरे लिए—अल्बर्टिन के बारे में सोचते हुए—ठीक इसके विपरीत, बैरन की ये बातें स्त्रियों पर लागू होती थीं। उनके ये आँकड़े सुनकर मैं सन्न रह गया; हालाँकि मेरे मन में यह बात भी थी कि शायद वे अपनी संख्याएँ बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे थे, ताकि उन्हें वह कुल आँकड़ा मिल सके जिसे वे सच मानना चाहते थे—और इसके अलावा, उन्होंने ये आँकड़े ऐसे लोगों की रिपोर्टों पर आधारित किए थे जो...

ये लोग अफ़वाहें फैलाने वाले और शायद झूठे भी थे, और किसी भी हाल में अपनी ही इच्छाओं से गुमराह हो गए थे; और ये इच्छाएँ, जब M. de Charlus की इच्छाओं के साथ जुड़ गईं, तो निःसंदेह बैरन की गणनाओं को गलत साबित कर दिया। "तीस प्रतिशत!" Brichot ने हैरानी से कहा। "अरे, अगर ये अनुपात उलट भी जाते, तब भी मुझे दोषियों की संख्या को सौ गुना

बढ़ाना पड़ता। अगर बात वैसी ही है जैसी आप कह रहे हैं, बैरन, और आप गलत नहीं हैं, तो हमें यह मानना पड़ेगा कि आप उन विरले दूरदर्शी लोगों में से एक हैं, जो ऐसी सच्चाई को देख लेते हैं, जिस पर उनके आस-पास किसी ने कभी शक भी नहीं किया होता। ठीक वैसे ही, जैसे Barrés ने संसदीय भ्रष्टाचार के बारे में कुछ खोजें की थीं, जिनकी सच्चाई बाद में साबित हो गई थी—ठीक वैसे ही, जैसे Leverrier के ग्रह का अस्तित्व साबित हुआ था। Mme. Verdurin शायद उन लोगों का ज़िक्र करना ज़्यादा पसंद करेंगी, जिनका नाम मैं यहाँ नहीं लेना चाहूँगा; उन लोगों ने 'इंटेलिजेंस ब्यूरो' और 'जनरल स्टाफ़' में कुछ ऐसी गतिविधियाँ पकड़ ली थीं, जो मुझे पूरा यकीन है, देशभक्ति के जोश से प्रेरित थीं—और जिनके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। 'फ़्री-मेसनरी', जर्मन जासूसी, और 'मॉर्फ़ीन की लत'—इन विषयों पर Léon Daudet रोज़-ब-रोज़ एक ऐसी काल्पनिक परी-कथा गढ़ते जाते हैं, जो अंत में एकदम सच्ची साबित होती है। तीस प्रतिशत!" Brichot ने हैरानी में डूबे हुए स्वर में यह बात दोहराई। यह कहना बिल्कुल सही होगा कि M. de Charlus अपने समकालीन लोगों में से ज़्यादातर लोगों पर 'विकृत यौन-रुचि' (inversion) का आरोप लगाते थे; हाँ, उन पुरुषों को वे हमेशा इस आरोप से बरी रखते थे, जिनके साथ उनके खुद के संबंध रहे थे—क्योंकि उन्हें लगता था कि ऐसे पुरुषों का मामला ज़्यादा पेचीदा है (बशर्ते उन संबंधों में रोमांस की ज़रा-सी भी झलक मौजूद रही हो)। यही वजह है कि हम दुनियादारी समझने वाले ऐसे पुरुषों को देखते हैं, जो आम तौर पर औरतों की 'पवित्रता' (honour) पर यकीन नहीं करते; लेकिन अपनी उस प्रेमिका के मामले में, जो कभी उनकी 'रखैल' (mistress) रही हो, वे उसकी पवित्रता का कुछ अंश ज़रूर स्वीकार कर लेते हैं। उस औरत के बारे में वे पूरी ईमानदारी से और एक रहस्यमयी अंदाज़ में यह कहते हैं: "नहीं, आप गलत समझ रहे हैं; वह उस तरह की लड़की बिल्कुल नहीं है।" यह अप्रत्याशित तारीफ़, कुछ हद तक उनके अपने 'आत्म-सम्मान' से प्रेरित होती है—क्योंकि उन्हें यह सोचकर अच्छा लगता है कि ऐसे विशेष 'अनुग्रह' (favours) सिर्फ़ उन्हीं के लिए सुरक्षित रखे गए थे। कुछ हद तक यह तारीफ़ उनकी अपनी 'सरलता' (simplicity) की वजह से भी होती है—क्योंकि उनकी प्रेमिका ने उन्हें जो कुछ भी यकीन दिलाया, उसे उन्होंने आसानी से सच मान लिया। और कुछ हद तक यह तारीफ़, 'जीवन की जटिलता' को समझने की उस भावना से भी पैदा होती है—जिसके चलते हमें यह एहसास

होता है कि, जैसे ही हम दूसरे लोगों या दूसरे जीवन-शैलियों के करीब जाते हैं, तो हमारे बनाए हुए पहले से तैयार 'ठप्पे' (labels) और 'वर्गीकरण' (classifications) हमें बेहद अधूरे और बेतुके लगने लगते हैं। "तीस प्रतिशत! लेकिन ज़रा सावधान रहें; उन इतिहासकारों से कम भाग्यशाली, जिनके निष्कर्षों को भविष्य सही साबित करेगा—बैरन, अगर आप आने वाली पीढ़ियों के सामने वे आँकड़े पेश करेंगे जो आप हमें बता रहे हैं, तो हो सकता है कि वे उन्हें गलत ठहरा दें। आने वाली पीढ़ियाँ केवल दस्तावेज़ी सबूतों के आधार पर ही फैसला करती हैं, और वे आपके तथ्यों की पुष्टि पर ज़ोर देंगी। लेकिन चूँकि इस तरह की सामूहिक घटनाओं को प्रमाणित करने वाला कोई दस्तावेज़ उपलब्ध नहीं होगा—जिन्हें कुछ गिने-चुने समझदार लोग जान-बूझकर अंधेरे में ही रखना पसंद करते हैं—तो बेहतरीन दिमाग वाले लोग गुस्से से भर उठेंगे, और आपको एक झूठा या पागल व्यक्ति से ज़्यादा कुछ नहीं समझा जाएगा। सामाजिक परीक्षा में सर्वोच्च अंक और इस धरती पर श्रेष्ठता हासिल करने के बाद भी, आपको कब्र के उस पार तिरस्कार और अस्वीकृति का कड़वा अनुभव चखना पड़ेगा। जैसा कि हमारे मित्र बॉसुएट ने कहा था—ईश्वर मुझे माफ करे—'यह सब किसी काम का नहीं है'।" "मुझे इतिहास में कोई दिलचस्पी नहीं है," एम. डी चार्लस ने जवाब दिया, "मेरे लिए यह जीवन ही काफी है; यह अपने आप में काफी दिलचस्प है, जैसा कि बेचारा स्वान कहा करता था।" "क्या? आप स्वान को जानते थे, बैरन? मुझे तो इस बात का पता ही नहीं था। मुझे बताइए, क्या उसकी भी वैसी ही प्रवृत्ति थी?" ब्रिशॉट ने कुछ संदेह भरे अंदाज़ में पूछा। "क्या गज़ब का दिमाग है इस आदमी का! तो क्या आप यह मानकर चल रहे हैं कि मैं सिर्फ़ ऐसे ही लोगों को जानता हूँ? नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता," चार्लस ने ज़मीन की ओर देखते हुए और नफा-नुकसान का हिसाब लगाने की कोशिश करते हुए कहा। और यह तय करते हुए कि—चूँकि वह स्वान के बारे में बात कर रहा था, जिसकी इस तरह की चीज़ों के प्रति नापसंदगी हमेशा से जगज़ाहिर रही थी—इसलिए एक हल्की-फुल्की स्वीकारोक्ति उस व्यक्ति के लिए तो पूरी तरह से हानिरहित ही होगी जो इसका विषय है, और उस व्यक्ति के लिए गर्व का विषय होगी जिसने इसे एक इशारे के रूप में ज़ाहिर होने दिया: "मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि बहुत पहले, हमारे स्कूली दिनों में, एक बार गलती से ऐसा हुआ था," बैरन ने कहा—मानो वह अनिच्छा से बोल रहा हो और जैसे वह अपने मन की बात ज़ोर से सोच रहा हो—फिर खुद को

संभालते हुए उसने कहा: "लेकिन वह तो सदियों पुरानी बात है; आप मुझसे यह उम्मीद कैसे कर सकते हैं कि मुझे वह सब याद हो? आप तो मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं," उसने हँसते हुए अपनी बात खत्म की। "खैर, जो भी हो, वह कोई ऐसा व्यक्ति तो था नहीं जिसे आप 'खूबसूरत' कह सकें!" ब्रिशॉट ने कहा—जो खुद देखने में बेहद बदसूरत था, लेकिन खुद को बहुत सुंदर समझता था, और हमेशा इस बात पर यकीन करने के लिए तैयार रहता था कि बाकी सभी पुरुष बदसूरत हैं। "अपनी ज़बान पर काबू रखो," बैरन ने कहा, "तुम्हें पता भी नहीं कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो। उन दिनों उसका रंग आड़ू जैसा गुलाबी था, और," उसने हर शब्द पर एक नया सुर जोड़ते हुए कहा, "वह खुद कामदेव जितना सुंदर था। इसके अलावा, वह हमेशा से ही बहुत आकर्षक था। औरतें उसके प्यार में पागल थीं।" "लेकिन क्या तुम कभी उसकी पत्नी से मिले थे?" "अरे, उसी के ज़रिए तो वह उससे मिला था। एक शाम जब वह 'मिस सैक्रिपांट' का किरदार निभा रही थी, तो मुझे उसका भेष बहुत आकर्षक लगा था; मैं क्लब के कुछ दोस्तों के साथ था, हममें से हर कोई अपने साथ एक औरत को घर ले गया था। और, हालाँकि मैं तो बस सोना चाहता था, लेकिन बदज़बान लोगों ने यह अफ़वाह फैला दी—क्योंकि लोग कितने बुरे और ईर्ष्यालु होते हैं, यह तो हम जानते ही हैं—कि मैं ओडेट के साथ बिस्तर पर गया था। बस, उसने इसी अफ़वाह का फ़ायदा उठाकर मुझे परेशान करना शुरू कर दिया, और मुझे लगा कि अगर मैं उसे स्वान से मिलवा दूँ, तो शायद उससे मेरा पीछा छूट जाएगा। उस पल के बाद से उसने मुझे कभी नहीं छोड़ा, वह मुझसे दूर ही नहीं हुई।"

सीधे शब्दों में कहूँ तो, उसके सारे खत मैंने ही उसके लिए लिखे थे। और बाद में, उसे बाहर घुमाने ले जाने का काम भी मुझे ही करना पड़ा। देखो बेटे, अच्छी इज्ज़त होने का यही नतीजा होता है। हालाँकि, मैं इसका आधा भी हकदार नहीं था। उसने मुझे मजबूर किया कि मैं उसकी मदद करूँ, ताकि वह उस आदमी को धोखा दे सके—पाँच-छह और आदमियों के साथ मिलकर।" और वे आशिक, जो ओडेट की ज़िंदगी में एक के बाद एक आए थे (वह कभी इस आदमी के साथ होती, तो कभी उस आदमी के साथ; बेचारा स्वान, जो कभी ईर्ष्या तो कभी प्यार में अंधा हो चुका था, उन आशिकों में से किसी का नाम भी कभी नहीं भाँप पाया था। वह बस संभावनाओं का हिसाब लगाता रहता और उन कसमों पर यकीन कर लेता, जो किसी अपराधी के मुँह से निकली विरोधाभासी बातों से भी ज़्यादा पक्की लगती थीं—एक ऐसा

विरोधाभास जो पकड़ में आना कहीं ज़्यादा मुश्किल था, और साथ ही कहीं ज़्यादा अर्थपूर्ण भी; जिसका फायदा कोई ईर्ष्यालु प्रेमी, उस झूठी जानकारी के मुकाबले कहीं ज़्यादा तार्किक ढंग से उठा सकता था, जिसका दिखावा वह अपनी प्रेमिका को भ्रमित करने की उम्मीद में करता था), इन आशिकों के नाम एम. डी. शार्लस ने इतनी पक्की निश्चितता के साथ गिनाने शुरू किए, मानो वह फ्रांस के राजाओं की सूची दोहरा रहा हो। और सच भी यही है कि कोई ईर्ष्यालु प्रेमी, किसी ऐतिहासिक घटना के समकालीन लोगों की तरह ही, उस घटना के बहुत ज़्यादा करीब होता है—उसे असल में कुछ भी पता नहीं होता। और यह अजनबियों की नज़रों में ही है कि बेवफाई का हास्यास्पद पहलू इतिहास जैसी स्पष्टता पा लेता है, और नामों की उन सूचियों के रूप में लंबा खिंचता चला जाता है, जो वैसे तो बेमानी होती हैं, पर मेरे जैसे किसी दूसरे ईर्ष्यालु प्रेमी के लिए बेहद तकलीफ़देह बन जाती हैं; जो खुद को रोक नहीं पाता और अपने मामले की तुलना उस मामले से करने लगता है, जिसके बारे में वह सुन रहा होता है—और खुद से पूछता है कि कहीं जिस औरत पर उसे शक है, उसकी भी तो ऐसी ही 'शानदार' सूची नहीं है? लेकिन वह कभी भी इससे ज़्यादा कुछ नहीं जान पाता; यह एक तरह की सार्वभौमिक साज़िश है—एक 'आँख-मिचौली' का खेल, जिसमें हर कोई बड़ी बेरहमी से हिस्सा लेता है। इस खेल में होता यह है कि जब उसकी प्रेमिका एक से दूसरे के पास जाती रहती है, तो उसकी आँखों पर एक पट्टी बँधी रहती है, जिसे वह लगातार हटाने की कोशिश करता रहता है, पर कामयाब नहीं हो पाता; क्योंकि हर कोई उसे अंधा ही बनाए रखता है—बेचारे को! कुछ लोग दयाभाव से ऐसा करते हैं, तो कुछ दुष्ट लोग अपनी द्वेष-भावना के चलते; कुछ ओछी मानसिकता वाले लोग भद्दे मज़ाकों के शौकीन होने के कारण, तो कुछ सभ्य लोग अपनी शिष्टता और अच्छे संस्कारों के चलते—और ये सभी लोग मिलकर उन सामाजिक रिवाजों का सम्मान करते हैं, जिन्हें हम 'सिद्धांत' कहते हैं। "लेकिन क्या स्वान को कभी पता नहीं चला कि तुमने भी उसके 'कृपा-प्रसाद' का आनंद लिया था?" "कैसी बात करते हो! अगर तुमने चार्ल्स के सामने ऐसी कोई बात कही होती, तो सोचो क्या होता!" यह सुनकर तो किसी के भी रोंगटे खड़े हो जाएँ। अरे, मेरे प्यारे दोस्त, वह तो मुझे वहीं मौके पर मार डालता; वह इतना ईर्ष्यालु था, जैसे कोई बाघ हो। मैंने ओडेट के सामने कभी इस बात का ज़िक्र नहीं किया—हालाँकि उसे इससे ज़रा भी बुरा नहीं लगता—कि... लेकिन तुम मेरी ज़बान को इतना मत

चलने दो। और मज़े की बात तो यह है कि उसी ने उस पर रिवॉल्वर चलाई थी, और गोली लगभग मुझे ही लग गई थी। ओह! उस जोड़े के साथ मेरा समय बहुत बढ़िया गुज़रता था; और ज़ाहिर है, मुझे ही डी'ऑसमंड के खिलाफ़ उसका 'सेकंड' (सहायक) बनना पड़ा, जिसने मुझे कभी माफ़ नहीं किया। डी'ऑसमंड ओडेट को भगा ले गया था, और स्वान ने खुद को तसल्ली देने के लिए ओडेट की बहन को अपनी प्रेमिका—या दिखावटी प्रेमिका—बना लिया था। लेकिन सच कहूँ तो, तुम मुझसे स्वान की पूरी कहानी मत पूछो; अगर मैं बताने लगा, तो हमें यहाँ दस साल लग जाएँगे। तुम्हें पता है न? उसके बारे में मुझसे ज़्यादा कोई नहीं जानता। जब ओडेट चार्ल्स से नहीं मिलना चाहती थी, तब मैं ही उसे बाहर घुमाने ले जाता था। यह मेरे लिए और भी ज़्यादा अजीब बात थी, क्योंकि मेरा एक बहुत करीबी रिश्तेदार है जिसका नाम 'क्रेसी' है—हालाँकि उस नाम पर उसका कोई हक़ नहीं है—फिर भी वह इस बात से बिल्कुल भी खुश नहीं था। क्योंकि ओडेट खुद को 'ओडेट डी क्रेसी' कहलवाती थी—और वह ऐसा कर भी सकती थी—क्योंकि वह अभी भी एक 'क्रेसी' से अलग हुई थी, जिसकी वह अभी भी कानूनी पत्नी थी। वह क्रेसी एक बिल्कुल असली और प्रतिष्ठित व्यक्ति था, जिससे ओडेट ने उसकी पाई-पाई निचोड़ ली थी। लेकिन मैं तुम्हें इस क्रेसी के बारे में क्यों बताऊँ? मैंने तुम्हें उसके साथ 'क्रॉलर' (ट्रेन) में देखा है; तुम उसे बालबेक में अपने साथ रात के खाने पर भी बुलाते थे। बेचारे को उन खानों की बहुत ज़रूरत रही होगी; वह स्वान से मिलने वाले एक बहुत छोटे से भत्ते पर गुज़ारा करता था। मुझे इस बात का बहुत डर है कि मेरे दोस्त की मौत के बाद, वह आमदनी भी पूरी तरह से बंद हो गई होगी। "मुझे जो बात समझ नहीं आती," एम. डी चार्लस ने मुझसे कहा, "वह यह है कि—चूँकि तुम अक्सर चार्ल्स के यहाँ जाते रहते थे—तो आज शाम तुमने मुझसे 'नेपल्स की रानी' से मिलवाने के लिए क्यों नहीं कहा?" असल में, मैं देख सकता हूँ कि लोगों में आपकी दिलचस्पी कम है, और अनोखी चीज़ों में ज़्यादा; और यह बात मुझे उस इंसान में देखकर हमेशा हैरान करती है जो स्वान को जानता था—एक ऐसा इंसान जिसमें इस तरह की दिलचस्पी इतनी ज़्यादा विकसित थी कि यह कहना नामुमकिन है कि इन मामलों में मैंने उसे सिखाया था या उसने मुझे। यह मुझे उतना ही हैरान करता है, जितना कि अगर मैं किसी ऐसे इंसान से मिलूँ जो व्हिस्लर को जानता हो, लेकिन फिर भी उसे यह न पता हो कि 'रुचि' (taste) का क्या मतलब होता है। कसम से, असल में तो मोरेल को

उससे मिलवाया जाना चाहिए था; वह भी इसके लिए बहुत ज़्यादा उत्सुक था, क्योंकि वह जितना समझदार इंसान है, आप सोच भी नहीं सकते। यह तो बड़ी परेशानी की बात है कि वह चली गई। खैर, मैं किसी न किसी दिन उन दोनों की मुलाकात करवा ही दूँगा। यह बहुत ज़रूरी है कि वह उसे जाने। इसमें बस एक ही रुकावट आ सकती है—अगर रात में उसकी मौत हो जाए। खैर, हम उम्मीद कर सकते हैं कि ऐसा नहीं होगा।" अचानक ब्रिशो—जो अभी भी 'तीस प्रतिशत' वाले आँकड़े के सदमे से उबर नहीं पाया था, जो M. de Charlus ने उसे बताया था—ब्रिशो...

वह व्यक्ति, जो इस पूरे समय अपने विचार का पीछा करता रहा था—अचानक ही बोल पड़ा। उसकी बोलने की शैली में ऐसी तेज़ी थी जो किसी ऐसे जाँच-अधिकारी की याद दिलाती थी जो किसी कैदी से गुनाह कबूल करवाना चाहता हो; लेकिन असल में यह प्रोफ़ेसर की उस इच्छा का नतीजा था जिसके तहत वह खुद को बहुत तेज़-नज़र और समझदार दिखाना चाहते थे, और साथ ही उस हिचकिचाहट का भी जो उन्हें इतना गंभीर आरोप लगाने से पहले महसूस हो रही थी। उसने M. de Charlus से एक गंभीर अंदाज़ में पूछा, "क्या Ski भी वैसा ही नहीं है?" अपनी कथित अंतर्ज्ञान-शक्ति (intuition) से हमें प्रभावित करने के लिए, उसने Ski को चुना था। उसने मन ही मन सोचा कि, "चूँकि हर दस लोगों में से केवल तीन ही बेगुनाह होते हैं, इसलिए अगर मैं Ski का नाम लेता हूँ तो मेरे गलत होने का खतरा बहुत कम है।" Ski उसे थोड़ा अजीब लगता था—उसे नींद न आने की बीमारी थी, वह इत्र लगाता था; संक्षेप में कहें तो, वह पूरी तरह से 'सामान्य' नहीं था। Baron ने कड़वी, हठधर्मी और चिढ़ी हुई व्यंग्यात्मकता के साथ कहा, "बिल्कुल भी नहीं! तुम जो कह रहे हो वह पूरी तरह से झूठा, बेतुका और मनगढ़ंत है। Ski केवल उन्हीं लोगों को 'वैसा' लगता है जो उसके बारे में कुछ नहीं जानते; अगर वह सचमुच वैसा होता, तो वह वैसा दिखता नहीं—और यह बात मैं बिना किसी आलोचना के कह रहा हूँ—क्योंकि उसमें एक खास तरह का आकर्षण है; सच कहूँ तो, मुझे उसमें कुछ बहुत ही लुभावना लगता है।" Brichot ने ज़ोर देकर कहा, "तो फिर, हमें कुछ नाम तो बताओ।" M. de Charlus ने एक सख्त और गंभीर अंदाज़ में खुद को सीधा किया। उसने अपने जैसे लोगों में पाई जाने वाली उस खास तरह की 'जल्द-नाराज़ हो जाने वाली संवेदनशीलता' और अपनी बातचीत की विशेषता रही 'बड़ी-बड़ी बातें करने की बनावटी शैली' के साथ जवाब दिया,

"आह! मेरे प्यारे सज्जन, जैसा कि आप जानते हैं, मैं एक 'अमूर्त' (abstract) दुनिया में रहता हूँ; इस तरह की सारी चीज़ें मुझे केवल एक 'पारलौकिक' (transcendental) दृष्टिकोण से ही दिलचस्प लगती हैं।" उसने आगे कहा, "मेरे लिए—आप समझते हैं न—केवल 'सामान्य सिद्धांत' ही मायने रखते हैं; मैं आपसे इस विषय पर वैसे ही बात कर रहा हूँ जैसे मैं 'गुरुत्वाकर्षण के नियम' पर बात करता।" लेकिन चिढ़कर दी गई प्रतिक्रिया के ये पल—जिनमें Baron अपनी असली ज़िंदगी को छिपाने की कोशिश करता था—बहुत कम समय तक ही टिकते थे। इसकी तुलना में, वे घंटे कहीं ज़्यादा लंबे होते थे जब वह अपनी असलियत को दूसरों के सामने आने देता था, और उसे एक चिढ़ाने वाली आत्म-संतुष्टि के साथ ज़ाहिर करता था; क्योंकि उसके अंदर अपने राज़ को छिपाने के डर से कहीं ज़्यादा, अपने मन की बात दूसरों को बताने की ज़रूरत प्रबल थी। "मैं जो कहने की कोशिश कर रहा था," उसने आगे कहा, "वह यह है कि एक ऐसी बुरी बदनामी के मुकाबले, जो बेबुनियाद है, सैकड़ों ऐसी अच्छी शोहरतें हैं जो उतनी ही बेबुनियाद हैं। ज़ाहिर है, ऐसे लोगों की संख्या, जो अपनी शोहरत के हकदार नहीं हैं, इस बात पर निर्भर करती है कि आप किस पर भरोसा करते हैं—उनके जैसे लोगों की बातों पर या दूसरों की बातों पर। और यह सच है कि अगर बाद वाले लोगों की दुर्भावना इस बात से सीमित हो जाती है कि उन्हें यह मानने में बहुत मुश्किल होती है कि चोरी या हत्या जैसा घिनौना काम, जिसे वे बुरा मानते हैं, ऐसे लोग कर रहे हैं जिन्हें वे संवेदनशील और ईमानदार समझते हैं; तो वहीं पहले वाले लोगों की दुर्भावना, एक ऐसी चाहत से बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है—मैं क्या कहूँ?—कि वे उन लोगों को 'पहुँच के भीतर' समझें, जो उन्हें पसंद आते हैं। यह चाहत उन्हें उन लोगों की दी हुई जानकारी से मिलती है, जो खुद भी ऐसी ही चाहत से गुमराह हुए होते हैं—असल में, यह चाहत उस दूरी या अलगाव की वजह से पैदा होती है, जिसके साथ आमतौर पर इन लोगों को देखा जाता है। मैंने एक ऐसे आदमी को सुना है, जिसे उसके इन शौकों की वजह से काफी नापसंदगी से देखा जाता था, उसने कहा कि उसे लगता है कि समाज का एक खास आदमी भी उसके जैसे ही शौक रखता है। और ऐसा मानने का उसका एकमात्र कारण यह था कि उस दूसरे आदमी ने उसके साथ नरमी से पेश आकर बात की थी! "गिनती करने में आशावादी होने के कितने ही कारण हैं," बैरन ने भोलेपन से कहा, "लेकिन इस भारी अंतर का असली कारण, जो आम लोगों की गिनती और

'जानकार' लोगों की गिनती के बीच मौजूद है, वह उस रहस्य में छिपा है जिससे जानकार लोग अपने कामों को घेरे रखते हैं। वे ऐसा इसलिए करते हैं ताकि अपने कामों को बाकी लोगों से छिपा सकें—वे लोग, जिनके पास जानकारी का कोई ज़रिया नहीं होता, और अगर उन्हें सच्चाई का सिर्फ़ चौथाई हिस्सा भी पता चल जाए, तो वे सचमुच हक्के-बक्के रह जाएँगे।" "तो फिर हमारे ज़माने में भी हालात वैसे ही हैं, जैसे यूनानियों के ज़माने में थे," ब्रिशो ने कहा। "यूनानियों के ज़माने में होने का तुम्हारा क्या मतलब है? क्या तुम्हें लगता है कि ऐसा तब से लेकर अब तक नहीं होता आया है? लुई XIV के शासनकाल को ही ले लो—तुम्हारे पास युवा वर्मांडोइस, मोलिएर, प्रिंस लुई ऑफ़ बैडेन, ब्रंसविक, चारोले, बुफ़्लर्स, द ग्रेट कोंडे, और ड्यूक डी ब्रिसैक जैसे लोग थे।" "एक पल रुको; मुझे 'मोंसियर' के बारे में पता था, मुझे सेंट-साइमन के ज़रिए ब्रिसैक के बारे में पता था, वेंडोम के बारे में तो पता ही था, और भी कई लोगों के बारे में पता था। लेकिन वह बूढ़ा सिरदर्द सेंट-साइमन अक्सर 'द ग्रेट कोंडे' और 'प्रिंस लुई ऑफ़ बैडेन' का ज़िक्र तो करता है, लेकिन इस बात का ज़िक्र कभी नहीं करता।" "मुझे यह कहते हुए अफ़सोस हो रहा है कि सोरबोन के एक प्रोफ़ेसर को इतिहास पढ़ाने का काम मेरे हिस्से आया है। लेकिन, मेरे प्यारे गुरु, आप तो एक कार्प मछली की तरह ही अनजान हैं।" "आप थोड़े सख़्त हैं, बैरन, लेकिन सही कह रहे हैं। और, ज़रा एक पल रुकिए, अब यह बात आपको ज़रूर पसंद आएगी; मुझे उस ज़माने का एक गीत याद आ रहा है, जो 'मैकरोनिक छंद' में लिखा गया था। यह गीत एक ऐसे तूफ़ान के बारे में है जिसने 'ग्रेट कोंडे' को उस समय अचानक घेर लिया था, जब वे अपने दोस्त 'मार्क्विस डी ला मौसे' के साथ 'रोन' नदी में सफ़र कर रहे थे। कोंडे कहते हैं:"

प्रिय मित्र मुसायस,
आह! क्या समय था, हे भगवान!
लैंडिंग ऑर्डर
हम बारिश से मरने ही वाले हैं।
और ला मौसे उसे यह कहकर आश्वस्त करता है:

हमारा जीवन सुरक्षित है।
क्योंकि हम सोडोमाइट हैं।
वे केवल आग से ही नष्ट होंगे।
"लैंडरिरी_."
"मैं अपनी बात वापस लेता हूँ," चार्लस ने तीखे और बनावटी स्वर में कहा, "आप ज्ञान का भंडार हैं, आप इसे मेरे लिए लिख देंगे, है ना? मुझे इसे अपने पारिवारिक अभिलेखों में सहेज कर रखना है, क्योंकि मेरी परदादी, परदादी, एम. ले प्रिंस की बहन थीं।" "जी हाँ, लेकिन बैरन, बाडेन के राजकुमार लुई के बारे में मुझे कुछ याद नहीं आ रहा है। हालाँकि, उस समय, मेरा मानना है कि आम तौर पर युद्ध कला..." "क्या बकवास है, वेंडोम, विलर्स, प्रिंस यूजीन, प्रिंस डी कोंटी, और अगर मैं आपको मोरक्को के टोंकिन के सभी नायकों के बारे में बताऊं, और मैं उन लोगों के बारे में सोच रहा हूं जो वास्तव में महान, धर्मनिष्ठ और 'नई पीढ़ी' के हैं, तो मैं आपको बहुत आश्चर्यचकित कर दूंगा। आह! मुझे उन लोगों को कुछ सिखाना चाहिए जो नई पीढ़ी के बारे में पूछताछ कर रहे हैं जिसने अपने बड़ों की व्यर्थ जटिलताओं को नकार दिया है, एम. बोर्गेट हमें बताते हैं! मेरा वहां एक युवा मित्र है, जिसकी बहुत प्रशंसा होती है, जिसने महान कार्य किए हैं, हालांकि, मैं स्कूल से बाहर की बातें नहीं बताने जा रहा हूं, चलिए सत्रहवीं शताब्दी में लौटते हैं, आप जानते हैं कि सेंट-साइमन ने मार्शल डी'हुक्सेल्स के बारे में कहा है - कई लोगों में से एक: 'यूनानी व्यभिचार में लिप्त, जिसे वह छिपाने का कोई प्रयास नहीं करता था, वह युवा अधिकारियों को अपने कब्जे में ले लेता था और उन्हें अपने उद्देश्य के लिए प्रशिक्षित करता था, साथ ही मजबूत युवा नौकरों को भी, और यह खुलेआम, सेना में और स्ट्रैसबर्ग। आपने शायद मैडम के पत्र पढ़े होंगे, उनके सभी आदमी उन्हें 'पुतैन' कहते थे। वह इस बारे में खुलकर बोलती थीं। "और अपने पति के साथ होने के कारण उन्हें यह बात अच्छी तरह पता थी।" "कितनी दिलचस्प शख्सियत थीं मैडम," एम. डी चार्लस ने कहा। "उन पर आधारित 'वाइव्स ऑफ आंटीज़' का काव्यात्मक संश्लेषण हो सकता है।" सबसे पहले, पुरुष प्रधानता; आम तौर पर आंटी की पत्नी पुरुष होती है, इसीलिए उनके लिए बच्चे पैदा करना इतना आसान होता है। फिर मैडम, महाशय की बुराइयों का ज़िक्र नहीं करतीं, लेकिन वे लगातार दूसरे पुरुषों में उन्हीं बुराइयों का ज़िक्र करती हैं, एक सुशिक्षित महिला के रूप में

लिखते हुए, उस प्रवृत्ति से प्रेरित होकर जो हमें दूसरों के परिवारों में वही दोष ढूंढने में आनंद देती है जो हमें अपने परिवार में परेशान करते हैं, ताकि हम खुद को यह साबित कर सकें कि उनमें कुछ भी असाधारण या नीच नहीं है। मैं कह रहा था कि हर युग में चीजें लगभग एक जैसी ही रही हैं। फिर भी, इस मामले में हमारा युग काफी उल्लेखनीय है। और सत्रहवीं शताब्दी से लिए गए उदाहरणों के बावजूद, अगर मेरे महान पूर्वज फ्रांकोइस सी. डी ला रोशेफौकॉल्ड आज के दिनों में जीवित होते, तो वे शायद अपने बारे में कहने से भी अधिक औचित्य के साथ उनके बारे में कहते—आओ, ब्रिचोट, मेरी मदद करो: 'बुराइयाँ हर युग में आम हैं; लेकिन अगर कुछ ऐसे लोग जिन्हें हर कोई जानता है, हमारे युग की पहली शताब्दियों में प्रकट हुए होते, तो क्या क्या आज कोई हेलियोगैबलस के व्यभिचारों के बारे में बात करता है?' 'जिसे हर कोई जानता है' यह वाक्य मुझे बेहद आकर्षित करता है। मैं देखता हूँ कि मेरे बुद्धिमान रिश्तेदार अपने सबसे प्रतिष्ठित समकालीनों की चालों को उसी तरह समझते थे जैसे मैं अपने लोगों की चालों को समझता हूँ। लेकिन उस तरह के लोग आज न केवल कहीं अधिक आम हैं, बल्कि उनमें कुछ विशेष लक्षण भी हैं। मैं समझ गया था कि एम. डी चार्लस हमें यह बताने वाले थे कि ये आदतें किस प्रकार विकसित हुईं। जिस दृढ़ता से एम. डी चार्लस बार-बार इस विषय पर लौट रहे थे—जिसमें, इसके अलावा, उनकी बुद्धि, जो लगातार एक ही दिशा में प्रशिक्षित थी, ने एक विशेष अंतर्दृष्टि प्राप्त कर ली थी—वह एक जटिल तरीके से स्पष्ट रूप से चुनौतीपूर्ण था। वह एक ऐसे विशेषज्ञ की तरह उबाऊ था जिसे अपने विषय के अलावा कुछ दिखाई ही नहीं देता, एक ऐसे ज्ञानी व्यक्ति की तरह चिड़चिड़ा था जिसकी आत्मसंतुष्टि उसके गुप्त ज्ञान से बढ़ती है और जिसे वह उजागर करने के लिए उतावला रहता है, उन लोगों की तरह घृणित था जो अपनी कमियों का जिक्र होते ही उन्हें उजागर करने लगते हैं, इस बात की परवाह किए बिना कि वे दूसरों को ठेस पहुंचा रहे हैं, एक पागल की तरह जुनूनी और एक अपराधी की तरह अनियंत्रित रूप से लापरवाह था। ये विशेषताएं, जो कभी-कभी एक पागल या अपराधी की तरह स्पष्ट हो जाती थीं, संयोगवश मुझे कुछ हद तक सांत्वना देती थीं। क्योंकि, अल्बर्टीन के संबंध में उनसे निष्कर्ष निकालने के लिए, मैंने उन्हें आवश्यक रूप से रूपांतरित किया, और सेंट-लूप और मेरे प्रति उसके रवैये को याद करते हुए, मैंने अपने आप से कहा, यद्यपि इनमें से एक स्मृति मेरे लिए पीड़ादायक और दूसरी दुखद थी, कि ऐसा प्रतीत

होता है कि वे उस प्रकार की कुरूपता को नकारती हैं जिसकी स्पष्ट रूप से निंदा की गई थी, उस प्रकार की विशिष्टता को जो अनिवार्य रूप से अनन्य प्रतीत होती थी, और जो एम. डी चार्लस के व्यक्तित्व के साथ-साथ बातचीत में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। लेकिन दुर्भाग्य से, उसने आशा के इन आधारों को उसी तरह नष्ट करने की जल्दी की, जिस तरह उसने मुझे ये दिए थे, अर्थात् अनजाने में। “हाँ,” उन्होंने कहा, “मैं अब किशोर नहीं हूँ, और मैंने अपने आस-पास बहुत कुछ बदलते देखा है। मैं अब न तो उस समाज को पहचानता हूँ, जिसमें सारी सीमाएँ टूट चुकी हैं, जिसमें शिष्टाचार और मर्यादा से रहित भीड़ मेरे ही परिवार में भी टैंगो नृत्य करती है, न ही फैशन को, न राजनीति को, न कला को, न धर्म को, न ही किसी और चीज़ को। लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि सबसे ज़्यादा जो चीज़ बदली है, वह है जिसे जर्मन समलैंगिकता कहते हैं। हे भगवान! मेरे ज़माने में, उन पुरुषों को छोड़कर जो महिलाओं से नफ़रत करते थे, और उन पुरुषों को छोड़कर जो केवल महिलाओं की परवाह करते हुए लाभ के लिए दूसरे काम करते थे, समलैंगिक पुरुष अच्छे पारिवारिक पुरुष होते थे और खुद को बचाने के अलावा कभी रखैल नहीं रखते थे। अगर मेरी कोई बेटी होती जिसे मुझे विदा करना होता, तो मैं अपने दामाद के लिए उन्हीं में से चुनाव करता, अगर मैं यह सुनिश्चित करना चाहता कि वह दुखी न हो। अफ़सोस! हालात पूरी तरह बदल गए हैं। आजकल तो उन्हें उन पुरुषों में से भी चुना जाता है जो महिलाओं के प्रति सबसे ज़्यादा अतृप्त होते हैं। मुझे लगता था कि मुझमें एक खास सहज प्रवृत्ति है, और जब मैंने मन ही मन कहा: 'बिल्कुल नहीं,' मैं गलत नहीं हो सकता था। खैर, मैं हार मान लेता हूँ। मेरे एक दोस्त, जो इस तरह की बातों के लिए मशहूर हैं, उनके पास एक कोचवान था जिसे मेरी भाभी ओरियान ने उनके लिए ढूंढा था। वह कॉम्ब्रे का रहने वाला एक लड़का था जो हर काम में माहिर था, खासकर महिलाओं के साथ सौदेबाजी में, और मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि वह इस तरह की किसी भी चीज़ का कतई विरोधी था। उसने अपनी प्रेमिका का दिल तोड़ दिया, क्योंकि उसने दो महिलाओं के साथ धोखा किया, जिन्हें वह बहुत प्यार करता था, और बाकी महिलाओं की तो बात ही छोड़िए, एक अभिनेत्री और एक बार की लड़की। मेरे चचेरे भाई प्रिंस डी गुएरमांटेस, जो लोगों की उस चिड़चिड़ी बुद्धि के लिए जाने जाते हैं जो किसी भी बात पर आसानी से विश्वास कर लेते हैं, ने एक दिन मुझसे कहा: 'लेकिन आखिर X—— के पास उसका कोचवान क्यों नहीं है?

थियोडोर (कोचवान का नाम) को शायद खुशी हो और उसे यह जानकर गुस्सा आए कि उसका मालिक उससे कोई संबंध नहीं बनाता।' मैं गिल्बर्ट को चुप रहने के लिए कहने से खुद को रोक नहीं सका; मैं उसकी उस घमंडी दूरदर्शिता से बहुत परेशान था, जो अंधाधुंध इस्तेमाल किए जाने पर दूरदर्शिता की कमी साबित होती है, और साथ ही अपने चचेरे भाई की धूर्तता से भी, जो चाहता था कि X—— पहला कदम उठाए ताकि अगर सब ठीक रहा तो वह उसका अनुसरण कर सके। "तो क्या प्रिंस डी गुएरमांटेस भी वैसा ही है?" ब्रिचोट ने आश्चर्य और निराशा के मिले-जुले भाव से पूछा। “हे भगवान!” एम. डी चार्लस ने अत्यंत प्रसन्नता से उत्तर दिया, “यह इतना कुख्यात है कि अगर मैं आपको बताऊँ कि वह ऐसा ही है, तो मुझे नहीं लगता कि मैं कोई अपराध कर रहा हूँ। ठीक है, इसके अगले वर्ष मैं बालबेक गया, जहाँ मुझे एक नाविक से, जो मुझे कभी-कभी मछली पकड़ने ले जाया करता था, पता चला कि मेरा थियोडोर, जिसकी बहन, मैं बता दूँ, श्रीमती वर्दुरिन, बैरोनेस पुटबस की एक सहेली की नौकरानी है, बंदरगाह पर आकर कभी एक नाविक को, कभी दूसरे को, बड़ी बेशर्मी से, समुद्र में सैर के लिए ले जाया करता था।” अब मेरी बारी थी यह पूछने की कि क्या उसका मालिक, जिसे मैंने उस सज्जन के रूप में पहचाना था जो बालबेक में अपनी प्रेमिका के साथ सारा दिन ताश खेलता था, और जो चार करीबी दोस्तों के छोटे समूह का नेता था, गुएरमांटेस के राजकुमार जैसा था। “क्यों, बिल्कुल, हर कोई उसके बारे में जानता है, वह इसे छिपाने की कोई कोशिश नहीं करता।” "लेकिन उसकी प्रेमिका भी उसके साथ थी।" "अच्छा, तो इससे क्या फर्क पड़ता है? ये बच्चे कितने मासूम हैं," उन्होंने मुझसे पिता तुल्य लहजे में कहा, उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि अल्बर्टीन के बारे में सोचते ही उनके शब्दों से मुझे कितना दुख हुआ। "उसकी प्रेमिका तो बहुत प्यारी है।" "लेकिन उसके तीनों दोस्त भी तो उसी की तरह हैं।" "बिल्कुल नहीं," वह चिल्लाए, मानो मैंने कोई वाद्य यंत्र बजाते समय कोई गलत सुर छेड़ दिया हो और उन्होंने अपने कान बंद कर लिए हों। "अब तो वो दूसरे ही चरम पर पहुँच गया है। तो क्या अब किसी आदमी को दोस्त रखने का अधिकार नहीं रहा? आह! जवानी, जवानी; ये सब कुछ गलत समझती है। हमें तुम्हारी शिक्षा फिर से शुरू करनी होगी, मेरे बेटे। खैर," वो आगे बोला, "मैं मानता हूँ कि यह मामला, और मैं ऐसे कई और मामलों को जानता हूँ, चाहे मैं हर तरह की धृष्टता के प्रति कितना भी खुला दिमाग रखने की कोशिश करूँ, मुझे शर्मिंदा

करता है। मैं शायद बहुत पुराने ख्यालों का हूँ, लेकिन मैं समझ नहीं पाता," उसने एक बूढ़े फ्रांसीसी की तरह कहा जो अति-मोंटेनिज़्म के किसी विकास के बारे में बात कर रहा हो, या एक उदार राजशाहीवादी की तरह जो एक्शन फ्रांसेज़ के बारे में बात कर रहा हो, या क्लाउड मोनेट के किसी शिष्य की तरह जो क्यूबिस्टों के बारे में बात कर रहा हो। "मैं इन नवप्रवर्तकों को दोष नहीं देता, बल्कि उनसे ईर्ष्या करता हूँ। मैं उन्हें समझने की कोशिश करता हूँ, पर सफल नहीं हो पाता। अगर वे स्त्री के प्रति इतने आसक्त हैं, तो विशेषकर इस रोजमर्रा की दुनिया में, जहाँ ऐसी बातों को इतना बुरा माना जाता है, जहाँ वे शर्म के मारे खुद को छुपाते हैं, उन्हें 'थोड़ी सी भूरी स्त्री' की क्या आवश्यकता है? क्योंकि उनके लिए स्त्री किसी और चीज का प्रतीक है। क्या?" "अल्बर्टीन के लिए स्त्री और क्या हो सकती है?" मैंने सोचा, और वास्तव में यही मेरे दुख का कारण था। ब्रिचोट ने कहा, "निश्चित रूप से, बैरन, यदि अध्ययन बोर्ड कभी समलैंगिकता पर एक पद की स्थापना करने का विचार करे, तो मैं यह सुनिश्चित करूँगा कि आपका नाम सबसे पहले प्रस्तुत किया जाए। या यूँ कहें, नहीं; मनो-शारीरिक विज्ञान संस्थान आपके लिए अधिक उपयुक्त रहेगा। और मुझे लगता है कि आपके लिए सबसे अच्छा होगा कि आपको कॉलेज डी फ्रांस में एक पद मिल जाए, जिससे आप व्यक्तिगत शोधों में अपना समय दे सकें और उनके परिणाम, तमिल या संस्कृत के प्रोफ़ेसर की तरह, उन चुनिंदा लोगों को बता सकें जो उनमें रुचि रखते हैं। आपके साथ केवल दो लोग होंगे, आपके सहायक के साथ, हालाँकि मेरा इरादा हमारे सफाईकर्मियों के दल पर ज़रा भी संदेह पैदा करने का नहीं है, जिन्हें मैं संदेह से परे मानता हूँ।" बैरन ने कठोर और तीखे स्वर में उत्तर दिया, "आप उनके बारे में कुछ नहीं जानते। इसके अलावा, आपका यह सोचना गलत है कि इस विषय में बहुत कम लोग रुचि रखते हैं। यह बिल्कुल विपरीत है।" और अपनी बातचीत की अपरिवर्तनीय प्रवृत्ति और दूसरों पर लगाए जाने वाले आरोपों के बीच असंगति पर विचार किए बिना, बैरन ने शर्मिंदा और पश्चाताप भरे स्वर में कहा, "इसके विपरीत, यह बेहद चिंताजनक है। लोग इसके अलावा किसी और बात की बात नहीं कर रहे हैं। यह एक घोटाला है, लेकिन मैं अतिशयोक्ति नहीं कर रहा हूँ, मेरे प्रिय मित्र! ऐसा लगता है कि परसों डचेस डी'एजेन के यहाँ, वे लगातार दो घंटे तक इसी बारे में बात करते रहे; आप कल्पना कर सकते हैं, अगर महिलाएं इस तरह की बातें करने लगी हैं, तो यह एक बड़ा घोटाला है! सबसे घिनौनी बात यह है कि उन्हें यह

जानकारी मिलती है," उन्होंने असाधारण जोश और जोर के साथ आगे कहा, "उन बदमाशों से, जैसे युवा चैटेलराउल्ट, जिसकी दुनिया में सबसे खराब प्रतिष्ठा है, जो उन्हें दूसरे पुरुषों के बारे में कहानियां सुनाते हैं। मुझे बताया गया है कि उसने मुझे फांसी देने के लिए काफी कुछ कहा है, लेकिन मुझे परवाह नहीं है, मुझे यकीन है कि एक ऐसे व्यक्ति द्वारा उछाली गई कीचड़ और गंदगी, जो मुश्किल से स्कूल से निकाले जाने से बचा है, ताश में धोखाधड़ी करने वाले को केवल अपने ही कर्मों का फल भुगतना पड़ता है। मुझे यकीन है कि अगर मैं जेन डी'एजेन होती, तो मैं अपने ड्राइंग रूम का इतना सम्मान करती कि उसमें ऐसे विषयों पर चर्चा न होने देती, और न ही अपने ही परिवार के सदस्यों को अपने घर में इस गंदगी में घसीटने देती। लेकिन अब बातचीत में भी कोई मर्यादा, कोई नियम, कोई परंपरा नहीं रह गई है, ठीक वैसे ही जैसे पहनावे में नहीं। आह, मेरे प्रिय मित्र, यह दुनिया का अंत है। हर कोई इतना द्वेषपूर्ण हो गया है। पुरस्कार उस व्यक्ति को मिलता है जो अपने साथियों के बारे में सबसे अधिक बुराई कर सकता है। यह भयावह है।

मैं अब भी उतना ही कायर था जितना बचपन में कॉम्ब्रे में हुआ करता था, जब मैं अपने दादाजी को ब्रांडी पीते देख और दादीजी की उन्हें न पीने की व्यर्थ कोशिशों से बचने के लिए भाग जाता था। मेरे मन में बस एक ही विचार था, कि एम. डी चार्लस को फांसी दिए जाने से पहले वर्दुरिन का घर छोड़ दूं। मैंने ब्रिचोट से कहा, "मुझे जाना ही होगा।" उन्होंने जवाब दिया, "मैं तुम्हारे साथ आ रहा हूं, लेकिन हम अंग्रेज़ों की तरह चुपके से नहीं निकल सकते। आओ और श्रीमती वर्दुरिन को अलविदा कह दो," प्रोफेसर ने यह कहते हुए ड्राइंग रूम की ओर कदम बढ़ाया, मानो वह किसी खेल में यह पता लगाने जा रहे हों कि क्या वह 'वापस आ सकते हैं'।

जब हम बातचीत कर रहे थे, तभी पत्नी के इशारे पर श्री वर्दुरिन मोरेल को एक तरफ ले गए। दरअसल, अगर श्रीमती वर्दुरिन ने मामले के सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद यह तय कर लिया होता कि मोरेल को ज्ञानोदय को स्थगित करना ही बेहतर होगा, तो अब वह इसे रोक नहीं सकती थीं। कुछ इच्छाएँ ऐसी होती हैं, जिनमें से कुछ केवल मुँह तक ही सीमित होती हैं, जो एक बार पनपने पर, चाहे परिणाम कुछ भी हो, पूरी होने पर अड़ी रहती हैं; हम उस नंगे कंधे को चूमने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर पाते जिस पर हम बहुत देर तक

टकटकी लगाए रहते हैं और जिस पर हमारे होंठ किसी पक्षी पर साँप की तरह झपट पड़ते हैं, उस केक में अपनी मीठे की लालसा को दबा लेते हैं जिसने हमें मोहित और तृप्त कर दिया है, और न ही हम उस आश्चर्य, चिंता, दुख या खुशी के आनंद को छोड़ सकते हैं जो हम किसी अप्रत्याशित संवाद से दूसरे व्यक्ति को दे सकते हैं। इसलिए, नाटकीय आवेग में, श्रीमती वर्दुरिन ने अपने पति को मोरेल को कमरे से बाहर ले जाने और हर कीमत पर उसे मामला समझाने का आदेश दिया। वायलिन वादक ने नेपल्स की रानी के उनसे मिलने का मौका मिलने से पहले ही उनके चले जाने पर शोक व्यक्त करते हुए अपनी बात शुरू की। एम. डी चार्लस ने उन्हें कई बार बताया था कि रानी महारानी एलिज़ाबेथ और डचेस डी'एलेनकॉन की बहन हैं, इसलिए उनकी नज़रों में महारानी का विशेष महत्व था। लेकिन मास्टर ने उन्हें समझाया कि वे बाकी लोगों से अलग होकर नेपल्स की रानी के बारे में बात करने नहीं आए थे, और फिर सीधे मुद्दे पर आ गए। "सुनो," उन्होंने लंबी व्याख्या के बाद कहा; "सुनो; अगर तुम चाहो, तो हम जाकर मेरी पत्नी से पूछ सकते हैं कि वह क्या सोचती हैं। मैं तुम्हें वचन देता हूँ, मैंने इस बारे में उनसे कुछ नहीं कहा है। हम देखेंगे कि वह इस पर क्या प्रतिक्रिया देती हैं। मेरी सलाह शायद सबसे अच्छी न हो, लेकिन तुम जानते हो कि उनका निर्णय कितना सटीक होता है; इसके अलावा, वह तुमसे बहुत लगाव रखती हैं, चलो जाकर उनसे इस मामले पर बात करते हैं।" और जब श्रीमती... वेरदुरिन, संगीतकार से बात करते हुए जिन भावनाओं का अनुभव करने वाली थीं, उनका बेसब्री से इंतज़ार कर रही थीं, और फिर उसके जाने के बाद, जब उन्होंने अपने पति से उनकी बातचीत का पूरा ब्यौरा मांगा, तो वे बार-बार दोहराती रहीं: "लेकिन आखिर वे क्या कर रहे होंगे? मुझे उम्मीद है कि मेरे पति ने उन्हें इतने समय तक रोके रखकर उन्हें सही बात बता दी होगी।" श्री वेरदुरिन मोरेल के साथ फिर से प्रकट हुए, जो बहुत भावुक लग रहे थे। "वह आपसे सलाह लेना चाहते हैं," श्री वेरदुरिन ने अपनी पत्नी से उस स्वर में कहा, जैसे उन्हें पता ही न हो कि उनकी प्रार्थना सुनी जाएगी या नहीं। श्री वेरदुरिन को जवाब देने के बजाय, श्रीमती वेरदुरिन ने गुस्से में आकर मोरेल से कहा, "मैं अपने पति से पूरी तरह सहमत हूँ, मुझे लगता है कि आप इस तरह की बात को एक पल भी बर्दाश्त नहीं कर सकते।" उन्होंने उग्र स्वर में कहा, और अपने पति से इस बात पर हुई सहमति को एक व्यर्थ झूठ बना दिया कि उन्हें वायलिन वादक से हुई बातों के बारे में कुछ भी पता नहीं था। "आपका

क्या मतलब है? क्या बर्दाश्त करूं?" एम. वर्दुरिन हकलाते हुए बोले, आश्चर्य का दिखावा करते हुए और अपनी घबराहट से उपजे असहज भाव से अपने झूठ का बचाव करने की कोशिश कर रहे थे। "मैंने समझ लिया कि आप उससे क्या कह रहे थे," श्रीमती वर्दुरिन ने जवाब दिया, इस स्पष्टीकरण की असंभावना से बेपरवाह और इस बात की परवाह किए बिना कि जब वायलिन वादक इस दृश्य को याद करेगा तो वह मालकिन की सच्चाई के बारे में क्या सोचेगा। "नहीं," श्रीमती वर्दुरिन ने आगे कहा, "मुझे लगता है कि आपको अब और इस दागदार व्यक्ति के साथ इस अपमानजनक व्यभिचार को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए, जिसे कोई भी अपने घर में नहीं आने देगा," उन्होंने यह तथ्य अनदेखा करते हुए कहा कि यह सच नहीं था और यह भूलकर कि वह खुद लगभग हर दिन उसका स्वागत करती थीं। "आप संगीत विद्यालय में चर्चा का विषय हैं," उन्होंने आगे कहा, यह महसूस करते हुए कि यही तर्क सबसे अधिक मायने रखता है; "इस जीवन का एक और महीना और तुम्हारा कलात्मक भविष्य चकनाचूर हो जाएगा, जबकि चार्लस के बिना, तुम्हें कम से कम एक लाख फ्रैंक सालाना कमाने चाहिए थे।" "लेकिन मैंने कभी किसी को एक शब्द भी बोलते नहीं सुना, मैं हैरान हूँ, मैं आपका बहुत आभारी हूँ," मोरेल ने धीरे से कहा, उसकी आँखों में आँसू आ गए। लेकिन, तुरंत आश्चर्य का दिखावा करने और अपनी शर्म को छुपाने के लिए मजबूर होकर, उसका चेहरा और भी लाल हो गया था और उसे इतना पसीना आ रहा था मानो उसने बीथोवेन के सभी सोनाटा लगातार बजाए हों, और उसकी आँखों से ऐसे आँसू बह रहे थे जो बॉन मास्टर ने निश्चित रूप से उससे नहीं निकलवाए होते। "अगर तुमने कभी कुछ नहीं सुना, तो इस मामले में तुम अनोखे हो। वह एक बदनाम आदमी है और उसके बारे में सबसे भयानक कहानियाँ सुनाई जाती हैं। मुझे पता है कि पुलिस उस पर नज़र रख रही है और शायद यही उसके लिए सबसे अच्छी बात है अगर वह उन सभी आदमियों की तरह गुंडों के हाथों मारा न जाए," वह आगे बोली, क्योंकि जब वह चार्लस के बारे में सोच रही थी तो उसे श्रीमती चार्लस की याद आ गई। डी ड्यूरास ने उसे फिर से याद किया, और क्रोध के आवेश में आकर उसने बेचारे चार्ली को और भी गहरे घाव देने की ठान ली, और उस शाम उसे मिले घावों का बदला लेने की ठान ली। "खैर, आर्थिक रूप से भी वह तुम्हारे किसी काम का नहीं है, वह पूरी तरह बर्बाद हो चुका है क्योंकि वह उन लोगों का शिकार बन गया है जो उसे ब्लैकमेल कर रहे हैं, और जो उससे उस धुन की कीमत तक नहीं

वसूल सकते जिसे वे कहते हैं, तो वह तुम्हारे वादन के लिए भुगतान कैसे कर सकता है, क्योंकि सब कुछ भारी गिरवी रखा हुआ है, टाउन हाउस, कंट्री हाउस, सब कुछ।" मोरेल इस झूठ पर आसानी से विश्वास करने को तैयार था क्योंकि एम. डी चार्लस उसे गुंडों से अपने संबंधों के बारे में बताना पसंद करता था, एक ऐसी जाति जिसके लिए एक नौकर का बेटा, चाहे वह कितना भी भ्रष्ट क्यों न हो, बोनापार्टवादी सिद्धांतों के प्रति अपने लगाव जितना ही घृणा का भाव रखता था।

मोरेल के धूर्त मन में पहले से ही एक योजना आकार लेने लगी थी, जो अठारहवीं शताब्दी में गठबंधनों के उलटफेर कहलाती थी। एम. डी चार्लस से फिर कभी बात न करने का निश्चय करके, वह अगली शाम जुपियन की भतीजी के पास लौटेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि उसके साथ सब कुछ ठीक हो जाए। दुर्भाग्य से, उसकी यह योजना विफल हो गई, क्योंकि एम. डी चार्लस ने उसी शाम जुपियन से मिलने का समय तय कर रखा था, जिसे पूर्व दर्जी हाल की घटनाओं के बावजूद भी नहीं चूकना चाहता था। जैसा कि हम आगे देखेंगे, मोरेल की इस कार्रवाई के बाद और भी घटनाएँ घटीं। जब जुपियन ने रोते हुए बैरन को अपनी दुखभरी कहानी सुनाई, तो बैरन, जो स्वयं भी उतना ही दुखी था, ने उसे आश्वासन दिया कि वह उस परित्यक्त लड़की को गोद ले लेगा, उसे अपने अधिकार में मौजूद उपाधियों में से एक, संभवतः मैडम डी'ओलेरोन की उपाधि, प्रदान करेगा, यह सुनिश्चित करेगा कि उसे अच्छी शिक्षा मिले और उसका विवाह एक धनी पति से करवाएगा। ये वादे जुपियन को बेहद खुशी से भर देते थे, लेकिन उसकी भतीजी पर कोई असर नहीं पड़ता था, क्योंकि वह अब भी मोरेल से प्यार करती थी। मोरेल, अपनी मूर्खता या धूर्तता के कारण, जुपियन की अनुपस्थिति में दुकान में आकर उसे चिढ़ाता था। वह हंसते हुए कहता, "तुम्हें क्या हुआ है? तुम्हारी आंखों के नीचे ये काले निशान क्यों हैं? क्या तुम्हारा दिल टूट गया है? अरे, साल बीतते हैं और लोग बदल जाते हैं। आखिर, एक आदमी को जूता पहनने की पूरी आजादी है, औरत को तो और भी ज्यादा, और अगर वह उसे फिट न आए तो..." उसे सिर्फ एक बार गुस्सा आया था, जब वह रोई थी, जिसे उसने कायरतापूर्ण और उसके लायक नहीं समझा था। लोग हमेशा उन आंसुओं को सहन नहीं करते जिन्हें उन्होंने खुद उकसाया हो।

लेकिन हमने बहुत आगे की सोच ली है, क्योंकि यह सब वर्दुरिन की पार्टी के बाद ही हुआ, जिसे हमने बीच में ही रोक दिया था, और हमें वहीं से शुरू करना होगा जहाँ हमने बात खत्म की थी। "मुझे तो कभी शक भी नहीं हुआ था," मोरेल ने श्रीमती वर्दुरिन के जवाब में आह भरी। "स्वाभाविक रूप से लोग तुम्हारे सामने नहीं कहते, लेकिन इससे तुम संगीत विद्यालय में चर्चा का विषय बनने से नहीं रुकते," श्रीमती वर्दुरिन ने शरारती लहजे में आगे कहा, मोरेल को यह स्पष्ट करने की कोशिश करते हुए कि केवल एम. डी चार्लस की ही आलोचना नहीं हो रही थी, बल्कि उनकी खुद की भी। "मुझे पूरा यकीन है कि आपको इसके बारे में कुछ नहीं पता; फिर भी, लोग बहुत बेबाक होते हैं। स्की से पूछिए कि उस दिन शेविलार्ड्स में लोग क्या कह रहे थे, जब आप मेरे बॉक्स में आए थे, जो हमारे बिल्कुल पास ही था। मेरा मतलब है, लोग आपको निशाना बनाते हैं। जहाँ तक मेरी बात है, मैं ज़रा भी ध्यान नहीं देता, लेकिन मुझे लगता है कि इससे इंसान बेहद हास्यास्पद हो जाता है और ज़िंदगी भर लोगों के बीच हंसी का पात्र बना रहता है।" "मैं आपका शुक्रिया कैसे अदा करूँ, यह मुझे नहीं पता," चार्ली ने उसी लहजे में कहा, जैसे हम किसी दंत चिकित्सक से कहते हैं जिसने हमें असहनीय दर्द दिया हो, जबकि हम उसे दिखाना नहीं चाहते थे, या किसी ऐसे खून-खराबे वाले सहायक से जिसने किसी मामूली सी बात पर हमें द्वंद्वयुद्ध के लिए मजबूर कर दिया हो और कहा हो: "तुम इसे पचा नहीं सकते।" "मुझे विश्वास है कि आपमें बहुत हिम्मत है, आप एक मर्द हैं," श्रीमती वर्दुरिन ने जवाब दिया, "और आप निडर होकर बोलने में सक्षम होंगे, भले ही वह सबको बताता हो कि आप कभी हिम्मत नहीं करेंगे, वह आपको अपने साथ मजबूती से रखता है।" चार्ली, अपनी टूटी-फूटी गरिमा को छुपाने के लिए किसी से सहारा ढूंढते हुए, अपनी स्मृति में कुछ ऐसा पाया जो उसने पढ़ा था या, शायद, कहीं सुना था, और तुरंत बोला: "मुझे इस तरह की रोटी खाने की आदत नहीं थी। आज शाम ही मैं एम. डी चार्लस से संबंध तोड़ लूँगा। नेपल्स की रानी जा चुकी हैं, है ना? वैसे, उनसे संबंध तोड़ने से पहले, मैं उनसे पूछना चाहूँगा..." "उनसे पूरी तरह संबंध तोड़ना ज़रूरी नहीं है," श्रीमती वर्दुरिन ने कहा, जो छोटे समूह में फूट पड़ने से बचना चाहती थीं। "हमारे छोटे से समूह में, जहाँ आपकी सराहना होती है, जहाँ कोई आपके बारे में बुरा नहीं बोलता, वहाँ उससे मिलने में कोई बुराई नहीं है। लेकिन अपनी स्वतंत्रता पर ज़ोर दें, और उसे आपको उन सभी भेड़चाल में न घसीटने दें जो आपके सामने मित्रता का दिखावा करते हैं;

काश आप सुन पातीं कि वे आपके पीठ पीछे क्या कह रहे थे। खैर, आपको पछतावा करने की कोई ज़रूरत नहीं है, न केवल आप उस दाग को मिटा रही हैं जो आपको जीवन भर के लिए दागदार कर देता, बल्कि कलात्मक दृष्टिकोण से, भले ही चार्लस द्वारा यह शर्मनाक प्रस्तुति न होती, मैं आपको यह बताने में संकोच नहीं करता कि इस दिखावटी समाज में इस तरह खुद को बर्बाद करने से लोग यह मान लेंगे कि आप गंभीर नहीं हैं, आपको एक शौकिया कलाकार के रूप में, एक छोटे से ड्राइंग-रूम कलाकार के रूप में, जो आपकी उम्र में बहुत बुरी बात है। मैं समझ सकता हूँ कि उन सभी सुंदर महिलाओं के लिए यह बहुत सुविधाजनक है कि वे अपने दोस्तों के आतिथ्य का बदला आपको मुफ्त में बुलाकर चुका सकें, लेकिन एक कलाकार के रूप में आपका भविष्य ही इसकी कीमत चुकाएगा। मैं यह नहीं कह रहा कि आपको उनमें से एक या दो के यहाँ नहीं जाना चाहिए। आप रानी की बात कर रही थीं..." नेपल्स—जो अब चली गई हैं, क्योंकि उन्हें दूसरी पार्टी में जाना था—वह एक शानदार महिला हैं, और मुझे यह कहने में कोई आपत्ति नहीं है कि मुझे लगता है कि चार्लस के बारे में उनकी राय अच्छी नहीं है और वह मुख्य रूप से मुझे खुश करने के लिए यहाँ आई हैं। हाँ, हाँ, मुझे पता है कि वह हम दोनों, श्री वर्दुरिन और मुझसे मिलने के लिए तरस रही थीं। वह एक ऐसा घर है जहाँ आप खेल सकती हैं। और फिर मैं आपको बता दूँ कि अगर मैं आपको ले जाऊँ—क्योंकि सभी कलाकार मुझे जानते हैं, आप समझती हैं, वे हमेशा मेरे प्रति बहुत विनम्र रहे हैं, और मुझे लगभग अपने ही एक सदस्य, अपनी स्वामिनी की तरह मानते हैं—तो यह बिल्कुल अलग बात होगी। लेकिन आप जो भी करें, आपको कभी भी श्रीमती डी ड्यूरास के पास नहीं जाना चाहिए! ऐसी मूर्खतापूर्ण गलती मत करना! मैं कई कलाकारों को जानती हूँ जो यहाँ आए हैं और उन्होंने मुझे उनके बारे में सब कुछ बताया है। वे जानते हैं कि वे मुझ पर भरोसा कर सकते हैं," उन्होंने अपने उस मधुर और सरल स्वर में कहा, जिसे वह पल भर में अपनाना जानती थीं, अपने चेहरे पर उपयुक्त विनम्रता और आँखों में उपयुक्त आकर्षण लाते हुए, "वे यहाँ बस ऐसे ही आते हैं, मुझे बताने के लिए उनकी सारी छोटी-छोटी परेशानियाँ; जो सबसे शांत माने जाते हैं, वे कभी-कभी मुझसे घंटों बातें करते रहते हैं और मैं आपको बता नहीं सकती कि वे कितने दिलचस्प होते हैं। बेचारा चैब्रियर हमेशा कहता था: 'उन्हें बात करने के लिए प्रेरित करने में मैडम वर्दुरिन जैसा कोई नहीं है।' खैर, क्या आप नहीं जानते, मैंने उन

सभी को, बिना किसी अपवाद के, मैडम डी ड्यूरास के लिए बजाने गए होने पर रोते हुए देखा है। बात सिर्फ इतनी ही नहीं है कि उन्हें अपने नौकरों से उन्हें अपमानित करवाने में मज़ा आता है, बल्कि उन्हें फिर कहीं और काम नहीं मिलता। एजेंट कहते थे: 'ओह हाँ, वही आदमी जो मैडम डी ड्यूरास के यहाँ बजाता है।' बस, बात पक्की हो गई। किसी का भविष्य बर्बाद करने के लिए इससे बेहतर और कुछ नहीं। आप जानते ही हैं कि समाज के लोग कैसे होते हैं, वे इसे गंभीरता से नहीं लेते। आपके पास दुनिया भर की प्रतिभा हो सकती है, यह कहना कितना बुरा लगता है, लेकिन एक मैडम डी ड्यूरास का नाम ही आपको शौकिया कलाकार की प्रतिष्ठा दिलाने के लिए काफी है। और कलाकारों के बीच, आप जानते ही हैं, खैर, आप खुद से पूछ लीजिए कि क्या मैं उन्हें जानता हूँ, जब मैं चालीस साल से उनके बीच रहा हूँ, उन्हें आगे बढ़ाया है, उनमें रुचि ली है; ठीक है, जब वे किसी को शौकिया कलाकार कहते हैं, तो बात वहीं खत्म हो जाती है। और लोग आपके बारे में भी यही कहने लगे थे। सच तो यह है कि कई बार मुझे उन्हें यह समझाने के लिए मोर्चा संभालना पड़ा कि आप किसी बेतुके ड्राइंग रूम में नहीं खेलेंगे! क्या आप जानते हैं कि जवाब क्या था: 'लेकिन उसे जाना ही पड़ेगा, चार्लस उससे सलाह भी नहीं लेता, वह कभी उसकी राय नहीं पूछता।' किसी ने सोचा कि वह उसकी तारीफ करेगा और कहा: 'हम आपके दोस्त मोरेल की बहुत प्रशंसा करते हैं।' क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि उन्होंने अपने उसी अभिमानी लहजे में क्या जवाब दिया होगा? "लेकिन आप उन्हें मेरा मित्र कहकर क्या कहना चाहती हैं? हम एक ही वर्ग के नहीं हैं। बल्कि कहिए कि वे मेरे सेवक हैं, मेरे आश्रित हैं।" ठीक उसी क्षण, संगीत के उस देवता की उभरी हुई भौंहों के नीचे एक ऐसी बात उभर आई जिसे कुछ लोग अपने तक नहीं रख पाते, एक ऐसी बात जिसे दोहराना न केवल घृणित है बल्कि नासमझी भी है। लेकिन इसे दोहराने की आवश्यकता सम्मान और विवेक से भी अधिक प्रबल है। इसी आवश्यकता के आगे झुकते हुए, अपनी गोलाकार और दुखी भौंहों की कुछ ऐंठन भरी हरकतों के बाद, स्वामिनी ने कहा: "किसी ने सचमुच मेरे पति से कहा था कि उन्होंने 'मेरा नौकर' कहा था, लेकिन मैं इसकी पुष्टि नहीं कर सकती," उन्होंने आगे कहा। इसी तरह की आवश्यकता ने एम. डी चार्लस को, मोरेल से शपथ लेने के कुछ ही समय बाद कि उनके जन्म की कहानी किसी को नहीं पता होनी चाहिए, श्रीमती वर्दुरिन से यह कहने के लिए विवश कर दिया था: "उनके पिता एक चापलूस

थे।" कहानी शुरू हो जाने के बाद, एक बार फिर वैसी ही ज़रूरत पैदा हो जाती, जिससे यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक फैलती। हर कोई इसे गोपनीयता की आड़ में बताता, और सुनने वाला और बताने वाला दोनों ही इस गोपनीयता का वादा करते, लेकिन उसे निभाते नहीं। ये कहानियाँ, जैसे 'हंट-द-थिम्बल' खेल में होता है, अंत में श्रीमती वर्दुरिन तक पहुँच जातीं, और सच जानने वाले व्यक्ति के क्रोध का पात्र बन जातीं। वह यह जानती थी, लेकिन अपने अंदर उमड़ रहे शब्दों को रोक नहीं पाई। वैसे भी, 'नौकर' शब्द मोरेल को ज़रूर परेशान करता। फिर भी उसने 'नौकर' कहा, और अगर उसने यह भी कहा कि वह इस शब्द की पुष्टि नहीं कर सकती, तो यह सिर्फ़ अनिश्चितता के संकेत से बाकी बातों के प्रति आश्वस्त दिखने और अपनी निष्पक्षता साबित करने के लिए था। उसने जो निष्पक्षता दिखाई, वह उसे स्वयं इतनी मार्मिक लगी कि वह चार्ली से स्नेहपूर्वक बोलने लगी: "क्या तुम नहीं देखते," उसने आगे कहा, "मैं उसे दोष नहीं दे रही हूँ, वह तुम्हें अपने अंधकार में खींच रहा है, यह सच है, लेकिन यह उसकी गलती नहीं है, क्योंकि वह स्वयं उसमें डूबा हुआ है, क्योंकि वह उसमें डूबा हुआ है," उसने ऊँची आवाज़ में दोहराया, क्योंकि वह उस छवि की उपयुक्तता से प्रभावित थी जो इतनी जल्दी आकार ले चुकी थी कि उसका ध्यान अब जाकर उस पर गया और वह उसे प्रमुखता देने का प्रयास कर रही थी। "नहीं, मुझे उसमें जो कमी लगती है," उसने पिघलते स्वर में कहा—जैसे कोई महिला अपनी सफलता के नशे में चूर हो—"वह है तुम्हारे प्रति उसकी शालीनता की कमी। कुछ बातें ऐसी होती हैं जो सबके सामने नहीं कहनी चाहिए। खैर, आज शाम वह शर्त लगा रहा था कि वह तुम्हें यह कहकर खुशी से शरमा देगा (बेशक, यह सब बकवास था, क्योंकि उसकी सिफारिश ही तुम्हें यह सम्मान मिलने से रोकने के लिए काफी थी)। मैं इसे भी नज़रअंदाज़ कर सकती थी, हालाँकि मुझे कभी भी," उसने एक कोमल, गरिमामय अंदाज़ में आगे कहा, "किसी को अपने दोस्तों का मज़ाक उड़ाते हुए सुनना पसंद नहीं आया, लेकिन क्या तुम नहीं जानते, कुछ छोटी-छोटी बातें ऐसी होती हैं जिनसे बुरा लगता है। जैसे जब उसने हमें ज़ोर-ज़ोर से हंसते हुए बताया कि अगर तुम्हें यह सम्मान चाहिए तो यह तुम्हारे चाचा को खुश करने के लिए है और तुम्हारे चाचा एक नौकर थे।" "उसने तुम्हें यह बताया!" चार्ली चिल्लाया, इस चतुराई से जोड़े गए उद्धरण के बल पर यह मानते हुए कि मैडम की कही हर बात सच है। वेरदुरिन ने कहा था! श्रीमती वेरदुरिन एक बूढ़ी मालकिन की खुशी

से अभिभूत थीं, जिसने अपने युवा प्रेमी के उसे छोड़ने की कगार पर होने के बावजूद, उससे विवाह तोड़ने में सफलता प्राप्त कर ली थी। संभव है कि उन्होंने अपने झूठ की योजना नहीं बनाई थी, शायद वह जानबूझकर झूठ नहीं बोल रही थीं। एक प्रकार का भावुक तर्क, शायद कुछ और भी सरल, एक प्रकार की तंत्रिका प्रतिक्रिया, जो उन्हें अपने जीवन को रोशन करने और अपनी खुशी को बनाए रखने के लिए, छोटे से परिवार में अशांति पैदा करने के लिए प्रेरित कर रही थी, ने शायद आवेग में आकर, बिना उन्हें उनकी सत्यता की जांच करने का समय दिए, इन कथनों को उनके होठों से निकाल दिया, जो सटीक न होते हुए भी शैतानी रूप से प्रभावी थे। "अगर उसने सिर्फ़ हमें ही ये बात दोहराई होती, तो कोई फ़र्क नहीं पड़ता," मालकिन ने आगे कहा, "हम उसकी बातों पर ध्यान देने की ज़रूरत नहीं समझते, वैसे भी, किसी आदमी के मूल से क्या फ़र्क पड़ता है, आपकी अपनी अहमियत होती है, आप वही होते हैं जो आप खुद को बनाते हैं, लेकिन उसने इसका इस्तेमाल श्रीमती डी पोर्टेफ़िन को हंसाने के लिए किया" (श्रीमती वर्दुरिन ने जानबूझकर इस महिला का नाम लिया क्योंकि वह जानती थीं कि चार्ली उनकी तारीफ़ करता था) "यही बात हमें परेशान करती है: मेरे पति ने उसे सुनकर मुझसे कहा, 'काश उसने मुझे मुक्का मार दिया होता।' क्योंकि वह भी तुम्हें उतना ही पसंद करता है जितना मैं, क्या तुम नहीं जानतीं, गुस्ताव" (इससे हमें पता चलता है कि श्री वर्दुरिन का नाम गुस्ताव था)। "वह सच में बहुत संवेदनशील है।" "लेकिन मैंने तुम्हें कभी नहीं बताया कि मैं उसे पसंद करती हूँ," श्री वर्दुरिन ने दयालु और चिड़चिड़े स्वभाव का अभिनय करते हुए बुदबुदाया। "चार्ल्स उसे पसंद करता है।" "अरे नहीं! अब मुझे फर्क समझ आया, मुझे एक बदमाश ने धोखा दिया और तुम, तुम तो अच्छी हो," चार्ली ने पूरी ईमानदारी से कहा। "नहीं, नहीं," श्रीमती वर्दुरिन ने धीरे से कहा, अपनी जीत को बरकरार रखने की कोशिश करते हुए, क्योंकि उन्हें लगता था कि उनके बुधवार सुरक्षित हैं, लेकिन इसका दुरुपयोग नहीं करना चाहती थीं: "बदमाश शब्द बहुत भारी है; वह नुकसान पहुंचाता है, बहुत नुकसान, अनजाने में; तुम जानती हो कि लीजन ऑफ ऑनर वाली कहानी पल भर की बात थी। और तुम्हारे परिवार के बारे में उसने जो कुछ कहा, उसे दोहराना मेरे लिए कष्टदायक होगा," श्रीमती वर्दुरिन ने कहा, जिन्हें अगर ऐसा करने के लिए कहा जाता तो बहुत शर्मिंदगी होती। "अरे, भले ही यह सिर्फ एक पल के लिए हुआ हो, यह साबित करता है कि वह गद्दार है," मोरेल चिल्लाया। इसी

क्षण हम ड्राइंग रूम में वापस लौटे। "आह!" एम. डी चार्लस ने मोरेल को कमरे में देखकर हैरानी से कहा, और उस आदमी की तरह फुर्ती से उसकी ओर बढ़ा जिसने किसी महिला से गुप्त मुलाकात के लिए बड़ी चतुराई से पूरी शाम का मनोरंजन आयोजित किया हो, और अपनी उत्तेजना में यह कल्पना भी न कर पाए कि उसने अपने ही हाथों से वह जाल बिछाया है जिसमें वह जल्द ही पकड़ा जाएगा और उसके पति द्वारा तैयार रखे गए गुंडों द्वारा सार्वजनिक रूप से पीटा जाएगा। "खैर, आखिरकार यह बहुत जल्दी नहीं है; क्या आप संतुष्ट हैं, नौजवान गौरव, और जल्द ही लीजन ऑफ ऑनर के युवा शूरवीर? क्योंकि बहुत जल्द आप अपना क्रॉस दिखा सकेंगे," एम. डी चार्लस ने मोरेल से कोमल और विजयी भाव से कहा, लेकिन पदक का जिक्र करते ही उन्होंने श्रीमती वर्दुरिन के झूठ का समर्थन कर दिया, जो मोरेल को निर्विवाद सत्य प्रतीत हुआ। "मुझे अकेला छोड़ दो, मैं तुम्हें मेरे पास आने से मना करता हूँ," मोरेल बैरन पर चिल्लाया। "तुम अच्छी तरह जानते हो मेरा मतलब क्या है, मैं पहला नौजवान नहीं हूँ जिसे तुमने भ्रष्ट करने की कोशिश की है!" मुझे बस यही तसल्ली थी कि मैं मोरेल और वर्दुरिनों को एम. डी चार्लस के हाथों कुचलते हुए देखने वाला था। हज़ार गुना कम अपराध के लिए भी अगर मुझे उनके भयंकर क्रोध का सामना करना पड़ता, तो कोई भी उनसे सुरक्षित नहीं होता, एक राजा भी उनसे डरता नहीं। लेकिन इसके बजाय, एक असाधारण घटना घटी। एम. डी चार्लस स्तब्ध, अवाक, अपनी पीड़ा की गहराई को निहारते हुए, बिना कारण समझे, एक शब्द भी न बोल पाने की स्थिति में, बारी-बारी से सभी लोगों को घूरते हुए दिखाई दिए। उनके चेहरे पर प्रश्नवाचक, आक्रोशित और विनती का भाव था, मानो वे यह नहीं पूछ रहे हों कि क्या हुआ है, बल्कि यह पूछ रहे हों कि उन्हें क्या जवाब देना चाहिए। फिर भी, एम. डी चार्लस में न केवल वाक्पटुता बल्कि दुस्साहस के भी सारे गुण थे। जब किसी के प्रति लंबे समय से सुलग रहे क्रोध से आवेशित होकर, वे उसे सबसे अपमानजनक भाषणों से हताश कर देते थे, उस समाज के सामने जिसने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कोई इतना नीचे गिर सकता है। इन अवसरों पर एम. डी चार्लस का गुस्सा फूट पड़ता था, उन्हें एक प्रकार का मिर्गी का दौरा पड़ता था, जिससे हर कोई कांप उठता था। लेकिन इन मामलों में पहल उन्हीं की होती थी, वे ही हमला करते थे, उनके मन में जो भी आता था, वे कह देते थे (ठीक वैसे ही जैसे ब्लोच यहूदियों का मजाक उड़ाने में सक्षम थे और अगर उनके सामने यहूदी शब्द का

उच्चारण किया जाता तो वे शर्म से लाल हो जाते थे)। शायद जिस बात ने उन्हें अवाक कर दिया, वह यह थी कि जब उन्होंने देखा कि एम. और मैडम वर्दुरिन ने उनसे अपनी निगाहें फेर ली हैं और कोई भी उनकी मदद के लिए नहीं आ रहा है, तो उस क्षण उनकी पीड़ा और उससे भी कहीं अधिक, आने वाली और भी बड़ी पीड़ा का उनका भय उन्हें सता रहा था। या फिर, कल्पना में पहले से ही अपना आपा न खोकर और अपनी वज्रपात की तैयारी न करके, अपने क्रोध को हथियार के रूप में तैयार न रखकर, उसे उस क्षण पकड़ लिया गया और घातक प्रहार किया गया जब वह निहत्था था (क्योंकि संवेदनशील, विक्षिप्त, उन्मादी होने के कारण, उसकी भावनाएँ तो वास्तविक थीं, लेकिन उसका साहस दिखावटी था; वास्तव में, जैसा कि मैंने हमेशा सोचा था, और यही बात मुझे उसे पसंद करने पर मजबूर करती थी, उसकी दुर्भावना भी दिखावटी थी: जिन लोगों से वह घृणा करता था, उनसे वह इसलिए घृणा करता था क्योंकि उसे लगता था कि वे उसे नीचा समझते हैं; यदि वे उसके प्रति विनम्र होते, तो उन पर भयंकर क्रोध करने के बजाय, वह उन्हें अपने सीने से लगा लेता, और उसने अपमानित व्यक्ति की सामान्य प्रतिक्रियाएँ नहीं दिखाईं); या फिर, एक ऐसे क्षेत्र में जो उसका अपना नहीं था, उसने खुद को फाउबर्ग की तुलना में कम सहज और कम साहसी महसूस किया। सच तो यह है कि, जिस ड्राइंग-रूम से वह घृणा करता था, उसमें यह महान रईस (जिसमें मध्यम वर्ग से श्रेष्ठता की भावना उतनी ही अंतर्निहित थी जितनी उसके उन पूर्वजों में थी जो क्रांतिकारी न्यायाधिकरण के समक्ष कटघरे में खड़े हुए थे) अपने सभी अंगों, यहाँ तक कि अपनी जीभ के भी लकवाग्रस्त होने के कारण, हर दिशा में भय भरी निगाहें डालने के अलावा कुछ नहीं कर सका। उस पर हुए अत्याचार से वह आक्रोशित था, और उसकी निगाहें न केवल विनती भरी थीं बल्कि प्रश्न भी कर रही थीं। इतनी क्रूरतापूर्ण अप्रत्याशित स्थिति में, यह महान वक्ता हकलाते हुए बस इतना ही कह सका: "इसका क्या मतलब है, क्या हुआ है?" उसका प्रश्न अनसुना कर दिया गया। और दहशत और आतंक का वह शाश्वत मूक अभिनय इतना कम बदला है कि यह बुजुर्ग सज्जन, जिनके साथ पेरिस के एक ड्राइंग-रूम में एक अप्रिय घटना घटी थी, अनजाने में उन विभिन्न औपचारिक मुद्राओं को दोहरा रहे थे जिनमें प्राचीन काल के यूनानी मूर्तिकारों ने महान पैन द्वारा पीछा की जा रही अप्सराओं के आतंक को दर्शाया था।

जिस राजदूत को वापस बुला लिया गया है, जिस अवर सचिव को अचानक सेवानिवृत्त कर दिया गया है, जिस संभ्रांत व्यक्ति से लोग दूरी बनाने लगे हैं, और जिस प्रेमी को घर से निकाल दिया गया है, वे कभी-कभी महीनों तक उस घटना की पड़ताल करते रहते हैं जिसने उनकी आशाओं को चकनाचूर कर दिया है; वे इसे बार-बार पलटते रहते हैं, मानो उन पर कोई अज्ञात प्रक्षेपास्त्र दागा गया हो, लगभग जैसे कोई उल्कापिंड हो। वे उस रहस्यमय घटना के तत्वों को जानना चाहते हैं जो उन पर टूट पड़ी है, यह जानना चाहते हैं कि उसमें कौन सी शत्रुता छिपी है। रसायनशास्त्रियों के पास कम से कम विश्लेषण की शक्ति तो होती है; जिन बीमार व्यक्तियों को किसी ऐसी बीमारी का कारण नहीं पता होता जिसका कारण उन्हें ज्ञात न हो, वे डॉक्टर को बुला सकते हैं; आपराधिक रहस्य जांच मजिस्ट्रेट द्वारा लगभग सुलझा लिए जाते हैं। लेकिन जब बात हमारे साथी मनुष्यों के विचलित करने वाले कार्यों की आती है, तो हम शायद ही कभी उनके उद्देश्यों का पता लगा पाते हैं। इस प्रकार, एम. डी चार्लस, उस घटना के बाद आने वाले दिनों का पूर्वाभास करते हुए, जिसका हम अभी उल्लेख करेंगे, चार्ली के रवैये में केवल एक ही बात स्पष्ट देख सकते थे। चार्ली, जिसने अक्सर बैरन को धमकी दी थी कि वह लोगों को उस जुनून के बारे में बता देगा जो बैरन ने उसके भीतर जगाया था, ने शायद इस अवसर का लाभ उठाया होगा जब उसने सोचा कि अब वह इतना 'सफल' हो गया है कि बिना किसी सहायता के उड़ सकता है। और उसने शायद कृतघ्नतावश ही श्रीमती वर्दुरिन को सब कुछ बता दिया होगा। लेकिन वह कैसे बहक गईं (क्योंकि बैरन ने कहानी को नकारने का मन बना लिया था और खुद को यह समझा लिया था कि जिन भावनाओं के लिए उसे दोषी ठहराया जा रहा था वे काल्पनिक थीं)? श्रीमती वर्दुरिन के कुछ दोस्तों ने, जो शायद खुद चार्ली के प्रति आसक्त थे, शायद ज़मीन तैयार की होगी। तदनुसार, एम. डी चार्लस ने अगले कुछ दिनों में कई वफादारों को भयानक पत्र लिखे, जो पूरी तरह से निर्दोष थे और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि वह पागल हो गया होगा; फिर वह श्रीमती वर्दुरिन के पास एक लंबी और मार्मिक कहानी लेकर गया, जिसका वह प्रभाव बिल्कुल नहीं पड़ा जो वह चाहता था। क्योंकि सबसे पहले तो श्रीमती वर्दुरिन ने बैरन से दोहराया: "आपको बस इतना करना है कि उसके बारे में चिंता न करें, उसका तिरस्कार करें, वह तो बस एक लड़का है।" अब बैरन केवल सुलह की कामना कर रहे थे। दूसरी बात, सुलह करवाने के लिए, चार्ली को उन सभी

चीजों से वंचित करके, जिनके बारे में वह आश्वस्त महसूस करते थे, उन्होंने श्रीमती वर्दुरिन से अनुरोध किया कि वे उन्हें दोबारा आमंत्रित न करें; इस अनुरोध को श्रीमती वर्दुरिन ने अस्वीकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप श्री डी चार्लस ने उन्हें क्रोधित और व्यंग्यात्मक पत्र लिखे। एक अनुमान से दूसरे अनुमान पर भटकते हुए, बैरन कभी भी सच्चाई तक नहीं पहुँच पाए, जो यह थी कि प्रहार मोरेल की ओर से नहीं हुआ था। यह सच है कि वह उनसे कुछ मिनटों की बातचीत करके यह जान सकते थे। लेकिन उन्हें लगा कि इससे उनकी गरिमा को ठेस पहुँचेगी और उनके प्रेम के हितों के विरुद्ध होगा। उनका अपमान हुआ था, वे स्पष्टीकरण की प्रतीक्षा कर रहे थे। वैसे भी, लगभग हमेशा ही, किसी गलतफहमी को दूर करने वाली बातचीत के विचार के साथ एक और विचार जुड़ा होता है, जो किसी भी कारण से, हमें उस बातचीत के लिए सहमत होने से रोकता है। जो व्यक्ति अपमानित हो चुका है और बीस अवसरों पर अपनी कमजोरी दिखा चुका है, वह इक्कीसवें अवसर पर अपने अहंकार का प्रमाण देगा। यही एकमात्र अवसर है जब उसके लिए हठी और अहंकारी रवैया अपनाने के बजाय उस भ्रम को दूर करना उचित होगा जो खंडन न कर पाने पर उसके विरोधी के मन में घर कर जाएगा। घटना के सामाजिक पहलू की बात करें तो, यह अफवाह फैल गई कि एम. डी चार्लस को वर्दुरिन के घर से उस समय निकाल दिया गया था जब वह एक युवा संगीतकार के साथ बलात्कार करने का प्रयास कर रहा था। इस अफवाह का प्रभाव यह हुआ कि जब एम. डी चार्लस वर्दुरिन के घर दोबारा नहीं आया तो किसी को आश्चर्य नहीं हुआ, और जब भी वह कहीं और संयोग से अपने किसी ऐसे वफादार से मिलता, जिस पर उसे शक था और जिसका उसने अपमान किया था (क्योंकि उस व्यक्ति को बैरन से द्वेष था और बैरन ने उससे अभिवादन करने से परहेज किया था), तो लोगों को आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वे जानते थे कि उस छोटे से परिवार का कोई भी सदस्य फिर कभी बैरन से बात नहीं करना चाहेगा।

मोरेल के शब्दों और मालकिन के रवैये से स्तब्ध एम. डी चार्लस वहीं दहशत में डूबी अप्सरा की मुद्रा में खड़े थे, जबकि एम. और श्रीमती वर्दुरिन कूटनीतिक संबंध टूटने के संकेत के रूप में बाहरी ड्राइंग रूम में चले गए थे, एम. डी चार्लस को अकेला छोड़कर, जबकि मंच पर मोरेल अपनी वायलिन को उसके डिब्बे में रख रहे थे। "अब आपको हमें ठीक-ठीक बताना होगा कि क्या हुआ," श्रीमती वर्दुरिन ने उत्सुकता से अपने पति से विनती की। "मुझे नहीं पता

कि आपने उनसे क्या कहा होगा, वह काफी परेशान लग रहे थे," स्की ने कहा, "उनकी आँखों में आँसू थे।" अनसुना करने का नाटक करते हुए श्रीमती ने कहा: "मुझे यकीन है, मैंने जो कुछ भी कहा, उससे उन पर कोई फर्क नहीं पड़ा।" वर्दुरिन ने एक ऐसी तरकीब अपनाई जो सबको धोखा नहीं दे सकती, ताकि मूर्तिकार यह दोहराए कि चार्ली रो रहा था। ये आँसू देखकर मालकिन का स्वाभिमान इतना बढ़ गया कि वह यह जोखिम नहीं उठाना चाहती थी कि कोई भी श्रद्धालु, जिसने शायद यह बात न सुनी हो, इससे अनभिज्ञ रह जाए। "नहीं, इससे फर्क पड़ा है, क्योंकि मैंने उसकी आँखों में बड़े-बड़े आँसू चमकते देखे," मूर्तिकार ने दबी आवाज़ में, शरारती मुस्कान के साथ कहा, और तिरछी नज़र से यह सुनिश्चित किया कि मोरेल अभी भी मंच पर है और बातचीत सुन नहीं सकता। लेकिन कोई तो था जिसने यह सब सुन लिया था, और जिसकी उपस्थिति का पता चलते ही मोरेल की खोई हुई उम्मीदों में से एक फिर से जाग उठी। यह नेपल्स की रानी थी, जो अपना पंखा पीछे छोड़ आई थी, और एक अन्य पार्टी से लौटते समय उसने इसे स्वयं माँगना अधिक शिष्टाचार समझा। वह कमरे में बड़ी खामोशी से दाखिल हुई, मानो उसे खुद पर शर्म आ रही हो, अपनी मौजूदगी के लिए माफी मांगने को तैयार हो, और बाकी सभी मेहमानों के चले जाने के बाद मेज़बान से थोड़ी देर के लिए मिलने आई हो। लेकिन किसी ने भी उसके आने की आहट नहीं सुनी। घटना की गरमागरमी में उसने तुरंत ही उसका मतलब समझ लिया था, जिससे वह गुस्से से आग बबूला हो गई थी। "स्की कहता है कि उसकी आँखों में आँसू थे, क्या आपने ध्यान दिया? मैंने तो कोई आँसू नहीं देखे। आह, हाँ, मुझे अब याद आया," उसने खुद को सुधारते हुए कहा, इस डर से कि कहीं उसके इनकार पर विश्वास न किया जाए। "चार्लस की बात करें तो, वह भी उनके पास ही है, उसे कुर्सी पर बैठ जाना चाहिए, वह लड़खड़ा रहा है, एक मिनट में ज़मीन पर गिर जाएगा," उसने बेरहमी से हंसते हुए कहा। उसी क्षण मोरेल उसकी ओर दौड़ा: "क्या वह महिला नेपल्स की रानी नहीं हैं?" उसने पूछा (हालाँकि वह अच्छी तरह जानता था कि वह रानी ही थीं), और उसने महारानी की ओर इशारा किया जो चार्लस की ओर बढ़ रही थीं। “अभी जो कुछ हुआ है, उसके बाद मुझे खेद है कि मैं बैरन से मुझे पेश करने का अनुरोध नहीं कर सकती।” “रुको, मैं तुम्हें स्वयं उनके पास ले चलती हूँ,” श्रीमती वर्दुरिन ने कहा, और कुछ वफादारों के साथ, लेकिन मेरे और ब्रिचोट के बिना, जो अपनी टोपी और कोट लेने के लिए

जल्दी से चले गए, वह रानी की ओर बढ़ीं, जो एम. डी चार्लस से बात कर रही थीं। उन्होंने सोचा था कि मोरेल को नेपल्स की रानी के सामने पेश करने की उनकी बड़ी इच्छा को केवल उस महिला की अप्रत्याशित मृत्यु ही रोक सकती है। लेकिन हम भविष्य को वर्तमान के प्रतिबिंब के रूप में देखते हैं, जबकि यह अक्सर लगभग तात्कालिक, उन कारणों का परिणाम होता है जो ज्यादातर हमारी नजरों से बच जाते हैं। एक घंटा भी नहीं बीता था, और अब एम. डी चार्लस मोरेल को रानी के सामने पेश होने से रोकने के लिए अपनी हर चीज देने को तैयार थे। श्रीमती वर्दुरिन ने रानी को झुककर प्रणाम किया। यह देखकर कि दूसरा व्यक्ति उसे पहचान नहीं पाया, रानी ने कहा, "मैं श्रीमती वर्दुरिन हूँ। महाराज, क्या आपको मैं याद हूँ?" "कोई बात नहीं," रानी ने कहा और श्री डी चार्लस से सहजतापूर्वक बातचीत जारी रखी। उनका लहजा इतना उदासीन था कि श्रीमती वर्दुरिन को संदेह हुआ कि कहीं यह 'कोई बात नहीं' उन्होंने खुद से तो नहीं कहा था। यह लहजा इतना भावहीन था कि श्री डी चार्लस, अपने टूटे हुए दिल के बावजूद, अशिष्टता की कला की निपुणता और आनंद से भरी मुस्कान लिए हुए थे। मोरेल, जो दूर से अपनी प्रस्तुति की तैयारियों को देख रहा था, अब पास आया। रानी ने श्री डी चार्लस को अपना हाथ बढ़ाया। उनसे भी वह नाराज़ थीं, लेकिन केवल इसलिए कि उन्होंने नीच निंदकों के खिलाफ़ और अधिक सशक्त रुख नहीं अपनाया। उन्हें उस व्यक्ति के लिए शर्मिंदगी महसूस हो रही थी, जिसके साथ वर्दुरिन परिवार ने ऐसा व्यवहार करने की हिम्मत की थी। कुछ घंटे पहले उन्होंने जो सरल शिष्टाचार दिखाया था, और अब जिस घमंडी अभिमान के साथ वे उनका सामना करने के लिए खड़ी हुईं, उन दोनों की जड़ें उनके हृदय के एक ही कोने में थीं। रानी, एक सौम्य स्वभाव की महिला होने के नाते, सौम्य स्वभाव को सर्वप्रथम उन लोगों के प्रति अटूट लगाव के रूप में देखती थीं जिन्हें वे पसंद करती थीं, अपने परिवार के प्रति, अपने वंश के सभी राजकुमारों के प्रति, जिनमें एम. डी चार्लस भी शामिल थे, और उनके बाद मध्यम वर्ग या निम्न वर्ग के उन सभी लोगों के प्रति जो उन लोगों का सम्मान करना जानते थे जिन्हें वे पसंद करती थीं और जिनके प्रति उनके मन में सद्भावना थी। इन्हीं सहज प्रवृत्तियों से संपन्न एक महिला के रूप में उन्होंने श्रीमती वर्दुरिन के प्रति दयालुता दिखाई थी। और निस्संदेह, सौम्य स्वभाव की यह एक संकीर्ण, कुछ हद तक रूढ़िवादी और तेजी से अप्रचलित होती अवधारणा है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि उनका सौम्य

स्वभाव कम वास्तविक या कम प्रखर था। प्राचीन लोग जिस मानव समुदाय के लिए समर्पित थे, उससे उनका लगाव कम नहीं हुआ, भले ही वह उनके शहर की सीमाओं से बाहर न जाता हो। आज के लोग अपने देश के प्रति उतने ही समर्पित हैं जितने भविष्य में आने वाले लोग संयुक्त राज्य अमेरिका से होंगे। मेरे आस-पास के वातावरण में, मैंने इसका एक उदाहरण अपनी माँ में देखा है, जिन्हें श्रीमती डी कैम्ब्रेमर और श्रीमती डी गुएरमांटेस कभी भी किसी परोपकारी कार्य में भाग लेने, किसी देशभक्ति कार्यशाला में शामिल होने, किसी बाज़ार में सामान बेचने या संरक्षिका बनने के लिए राजी नहीं कर सकीं। मैं यह नहीं कहूँगा कि उन्होंने केवल तभी भलाई की जब उनके दिल ने पुकारा, और अपने परिवार, अपने नौकरों और उन दुर्भाग्यशाली लोगों के लिए, जो संयोगवश उनके रास्ते में आए, अपने प्रेम और उदारता के खजाने को बचाकर रखने में वे सही थीं, लेकिन मैं इतना अवश्य जानता हूँ कि ये उदारता, मेरी दादी की तरह, असीमित थी और श्रीमती डी गुएरमांटेस या श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के द्वारा किए गए किसी भी कार्य से कहीं अधिक थी। नेपल्स की रानी का मामला बिल्कुल अलग था, लेकिन यहाँ भी यह मानना पड़ेगा कि योग्य लोगों के बारे में उनकी धारणा उन दोस्तोयेव्स्की के उपन्यासों से बिल्कुल अलग थी जिन्हें अल्बर्टीन ने मेरी अलमारियों से निकालकर पढ़ा था, यानी चालाक परजीवियों, चोरों, शराबी, कभी मूर्ख, कभी अभिमानी, व्यभिचारी, और कभी-कभी हत्यारों के रूप में चित्रित पात्रों से। हालांकि, अतिवाद भी देखने को मिलता है, क्योंकि जिस कुलीन व्यक्ति, भाई, और अपमानित रिश्तेदार का रानी बचाव करना चाहती थी, वह एम. डी चार्लस थे, यानी जन्म और रानी से जुड़े सभी पारिवारिक संबंधों के बावजूद, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी अच्छाई कई बुराइयों से घिरी हुई थी। "मेरे प्यारे चचेरे भाई, तुम बिल्कुल ठीक नहीं लग रहे हो," उन्होंने एम. डी चार्लस से कहा। "मेरी बांह पर लीन है। यकीन मानो, यह तुम्हें सहारा देगी। यह इसके लिए काफी मजबूत है।" फिर, गर्व से अपनी आँखें उठाकर अपने विरोधियों का सामना करते हुए (उस समय, स्की ने मुझे बताया, उनके सामने श्रीमती वर्दुरिन और मोरेल थीं), "आप जानते हैं कि अतीत में, गैएटा में, इसने भीड़ को डटकर रखा था। यह आपके लिए एक सुरक्षा कवच का काम करेगा।" और इस प्रकार, बैरन का हाथ थामकर और मोरेल को अपने सामने पेश किए बिना, महारानी एलिज़ाबेथ की भव्य बहन घर से निकल गईं। एम. डी चार्लस के क्रूर स्वभाव और उनके द्वारा अपने ही परिवार को आतंकित करने

वाले अत्याचारों को देखते हुए, यह अनुमान लगाया जा सकता था कि आज शाम की घटनाओं के बाद, वह अपना क्रोध प्रकट करेंगे और वर्दुरिन परिवार पर प्रतिशोध लेंगे। हम देख चुके हैं कि शुरू में ऐसा कुछ क्यों नहीं हुआ। कुछ समय बाद बैरन को सर्दी लग गई और उन्हें उस सर्दी में बहुत आम सेप्टिक निमोनिया हो गया। उनके डॉक्टरों ने उन्हें और खुद उन्हें भी लंबे समय तक मृत्यु के कगार पर माना और वे कई महीनों तक जीवन और मृत्यु के बीच झूलते रहे। क्या यह महज़ एक शारीरिक परिवर्तन था, और उस न्यूरोसिस की जगह कोई दूसरी बीमारी आ गई थी जिसके कारण वे पहले अपने क्रोध के प्रकोप में खुद पर से सारा नियंत्रण खो देते थे? क्योंकि यह मानना बहुत स्पष्ट है कि सामाजिक दृष्टिकोण से वर्दुरिन परिवार को कभी गंभीरता से न लेने के कारण, अंततः उनकी भूमिका को समझने के बाद, वे उस आक्रोश को महसूस करने में असमर्थ थे जो वे अपने समकक्षों के प्रति महसूस करते; यह भी याद रखना बहुत स्पष्ट है कि न्यूरोटिक लोग, काल्पनिक और हानिरहित दुश्मनों द्वारा थोड़ी सी भी उकसाहट पर चिढ़ जाते हैं, लेकिन जैसे ही कोई उन पर हमला करता है, वे इसके विपरीत हानिरहित हो जाते हैं, और हम उन्हें उनकी शिकायतों की निरर्थकता साबित करने की कोशिश करने की तुलना में उनके चेहरे पर ठंडा पानी फेंककर अधिक आसानी से शांत कर सकते हैं। शायद हमें इस दुर्भावना के अभाव का कारण शारीरिक परिवर्तन में नहीं, बल्कि स्वयं रोग में खोजना चाहिए। इसने बैरन को इतना थका दिया था कि उनके पास वर्दुरिनों के बारे में सोचने का भी समय नहीं बचा था। वे लगभग मृत्यु के कगार पर थे। हमने आक्रमणों का ज़िक्र किया; यहाँ तक कि वे आक्रमण भी जिनका प्रभाव मृत्यु के बाद ही दिखाई देता है, यदि हम उन्हें ठीक से अंजाम देना चाहते हैं, तो हमें अपनी शक्ति का एक हिस्सा कुर्बान करना पड़ता है। एम. डी चार्लस के पास तैयारी की गतिविधियों के लिए बहुत कम शक्ति बची थी। हम अक्सर ऐसे कट्टर शत्रुओं के बारे में सुनते हैं जो मृत्यु के क्षण में एक-दूसरे को निहारने के लिए आँखें खोलते हैं और प्रसन्न होकर उन्हें बंद कर लेते हैं। यह एक दुर्लभ घटना होगी, सिवाय तब जब मृत्यु हमें जीवन के बीच में ही चौंका दे। इसके विपरीत, जब हमारे पास खोने के लिए कुछ नहीं बचता, तब हम उन जोखिमों से विचलित नहीं होते जिन्हें जीवन से भरपूर होने पर हम आसानी से उठा लेते। प्रतिशोध की भावना जीवन का अभिन्न अंग है, यह आमतौर पर हमें मृत्यु के कगार पर छोड़ देती है—कुछ अपवादों को छोड़कर, जो एक ही

व्यक्ति के हृदय में घटित होते हैं, जैसा कि हम देखेंगे, मानवीय विरोधाभास हैं। वर्दुरिन परिवार के बारे में एक क्षण सोचने के बाद, एम. डी चार्लस ने महसूस किया कि वह बहुत कमजोर हो गए हैं, उन्होंने अपना चेहरा दीवार की ओर कर लिया और किसी भी चीज़ के बारे में सोचना बंद कर दिया। यदि वह अक्सर इस तरह चुप रहते थे, तो इसका अर्थ यह नहीं था कि उन्होंने अपनी वाक्पटुता खो दी थी। यह अब भी अपने स्रोत से प्रवाहित होती थी, लेकिन इसमें बदलाव आ गया था। उस हिंसा से अलग होकर, जिसे इसने अक्सर सुशोभित किया था, यह अब नम्रता के शब्दों, सुसमाचार के शब्दों और मृत्यु के प्रति स्पष्ट समर्पण से सजी एक रहस्यमय वाक्पटुता मात्र रह गई थी। वह विशेष रूप से उन दिनों में बोलते थे जब उन्हें लगता था कि वह जीवित रहेंगे। एक बार फिर बीमारी के दौरे ने उन्हें चुप करा दिया। यह ईसाई नम्रता, जिसमें उनकी शानदार हिंसा समाहित थी (जैसा कि एस्तेर में एंड्रोमाक की इतनी भिन्न प्रतिभा है), उनके बिस्तर के पास आने वालों की प्रशंसा का पात्र बनी। इससे वर्दुरिन परिवार के लोग भी आहत हो जाते, जो उस व्यक्ति की पूजा करने से खुद को रोक नहीं पाते, जिसकी कमजोरी ने उन्हें उससे नफरत करने पर मजबूर कर दिया था। यह सच है कि उनके मन में ऐसे विचार उभर आए जो केवल दिखावटी तौर पर ईसाई थे। उन्होंने प्रधान देवदूत गेब्रियल से प्रार्थना की कि वे प्रकट होकर उन्हें, पैगंबर की तरह, यह बताएं कि मसीहा कब उनके पास आएगा। और एक मधुर और दुख भरी मुस्कान के साथ वे कहते, "परन्तु प्रधान देवदूत मुझसे यह न कहें, जैसा उन्होंने दानियेल से कहा था, कि मैं 'सात सप्ताह और बासठ सप्ताह' तक धैर्य रखूँ, क्योंकि तब तक तो मैं मर चुका होऊंगा।" जिस व्यक्ति की वे प्रतीक्षा कर रहे थे, वह मोरेल था। इसलिए उन्होंने प्रधान देवदूत राफेल से प्रार्थना की कि वे उसे उनके पास ले आएं, जैसे वे युवा टोबियास को लाए थे। और, अधिक मानवीय तरीकों का परिचय देते हुए (जैसे बीमार पोप जो प्रार्थना सभा का आदेश देते समय अपने चिकित्सकों को बुलाना नहीं भूलते), उन्होंने अपने आगंतुकों को संकेत दिया कि यदि ब्रिचोट बिना देरी किए अपने युवा टोबियास को उनके पास ले आए, तो शायद महादूत राफेल ब्रिचोट की दृष्टि लौटाने के लिए सहमत हो जाएं, जैसा कि उन्होंने टोबियास के पिता के साथ किया था, या जैसा कि बेथेस्डा के भेड़-कुंड में हुआ था। लेकिन, इन मानवीय कमियों के बावजूद, एम. डी चार्लस के आचरण की नैतिक शुद्धता चिंताजनक हो गई थी। घमंड, निंदा, द्वेष और अहंकार का पागलपन, सब गायब हो

गए थे। नैतिक रूप से एम. डी चार्लस अपने अतीत के स्तर से बहुत ऊपर उठ गए थे। लेकिन यह नैतिक पूर्णता, जिसकी वास्तविकता के बारे में उनकी वाक्पटुता कला उनके दयालु श्रोताओं में से एक से अधिक को धोखा देने में सक्षम थी, उस बीमारी के साथ गायब हो गई जिसने इसके लिए काम किया था। एम. डी चार्लस ढलान से नीचे की ओर तेज़ी से लौट आया, और जैसा कि हम आगे देखेंगे, उसकी गति लगातार बढ़ती ही गई। लेकिन उस समय तक उसके प्रति वर्दुरिनों का रवैया एक धुंधली सी याद बनकर रह गया था, जिसे हाल ही में हुए हिंसक हमलों ने फिर से ज़िंदा होने से रोक दिया था।

वर्दुरिन परिवार की पार्टी की ओर लौटते हुए, जब मेज़बान और मेज़बानी करने वाली पत्नी अकेले थे, तो श्री वर्दुरिन ने अपनी पत्नी से कहा: "तुम्हें पता है कॉटार्ड कहाँ गया है? वह सैनिएट के साथ है: उसने अपना कर्ज़ चुकाने के लिए जुआ खेला और सब कुछ गंवा दिया। अभी-अभी जब वह हमसे विदा लेकर घर लौटा और उसे पता चला कि उसके पास एक पैसा भी नहीं बचा है और उस पर लगभग दस लाख फ्रैंक का कर्ज़ है, तो सैनिएट को दिल का दौरा पड़ गया।" "लेकिन फिर उसने जुआ क्यों खेला, यह तो बेवकूफी है, वह इस खेल में सफल होने वाला दुनिया का आखिरी आदमी था। उससे ज़्यादा चतुर लोग भी इसमें हार जाते हैं, और वह तो हर किसी के हाथों ठगे जाने के लिए ही पैदा हुआ था।" "अरे हाँ, हमें तो हमेशा से पता था कि वह बेवकूफ है," श्री वर्दुरिन ने कहा। खैर, यही नतीजा है। यहाँ एक ऐसा आदमी है जिसे कल उसका मकान मालिक बेदखल कर देगा, वो बिल्कुल कंगाल हो जाएगा; उसका परिवार उसे पसंद नहीं करता, फोर्शेविल तो दुनिया का आखिरी आदमी है जो उसकी मदद करेगा। इसलिए मुझे ख्याल आया, मैं ऐसा कुछ नहीं करना चाहता जो आपको मंजूर न हो, लेकिन शायद हम उसके लिए थोड़ी-बहुत आमदनी का इंतजाम कर सकें ताकि उसे अपनी बर्बादी का ज्यादा एहसास न हो, ताकि उसके सिर पर छत तो रहे। "मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ, आपने इसके बारे में सोचा, यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन आप 'छत' की बात कर रहे हैं; उस मंदबुद्धि ने अपनी हैसियत से ज्यादा महंगा अपार्टमेंट किराए पर रखा हुआ है, वो उसमें नहीं रह सकता, हमें उसके लिए कहीं और दो कमरे ढूंढने पड़ेंगे। मुझे पता चला है कि इस समय भी वो अपने अपार्टमेंट का किराया छह-सात हजार फ्रैंक दे रहा है।" "छह हज़ार पाँच सौ। लेकिन उन्हें अपने घर से बहुत लगाव है। संक्षेप में, उन्हें पहला स्ट्रोक आ चुका

है, वे मुश्किल से दो-तीन साल से ज़्यादा जी पाएंगे। मान लीजिए कि हम उन्हें तीन साल के लिए दस हज़ार फ़्रैंक दें। मुझे लगता है कि हम यह खर्च उठा सकते हैं। उदाहरण के लिए, हम इस साल ला रास्पेलियर को दोबारा लेने के बजाय, कुछ आसान सा काम कर सकते हैं। हमारी आमदनी को देखते हुए, मुझे लगता है कि तीन साल तक हर साल दस हज़ार फ़्रैंक का त्याग करना नामुमकिन नहीं है।" "ठीक है, बस यही झंझट है कि लोगों को पता चल जाएगा, और हमसे उम्मीद की जाएगी कि हम दूसरों के लिए भी ऐसा ही करें।" "यकीन मानिए, मैंने इस बारे में सोचा है। मैं यह तभी करूँगा जब किसी को इसके बारे में कुछ पता न चले। धन्यवाद, मैं नहीं चाहता कि हम मानव जाति के उपकारक बनें। कोई परोपकार नहीं! हम बस इतना कर सकते हैं कि उन्हें बता दें कि यह पैसा राजकुमारी शेरबातोफ़ ने उनके लिए छोड़ा है।" "पर क्या वह इस पर विश्वास करेगा? उसने अपनी वसीयत के बारे में कॉटार्ड से सलाह ली थी।" "अगर हालात बहुत बिगड़ जाते हैं, तो हम कॉटार्ड को अपने भरोसे में ले सकते हैं। वह पेशेवर गोपनीयता का आदी है, वह बहुत पैसा कमाता है, वह उन दखलंदाज़ों जैसा नहीं होगा जिन्हें चुप कराना पड़ता है। हो सकता है वह यह भी कहने को तैयार हो जाए कि राजकुमारी ने उसे ही अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया था। इस तरह हम तो सामने भी नहीं आएंगे। इससे सारे हंगामे, आभार और भाषणों से बचा जा सकेगा।" एम. वर्दुरिन ने एक ऐसा वाक्य जोड़ा जिससे यह स्पष्ट हो गया कि वे किस तरह के भावुक दृश्यों और भाषणों से बचना चाहते थे। लेकिन मुझे शायद यह बात सही से नहीं बताई गई, क्योंकि यह कोई फ्रांसीसी शब्द नहीं था, बल्कि उन शब्दों में से एक था जो कुछ परिवारों में कुछ खास चीजों, खासकर परेशान करने वाली चीजों को दर्शाने के लिए इस्तेमाल होते हैं, शायद इसलिए कि लोग उन्हें संबंधित लोगों के सामने बिना समझे ही बताना चाहते हैं! इस तरह का वाक्य आम तौर पर परिवार की पुरानी स्थिति से जुड़ा होता है। उदाहरण के लिए, एक यहूदी परिवार में, यह एक रस्मी शब्द होगा जिसका अर्थ बदल दिया गया होगा, और शायद यह इब्रानी भाषा का एकमात्र शब्द होगा जिससे अब पूरी तरह से फ्रांसीसी हो चुके परिवार को अभी भी परिचित होगा। एक ऐसे परिवार में जो पूरी तरह से स्थानीय है, यह स्थानीय बोली का शब्द होगा, भले ही परिवार अब उस बोली को न तो बोलता हो और न ही समझता हो। दक्षिण अमेरिका से आए एक परिवार में, जो अब फ्रांसीसी के अलावा कोई और भाषा नहीं बोलता, यह एक

स्पेनिश शब्द होगा। और, अगली पीढ़ी में, यह शब्द केवल बचपन की याद बनकर रह जाएगा। उन्हें शायद अच्छी तरह याद होगा कि उनके माता-पिता भोजन करते समय सेवारत नौकरों को संबोधित करने के लिए, बिना उनकी बात समझे, इसी तरह के किसी शब्द का प्रयोग करते थे, लेकिन बच्चे यह नहीं बता सकते कि उस शब्द का सही अर्थ क्या था, क्या वह स्पेनिश, इब्रानी, जर्मन, या कोई स्थानीय बोली थी, या वास्तव में वह कभी किसी भाषा का हिस्सा था या कोई नाम या पूरी तरह से गढ़ा हुआ शब्द था। यह अनिश्चितता तभी दूर हो सकती है जब उनका कोई परदादा या चचेरा भाई जीवित हो जिसने निश्चित रूप से इसी शब्द का प्रयोग किया हो। चूंकि मैं वर्दुरिन परिवार के किसी रिश्तेदार को नहीं जानता था, इसलिए मैं इस शब्द को दोबारा याद नहीं कर पाया। मुझे बस इतना पता है कि इससे श्रीमती वर्दुरिन के चेहरे पर मुस्कान आ गई, क्योंकि उनकी रोज़मर्रा की बातचीत की तुलना में इस भाषा का प्रयोग कम सामान्य, अधिक व्यक्तिगत और अधिक गुप्त होता है, और इसे आपस में इस्तेमाल करने वालों में आत्म-महत्व की भावना पैदा करता है, जो हमेशा एक निश्चित संतुष्टि के साथ आती है। इस हंसी के क्षण के बाद: "लेकिन अगर कॉटार्ड बात करे," श्रीमती वर्दुरिन ने आपत्ति जताई। "वह बात नहीं करेगा।" उन्होंने कम से कम मुझसे तो इसका ज़िक्र किया ही था, क्योंकि उन्हीं से मुझे इस घटना के बारे में कुछ साल बाद पता चला, दरअसल सैनीएट के अंतिम संस्कार में। मुझे अफ़सोस हुआ कि मुझे इसके बारे में पहले पता नहीं चला। एक तो यह कि अगर मुझे इसके बारे में पता चलता तो मैं इस विचार तक जल्दी पहुँच जाता कि हमें कभी भी दूसरों के प्रति द्वेष नहीं रखना चाहिए, उन्हें किसी बुरे काम की याद के आधार पर कभी नहीं आंकना चाहिए, क्योंकि हम नहीं जानते कि उनके दिलों में कभी-कभी कितनी अच्छाई की सच्ची इच्छा रही होगी और वे उसे पूरा भी कर चुके होंगे; इसमें कोई संदेह नहीं कि बुराई का वह रूप जिसे हमने एक बार और हमेशा के लिए स्थापित कर दिया है, फिर से प्रकट होगा, लेकिन हृदय उससे कहीं अधिक समृद्ध है, उसके कई अन्य रूप भी हैं जो इन लोगों के प्रति फिर से प्रकट होंगे, जिनकी दया को हम उस अवसर के कारण स्वीकार करने से इनकार करते हैं जब उन्होंने बुरा व्यवहार किया था। इसके अलावा, कॉटार्ड द्वारा किए गए इस खुलासे का मुझ पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ा होगा, क्योंकि वर्दुरिनों के बारे में मेरी राय बदलकर, यदि यह खुलासा मुझे पहले ही पता चल गया होता, तो अल्बर्टीन और मेरे बीच

वर्दुरिनों की संभावित भूमिका के बारे में मेरे मन में जो संदेह थे, वे दूर हो जाते, शायद गलत ही सही, क्योंकि यदि एम. वर्दुरिन—जिन्हें मैं बढ़ते यकीन के साथ सबसे दुष्ट व्यक्ति मानता था—में कुछ गुण थे, तो भी वे सबसे क्रूर उत्पीड़न की हद तक अत्याचारी थे, और छोटे समूह पर अपने प्रभुत्व के प्रति इतने ईर्ष्यालु थे कि वफादारों के बीच किसी भी ऐसे संबंध को तोड़ने के लिए सबसे घटिया झूठ बोलने और सबसे अनुचित नफरत भड़काने से भी पीछे नहीं हटते थे, जिसका एकमात्र उद्देश्य छोटे समूह को मजबूत करना नहीं था। वह निस्वार्थ भाव से कार्य करने में सक्षम, सादगीपूर्ण उदारता वाले व्यक्ति थे, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि वे भावुक, मिलनसार, ईमानदार, सत्यनिष्ठ या हमेशा अच्छे व्यक्ति थे। उनमें एक आंशिक अच्छाई थी, जिसमें शायद उस परिवार का अंश झलकता था जिसे मेरी परदादी जानती थीं। यह अच्छाई शायद मेरे द्वारा खोजे जाने से पहले ही उनमें मौजूद थी, जैसे कोलंबस या पियरी से पहले अमेरिका या उत्तरी ध्रुव का अस्तित्व था। फिर भी, मेरी खोज के क्षण में, एम. वर्दुरिन के स्वभाव ने मुझे एक नया और अकल्पनीय पहलू दिखाया; और इस प्रकार मैं एक चरित्र के साथ-साथ समाजों और भावनाओं की एक स्थायी छवि प्रस्तुत करने की कठिनाई से जूझ रहा हूँ। क्योंकि यह उनसे कम नहीं बदलता, और यदि हम इसमें अपेक्षाकृत अपरिवर्तनीय चीज़ों को चित्रित करने का प्रयास करते हैं, तो हम देखते हैं कि यह कलाकार के सामने क्रमिक रूप से विभिन्न रूप प्रस्तुत करता है (जिसका अर्थ है कि यह स्थिर नहीं रह सकता बल्कि गतिशील रहता है)।

अध्याय III

अल्बर्टाइन की उड़ान

काफी देर हो चुकी थी और मुझे डर था कि अल्बर्टीन अधीर हो रही होगी, इसलिए वर्दुरिन्स के दल से निकलते समय मैंने ब्रिचोट से विनती की कि कृपया मुझे मेरे घर तक छोड़ दें। फिर मेरी गाड़ी उन्हें घर ले जाएगी। उन्होंने मुझे इस तरह सीधे घर जाने पर बधाई दी (मुझे पता नहीं था कि घर में एक लड़की मेरा इंतज़ार कर रही थी), और इतनी जल्दी और समझदारी से उस शाम को समाप्त करने पर भी बधाई दी, जिसकी शुरुआत को मैंने वास्तव में टाल दिया था। फिर उन्होंने मुझसे एम. डी चार्लस के बारे में बात की। एम. डी चार्लस निस्संदेह स्तब्ध रह जाते यदि उन्होंने उस प्रोफेसर को, जो उनके प्रति इतने दयालु थे, जो हमेशा उन्हें आश्वस्त करते थे: "मैं कभी कुछ नहीं दोहराता," उनके और उनके जीवन के बारे में बिना किसी संकोच के बात करते हुए सुना होता। और ब्रिचोट का आक्रोश शायद उतना ही सच्चा होता यदि एम. डी चार्लस ने उनसे कहा होता: "मुझे बताया गया है कि आप मेरे बारे में बुरा बोल रहे हैं।" ब्रिचोट को एम. डी. चार्लस से वाकई स्नेह था और अगर उन्हें उनके बारे में हुई किसी बातचीत को याद करना होता, तो उन्हें बैरन के प्रति दिखाई गई अपनी मित्रतापूर्ण भावना याद रहने की संभावना कहीं अधिक होती, जबकि वे उनके बारे में वही बातें कह रहे थे जो हर कोई कह रहा था, बजाय इसके कि वे अपनी कही हुई बातें याद रखें। अगर उन्होंने कहा होता: "मैं जो आपके बारे में इतनी मित्रतापूर्ण भावना से बात कर रहा हूँ," तो उन्हें यह नहीं लगता कि वे झूठ बोल रहे हैं, क्योंकि एम. डी. चार्लस के बारे में बात करते समय उनके मन में वाकई मित्रतापूर्ण भावना थी। ब्रिचोट के लिए बैरन में सबसे बढ़कर वह आकर्षण था जिसकी प्रोफेसर को अपने सामाजिक जीवन में सबसे पहले आवश्यकता थी, और वह आकर्षण था उन चीजों के वास्तविक उदाहरण प्रस्तुत करना जिन्हें वे लंबे समय से कवियों की कल्पना मानते आ रहे थे। ब्रिचोट, जिन्होंने अक्सर वर्जिल के दूसरे एक्लोग की व्याख्या की थी, बिना यह जाने कि इसकी काल्पनिक कहानी का वास्तविकता में कोई आधार है या नहीं, बाद में चार्लस के साथ बातचीत में उस आनंद का कुछ अंश पाया जो उनके गुरुओं, एम. मेरिमी और एम. रेनन, और उनके सहयोगी एम. मास्पेरो ने स्पेन, फिलिस्तीन और मिस्र की यात्रा के दौरान

महसूस किया था, जब उन्होंने स्पेन, फिलिस्तीन और मिस्र के दृश्यों और समकालीन लोगों में उन प्राचीन दृश्यों की पृष्ठभूमि और अपरिवर्तनीय पात्रों को पहचाना था जिनकी उन्होंने स्वयं अपनी पुस्तकों में व्याख्या की थी। "उस कुलीन वंश के शूरवीर को ठेस न पहुँचाते हुए," ब्रिचोट ने घर ले जा रही गाड़ी में मुझसे कहा, "जब वह अपने शैतानी उपदेशों को एक विशिष्ट पागलजादे जैसी ऊर्जा और स्पेनिश लीपापोती और लौटे हुए प्रवासी जैसी दृढ़ता, बल्कि मैं कहना चाहूँगा कि स्पष्टवादिता के साथ समझाता है, तो वह सचमुच अद्भुत होता है। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ, अगर मैं मोनसिग्नोर डी'हुलस्ट की तरह बोलने की हिम्मत करूँ, तो मैं उन दिनों बिल्कुल भी ऊबता नहीं हूँ जब वह सामंती स्वामी, जो हमारे दुष्टों के युग से एडोनिस की रक्षा करने के लिए, अपनी जाति की प्रवृत्ति का अनुसरण करता है, और पूरी समलैंगिक मासूमियत में धर्मयुद्ध पर निकल पड़ा है।" मैंने ब्रिचोट की बात सुनी, और मैं उसके साथ अकेला नहीं था। जैसा कि, उस शाम घर छोड़ने के बाद से मुझे हमेशा महसूस होता रहा था, मैं खुद को, चाहे किसी अस्पष्ट तरीके से ही सही, उस लड़की से बंधा हुआ महसूस कर रहा था जो उस समय अपने कमरे में थी। यहां तक कि जब मैं वर्दुरिन्स के घर में किसी न किसी से बात कर रहा था, तब भी मुझे उलझन भरी अनुभूति होती थी कि वह मेरे बगल में है, मुझे उसकी वैसी ही धुंधली सी अनुभूति होती थी जैसी हमें अपने अंगों की होती है, और अगर मैं कभी उसके बारे में सोचता भी था तो वैसे ही जैसे हम अपने शरीर के बारे में सोचते हैं, उससे पूरी तरह से बंधे होने के कारण घृणा के साथ। ब्रिचोट आगे बोले, "और घोटालों का कितना बड़ा भंडार है, जो 'कॉसेरीज़ डू लुंडी' के सभी परिशिष्टों को भरने के लिए पर्याप्त है, उस धर्मदूत की बातचीत में। कल्पना कीजिए कि मुझे उनसे पता चला है कि जिस नैतिक ग्रंथ की मैं हमेशा से हमारे युग की सबसे उत्कृष्ट नैतिक रचना के रूप में प्रशंसा करता आया हूँ, वह हमारे आदरणीय सहकर्मी X को एक युवा तार संदेशवाहक से प्रेरित होकर लिखा गया था। आइए यह स्वीकार करने में संकोच न करें कि मेरे प्रतिष्ठित मित्र ने अपने व्याख्यानों के दौरान उस युवा का नाम हमें नहीं बताया। ऐसा करके उन्होंने फ़िडियास से भी अधिक मानवीय सम्मान दिखाया है, या यूँ कहें कि कम कृतज्ञता दिखाई है, जिसने अपने प्रिय एथलीट का नाम अपने ओलंपियन ज़्यूस के छल्ले पर अंकित किया था। बैरन ने वह कहानी नहीं सुनी थी। कहने की आवश्यकता नहीं है, यह उनके रूढ़िवादी मन को भा गई। आप

आसानी से कल्पना कर सकते हैं कि जब भी मुझे अपने सहकर्मी के साथ किसी उम्मीदवार के शोध प्रबंध पर चर्चा करनी होगी, तो मुझे उनकी तर्क-वितर्क शैली में, जो वैसे भी अत्यंत सूक्ष्म है, वह अतिरिक्त स्वाद मिलेगा जो मसालेदार खुलासे सैंटे-ब्यूव के लिए जोड़ते थे। शैटोब्रिएंड के कुछ अधूरे गोपनीय लेख। हमारे सहकर्मी, जो ज्ञान का भंडार हैं, लेकिन जिनका ज्ञान कानूनी मुद्रा नहीं है, उनके माध्यम से टेलीग्राफ-बॉय बैरन के हाथों में पहुँच गया, 'बिल्कुल उचित, बेशक,' (आपको उनकी आवाज़ सुननी चाहिए जब वे यह कहते हैं)। और चूंकि यह शैतान सबसे उदार व्यक्ति है, उसने अपने शिष्य को उपनिवेशों में एक पद दिलवाया है, जहाँ से कृतज्ञता से भरा यह युवक समय-समय पर उन्हें बेहतरीन फल भेजता है। बैरन इन्हें अपने प्रतिष्ठित मित्रों को भेंट करते हैं; हाल ही में क्राई कोंटी में मेज पर उस युवक के कुछ अनानास दिखाई दिए, जिन्हें देखकर श्रीमती वर्दुरिन ने कहा, 'श्रीमान डी चार्लस, ऐसे अनानास पाने के लिए आपका अमेरिका में कोई चाचा या भतीजा जरूर होगा!' मैं मानता हूँ कि अगर मुझे सच्चाई पता होती तो मैं उन्हें बड़े चाव से खा लेता, मन ही मन होरेस की उस कविता की शुरुआती पंक्तियाँ दोहराता रहता जिसे डिडेरोट अक्सर याद करते थे। दरअसल, अपने साथी बोइसियर की तरह, पैलेटाइन से टिबुर तक टहलते हुए, मुझे बैरन की बातचीत से ऑगस्टस युग के लेखकों की एक कहीं ज़्यादा जीवंत और रुचिकर छवि मिली। पतन के लेखकों की तो बात ही न करें, न ही यूनानियों की ओर लौटें, हालाँकि मैंने उस उत्कृष्ट बैरन से कहा था कि उनकी संगति में मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एस्पेशिया के घर में प्लेटो हूँ। सच कहूँ तो, मैंने दोनों पात्रों का दायरा काफ़ी बढ़ा दिया था और जैसा कि ला फॉन्टेन कहते हैं, मेरा उदाहरण 'छोटे प्राणियों' से लिया गया था। लेकिन जो भी हो, मुझे लगता है कि आप यह नहीं मानेंगे कि बैरन को बुरा लगा होगा। मैंने उन्हें इतना सहज और प्रसन्न कभी नहीं देखा। बचकाना उत्साह ने उन्हें अपने कुलीन स्वभाव से बाहर निकाल दिया। 'ये सारे सोरबोनार्ड कितने चापलूस हैं!' उन्होंने खुशी से कहा। 'सोचो, मुझे अपनी उम्र तक एस्पेशिया से तुलना किए जाने का इंतज़ार करना पड़ा! मुझ जैसी बूढ़ी छवि! ओह, मेरी जवानी!' मैं चाहता हूँ कि आप उसे उस समय देखें जब उसने ये कहा था, हमेशा की तरह हद से ज़्यादा पाउडर लगाए हुए, और अपनी उम्र के हिसाब से किसी नौजवान घमंडी की तरह महकते हुए। फिर भी, अपने वंश के प्रति जुनून के बावजूद, वो दुनिया का सबसे अच्छा इंसान है। इन सभी कारणों

से, अगर आज शाम का ये अलगाव अंतिम साबित हुआ तो मुझे बहुत दुख होगा। मुझे जो बात हैरान कर गई, वो थी उस नौजवान का उसके प्रति पलटवार। बैरन के प्रति उसका व्यवहार कुछ समय से एक उग्र समर्थक, एक सामंती जागीरदार जैसा रहा है, जो इस तरह के विद्रोह का ज़रा भी संकेत नहीं देता था। मुझे उम्मीद है कि किसी भी हालत में, भले ही (अप्रत्याशित संकेत) बैरन कभी क़ाई कोंटी वापस न लौटे, इस फूट का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ेगा। हम दोनों को ही मेरे सीमित ज्ञान और उसके अनुभव के आदान-प्रदान से बहुत लाभ मिलता है। (हम देखेंगे कि यदि एम. डी चार्लस ने ब्रिचोट द्वारा मोरेल को वापस लाने की व्यर्थ आशा करने के बाद भी उसके प्रति कोई तीव्र द्वेष नहीं दिखाया, तो कम से कम प्रोफेसर के प्रति उसका स्नेह इतना पूर्णतः समाप्त हो गया कि वह बिना किसी नरमी के उसका न्याय कर सके।) "और मैं आपसे शपथ लेता हूँ कि यह आदान-प्रदान मेरे पक्ष में इतना अधिक है कि जब बैरन मुझे अपने जीवन के अनुभवों से सीखे ज्ञान को सौंप देगा, तो मैं सिल्वेस्ट्रे बोनार्ड के इस मत का समर्थन करने में असमर्थ हूँ कि जीवन के स्वप्न पर चिंतन करने के लिए पुस्तकालय अभी भी सबसे अच्छी जगह है।"

अब हम मेरे दरवाजे पर पहुँच चुके थे। मैंने ड्राइवर को ब्रिचोट का पता देने के लिए गाड़ी से बाहर कदम रखा। फुटपाथ से मुझे अल्बर्टीन के कमरे की खिड़की दिखाई दे रही थी, वह खिड़की जो पहले रात में बिल्कुल काली रहती थी, जब वह घर में नहीं होती थी, और जिसके अंदर की बिजली की रोशनी, शटर की पट्टियों से छनकर, ऊपर से नीचे तक सोने की समानांतर पट्टियों से जगमगा रही थी। यह जादुई दृश्य, जो मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, मेरे शांत मन के सामने सटीक चित्र बना रहा था, जो मेरे बिल्कुल करीब थे और जिन पर मैं जल्द ही अपना अधिकार जमाने वाली थी, ब्रिचोट को बिल्कुल दिखाई नहीं दे रहा था, जो गाड़ी में बैठा हुआ लगभग अंधा था, और अगर वह इसे देख भी लेता तो उसके लिए पूरी तरह से समझ से बाहर होता, क्योंकि, उन दोस्तों की तरह जो अल्बर्टीन के ड्राइव से लौटने पर रात के खाने से पहले मुझसे मिलने आए थे, प्रोफेसर को भी इस बात का पता नहीं था कि मेरी अपनी एक लड़की मेरे बगल वाले बेडरूम में मेरा इंतजार कर रही है। गाड़ी आगे बढ़ गई। मैं कुछ पल के लिए फुटपाथ पर अकेली खड़ी रही। निःसंदेह, ये प्रकाशमान किरणें जिन्हें मैं नीचे से देख पा रहा था और जो किसी और को महज सतही लगतीं, मैंने उनमें पूर्ण स्थिरता,

परिपूर्णता और दृढ़ता भर दी, क्योंकि मैंने उनके पीछे एक ऐसा खजाना छिपा रखा था जो दुनिया से अनभिज्ञ था और जिससे ये क्षैतिज किरणें निकल रही थीं। एक खजाना, अगर आप चाहें तो, लेकिन एक ऐसा खजाना जिसके बदले मैंने अपनी स्वतंत्रता, अपना एकांत और अपने विचार खो दिए थे। अगर अल्बर्टीन वहाँ न होती, और वास्तव में अगर मैं केवल सुख की तलाश में होता, तो मैं शायद वेनिस में या कम से कम रात के पेरिस के किसी कोने में, अनजान महिलाओं से इसे माँगने जाता, जिनके जीवन में मैं प्रवेश करने का प्रयास करता। लेकिन अब जब मुझे स्नेह प्राप्त करने का समय आया, तो मुझे यात्रा पर नहीं निकलना था, यहाँ तक कि अपना घर भी नहीं छोड़ना था, बल्कि वहीं लौटना था। और वहाँ लौटकर खुद को अकेला न पाकर, और बाहर से मुझे चिंतन के लिए सामग्री प्रदान करने वाले मित्रों से विदा लेने के बाद, किसी भी तरह से खुद में ही चिंतन की तलाश करने के लिए विवश होकर, बल्कि वर्दुरिन के यहाँ रहने की तुलना में कम अकेला महसूस करना, क्योंकि जिस व्यक्ति को मैंने अपना सब कुछ सौंप दिया था, जिसके प्रति मैंने अपना पूर्ण समर्पण कर दिया था, उसके द्वारा मेरा स्वागत किया जाना था, बिना एक पल के लिए भी अपने बारे में सोचने का समय निकाले और न ही, क्योंकि वह मेरे साथ होगी, उसके बारे में सोचने का प्रयास करने की आवश्यकता महसूस हुई। इसलिए जब मैंने बाहर से उस कमरे की खिड़की की ओर अंतिम बार देखने के लिए अपनी आँखें उठाईं, जिसमें मैं जल्द ही प्रवेश करने वाला था, तो मुझे वे चमकदार द्वार दिखाई दिए जो मेरे पीछे बंद होने वाले थे और जिन्हें मैंने स्वयं शाश्वत गुलामी के लिए सोने की अटूट सलाखों से गढ़ा था।

हमारी सगाई एक आपराधिक मुकदमे का रूप ले चुकी थी और अल्बर्टीन को दोषी जैसी झिझक होने लगी थी। अब जब भी बात कम उम्र के लोगों, चाहे पुरुष हों या महिला, के बारे में आती, वह विषय बदल देती थी। जब उसे यह शक नहीं था कि मैं उससे ईर्ष्या करता हूँ, तब मैं उससे वह सब कुछ पूछ सकता था जो मैं जानना चाहता था। हमें हमेशा उस समय का लाभ उठाना चाहिए। यही वह समय होता है जब हमारी प्रेमिका हमें अपने सुखों के बारे में बताती है और यहाँ तक कि उन तरीकों के बारे में भी बताती है जिनसे वह उन्हें दूसरों से छुपाती है। अब वह मुझसे वैसे स्वीकार नहीं करती जैसे उसने बालबेक में स्वीकार किया था (आंशिक रूप से इसलिए कि यह सच था, आंशिक रूप से इसलिए कि वह मेरे प्रति अपने स्नेह को और अधिक

स्पष्ट रूप से न दिखाने के लिए खुद को माफ कर सके, क्योंकि मैं तब भी उसे ऊबने लगा था, और मेरे प्रति मेरी दयालुता से वह समझ गई थी कि उसे मुझसे उतना स्नेह दिखाने की आवश्यकता नहीं है जितना वह अन्य पुरुषों से दिखाती है, ताकि वह उनसे अधिक प्राप्त कर सके), अब वह मुझसे वैसे स्वीकार नहीं करती जैसे उसने तब स्वीकार किया था: "मुझे लगता है कि लोगों को यह दिखाना मूर्खता है कि कोई प्यार में है; मैं बिल्कुल विपरीत हूँ, जैसे ही कोई व्यक्ति मुझे आकर्षित करता है, मैं उस पर ध्यान न देने का नाटक करती हूँ। इस तरह, किसी को भी इसके बारे में कुछ पता नहीं चलता।"

क्या, ये वही अल्बर्टीन थी जो आज मुझसे ये सब कह रही थी, अपनी बेबाकी और दुनिया से बेपरवाही का दिखावा करते हुए! वो अब मुझे ऐसे आचरण के नियम के बारे में कभी नहीं बताती! मुझसे बात करते समय वो बस इसे लागू करके संतुष्ट हो जाती थी, किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में जो मुझे चिंता में डाल सकता था, ये कहकर: "ओह, मुझे नहीं पता, मैंने उन पर कभी ध्यान नहीं दिया, वे मायने नहीं रखते।" और समय-समय पर, मेरे द्वारा किए जाने वाले संभावित खुलासों का अनुमान लगाते हुए, वो ऐसे बयान देती थी जिनका लहजा, सच्चाई जानने से पहले ही, जिसे वो बदलने या निर्दोष साबित करने के लिए कहे जा रहे थे, झूठ साबित कर देता था।

अल्बर्टीन ने मुझे कभी नहीं बताया था कि उसे शक था कि मैं उससे ईर्ष्या करता हूँ, क्योंकि मैं उसकी हर बात पर नज़र रखता था। ईर्ष्या के बारे में हमारी जो भी बातचीत हुई थी—और वह भी बहुत पहले की बात है—उससे तो ठीक उल्टा ही साबित हुआ। मुझे याद है, एक सुहावनी चाँदनी रात में, हमारी नज़दीकी बढ़ने के शुरुआती दिनों में, जब मैं पहली बार उसके घर गया था, और जब मैं ऐसा न करके उसे छोड़कर दूसरी लड़कियों के पीछे भागने में उतना ही खुश होता, तब मैंने उससे कहा था: "जानती हो, अगर मैं तुम्हें घर छोड़ने की पेशकश कर रहा हूँ, तो यह ईर्ष्या की वजह से नहीं है; अगर तुम्हें कुछ और काम है, तो मैं चुपके से निकल जाऊँगा।" और उसने जवाब दिया था: "ओह, मुझे अच्छी तरह पता है कि तुम ईर्ष्या नहीं करते और तुम्हें इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, लेकिन मेरे पास तुम्हारे साथ रहने के अलावा और कोई काम नहीं है।" एक और मौका ला रास्पेलियर में था, जब एम. डी चार्लस ने, मोरेल पर एक नज़र डाले बिना, अल्बर्टीन के प्रति दोस्ताना शिष्टाचार का प्रदर्शन किया था; मैंने उससे

कहा था: "अच्छा, उसने तुम्हें अच्छे से गले लगाया होगा, मुझे उम्मीद है।" और जब मैंने आधे व्यंग्य से कहा: "मैंने ईर्ष्या की सारी पीड़ाएँ झेलीं," तो अल्बर्टीन ने, या तो उस निम्न वर्ग की भाषा का प्रयोग करते हुए जिससे वह आती थी या उस दूसरे, उससे भी अधिक निम्न वर्ग की भाषा का प्रयोग करते हुए, जिससे वह अक्सर मिलती-जुलती थी, जवाब दिया: "तुम कितनी नखरेबाज़ हो! मुझे अच्छी तरह पता है कि तुम ईर्ष्यालु नहीं हो। एक तो तुमने मुझे बताया था, और दूसरा, यह बिल्कुल स्पष्ट है, जाओ यहाँ से!" उसके बाद से उसने मुझे कभी नहीं बताया कि उसने अपना विचार बदल लिया था; लेकिन उस विषय पर उसके मन में कई नए विचार अवश्य ही विकसित हुए होंगे, जिन्हें उसने मुझसे छिपाया होगा, लेकिन किसी आकस्मिक घटना से, उसकी इच्छा के विरुद्ध भी, उनका खुलासा हो सकता है। क्योंकि आज शाम जब मैं उसे उसके कमरे से लेने और अपने कमरे में लाने के बाद अंदर गया, तो मैंने उससे कहा (कुछ झिझक के साथ, जिसे मैं स्वयं भी नहीं समझ पा रहा था, क्योंकि मैंने वास्तव में अल्बर्टीन को बताया था कि मैं मिलने जा रहा हूँ, और कहा था कि मुझे नहीं पता कहाँ, शायद श्रीमती डी विलेपारिसिस के यहाँ, शायद श्रीमती डी गुएरमांटेस के यहाँ, शायद श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के यहाँ; यह सच है कि मैंने वास्तव में वर्दुरिन्स का ज़िक्र नहीं किया था): "अंदाज़ा लगाओ मैं कहाँ था, वर्दुरिन्स के यहाँ।" मेरे ये शब्द बोलने से पहले ही अल्बर्टीन ने, अपने चेहरे पर घोर हैरानी के भाव के साथ, मुझे ऐसे शब्दों में उत्तर दिया जो मानो अपने आप ही फूट पड़े हों, एक ऐसी शक्ति के साथ जिसे वह रोक नहीं पा रही थी: "मुझे यही लगा था।" "मुझे नहीं पता था कि वर्दुरिन परिवार से मिलने जाने पर तुम नाराज़ हो जाओगी।" यह सच है कि उसने मुझे बताया नहीं कि वह नाराज़ थी, लेकिन यह तो स्पष्ट था; यह भी सच है कि मैंने मन ही मन नहीं सोचा था कि वह नाराज़ होगी। फिर भी, उसके क्रोध के विस्फोट के सामने, ठीक वैसे ही जैसे उन घटनाओं के सामने जिन्हें हम अतीत में पहले से जानते हुए कल्पना करते हैं, मुझे लगा कि मैं इससे ज़्यादा कुछ उम्मीद ही नहीं कर सकता था। "नाराज़? तुम्हें क्या लगता है मुझे क्या फ़र्क पड़ता है कि तुम कहाँ गई थी। मेरे लिए सब एक जैसा है। क्या मैडम विंटेउइल वहाँ नहीं थीं?" इन शब्दों पर मैं अपना सारा नियंत्रण खो बैठा: "तुमने मुझे कभी नहीं बताया कि तुम उनसे उस दिन मिली थीं," मैंने उनसे कहा, यह दिखाने के लिए कि मुझे उनसे ज़्यादा जानकारी थी। यह मानते हुए कि जिस व्यक्ति से मिलने के लिए मैंने उन्हें बिना बताए जाने पर

फटकारा था, वह मैडम वर्दुरिन थीं, न कि, जैसा कि मेरा मतलब था, मैडम। विंटेइल: "क्या मैं उससे मिली थी?" उसने उदास स्वर में पूछा, मानो वह खुद से बात कर रही हो जैसे अपनी धुंधली यादों को समेटने की कोशिश कर रही हो और मुझसे जैसे कि मुझे ही उसे उस मुलाकात के बारे में बताना चाहिए था; और शायद इसलिए भी ताकि मैं जो जानती थी वह बता सकूँ, और शायद मुश्किल जवाब देने से पहले समय पाने के लिए भी। लेकिन मैं श्रीमती विंटेइल के बारे में सोच में डूबी हुई थी, और उससे भी ज़्यादा उस डर से जो पहले ही मेरे मन में घर कर चुका था लेकिन अब मुझे बुरी तरह जकड़ रहा था, यह डर कि अल्बर्टीन आज़ादी के लिए तरस रही होगी। जब मैं घर आई थी तो मैंने सोचा था कि श्रीमती वर्दुरिन ने अपनी प्रसिद्धि बढ़ाने के लिए ही श्रीमती विंटेइल और उनकी सहेली के आने की कहानी गढ़ी थी, इसलिए मैं बिल्कुल शांत थी। अल्बर्टीन ने बस इतना कहकर: "क्या श्रीमती विंटेइल वहाँ नहीं थीं?" मुझे यह दिखा दिया कि मेरा शुरुआती संदेह गलत नहीं था; लेकिन फिर भी, भविष्य के लिए उस मामले में मेरा मन शांत हो गया था, क्योंकि वर्दुरिन के घर जाने की अपनी योजना को छोड़कर ट्रोकाडेरो जाने से अल्बर्टीन ने मैडम विंटेउइल को खो दिया था। लेकिन, ट्रोकाडेरो में, जहाँ से वह मेरे साथ घूमने के लिए आई थी, वहाँ लीया की उपस्थिति के कारण उसे वहाँ से जाना पड़ा था। जब मैंने इसके बारे में सोचा तो मैंने लीया का नाम लिया, और अल्बर्टीन, संदेह से, यह सोचकर कि शायद मैंने कुछ और सुना है, पहल करते हुए, अपना चेहरा थोड़ा छिपाते हुए, तेज़ी से बोली: "मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ; पिछले साल हम, मेरे कुछ दोस्त और मैं, उसका अभिनय देखने गए थे: प्रदर्शन के बाद हम उसके ड्रेसिंग रूम में गए, उसने हमारे सामने कपड़े बदले। यह बहुत दिलचस्प था।" तब मेरा मन मैडम विंटेउइल को खोने के लिए विंटेउइल को खोने के लिए विवश हो गया। विंटेइल और, हताशा में, संभावित पुनर्निर्माणों की अथाह गहराई में उतरते हुए, मैंने खुद को उस अभिनेत्री से जोड़ लिया, उस शाम से जब अल्बर्टाइन अपने ड्रेसिंग रूम में गई थी। दूसरी ओर, उसने मुझसे जो कसमें खाई थीं, और इतने सच्चे लहजे में, अपनी स्वतंत्रता का इतना पूर्ण बलिदान देने के बाद, मैं कैसे मान सकता था कि इस पूरे मामले में कोई बुराई थी? फिर भी, क्या मेरे संदेह सच्चाई की ओर इशारा नहीं कर रहे थे, क्योंकि अगर उसने मुझे ट्रोकाडेरो जाने के लिए वर्दुरिन्स का बलिदान दिया था, तो भी वर्दुरिन्स में श्रीमती विंटेइल का इंतजार था, और ट्रोकाडेरो में लीया

थी, जो मुझे बिना किसी कारण के परेशान करती हुई लग रही थी और जिसने, उस भाषण में जो मैंने उससे नहीं मांगा था, यह स्वीकार किया कि वह मेरी आशंकाओं से कहीं अधिक व्यापक स्तर पर, वास्तव में संदिग्ध परिस्थितियों में, इस बात को जानती थी? आखिर किस बात ने उसे उस ड्रेसिंग रूम में इस तरह पीछे जाने के लिए उकसाया होगा? अगर लीया, मेरे समय की उन दो सताने वाली महिलाओं के कारण मुझे जो पीड़ा होती थी, तब मैडम विंटेइल के कारण मेरी पीड़ा कम हो जाती थी, तो या तो मेरे मन की एक साथ बहुत सारे दृश्यों की कल्पना करने में असमर्थता के कारण, या मेरी तंत्रिका संबंधी भावनाओं के हस्तक्षेप के कारण, जिसकी मेरी ईर्ष्या मात्र प्रतिध्वनि थी। मैं उनसे केवल यही निष्कर्ष निकाल सका कि वह न तो लीया की थी और न ही मैडम विंटेइल की, और मैं लीया के बारे में केवल इसलिए सोच रहा था क्योंकि उसके विचार से अब भी मुझे पीड़ा होती थी। लेकिन यह तथ्य कि मेरी दोनों ईर्ष्याएँ कम हो रही थीं—कभी-कभी बारी-बारी से फिर से जागृत हो जाती थीं—किसी भी तरह से यह नहीं दर्शाता कि वे इसके विपरीत किसी उस सत्य से मेल नहीं खाती थीं जिसका मुझे पूर्वाभास था, कि इन महिलाओं के बारे में मुझे खुद से यह नहीं कहना चाहिए कि कोई नहीं, बल्कि सभी। मैं इसे एक आशंका इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि मैं समय और स्थान के उन सभी बिंदुओं की कल्पना नहीं कर सकता था जहाँ मुझे जाना पड़ता, और इसके अलावा, कौन सी सहज प्रवृत्ति मुझे एक-दूसरे के साथ समन्वय स्थापित करने में सक्षम बनाती जिससे मैं अल्बर्टीन को यहाँ, एक ही क्षण में, लेआ के साथ, या बालबेक की लड़कियों के साथ, या श्रीमती बोंटेम्प्स की उस सहेली के साथ जिसे उसने धक्का दिया था, या टेनिस कोर्ट पर उस लड़की के साथ जिसने उसे कोहनी से धक्का दिया था, या श्रीमती विंटेइल के साथ आश्चर्यचकित कर पाता?

मुझे यह भी कहना होगा कि जो बात मुझे सबसे गंभीर लगी और सबसे स्पष्ट संकेत के रूप में सामने आई, वह यह थी कि उसने मेरे आरोप को पहले ही भांप लिया था, उसने मुझसे कहा था: "क्या मैडम विंटेउइल वहाँ नहीं थीं?" जिस पर मैंने बेहद क्रूर लहजे में जवाब दिया था: "आपने मुझे कभी नहीं बताया कि आप उनसे मिली थीं।" इस प्रकार जैसे ही मैंने पाया कि अल्बर्टीन अब सहयोग नहीं कर रही है, मैंने उससे माफी मांगने के बजाय, द्वेषपूर्ण व्यवहार

करना शुरू कर दिया। उस क्षण मेरे मन में उसके प्रति एक प्रकार की घृणा उत्पन्न हुई जिसने उसे बंदी बनाकर रखने की मेरी इच्छा को और भी तीव्र कर दिया।

“इसके अलावा,” मैंने गुस्से से उससे कहा, “ऐसी बहुत सी बातें हैं जो तुम मुझसे छिपाती हो, यहाँ तक कि छोटी-छोटी बातें भी, जैसे कि जब तुम तीन दिन के लिए बालबेक गई थीं, तो मैं बस यूँ ही ज़िक्र कर देता हूँ।” मैंने “छोटी-छोटी बातें भी” के साथ “मैं बस यूँ ही ज़िक्र कर देता हूँ” शब्द इसलिए जोड़े थे ताकि अगर अल्बर्टीन मुझसे पूछे, “मेरी बालबेक यात्रा में क्या गड़बड़ थी?” तो मैं जवाब दे सकूँ: “अरे, मैं तो बिल्कुल भूल ही गया। लोग मुझे जो बातें बताते हैं, मैं उन्हें लेकर इतना उलझन में पड़ जाता हूँ कि उन्हें ज़्यादा महत्व ही नहीं देता।” और सच में, अगर मैं उन तीन दिनों का ज़िक्र करूँ जो उसने ड्राइवर के साथ बालबेक की सैर में बिताए थे, जहाँ से उसके पोस्टकार्ड इतने लंबे समय बाद मुझ तक पहुँचे थे, तो मैं बस यूँ ही ज़िक्र कर रहा था और मुझे अफ़सोस है कि मैंने इतना बुरा उदाहरण चुना, क्योंकि असल में, उनके पास वहाँ जाने और वापस आने का मुश्किल से ही समय था, और यह निश्चित रूप से एकमात्र ऐसी सैर थी जिसमें किसी से भी लंबी मुलाक़ात करने का समय तक नहीं मिला था। लेकिन अल्बर्टीन ने मेरी कही बातों से यह अनुमान लगाया कि मुझे असलियत का पूरा ज्ञान था और मैंने उससे अपनी जानकारी छुपाई थी; इसलिए वह कुछ समय से इस बात से आश्वस्त थी कि किसी न किसी तरह मैं उसका पीछा करवा रहा था, या संक्षेप में, जैसा कि उसने एक हफ्ते पहले एंड्री से कहा था, किसी न किसी तरह उसके अपने जीवन के बारे में उससे भी ज़्यादा जानकारी रखता था। और इसलिए उसने मुझे एक सरासर व्यर्थ बात कहकर बीच में ही रोक दिया, क्योंकि मुझे उसकी बताई बातों पर ज़रा भी शक नहीं था, और दूसरी ओर मैं स्तब्ध रह गया, क्योंकि एक झूठे व्यक्ति द्वारा छुपाए गए सच और उस झूठे व्यक्ति से प्रेम करने वाले व्यक्ति के मन में उस झूठ से बनी सच्चाई के बीच कितना बड़ा अंतर हो सकता है। मैंने जैसे ही कहा था, "जब तुम तीन दिन के लिए बालबेक गई थीं, मैंने उसका ज़िक्र बस यूँ ही कर दिया था," तभी अल्बर्टीन ने मुझे बीच में ही रोकते हुए, बिलकुल स्वाभाविक ढंग से कहा, "तुम्हारा मतलब है कि मैं बालबेक गई ही नहीं? बिलकुल नहीं गई! और मुझे हमेशा हैरानी होती है कि तुमने ऐसा क्यों मान लिया कि मैं गई थी। खैर, इसमें कोई बुराई नहीं थी। ड्राइवर को तीन दिन के लिए अपना कोई काम था। वो तुम्हें इसके बारे में बताना नहीं चाहता था। इसलिए, उस पर

दया करके (ये तो मैंने ही किया था! वैसे भी, हमेशा मुझे ही इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है), मैंने बालबेक जाने का बहाना बना लिया। उसने मुझे ऑट्यूइल में, रू डे ल'असोम्पशन में मेरी दोस्त के पास उतार दिया, जहाँ मैंने तीन दिन बोर होकर बिताए। देखो, ये कोई गंभीर बात नहीं है, कुछ भी गड़बड़ नहीं है। मुझे तो लगने ही लगा था कि शायद तुम्हें इसके बारे में सब पता है, जब मैंने देखा कि पोस्टकार्ड एक हफ़्ते बाद आने पर तुम कैसे हँस रही थीं। मैं समझ सकती हूँ कि..." यह बेतुका था, और बेहतर होता कि मैं कोई कार्ड न भेजती। लेकिन इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। मैंने कार्ड पहले ही खरीद लिए थे और ऑट्यूइल में छोड़ने से पहले ड्राइवर को दे दिए थे, और फिर उस मूर्ख ने उन्हें अपनी जेब में रख लिया और भूल गया, उन्हें बालबेक के पास रहने वाले अपने एक दोस्त को लिफाफे में भेजने के बजाय, जो उन्हें आप तक पहुंचा देता। मैं यही सोचती रही कि कार्ड मिल जाएंगे। वह पांच दिनों तक उनके बारे में भूल गया, और मुझे बताने के बजाय उस बेवकूफ ने उन्हें तुरंत बालबेक भेज दिया। जब उसने मुझे बताया, तो मैंने उसे खूब खरी-खोटी सुनाई, मैं आपको बता सकती हूँ! और आप बेवजह हंगामा कर रहे हैं, जबकि सारी गलती उस बड़े मूर्ख की है, मेरे तीन दिन तक घर में बंद रहने के बदले में, ताकि वह जाकर अपने पारिवारिक मामलों को देख सके। मुझे तो ऑट्यूइल में बाहर निकलने की हिम्मत भी नहीं हुई, कहीं कोई मुझे देख न ले। मैं सिर्फ एक बार बाहर निकली, और वो भी मर्दों के कपड़ों में, और वो भी एक अजीब बात थी। और ये तो बस मेरी किस्मत थी, जो मेरा पीछा नहीं छोड़ती। मैं जहाँ भी जाता हूँ, सबसे पहले जिस व्यक्ति से मेरी मुलाकात होती है, वह आपका यहूदी मित्र ब्लोच होता है। लेकिन मुझे नहीं लगता कि आपने उससे यह जाना होगा कि बालबेक की मेरी यात्रा केवल मेरी कल्पना में ही घटी थी, क्योंकि ऐसा लगता है कि उसने मुझे पहचाना ही नहीं।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ, मैं आश्चर्यचकित दिखना नहीं चाहती थी, जबकि इन सभी झूठों से मैं स्तब्ध थी। एक भयानक भय के साथ, जिसने मुझे अल्बर्टीन को घर से निकालने की इच्छा बिल्कुल नहीं जगाई, बल्कि इसके विपरीत, फूट-फूट कर रोने की तीव्र इच्छा भी जगाई। यह आभास झूठ के कारण नहीं था, न ही उन सभी बातों के नष्ट होने के कारण जिन्हें मैं दृढ़ता से सच मानती थी - मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी ऐसे शहर में हूँ जो पूरी तरह से तबाह हो चुका है, जहाँ एक भी घर खड़ा नहीं बचा है, जहाँ केवल मलबा ही

मलबा है - बल्कि इस उदास विचार के कारण था कि उन तीन दिनों के दौरान जब वह ऑट्यूइल में अपनी सहेली के घर में ऊब कर रो रही थी, अल्बर्टीन ने कभी भी मुझसे मिलने आने की इच्छा नहीं की, शायद उसके मन में कभी यह विचार ही नहीं आया कि वह एक दिन चुपके से मुझसे मिलने आए, या मुझे ऑट्यूइल में मिलने के लिए संदेश भेजे। लेकिन मेरे पास इन विचारों में डूबने का समय नहीं था। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं आश्चर्यचकित दिखना नहीं चाहती थी। मैंने मुस्कुराते हुए कहा, मानो मुझे जितना कहना है उससे कहीं ज़्यादा पता हो: "लेकिन ये तो हज़ारों में से एक बात है। उदाहरण के लिए, आपको पता था कि आज दोपहर जब आप ट्रोकाडेरो गई थीं, तब मैडम विंटेउइल मैडम वर्दुरिन के घर आने वाली थीं।" वह शरमा गईं: "हाँ, मुझे पता था।" "क्या आप कसम खाकर कह सकती हैं कि वर्दुरिन के घर जाने का आपका मकसद उनसे अपने रिश्ते फिर से शुरू करना नहीं था?" "क्यों, बिल्कुल कसम खा सकता हूँ। आप 'फिर से शुरू करना' क्यों कह रही हैं, मेरा उनसे कभी कोई रिश्ता नहीं था, मैं कसम खाता हूँ।" अल्बर्टीन को इस तरह झूठ बोलते हुए सुनकर मैं दंग रह गया, उन तथ्यों को नकारते हुए जिन्हें उनके शरमाने से साफ़ ज़ाहिर किया जा सकता था। उनके झूठ ने मुझे चौंका दिया। फिर भी, चूंकि इसमें निर्दोषता का दावा था जिसे मैं लगभग अनजाने में ही स्वीकार करने को तैयार था, इसलिए मुझे उसकी ईमानदारी से कम दुख हुआ, जब मैंने उससे पूछा: "क्या तुम कम से कम यह कसम खा सकती हो कि मैडम विंटेइल को फिर से देखने की खुशी का आज दोपहर वर्दुरिन्स की पार्टी में जाने की तुम्हारी बेचैनी से कोई लेना-देना नहीं था?" तो उसने जवाब दिया: "नहीं, मैं इसकी कसम नहीं खा सकती। मैडम विंटेइल को फिर से देखना मेरे लिए बहुत खुशी की बात होती।" एक क्षण पहले, मैं उससे इसलिए नाराज़ था क्योंकि उसने मैडम विंटेइल के साथ अपने संबंधों को छिपाया था, और अब उसके द्वारा उन्हें फिर से देखने की खुशी को स्वीकार करने से मेरा दिल पिघल गया। वैसे भी, वर्दुरिन्स से मिलने जाने के अपने इरादे को उसने जिस रहस्य में छिपाया था, वह पर्याप्त सबूत होना चाहिए था। लेकिन मैंने इस मामले पर पर्याप्त विचार नहीं किया था। हालांकि वह अब मुझे सच बता रही थी, लेकिन उसने आधा ही सच क्यों स्वीकार किया, यह दुष्टता और घिनौनेपन से भी कहीं अधिक मूर्खतापूर्ण था। मैं इतना निराश था कि इस सवाल पर अड़े रहने की हिम्मत ही नहीं हुई, क्योंकि मेरे पास कोई पुख्ता सबूत नहीं था। अपनी स्थिति सुधारने के

लिए मैंने जल्दबाजी में एक ऐसा विषय चुना जिससे मैं अल्बर्टीन को हरा सकूँ: "सुनो, आज शाम ही वर्दुरिन के घर पर मुझे पता चला कि तुमने मुझे मैडम विंटेइल के बारे में जो बताया था..." अल्बर्टीन ने परेशान होकर मेरी ओर टकटकी लगाई, मानो मेरी आँखों में यह जानने की कोशिश कर रही हो कि मुझे कितना पता है। अब, जो मुझे पता था और जो मैं उसे मैडम विंटेइल के असली स्वभाव के बारे में बताने वाला था, यह सच था कि मुझे यह बात वर्दुरिन के घर पर नहीं, बल्कि बहुत पहले मोंटजोवेन में पता चली थी। बस, क्योंकि मैंने हमेशा जानबूझकर अल्बर्टीन से इसका जिक्र नहीं किया था, इसलिए अब मैं ऐसा दिखा सकता था कि मुझे यह बात आज शाम ही पता चली है। और मुझे लगभग खुशी महसूस हो रही थी—उस छोटी ट्राम में इतना तीव्र दुख सहने के बाद—मोंटजोवेन की इस स्मृति को पाकर, जो बाद में आई थी, लेकिन फिर भी अल्बर्टीन के लिए एक अकाट्य प्रमाण, एक करारा झटका साबित होगी। कम से कम इस बार, मुझे "जानने का दिखावा" करने और "अल्बर्टीन से बुलवाने" की ज़रूरत नहीं थी; मैं जानती थी, मैंने मोंटजोवेन की रोशन खिड़की से सब कुछ देख लिया था। अल्बर्टीन का मुझे यह बताना तो ठीक था कि मैडम विंटेउइल और उनकी सहेली के साथ उनके संबंध पूरी तरह से पवित्र थे, लेकिन जब मैंने उनसे कसम खाकर कहा (और बिना झूठ बोले) कि मैं इन दोनों महिलाओं की आदतों को जानती हूँ, तो वह कैसे कह सकती थी? वह अब भी यह कैसे कह सकती थी कि उनके साथ रोज़ाना घनिष्ठता से रहने और उन्हें "मेरी बड़ी बहनें" कहने के बावजूद, उन्होंने उसे ऐसे सुझाव नहीं दिए थे जिनसे वह उनसे संबंध तोड़ लेती, अगर उसने उनकी बात न मानी होती? लेकिन मेरे पास उसे वह सब बताने का समय नहीं था जो मैं जानती थी। अल्बर्टीन ने, बालबेक की काल्पनिक यात्रा के मामले की तरह, यह कल्पना करते हुए कि मुझे सच्चाई या तो मैडम विंटेइल से पता चली होगी, यदि वह वर्दुरिन के घर पर थीं, या फिर मैडम वर्दुरिन से ही, जिन्होंने शायद मैडम विंटेइल से उनका जिक्र किया होगा, मुझे बोलने नहीं दिया बल्कि एक ऐसा बयान दिया जो मेरे अनुमान के बिल्कुल विपरीत था, फिर भी, यह दिखाकर कि उन्होंने मुझसे झूठ बोलना कभी बंद नहीं किया था, मुझे शायद उतना ही दुख पहुँचाया (खासकर इसलिए कि मैं अब, जैसा कि मैंने अभी कहा था, मैडम विंटेइल से ईर्ष्या नहीं करता था); संक्षेप में, मेरे मन की बात कहते हुए अल्बर्टीन ने आगे कहा: "तुम्हारा मतलब यह है कि तुम्हें आज शाम पता चला कि मैंने तुमसे झूठ बोला था जब मैंने यह

दिखावा किया था कि मेरा पालन-पोषण मैडम विंटेइल की सहेली ने किया था। यह सच है कि मैंने तुमसे थोड़ा झूठ बोला था। लेकिन मुझे लगा कि तुम मुझे इतना तुच्छ समझती हो, मैंने यह भी देखा कि तुम उस आदमी विंटेइल के संगीत की इतनी दीवानी थी कि मेरी एक स्कूली सहेली - यह सच है, मैं कसम खाकर कहती हूँ - मैडम विंटेइल की सहेली की सहेली थी, इसलिए मैंने मूर्खता से सोचा कि मैं यह कहानी गढ़कर खुद को तुम्हारे लिए दिलचस्प बना सकती हूँ कि मैं उन लड़कियों को अच्छी तरह जानती थी। मुझे लगा कि मैं तुम्हें बोर कर रही हूँ, कि तुम मुझे मूर्ख समझ रही हो, मैंने सोचा कि अगर मैं तुम्हें बताऊँ कि वे लोग मुझे अक्सर देखते थे, कि मैं तुम्हें विंटेइल के काम के बारे में सब कुछ आसानी से बता सकती हूँ, तो मैं तुम्हारी नज़रों में थोड़ी अहमियत हासिल कर लूँगी, कि इससे हम करीब आ जाएँगे। जब मैं तुमसे झूठ बोलती हूँ, तो हमेशा स्नेह के कारण ही बोलती हूँ।" तुम। और इस घातक वर्दुरिन पार्टी ने ही तुम्हारी आँखें सच्चाई के लिए खोलीं, जिसे थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर भी बताया गया है। मुझे यकीन है, मैडम विंटेइल की सहेली ने तुमसे कहा होगा कि वह मुझे नहीं जानती। वह मुझसे कम से कम दो बार मेरे दोस्त के घर पर मिली थी। लेकिन ज़ाहिर है, मैं उन मशहूर हस्तियों जैसी चालाक नहीं हूँ। वे कहना पसंद करती हैं कि वे मुझसे कभी नहीं मिलीं। बेचारी अल्बर्टीन, जब उसने सोचा कि मैडम विंटेइल की सहेली के साथ अपनी घनिष्ठता के बारे में मुझे बताने से उसकी बर्खास्तगी टल जाएगी, वह मेरे करीब आ जाएगी, तो उसने, जैसा कि अक्सर होता है, उस रास्ते से अलग रास्ता अपनाकर सच्चाई हासिल कर ली, जिस पर वह चलना चाहती थी। संगीत के बारे में उसकी जानकारी मेरे अनुमान से कहीं अधिक होने के बावजूद, उस शाम छोटी ट्राम में उससे मेरा रिश्ता तोड़ने से मैं कभी नहीं रुकता; और फिर भी, वास्तव में, उसी उद्देश्य से कही गई उसकी उस बात ने तुरंत ही अलगाव की असंभवता से कहीं अधिक परिणाम ला दिया। केवल उसकी व्याख्या में ही त्रुटि हुई थी, भाषण के प्रभाव की नहीं, बल्कि उस कारण की जिसके कारण वह प्रभाव उत्पन्न होना था। यह कारण मेरी खोज थी, उसकी संगीत प्रतिभा की नहीं, बल्कि उसकी बुरी संगति की। जिस बात ने मुझे अचानक उसकी ओर आकर्षित किया, और उससे भी बढ़कर, जिसने मुझे उसमें विलीन कर दिया, वह किसी सुख की अपेक्षा नहीं थी—और सुख कहना तो बहुत बड़ा शब्द है, एक मामूली रुचि—बल्कि एक गहरा दुख था।

एक बार फिर मुझे सावधान रहना पड़ा कि मैं ज़्यादा देर तक चुप न रहूँ, वरना उसे लग सकता था कि मैं हैरान हूँ। और इसलिए, यह जानकर कि वह कितनी शर्मीली है और वर्दुरिन लोगों के बीच खुद को तुच्छ समझती थी, मैंने उससे प्यार से कहा: "लेकिन, मेरी प्यारी, मैं तुम्हें खुशी-खुशी कई सौ फ़्रैंक दूँगा ताकि तुम जहाँ चाहो, एक फैशनेबल महिला की तरह घूम सको और मिस्टर और मिसेज़ वर्दुरिन को एक शानदार दावत पर बुला सको।" अफ़सोस! अल्बर्टिन एक ही शरीर में कई अलग-अलग इंसान थी। सबसे रहस्यमयी, सबसे सीधी-सादी और सबसे भयानक अल्बर्टिन तब सामने आई जब उसने मुझे घृणा भरे अंदाज़ में जवाब दिया; सच कहूँ तो, मैं उसके कहे हुए शब्द ठीक से समझ ही नहीं पाया (यहाँ तक कि शुरुआती शब्द भी नहीं, क्योंकि उसने अपना वाक्य पूरा ही नहीं किया था)। मैं उन शब्दों का मतलब कुछ देर बाद ही समझ पाया, जब मैंने अंदाज़ा लगा लिया कि उसके मन में क्या चल रहा था। हम चीज़ों को तब समझ पाते हैं, जब हम उन्हें समझने के बाद पीछे मुड़कर देखते हैं। "तुम्हारे इस एहसान की कोई ज़रूरत नहीं! ज़रा सोचो, उन बुढ़ियाओं पर एक पैसा भी खर्च करूँ? इससे तो कहीं बेहतर होगा कि तुम मुझे कुछ देर के लिए अकेला छोड़ दो, ताकि मैं जाकर किसी ढंग के इंसान को ढूँढ़ सकूँ जो मेरा..." जैसे ही उसने ये शब्द कहे, उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया; उसकी आँखों में डर सा झलकने लगा। उसने अपने मुँह पर हाथ रख लिया, मानो वह उन शब्दों को वापस खींच लेना चाहती हो जो उसने अभी-अभी कहे थे और जिन्हें मैं बिल्कुल भी समझ नहीं पाया था। "तुमने क्या कहा, अल्बर्टिन?" "नहीं, कुछ नहीं, मैं तो बस आधी नींद में थी और खुद से ही बातें कर रही थी।" "बिल्कुल नहीं, तुम तो पूरी तरह से जागी हुई थी।" "मैं तो बस वर्दुरिन लोगों को दावत पर बुलाने के बारे में सोच रही थी; यह तुम्हारी बहुत अच्छी सोच है।" "नहीं, मेरा मतलब उन शब्दों से है जो तुमने अभी-अभी कहे थे।" उसने मुझे अनगिनत अलग-अलग बातें बताईं, जिनमें से कोई भी बात आपस में मेल नहीं खाती थी—मैं उसके कहे शब्दों की बात नहीं कर रहा, जो बीच में ही रुक जाने के कारण अस्पष्ट रह गए थे; बल्कि मैं तो उस अचानक आई रुकावट और उसके चेहरे पर अचानक उभरी उस शर्म की लाली की बात कर रहा हूँ। "अरे, मेरी प्यारी, तुम यह सब नहीं कहने वाली थी; वरना तुम बीच में ही चुप क्यों हो गई?" "क्योंकि मुझे लगा कि मेरी यह गुज़ारिश थोड़ी अटपटी या अनुचित है।" "कौन सी गुज़ारिश?" "वही, दावत देने की इजाज़त माँगने वाली।"

"नहीं, वह बात नहीं है; तुम्हारे और मेरे बीच किसी भी तरह के संकोच या परदे की कोई ज़रूरत नहीं है।" "बेशक ऐसा ही है, हमें कभी भी उन लोगों का फ़ायदा नहीं उठाना चाहिए जिनसे हम प्यार करते हैं। वैसे भी, मैं कसम खाकर कहती हूँ कि बात बस इतनी ही थी।" एक तरफ़ तो मेरे लिए उसकी कसम पर शक करना अब भी नामुमकिन था, वहीं दूसरी तरफ़ उसकी सफ़ाइयाँ मेरे आलोचनात्मक मन को संतुष्ट नहीं कर पा रही थीं। मैं उस पर ज़ोर डालता रहा। "खैर, तुममें कम से कम इतनी हिम्मत तो होनी चाहिए कि जो तुम कह रही थी उसे पूरा करो; तुम बीच में ही रुक गई थी।" "नहीं, मुझे अकेला छोड़ दो!" "लेकिन क्यों?" "क्योंकि यह बहुत ही भद्दा है; तुम्हारे सामने ऐसी बात कहते हुए मुझे शर्म आएगी। मुझे नहीं पता कि मैं क्या सोच रही थी—वे शब्द—मुझे तो उनका मतलब भी नहीं पता; मैंने एक दिन सड़क पर कुछ बहुत ही घटिया लोगों को उन्हें इस्तेमाल करते सुना था—वे बस बिना किसी वजह के मेरे होंठों पर आ गए। उनका मुझसे या किसी और से कोई लेना-देना नहीं था; मैं तो बस ज़ोर से सोच रही थी।" मुझे लगा कि मैं अल्बर्टिन से अब और कुछ नहीं उगलवा पाऊँगा। उसने मुझसे झूठ बोला था जब उसने कुछ देर पहले कसम खाई थी कि जिस बात ने उसे बीच में रोका था, वह कोई सामाजिक डर था कि कहीं वह कोई अनुचित बात न कह दे; क्योंकि अब वह बात इस शर्म में बदल गई थी कि कहीं मैं उसे कोई भद्दा शब्द इस्तेमाल करते हुए न सुन लूँ। अब यह निश्चित रूप से एक और झूठ था। क्योंकि जब हम अकेले होते थे, तो हमारे आलिंगन के बीच कोई भी बात इतनी अश्लील या कोई भी शब्द इतना भद्दा नहीं होता था जिसे हम कहने से हिचकिचाते। खैर, उस समय ज़ोर डालना बेकार था। लेकिन मेरी यादों में 'ब्रेक' (break) शब्द घर कर गया था। अल्बर्टिन अक्सर किसी पर 'छड़ी तोड़ने' या 'चीनी तोड़ने' की बात करती थी, या बस इतना कहती थी: "आह! मैंने तो उस पर जमकर 'ब्रेक' किया!" जिसका मतलब होता था: "मैंने तो उसे जमकर सुनाया!" लेकिन वह मेरे सामने यह बात बिल्कुल बेझिझक कहती थी; और अगर वह यही कहना चाहती थी, तो वह अचानक बीच में क्यों रुक गई? वह इतनी ज़्यादा शर्म से लाल क्यों हो गई? उसने अपने मुँह पर हाथ क्यों रख लिए? उसने अपनी बात का रुख़ क्यों बदल दिया? और, जब उसने देखा कि मैंने 'ब्रेक' शब्द सुन लिया है, तो उसने एक झूठी सफ़ाई क्यों दी? लेकिन जैसे ही मैंने उस पूछताछ को छोड़ दिया जिसका मुझे कोई जवाब नहीं मिल रहा था, अब बस एक ही काम बचा था—यह

दिखाना कि मेरी इस मामले में कोई दिलचस्पी नहीं रही। और, अपने विचारों को पीछे ले जाते हुए, अल्बर्टिन की उन शिकायतों के बारे में सोचते हुए जो उसने मेरे 'मिस्ट्रेस' के यहाँ जाने पर की थीं, मैंने उससे बहुत ही अजीब ढंग से कहा—दरअसल अपने बर्ताव के लिए एक तरह का बेवकूफी भरा बहाना बनाते हुए: "अरे, मैं तो आज शाम तुम्हें वर्दुरिन की पार्टी में चलने के लिए कहने ही वाला था।" यह बात कहना दोहरी बेवकूफी थी; क्योंकि अगर मैं सचमुच ऐसा चाहता, तो जब मैं सारा दिन उसके साथ ही था, तो मैंने उसे यह सुझाव पहले क्यों नहीं दिया? मेरे झूठ पर गुस्सा होकर और मेरी झिझक से और भी हिम्मत पाकर, उसने कहा: "तुम हज़ार साल तक भी मुझसे पूछ सकते थे," "मैं कभी भी राज़ी नहीं होती। वे ऐसे लोग हैं जो हमेशा मेरे खिलाफ रहे हैं; उन्होंने मुझे परेशान करने के लिए वह सब कुछ किया जो वे कर सकते थे। बालबेक में मैंने मैडम वर्दुरिन के लिए क्या कुछ नहीं किया, और मुझे उसका खूब 'इनाम' मिला है। अगर वह मुझे अपनी मौत की सेज पर भी बुलातीं, तो भी मैं नहीं जाती। कुछ बातें ऐसी होती हैं जिन्हें माफ़ करना नामुमकिन होता है। जहाँ तक तुम्हारी बात है, यह पहली बार है जब तुमने मेरे साथ बुरा बर्ताव किया है। जब फ्रांस्वा ने मुझे बताया कि तुम बाहर चले गए हो (मुझे नहीं लगता कि उसे यह बताने में कोई मज़ा आया होगा)..."

...तुमने तो मुझे एकदम हक्का-बक्का कर दिया। मैंने कोई भी भाव चेहरे पर न आने देने की कोशिश की, लेकिन अपनी पूरी ज़िंदगी में मेरा इतना अपमान कभी नहीं हुआ था।" जब वह बोल रही थी, तो मेरे भीतर—मेरे अचेतन मन की उस पूरी तरह से जीवंत और रचनात्मक नींद में (एक ऐसी नींद जिसमें वे चीज़ें भी जो हमें बस छूकर गुज़रती हैं, अपनी गहरी छाप छोड़ जाती हैं; जिसमें हमारे हाथ उस चाबी को थाम लेते हैं जो ताला खोलती है—वह चाबी जिसे हम अब तक व्यर्थ ही ढूँढ़ रहे थे)—यह खोज लगातार चल रही थी कि अपनी उस अधूरी बात से उसका क्या मतलब था, जिसका अंत जानने के लिए मैं इतना बेचैन था। और अचानक, एक भयानक शब्द—जिसके बारे में मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था—मेरे मन में कौंध गया: 'पॉट' (pot)। मैं यह नहीं कह सकता कि यह शब्द मेरे मन में किसी एक ही पल में बिजली की तरह कौंधा हो—जैसा कि अक्सर तब होता है जब हम किसी अधूरी याद के आगे लंबे समय तक निष्क्रिय होकर समर्पण कर देते हैं, और फिर धीरे-धीरे, सावधानी से उसे बाहर निकालने की कोशिश करते हुए, हम उसी याद से पूरी तरह से बँधे या चिपके रह जाते हैं। नहीं; मेरी

याददाश्त की सामान्य प्रक्रिया के विपरीत, मुझे लगता है कि इस बार दो समानांतर खोजें चल रही थीं। पहली खोज में न केवल अल्बर्टिन के शब्दों पर ध्यान दिया गया, बल्कि उस समय उसके चेहरे पर आए अत्यधिक चिड़चिड़ेपन के भाव पर भी—जब मैंने उसे एक शानदार दावत देने के लिए कुछ पैसे देने की पेशकश की थी। उसके चेहरे का वह भाव मानो यह कह रहा था: "धन्यवाद! उन चीज़ों पर पैसे खर्च करने का क्या फ़ायदा जो मुझे बोर करती हैं—जबकि बिना पैसे के भी मैं वे काम कर सकती हूँ जिनका मुझे सचमुच आनंद आता है!" और शायद उसके चेहरे के उसी भाव की याद ने ही मुझे, उसके उस अधूरे वाक्य का अंत जानने के लिए, अपनी खोज का तरीका बदलने पर मजबूर कर दिया। तब तक मैं उसके आखिरी शब्द—'ब्रेक' (break)—के जादू में पूरी तरह बँधा हुआ था। वह 'ब्रेक' (तोड़ना) कहकर क्या तोड़ना चाहती थी? लकड़ी? नहीं। चीनी? नहीं। ब्रेक, ब्रेक, ब्रेक...। और फिर अचानक, जिस पल मैंने उसे दावत देने का सुझाव दिया था, उस समय उसके चेहरे पर जो भाव उभरा था—उसी भाव ने मुझे वापस उन शब्दों की ओर मोड़ दिया जो उसने 'ब्रेक' शब्द से ठीक पहले कहे थे। और तुरंत ही मुझे समझ आ गया कि उसने 'ब्रेक' नहीं, बल्कि 'किसी और से तुड़वाना' (get someone to break) कहा था। कितना भयानक! वह तो इसी को ज़्यादा पसंद करती। दोहरी भयावहता! क्योंकि एक सबसे गिरी हुई वेश्या भी, जो इस तरह की चीज़ों के लिए राज़ी हो जाती है, या उनकी चाहत रखती है, उस पुरुष के लिए—जो उसकी इच्छाओं के आगे झुक जाता है—इतने भयानक शब्दों का इस्तेमाल नहीं करती। उसे यह अपमान बहुत ज़्यादा लगता। वह ये बातें सिर्फ़ किसी दूसरी औरत से कहती है—अगर वह औरतों से प्यार करती हो—और ऐसा वह इसलिए करती है ताकि किसी पुरुष को खुद को सौंपने के लिए कोई बहाना मिल जाए। अल्बर्टिन ने झूठ नहीं बोला था जब उसने मुझसे कहा था कि वह सपनों की दुनिया में खोई हुई बातें कर रही थी। परेशान, आवेगपूर्ण, और यह एहसास किए बिना कि वह मेरे साथ है, उसने अपने कंधे उचकाते हुए वैसे ही बातें करना शुरू कर दिया था, जैसे वह उन औरतों में से किसी एक से करती—शायद मेरी उन युवा, उभरती हुई लड़कियों में से किसी एक से। और फिर अचानक जब वह हकीकत की दुनिया में लौटी, तो शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया; जो शब्द उसके होंठों से निकलने ही वाले थे, उन्हें उसने वापस अपने अंदर ही दबा लिया; गहरी निराशा में डूबकर उसने आगे एक भी शब्द बोलने से

इनकार कर दिया। मेरे पास गँवाने के लिए एक पल भी नहीं था, अगर मैं उसे यह नहीं दिखाना चाहता था कि मैं कितना ज़्यादा परेशान हूँ। लेकिन तभी, मेरे गुस्से के अचानक फूट पड़ने के बाद, मेरी आँखों में आँसू आ गए। ठीक वैसे ही जैसे बालबेक में हुआ था—उस रात, जब उसने विन्तेउइल जोड़ी के साथ अपनी दोस्ती का राज़ खोला था—मुझे तुरंत अपने दुख के लिए कोई ऐसा विश्वसनीय बहाना गढ़ना था, जो साथ ही साथ अल्बर्टिन पर इतना गहरा असर डाल सके कि मुझे कोई फ़ैसला लेने से पहले कुछ दिनों की मोहलत मिल जाए। और इसलिए, ठीक उसी पल जब उसने मुझसे कहा कि उसे कभी इतना बड़ा अपमान नहीं झेलना पड़ा, जितना मैंने बाहर जाकर उसे पहुँचाया था—कि वह फ़्रांस्वा से मेरे चले जाने की बात सुनने के बजाय मर जाना ज़्यादा पसंद करती—और जब, उसकी इस बेतुकी संवेदनशीलता से चिढ़कर, मैं उसे यह बताने ही वाला था कि मैंने जो किया वह कुछ भी नहीं था, कि मेरे बाहर जाने में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे उसे बुरा लग सके—ठीक इन्हीं पलों के दौरान, एक समानांतर राह पर चलते हुए, 'ब्रेक' (break) शब्द के बाद वह क्या कहना चाहती थी, इसकी मेरी अवचेतन खोज सफल हो गई थी; और इस खोज से मुझे जो गहरी निराशा मिली थी, उसे मैं पूरी तरह छिपा नहीं सका। इसलिए, अपना बचाव करने के बजाय, मैंने खुद पर ही इल्ज़ाम लगा लिया। "मेरी प्यारी अल्बर्टिन," मैंने उससे एक कोमल आवाज़ में कहा—जो मेरे बहते हुए आँसुओं में डूब सी गई थी—"मैं तुमसे कह सकता हूँ कि तुम ग़लत हो, कि आज शाम मैंने जो किया वह..." कुछ भी नहीं, लेकिन अगर मैं ऐसा कहूँ तो झूठ होगा; असल में तुम ही सही हो, तुमने सच को पहचान लिया है, मेरी प्यारी बच्ची—सच यह है कि छह महीने पहले, या तीन महीने पहले, जब मैं तुम्हें इतना पसंद करता था, तब मैं कभी भी ऐसी कोई हरकत नहीं करता। यह बात देखने में तो बहुत छोटी सी है, लेकिन इसका महत्व बहुत बड़ा है—क्योंकि यह मेरे दिल में आए एक बहुत बड़े बदलाव का संकेत है। और चूँकि तुमने उस बदलाव को भाँप लिया है जिसे मैं तुमसे छिपाना चाहता था, इसलिए अब मुझे तुम्हें यह बात कहनी ही पड़ेगी: "मेरी प्यारी अल्बर्टिन" (और यहाँ मैंने उससे बेहद कोमलता और उदासी के साथ बात की), "क्या तुम्हें यह महसूस नहीं होता कि तुम यहाँ जिस तरह की ज़िंदगी जी रही हो, वह तुम्हें अब बोरिंग लगने लगी है? बेहतर यही होगा कि हम दोनों अलग हो जाएँ। और चूँकि सबसे अच्छी विदाई वही होती है जो बिना किसी देरी के, एक ही बार में हो जाए—इसलिए मैं तुमसे यह

गुज़ारिश करता हूँ कि उस गहरे दुख को कम करने के लिए, जिसे मुझे झेलना ही पड़ेगा—तुम आज रात ही मुझसे 'अलविदा' कह दो, और कल सुबह, जब मैं सो रहा होऊँ—तो तुम चुपचाप यहाँ से चली जाना, ताकि मैं तुम्हें दोबारा न देख सकूँ।" वह यह सुनकर एकदम हक्की-बक्की रह गई; उसे अभी भी अपनी कानों पर यकीन नहीं हो रहा था, और वह पहले से ही बेहद उदास और निराश नज़र आ रही थी: "कल सुबह? क्या तुम सच में ऐसा ही चाहते हो?" और हमारे अलग होने की बात कहते हुए—मानो यह घटना पहले ही घट चुकी हो—मुझे जो गहरा मानसिक कष्ट हो रहा था, उसके बावजूद—शायद कुछ हद तक इसलिए भी कि...
...तुमने तो मुझे एकदम हक्का-बक्का कर दिया। मैंने कोई भी भाव चेहरे पर न आने देने की कोशिश की, लेकिन अपनी पूरी ज़िंदगी में मेरा इतना अपमान कभी नहीं हुआ था।" जब वह बोल रही थी, तो मेरे भीतर—मेरे अचेतन मन की उस पूरी तरह से जीवंत और रचनात्मक नींद में (एक ऐसी नींद जिसमें वे चीज़ें भी जो हमें बस छूकर गुज़रती हैं, अपनी गहरी छाप छोड़ जाती हैं; जिसमें हमारे हाथ उस चाबी को थाम लेते हैं जो ताला खोलती है—वह चाबी जिसे हम अब तक व्यर्थ ही ढूँढ़ रहे थे)—यह खोज लगातार चल रही थी कि अपनी उस अधूरी बात से उसका क्या मतलब था, जिसका अंत जानने के लिए मैं इतना बेचैन था। और अचानक, एक भयानक शब्द—जिसके बारे में मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था—मेरे मन में कौंध गया: 'पॉट' (pot)। मैं यह नहीं कह सकता कि यह शब्द मेरे मन में किसी एक ही पल में बिजली की तरह कौंधा हो—जैसा कि अक्सर तब होता है जब हम किसी अधूरी याद के आगे लंबे समय तक निष्क्रिय होकर समर्पण कर देते हैं, और फिर धीरे-धीरे, सावधानी से उसे बाहर निकालने की कोशिश करते हुए, हम उसी याद से पूरी तरह से बँधे या चिपके रह जाते हैं। नहीं; मेरी याददाश्त की सामान्य प्रक्रिया के विपरीत, मुझे लगता है कि इस बार दो समानांतर खोजें चल रही थीं। पहली खोज में न केवल अल्बर्टिन के शब्दों पर ध्यान दिया गया, बल्कि उस समय उसके चेहरे पर आए अत्यधिक चिड़चिड़ेपन के भाव पर भी—जब मैंने उसे एक शानदार दावत देने के लिए कुछ पैसे देने की पेशकश की थी। उसके चेहरे का वह भाव मानो यह कह रहा था: "धन्यवाद! उन चीज़ों पर पैसे खर्च करने का क्या फ़ायदा जो मुझे बोर करती हैं—जबकि बिना पैसे के भी मैं वे काम कर सकती हूँ जिनका मुझे सचमुच आनंद आता है!" और शायद उसके चेहरे के उसी भाव की याद ने ही मुझे, उसके उस अधूरे वाक्य का अंत जानने

के लिए, अपनी खोज का तरीका बदलने पर मजबूर कर दिया। तब तक मैं उसके आखिरी शब्द—'ब्रेक' (break)—के जादू में पूरी तरह बँधा हुआ था। वह 'ब्रेक' (तोड़ना) कहकर क्या तोड़ना चाहती थी? लकड़ी? नहीं। चीनी? नहीं। ब्रेक, ब्रेक, ब्रेक...। और फिर अचानक, जिस पल मैंने उसे दावत देने का सुझाव दिया था, उस समय उसके चेहरे पर जो भाव उभरा था—उसी भाव ने मुझे वापस उन शब्दों की ओर मोड़ दिया जो उसने 'ब्रेक' शब्द से ठीक पहले कहे थे। और तुरंत ही मुझे समझ आ गया कि उसने 'ब्रेक' नहीं, बल्कि 'किसी और से तुड़वाना' (get someone to break) कहा था। कितना भयानक! वह तो इसी को ज़्यादा पसंद करती। दोहरी भयावहता! क्योंकि एक सबसे गिरी हुई वेश्या भी, जो इस तरह की चीज़ों के लिए राज़ी हो जाती है, या उनकी चाहत रखती है, उस पुरुष के लिए—जो उसकी इच्छाओं के आगे झुक जाता है—इतने भयानक शब्दों का इस्तेमाल नहीं करती। उसे यह अपमान बहुत ज़्यादा लगता। वह ये बातें सिर्फ़ किसी दूसरी औरत से कहती है—अगर वह औरतों से प्यार करती हो—और ऐसा वह इसलिए करती है ताकि किसी पुरुष को खुद को सौंपने के लिए कोई बहाना मिल जाए। अल्बर्टिन ने झूठ नहीं बोला था जब उसने मुझसे कहा था कि वह सपनों की दुनिया में खोई हुई बातें कर रही थी। परेशान, आवेगपूर्ण, और यह एहसास किए बिना कि वह मेरे साथ है, उसने अपने कंधे उचकाते हुए वैसे ही बातें करना शुरू कर दिया था, जैसे वह उन औरतों में से किसी एक से करती—शायद मेरी उन युवा, उभरती हुई लड़कियों में से किसी एक से। और फिर अचानक जब वह हकीकत की दुनिया में लौटी, तो शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया; जो शब्द उसके होंठों से निकलने ही वाले थे, उन्हें उसने वापस अपने अंदर ही दबा लिया; गहरी निराशा में डूबकर उसने आगे एक भी शब्द बोलने से इनकार कर दिया। मेरे पास गँवाने के लिए एक पल भी नहीं था, अगर मैं उसे यह नहीं दिखाना चाहता था कि मैं कितना ज़्यादा परेशान हूँ। लेकिन तभी, मेरे गुस्से के अचानक फूट पड़ने के बाद, मेरी आँखों में आँसू आ गए। ठीक वैसे ही जैसे बालबेक में हुआ था—उस रात, जब उसने विन्तेउइल जोड़ी के साथ अपनी दोस्ती का राज़ खोला था—मुझे तुरंत अपने दुख के लिए कोई ऐसा विश्वसनीय बहाना गढ़ना था, जो साथ ही साथ अल्बर्टिन पर इतना गहरा असर डाल सके कि मुझे कोई फ़ैसला लेने से पहले कुछ दिनों की मोहलत मिल जाए। और इसलिए, ठीक उसी पल जब उसने मुझसे कहा कि उसे कभी इतना बड़ा अपमान नहीं झेलना पड़ा, जितना

मैंने बाहर जाकर उसे पहुँचाया था—कि वह फ़्रांस्वा से मेरे चले जाने की बात सुनने के बजाय मर जाना ज़्यादा पसंद करती—और जब, उसकी इस बेतुकी संवेदनशीलता से चिढ़कर, मैं उसे यह बताने ही वाला था कि मैंने जो किया वह कुछ भी नहीं था, कि मेरे बाहर जाने में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे उसे बुरा लग सके—ठीक इन्हीं पलों के दौरान, एक समानांतर राह पर चलते हुए, 'ब्रेक' (break) शब्द के बाद वह क्या कहना चाहती थी, इसकी मेरी अवचेतन खोज सफल हो गई थी; और इस खोज से मुझे जो गहरी निराशा मिली थी, उसे मैं पूरी तरह छिपा नहीं सका। इसलिए, अपना बचाव करने के बजाय, मैंने खुद पर ही इल्ज़ाम लगा लिया। "मेरी प्यारी अल्बर्टिन," मैंने उससे एक कोमल आवाज़ में कहा—जो मेरे बहते हुए आँसुओं में डूब सी गई थी—"मैं तुमसे कह सकता हूँ कि तुम ग़लत हो, कि आज शाम मैंने जो किया वह..." कुछ भी नहीं, लेकिन अगर मैं ऐसा कहूँ तो झूठ होगा; असल में तुम ही सही हो, तुमने सच को पहचान लिया है, मेरी प्यारी बच्ची—सच यह है कि छह महीने पहले, या तीन महीने पहले, जब मैं तुम्हें इतना पसंद करता था, तब मैं कभी भी ऐसी कोई हरकत नहीं करता। यह बात देखने में तो बहुत छोटी सी है, लेकिन इसका महत्व बहुत बड़ा है—क्योंकि यह मेरे दिल में आए एक बहुत बड़े बदलाव का संकेत है। और चूँकि तुमने उस बदलाव को भाँप लिया है जिसे मैं तुमसे छिपाना चाहता था, इसलिए अब मुझे तुम्हें यह बात कहनी ही पड़ेगी: "मेरी प्यारी अल्बर्टिन" (और यहाँ मैंने उससे बेहद कोमलता और उदासी के साथ बात की), "क्या तुम्हें यह महसूस नहीं होता कि तुम यहाँ जिस तरह की ज़िंदगी जी रही हो, वह तुम्हें अब बोरिंग लगने लगी है? बेहतर यही होगा कि हम दोनों अलग हो जाएँ। और चूँकि सबसे अच्छी विदाई वही होती है जो बिना किसी देरी के, एक ही बार में हो जाए—इसलिए मैं तुमसे यह गुज़ारिश करता हूँ कि उस गहरे दुख को कम करने के लिए, जिसे मुझे झेलना ही पड़ेगा—तुम आज रात ही मुझसे 'अलविदा' कह दो, और कल सुबह, जब मैं सो रहा होऊँ—तो तुम चुपचाप यहाँ से चली जाना, ताकि मैं तुम्हें दोबारा न देख सकूँ।" वह यह सुनकर एकदम हक्की-बक्की रह गई; उसे अभी भी अपनी कानों पर यकीन नहीं हो रहा था, और वह पहले से ही बेहद उदास और निराश नज़र आ रही थी: "कल सुबह? क्या तुम सच में ऐसा ही चाहते हो?" और हमारे अलग होने की बात कहते हुए—मानो यह घटना पहले ही घट चुकी हो—मुझे जो गहरा मानसिक कष्ट हो रहा था, उसके बावजूद—शायद कुछ हद तक इसलिए भी कि...

जिसमें एक द्वारा लिया गया अतिरिक्त हिस्सा दूसरे से घटा दिया जाता है, और उससे भी, ठीक वैसे ही जैसे गिल्बर्ट से, मुझे अलग होना ही पड़ता। लेकिन कई कारणों से स्थिति पूरी तरह से अलग थी; जिनमें से पहला कारण (और इसी से बाकी कारण भी पैदा हुए थे) यह था कि इच्छा-शक्ति की जिस कमी को मेरी दादी और माँ ने कॉम्ब्रे में मुझमें देखकर चिंता जताई थी —और जिसके आगे वे दोनों ही बारी-बारी से हार मान चुकी थीं (क्योंकि एक बीमार व्यक्ति अपनी कमज़ोरी दूसरों पर थोपने के लिए इतनी ज़बरदस्त ऊर्जा का इस्तेमाल करता है)— इच्छा-शक्ति की वह कमी अब और भी तेज़ी से बढ़ती जा रही थी। जब मुझे लगा कि मेरी संगति गिल्बर्ट को बोर कर रही है, तब भी मुझमें उसे छोड़ देने की हिम्मत बाकी थी; लेकिन जब अल्बर्टिन के मामले में मुझे वैसी ही बात का एहसास हुआ, तो मुझमें वैसी हिम्मत नहीं बची थी; तब मैं बस यही सोचता था कि चाहे कुछ भी हो जाए, मुझे उसे अपने पास ही रखना है। इसका नतीजा यह हुआ कि जहाँ एक तरफ मैंने गिल्बर्ट को लिखा कि मैं अब उससे दोबारा नहीं मिलूँगा—और सचमुच मेरा इरादा भी यही था कि मैं उससे न मिलूँ—वहीं दूसरी तरफ, अल्बर्टिन से मैंने यही बात पूरी तरह झूठ के तौर पर कही, और वह भी इस उम्मीद में कि शायद इससे हमारे बीच फिर से सुलह हो जाए। इस तरह, हम दोनों ने एक-दूसरे के सामने अपनी जो छवि पेश की, वह असलियत से कोसों दूर थी। और इसमें कोई शक नहीं कि जब भी दो लोग आमने-सामने होते हैं, तो हमेशा ऐसा ही होता है; क्योंकि उन दोनों में से कोई भी इस बात से अनजान होता है कि दूसरे के मन में असल में क्या चल रहा है (और जो कुछ वे जानते भी हैं, उसे भी वे पूरी तरह से नहीं समझ पाते); साथ ही, वे दोनों ही एक-दूसरे के सामने अपनी सबसे कम निजी बातों को ही ज़ाहिर करते हैं—ऐसा शायद इसलिए होता है क्योंकि उन्होंने कभी खुद को गहराई से टटोला ही नहीं होता, और वे अपनी सबसे ज़रूरी बातों को ही बेमानी समझ बैठते हैं; या फिर इसलिए कि कुछ ऐसी छोटी-मोटी चीज़ें या फायदे, जिनका उनकी अपनी असलियत से कोई लेना-देना नहीं होता, उन्हें ज़्यादा ज़रूरी और ज़्यादा लुभावने लगते हैं। लेकिन प्यार में यह गलतफहमी अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाती है, क्योंकि—शायद बचपन को छोड़कर—हम अपने मन की बात को ठीक-ठीक बताने के बजाय, ऐसा दिखावा करने की कोशिश करते हैं जो हमें लगता है कि हमारी इच्छा पूरी करने में सबसे ज़्यादा मददगार होगा। मेरे मामले में, घर लौटने के बाद, मेरी इच्छा यह थी कि मैं

अल्बर्टिन को उतना ही आज्ञाकारी बनाए रखूँ जितनी वह पहले थी; यानी, वह अपनी चिड़चिड़ाहट में मुझसे ज़्यादा आज़ादी की माँग न करे—ऐसी आज़ादी जो मैं उसे किसी दिन देने वाला था, लेकिन इस समय, जब मुझे उसकी आज़ादी की चाहत से डर लग रहा था, अगर मैं उसे वह आज़ादी दे देता तो मुझे बहुत ज़्यादा ईर्ष्या होती। एक खास उम्र के बाद, आत्म-सम्मान और समझदारी की वजह से, हम उन चीज़ों को ही सबसे कम महत्व देने का दिखावा करते हैं जिनकी हम सबसे ज़्यादा इच्छा रखते हैं। लेकिन प्यार में, हमारी कोरी समझदारी—जो शायद असल में सच्ची बुद्धिमानी नहीं है—हमें बहुत जल्द ही इस दोहरेपन की कला को अपनाने पर मजबूर कर देती है। बचपन में मैंने प्यार के बारे में जो कुछ भी सबसे मीठी चीज़ के तौर पर सोचा था—जो मुझे प्यार का असली सार लगता था—वह यह था कि मैं अपनी प्रेमिका के कदमों में अपना स्नेह, उसकी दयालुता के लिए अपनी कृतज्ञता, और उसके साथ हमेशा रहने की अपनी चाहत को खुलकर ज़ाहिर करूँ। लेकिन अपने और अपने दोस्तों के अनुभवों से मुझे यह अच्छी तरह समझ आ गया था कि ऐसी भावनाओं को ज़ाहिर करने से सामने वाले पर वैसा ही असर हो, ऐसा ज़रूरी नहीं है। एक बार जब हम यह बात समझ जाते हैं, तो हम फिर 'खुद को पूरी तरह से बहने नहीं देते'; मैंने दोपहर में इस बात का खास ख्याल रखा था कि मैं अल्बर्टिन को यह न बताऊँ कि मैं उसका कितना आभारी हूँ कि वह ट्रोकाडेरो में नहीं रुकी। और आज रात, इस डर से कि कहीं वह मुझे छोड़कर न चली जाए, मैंने उससे अलग होने की इच्छा का दिखावा किया—एक ऐसा दिखावा, जो असल में, मुझे सिर्फ़ उन सीखों से नहीं मिला था जो मुझे अपने पिछले प्रेम-संबंधों से मिली थीं और जिन्हें मैं इस नए रिश्ते में इस्तेमाल करने की कोशिश कर रहा था।

मुझे डर था कि कहीं अल्बर्टीन मुझसे ये न कह दे: "मैं कुछ घंटों के लिए अकेले बाहर जाना चाहती हूँ, मैं एक रात के लिए दूर रहना चाहती हूँ," या इसी तरह की कोई भी बात, जिसे मैंने स्पष्ट करने की कोशिश नहीं की, लेकिन जिसने मुझे चिंतित कर दिया था। वर्दुरिन की पार्टी से पहले और उसके दौरान, ये डर मेरे मन में कुछ पल के लिए आया था। लेकिन ये डर तुरंत दूर

हो गया, और तो और अल्बर्टीन ने मुझे बार-बार ये भरोसा दिलाया कि वो मेरे साथ कितनी खुश है, इस बात ने इस डर को और भी पुष्ट कर दिया। अगर अल्बर्टीन के मन में मुझे छोड़ने का इरादा था भी, तो वह अस्पष्ट रूप से ही प्रकट हुआ, कुछ उदास निगाहों, अधीरता भरे हाव-भावों और ऐसी बातों में जिनका कोई सीधा अर्थ नहीं था। लेकिन अगर उनका विश्लेषण किया जाए (और विश्लेषण की कोई आवश्यकता भी नहीं थी, क्योंकि हम तुरंत ही भावनाओं की भाषा पहचान सकते हैं; निम्न वर्ग के लोग भी इन बातों को समझ जाते हैं, जिन्हें केवल अहंकार, द्वेष और ईर्ष्या से ही समझाया जा सकता है। ये भावनाएँ भले ही व्यक्त न हों, लेकिन एक सहज ज्ञान के माध्यम से श्रोता के सामने प्रकट हो जाती हैं, जो डेसकार्टेस द्वारा वर्णित 'अच्छी समझ' की तरह ही दुनिया में सबसे व्यापक है), तो उसके भीतर छिपी हुई भावना का पता चलता है, जो उसे मुझसे अलग एक नए जीवन की योजना बनाने के लिए प्रेरित कर सकती है। जिस प्रकार यह इरादा उसकी बातों में तार्किक रूप से व्यक्त नहीं हुआ, उसी प्रकार आज रात मुझे जो इस इरादे का पूर्वाभास हुआ था, वह भी मेरे भीतर उतना ही अस्पष्ट बना रहा। मैं उसी परिकल्पना पर जीता रहा जिसमें अल्बर्टीन की कही हर बात को सच माना जाता था। लेकिन हो सकता है कि इस दौरान मेरे भीतर एक बिलकुल विपरीत धारणा बनी रही हो, जिसके बारे में मैंने सोचना ही नहीं चाहा; यह और भी अधिक संभावित है क्योंकि अन्यथा, मुझे अल्बर्टीन को यह बताने में कोई झिझक नहीं होती कि मैं वर्दुरिन के घर गया था, और वास्तव में, उसके गुस्से पर मेरी हैरानी न होना समझ से परे होता। इसलिए, संभवतः मेरे भीतर अल्बर्टीन की एक ऐसी छवि थी जो मेरी बुद्धि द्वारा बनाई गई छवि से बिल्कुल विपरीत थी, और न ही उसके अपने शब्दों द्वारा चित्रित छवि से, एक ऐसी अल्बर्टीन जो पूरी तरह से काल्पनिक नहीं थी, क्योंकि वह अपने भीतर उत्पन्न होने वाली कुछ भावनाओं का एक भविष्यसूचक दर्पण थी, जैसे कि वर्दुरिन के घर जाने पर उसका चिड़चिड़ापन। इसके अलावा, काफी समय से चली आ रही मेरी लगातार पीड़ा, अल्बर्टीन को यह बताने का मेरा डर कि मैं उससे प्यार करता हूँ, यह सब एक अन्य परिकल्पना से मेल खाता था जो कई अन्य बातों की भी व्याख्या करती थी, और इसके पक्ष में यह भी कहा जा सकता था कि, यदि कोई पहली परिकल्पना को अपनाता है, तो दूसरी अधिक संभावित हो जाती है, क्योंकि अल्बर्टीन के प्रति

अत्यधिक स्नेह दिखाने से मुझे उससे केवल झुंझलाहट ही मिली (जिसका कारण उसने अलग बताया)।

यदि मैं अपनी भावनाओं का विश्लेषण इस परिकल्पना के आधार पर करूँ, यानी उन प्रतिक्रियाओं की अपरिवर्तनीय प्रणाली के आधार पर जो मेरी भावनाओं के ठीक विपरीत होती हैं, तो मैं पूरी तरह निश्चित हो सकता हूँ कि यदि आज रात मैंने उससे कहा कि मैं उसे विदा करने जा रहा हूँ, तो यह - शुरू में, पूरी तरह अचेतन रूप से - इसलिए था क्योंकि मुझे डर था कि वह अपनी स्वतंत्रता की इच्छा कर सकती है (मुझे यह कहना मुश्किल होगा कि वह कौन सी स्वतंत्रता थी जिसने मुझे भयभीत कर दिया, लेकिन फिर भी स्वतंत्रता की कोई ऐसी स्थिति जिसमें वह मुझे धोखा दे सकती थी, या कम से कम, मैं अब इस बात को लेकर निश्चित नहीं रह सकता था कि वह ऐसा नहीं कर रही है) और मैं उसे, अपने अभिमान और चालाकी से, यह दिखाना चाहता था कि मैं इस तरह की किसी भी बात से बिल्कुल भी नहीं डरता, जैसा कि मैंने बालबेक में पहले ही किया था, जब मैं चिंतित था कि वह मेरे बारे में अच्छी राय रखे, और बाद में, जब मैं चिंतित था कि उसे मेरे साथ ऊबने का समय न मिले। संक्षेप में, इस दूसरी परिकल्पना पर जो आपत्ति उठाई जा सकती है—जिसे मैंने स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया—कि अल्बर्टीन ने मुझसे जो कुछ भी कहा, उससे इसके विपरीत यह संकेत मिलता है कि वह मेरे घर में आराम करना, पढ़ना, एकांत, समलैंगिक प्रेम से घृणा आदि वाला जीवन जीना पसंद करती थी—उस पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि यदि अल्बर्टीन ने मेरी बातों से मेरे भावों का अर्थ निकालने का प्रयास किया होता, तो उसे सत्य के ठीक विपरीत ही पता चलता, क्योंकि मैंने उससे अलग होने की इच्छा कभी व्यक्त नहीं की, सिवाय तब जब मैं उसके बिना नहीं रह सकता था, और बालबेक में मैंने उससे स्वीकार किया था कि मैं किसी दूसरी स्त्री से प्रेम करता हूँ, पहले एंड्री से, फिर एक रहस्यमय अजनबी से, उन दो अवसरों पर जब ईर्ष्या ने अल्बर्टीन के लिए मेरे प्रेम को फिर से जगा दिया था। इसलिए, मेरे शब्दों में मेरे भावों का जरा भी प्रतिबिंब नहीं था। यदि पाठक को इन भावों का केवल हल्का सा आभास हो, तो इसका कारण यह है कि कथावाचक के रूप में, मैं अपने शब्दों को दोहराते हुए ही अपने भावों को उसके सामने प्रकट कर देता हूँ। लेकिन अगर मैं पहले को छुपा लेता और वह केवल दूसरे को जानता, तो मेरे कार्य, जो मेरी बातों से बिल्कुल मेल नहीं खाते थे, उसे

अक्सर भावनाओं के अजीबोगरीब उलटफेर का आभास देते और वह मुझे लगभग पागल समझ लेता। यह तरीका भी, वैसे तो, मेरे द्वारा अपनाए गए तरीके से ज़्यादा गलत नहीं होता, क्योंकि जिन छवियों ने मुझे कार्य करने के लिए प्रेरित किया, वे मेरी बातों में व्यक्त छवियों के बिल्कुल विपरीत थीं, और उस समय वे अत्यंत अस्पष्ट थीं; मैं अपने कार्यों का मार्गदर्शन करने वाली प्रकृति से पूरी तरह अवगत नहीं था; वर्तमान में, मुझे उसकी व्यक्तिपरक सच्चाई की स्पष्ट समझ है। जहाँ तक उसकी वस्तुनिष्ठ सच्चाई का सवाल है, यानी कि क्या उस प्रकृति की प्रवृत्तियों ने अल्बर्टीन के सच्चे इरादों को मेरी बुद्धि से ज़्यादा सटीक रूप से समझा, क्या उस प्रकृति पर भरोसा करना सही था या इसके विपरीत उसने अल्बर्टीन के इरादों को स्पष्ट करने के बजाय उन्हें विकृत तो नहीं कर दिया, यह कहना मेरे लिए कठिन है। वर्दुरिन के यहाँ मुझे जो अस्पष्ट भय था कि अल्बर्टीन मुझे छोड़ देगी, वह तुरंत दूर हो गया। जब मैं घर लौटा, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मैं खुद एक कैदी हूँ, न कि घर में किसी कैदी को पाकर। लेकिन जब मैंने अल्बर्टीन को बताया कि मैं वर्दुरिन के घर गया था, तो मेरा यह डर और भी ज़्यादा ज़ोर से मुझ पर हावी हो गया। मैंने देखा कि उसका चेहरा एक रहस्यमयी झुंझलाहट से ढका हुआ था, जो पहली बार नहीं दिख रही थी। मैं अच्छी तरह जानता था कि यह केवल तर्कसंगत शिकायतों का, उन विचारों का, जो उन्हें गढ़ने वाले व्यक्ति के लिए स्पष्ट तो होते हैं लेकिन व्यक्त नहीं करने वाले के लिए, शरीर में समाहित एक संश्लेषण था, जो दिखाई तो देता है लेकिन इसलिए तर्कसंगत नहीं होता। वह व्यक्ति जो अपनी प्रेमिका के चेहरे से इसके अनमोल अंश को इकट्ठा करता है, बदले में, ताकि वह समझ सके कि उसके मन में क्या चल रहा है, उसका विश्लेषण करके उसे बौद्धिक तत्वों में विभाजित करने का प्रयास करता है। अल्बर्टीन के विचार मेरे लिए जो अज्ञात मात्रा थे, उसका लगभग समीकरण मुझे यह बताता है: "मैं उसके संदेह को जानती थी, मुझे यकीन था कि वह उन्हें सत्यापित करने का प्रयास करेगा, और ताकि मैं उसे बाधा न पहुँचाऊँ, उसने अपनी छोटी सी योजना गुप्त रूप से बनाई है।" लेकिन अगर अल्बर्टीन की मनःस्थिति ऐसी थी (और उसने मुझसे कभी इसका ज़िक्र नहीं किया था), तो क्या उसे इस पर घृणा नहीं होनी चाहिए, क्या उसका जीवन जीने का साहस कमज़ोर नहीं पड़ना चाहिए, क्या वह किसी भी क्षण उस जीवन को समाप्त करने का निर्णय नहीं ले सकती जिसमें, यदि वह कम से कम इच्छा से दोषी थी, तो उसे खुद को बेनकाब, पीछा किया हुआ,

अपनी सहज प्रवृत्ति के आगे झुकने से रोका हुआ महसूस करना चाहिए, और ऐसा करने से मेरी ईर्ष्या कम नहीं होनी चाहिए? और यदि उसका इरादा और कर्म निर्दोष थे, तो उसे कुछ समय से निराश होने का पूरा अधिकार था, क्योंकि बालबेक से, जहाँ उसने एंड्री के साथ अकेले रहने के जोखिम से बचने के लिए बहुत दृढ़ता दिखाई थी, आज तक, जब उसने वर्दुरिन के घर न जाने और ट्रोकाडेरो में न रुकने पर सहमति जताई, वह मेरा विश्वास पुनः प्राप्त करने में कभी सफल नहीं हुई थी। यह और भी अधिक इसलिए था क्योंकि मैं यह नहीं कह सकता था कि उसका व्यवहार अनुकरणीय नहीं था। बालबेक में, जब भी कोई खराब स्टाइल वाली लड़कियों की बात करता, तो वह अक्सर उनकी हंसी, उनके करवट बदलने, उनके पूरे हाव-भाव की नकल करती थी, जो मेरे लिए एक यातना की तरह था क्योंकि मुझे लगता था कि उसकी सहेलियों के लिए इसका क्या मतलब होगा। अब जब वह इस विषय पर मेरी राय जान चुकी थी, तो जैसे ही कोई इस तरह की बातों का जिक्र करता, वह बातचीत में हिस्सा लेना बंद कर देती, न केवल बोलकर बल्कि अपने चेहरे के भावों से भी। चाहे वह किसी महिला के बारे में फैलाई जा रही बदनामी में अपना योगदान न देने के लिए हो, या किसी और वजह से, उस समय उसके उन भावहीन चेहरों पर केवल एक ही बात दिखाई देती थी कि जिस क्षण से यह विषय उठाया गया था, उसी क्षण से उसने अपनी बेरुखी स्पष्ट कर दी थी, जबकि उसके चेहरे पर वही भाव बरकरार था जो एक पल पहले था। और उसके चेहरे के इस हल्के भाव की स्थिरता भी खामोशी जितनी भारी थी; यह कहना असंभव था कि वह निंदा करती थी, समर्थन करती थी, या इन बातों के बारे में जानती थी या नहीं जानती थी। उसके चेहरे के हर भाव का दूसरे भाव से कोई संबंध नहीं था। उसकी नाक, उसका मुंह, उसकी आंखें एक परिपूर्ण सामंजस्य बनाती थीं, बाकी सब चीजों से अलग; वह एक पेस्टल रंग की तरह दिखती थी, और ऐसा लगता था मानो उसने अभी-अभी कही गई बात को सुना ही न हो, मानो वह बात लैटूर द्वारा बनाए गए चित्र के सामने कही गई हो।

मेरी गुलामी, जिसका मुझे पहले से ही एहसास था, जब मैंने ड्राइवर को ब्रिचोट का पता बताया और उसकी खिड़की में रोशनी देखी, कुछ ही समय बाद मेरे लिए बोझिल होना बंद हो गई, जब मैंने देखा कि अल्बर्टीन अपनी गुलामी को लेकर कितनी क्रूरता से सचेत थी। और ताकि उसे यह बोझ कम लगे, ताकि वह अपनी मर्जी से इसे तोड़ने का फैसला न करे, मुझे लगा कि

सबसे कारगर तरीका यही होगा कि उसे यह आभास कराया जाए कि यह गुलामी स्थायी नहीं है और मैं खुद इसके खत्म होने का इंतजार कर रही हूँ। मेरी चाल कामयाब होते देख, मैं खुद को भाग्यशाली समझ सकता था। पहली बात तो यह कि जिस बात से मैं इतना डर रहा था, यानी अल्बर्टीन का मुझे छोड़ने का (जैसा कि मैंने सोचा था), वह सच साबित नहीं हुई। दूसरी बात यह कि मेरे इरादे से हटकर, मेरी चाल की सफलता ने यह साबित कर दिया कि मैं अल्बर्टीन के लिए सिर्फ एक ठुकराया हुआ प्रेमी नहीं था, जिसकी ईर्ष्या को दरकिनार कर दिया गया था, जिसके सारे छल पहले ही पकड़ लिए गए थे। इससे हमारे प्यार में एक नई पवित्रता आ गई, और वो दिन फिर से लौट आए जब वो बालबेक में इतनी आसानी से मान लेती थी कि मैं किसी और औरत से प्यार करता हूँ। शायद वो अब ऐसा नहीं मानती, अगर वो मुझसे हमेशा के लिए अलग होने के मेरे झूठे इरादे को गंभीरता से न लेती। उसे शक था कि हमारे अलग होने का कारण वर्दुरिन के यहाँ हुई कोई घटना हो सकती है। अपने रिश्ते में दरार के झूठे दावे से उपजे तनाव को शांत करने की ज़रूरत महसूस करते हुए, मैंने उससे कहा: "अल्बर्टीन, क्या तुम कसम खा सकती हो कि तुमने मुझसे कभी झूठ नहीं बोला?" उसने हवा में टकटकी लगाकर देखा और फिर जवाब दिया: "हाँ, यानी नहीं। मुझे तुम्हें यह नहीं बताना चाहिए था कि एंड्री ब्लोच से बहुत प्रभावित थी, हम उससे कभी मिले ही नहीं।" "तो फिर तुमने ऐसा क्यों कहा?" "क्योंकि मुझे डर था कि तुमने उसके बारे में दूसरी कहानियों पर विश्वास कर लिया होगा, बस इतना ही।" मैंने उसे बताया कि मैं एक नाटककार से मिली थी जो लीया का बहुत अच्छा दोस्त था, और जिसे लीया ने कुछ अजीब बातें बताई थीं। मुझे उम्मीद थी कि यह बताकर वह यह मान लेगी कि मैं ब्लोच के चचेरे भाई के दोस्त के बारे में जितना कहना चाहती हूँ उससे कहीं ज़्यादा जानती हूँ। उसने एक बार फिर खालीपन में घूरा और फिर बोली: "अभी जब मैंने तुमसे लीया के बारे में बात की थी, तो मुझे तुमसे वो तीन हफ़्ते की यात्रा नहीं छिपानी चाहिए थी जो मैंने एक बार उसके साथ की थी। लेकिन उन दिनों मैं तुम्हें बहुत कम जानती थी!" "क्या ये बालबेक से पहले की बात है?" "दूसरी बार से पहले, हाँ।" और उसी सुबह, उसने मुझे बताया था कि वो लीया को नहीं जानती, और अभी कुछ ही पल पहले, उसने कहा था कि वो उससे सिर्फ़ एक बार उसके ड्रेसिंग रूम में मिली थी! मैंने देखा कि आग की एक लपट ने पल भर में उस प्रेम कहानी को जलाकर राख कर दिया जिसे लिखने में मैंने

लाखों मिनट लगाए थे। किसलिए? किसलिए? बेशक मैं समझ गई थी कि अल्बर्टीन ने मुझे ये बातें इसलिए बताईं क्योंकि उसे लगा कि मैंने ये बातें अप्रत्यक्ष रूप से लीया से सुनी हैं; और ऐसा कोई कारण नहीं था कि ऐसी सौ और बातें न हों। तब मुझे एहसास हुआ कि जब अल्बर्टीन से पूछताछ की जाती थी, तो उसके कथनों में सत्य का एक अंश भी नहीं होता था। सत्य तो वह अनजाने में ही प्रकट करती थी, मानो उसके मन में अचानक उन तथ्यों का मेल हो गया हो जिन्हें वह पहले छिपाने का निश्चय कर चुकी थी और यह विश्वास कि मुझे उनकी जानकारी हो चुकी है। मैंने अल्बर्टीन से कहा, "लेकिन दो बातें तो कुछ नहीं हैं, चलो चार बातें ही जान लेते हैं, ताकि तुम मुझे अपनी कुछ यादें दे सको। तुम्हारे पास मेरे लिए और क्या रहस्य हैं?" एक बार फिर वह खालीपन में घूरने लगी। वह अपने झूठ को किस भावी जीवन की आस्था से जोड़ रही थी, किन देवताओं से वह अपना गठबंधन करने की कोशिश कर रही थी जो उसकी सोच से कहीं अधिक अस्थिर थे? यह उसके लिए आसान नहीं रहा होगा, क्योंकि उसकी चुप्पी और निगाहों की स्थिरता कुछ देर तक बनी रही। अंत में उसने कहा, "नहीं, और कुछ नहीं।" और मेरे बार-बार पूछने के बावजूद, वह अब आसानी से "और कुछ नहीं" पर अड़ी रही। और कितना बड़ा झूठ! क्योंकि, जिस क्षण से उसने उन रुचियों को अपनाया, उस दिन से लेकर जिस दिन तक वह मेरे घर में बंद रही, उसने कितनी बार, कितनी जगहों पर, कितनी यात्राओं में उन्हें पूरा किया होगा! गोमोराह की बेटियाँ एक ही समय में इतनी दुर्लभ और इतनी प्रचुर मात्रा में होती हैं कि किसी भी भीड़ में, एक दूसरे की नज़र से बच नहीं पाती। उस क्षण से मिलना आसान हो जाता है।

मुझे वह शाम याद करके बहुत डर लगा, जो उस समय मुझे महज़ बेतुकी लगी थी। मेरे एक दोस्त ने मुझे अपने साथ एक रेस्टोरेंट में खाने पर बुलाया था, जहाँ उसकी प्रेमिका और उसका एक और दोस्त भी आया था। दोनों औरतें जल्दी ही एक-दूसरे को समझने लगीं, लेकिन एक-दूसरे के साथ इतना मशगूल थीं कि सूप पीते-पीते उनके पैर एक-दूसरे को ढूंढ रहे थे, और अक्सर मेरे पैरों से टकरा रहे थे। देखते ही देखते उनके पैर आपस में उलझ गए। मेरे दोनों दोस्तों को कुछ पता नहीं चला; मैं बहुत घबराया हुआ था। उनमें से एक औरत, जो खुद को रोक नहीं पाई, मेज़ के नीचे झुक गई और कहने लगी कि उससे कुछ गिर गया है। फिर उनमें से एक को सिरदर्द की शिकायत हुई और उसने ऊपर शौचालय जाने की इजाज़त मांगी।

दूसरी को पता चला कि उसे थिएटर में अपनी एक सहेली से मिलने जाना है। आखिर में मैं अपने दोनों दोस्तों के साथ अकेला रह गया, जिन्हें कुछ शक नहीं हुआ। सिरदर्द वाली औरत वापस आई, लेकिन उसने अकेले घर जाने की इजाज़त मांगी ताकि वह अपने प्रेमी का उसके घर पर इंतज़ार कर सके और एंटीपायरिन की एक खुराक ले सके। वे पक्की सहेलियाँ बन गईं, साथ-साथ घूमती थीं, उनमें से एक आदमी का वेश बनाकर छोटी बच्चियों को उठाती और दूसरी के पास ले जाकर उन्हें अपने साथ शामिल करती थी। उनमें से एक का एक छोटा लड़का था, जिसके बारे में वह बहाना बनाती थी कि वह शरारती है, और उसे सजा देने के लिए अपनी सहेली के हवाले कर देती थी, जो उसे सख्ती से पीटती थी। यह कहा जा सकता है कि कोई भी जगह, चाहे कितनी भी सार्वजनिक क्यों न हो, ऐसी नहीं थी जहाँ वे अपना सबसे गुप्त काम न करती हों।

“लेकिन लीया ने मेरे साथ हमेशा बहुत ही सही व्यवहार किया,” अल्बर्टीन ने मुझसे कहा। “वह वाकई कई समाज की महिलाओं से कहीं ज़्यादा संयमित थी।” “क्या कोई ऐसी समाज की महिला है जिसने तुम्हारे साथ संकोच दिखाया हो, अल्बर्टीन?” “कभी नहीं।” “तो फिर तुम्हारा क्या मतलब है?” “ओह, मतलब, वह बोलने में थोड़ी कम मुखर थी।” “उदाहरण के लिए?” “वह कभी भी, कई महिलाओं की तरह, ‘घटिया’ जैसे शब्द का इस्तेमाल नहीं करती थी, या यह नहीं कहती थी: ‘मुझे किसी की परवाह नहीं है’।” मुझे ऐसा लगा कि रोमांस का वह हिस्सा, जिसे आग ने अब तक बचा रखा था, आखिरकार राख में तब्दील हो रहा था।

मेरी निराशा बनी रह सकती थी। जब भी मैं अल्बर्टीन के शब्दों के बारे में सोचता, तो वह भयंकर क्रोध में बदल जाती। फिर वह क्रोध एक कोमल भावना में तब्दील हो गया। घर आकर जब मैंने उससे संबंध तोड़ने की इच्छा जताई, तब भी मैं झूठ बोल रहा था। और यह बिछड़ने की इच्छा, जिसका मैंने लगातार दिखावा किया था, धीरे-धीरे मुझमें उस पीड़ा का कुछ अंश भर देती है जो मुझे तब होती जब मैं सचमुच अल्बर्टीन से अलग होना चाहता।

इसके अलावा, जब मैं रुक-रुक कर, दर्द भरी अनुभूतियों के साथ, जैसा कि हम अन्य शारीरिक पीड़ाओं के बारे में कहते हैं, उस उन्मादपूर्ण जीवन के बारे में सोचता था जो अल्बर्टीन ने मुझसे मिलने से पहले जिया था, तब भी मैं अपनी बंदी की आज्ञाकारिता की और भी अधिक प्रशंसा करता था और मेरे मन में किसी भी प्रकार की नाराजगी नहीं रहती थी।

निस्संदेह, हमारे साथ बिताए जीवन में मैंने कभी भी अल्बर्टीन को यह बताना नहीं भूला कि ऐसा जीवन संभवतः केवल अस्थायी ही होगा, ताकि अल्बर्टीन को इसमें कुछ आकर्षण मिलता रहे। लेकिन आज रात मैं और आगे बढ़ गया था, क्योंकि मुझे डर था कि अलगाव की अस्पष्ट धमकियाँ अब पर्याप्त नहीं होंगी, क्योंकि अल्बर्टीन के मन में उनके प्रति मेरे प्रबल और ईर्ष्यालु प्रेम की धारणा निश्चित रूप से इसका खंडन करेगी, और शायद इसी कारण से मुझे वर्दुरिन परिवार से जानकारी लेने जाना पड़ा।

आज रात मैंने सोचा कि उन कई कारणों में से एक यह भी था, जिनकी वजह से मैंने अचानक, बिना सोचे-समझे, इस अलगाव के दृश्य को रचने का फैसला किया, और सबसे अहम यह था कि जब मेरे पिता की तरह, मैं भी किसी दूसरे व्यक्ति को उसकी सुरक्षा में धमकी देता था, तो मेरे पास उनकी तरह धमकी को अमल में लाने का साहस नहीं होता था। ऐसा इसलिए ताकि यह न लगे कि मेरी बातें सिर्फ़ खोखले शब्द थे, मैं धमकी को अंजाम देने का दिखावा करता था और तभी पीछे हटता था जब मेरा विरोधी, मेरी ईमानदारी का भ्रम पाल लेता था और सचमुच कांपने लगता था। इसके अलावा, इन झूठों में हमें सच्चाई का अंश भी नज़र आता है, कि अगर जीवन हमारे प्रेम में कोई बदलाव नहीं लाता, तो हम खुद ही बदलाव लाने या उसका दिखावा करने की कोशिश करते हैं, क्योंकि हम यह दृढ़ता से महसूस करते हैं कि हर प्रेम और सब कुछ तेज़ी से विदाई की ओर बढ़ रहा है। हम विदाई से पहले ही उसके आँसू बहाना चाहते हैं। इस अवसर पर, मैंने जो दृश्य रचा था, उसमें निस्संदेह एक व्यावहारिक महत्व था। मैंने अचानक अल्बर्टीन को अपने पास रखने का निश्चय किया क्योंकि मुझे लगा कि वह अन्य लोगों के बीच बँटी हुई है, जिनसे मिलने से मैं उसे रोक नहीं सकता। लेकिन अगर वह अंततः उन सभी को छोड़कर मेरे पास आ जाती, तो मैं उसे कभी न जाने देने का और भी दृढ़ निश्चय कर लेता, क्योंकि ईर्ष्या के कारण बिछड़ना क्रूर हो जाता है, जबकि कृतज्ञता के कारण यह असंभव है। मुझे लगा कि मैं किसी भी हालत में एक निर्णायक लड़ाई लड़ रहा हूँ जिसमें मुझे या तो जीतना है या हारना है। मैं एक घंटे में अल्बर्टीन को अपना सब कुछ दे देता, क्योंकि मैंने खुद से कहा: "सब कुछ इस लड़ाई पर निर्भर करता है, लेकिन ऐसी लड़ाइयाँ पुराने दिनों की उन लड़ाइयों जैसी नहीं होतीं जो कुछ घंटों तक चलती थीं, बल्कि आज की लड़ाई ऐसी है जो न तो कल खत्म होती है, न परसों, न ही अगले सप्ताह। हम अपनी पूरी ताकत लगा देते हैं,

क्योंकि हमें दृढ़ विश्वास है कि हमें फिर कभी किसी ताकत की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। और एक साल से ज़्यादा समय बीत जाता है बिना किसी 'निर्णायक' जीत के। शायद एम. डी चार्लस द्वारा रचे गए झूठे दृश्यों की एक अचेतन स्मृति, जिनकी संगति में मैं था जब अल्बर्टीन के मुझे छोड़कर चले जाने का डर मुझ पर हावी हो गया था, बाकी सब में जुड़ गई। लेकिन, बाद में, मैंने अपनी माँ को कुछ ऐसा कहते सुना जिसके बारे में मैं तब अनजान था और जिससे मुझे विश्वास होता है कि मैंने इस दृश्य के सभी तत्व अपने भीतर, वंशानुक्रम के उन अस्पष्ट भंडारों में पाए, जिन्हें कुछ भावनाएँ, इस संबंध में हमारी संचित शक्ति के अवशेष पर शराब और कॉफी जैसी दवाओं की तरह काम करते हुए, हमारे उपयोग में लाती हैं। जब मेरी चाची लियोनी को पता चला यूलाली से यह सुनकर कि फ्रांस्वा, इस बात से आश्वस्त थी कि उसकी मालकिन अब कभी घर से बाहर नहीं निकलेगी, उसने चुपके से एक सैर की योजना बनाई थी जिसके बारे में मेरी चाची को कुछ भी पता नहीं होना था, वह एक दिन पहले यह दिखावा करती कि उसने अगले दिन सैर पर जाने का मन बना लिया है। अविश्वासी फ्रांस्वा को न केवल मेरी चाची के कपड़े पहले से तैयार करने, बहुत समय से रखे हुए कपड़ों को हवा देने, बल्कि एक गाड़ी का इंतजाम करने और दिन के सभी विवरणों को पंद्रह मिनट के भीतर व्यवस्थित करने का आदेश दिया गया था। जब फ्रांस्वा, आश्वस्त या कम से कम विचलित होकर, मेरी चाची के सामने अपनी बनाई योजना को स्वीकार करने के लिए मजबूर हुई, तभी मेरी चाची ने सार्वजनिक रूप से अपनी योजना को छोड़ दिया, ताकि, जैसा कि उन्होंने कहा, फ्रांस्वा की व्यवस्थाओं में हस्तक्षेप न हो। इसी तरह, ताकि अल्बर्टीन को यह विश्वास न हो कि मैं अतिशयोक्ति कर रहा हूँ और उसे इस विचार में यथासंभव आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने के लिए कि हम अलग होने वाले हैं, मैंने अपने द्वारा दिए गए प्रस्ताव से स्पष्ट निष्कर्ष निकालते हुए, उस समय का अनुमान लगाना शुरू कर दिया था। कल से शुरू होने वाला था और हमेशा के लिए चलने वाला था, वह समय जिसमें हम अलग हो जाएंगे, अल्बर्टीन से वही विनती करते हुए मानो हमारा मेल-मिलाप तुरंत नहीं होने वाला था। एक सेनापति की तरह जो मानता है कि यदि किसी छल को दुश्मन को धोखा देने में सफल होना है तो उसे चरम सीमा तक ले जाना चाहिए, मैंने इस छल में अपनी संवेदनशीलता का लगभग उतना ही उपयोग किया जितना कि यह वास्तविक होता। इस काल्पनिक विदाई के दृश्य ने मुझे लगभग उतना ही दुख

दिया जितना कि यह वास्तविक होता, शायद इसलिए कि अभिनेताओं में से एक, अल्बर्टीन ने इसे वास्तविक मानकर दूसरे के भ्रम को और बढ़ा दिया था। जबकि हम दिन-प्रतिदिन जी रहे थे, एक ऐसे दिन में जो, भले ही दर्दनाक हो, फिर भी सहनीय था, आदतों के बोझ और इस निश्चितता से ज़मीन पर टिका हुआ था कि कल, यदि वह यातना का दिन साबित हो, तो उसमें उस व्यक्ति की उपस्थिति होगी जो सर्वोत्कृष्ट है, यहाँ मैं मूर्खतापूर्ण ढंग से उस दमनकारी जीवन को नष्ट कर रहा था। यह सच है कि मैं इसे केवल एक दिखावटी तौर पर, लेकिन इतना ही मुझे दुखी करने के लिए काफी था; शायद इसलिए कि हम जो दुख भरे शब्द बोलते हैं, झूठ बोलते समय भी, उनमें अपना दुख समाया होता है और वह हमारे भीतर गहराई तक समा जाता है; शायद इसलिए कि हम यह महसूस नहीं करते कि विदाई का दिखावा करके हम उस पल की प्रत्याशा पैदा कर देते हैं जो निश्चित रूप से बाद में आएगा; तब हम निश्चित नहीं हो सकते कि हमने उस तंत्र को सक्रिय नहीं कर दिया है जो उसे घटित होने देगा। हर दिखावे में, चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, इस बात की अनिश्चितता का तत्व होता है कि जिसे हम धोखा दे रहे हैं वह क्या करने वाला है। अगर विदाई का यह दिखावा सचमुच विदाई में बदल जाए! हम इस संभावना पर विचार भी नहीं कर सकते, चाहे यह कितना भी असंभव क्यों न लगे, दिल कांपने लगता है। हम दुगनी चिंता में हैं, क्योंकि विदाई उस समय होगी जब यह असहनीय होगी, जब हमें उस महिला ने इतना दुख दिया होगा जो हमें छोड़कर जा रही होगी, इससे पहले कि वह ठीक हो पाए, या कम से कम हमें शांत कर पाए। संक्षेप में, हमारे पास अब वह ठोस आधार नहीं बचा है जिस पर हम अपने दुख में भी टिके रहते हैं। हमने जानबूझकर खुद को वंचित कर दिया है। हमने स्वयं को इससे अलग कर लिया है, आज के दिन को असाधारण महत्व दिया है, इसे बीते और बीते दिनों से अलग कर दिया है; यह किसी विदाई के दिन की तरह बिना जड़ के तैरता रहता है; हमारी कल्पना, जो आदत से लकवाग्रस्त नहीं थी, जागृत हो उठी है, हमने अचानक अपने रोजमर्रा के प्रेम में भावुक सपनों को जोड़ दिया है जो इसे बहुत बढ़ा देते हैं, हमारे लिए एक ऐसी उपस्थिति को अपरिहार्य बना देते हैं जिस पर वास्तव में अब हम भरोसा नहीं कर सकते। निस्संदेह, भविष्य के लिए उस उपस्थिति के प्रति स्वयं को आश्वस्त करने के लिए ही हमने इसके बिना काम चलाने के भ्रम में लिप्त हो गए हैं। लेकिन इस भ्रम में हम स्वयं ही फंस गए हैं, हम फिर से पीड़ा भोगने लगे हैं क्योंकि

हमने कुछ नया, अपरिचित बना दिया है जो उन उपचारों से मिलता-जुलता है जो समय के साथ उस बीमारी को ठीक करने के लिए नियत हैं जिससे हम पीड़ित हैं, लेकिन जिनके पहले प्रभाव इसे और भी बदतर बना देते हैं।

मेरी आँखों में आँसू थे, ठीक वैसे ही जैसे उन लोगों के होते हैं जो अपने शयनकक्ष में अकेले बैठकर, अपने ध्यान के भटकते हुए किसी प्रियजन की मृत्यु की कल्पना करते हैं और उस दुःख का इतना विस्तृत चित्र बना लेते हैं कि अंततः वे उसे महसूस करने लगते हैं। और जैसे-जैसे मैं अल्बर्टीन को यह सलाह देता गया कि हमारे बिछड़ने के बाद उसे मेरे साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, मुझे ऐसा लग रहा था मानो हम सुलह के कगार पर न हों। इसके अलावा, क्या मुझे इतना यकीन था कि मैं यह सुलह करा सकता हूँ, अल्बर्टीन को मेरे साथ जीवन बिताने के विचार में वापस ला सकता हूँ, और अगर मैं कुछ समय के लिए सफल हो भी गया, तो क्या उस दृश्य ने उसके मन से जो उदासी दूर कर दी थी, वह फिर से नहीं लौटेगी? मैं खुद को भविष्य का स्वामी महसूस कर रहा था, लेकिन खुद पर विश्वास नहीं कर पा रहा था, क्योंकि मुझे एहसास था कि यह अनुभूति केवल इस तथ्य के कारण थी कि भविष्य अभी अस्तित्व में नहीं था, और इसलिए मैं उसकी अनिवार्यता से कुचल नहीं गया था। संक्षेप में, झूठ बोलते हुए शायद मैंने अपने शब्दों में अनुमान से कहीं अधिक सच्चाई छिपा रखी थी। इसका एक उदाहरण मुझे अभी-अभी मिला, जब मैंने अल्बर्टीन से कहा कि मैं उसे जल्दी भूल जाऊँगी; गिलबर्ट के मामले में मेरे साथ सचमुच यही हुआ था, जिससे अब मैं मिलने नहीं जाती थी, किसी दुःख से नहीं, बल्कि एक बोझिल कर्तव्य से बचने के लिए। और निश्चित रूप से मुझे दुःख हुआ था जब मैंने गिलबर्ट को लिखा कि मैं अब और नहीं आऊँगी, और मैं उससे केवल कभी-कभार ही मिलने जाती थी। जबकि अल्बर्टीन का सारा समय मेरा था, और प्रेम में किसी भावना को छोड़ना किसी आदत को छोड़ने से कहीं आसान होता है। लेकिन हमारे बिछड़ने के बारे में ये सभी दर्द भरे शब्द, अगर मुझे इन्हें कहने की शक्ति इसलिए मिली होती क्योंकि मैं जानती थी कि ये असत्य हैं, तो भी अल्बर्टीन के होठों पर ये सच्चे लग रहे थे जब मैंने उसे ये कहते सुना: "आह! मैं वादा करती हूँ, मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देखूँगी। तुम्हें इस तरह रोते देखने से तो कुछ भी बेहतर है, मेरे प्रिय। मैं तुम्हें कोई दुख नहीं देना चाहती। क्योंकि यही होना है, हम फिर कभी नहीं मिलेंगे।" वे सच्चे थे, क्योंकि वे मुझसे नहीं निकल सकते थे, क्योंकि एक

तो, अल्बर्टीन मेरे लिए दोस्ती से बढ़कर कुछ भी नहीं महसूस करती थी, इसलिए उन शब्दों के त्याग की कीमत उसे कम चुकानी पड़ी; इसके अलावा, बिछड़ने के दृश्य में, जो व्यक्ति वास्तव में प्यार में नहीं होता, वही कोमल बातें कहता है, क्योंकि प्यार सीधे तौर पर व्यक्त नहीं होता। क्योंकि, अंत में, मेरे आँसू, जो एक महान प्रेम में बहुत मामूली बात होते, उसे लगभग असाधारण लगे और उसे अभिभूत कर दिया, उस मित्रता की अवस्था में ले गए जिसमें वह रहती थी, एक ऐसी मित्रता जो उसके लिए मेरी मित्रता से कहीं अधिक गहरी थी, जैसा कि उसने अभी कहा था, जो शायद पूरी तरह से गलत नहीं था, क्योंकि प्रेम की हजारों दयालुताएँ अंततः उस व्यक्ति में, जो इसे महसूस किए बिना प्रेरित करता है, एक ऐसा स्नेह, एक ऐसी कृतज्ञता जगा सकती हैं जो उस भावना से कम स्वार्थी होती है जिसने उन्हें प्रेरित किया था, जो शायद वर्षों के वियोग के बाद, जब पूर्व प्रेमी में उस भावना का कुछ भी शेष नहीं रहता, तब भी प्रेमिका में बनी रहती है।

“मेरी प्यारी अल्बर्टीन,” मैंने उत्तर दिया, “तुम्हारा यह वादा करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। खैर, कम से कम पहले कुछ वर्षों तक, मैं उन जगहों से दूर रहूँगा जहाँ तुमसे मेरी मुलाकात हो सकती है। तुम्हें पता नहीं कि तुम इस साल बालबेक जाओगी या नहीं? क्योंकि अगर ऐसा है तो मैं भी वहाँ न जाने का इंतज़ाम करूँगा।” लेकिन अब, अगर मैं इसी तरह आगे बढ़ता रहा, अपने झूठे वादों से भविष्य की कल्पना करता रहा, तो इसका उद्देश्य अल्बर्टीन में भय पैदा करना और खुद को दुखी करना दोनों ही था। जैसे कोई व्यक्ति, जिसके पास पहले तो अपना आपा खोने का कोई ठोस कारण नहीं होता, अपनी ही आवाज़ से पूरी तरह मदहोश हो जाता है, और अपने उस क्रोध में बह जाता है जो उसकी शिकायत से नहीं, बल्कि लगातार बढ़ता जा रहा होता है, ठीक वैसे ही मैं भी अपनी बदहाली की ढलान पर तेज़ी से नीचे गिरता जा रहा था, एक गहरे निराशा की ओर, और उस व्यक्ति की तरह निष्क्रिय था जो ठंड की जकड़न को महसूस करता है, उसका विरोध करने का कोई प्रयास नहीं करता और यहाँ तक कि कांपने में एक तरह का आनंद पाता है। और अगर अब मुझमें आखिरकार, जैसा कि मैंने पूरी तरह से सोचा था, खुद को नियंत्रित करने, प्रतिक्रिया करने और अपनी प्रवृत्ति को पलटने की शक्ति आ गई थी, तो यह अल्बर्टीन द्वारा मेरे लौटने पर किए गए इतने अस्वाभाविक स्वागत से हुए दुख से कहीं अधिक, उस पीड़ा से थी जो मैंने एक काल्पनिक अलगाव की औपचारिकताओं

की कल्पना करने, उन्हें रेखांकित करने का दिखावा करने, और उसके परिणामों का पूर्वाभास करने से महसूस की थी, और अब अल्बर्टीन का चुंबन, जब उसे शुभ रात्रि कहने का समय आएगा, तो मुझे सांत्वना देगा। किसी भी हालत में, यह उसने अपनी मर्जी से शुभ रात्रि नहीं कही होगी, क्योंकि इससे उस घृणा को और अधिक कठिन बना दिया होता जिसके द्वारा मैं उसे हमारे बिछड़ने के विचार को छोड़ने के लिए मना रहा था। और इसलिए मैं उसे याद दिलाता रहा कि शुभ रात्रि कहने का समय बहुत पहले ही बीत चुका है, एक ऐसी विधि जिसने मुझे पहल करने का अधिकार देकर इसे कुछ और समय के लिए टालने में सक्षम बनाया। और इस प्रकार मैंने अल्बर्टीन से पूछे जा रहे प्रश्नों में देर रात होने और हमारी थकावट का जिक्र किया। "मुझे नहीं पता मैं कहाँ जाऊँगी," उसने आखिरी सवाल का जवाब चिंता भरे स्वर में दिया। "शायद मैं टूरेन जाऊँ, अपनी मौसी के घर।" और उसका यह पहला सुझाव मुझे स्तब्ध कर गया, मानो यह हमारे अंतिम अलगाव को निश्चित रूप से साकार करने की शुरुआत कर रहा हो। उसने कमरे में चारों ओर देखा, पियानोला और नीले साटन की कुर्सियों को। "मैं अब भी यह स्वीकार नहीं कर पा रही हूँ कि मैं यह सब फिर कभी नहीं देख पाऊँगी, न कल, न परसों, न कभी। बेचारा छोटा सा कमरा। यह मुझे बिलकुल असंभव लगता है; मैं इसे समझ ही नहीं पा रही हूँ।" "ऐसा होना ही था; तुम यहाँ दुखी थी।" "नहीं, वास्तव में, मैं दुखी नहीं थी, अब मैं दुखी होऊँगी।" "नहीं, मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ, यह तुम्हारे लिए बेहतर है।" "शायद तुम्हारे लिए!" मैं खालीपन में टकटकी लगाए घूरने लगी, मानो अत्यधिक झिझक से परेशान होकर, मैं अपने मन में आए किसी विचार पर विचार कर रही हूँ। फिर अचानक: "सुनो, अल्बर्टीन, तुम कहती हो कि तुम यहाँ खुश हो, तुम दुखी होने वाली हो।" "क्यों नहीं, बिल्कुल।" "यह सुनकर मुझे बहुत बुरा लगा; क्या तुम चाहती हो कि हम कुछ हफ़्ते और कोशिश करें? कौन जानता है, हफ़्ते दर हफ़्ते, शायद हम लंबे समय तक साथ रह सकें; तुम जानती हो कि कुछ अस्थायी व्यवस्थाएँ स्थायी हो जाती हैं।" "ओह, आप कितनी दयालु हैं!" "लेकिन अगर ऐसा है तो यह हास्यास्पद है कि हम घंटों तक बिना बात के खुद को दुखी करते रहें, यह ऐसा है जैसे लंबी यात्रा की सारी तैयारी कर लें और फिर घर पर ही रह जाएँ। मैं दुख से चूर हूँ।" मैंने उसे अपनी गोद में बिठाया, मैंने बर्गोट की पांडुलिपि ली जिसे वह बहुत चाहती थी और उसके कवर पर लिखा: "मेरी प्यारी अल्बर्टीन के लिए, नए जीवन की याद में।" "अब," मैंने उससे कहा, "जाओ

और कल तक सो जाओ, मेरी प्यारी, क्योंकि तुम थक गई होगी।" "फिर भी मुझे बहुत खुशी है।" "क्या तुम मुझसे थोड़ा सा भी प्यार करती हो?" "पहले से सौ गुना अधिक।"

अगर मैंने इस छोटे से नाटक को मंच पर एक वास्तविक दृश्य का रूप न दिया होता, तो शायद मैं इस पर प्रसन्न होकर गलत होता। अगर हमने सिर्फ़ जुदाई की बात की होती, तब भी यह एक गंभीर मामला होता। इस तरह की बातचीत में, हम सोचते हैं कि हम न केवल बेईमानी से बोल रहे हैं, जो सच है, बल्कि खुलकर भी बोल रहे हैं। जबकि आम तौर पर, भले ही हमें पता न हो, ये बातें हमारी मर्ज़ी के बिना ही दबी आवाज़ में कही जाती हैं; उस तूफ़ान की पहली आहट जिसका हमें अंदाज़ा भी नहीं होता। असल में, ऐसे समय में हम जो व्यक्त करते हैं, वह हमारी इच्छा के बिल्कुल विपरीत होता है (जो कि अपने प्रिय के साथ हमेशा के लिए जीना है), लेकिन साथ रहने की वह असंभवता भी होती है जो हमारे रोज़ाना के दुख का कारण है, एक ऐसा दुख जिसे हम बिछड़ने के दुख से बेहतर मानते हैं, जो अंततः, हमारी मर्ज़ी के बिना भी, हमें अलग कर देगा। आम तौर पर, ऐसा तुरंत नहीं होता। आम तौर पर ऐसा होता है—जैसा कि हम आगे देखेंगे, अल्बर्टीन के मामले में ऐसा नहीं था—कि जिन बातों पर हमें विश्वास नहीं हुआ, उनके कुछ समय बाद हम जानबूझकर, बिना किसी पीड़ा के, अस्थायी रूप से अलग होने का एक अस्पष्ट प्रयास करते हैं। हम उस महिला से कहते हैं, ताकि बाद में वह हमारी संगति में अधिक प्रसन्न रहे, और हम भी कुछ समय के लिए निरंतर चिंताओं और थकान से मुक्त हो सकें, कि वह हमारे बिना चली जाए, या हमें भी उसके बिना कुछ दिनों के लिए कहीं और जाने दे। ये वे पहले दिन होते हैं जो हमने—काफी समय से—उससे दूर बिताए होते हैं, मानो यह हमारे लिए असंभव सा लगता था। बहुत जल्द वह लौटकर हमारे पास आ जाती है। लेकिन यह अलगाव, भले ही छोटा हो, पर वास्तविक हो जाता है, इतना मनमाना नहीं होता, इतना निश्चित नहीं होता कि यही एकमात्र अलगाव हो जो हमारे मन में हो। वही दुख फिर से शुरू हो जाते हैं, साथ रहने की वही कठिनाई बढ़ जाती है, बस बिछड़ना अब पहले जितना कठिन नहीं रह जाता; हमने इसका जिक्र करना शुरू कर दिया है, और फिर इसे सौहार्दपूर्ण ढंग से व्यवहार में भी लाया है। लेकिन ये केवल प्रारंभिक प्रयास हैं जिनकी प्रकृति को हम अभी तक पहचान नहीं पाए हैं। फिलहाल, क्षणिक और मुस्कुराते हुए अलगाव के बाद

वह भयानक और अंतिम अलगाव आएगा, जिसके लिए हमने अनजाने में ही रास्ता तैयार कर दिया है।

"पांच मिनट में मेरे कमरे में आना और मुझे तुम्हारा थोड़ा सा रूप देखने देना, मेरे प्यारे बेटे। तुम दयालुता से परिपूर्ण हो। लेकिन उसके बाद मैं तुरंत सो जाऊंगी, क्योंकि मैं लगभग मर चुकी हूँ।" जब मैं उसके कमरे में दाखिल हुई, तो सचमुच एक मृत महिला ही मेरे सामने थी। लेटते ही वह सो गई थी, उसके शरीर पर कफ़न की तरह लिपटी चादरें, अपनी भव्य तहों के साथ, पत्थर जैसी कठोरता धारण कर चुकी थीं। ऐसा लग रहा था मानो मध्य युग के कुछ अंतिम न्याय के दृश्यों की तरह, उसका सिर ही कब्र से बाहर निकल रहा हो, मानो नींद में ही महादूत के तुरही की प्रतीक्षा कर रहा हो। नींद से चौंका हुआ उसका सिर लगभग पीछे की ओर झुक गया था, उसके बाल खड़े हो गए थे। और जब मैंने वहाँ फैले हुए उस भावहीन शरीर को देखा, तो मैंने स्वयं से पूछा कि यह कौन सी लघुगणकीय सारणी है कि इसमें शामिल सभी क्रियाएँ, कोहनी के हल्के धक्के से लेकर स्कर्ट के स्पर्श तक, मुझे अंतरिक्ष और समय में अनंत बिंदुओं तक फैली हुई, और समय-समय पर मेरी स्मृति में तीव्र पीड़ा पहुँचाने में सक्षम थीं, हालाँकि मैं जानता था कि ये क्रियाएँ उसमें आवेगों, इच्छाओं द्वारा निर्धारित थीं, जो किसी अन्य व्यक्ति में, स्वयं में पाँच वर्ष पहले या पाँच वर्ष बाद, मुझे बिल्कुल उदासीन छोड़ देतीं। यह सब एक झूठ था, लेकिन एक ऐसा झूठ जिसके लिए मेरे पास अपनी मृत्यु के अलावा कोई और समाधान खोजने का साहस नहीं था। और इसलिए मैं उस फर कोट में, जिसे मैंने वर्दुरिन्स के यहाँ से लौटने के बाद से नहीं उतारा था, उस झुके हुए शरीर के सामने बैठा रहा, वह आकृति किस बात का प्रतीक थी? मेरी मृत्यु का? मेरे प्रेम का? कुछ देर बाद मुझे उसकी नियमित साँसें सुनाई देने लगीं। मैं गया और ताजी हवा और चिंतन के उस सुखदायक उपचार को ग्रहण करने के लिए उसके बिस्तर के किनारे बैठ गया। फिर मैंने उसे जगाए बिना बहुत धीरे से खुद को अलग कर लिया।

इतनी देर हो चुकी थी कि सुबह मैंने फ्रांस्वा को चेतावनी दी कि जब उसे अल्बर्टीन के कमरे के दरवाजे के पास से गुजरना हो तो बहुत धीरे से कदम रखे। और फ्रांस्वा, जिसे यकीन था कि हमने रात भर मौज-मस्ती की है, व्यंग्यपूर्वक अन्य नौकरों को चेतावनी दी कि 'राजकुमारी को न जगाएं।' और यही एक बात थी जिससे मैं डरता था, कि फ्रांस्वा एक दिन खुद को संभाल

नहीं पाएगी, अल्बर्टीन के साथ बदतमीजी से पेश आएगी, और इससे हमारे जीवन में मुश्किलें खड़ी हो जाएंगी। फ्रांस्वा अब उस उम्र में नहीं थी, जब मेरी चाची द्वारा यूलाली के साथ उदारतापूर्वक व्यवहार किए जाने पर उसे दुख होता था, कि वह अपनी ईर्ष्या को साहस से सहन कर सके। इसने हमारी बूढ़ी नौकरानी के चेहरे को इस हद तक बिगाड़ दिया था, लकवा मार गया था कि कभी-कभी मैं खुद से पूछता था कि कहीं गुस्से के किसी विस्फोट के बाद उसे हल्का सा स्ट्रोक तो नहीं आ गया। इस तरह अल्बर्टीन की नींद का सम्मान करने के लिए कहने के बाद, मैं खुद सो नहीं पाया। मैंने अल्बर्टीन के मन की वास्तविक स्थिति को समझने का प्रयास किया। क्या उस घिनौने नाटक से, जो मैंने खेला था, वास्तव में कोई बड़ा खतरा टल गया था, और मेरे साथ रहने की उसकी इस आश्वासन के बावजूद कि वह बहुत खुश थी, क्या उसने सचमुच कभी-कभी स्वतंत्रता की लालसा महसूस की थी, या इसके विपरीत क्या मुझे उसकी बातों पर विश्वास करना चाहिए था? इन दोनों परिकल्पनाओं में से कौन सी सत्य थी? यदि ऐसा अक्सर मेरे साथ होता था, यदि यह मेरे लिए एक विशेष परिस्थिति थी कि मुझे अपने अतीत की किसी घटना को इतिहास के आयामों तक विस्तारित करना पड़े, जब मैं किसी राजनीतिक घटना को समझने का प्रयास करता था; इसके विपरीत, आज सुबह, सभी मतभेदों के बावजूद और इसके निहितार्थ को समझने के प्रयास में, मैंने रात भर के हमारे दृश्य को अभी-अभी घटी एक राजनयिक घटना से जोड़ना बंद नहीं किया। शायद मेरा ऐसा तर्क करना उचित था। क्योंकि यह अत्यंत संभव था कि, मेरी जानकारी के बिना, एम. डी चार्लस के उदाहरण ने मुझे उस झूठ बोलने के दृश्य में मार्गदर्शन किया हो जिसे मैंने उन्हें अक्सर इतने अधिकार के साथ निभाते देखा था; दूसरी ओर, क्या यह उनके निजी जीवन में उनकी जर्मन वंश की जन्मजात प्रवृत्ति का अचेतन समावेश था, जो छल से उकसाने वाली और अहंकार से आवश्यकता पड़ने पर युद्धप्रिय थी? कुछ व्यक्तियों, जिनमें मोनाको के राजकुमार भी शामिल थे, ने फ्रांसीसी सरकार को यह सुझाव दिया था कि यदि उसने एम. डेलकासे को नहीं हटाया, तो एक खतरनाक जर्मनी वास्तव में युद्ध की घोषणा कर देगा, जिसके बाद विदेश मंत्री को इस्तीफा देने के लिए कहा गया था। इस प्रकार फ्रांसीसी सरकार ने इस संभावना को स्वीकार कर लिया था कि यदि हम आत्मसमर्पण नहीं करते, तो जर्मनी हम पर युद्ध छेड़ सकता है। लेकिन अन्य लोगों का मानना था कि यह सब महज़ एक 'धोखा' था और यदि फ्रांस दृढ़ रहता

तो जर्मनी तलवार नहीं उठाता। निस्संदेह परिदृश्य न केवल भिन्न था, बल्कि लगभग विपरीत था, क्योंकि अल्बर्टीन ने अलगाव की धमकी नहीं दी थी; लेकिन कई धारणाओं ने मुझे यह विश्वास दिलाया कि वह इसके बारे में सोच रही थी, जैसा कि फ्रांस को जर्मनी के बारे में विश्वास दिलाया गया था। दूसरी ओर, यदि जर्मनी शांति चाहता था, तो फ्रांसीसी सरकार में यह धारणा पैदा करना कि वह युद्ध के लिए उत्सुक है, एक विवादास्पद और खतरनाक चाल थी। निश्चित रूप से, मेरा आचरण काफी कुशल था, यदि यह विचार कि मैं उससे संबंध तोड़ने का कभी फैसला नहीं करूँगा, अल्बर्टीन के मन में अचानक स्वतंत्रता की लालसा जगाने का कारण था। और क्या यह मानना मुश्किल नहीं था कि वह इन लालसाओं को महसूस नहीं करती थी, एक ऐसे गुप्त जीवन को नज़रअंदाज़ करना जो उसकी इस बुरी आदत को संतुष्ट करने के लिए समर्पित था, केवल इस बात पर ध्यान देने से कि जब उसे पता चला कि मैं वर्दुरिन परिवार से मिलने गया था तो वह कितनी क्रोधित थी, और फिर उसने कहा: "मुझे ऐसा ही लगा था," और फिर यह कहकर सब कुछ उजागर कर दिया: "क्या मैडम विंटेउइल वहाँ नहीं थीं?" इन सभी बातों की पुष्टि अल्बर्टीन की मैडम वर्दुरिन से हुई मुलाकात से हुई, जिसके बारे में एंड्री ने मुझे बताया था। लेकिन शायद फिर भी स्वतंत्रता की ये अचानक उठने वाली इच्छाएँ (मैंने खुद से कहा, जब मैंने अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध जाने की कोशिश की) विपरीत सिद्धांत के कारण थीं—मान लीजिए कि वे मौजूद थीं—या अंततः उसी सिद्धांत के कारण होंगी, यानी कि मेरा उससे शादी करने का कभी कोई इरादा नहीं था, कि जब मैंने अनजाने में ही हमारे आसन्न अलगाव का संकेत दिया, तब मैं सच कह रहा था, कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं एक दिन उससे अलग हो ही जाऊँगा, एक ऐसा विश्वास जिसकी पुष्टि उस दृश्य ने की जो मैंने रात भर में रचा था और जो अंततः उसके मन में यह संकल्प पैदा कर सकता था: "यदि यह एक दिन होना ही है, तो बेहतर है कि सब कुछ अभी ही समाप्त कर दिया जाए।" युद्ध की तैयारी, जिसे सबसे भ्रामक कहावत शांति की विजय सुनिश्चित करने का सबसे अच्छा तरीका बताती है, सबसे पहले दोनों विरोधियों में यह विश्वास पैदा करती है कि दूसरा अलगाव चाहता है, एक ऐसा विश्वास जो अलगाव को जन्म देता है, और जब यह हो जाता है, तो उनमें से प्रत्येक में यह विश्वास और मजबूत हो जाता है कि यह दूसरे ने ही चाहा है। भले ही धमकी सच्ची न हो, उसकी सफलता दोहराव को बढ़ावा देती है। लेकिन यह तय करना मुश्किल है कि कोई

झांसा किस हद तक सफल हो सकता है; अगर एक पक्ष हद से आगे बढ़ जाता है, तो दूसरा पक्ष, जो पहले झुक चुका था, अपनी बारी में आगे बढ़ता है; पहला पक्ष, अपनी रणनीति बदलने में असमर्थ, इस विचार का आदी हो चुका है कि टकराव से न डरने का दिखावा करना ही उससे बचने का सबसे अच्छा तरीका है (जो मैंने अल्बर्टीन के साथ रात भर किया था), और इसके अलावा अपने अहंकार में झुकने के बजाय हार मानना पसंद करता है, इसलिए वह तब तक धमकी देता रहता है जब तक कि दोनों में से कोई भी पीछे नहीं हट सकता। झांसा सच्चाई के साथ भी मिल सकता है, उसके साथ बारी-बारी से आ सकता है, और यह संभव है कि जो कल एक खेल था, वह कल हकीकत बन जाए। अंत में, ऐसा भी हो सकता है कि विरोधियों में से एक सचमुच युद्ध करने के लिए दृढ़ संकल्पित हो, उदाहरण के लिए, हो सकता है कि अल्बर्टीन का इरादा जल्द या बाद में इस जीवन को जारी न रखने का हो, या इसके विपरीत, यह विचार उसके मन में कभी आया ही न हो और यह सब मेरी कल्पना ने शुरू से अंत तक गढ़ा हो। उस सुबह जब वह सो रही थी, तब मैंने कई तरह की परिकल्पनाओं पर विचार किया। फिर भी, आखिरी परिकल्पना के बारे में मैं कह सकता हूँ कि उसके बाद के समय में मैंने कभी भी अल्बर्टीन से संबंध तोड़ने की धमकी नहीं दी, सिवाय इसके कि जब मुझे उसके मन में किसी तरह की बुरी आज़ादी का आभास हुआ। यह आभास उसने मुझसे ज़ाहिर नहीं किया, लेकिन मुझे लगा कि कुछ रहस्यमयी असंतोष, कुछ शब्द, कुछ हाव-भाव से यही आभास हो रहा था, और उसने मुझे इसका कोई दूसरा कारण बताने से इनकार कर दिया। तब भी, मैंने अक्सर बिना किसी संभावित अलगाव का संकेत दिए ही उन पर ध्यान दिया, यह उम्मीद करते हुए कि यह सिर्फ़ गुस्से का दौरा था जो उसी दिन खत्म हो जाएगा। लेकिन यह सिलसिला कभी-कभी हफ्तों तक बिना रुके जारी रहता था, जिसके दौरान अल्बर्टीन किसी विवाद को भड़काने के लिए उत्सुक प्रतीत होती थी, मानो उस समय किसी दूर-दराज के क्षेत्र में ऐसे सुख मौजूद थे जिनका उसे अनुभव था, और मेरे घर में उसके एकांतवास के कारण वह उनसे वंचित हो रही थी, और जो उसके समाप्त होने तक उसे प्रभावित करते रहेंगे, ठीक वैसे ही जैसे वायुमंडलीय परिवर्तन, जो हमारे घर की आग के पास भी, हमारी नसों को प्रभावित करते हैं, भले ही वे बालेरिक द्वीप समूह जितनी दूर घटित हो रहे हों।

आज सुबह जब अल्बर्टीन सो रही थी और मैं उसके मन में छिपे रहस्य को समझने की कोशिश कर रहा था, तभी मुझे अपनी माँ का एक पत्र मिला। उसमें उन्होंने श्रीमती डी सेविग्ने के शब्दों में अपनी चिंता व्यक्त की थी कि उन्हें हमारे फैसले के बारे में कुछ भी पता नहीं चला: "मुझे पूरा यकीन है कि वह शादी नहीं करेगा; लेकिन फिर उस लड़की को क्यों परेशान करें जिससे वह कभी शादी नहीं करेगा? उसे ऐसे दूल्हों को ठुकराने का जोखिम क्यों उठाना जिन्हें वह फिर कभी तिरस्कार से ही देखेगी? उस व्यक्ति के मन को क्यों परेशान करना जिसे टालना इतना आसान है?" माँ के इस पत्र ने मुझे हकीकत में वापस ला दिया। मैंने खुद से पूछा, "मैं क्या कर रहा हूँ, एक रहस्यमयी आत्मा की खोज कर रहा हूँ, एक चेहरे का अर्थ निकाल रहा हूँ और उन आशंकाओं से भयभीत हो रहा हूँ जिन्हें जानने की हिम्मत मैं नहीं कर पा रहा हूँ?" "मैं सपना देख रहा था, मामला बहुत सीधा है। मैं एक अनिर्णायक युवक हूँ, और यह उन शादियों में से एक है जिनके बारे में यह पता लगाने में समय लगता है कि वे होंगी या नहीं। इसमें अल्बर्टीन के लिए कुछ भी खास नहीं है।" इस विचार ने मुझे बहुत राहत दी, लेकिन वह राहत क्षणिक थी। बहुत जल्द ही मैंने मन ही मन कहा: "अगर हम किसी भी चीज़ को उसके सामाजिक पहलू से देखें, तो उसे अख़बार की आम गपशप तक सीमित किया जा सकता है। बाहर से देखने पर शायद मुझे इसे इसी तरह देखना चाहिए। लेकिन मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि जो सच है, कम से कम जो सच है, वह सब कुछ है जो मैंने सोचा है, जो मैंने अल्बर्टीन की आँखों में देखा है, जो डर मुझे सताते हैं, और जो समस्या मैं अल्बर्टीन के बारे में लगातार अपने मन में रखता हूँ। झिझकते दूल्हे और टूटी हुई सगाई की कहानी शायद इसी से मेल खाती है, जैसे किसी बुद्धिमान पत्रकार द्वारा नाट्य प्रदर्शन की रिपोर्ट हमें इब्सन के किसी नाटक का विषय दे सकती है। लेकिन रिपोर्ट किए गए तथ्यों से परे भी कुछ है। यह सच है कि यह दूसरी चीज़ शायद मौजूद है, अगर हम इसे पहचान सकें, तो सभी झिझकते दूल्हों में और सभी लंबी खिंचती सगाईयों में, क्योंकि शायद हमारे रोज़मर्रा के जीवन में रहस्य का एक तत्व मौजूद है।" दूसरों के जीवन में इसकी उपेक्षा करना मेरे लिए संभव था, लेकिन अल्बर्टीन का जीवन और अपना जीवन मैं अपने भीतर से जी रहा था।

आधी रात के उस दृश्य के बाद अल्बर्टीन ने मुझसे उतना ही कहा जितना उसने उससे पहले कहा था: "मैं जानती हूँ कि तुम मुझ पर भरोसा नहीं करते, मैं तुम्हारे संदेह दूर करने की

कोशिश करूँगी।" लेकिन यह विचार, जिसे उसने कभी शब्दों में व्यक्त नहीं किया, उसके सबसे मामूली कार्यों का भी स्पष्टीकरण हो सकता था। वह न केवल एक पल के लिए भी अकेली नहीं रहती थी, ताकि अगर मैं उसके अपने कथनों पर विश्वास न करूँ तो मुझे पता रहे कि वह क्या कर रही थी, बल्कि जब उसे एंड्री, या गैराज, या अस्तबल या कहीं और फोन करना होता था, तो वह बहाना बनाती थी कि अकेले खड़े होकर फोन का इंतजार करना कितना उबाऊ है, खासकर लड़कियों द्वारा आपका नंबर देने में लगने वाले समय को देखते हुए, और इस बात का ध्यान रखती थी कि मैं ऐसे समय में उसके साथ रहूँ, या अगर मैं न रहूँ तो फ्रांस्वा, मानो उसे डर हो कि मैं फोन पर होने वाली उन निंदनीय बातचीत की कल्पना कर लूँ जिनमें वह गुप्त मुलाकातों का जिक्र करती हो। अफसोस, इन सब बातों से मेरा मन शांत नहीं हुआ। मेरा पूरा दिन निराशा से भरा रहा। ऐमे ने मुझे एस्थर की तस्वीर वापस भेज दी थी, साथ में यह संदेश भी था कि वह वह व्यक्ति नहीं है। इस प्रकार अल्बर्टीन के कुछ अन्य घनिष्ठ मित्र भी थे, इस लड़की के अलावा, जिसे मेरी बात को गलत समझने के कारण, मैंने किसी और ही बात का जिक्र करते हुए, अपनी तस्वीर दे दी थी। मैंने यह तस्वीर ब्लोच को वापस भेज दी। मैं वास्तव में वह तस्वीर देखना चाहता था जो अल्बर्टीन ने एस्थर को दी थी। उसमें उसने क्या पहना था? शायद उसका सीना खुला हुआ था, मुझे क्या पता। लेकिन मैंने अल्बर्टीन से इसका जिक्र करने की हिम्मत नहीं की (क्योंकि तब ऐसा लगता कि मैंने तस्वीर नहीं देखी है), और न ही ब्लोच से, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि वह सोचे कि मुझे अल्बर्टीन में दिलचस्पी है। और यह जीवन, जिसे मेरे संदेह और उसकी गुलामी के बारे में जानने वाला कोई भी व्यक्ति मेरे और अल्बर्टीन के लिए पीड़ादायक समझ सकता था, बाहर से फ्रांस्वा द्वारा अयोग्य सुखों का जीवन माना जाता था, जिसका पूरा लाभ उस 'चालबाज' और (जैसा कि फ्रांस्वा ने कहा, स्त्रीलिंग रूप का अधिक प्रयोग करते हुए, क्योंकि वह महिलाओं से अधिक ईर्ष्या करती थी) 'धोखेबाज' ने चालाकी से उठाया था। वास्तव में, फ्रांस्वा ने मेरे संपर्क में आने से अपनी शब्दावली को नए शब्दों से समृद्ध किया था, लेकिन उन्हें अपनी शैली में ढाल लिया था, इसलिए उसने अल्बर्टीन के बारे में कहा कि उसने कभी किसी ऐसे 'विश्वासघाती' व्यक्ति को नहीं जाना, जो नाटक करके 'मेरा पैसा निकालने' में इतनी कुशल हो (जिसे फ्रांस्वा, जो विशेष को सामान्य और सामान्य को विशेष समझने की उतनी ही प्रवृत्त थी और जिसे नाट्य कला के

विभिन्न प्रकारों का बहुत अस्पष्ट ज्ञान था, 'मूक अभिनय' कहती थी)। शायद अल्बर्टीन और मेरे जीवन की वास्तविक प्रकृति के बारे में मेरी इस गलती के लिए मैं स्वयं कुछ हद तक स्वयं भी जिम्मेदार था, क्योंकि फ्रांस्वा से बात करते समय मैंने बड़ी चतुराई से इसके अस्पष्ट संकेत दिए थे, शायद उसे चिढ़ाने के लिए या यह दिखाने के लिए कि अगर मुझे प्यार नहीं मिल रहा है, तो कम से कम मैं खुश तो हूँ। फिर भी, मेरी ईर्ष्या, अल्बर्टीन पर मेरी नज़र, जिसके बारे में मैं फ्रांस्वा को ज़रा भी शक न होने देने के लिए कुछ भी देने को तैयार था, उसे जल्द ही पता चल गया। यह उसे उस अंतर्ज्ञान से निर्देशित हुआ, जैसे कोई विचार-पाठक आँखों पर पट्टी बांधकर छिपी हुई वस्तु को खोज लेता है, जो मेरे लिए कष्टदायक किसी भी बात को भाँप लेता था, और जो मेरे द्वारा उसे विचलित करने की आशा में बोले गए झूठों से भी विचलित नहीं होता था। साथ ही, उस प्रत्यक्षदर्शी घृणा ने भी उसे उकसाया - यहाँ तक कि अपने दुश्मनों को उनकी वास्तविकता से कहीं अधिक समृद्ध और कुशल पाखंडी मानने से भी अधिक - उस रहस्य को उजागर करने के लिए जो उनके पतन का कारण बन सकता था और उनके विनाश को गति दे सकता था। फ्रांस्वा ने अल्बर्टीन के साथ कभी कोई झगड़ा नहीं किया। लेकिन मैं फ्रांस्वा की बातों को घुमा-फिराकर कहने की कला से वाकिफ थी, वह जानती थी कि किसी भी महत्वपूर्ण स्थिति का फायदा कैसे उठाया जाता है, और मुझे यकीन नहीं होता कि उसने अल्बर्टीन को यह बताने के प्रलोभन का विरोध किया होगा कि वह घर में कितनी नीच भूमिका निभा रही है, और उसे उस कैद का चालाकी से बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करके पागल कर दिया होगा जिसमें मेरी मालकिन को रखा गया था। एक बार मैंने फ्रांस्वा को बड़े-बड़े चश्मे पहने हुए मेरे कागजों में से कुछ ढूंढते हुए देखा और उनमें वह पन्ना वापस रख दिया जिस पर मैंने स्वान और ओडेट के बिना उसकी पूरी तरह से असमर्थता के बारे में एक कहानी लिखी थी। क्या उसने जानबूझकर उसे अल्बर्टीन के कमरे में छोड़ दिया था? इसके अलावा, फ्रांस्वा के उन सभी इशारों के ऊपर, जो केवल धीमी आवाज़ में बड़बड़ाहट और कपटपूर्ण संगीत रचना मात्र थे, यह संभव है कि वर्दुरिन परिवार की आरोप लगाने वाली और निंदनीय आवाज़ और भी ऊँची, स्पष्ट और ज़ोरदार हो उठी हो, जो इस बात से नाराज़ थे कि अल्बर्टीन अनजाने में मुझे अपने पास रख रही थी और मैं स्वेच्छा से उसे उस छोटे से परिवार से दूर रख रहा था। जहाँ तक अल्बर्टीन पर खर्च किए जा रहे पैसों की बात है, तो मेरे लिए इसे फ्रांस्वा से छिपाना

लगभग असंभव था, क्योंकि मैं अपने किसी भी खर्च को उससे छिपा नहीं पाता था। फ्रांस्वा में कुछ ही कमियाँ थीं, लेकिन उन कमियों ने उसके भीतर ऐसी प्रतिभाएँ विकसित कर दी थीं, जो उन कमियों के उपयोग के बिना अक्सर उसमें नहीं होती थीं। उसकी सबसे बड़ी कमी यह थी कि वह हम द्वारा अपने अलावा अन्य लोगों पर खर्च किए गए हर पैसे के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहती थी। अगर मुझे कोई बिल चुकाना होता, कोई टिप देनी होती, तो मेरे कोने में जाने का कोई फायदा नहीं होता, वह कोई न कोई प्लेट सही जगह पर रख देती, कोई नैपकिन उठा लेती, जिससे उसे मेरे पास आने का बहाना मिल जाता। और चाहे मैं उसे कितनी ही कम देर के लिए रुकने देता, गुस्से में उसे भगा देने से पहले, यह औरत, जिसकी लगभग दृष्टि कमजोर हो चुकी थी, जो मुश्किल से अंकों का हिसाब लगा पाती थी, उसी निपुण बुद्धि से निर्देशित होकर, जिससे एक दर्जी आपको देखते ही आपके कोट के कपड़े की कीमत का अनुमान लगा लेता है, जबकि वह उसे छूने से खुद को रोक नहीं पाता, या जिससे एक चित्रकार रंगों के प्रभाव को समझ लेता है, फ्रांस्वा ने चुपके से देखा और तुरंत ही मेरे द्वारा दी जाने वाली राशि का हिसाब लगा लिया। और जब, ताकि वह अल्बर्टीन को न बता दे कि मैं उसके ड्राइवर को रिश्वत दे रहा हूँ, मैंने पहल की और टिप के लिए माफी मांगते हुए कहा: "मैं ड्राइवर के प्रति उदार होना चाहता था, इसलिए मैंने उसे दस फ्रैंक दिए"; फ्रांस्वा, निर्दयी, जिसके लिए एक नज़र, एक बूढ़े और लगभग अंधे बाज जैसी, ही काफी थी, ने जवाब दिया: "जी नहीं, महाशय ने उसे 43 फ्रैंक की टिप दी थी। उसने महाशय को बताया कि बिल 45 फ्रैंक था, महाशय ने उसे 100 फ्रैंक दिए, और उसने केवल 12 फ्रैंक वापस किए।" उसे टिप की राशि देखने और गिनने का समय मिल गया था, जो मुझे खुद नहीं पता थी। मैंने खुद से पूछा कि क्या अल्बर्टीन, खुद को किसी की निगरानी में महसूस करते हुए, उस अलगाव को अमल में नहीं लाएगी जिसकी मैंने उसे धमकी दी थी, क्योंकि जीवन अपने बदलते क्रम में हमारी कहानियों को हकीकत बना देता है। जब भी मैं किसी दरवाजे के खुलने की आवाज़ सुनता, तो मैं कांप उठता, ठीक वैसे ही जैसे मेरी दादी अपने आखिरी पलों में कांप उठती थीं जब मैं अपनी घंटी बजाता था। मुझे विश्वास नहीं था कि वह मुझे बिना बताए घर छोड़ देंगी, लेकिन यह मेरा अवचेतन मन था जो ऐसा सोचता था, ठीक वैसे ही जैसे मेरी दादी का अवचेतन मन घंटी की आवाज़ पर धड़कता था, जब वह अब होश में नहीं थीं। एक सुबह, मुझे अचानक यह आशंका

हुई कि वह न केवल घर छोड़कर चली गई है, बल्कि हमेशा के लिए चली गई है: मैंने अभी-अभी एक दरवाजे की आवाज सुनी थी जो मुझे उसके कमरे का दरवाजा लग रहा था। मैं दबे पांव कमरे की ओर बढ़ा, दरवाजा खोला और दहलीज पर खड़ा हो गया। धुंधली रोशनी में बिस्तर की चादरें अर्धवृत्ताकार रूप में फैली हुई थीं, वह अल्बर्टीन ही होगी जो झुकी हुई मुद्रा में, पैर और चेहरा दीवार की ओर करके सो रही थी। केवल, बिस्तर से बाहर निकलते हुए, उसके सिर के घने और काले बालों ने मुझे यह एहसास दिलाया कि वह वही है, उसने अपना दरवाजा नहीं खोला था, हिली भी नहीं थी, और मुझे लगा कि यह गतिहीन और जीवंत अर्धवृत्ताकार आकृति, जिसमें एक संपूर्ण मानव जीवन समाहित था और जो मेरे लिए एकमात्र मूल्यवान वस्तु थी, वह मेरे निरंकुश अधिकार में थी।

यदि अल्बर्टीन का उद्देश्य मेरी मानसिक शांति को बहाल करना था, तो वह आंशिक रूप से सफल रही; इसके अलावा, मेरी बुद्धि को इससे बेहतर कुछ नहीं चाहिए था कि वह मुझे यह सिद्ध कर दे कि मैं उसकी धूर्त योजनाओं के बारे में गलत था, जैसा कि शायद मैं उसकी दुष्ट प्रवृत्तियों के बारे में गलत था। निस्संदेह, मैंने उन तर्कों के महत्व को और बढ़ा दिया जो मेरी बुद्धि ने मुझे दिए थे, क्योंकि मैं उन्हें सही मानना चाहता था। लेकिन, यदि मुझे निष्पक्ष होना था और सत्य को समझने का अवसर प्राप्त करना था, जब तक कि हम यह स्वीकार न कर लें कि सत्य केवल पूर्वाभास या किसी अलौकिक संकेत से ही ज्ञात होता है, तो क्या मुझे स्वयं से यह नहीं कहना चाहिए कि यदि मेरी बुद्धि, मुझे स्वस्थ करने के प्रयास में, मेरी इच्छा से निर्देशित हुई, तो दूसरी ओर, मैडम विंटेउइल, अल्बर्टीन की दुर्गुणों, एक अलग जीवन जीने के उसके इरादे, उसके अलगाव की योजना, जो उसकी दुर्गुणों के परिणाम थे, के संबंध में, मेरी प्रवृत्ति, मुझे बीमार करने के प्रयास में, मेरी ईर्ष्या से गुमराह हो गई थी। इसके अलावा, अल्बर्टीन ने बड़ी चतुराई से मेरे कष्टों को दूर करके अपने एकांत को पूर्ण बना दिया था, जिससे धीरे-धीरे मेरा संदेह भी दूर हो गया। रात में जब मेरी बेचैनी लौट आती, तो मैं अल्बर्टीन की उपस्थिति में पहले जैसा सुकून पा सकता था। मेरे बिस्तर के पास बैठी वह मुझसे उन कपड़ों या उपहारों के बारे में बात करती थी जो मैं उसके जीवन को सुखमय बनाने और उसकी कैद को सुंदर बनाने के प्रयास में उसे लगातार देता रहता था। अल्बर्टीन ने पहले तो केवल कपड़ों और फर्नीचर के बारे में सोचा था। अब उसे चांदी में भी रुचि होने लगी थी। इसलिए मैंने एम. डी

चार्लस से पुराने फ्रांसीसी चांदी के बारे में पूछताछ की थी, और ऐसा इसलिए किया था क्योंकि जब हम एक नौका खरीदने की योजना बना रहे थे—एक ऐसी योजना जिसे अल्बर्टीन ने अव्यावहारिक मान लिया था, जैसा कि मैंने भी तब माना था जब मुझे उसकी सदाचारिता पर विश्वास होने लगा था, जिसके परिणामस्वरूप मेरी ईर्ष्या, जैसे-जैसे कम होती गई, अन्य इच्छाओं को नियंत्रित नहीं कर पाई जिनमें उसका कोई स्थान नहीं था और जिन्हें पूरा करने के लिए पैसे की भी आवश्यकता थी—हमने एहतियात के तौर पर, हालांकि उसे यह नहीं लगता था कि हम कभी नौका खरीद पाएंगे, एल्स्टिर से सलाह ली थी। अब, जैसे महिलाओं के पहनावे के मामले में, चित्रकार नौकाओं के साज-सज्जा का एक परिष्कृत और संवेदनशील आलोचक था। वह केवल अंग्रेजी फर्नीचर और पुरानी चांदी को ही स्वीकार करता था। इसी कारण से, बालबेक से लौटने के बाद से, अल्बर्टीन ने चांदी के कारीगरों की कला और पुराने शिल्पकारों की कारीगरी पर किताबें पढ़ना शुरू कर दिया था। लेकिन चूंकि हमारी पुरानी चांदी को दो बार पिघलाया गया था, उट्रेक्ट संधि के समय जब राजा ने स्वयं अपने महान सामंतों के लिए एक उदाहरण पेश करते हुए अपनी थाली का बलिदान दिया था, और फिर 1789 में, इसलिए अब यह अत्यंत दुर्लभ है। दूसरी ओर, यह सच है कि आधुनिक चांदी के कारीगरों ने ले पोंट-ऑक्स-चोक्स के चित्रों से इस पुरानी थाली की नकल करने में कामयाबी हासिल कर ली है, लेकिन एल्स्टिर इस आधुनिक प्राचीन वस्तु को एक सुसंस्कृत महिला के घर में, यहां तक कि एक तैरते हुए घर में भी, रखने लायक नहीं मानते थे। मुझे पता था कि अल्बर्टीन ने उन अद्भुत कृतियों का वर्णन पढ़ा था जो रोएलियर्स ने श्रीमती डू बैरी के लिए बनाई थीं। यदि इनमें से कोई भी वस्तु बची थी, तो वह उन्हें देखने के लिए बेताब थीं, और मैं उन्हें उन्हें देने के लिए। उन्होंने एक सुंदर संग्रह बनाना भी शुरू कर दिया था जिसे उन्होंने बड़े ही आकर्षक ढंग से एक कांच के बक्से में सजाया था और जिसे देखकर मैं भावुक और चिंतित हुए बिना नहीं रह सकता था, क्योंकि जिस कला से उन्होंने उन्हें सजाया था वह धैर्य, सरलता, घर की याद, भूलने की आवश्यकता से उपजी थी, जिसमें कैदी भी माहिर होते हैं। कपड़ों के मामले में, उस समय अल्बर्टीन को सबसे ज़्यादा फोर्टुनी द्वारा निर्मित हर चीज़ पसंद आ रही थी। ये फोर्टुनी गाउन, जिनमें से एक मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस को पहने हुए देखा था, वही थे जिनके बारे में एल्स्टिर ने कार्पैसियो और टिटियन के ज़माने की महिलाओं के शानदार वस्त्रों

के बारे में बताते हुए भविष्यवाणी की थी कि वे जल्द ही राख से उठकर भव्य रूप में वापस आएंगे, क्योंकि समय आने पर सब कुछ लौट आता है, जैसा कि सेंट मार्क के गुंबदों के नीचे लिखा है, और जहाँ वे बीजान्टिन स्तंभों के संगमरमर और जैस्पर के कलशों से पानी पीते हैं, वहाँ पक्षियों द्वारा घोषित किया गया है जो एक साथ मृत्यु और पुनरुत्थान का प्रतीक हैं। जैसे ही महिलाओं ने उन्हें पहनना शुरू किया, अल्बर्टीन को एल्स्टिर की भविष्यवाणी याद आ गई, उसने एक गाउन पाने की इच्छा जताई और हमें जाकर उसे चुनना था। ये गाउन, भले ही वे आज के ज़माने की उन असली प्राचीन वस्तुओं जैसे न हों जिनमें महिलाएं कुछ ज़्यादा ही सजग दिखती हैं और जिन्हें संग्रह में रखना बेहतर समझा जाता है (मैं भी अल्बर्टीन के लिए ऐसी ही वस्तुओं की तलाश में थी), फिर भी कृत्रिम या दिखावटी प्राचीन वस्तुओं जैसा प्रभाव नहीं डालते। सर्ट, बक्स्त और बेनोइस्ट के नाट्य डिज़ाइनों की तरह, जो उस समय रूसी बैले में कला के सबसे प्रिय कालों को पुनर्जीवित कर रहे थे—उनकी आत्मा से ओतप्रोत और फिर भी मौलिक कलाकृतियों की सहायता से—फोर्टुनी के ये गाउन, जो प्राचीन तो हैं लेकिन स्पष्ट रूप से मौलिक हैं, एक मंच की सजावट की तरह आँखों के सामने प्रस्तुत करते हैं, एक सजावट से भी कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से, क्योंकि सजावट कल्पना पर छोड़ दी गई थी। ये गाउन उस भव्य पूर्व से लदे वेनिस के दृश्य को दर्शाते हैं जहाँ से इन्हें लिया गया था, और ये स्वयं उस अवशेष से भी कहीं अधिक हैं जो संत मार्क के मंदिर में सूर्य और पगड़ीधारी सिरों के समूह का संकेत देते हैं, खंडित, रहस्यमय और पूरक रंगों से परिपूर्ण। उन दिनों की हर चीज़ नष्ट हो गई थी, लेकिन सब कुछ फिर से जीवित हो उठा, मानो उनके बीच के खालीपन को उस दृश्य की भव्यता और जीवन की हलचल से भर दिया हो, डॉजेस की महिलाओं द्वारा पहने गए वस्त्रों के विस्तृत और संरक्षित रूप से पुन: प्रकट होने से। मैंने इस विषय पर श्रीमती डी गुएरमांटेस से एक-दो बार सलाह लेने की कोशिश की थी। लेकिन डचेस को ऐसे वस्त्रों में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी जो एक 'पोशाक' बनाते हों। खुद उनके पास कई पोशाकें थीं, फिर भी हीरे जड़े काले मखमल में वे सबसे खूबसूरत लगती थीं। और फोर्टुनी जैसे गाउन के बारे में, उनकी सलाह का कोई खास महत्व नहीं था। इसके अलावा, अगर मैं उनसे सलाह मांगती, तो मुझे झिझक होती, कहीं वे यह न सोच लें कि मैं उनसे तभी मदद मांगती हूँ जब मुझे उनकी ज़रूरत होती है, जबकि मैं लंबे समय से उनके साप्ताहिक निमंत्रणों को ठुकराती आ

रही थी। इतना ही नहीं, मुझे इतने सारे निमंत्रण केवल उन्हीं से नहीं मिलते थे। निश्चित रूप से, वे और कई अन्य महिलाएं हमेशा मेरे प्रति अत्यंत दयालु रही थीं। लेकिन मेरे एकांतवास ने निस्संदेह उनकी मेहमाननवाज़ी को दस गुना बढ़ा दिया था। ऐसा लगता है कि हमारे सामाजिक जीवन में, प्रेम में घटित होने वाली घटनाओं की एक छोटी सी झलक के रूप में, किसी पुरुष के लिए खुद को आकर्षक बनाने का सबसे अच्छा तरीका है खुद को अलग रखना। एक पुरुष किसी स्त्री का दिल जीतने के लिए अपनी हर संभव खूबी का हिसाब लगाता है, दिन भर कपड़े बदलता रहता है, अपने पहनावे पर पूरा ध्यान देता है, फिर भी वह स्त्री उसे वह ध्यान नहीं देती जो उसे उस दूसरी स्त्री से मिलता है जिसके साथ वह विश्वासघात करके, भले ही वह उसके सामने बेढंगे कपड़े पहनकर और बिना किसी दिखावे के पेश आता है, हमेशा के लिए उसका दिल जीत लेता है। इसी तरह, अगर किसी पुरुष को इस बात का अफसोस हो कि समाज में उसे पर्याप्त सम्मान नहीं मिला, तो मैं उसे और अधिक लोगों से मिलने या और भी सजग रहने की सलाह नहीं दूंगी, बल्कि मैं उसे कहूंगी कि वह कोई भी निमंत्रण स्वीकार न करे, अपने कमरे में बंद रहे, किसी को भी अंदर न आने दे, और फिर उसके दरवाजे के बाहर लोगों की कतार लग जाएगी। या यूं कहें कि मैं उसे ऐसा नहीं कहूंगी। क्योंकि यह सफलता का एक ऐसा मार्ग है जो केवल प्रेम के मार्ग की तरह ही सफल होता है, यानी यदि आपने इसे उस उद्देश्य से नहीं अपनाया है। उदाहरण के लिए, यदि आप अपने कमरे में इसलिए बंद रहते हैं क्योंकि आप गंभीर रूप से बीमार हैं, या बीमार होने का संदेह है, या आपने अपने साथ एक प्रेमिका को बंद रखा है जिसे आप समाज से अधिक पसंद करते हैं (या इन सभी कारणों से एक साथ), तो यह किसी अन्य व्यक्ति को, जो उस महिला के अस्तित्व से अनभिज्ञ है, और केवल इसलिए कि आप उससे मिलने से इनकार करते हैं, आपको उन सभी लोगों से अधिक पसंद करने और आपसे जुड़ने का औचित्य प्रदान करेगा जो खुद को पेश करते हैं।

एक शाम मैंने अल्बर्टीन से कहा, "हमें जल्द ही आपके फोर्टुनी गाउन के बारे में सोचना शुरू करना होगा।" यकीनन, जिसने लंबे समय से इन गाउन की चाहत रखी थी, जिसने मेरे साथ सोच-समझकर इन्हें चुना था, जिसने न केवल अपनी अलमारी में बल्कि अपनी कल्पना में भी इनके लिए पहले से ही जगह बना रखी थी, उसके लिए इन गाउन का होना, जिनके हर

विवरण को उसने इतने सारे गाउन में से चुनने से पहले ध्यान से देखा था, किसी ऐसी अमीर महिला के लिए बहुत मायने रखता होगा जिसके पास ज़रूरत से ज़्यादा कपड़े हों और वह उन्हें देखती तक न हो। फिर भी, अल्बर्टीन ने मुस्कुराते हुए मुझे धन्यवाद दिया और कहा, "आप बहुत दयालु हैं," लेकिन मैंने देखा कि वह कितनी थकी हुई और दुखी लग रही थी।
जब तक ये गाउन तैयार होते, मैं उसी तरह के दूसरे गाउन उधार लेती थी, कभी-कभी तो सिर्फ कपड़ा ही, और उन्हें अल्बर्टीन को पहना देती थी, उसके ऊपर ओढ़ा देती थी; वह मेरे कमरे में किसी डोगे की पत्नी की शान और किसी पुतले की खूबसूरती के साथ घूमती थी। पेरिस में मेरी कैद इन कपड़ों को देखकर और भी बोझिल हो जाती थी, जो वेनिस की याद दिलाते थे। सच है, अल्बर्टीन मुझसे कहीं ज़्यादा कैद थी। और यह देखना दिलचस्प था कि कैसे, उसकी कैद की दीवारों के पार, नियति, जो लोगों को बदल देती है, ने अपना रास्ता बना लिया था, उसे उसके मूल स्वरूप में बदल दिया था, और बालबेक में मैंने जिस लड़की को जाना था, उसे एक नीरस और आज्ञाकारी कैदी में बदल दिया था। हाँ, उसकी कैद की दीवारों ने उस प्रभाव को उस तक पहुँचने से नहीं रोका था; शायद वास्तव में उन्हीं दीवारों ने इसे जन्म दिया था। अब वह वही अल्बर्टीन नहीं रही थी, क्योंकि वह बालबेक की तरह लगातार अपनी साइकिल पर भागती नहीं रहती थी, जहाँ वह अपनी सहेलियों के साथ रात बिताने के लिए कई छोटे-छोटे ठिकानों पर जाती थी और जहाँ उसके झूठ के कारण उसे पकड़ना और भी मुश्किल हो जाता था; क्योंकि मेरे घर में कैद, शांत और अकेली, वह अब वैसी भी नहीं रही थी जैसी बालबेक में, जब मैं उसे ढूंढने में कामयाब हुआ था, समुद्र तट पर हुआ करती थी - वह भगोड़ी, सतर्क, चालाक प्राणी, जिसकी उपस्थिति उन सभी मुलाकातों के विचार से और भी बढ़ जाती थी जिन्हें वह छिपाने में माहिर थी, जो उसे इसलिए प्यार करने पर मजबूर करती थीं क्योंकि वे हमें पीड़ा देती थीं, जिसमें, दूसरों के प्रति उसकी शीतलता और उसके आकस्मिक उत्तरों के नीचे, कोई कल की मुलाकात और आज की मुलाकात को महसूस कर सकता था, और मेरे लिए एक तिरस्कारपूर्ण, कपटी विचार। क्योंकि समुद्र की हवा अब उसके वस्त्रों को नहीं फड़फड़ाती थी, क्योंकि, सबसे बढ़कर, मैंने उसके पंख काट दिए थे, वह अब विजय नहीं रही थी, बल्कि एक बोझिल गुलाम बन गई थी जिससे मैं छुटकारा पाना चाहता था।

फिर, अपने विचारों का रुख बदलने के लिए, अल्बर्टीन के साथ ताश या शतरंज खेलने के बजाय, मैंने उससे थोड़ा संगीत बजाने को कहा। मैं बिस्तर पर ही लेटा रहा, और वह कमरे के दूसरे छोर पर, दो किताबों की अलमारियों के बीच, पियानोला के सामने जाकर बैठ गई। उसने ऐसे संगीत के टुकड़े चुने जो बिल्कुल नए थे या जो उसने मुझे केवल एक या दो बार ही सुनाए थे, क्योंकि जैसे-जैसे वह मुझे बेहतर जानने लगी, उसे पता चल गया था कि मुझे अपने विचारों को केवल उन चीजों पर केंद्रित करना पसंद था जो मेरे लिए अभी भी अस्पष्ट थीं, और इन क्रमिक प्रस्तुतियों के दौरान, अपनी बढ़ती हुई, लेकिन दुर्भाग्य से, विकृत और अपरिचित बुद्धि के प्रकाश की बदौलत, उस संरचना की खंडित और अधूरी पंक्तियों को जोड़ने में सक्षम होने पर मुझे खुशी मिलती थी जो पहले लगभग धुंध में छिपी हुई थी। वह जानती थी और मुझे लगता है कि समझ भी गई थी, कि इन शुरुआती श्रवणों में, एक अभी भी आकारहीन नीहारिका को आकार देने के इस कार्य से मेरे मन को कितना आनंद मिलता था। उसने अनुमान लगाया कि तीसरी या चौथी बार दोहराने पर मेरी बुद्धि, सभी भागों को एक ही दूरी पर रखकर, और उनके लिए कोई अतिरिक्त गतिविधि न होने के कारण, उन्हें परस्पर विस्तारित करके एक समान तल पर स्थिर कर देती है। हालाँकि, वह तुरंत किसी नए संगीत रचना पर नहीं चली गई, क्योंकि शायद मेरे मन में चल रही प्रक्रिया का उसे स्पष्ट अंदाजा न होते हुए भी, वह जानती थी कि जिस क्षण मेरी बुद्धि किसी रचना के रहस्य को सुलझाने में सफल होती है, उस क्षण ऐसा बहुत कम ही होता है कि क्षतिपूर्ति के रूप में, विनाश के अपने कार्य के दौरान, वह कोई उपयोगी विचार न ग्रहण कर ले। और जब कुछ समय बाद अल्बर्टीन ने कहा: "हम यह रोल फ्रांस्वा को दे सकते हैं और उससे इसे किसी और रचना से बदलवा सकते हैं," तो अक्सर मेरे लिए दुनिया में संगीत का एक टुकड़ा कम हो जाता था, शायद, लेकिन सच्चाई बढ़ जाती थी। जब वह बजा रही थी, अल्बर्टीन की कई लटों में से मुझे केवल एक ही काले बालों का घेरा दिखाई दे रहा था जो दिल के आकार का था और उसके कान के किनारे वेलास्केज़ इन्फेंटा के रिबन की तरह बंधा हुआ था। जिस प्रकार उस देवदूत संगीतकार का सार अतीत के विभिन्न बिंदुओं के बीच की अनेक यात्राओं से बना था, जिनमें उसकी स्मृति ने मेरे भीतर स्थान बना रखा था, और उसके विभिन्न निवास स्थानों से, मेरी दृष्टि से लेकर मेरे अस्तित्व की सबसे अंतर्मन संवेदनाओं तक, जिसने मुझे उसकी अंतरंगता में

उतरने में मदद की, उसी प्रकार उसके द्वारा बजाए गए संगीत में भी एक आयतन था, जो विभिन्न वाक्यांशों की अस्थिर दृश्यता से उत्पन्न होता था, इस प्रकार कि मैं उन पर कमोबेश प्रकाश डालने और उस संरचना की पंक्तियों को जोड़ने में सफल रहा था जो पहले मुझे लगभग पूरी तरह से कोहरे में छिपी हुई प्रतीत होती थी।

मुझे इस बात का इतना पक्का यकीन हो गया था कि मैडम विंटेइल और उनकी सहेली से ईर्ष्या करना सरासर बेवकूफी थी, क्योंकि अल्बर्टीन ने अपने कबूलनामे के बाद से उनसे मिलने की कोई कोशिश नहीं की थी और हमने देश में छुट्टियां मनाने की जो भी योजना बनाई थी, उसमें उसने खुद मोंटजोवेन के इतने पास स्थित कॉम्ब्रे को ठुकरा दिया था। अक्सर, मैं अल्बर्टीन से बिना किसी तकलीफ के विंटेइल का कोई संगीत बजाने को कहता था। सिर्फ एक बार यह संगीत मेरी ईर्ष्या का अप्रत्यक्ष कारण बना था। यह तब हुआ जब अल्बर्टीन, जो जानती थी कि मैंने मैडम वर्दुरिन के यहाँ मोरेल को यह संगीत बजाते हुए सुना था, ने एक शाम मुझसे उनके बारे में बात की और उन्हें सुनने और उनसे मिलने की तीव्र इच्छा व्यक्त की। संयोग से, यह उस पत्र के कुछ ही समय बाद हुआ था, जिसे एम. डी चार्लस ने अनजाने में रोक लिया था, जो लीया ने मोरेल को लिखा था। मैंने खुद से पूछा कि क्या लीया ने अल्बर्टीन से उनके बारे में जिक्र तो नहीं किया होगा। मेरे मन में भयभीत होकर ये शब्द उभरे: 'तुम बुरी औरत हो, तुम बदचलन बुढ़िया हो।' लेकिन ठीक इसी वजह से कि विंटेइल का संगीत इस तरह से दर्दनाक रूप से लीया से जुड़ा हुआ था—और अब मैडम विंटेइल और उनकी सहेली से नहीं—लीया के कारण मुझे हुए दुख के शांत होने पर, मैं इस संगीत को बिना किसी पीड़ा के सुन सकी; एक पीड़ा ने मुझे दूसरी पीड़ाओं की किसी भी संभावना से मुक्त कर दिया था। विंटेइल के इस संगीत में, वे वाक्यांश जिन्हें मैंने मैडम वर्दुरिन के संगीत में नहीं देखा था, वे अस्पष्ट प्रेत जो तब धुंधले थे, चमकदार वास्तुशिल्पीय संरचनाओं में बदल गए; और उनमें से कुछ मेरे मित्र बन गए, जिन्हें मैंने पहले तो मुश्किल से पहचाना था, जो मुझे ज़्यादा से ज़्यादा बदसूरत ही लगे थे, इसलिए मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी कि वे उन लोगों जैसे हैं, जो पहली नज़र में अनाकर्षक लगते हैं, और जिन्हें हम अच्छी तरह जानने के बाद ही उनकी असलियत जान पाते हैं। एक अवस्था से दूसरी अवस्था में यह एक सकारात्मक परिवर्तन था। दूसरी ओर, वे वाक्यांश जिन्हें मैंने श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ सुने संगीत में तुरंत पहचान लिया था,

लेकिन तब समझ नहीं पाया था, अब मैंने उन्हें अन्य रचनाओं के वाक्यांशों से जोड़ दिया, जैसे कि ऑर्गन के लिए पवित्र विविधता का वह वाक्यांश जो श्रीमती वर्दुरिन के यहाँ सप्तक में मेरी नज़र से छूट गया था, जहाँ फिर भी, मानो कोई संत मंदिर से नीचे उतरा हो, वह संगीतकार की जानी-पहचानी परियों के साथ जुड़ गया। अंततः, वह वाक्यांश जो मुझे दोपहर में बजने वाली घंटियों की झिलमिलाती खुशी की तरह, बहुत कम मधुर, बहुत यांत्रिक लय वाला लगता था, अब मेरा पसंदीदा बन गया था, चाहे इसलिए कि मैं उसकी कुरूपता का आदी हो गया था या इसलिए कि मैंने उसकी सुंदरता को खोज लिया था। कला की महान कृतियों से पहली बार में होने वाली निराशा से उत्पन्न यह प्रतिक्रिया वास्तव में प्रारंभिक प्रभाव के कमजोर पड़ने या सत्य को उजागर करने के लिए आवश्यक प्रयास के कारण हो सकती है। कला की सत्यता और आत्मा की अमरता की सत्यता जैसे सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों में दो परिकल्पनाएँ उभरती हैं; हमें उनमें से किसी एक को चुनना होता है; और विंटेइल के संगीत के मामले में, यह चुनाव हर क्षण विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। उदाहरण के लिए, यह संगीत मुझे उन सभी पुस्तकों से कहीं अधिक सत्य प्रतीत हुआ जिन्हें मैं जानता था। कभी-कभी मुझे लगता था कि ऐसा इसलिए है क्योंकि जीवन में हम जो अनुभव करते हैं, वह विचारों के रूप में अनुभव नहीं किया जाता, उसका साहित्यिक (अर्थात बौद्धिक) अनुवाद उसका वर्णन करते हुए उसे स्पष्ट करता है, उसका विश्लेषण करता है, लेकिन संगीत की तरह उसे पुनर्गठित नहीं करता। संगीत में ध्वनियाँ वस्तु के भावों को समाहित करती हुई प्रतीत होती हैं, हमारी संवेदना के उस आंतरिक और चरम बिंदु को पुन: उत्पन्न करती हैं जो हमें वह विशेष उत्साह प्रदान करता है जिसे हम समय-समय पर पुनः अनुभव करते हैं और जिसे जब हम कहते हैं: "कितना सुंदर दिन है! कितनी शानदार धूप है!" तो हम अपने पड़ोसी को जरा भी नहीं बताते, जिसमें वही सूर्य और वही मौसम पूरी तरह से अलग कंपन उत्पन्न करते हैं। विंटेइल के संगीत में कुछ ऐसे दृश्य थे जिन्हें व्यक्त करना असंभव है और रिकॉर्ड करना लगभग वर्जित है, क्योंकि सोते समय जब हम उनके अलौकिक आकर्षण के स्पर्श को ग्रहण करते हैं, ठीक उसी क्षण जब हमारी बुद्धि हमारा साथ छोड़ चुकी होती है, हमारी आँखें बंद हो चुकी होती हैं, और इससे पहले कि हम न केवल अवर्णनीय बल्कि अदृश्य को भी जान सकें, हम सो जाते हैं। जब मैंने इस परिकल्पना को स्वीकार किया कि कला वास्तविक हो सकती है, तो मुझे ऐसा लगा कि यह संगीत द्वारा

दिए जाने वाले किसी सुहावने दिन या मदहोश कर देने वाली रात के साधारण आनंद से कहीं अधिक है; एक अधिक वास्तविक, अधिक फलदायी उत्साह, कम से कम मेरे अनुभव के आधार पर। यह संभव नहीं है कि कोई मूर्तिकला या संगीत का टुकड़ा जो हमें एक ऐसी भावना प्रदान करता है जिसे हम अधिक उदात्त, अधिक शुद्ध, अधिक सच्चा महसूस करते हैं, किसी निश्चित आध्यात्मिक वास्तविकता से मेल न खाता हो। यह निश्चित रूप से उसका प्रतीक है, क्योंकि यह गहनता और सत्य का आभास देता है। इस प्रकार, विंटेइल के ऐसे ही किसी वाक्यांश से अधिक कुछ भी उस विशिष्ट आनंद से इतना मिलता-जुलता नहीं था जो मैंने अपने जीवन के कुछ क्षणों में महसूस किया था, उदाहरण के लिए, मार्टिनविले के चर्चों को निहारते हुए, या बालबेक के पास एक सड़क के किनारे कुछ पेड़ों को निहारते हुए, या, इससे भी सरल शब्दों में, इस पुस्तक के पहले भाग में, जब मैंने एक विशेष प्रकार की चाय का स्वाद लिया था। इस तुलना को और आगे बढ़ाए बिना, मुझे ऐसा लगा कि विंटेइल द्वारा रचित स्पष्ट ध्वनियाँ, चमकीले रंग, उस संसार से जो उन्होंने हमें भेजे जिसमें उन्होंने रचना की, मेरी कल्पना के समक्ष ज़ोरदार ढंग से, लेकिन इतनी तेज़ी से आ रहे थे कि मैं उन्हें पूरी तरह समझ नहीं पा रहा था। मैं इसकी तुलना गेरेनियम की सुगंधित रेशमी कोमलता से कर सकता हूँ। लेकिन, स्मृति में, यह अस्पष्टता, यदि पूरी तरह से खोजी न भी जाए, तो कम से कम सटीक रूप से निर्धारित की जा सकती है, उन परिस्थितियों की एक मार्गदर्शक रेखा के कारण जो यह समझाती हैं कि क्यों एक विशेष स्वाद हमें प्रकाशमान संवेदनाओं को याद दिलाने में सक्षम रहा है। विंटेइल द्वारा दी गई अस्पष्ट संवेदनाएँ स्मृति से नहीं, बल्कि एक छाप से आती हैं (जैसे मार्टिनविले के चर्चों की)। वहीं, उनके संगीत की गेरेनियम जैसी सुगंध के लिए, भौतिक व्याख्या नहीं, बल्कि गहन समतुल्य, अज्ञात और अत्यधिक रंगीन उत्सव (जिसके उनके कार्य बिखरे हुए टुकड़े, लाल रंग की चमकती दरारें प्रतीत होते थे), वह तरीका खोजना होगा जिससे उन्होंने ब्रह्मांड को 'सुना' और उसे अपने से बहुत दूर प्रक्षेपित किया। मैंने अल्बर्टीन से कहा, "अद्वितीय संसार का यह अज्ञात गुण, जिसे किसी अन्य संगीतकार ने हमें कभी नहीं दिखाया, शायद इसी में प्रतिभा का सबसे प्रामाणिक प्रमाण निहित है, यहाँ तक कि रचना की विषयवस्तु से भी अधिक।" अल्बर्टीन ने पूछा, "क्या साहित्य में भी?" "क्या साहित्य में भी?" और विंटेइल की रचनाओं की एकरसता के बारे में फिर से सोचते हुए, मैंने अल्बर्टीन को समझाया कि महान

साहित्यकारों ने कभी एक से अधिक रचनाएँ नहीं की हैं, या यूँ कहें कि उन्होंने विभिन्न माध्यमों से एक ही सौंदर्य को प्रतिबिंबित करने के अलावा और कुछ नहीं किया है जिसे वे संसार में लाते हैं। "अगर इतनी देर न हुई होती, मेरी बच्ची," मैंने उससे कहा, "मैं तुम्हें यह गुण उन सभी लेखकों में दिखाती जिनकी रचनाएँ तुम मेरे सोते समय पढ़ती हो, मैं तुम्हें वही समानता दिखाती जो विंटेइल में है। ये विशिष्ट वाक्यांश, जिन्हें तुम मेरी तरह पहचानने लगी हो, मेरी नन्ही अल्बर्टाइन, सोनाटा में, सेऐट में, अन्य रचनाओं में भी वही हैं, उदाहरण के लिए, अगर तुम चाहो तो, बार्बे डी'ऑरेविली में, एक भौतिक निशान द्वारा प्रकट एक छिपी हुई वास्तविकता, ल'एनसोर्सेली, ऐमी डी स्पेंस, ला क्लॉट की शारीरिक लाली, रिड्यू क्रामोइसी का हाथ, पुराने रीति-रिवाज और परंपराएँ, पुराने शब्द, प्राचीन और विशिष्ट व्यापार जिनके पीछे अतीत है, जागीर के ग्रामीणों द्वारा संकलित मौखिक इतिहास, इंग्लैंड की याद दिलाने वाले और स्कॉटिश गाँव की तरह आकर्षक महान नॉर्मन शहर, शापों का कारण जिनके खिलाफ कोई कुछ नहीं कर सकता, वेलिनी, शेफर्ड, एक समान चिंता की अनुभूति। चाहे वह 'उने विएले मैत्रेसे' में पत्नी द्वारा अपने पति की तलाश हो, या 'ल'एनसोर्सेली' में पति का मैदानों में भटकना और स्वयं 'एनसोर्सेली' का प्रार्थना से बाहर आना। विंटेउइल में अन्य विशिष्ट वाक्यांश भी हैं, जैसे थॉमस हार्डी के उपन्यासों में पत्थर के कारीगर की ज्यामिति।

विंटेइल के वाक्यों ने मुझे उस 'छोटे से मुहावरे' की याद दिला दी और मैंने अल्बर्टीन से कहा कि यह एक तरह से स्वान और ओडेट के प्रेम का राष्ट्रीय गान था, "गिल्बर्ट के माता-पिता जिन्हें आप जानती हैं। आपने मुझे बताया था कि वह बुरी लड़की नहीं थी। लेकिन क्या उसने आपसे संबंध बनाने की कोशिश नहीं की? उसने आपके बारे में मुझसे बात की थी।" "हाँ, देखिए, जब मौसम खराब होता था तो उसके माता-पिता उसे हमारे पाठों से लेने के लिए एक गाड़ी भेजते थे, मुझे लगता है कि एक बार वह मुझे घर ले गई थी और उसने मुझे चूमा था," उसने एक पल के विराम के बाद, हँसते हुए और मानो कोई मनोरंजक स्वीकारोक्ति करते हुए कहा। "उसने अचानक मुझसे पूछा कि क्या मुझे महिलाओं में रुचि है।" (लेकिन अगर वह केवल यही मानती थी कि उसे याद है कि गिल्बर्ट उसे घर ले गई थी, तो वह इतनी सटीकता से कैसे कह सकती थी कि गिल्बर्ट ने उससे यह अजीब सवाल पूछा था?) "दरअसल, मुझे नहीं पता कि उसे मूर्ख बनाने के लिए मेरे दिमाग में कौन सा बेतुका विचार आया, मैंने उससे कहा कि मुझे

महिलाओं में रुचि है।" (कोई कह सकता था कि अल्बर्टीन को डर था कि गिलबर्ट ने मुझे यह बात बता दी है और वह नहीं चाहती थी कि मैं यह निष्कर्ष निकालूँ कि वह झूठ बोल रही है।) "लेकिन हमने कुछ भी नहीं किया।" (यह अजीब था, अगर उन्होंने आपस में कुछ बातें साझा की थीं, तो उन्होंने कुछ भी नहीं किया, खासकर इसलिए क्योंकि अल्बर्टीन के अनुसार, इससे पहले उन्होंने चुंबन किया था।) "वह मुझे चार-पाँच बार, शायद उससे भी ज़्यादा बार, इसी तरह घर ले गई, बस इतना ही।" मुझे उससे और सवाल न पूछने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा, लेकिन खुद पर काबू रखते हुए, ताकि ऐसा लगे कि मैं इन सब बातों को कोई महत्व नहीं दे रहा हूँ, मैं थॉमस हार्डी की ओर लौट गया। क्या आपको जूड द ऑब्स्क्योर और द वेल-बिलव्ड में पत्थर तराशने वाले कारीगर याद हैं? पिता द्वारा द्वीप से तराशे गए पत्थर के टुकड़े नावों में लाकर बेटे के स्टूडियो में जमा किए जाते हैं, जहाँ उन्हें मूर्तियों में बदल दिया जाता है; ए पेयर ऑफ ब्लू आइज़ में कब्रों की समानता, और साथ ही बर्तन की समानांतर रेखा, और प्रेमियों और मृत महिला को ले जाने वाले रेलवे डिब्बे; द वेल-बिलव्ड में समानता, जहाँ पुरुष तीन महिलाओं से प्यार करता है, और ए पेयर ऑफ ब्लू आइज़ में समानता, जहाँ महिला तीन पुरुषों से प्यार करती है, और संक्षेप में, वे सभी उपन्यास जिन्हें द्वीप की पथरीली मिट्टी पर लंबवत रूप से बने घरों की तरह एक के ऊपर एक रखा जा सकता है। मैं महानतम लेखकों का इस तरह एक पल में सारांश नहीं दे सकता, लेकिन आप स्टेंडहल में आध्यात्मिक जीवन के साथ एक निश्चित ऊँचाई का बोध देखेंगे: वह ऊँचा स्थान जहाँ जूलियन सोरेल कैद है, वह मीनार जिसके शिखर पर फैब्रिस को कैद किया गया है, वह घंटाघर जिसमें अब्बे... ब्लैनेस अपने ज्योतिष का गहन अध्ययन कर रहे हैं और वहीं से फैब्रिस को एक शानदार विहंगम दृश्य दिखाई देता है। आपने मुझे बताया था कि आपने वर्मीर की कुछ तस्वीरें देखी हैं, आपने अवश्य ही महसूस किया होगा कि वे एक ही दुनिया के टुकड़े हैं, कि चाहे उन्हें कितनी भी प्रतिभा से पुनर्निर्मित किया गया हो, हमेशा वही मेज, वही कालीन, वही स्त्री, वही अनोखी और अनूठी सुंदरता होती है, एक रहस्य, उस युग में जिसमें कुछ भी इसके जैसा नहीं है या इसे समझा नहीं सकता, यदि हम विषयों में समानताएं खोजने की कोशिश करें तो केवल रंग द्वारा उत्पन्न विशिष्ट प्रभाव को अलग करने की कोशिश करें। खैर, फिर, यह अनोखी सुंदरता दोस्तोयेव्स्की की सभी रचनाओं में एक जैसी ही रहती है, दोस्तोयेव्स्की की स्त्री (रेम्ब्रांट की

स्त्री जितनी ही विशिष्ट) अपने रहस्यमय चेहरे के साथ, जिसकी मनमोहक सुंदरता अचानक बदल जाती है, मानो उसका स्पष्ट अच्छा स्वभाव केवल दिखावा था, एक भयानक उद्दंडता में (हालांकि दिल से लगता है कि वह बुराई से कहीं अधिक अच्छी है), क्या वह हमेशा एक जैसी नहीं रहती, चाहे वह नास्तासिया फिलिपोवना हो जो एग्ले को प्रेम पत्र लिख रही हो... और उसे यह बताना कि वह उससे नफरत करती है, या एक ऐसी मुलाकात में जो इससे पूरी तरह मिलती-जुलती है—साथ ही उस मुलाकात में भी जिसमें नास्तासिया फिलिपोवना वानिया के परिवार का अपमान करती है—ग्रूचेंका, कैथरीना इवानोवना के घर में उतनी ही आकर्षक है जितनी दूसरों ने उसे भयानक समझा था, फिर अचानक कैथरीना इवानोवना का अपमान करके अपनी दुर्भावना प्रकट करती है (हालाँकि ग्रूचेंका दिल से अच्छी है); ग्रूचेंका, नास्तासिया, न केवल कार्पैसिओ की दरबारी महिलाओं की तरह बल्कि रेम्ब्रांट की बाथशेबा की तरह मौलिक और रहस्यमय है। जैसे वर्मीर में एक निश्चित आत्मा, कपड़ों और स्थानों के एक निश्चित रंग का सृजन होता है, वैसे ही दोस्तोयेव्स्की में न केवल लोगों का बल्कि उनके घरों का भी सृजन होता है, और 'क्राइम एंड पनिशमेंट' में हत्या के घर का उसका द्वोर्निक, क्या यह दोस्तोयेव्स्की की कृति 'हाउस ऑफ मर्डर' की तरह अद्भुत नहीं है, वह उदास घर, इतना लंबा, इतना ऊंचा और इतना विशाल, रोजोजिन का। जिसमें वह नस्तासिया फिलिपोवना की हत्या करता है। उस घर की वह अनोखी और भयानक सुंदरता, उस स्त्री के चेहरे के साथ घुलमिल गई अनोखी सुंदरता, यही वह अनूठी चीज है जो दोस्तोयेव्स्की ने दुनिया को दी है, और साहित्यिक आलोचकों द्वारा उनकी तुलना गोगोल से, या पॉल डी कॉक से करना व्यर्थ है, क्योंकि यह इस गुप्त सुंदरता से परे है। इसके अलावा, अगर मैंने आपसे कहा है कि एक उपन्यास से दूसरे उपन्यास में एक ही दृश्य है, तो एक ही उपन्यास के दायरे में वही दृश्य, वही पात्र फिर से प्रकट होते हैं, यदि उपन्यास लंबा हो। मैं इसे आपको 'वॉर एंड पीस' और एक गाड़ी के दृश्य में आसानी से समझा सकता हूँ..." "मैं आपको बीच में टोकना नहीं चाहता था, लेकिन अब जब मैं देख रहा हूँ कि आप दोस्तोयेव्स्की को छोड़ रहे हैं, तो मुझे भूलने का डर है। मेरे प्यारे लड़के, उस दिन जब आपने कहा था: 'यह, एक तरह से, मैडम डी सेविग्ने का दोस्तोयेव्स्की पक्ष है', तो आपका क्या मतलब था?" मुझे स्वीकार करना होगा कि मुझे समझ नहीं आया। यह मुझे बहुत अलग लगता है।" "आओ, छोटी बच्ची, मैं तुम्हें एक

चुंबन दूं, धन्यवाद के लिए कि तुमने मेरी बात इतनी अच्छी तरह याद रखी, इसके बाद तुम पियानोला पर वापस जा सकती हो। और मुझे यह भी मानना होगा कि मैंने जो कहा वह कुछ मूर्खतापूर्ण था। लेकिन मैंने ऐसा दो कारणों से कहा। पहला एक विशेष कारण है। मेरा मतलब यह था कि मैडम डी सेविग्ने, एल्स्टिर की तरह, और मेरी तरह, चीजों को उनके तार्किक क्रम में प्रस्तुत करने के बजाय, यानी कारण से शुरू करने के बजाय, हमें सबसे पहले प्रभाव, वह भ्रम दिखाती हैं जो हमें प्रभावित करता है। इसी तरह दोस्तोयेव्स्की अपने पात्रों को प्रस्तुत करते हैं। उनके कार्य हमें उतने ही भ्रामक लगते हैं जितने एल्स्टिर के चित्रों में वे प्रभाव जहां समुद्र आकाश में दिखाई देता है। हमें यह देखकर आश्चर्य होता है कि कोई उदास व्यक्ति वास्तव में सबसे अच्छा इंसान है, या इसके विपरीत।" "हाँ, लेकिन मुझे मैडम डी सेविग्ने का एक उदाहरण दीजिए।" मैंने हंसते हुए जवाब दिया, "मैं मानती हूं कि मैं बहुत बारीकी से बात कर रही हूं, लेकिन फिर भी मुझे उदाहरण मिल सकते हैं..." "लेकिन क्या डोस्टोएव्स्की ने कभी किसी की हत्या की थी? उनके जितने भी उपन्यास मुझे पता हैं, उन सभी को 'एक अपराध की कहानी' कहा जा सकता है। यह उनका जुनून है, यह स्वाभाविक नहीं है कि वे हमेशा इसके बारे में बात करते रहें।" "मुझे ऐसा नहीं लगता, प्रिय अल्बर्टीन, मैं उनके जीवन के बारे में बहुत कम जानता हूँ। यह निश्चित है कि, हर किसी की तरह, वे भी किसी न किसी रूप में पाप से परिचित थे, और संभवतः उस रूप में जिसे कानून निंदनीय मानता है। इस अर्थ में वे कमोबेश अपराधी रहे होंगे, अपने नायकों की तरह (हालांकि वे पूरी तरह से नायक नहीं हैं), जिन्हें परिस्थितियों के आधार पर दोषी पाया जाता है। और शायद यह आवश्यक नहीं है कि वे स्वयं अपराधी रहे हों। मैं उपन्यासकार नहीं हूँ; यह संभव है कि रचनात्मक लेखक जीवन के कुछ ऐसे रूपों से आकर्षित होते हैं जिनका उन्हें व्यक्तिगत अनुभव नहीं होता। यदि मैं आपके साथ वर्साय चलूँ जैसा कि हमने तय किया था, तो मैं आपको उस अत्यंत सम्मानित व्यक्ति, सर्वश्रेष्ठ पति, चोडरलोस डी लैक्लोस का चित्र दिखाऊँगा, जिसने सबसे भयावह भ्रष्ट पुस्तक लिखी, और उसके सामने श्रीमती डी जेनलिस का चित्र दिखाऊँगा, जिन्होंने नैतिक कथाएँ लिखीं और डचेस डी'ऑरलियन्स को धोखा देने से संतुष्ट नहीं हुईं, बल्कि उनके बच्चों को उनके खिलाफ भड़काकर उन्हें प्रताड़ित किया। मैं फिर भी स्वीकार करता हूँ कि दोस्तोयेव्स्की में हत्या के

प्रति यह जुनून एक असाधारण बात है जो मुझे उनसे बिल्कुल अलग कर देती है। मैं बॉडेलेयर को यह कहते हुए सुनकर ही दंग रह जाता हूँ:

यदि बलात्कार, जहर, छुरा, आग
उन्होंने अभी तक अपने मनमोहक डिज़ाइनों की कढ़ाई नहीं की है।
हमारी दयनीय नियतियों का सामान्य ढांचा,
अफसोस की बात है कि हमारी आत्मा में इतनी हिम्मत नहीं है।

लेकिन मैं कम से कम यह मान सकता हूँ कि बॉडेलेयर ईमानदार नहीं हैं। जबकि दोस्तोयेव्स्की... इस तरह की सारी बातें मुझे अपने आप से उतनी ही दूर लगती हैं, जब तक कि मेरे कुछ ऐसे पहलू न हों जिनके बारे में मुझे कुछ भी पता न हो, क्योंकि हम अपने वास्तविक स्वरूप को समय के साथ ही जान पाते हैं। दोस्तोयेव्स्की में मुझे सबसे गहरी अंतर्दृष्टि मिलती है, लेकिन केवल मानव आत्मा के कुछ अलग-थलग क्षेत्रों में। लेकिन वे एक महान रचनाकार हैं। एक बात तो यह है कि जिस दुनिया का वे वर्णन करते हैं, वह सचमुच उन्हीं द्वारा रचित प्रतीत होती है। लेबेडेफ, करामाज़ॉफ, इवोल्घिन, सेग्रेफ जैसे वे सभी मसखरे जो बार-बार प्रकट होते रहते हैं, वह अविश्वसनीय जुलूस, रेम्ब्रांट की 'नाइट वॉच' में दिखाई देने वाली मानवता से कहीं अधिक काल्पनिक है। और शायद यह केवल प्रकाश और वेशभूषा के प्रभाव से ही काल्पनिक है, और वास्तव में यह काफी सामान्य है। किसी भी मामले में, यह एक ही समय में गहन और अद्वितीय सत्यों से भरा है, जो केवल दोस्तोयेव्स्की के पास हैं। वे मसखरे मानो किसी ऐसे पेशे या धंधे का संकेत देते हैं जो अब अस्तित्व में नहीं है, पुराने नाटकों के कुछ पात्रों की तरह, और फिर भी वे मानवीय आत्मा के सच्चे पहलुओं को कैसे उजागर करते हैं! मुझे आश्चर्य होता है कि लोग दोस्तोयेव्स्की के बारे में कितने गंभीर ढंग से बात करते और लिखते हैं। क्या आपने कभी उनके पात्रों में आत्मसम्मान और अभिमान की भूमिका पर ध्यान दिया है? कोई कह सकता है कि उनके लिए प्रेम और घोर घृणा, अच्छाई और छल, कायरता और उद्दंडता एक ही स्वभाव के दो रूप मात्र हैं, उनका आत्मसम्मान और अभिमान ही एग्ले, नास्तासिया, उस कप्तान जिसकी दाढ़ी मितिया खींचती है, क्रासोटकिन, अलियोशा के शत्रु-मित्र को उनके असली रंग दिखाने से रोकते हैं। लेकिन उनके लेखन में और भी कई महान रचनाएँ हैं। मैं उनकी बहुत कम पुस्तकें जानता हूँ। लेकिन क्या यह एक मूर्तिकलात्मक और

सरल विषय नहीं है, जो शास्त्रीय कला के योग्य है? एक खंडित और पुनः आरंभ की गई पट्टी जिस पर प्रतिशोध और प्रायश्चित की कहानी प्रकट होती है, बूढ़े करामाज़ॉफ़ द्वारा उस बेचारे मूर्ख को गर्भवती करने का अपराध, वह रहस्यमय, पशुवत, अस्पष्ट आवेग जिसके द्वारा माँ, जो स्वयं अनजाने में प्रतिशोधी नियति का साधन है, अपनी मातृत्व प्रवृत्ति का अस्पष्ट रूप से पालन करते हुए, शायद अपने प्रलोभक के प्रति शारीरिक आक्रोश और कृतज्ञता के मिश्रण से ग्रस्त होकर, बूढ़े करामाज़ॉफ़ की ज़मीन पर अपने बच्चे को जन्म देती है। यह पहला प्रसंग है, रहस्यमय, भव्य, भव्य, ओरविएटो की मूर्तियों में 'सृष्टि ऑफ़ वुमन' के समान। और इसके विपरीत, बीस साल से भी अधिक समय बाद दूसरा प्रसंग, बूढ़े करामाज़ॉफ़ की हत्या, उस मूर्ख के बेटे, स्मेरडियाकॉफ़ द्वारा करामाज़ॉफ़ परिवार पर लाया गया कलंक, जिसके तुरंत बाद एक और घटना घटी, जो रहस्यमय ढंग से मूर्तिकला जैसी और अस्पष्ट थी, जिसकी सुंदरता उतनी ही अस्पष्ट और स्वाभाविक थी जितनी बूढ़े करामाज़ॉफ़ के बगीचे में बच्चे का जन्म, स्मेरडियाकॉफ़ ने खुद को फांसी लगा ली, और इस तरह उसका अपराध पूरा हो गया। जहाँ तक दोस्तोयेव्स्की की बात है, जब मैंने टॉल्स्टॉय का ज़िक्र किया, जिन्होंने उनकी बारीकी से नकल की है, तो मैं उनसे उतना दूर नहीं भटका जितना आपने सोचा था। दोस्तोयेव्स्की में, केंद्रित और बेचैन, वह बहुत कुछ है जो बाद में टॉल्स्टॉय में विकसित हुआ। दोस्तोयेव्स्की में आदिम लोगों का वह पूर्वव्यापी अंधकार है जिसे उनके शिष्य रोशन करेंगे और दूर करेंगे। "मेरे प्यारे बच्चे, यह कितनी भयानक बात है कि तुम इतने आलसी हो। ज़रा साहित्य के प्रति अपने दृष्टिकोण को देखो, यह उस तरीके से कहीं अधिक रोचक है जिस तरह से हमें इसे पढ़ने के लिए मजबूर किया गया था; एस्थर पर वे निबंध जो वे हमसे लिखवाते थे: "महाशय," - आपको याद है ना," उसने हंसते हुए कहा, अपने शिक्षकों और खुद का मज़ाक उड़ाने की इच्छा से कम, बल्कि अपनी स्मृति में, हमारी साझा स्मृति में, एक ऐसी वस्तु को पाकर जो लगभग पूजनीय हो चुकी थी, उसे पाकर उसे जो आनंद मिला। लेकिन जब वह बोल रही थी, और मैं विंटेइल के बारे में सोचता रहा, तो दूसरा, भौतिकवादी सिद्धांत, यानी कुछ भी नहीं होने का सिद्धांत, मेरे मन में आया। मुझे संदेह होने लगा, मैंने खुद से कहा कि शायद ऐसा हो सकता है कि, अगर विंटेइल के वाक्यांश आत्मा की कुछ ऐसी अवस्थाओं की अभिव्यक्ति प्रतीत होते हैं जो उस अवस्था के समान हैं जिसका अनुभव मैंने चाय के प्याले में डूबी मेडेलिन

का स्वाद चखते समय किया था, तो मुझे यह आश्वस्त करने के लिए कुछ भी नहीं था कि ऐसी अवस्थाओं की अस्पष्टता उनकी गहराई का संकेत है न कि इसलिए कि उनमें अन्य अवस्थाओं की तुलना में कुछ भी अधिक वास्तविक नहीं है। और फिर भी वह खुशी, खुशी में निश्चितता का वह एहसास जब मैं चाय का प्याला पी रहा था। चाय, या जब मैंने शैंप्स-एलिसी में सड़ती हुई लकड़ी की गंध महसूस की, वह कोई भ्रम नहीं था। किसी भी मामले में, संदेह की आत्मा ने फुसफुसाया, भले ही ये अवस्थाएँ जीवन में घटित होने वाली अन्य अवस्थाओं की तुलना में अधिक गहन हों, और विश्लेषण से परे हों, क्योंकि इनमें कई ऐसी शक्तियाँ शामिल होती हैं जिन पर हमने अभी तक विचार नहीं किया है, विंटेइल के संगीत के कुछ वाक्यांशों का आकर्षण हमें उनके बारे में सोचने पर मजबूर करता है क्योंकि यह भी विश्लेषण से परे है, लेकिन यह साबित नहीं करता कि इसमें वही गहराई है; शुद्ध संगीत के एक वाक्यांश की सुंदरता आसानी से हमारे द्वारा प्राप्त बौद्धिक प्रभाव की छवि या कम से कम उससे मिलती-जुलती प्रतीत हो सकती है, लेकिन ऐसा इसलिए है क्योंकि यह बौद्धिक नहीं है। तो फिर हम उन रहस्यमय वाक्यांशों को विशेष रूप से गहन क्यों मानते हैं जो कुछ रचनाओं में व्याप्त हैं, जिनमें विंटेइल का यह सप्तक भी शामिल है?

लेकिन अल्बर्टीन मुझे केवल उनका संगीत ही नहीं सुनाती थीं; पियानोला कभी-कभी हमारे लिए एक वैज्ञानिक जादुई लालटेन (ऐतिहासिक और भौगोलिक) की तरह होता था और पेरिस के इस कमरे की दीवारों पर, जो कॉम्ब्रे के ज़माने के आविष्कारों से कहीं अधिक आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित थीं, मैं देखती थी कि अल्बर्टीन जब मुझे रामेउ या बोरोडिन का संगीत सुनाती थीं, तो कभी मेरे सामने अठारहवीं सदी की एक टेपेस्ट्री फैली होती थी जिस पर कामदेव और गुलाब बने होते थे, तो कभी पूर्वी स्टेपी का दृश्य होता था जहाँ असीम दूरियों और बर्फ की नरम चादर में आवाज़ें दब जाती थीं। और ये क्षणिक सजावटें ही मेरे कमरे में एकमात्र थीं, क्योंकि अगर मैंने अपनी चाची लियोनी की संपत्ति विरासत में मिलने के समय स्वान की तरह एक संग्रहकर्ता बनने, चित्र, मूर्तियाँ खरीदने की कसम खाई थी, तो मेरा सारा पैसा घोड़ों, एक मोटरकार और अल्बर्टीन के लिए कपड़े खरीदने में खर्च हो गया। लेकिन क्या मेरे कमरे में इन सबसे भी अधिक कीमती कलाकृति नहीं थी - स्वयं अल्बर्टीन? मैंने उनकी ओर देखा। यह सोचकर मुझे अजीब लगा कि वह वही थी, जिसे मैं इतने लंबे समय से जानना

भी असंभव समझता था, जो अब एक जंगली जानवर की तरह पालतू बन चुकी थी, एक गुलाब की झाड़ी की तरह जिसे मैंने प्रशिक्षित किया था, जिसके जीवन का आधार, जो उसकी नींव थी, और अब हर दिन घर पर, मेरे बगल में, पियानोला के सामने, मेरी किताबों की अलमारी की ओर पीठ करके बैठी थी। उसके कंधे, जो मैंने उसे गोल्फ क्लब ले जाते समय झुके हुए और नाराज़ देखा था, अब मेरी किताबों पर टिके हुए थे। उसकी सुडौल टांगें, जिनके बारे में मैंने पहले तो बड़ी आसानी से कल्पना की थी कि उन्होंने अपने बचपन में साइकिल के पैडल चलाए होंगे, अब पियानोला के पैडलों पर बारी-बारी से उठती-गिरती थीं, जिस पर अल्बर्टीन, जिसने एक ऐसी विशिष्टता हासिल कर ली थी जिससे मैं उसे और भी अपना महसूस करने लगा था, क्योंकि यह विशिष्टता मुझसे ही आई थी, अपने सुनहरे कपड़े के जूते दबा रही थी। उसकी उंगलियां, जो कभी हैंडलबार पर चलने की आदी थीं, अब किसी संत सेसिलिया की तरह चाबियों पर टिकी हुई थीं। मेरे बिस्तर से देखने पर उसका गला, जिसका घुमाव मजबूत और भरा हुआ था, उस दूरी से और दीपक की रोशनी में अधिक गुलाबी दिखाई दिया, हालांकि, उसके चेहरे के पार्श्व दृश्य की तुलना में कम गुलाबी, जिसे मेरी गहरी अंतर्मन से निकली निगाहों ने, स्मृतियों से भरी और इच्छा से प्रज्वलित होकर, ऐसी चमक, जीवन की ऐसी तीव्रता प्रदान की कि उसकी बनावट लगभग उसी जादुई शक्ति के साथ उभर कर सामने आई, जैसे उस दिन बालबेक के होटल में, जब उसे चूमने की मेरी प्रबल इच्छा ने मेरी दृष्टि को धुंधला कर दिया था; मैंने उसकी प्रत्येक सतह को अपनी दृष्टि से परे और उस चीज़ के नीचे विस्तारित किया जो उसे मुझसे छिपा रही थी और मुझे और भी अधिक तीव्रता से महसूस करा रही थी - पलकें जो उसकी आँखों को आधा छिपा रही थीं, बाल जो उसके गालों के ऊपरी हिस्से को ढके हुए थे - उन अतिव्यापी तलों की बनावट। उसकी आँखें ऐसे चमक रही थीं मानो किसी ऐसी संरचना में, जिसमें ओपल अभी भी जड़ा हुआ है, उसके केवल दो पहलू ही अभी तक पॉलिश किए गए हों, जो धातु से भी अधिक चमकदार होकर, उन्हें घेरने वाले अंधे पदार्थ के बीच, मानो कांच के नीचे रखी किसी तितली के बैंगनी, रेशमी पंखों को प्रकट कर रहे हों। उसके काले, घुंघराले बाल, जब भी वह मुझसे पूछने के लिए मुड़ती कि उसे आगे क्या बजाना है, एक अलग ही रूप धारण कर लेते थे; कभी एक शानदार पंख की तरह, नोक पर नुकीला, आधार पर चौड़ा, पंखों से भरा और त्रिकोणीय; कभी अपने घुंघराले बालों की उभरी

हुई आकृति को एक मजबूत और विविध श्रृंखला में पिरोते हुए, चोटियों, जलविभाजकों, खड़ी चट्टानों के एक समूह की तरह, अपनी इतनी समृद्ध और असंख्य नक्काशी के साथ, ऐसा प्रतीत होता था मानो वह प्रकृति द्वारा सामान्य रूप से साकार की जाने वाली विविधता से भी आगे निकल गया हो और बल्कि एक मूर्तिकार की इच्छा से मेल खाता हो जो अपनी कलाकृति की कोमलता, अग्नि, ढलाई और जीवंतता को अधिक प्रमुखता देने के लिए कठिनाइयों को इकट्ठा करता है, और बीच-बीच में रुककर फिर से शुरू करके, जीवंत वक्र और मानो एक रंगे हुए लकड़ी के टुकड़े के चिकने और गुलाबी चेहरे के घुमाव को और अधिक मजबूती से उभारता है। और, इस सारी राहत के विपरीत, उस सामंजस्य से भी जो उन्हें उससे जोड़ता था, जिसने उसके हावभाव को उनके रूप और उद्देश्य के अनुरूप ढाल लिया था, पियानोला जो उसे ऑर्गन के कीबोर्ड की तरह आधा छुपाए हुए था, किताबों की अलमारी, कमरे का वह पूरा कोना मानो एक रोशन पवित्र स्थान, इस देवदूत संगीतकार के मंदिर जैसा लग रहा था, एक कलाकृति जो क्षण भर में, एक जादुई ढंग से, अपने आले से अलग होकर मेरे चुम्बनों को अपना अनमोल, गुलाबी सार अर्पित करने वाली थी। लेकिन नहीं, अल्बर्टीन मेरे लिए किसी भी तरह से कलाकृति नहीं थी। मैं जानता था कि किसी स्त्री की कलात्मक ढंग से प्रशंसा करने का क्या अर्थ होता है, मैं स्वान को जानता था। और जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं चाहे कोई भी स्त्री हो, ऐसा करने में असमर्थ था, मुझमें तटस्थ अवलोकन की कोई क्षमता नहीं थी, मैं कभी नहीं जानता था कि मैं क्या देख रहा हूँ। और मैं तब चकित रह गया जब स्वान ने मेरे लिए कलात्मक गरिमा को बढ़ा दिया - जैसा कि वह बड़े ही सलीके से उसके चेहरे की तुलना लुइनी के किसी चित्र से करना पसंद करते थे, उसके पहनावे में जियोर्जियोन की किसी पेंटिंग के गाउन या गहने ढूंढकर - उस स्त्री को जो मुझे नीरस लगती थी। मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं था। अल्बर्टीन से मुझे जो सुख और दुख मिलता था, वह मुझ तक पहुँचने के लिए कभी भी स्वाद और बुद्धि की सीमा तक नहीं पहुँचा; वास्तव में, सच कहूँ तो, जब मैंने अल्बर्टीन को एक अद्भुत चमक से सजी देवदूत संगीतकार के रूप में देखना शुरू किया, जिस पर मैंने खुद को गर्व महसूस किया, तो जल्द ही वह मुझे नीरस लगने लगी; मैं जल्द ही उसकी संगति में ऊब गया, लेकिन ये क्षण थोड़े समय के लिए ही थे; हम केवल उसी चीज़ से प्रेम करते हैं जिसमें हम किसी अप्राप्य चीज़ की खोज करते हैं, हम केवल उसी चीज़ से प्रेम करते हैं जो हमारे पास नहीं है, और बहुत

जल्द मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच गया कि अल्बर्टीन मेरी नहीं थी। उसकी आँखों में मैंने कभी आशा देखी, कभी स्मृति, शायद उन सुखों का पछतावा जिन्हें मैं समझ नहीं सका, जिन्हें वह मुझे बताने के बजाय त्यागना बेहतर समझती थी, और जिन्हें उसकी आँखों में कुछ झलकियाँ ही देख पा रहा था, मैं उन्हें उसी तरह नहीं समझ पा रहा था जैसे कोई दर्शक जिसे थिएटर में प्रवेश नहीं दिया गया हो, और जिसका चेहरा दरवाजे के शीशे से चिपका हो, मंच पर जो कुछ हो रहा है उसे वह देख नहीं पा रहा हो। मुझे नहीं पता कि उसके साथ भी ऐसा ही था या नहीं, लेकिन यह एक अजीब बात है, और एक तरह से कहें तो सबसे अविश्वासी लोगों द्वारा अच्छाई में अपने विश्वास का प्रमाण है, झूठ में यह दृढ़ता जो हमें धोखा देने वाले सभी लोग दिखाते हैं। उन्हें यह बताना व्यर्थ है कि उनका झूठ हमें स्वीकारोक्ति से भी अधिक दुख पहुँचाता है, उन्हें यह बात स्वयं समझ आने पर भी कोई लाभ नहीं होगा; वे पल भर में फिर झूठ बोलना शुरू कर देंगे, ताकि वे अपने उस कथन पर कायम रह सकें कि हम उनके लिए कितने मायने रखते थे। इसी प्रकार, एक नास्तिक जो अपने जीवन को महत्व देता है, वह अपने साहस के बारे में प्रचलित धारणा के किसी भी विरोधाभास को स्वीकार करने के बजाय स्वयं को जिंदा जला देना पसंद करेगा। इन घंटों के दौरान, मैं कभी-कभी उसके चेहरे पर, उसकी निगाहों में, उसके होंठों के भावों में, उसकी मुस्कान में, उन अंतर्मन के विचारों की झलक देखता था, जिनके चिंतन ने उसे इन शामों में उसके सामान्य स्वभाव से अलग बना दिया था, मुझसे दूर कर दिया था, क्योंकि वह उन विचारों से वंचित थी। "क्या सोच रही हो, मेरी जान?" "कुछ नहीं।" कभी-कभी, इस आरोप के जवाब में कि उसने मुझे कुछ नहीं बताया, वह एक पल में मुझे ऐसी बातें बता देती थी जो उसे पता थीं कि मैं भी उतना ही जानता हूँ जितना कोई और (उन राजनेताओं की तरह जो आपको कभी कोई खबर नहीं देते, बल्कि आपसे वही बातें करते हैं जो आप खुद अखबारों में एक दिन पहले पढ़ सकते थे), और दूसरे पल में, झूठे आत्मविश्वास के साथ, बिना किसी सटीकता के, बालबेक में की गई अपनी साइकिल यात्राओं का वर्णन करती, जो हमारी पहली मुलाकात से एक साल पहले की थीं। और मानो मैंने बहुत पहले ही सही अनुमान लगा लिया था, जब मैंने इससे यह निष्कर्ष निकाला था कि वह एक ऐसी लड़की होगी जिसे बहुत अधिक स्वतंत्रता मिली होगी, जो लंबी सैर पर जाती होगी, उन यात्राओं का जिक्र करते ही अल्बर्टीन के होठों पर वही रहस्यमयी मुस्कान आ जाती थी जिसने

बालबेक में मोर्चे पर उन शुरुआती दिनों में मुझे मोहित कर लिया था। उसने मुझे अपनी कुछ सहेलियों के साथ डच ग्रामीण इलाकों की सैर के बारे में भी बताया, शाम को देर रात एम्स्टर्डम लौटने के बारे में, जब लगभग सभी परिचित लोगों की घनी और खुशहाल भीड़ सड़कों और नहर के किनारे उमड़ती थी, जिसकी झलक मुझे अल्बर्टीन की चमकीली आँखों में, तेज़ गति से चलती गाड़ी की झिलमिलाती खिड़कियों में, अनगिनत टिमटिमाती आग में दिखाई देती थी। जिसे सौंदर्यपरक जिज्ञासा कहा जाता है, वह अल्बर्टीन के ठहरने के स्थानों, उस विशेष शाम को वह क्या कर रही होगी, उसकी मुस्कान, उसकी आँखों के भाव, उसके बोले गए शब्द, उसे मिले चुंबनों के बारे में मेरे अंदर मौजूद पीड़ादायक, अथक जिज्ञासा की तुलना में उदासीनता कहलाएगी। नहीं, सेंट-लूप के प्रति जो ईर्ष्या मैंने एक दिन महसूस की थी, अगर वह बनी रहती, तो भी मुझे इतनी बेचैनी नहीं होती। स्त्री का स्त्री के प्रति यह प्रेम कुछ बहुत ही अपरिचित था; किसी भी चीज़ ने मुझे इसके सुखों, इसकी गुणवत्ता का कोई निश्चित, सटीक आभास नहीं दिलाया। कितने लोग, कितनी जगहें (यहाँ तक कि वे जगहें भी जिनका उससे सीधा संबंध नहीं था, अस्पष्ट आनंद स्थल जहाँ उसने शायद कुछ आनंद लिया हो), कितने दृश्य (जहाँ भी भीड़ थी, जहाँ लोग उससे टकरा सकते थे) अल्बर्टाइन ने—एक ऐसे व्यक्ति की तरह जो अपने पूरे दल को, अपने सामने की बाधा को पार कराते हुए, उन्हें थिएटर में प्रवेश दिलाता है—मेरी कल्पना या मेरी स्मृति की दहलीज से, जहाँ मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया था, मेरे हृदय में समाहित कर दिए थे! अब उनके बारे में जो ज्ञान मुझे था वह आंतरिक, तात्कालिक, क्षणिक और पीड़ादायक था। प्रेम, यह हृदय द्वारा बोधगम्य बनाए गए स्थान और समय के अलावा और क्या है?

और फिर भी शायद, अगर मैं खुद पूरी तरह वफादार होता, तो मुझे उन बेवफ़ाइयों के कारण दुख झेलना पड़ता जिनकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था, जबकि अल्बर्टीन में जो कल्पना मुझे पीड़ा देती थी, वह नई महिलाओं का दिल जीतने, नए प्रेम प्रसंग रचने की मेरी निरंतर इच्छा थी, यह सोचना कि वह उस नज़र की दोषी थी जिसे मैं कुछ दिन पहले, उसके बगल में बैठे हुए भी, बोइस डी बोलोग्ने में मेजों पर बैठे युवा साइकिल सवारों पर डालने से खुद को रोक नहीं पाया था। चूंकि हमें व्यक्तिगत जानकारी नहीं है, इसलिए लगभग यह कहा जा सकता है कि हम स्वयं के अलावा किसी और से ईर्ष्या नहीं कर सकते। अवलोकन का कोई

महत्व नहीं है। ज्ञान और दुःख केवल उस सुख से प्राप्त होते हैं जो हमने स्वयं अनुभव किया है।

कभी-कभी, अल्बर्टीन की आँखों में, उसके गालों की अचानक लाली में, मुझे ऐसा लगता था मानो गर्माहट की एक लहर चुपके से उन क्षेत्रों में पहुँच रही हो जो आकाश से भी अधिक दुर्गम हैं, जहाँ अल्बर्टीन की यादें, मेरे लिए अनजान, बसती और विचरण करती हैं। फिर यह सुंदरता, जिसे मैंने उन विभिन्न वर्षों के बारे में सोचते हुए, जिनमें मैंने अल्बर्टीन को जाना था, चाहे बालबेक के समुद्र तट पर हो या पेरिस में, पाया कि मैंने उसे अभी हाल ही में खोजा था, और जो इस तथ्य में निहित थी कि मेरी प्रेमिका इतने सारे स्तरों पर विकसित हो रही थी और इतने सारे बीते दिनों को अपने भीतर समेटे हुए थी, यह सुंदरता लगभग हृदयविदारक हो गई। फिर उस शरमाते हुए चेहरे के नीचे मुझे लगा कि उन शामों का अथाह विस्तार एक खाई की तरह फैला हुआ है जब मैं अल्बर्टीन को नहीं जानता था। मैं चाहूँ तो अल्बर्टीन को अपनी गोद में ले सकता हूँ, उसका सिर अपने हाथों में ले सकता हूँ; मैं उसे सहला सकता था, धीरे-धीरे अपने हाथ उस पर फेर सकता था, लेकिन, मानो मैं किसी ऐसे पत्थर को छू रहा हूँ जिसमें अनादि काल के महासागरों का नमक या किसी तारे का प्रकाश समाया हो, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी ऐसे व्यक्ति के सीलबंद लिफाफे को छू रहा हूँ जो भीतर से अनंत तक पहुँचता है। मैं उस स्थिति से कितना पीड़ित था जिसमें हम प्रकृति की लापरवाही के कारण आ जाते हैं, जिसने शरीरों का विभाजन करते समय आत्माओं के अंतर्संबंध को संभव बनाने के बारे में कभी नहीं सोचा (क्योंकि यदि उसका शरीर मेरे वश में था, तो उसका मन मेरे वश से बाहर था)। और मुझे एहसास हुआ कि अल्बर्टीन मेरे लिए भी वह अद्भुत बंदी नहीं थी जिसके साथ मैंने अपने घर को समृद्ध करने का सोचा था, जबकि मैंने उसकी उपस्थिति को वहाँ उसी तरह पूरी तरह से छिपा रखा था, यहाँ तक कि उन मित्रों से भी जो मुझसे मिलने आते थे और जिन्हें कभी संदेह नहीं हुआ कि वह गलियारे के अंत में, मेरे कमरे के बगल वाले कमरे में है, जैसे उस व्यक्ति ने किया था जिसके बारे में कोई नहीं जानता था कि उसने चीन की राजकुमारी को एक बोतल में बंद करके रखा था; मुझे अतीत की याद दिलाने के लिए क्रूर और निरर्थक दबाव डालते हुए, वह मानो समय की एक शक्तिशाली देवी जैसी लग रही थी। और अगर उसके लिए मुझे अपने कई साल, अपनी सारी दौलत गंवानी पड़े—और अगर मैं खुद से कह सकूँ, जो

कि अफसोस, बिल्कुल निश्चित नहीं है, कि उसने खुद कुछ नहीं खोया—तो मुझे कोई पछतावा नहीं है। निस्संदेह एकांत बेहतर, अधिक फलदायी और कम कष्टदायी होता। लेकिन अगर मैंने स्वान द्वारा सुझाए गए एक संग्राहक का जीवन व्यतीत किया होता (जिसके आनंद के लिए एम. डी चार्लस ने मुझे ताना मारा था, जब उन्होंने हास्य, उद्दंडता और अच्छे स्वाद के मिश्रण के साथ मुझसे कहा था: "तुम्हारे कमरे कितने बदसूरत हैं!") तो वे मूर्तियाँ, वे चित्र जिन्हें मैंने लंबे समय तक खोजा, अंततः प्राप्त किया, या यहाँ तक कि, इसे सबसे अच्छे रूप में कहें तो, तटस्थ भाव से देखा, उस छोटे से घाव की तरह जो जल्दी भर जाता है, लेकिन जिसे अल्बर्टीन की अचेतन अनाड़ीपन, आम तौर पर लोगों की, या मेरे अपने विचारों की, फिर से खोलने में कभी देर नहीं लगती, मुझे अपनी सीमाओं से परे उस रास्ते तक पहुँच प्रदान करते, जो भले ही निजी हो, उस मुख्य सड़क पर खुलता है जिस पर हम दूसरों के जीवन को उसी दिन से जान पाते हैं जिस दिन इसने हमें पीड़ा दी है?

कभी-कभी चाँद इतना चमकीला होता था कि अल्बर्टीन के सोने के एक घंटे बाद भी मैं उसके बिस्तर के पास जाकर उसे खिड़की से चाँद देखने के लिए कहता था। मुझे पूरा यकीन है कि मैं इसी कारण उसके कमरे में जाता था, न कि यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह सचमुच वहाँ है। अगर वह चाहती भी तो उसके भागने की क्या संभावना थी? इसके लिए फ्रांस्वा के साथ एक असंभव सी मिलीभगत की आवश्यकता होती। धुंधले कमरे में, मुझे तकिए की सफेदी पर काले बालों का एक पतला मुकुट के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। लेकिन मैं अल्बर्टीन की साँसें सुन सकता था। उसकी नींद इतनी गहरी थी कि पहले तो मैं बिस्तर तक जाने में हिचकिचाया। फिर मैं उसके किनारे पर बैठ गया। उसकी नींद उसी गुनगुनाहट के साथ बहती रही। मैं यह व्यक्त नहीं कर सकता कि उसका जागना कितना सुखद होता था। मैंने उसे गले लगाया, उसे हिलाया। उसकी नींद तुरंत टूट गई, लेकिन बिना एक पल भी रुके, वह खिलखिलाकर हंस पड़ी और अपनी बाहों को मेरी गर्दन में लपेटते हुए बोली, "मैं तो बस यही सोचने लगी थी कि तुम आओगे या नहीं," और वह कोमल, प्यारी हंसी हंसी। ऐसा लग रहा था मानो सोते समय उसका प्यारा सा चेहरा केवल उमंग, स्नेह और हंसी से भरा हुआ था। और उसे जगाकर मैंने मानो फल काटने पर निकलने वाले रस को बहा दिया हो, जो हमारी प्यास बुझाता है।

इस बीच सर्दी का अंत हो गया; सुहावना मौसम लौट आया, और अक्सर जब अल्बर्टीन मुझे शुभ रात्रि कहती, मेरा कमरा, मेरे पर्दे, पर्दों के ऊपर की दीवार अभी भी पूरी तरह अंधेरी होती, तो बगल के ननों के बगीचे में मुझे सन्नाटे में एक अज्ञात पक्षी की मधुर और अनमोल आवाज़ सुनाई देती, मानो चर्च में हारमोनियम बज रहा हो। वह पक्षी लिडियन शैली में सुबह की प्रार्थना कर रहा था, और मेरे अंधेरे के बीच सूरज की चमकीली रोशनी बिखेर रहा था। एक बार तो अचानक ही हमें एक मार्मिक अपील की लय सुनाई दी। कबूतरों की गुटरगू शुरू हो गई थी। "इससे साबित होता है कि दिन आ गया है," अल्बर्टीन ने कहा; और, मानो मेरे साथ रहने के कारण वह सुहावने मौसम का आनंद नहीं ले पा रही हो, उसकी भौंहें लगभग सिकुड़ गईं, "अगर कबूतर लौट आए हैं, तो वसंत शुरू हो गया है।" उनकी गुटरगू और मुर्गे की बांग के बीच की समानता उतनी ही गहरी और अस्पष्ट थी, जितनी कि विंटेइल के सप्तक में, अडागियो की थीम और समापन रचना की थीम के बीच की समानता, जो कि अन्य रचनाओं के समान ही मुख्य थीम पर आधारित है, लेकिन स्वर-संख्या और माप के अंतर से इतनी रूपांतरित है कि यदि कोई अज्ञानी व्यक्ति विंटेइल की कोई पुस्तक खोलता है, तो वह यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाता है कि वे तीनों रचनाएँ एक ही चार स्वरों पर आधारित हैं, वे चार स्वर जिन्हें वह पियानो पर एक उंगली से भी बजा सकता है, लेकिन तीनों रचनाओं का कोई भी अंश पुनः प्राप्त नहीं कर पाएगा। तो कबूतरों द्वारा प्रस्तुत किया गया यह उदास अंश एक प्रकार की मुर्गे की बांग थी, जो आकाश में नहीं उठी, लंबवत ऊपर नहीं उठी, बल्कि गधे की तरह नियमित, मधुरता से भरी हुई, एक कबूतर से दूसरे कबूतर तक एक ही क्षैतिज रेखा पर चलती रही, और कभी ऊपर नहीं उठी, कभी अपनी पार्श्व शिकायत को उस आनंदमय अपील में नहीं बदला जो प्रस्तावना के एलेग्रो और समापन में इतनी बार बोली गई थी।

अब रातें और भी छोटी होने लगी थीं, और जिस समय पहले भोर होती थी, उससे भी पहले, मैं अपनी खिड़की के पर्दों के ऊपर से सुबह की बढ़ती हुई सफेदी को धीरे-धीरे फैलते हुए देख सकता था। अगर मैंने अल्बर्टिन को यह ज़िंदगी जीने की छूट दे दी थी—जिसमें, उसके मना करने के बावजूद, मुझे लगता था कि वह खुद को एक कैदी जैसा महसूस करती है—तो ऐसा सिर्फ़ इसलिए था क्योंकि मुझे पक्का यकीन था कि अगले दिन मैं एक साथ दो काम कर पाऊँगा: बिस्तर से उठकर काम पर लगना, और बाहर जाकर किसी ऐसी जगह के लिए हमारे

जाने की तैयारी करना जिसे हम खरीदेंगे; और जहाँ अल्बर्टिन ज़्यादा आज़ादी से और मेरी वजह से बिना किसी चिंता के, गाँव या समुद्र किनारे की ज़िंदगी—नाव चलाने या शिकार करने जैसी ज़िंदगी—जी पाएगी, जो उसे बहुत पसंद थी। लेकिन, अगले दिन, अल्बर्टिन के अतीत का वह हिस्सा—जिसे मैं कभी प्यार करता था तो कभी नफ़रत—अचानक कुछ ऐसा हुआ कि (ठीक वैसे ही जैसे, जब कोई हमारे सामने मौजूद होता है, तो हर कोई—चाहे हिसाब-किताब से, या शिष्टाचार से, या दया से—झूठ का एक पर्दा बुनने लगता है, जिसे हम सच मान बैठते हैं), पीछे मुड़कर देखने पर, उस अतीत का कोई एक पल—यहाँ तक कि वे पल भी जिनके बारे में मुझे लगता था कि मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ—अचानक मेरे सामने एक ऐसे रूप में आया, जिसे अब कोई मुझसे छिपाने की कोशिश नहीं कर रहा था; और वह रूप, पहले जैसा मुझे दिखाई दिया था, उससे बिल्कुल अलग था। उसकी आँखों की किसी झलक के पीछे—उस सच्ची सोच की जगह, जिसे मैं पहले उसकी आँखों में पढ़ लेने का दावा करता था—एक ऐसी इच्छा छिपी थी, जिसका मुझे अब तक ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था; और जब वह इच्छा ज़ाहिर हुई, तो उसने अल्बर्टिन के दिल के एक ऐसे हिस्से को मुझसे दूर कर दिया, जिसके बारे में मुझे लगता था कि वह मेरे अपने दिल के साथ पूरी तरह घुल-मिल गया है। उदाहरण के लिए, जब जुलाई के महीने में आंद्रे बालबेक छोड़कर गई थी, तो अल्बर्टिन ने मुझे कभी नहीं बताया था कि वह उससे जल्द ही दोबारा मिलने वाली है; और मुझे लगा था कि वह उससे उम्मीद से भी पहले मिल ली होगी—क्योंकि, बालबेक में मुझे जो गहरा दुख महसूस हुआ था, उसे देखते हुए, 14 सितंबर की उस रात, उसने मेरे लिए एक बहुत बड़ी कुर्बानी दी थी: उसने वहाँ रुकने के बजाय तुरंत पेरिस लौट आने का फ़ैसला किया था। जब वह 15 तारीख को वहाँ पहुँची, तो मैंने उससे कहा कि वह जाकर आंद्रे से मिले; और मैंने उससे पूछा: "क्या वह तुम्हें दोबारा देखकर खुश हुई?" अब, एक दिन, श्रीमती... बोंटेम्प्स आई थीं, अल्बर्टिन के लिए कुछ लेकर; मैंने उन्हें एक पल के लिए देखा और बताया कि अल्बर्टिन, आंद्रे के साथ बाहर गई है: "वे लोग गाँव की तरफ़ घूमने गए हैं।" "हाँ," श्रीमती बोंटेम्प्स ने जवाब दिया, "अल्बर्टिन तो हमेशा ही गाँव जाने के लिए तैयार रहती है। मिसाल के तौर पर, तीन साल पहले तो उसे हर रोज़ 'ब्यूट्स-शॉमों' जाना ही होता था।" 'ब्यूट्स-शॉमों' नाम सुनते ही—एक ऐसी जगह जिसके बारे में अल्बर्टिन ने मुझसे कहा था कि वह वहाँ कभी नहीं गई—मेरी साँस एक पल के

लिए थम-सी गई। सच, सबसे चालाक दुश्मन होता है। वह हमारे दिल के उन हिस्सों पर हमला करता है जहाँ हमें उसकी ज़रा भी उम्मीद नहीं होती, और जहाँ हमने बचाव की कोई तैयारी भी नहीं की होती। तो क्या अल्बर्टिन अपनी मौसी से झूठ बोल रही थी—जब उसने कहा था कि वह हर रोज़ 'ब्यूट्स-शॉमों' जाती थी—या फिर मुझसे झूठ बोल रही थी—जब हाल ही में उसने मुझसे कहा था कि वह उस जगह को जानती ही नहीं? "खुशकिस्मती से," श्रीमती बोंटेम्प्स ने बात आगे बढ़ाई, "वह बेचारी आंद्रे जल्द ही किसी ज़्यादा सेहतमंद जगह के लिए—यानी असली गाँव के लिए—रवाना होने वाली है; उसे इसकी बहुत सख़्त ज़रूरत है, क्योंकि वह बिल्कुल भी ठीक-ठाक नहीं लग रही। यह सच है कि इस गर्मियों में उसे वह ताज़ी हवा पाने का मौका ही नहीं मिला जिसकी उसे ज़रूरत थी। ज़रा सोचिए, वह जुलाई के आखिर में बालबेक से यह सोचकर चली आई थी कि सितंबर में वह वहाँ वापस जाएगी, लेकिन तभी उसके भाई के घुटने में चोट लग गई, और वह वापस नहीं जा पाई।" तो इसका मतलब यह हुआ कि अल्बर्टिन बालबेक में उसका इंतज़ार कर रही थी, और उसने यह बात मुझसे छिपाकर रखी थी। यह सच है कि मेरे साथ पेरिस लौटने की पेशकश करके उसने मुझ पर और भी ज़्यादा मेहरबानी की थी। सिवाय इसके कि... "हाँ, मुझे याद है कि अल्बर्टिन ने मुझसे इसका ज़िक्र किया था" (यह बात सच नहीं थी)। "अच्छा, वह हादसा हुआ कब था? मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा।" "मेरे हिसाब से, यह बिल्कुल सही समय पर हुआ; क्योंकि इसके ठीक एक दिन बाद ही विला का किराया शुरू हो जाता, और एंड्री की दादी को एक महीने का किराया बेवजह ही देना पड़ता। 14 सितंबर को उसके पैर में चोट लगी, और 15 सितंबर की सुबह तक एंड्री ने अल्बर्टिन को टेलीग्राम भेजकर बता दिया कि वह नहीं आ रही है; इस तरह अल्बर्टिन ने भी एजेंट को समय रहते आगाह कर दिया। अगर एक दिन की भी देर हो जाती, तो किराए का सिलसिला अक्टूबर के मध्य तक चलता रहता।" और इसलिए, इसमें कोई शक नहीं कि जब अल्बर्टिन ने अपना मन बदलते हुए मुझसे कहा: "चलो, आज शाम ही चलते हैं," तो असल में वह अपनी कल्पना में एंड्री की दादी के उस अपार्टमेंट को देख रही थी—एक ऐसी जगह, जहाँ पहुँचते ही वह अपनी उस सहेली से मिल पाती, जिससे मिलने की उम्मीद उसने (बिना मुझे भनक लगे) कुछ ही दिनों बाद बालबेक में की थी। पेरिस लौटने का प्रस्ताव देते समय उसने जो प्यार भरे शब्द कहे थे—जो उसके कुछ देर पहले के अड़ियल इनकार के

बिल्कुल विपरीत थे—मैंने उन्हें उसकी 'अच्छी फितरत' के फिर से जाग उठने का संकेत माना था। लेकिन असल में, वे शब्द उस परिस्थिति में आए बदलाव का ही नतीजा थे—एक ऐसी परिस्थिति जिसके बारे में हमें कोई जानकारी नहीं होती, और जो उन औरतों के व्यवहार में आने वाले उतार-चढ़ाव का सबसे बड़ा राज़ होती है, जो हमसे प्यार नहीं करतीं। वे अगले दिन मिलने का वादा करने से इसलिए अड़ियलपन से इनकार कर देती हैं, क्योंकि वे थकी हुई होती हैं, क्योंकि उनकी...

दादाजी ज़ोर देते हैं कि वे उनके साथ खाना खाएँ: "लेकिन बाद में आना," हम ज़ोर देकर कहते हैं। "वह मुझे बहुत देर तक रोककर रखते हैं। हो सकता है वह मुझे घर तक छोड़ने आना चाहें।" पूरी सच्चाई यह है कि उन्होंने किसी ऐसे आदमी से मिलने का समय तय किया है जिसे वे पसंद करते हैं। अचानक ऐसा होता है कि वह आदमी अब खाली नहीं है। और वे हमें यह बताने आते हैं कि हमें निराश करने का उन्हें कितना अफ़सोस है, कि दादाजी चाहें तो जाकर फाँसी लगा लें, कि दुनिया में ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उन्हें हमारे साथ रहने से रोक सके। मुझे बालबेक से मेरी रवानगी के दिन अल्बर्टिन की बातों में इन वाक्यों को पहचान लेना चाहिए था, लेकिन उस भाषा को समझने के लिए मुझे उस समय अल्बर्टिन के चरित्र की दो खास बातों को याद करने की ज़रूरत थी जो अब मेरे मन में फिर से उभर आईं—एक मुझे दिलासा देने के लिए, दूसरी मुझे दुखी करने के लिए; क्योंकि हमारी याददाश्त में हमें हर चीज़ थोड़ी-बहुत मिल जाती है; यह एक तरह की दवा की दुकान है, एक रासायनिक प्रयोगशाला है, जिसमें हमारा टटोलता हुआ हाथ कभी किसी सुकून देने वाली दवा पर ठहरता है, तो कभी किसी खतरनाक ज़हर पर। पहली, यानी दिलासा देने वाली बात यह थी कि अल्बर्टिन की आदत थी कि वह एक ही काम से कई लोगों को खुश कर देती थी—वह जो भी करती थी, उसका कई तरह से इस्तेमाल करती थी—जो अल्बर्टिन की एक खास पहचान थी। यह उसके चरित्र के बिल्कुल अनुरूप था कि जब वह पेरिस लौटी (यह बात कि आंद्रे वापस नहीं आ रही थी, उसके लिए बालबेक में रहना असुविधाजनक बना सकती थी—हालाँकि इसका यह मतलब बिल्कुल नहीं था कि वह आंद्रे के बिना जी ही नहीं सकती थी), तो उसने अपनी उस एक ही यात्रा से दो लोगों से जुड़ने का मौका निकाल लिया, जिनसे वह सचमुच प्यार करती थी: एक मैं—जिसे उसने यह यकीन दिलाया कि वह इसलिए आ रही है ताकि मैं अकेला न रहूँ,

ताकि मैं दुखी न होऊँ, और यह सब वह मेरे प्रति अपनी निष्ठा के कारण कर रही है; और दूसरी आंद्रे—जिसे उसने यह समझाया कि जैसे ही आंद्रे के बालबेक आने की बात खत्म हो गई, तो वह खुद भी वहाँ एक पल भी और नहीं रुकना चाहती थी; उसने वहाँ अपना रुकना सिर्फ़ इस उम्मीद में बढ़ाया था कि वह आंद्रे से मिल सकेगी, और अब वह उससे मिलने के लिए जल्दी-जल्दी वापस लौट रही है। अब, अल्बर्टिन का मेरे साथ जाना, एक तरफ तो मेरे दुख और पेरिस लौटने की मेरी इच्छा का, और दूसरी तरफ एंड्री के टेलीग्राम का इतना सीधा नतीजा था, कि यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि एंड्री और मैं—जो एक-दूसरे की बातों से अनजान थे (वह मेरे दुख से और मैं उसके टेलीग्राम से)—यह मान बैठें कि अल्बर्टिन का बालबेक से जाना उसी एक वजह का नतीजा था जिसके बारे में हम दोनों जानते थे; और सच भी यही था कि वह इतनी कम देर में और इतनी अचानक चली गई थी। और इस मामले में, मैं अब भी यह मान सकता था कि मेरा साथ देना ही अल्बर्टिन का असली मकसद था, और साथ ही उसने एंड्री की शुक्रगुज़ारी पाने का मौका भी हाथ से जाने नहीं दिया था। लेकिन बदकिस्मती से, मुझे लगभग तुरंत ही अल्बर्टिन की एक और खासियत याद आ गई—वह खासियत थी किसी भी सुख के ज़बरदस्त आकर्षण के प्रति उसकी दीवानगी। और इस तरह मुझे याद आया कि जब उसने जाने का फैसला किया था, तो वह ट्राम तक पहुँचने के लिए कितनी बेताब थी; उसने मैनेजर को कैसे धकेलकर रास्ता बनाया था—वह मैनेजर जो हमें रोकने की कोशिश कर रहा था और जिसकी वजह से हमारी बस छूट सकती थी; और वह मिली-भगत वाली अदा (कंधे उचकाना) जो उसने मुझे दिखाई थी—जिससे मैं बहुत प्रभावित हुआ था—जब सीढ़ियों पर, एम. डी कैम्ब्रेमर ने हमसे पूछा था कि क्या हम अपना जाना 'एक हफ़्ते के लिए टाल नहीं सकते।' हाँ, उस पल उसकी आँखों के सामने जो नज़ारा था, जिस चीज़ ने उसे जाने के लिए इतना बेचैन कर दिया था, जिसे दोबारा देखने के लिए वह इतनी उतावली थी—वह था वह खाली अपार्टमेंट जहाँ मैं एक बार गया था; एंड्री की दादी का घर, जिसकी देखभाल एक बूढ़ा नौकर करता था; एक आलीशान अपार्टमेंट, जिसका मुख दक्षिण की ओर था, लेकिन वह इतना खाली और इतना शांत था कि ऐसा लगता था मानो सूरज ने सोफ़े और कुर्सियों पर धूल से बचने वाली चादरें बिछा दी हों—वही कमरा जहाँ अल्बर्टिन और एंड्री उस देखभाल करने वाले नौकर से—जो शायद अनजान था या शायद उनका साथी था—थोड़ी देर

आराम करने की इजाज़त माँगा करती थीं। अब मैं उस कमरे को हमेशा अपनी आँखों के सामने देख सकता था—खाली, जिसमें बस एक बिस्तर या सोफ़ा पड़ा होता था; वह कमरा, जहाँ अल्बर्टिन जब भी जल्दी में और गंभीर लगती थी, तो अपनी सहेली से मिलने चली जाती थी—वह सहेली जो निस्संदेह उससे पहले ही वहाँ पहुँच चुकी होती थी, क्योंकि उसके पास अपने समय पर ज़्यादा आज़ादी थी। मैंने पहले कभी उस अपार्टमेंट के बारे में सोचा भी नहीं था, जिसमें अब मुझे एक अजीब सी, भयानक सुंदरता नज़र आ रही थी। दूसरे लोगों की ज़िंदगी में जो अनजान पहलू होता है, वह प्रकृति जैसा ही होता है—हर नई वैज्ञानिक खोज उसे थोड़ा कम तो कर देती है, लेकिन पूरी तरह से खत्म नहीं कर पाती। एक ईर्ष्यालु प्रेमी, जिस औरत से प्यार करता है, उसे हज़ारों छोटी-मोटी खुशियों से वंचित करके परेशान करता है; लेकिन वे खुशियाँ जो उस औरत की ज़िंदगी की सबसे अहम बुनियाद होती हैं, उन्हें वह ऐसी जगह छिपाकर रखती है—जहाँ उस प्रेमी का ध्यान कभी जाता ही नहीं—ठीक उन पलों में, जब उसे लगता है कि वह अपनी सबसे तेज़ नज़र और समझदारी का इस्तेमाल कर रहा है, और जब दूसरे लोग उसे हर बात की पल-पल की खबर दे रहे होते हैं। खैर, कम-से-कम एंड्री तो पेरिस छोड़कर जा ही रही थी। लेकिन मैं यह बिल्कुल नहीं चाहता था कि अल्बर्टिन को मुझे नीचा दिखाने का मौका मिले—यह सोचकर कि मैं उसके और एंड्री के हाथों का खिलौना बन गया था। किसी न किसी दिन, मैं उसे यह बात ज़रूर बताऊँगा। और इस तरह, शायद मैं उसे मुझसे और ज़्यादा खुलकर बात करने पर मजबूर कर दूँगा—यह दिखाकर कि जिन बातों को वह मुझसे छिपाती है, उन सबके बारे में मुझे पहले से ही पता है। लेकिन फिलहाल मैं उससे इस बारे में कोई ज़िक्र नहीं करना चाहता था; सबसे पहली वजह तो यह थी कि...

अपनी मौसी के आने के बाद, वह अंदाज़ा लगा लेती थी कि मेरी जानकारी कहाँ से आई है, उस स्रोत को बंद कर देती थी, और दूसरे, अनजान स्रोतों से नहीं डरती थी। साथ ही, क्योंकि मैं कोई जोखिम नहीं उठाना चाहता था—जब तक कि मुझे पूरी तरह से यकीन न हो जाए कि मैं अल्बर्टिन को अपनी मर्ज़ी से जब तक चाहूँ, अपने पास रख सकता हूँ—मैं उसमें बार-बार ऐसी चिड़चिड़ाहट पैदा नहीं करना चाहता था, जिसका नतीजा यह हो सकता था कि वह मुझे छोड़कर जाने का फ़ैसला कर ले। यह सच है कि अगर मैं तर्क करता, सच्चाई की खोज करता, और उसकी बातों के आधार पर भविष्य का अनुमान लगाता—जो हमेशा मेरी सभी

योजनाओं को मंज़ूरी देती थी, और मुझे यकीन दिलाती थी कि वह इस ज़िंदगी से कितना प्यार करती है, और उसके एकांत से उसे कितनी कम कमी महसूस होती है—तो मुझे कोई शक नहीं था कि वह हमेशा मेरे साथ रहेगी। सच कहूँ तो, इस विचार से मुझे बहुत झुंझलाहट होती थी; मुझे लगता था कि मैं ज़िंदगी और इस पूरे ब्रह्मांड को खो रहा हूँ—जिनका मैंने कभी आनंद नहीं लिया था—और उन्हें एक ऐसी औरत के लिए दाँव पर लगा रहा हूँ, जिसमें अब मुझे कुछ भी नयापन नज़र नहीं आता था। मैं वेनिस भी नहीं जा सकता था; क्योंकि वहाँ, जब मैं बिस्तर पर लेटा होता, तो मुझे इस बात का डर बहुत ज़्यादा सताता कि कहीं गोंडोलियर (नाव चलाने वाला), होटल के लोग, या वेनिस की औरतें उसके साथ छेड़छाड़ न कर बैठें। लेकिन, दूसरी तरफ़, अगर मैं किसी दूसरी परिकल्पना के आधार पर तर्क करता—जो अल्बर्टिन की बातों पर नहीं, बल्कि उसकी खामोशियों, नज़रों, शर्म से लाल होने, रूठने, और यहाँ तक कि गुस्से के अचानक फूट पड़ने पर आधारित थी (जिन्हें मैं आसानी से यह साबित कर सकता था कि वे बेबुनियाद हैं, लेकिन जिन्हें नज़रअंदाज़ करना ही मुझे बेहतर लगता था) —तो मैं खुद से कहता कि उसे यह ज़िंदगी असहनीय लग रही है, कि हर पल उसे ऐसा महसूस होता है कि वह उन चीज़ों से वंचित है जिनसे वह प्यार करती है, और यह कि एक न एक दिन वह मुझे छोड़कर चली ही जाएगी। अगर ऐसा होता, तो मेरी बस यही इच्छा थी कि मैं वह पल खुद चुन सकूँ, जब उसका जाना मेरे लिए बहुत ज़्यादा तकलीफ़देह न हो; और साथ ही, वह ऐसा मौसम हो जब वह उन जगहों में से किसी भी जगह न जा सके, जहाँ मैं उसकी अय्याशियों की कल्पना करता था—चाहे वह एम्स्टर्डम हो, या एंड्री हो, जिससे वह सचमुच, कुछ महीनों बाद फिर मिलने वाली थी। लेकिन इस बीच, मैं शांत हो चुका होता, और उनकी मुलाक़ात का मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता। किसी भी हाल में, मुझे तब तक इंतज़ार करना ही था, जब तक मैं उस हल्के से झटके से उबर न जाऊँ—जो मुझे यह पता चलने पर लगा था कि अल्बर्टिन ने, कुछ ही घंटों के अंतराल में, पहले तो न जाने का और फिर तुरंत बालबेक छोड़कर चले जाने का फ़ैसला क्यों किया था। मुझे उन लक्षणों को मिटने के लिए समय देना था; ये लक्षण तभी कम हो सकते थे जब मुझे कोई नई बात पता न चले। लेकिन ये लक्षण अभी भी इतने तेज़ थे कि वे अलगाव की प्रक्रिया को—जिसे अब मैं अनिवार्य मान चुका था, पर जो किसी भी तरह से ज़रूरी नहीं थी, और जिसे 'शांत मन' से करना ही बेहतर होता—और भी

ज़्यादा तकलीफ़देह और मुश्किल बना सकते थे। सही समय चुनने का अधिकार पूरी तरह मेरे ही हाथ में था; क्योंकि अगर उसने मेरे मन बनाने से पहले ही मुझे छोड़ने का फ़ैसला कर लिया होता—ठीक उसी पल जब वह मुझे बताती कि वह इस ज़िंदगी से ऊब चुकी है—तो भी मेरे पास हमेशा इतना समय होता कि मैं उसके तर्कों का जवाब दे सकूँ, उसे और ज़्यादा आज़ादी देने का प्रस्ताव रख सकूँ, या उसे भविष्य में किसी ऐसे बड़े सुख का वादा कर सकूँ जिसका वह खुद बेसब्री से इंतज़ार करे; और सबसे बुरे हालात में, अगर मेरे पास उसके दिल को छूने के अलावा कोई और चारा न बचता, तो मैं उसे अपने दुख का एहसास दिला सकूँ। इसलिए, इस नज़रिए से मैं पूरी तरह निश्चिंत था—हालाँकि, मैं अपने साथ बहुत ज़्यादा तार्किक नहीं था। क्योंकि, उन स्थितियों में जहाँ मैंने उसकी कही और बताई बातों को नज़रअंदाज़ कर दिया था, मैंने यह मान लिया था कि जब उसे मुझे छोड़ने का सवाल आएगा, तो वह मुझे अपने कारण पहले से ही बता देगी, और मुझे उन कारणों से लड़ने और उन पर जीत हासिल करने का मौका देगी। मुझे महसूस हुआ कि अल्बर्टिन के साथ मेरी ज़िंदगी—एक तरफ़, जब मुझे उससे जलन नहीं होती थी—तो महज़ बोरियत थी; और दूसरी तरफ़, जब मुझे उससे जलन होती थी—तो वह लगातार मिलने वाली तकलीफ़ थी। अगर उसमें कोई खुशी थी भी, तो वह ज़्यादा देर तक टिकने वाली नहीं थी। मुझमें वही समझदारी की भावना थी जिसने मुझे बालबेक में प्रेरित किया था—जब, उस शाम, श्रीमती डी कैम्ब्रेमर के आने के बाद जब हम दोनों साथ में बहुत खुश थे, मैंने उसे छोड़ देने का फ़ैसला कर लिया था; क्योंकि मैं जानता था कि हमारे मेल-जोल को और लंबा खींचने से मुझे कुछ भी हासिल नहीं होगा। बस फ़र्क इतना था कि, अब भी, मैं यह कल्पना कर रहा था कि उसकी जो याद मेरे मन में रह जाएगी, वह हमारे बिछड़ने के आखिरी पल से शुरू होकर, किसी वाद्य-यंत्र के 'पेडल' से गूंजती हुई एक लंबी सी 'थरथराहट' (vibration) जैसी होगी। और इसलिए, मैंने एक सुखद पल चुनने का इरादा किया था—ताकि वही पल मेरे भीतर लगातार गूंजता रहे। यह ज़्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए, मुझे ज़्यादा देर इंतज़ार नहीं करना चाहिए, मुझे समझदारी से काम लेना चाहिए। और फिर भी, इतनी देर इंतज़ार करने के बाद, कुछ और दिन इंतज़ार न करना पागलपन होगा—जब तक कि कोई सही मौका न मिल जाए—बजाय इसके कि मैं उसे उसी विद्रोह की भावना के साथ जाते हुए देखने का जोखिम उठाऊँ, जैसी भावना मैंने पहले महसूस की थी,

जब माँ मुझे 'गुड नाइट' कहे बिना मेरे बिस्तर के पास से चली गई थीं, या जब उन्होंने स्टेशन पर मुझे 'गुड बाय' कहा था। हर कीमत पर, मैंने उसे वे सारी चीज़ें देने की कोशिश की जो मैं दे सकता था। जहाँ तक Fortuny गाउन्स की बात है, हमने आखिरकार एक नीले और सुनहरे रंग का गाउन चुना, जिसके अंदर गुलाबी रंग की लाइनिंग थी और जो अभी-अभी बनकर तैयार हुआ था। और उसी समय, मैंने बाकी पाँच गाउन्स का भी ऑर्डर दे दिया था, जिन्हें उसने इस आखिरी गाउन को ज़्यादा पसंद करने की वजह से, बड़े अफ़सोस के साथ छोड़ दिया था। फिर भी, बसंत के आने पर—उसकी मौसी के मुझसे बात करने के दो महीने बाद—एक शाम मैं गुस्से में बह गया। यह ठीक वही शाम थी, जब Albertine ने पहली बार वह गाउन पहना था।

पहली बार मैंने फोर्टुनी द्वारा डिज़ाइन किया गया सोने और नीले रंग का वो गाउन देखा, जिसने मुझे वेनिस की याद दिलाकर, मुझे इस बात का और भी गहरा एहसास दिलाया कि मैं उसके लिए क्या त्याग कर रहा था, जबकि वह मेरे प्रति कोई कृतज्ञता नहीं रखती थी। भले ही मैंने वेनिस कभी नहीं देखा था, लेकिन बचपन से ही, जब मैं ईस्टर की छुट्टियों में वहाँ जाने का सपना देखता था, तब से लगातार उसका सपना देखता आ रहा था, और उससे भी पहले, जब स्वान ने मुझे बहुत पहले कॉम्ब्रे में टिटियन की पेंटिंग्स और गियोटो की तस्वीरें दी थीं, तब से। उस शाम अल्बर्टीन ने जो फोर्टुनी गाउन पहना था, वह मुझे उस अदृश्य वेनिस के मोहक आभास जैसा लगा। यह अरबी अलंकारों से भरा हुआ था, मानो वेनिस के महल, जो पत्थर की जालीदार दीवार के पीछे सुल्तानाओं की तरह छिपे हों, जैसे एम्ब्रोसियन पुस्तकालय की जिल्दें, जैसे वे स्तंभ जिन पर जीवन और मृत्यु का प्रतीक माने जाने वाले प्राच्य पक्षी कपड़े के दर्पण में बार-बार दिखाई देते थे, एक गहरे नीले रंग में जो मेरी दृष्टि फैलते ही एक लचीले सुनहरे रंग में बदल गया, ठीक उसी तरह जैसे आगे बढ़ती गोंडोलों के सामने ग्रैंड कैनाल का नीला रंग धधकते धातु में बदल जाता है। और आस्तीनों में चेरी गुलाबी रंग की अस्तर लगी थी जो इतनी विशिष्ट वेनिस की विशेषता है कि इसे टिएपोलो गुलाबी कहा जाता है।

दिन के दौरान, फ्रांस्वा ने मेरे कानों में यह बात कह दी थी कि अल्बर्टीन किसी भी बात से संतुष्ट नहीं होती, कि जब मैं उसे संदेश भेजती हूँ कि मैं उसके साथ बाहर जा रही हूँ या नहीं जा

रही हूँ, कि उसे लेने के लिए गाड़ी आएगी या नहीं आएगी, तो वह लगभग कंधे उचका देती है और मुश्किल से ही कोई विनम्र जवाब देती है। आज शाम, जब मुझे लगा कि वह चिड़चिड़ी है, और जब गर्मी की पहली तपिश ने मेरे तंत्रिका तंत्र पर असर डाला, तो मैं अपना गुस्सा रोक नहीं पाई और उसकी कृतघ्नता के लिए उसे फटकारा। "हाँ, तुम किसी से भी पूछ सकती हो," मैंने अपनी पूरी ताकत से चिल्लाते हुए कहा, मानो मैं खुद पर काबू नहीं रख पा रही थी, "तुम फ्रांस्वा से पूछ सकती हो, यह तो सबको पता है।" लेकिन तुरंत मुझे याद आया कि अल्बर्टीन ने एक बार मुझसे कहा था कि जब मैं गुस्से में होती हूँ तो वह मुझे कितना डरावना पाती है, और मैंने एस्तेर के शब्दों को अपने ऊपर लागू किया:

ज़रा देखो, यह चेहरा मेरे प्रति कितना नाराज़ है।

इसने मेरी व्याकुल आत्मा को अवश्य ही झकझोर दिया होगा।

अफसोस, बिना किसी हिचकिचाहट के, कितना साहसी हृदय!

वह उसकी आंखों से निकलने वाली बिजली की चमक को भी सहन कर लेगा।

मुझे अपनी हिंसा पर शर्म आ रही थी। और, अपने किए की प्रायश्चित करने के लिए, हालांकि हार स्वीकार किए बिना, ताकि मेरी शांति एक सशक्त और प्रभावशाली शांति बन सके, और साथ ही मैंने उसे एक बार फिर यह दिखाना उचित समझा कि मैं अलगाव से नहीं डरता, ताकि उसे मुझसे संबंध तोड़ने का कोई प्रलोभन न हो: "मुझे क्षमा कर दो, मेरी प्यारी अल्बर्टीन, मुझे अपनी हिंसा पर शर्म आ रही है, मुझे नहीं पता कि कैसे माफी मांगूं। अगर हम साथ नहीं रह सकते, अगर हमें अलग होना ही है, तो इस तरह से नहीं होना चाहिए, यह हमारे लिए उचित नहीं होगा। हम अलग हो जाएंगे, अगर अलग होना जरूरी है, लेकिन सबसे पहले मैं आपसे अत्यंत विनम्रतापूर्वक और दिल से क्षमा मांगना चाहता हूं।" मैंने तय किया कि अपनी बदतमीज़ी का प्रायश्चित करने के लिए और यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह कुछ समय तक, कम से कम एंड्री के पेरिस छोड़ने तक (जो कि तीन सप्ताह में होगा), मेरे साथ रहे, अगले दिन उसके लिए कुछ ऐसा सुख सोचना बेहतर होगा जो उसे अब तक मिले किसी भी सुख से बड़ा हो और जिसे पूरा होने में थोड़ा समय लगे; साथ ही, चूंकि मैं उसे पहुँचाई गई ठेस को मिटाने जा रहा था, शायद मुझे इस मौके का फायदा उठाकर उसे यह दिखाना चाहिए कि मैं उसके जीवन के बारे में उससे कहीं अधिक जानता हूँ जितना वह सोचती है। मेरी दयालुता

से उसके मन में जो नाराज़गी होगी वह कल दूर हो जाएगी, लेकिन चेतावनी उसके मन में बनी रहेगी। "हाँ, मेरी प्यारी अल्बर्टीन, अगर मैंने कुछ हिंसक कहा हो तो मुझे माफ़ कर देना। जितना तुम सोचती हो, उतना मेरा दोष नहीं है। दुनिया में कुछ बुरे लोग हैं जो हमें आपस में झगड़वाना चाहते हैं; मैंने हमेशा इस बारे में बात करने से परहेज़ किया है, क्योंकि मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहता था। लेकिन कभी-कभी कुछ आरोपों से मेरा दिमाग खराब हो जाता है। उदाहरण के लिए," मैंने आगे कहा, "वे आजकल मुझे परेशान कर रहे हैं, वे तुम्हारे रिश्तेदारों के बारे में अफवाहें फैलाकर मुझे सता रहे हैं, लेकिन एंड्री के बारे में।" "एंड्री के बारे में?" वह गुस्से से लाल हो उठी। हैरानी या हैरानी जताने की इच्छा से उसने अपनी आँखें चौड़ी कर लीं। "कितना प्यारा! और क्या कोई बता सकता है कि तुम्हें ये सब बातें कौन बता रहा है, क्या मुझे इन लोगों से बात करने की इजाज़त मिल सकती है, उनसे यह जानने की कि वे अपने ये झूठे आरोप किस आधार पर लगा रहे हैं?" "मेरी प्यारी अल्बर्टीन, मुझे नहीं पता, ये पत्र गुमनाम हैं, लेकिन उन लोगों के हैं जिन्हें ढूंढने में शायद आपको कोई कठिनाई न हो" (यह दिखाने के लिए कि मुझे विश्वास नहीं था कि वह कोशिश करेगी) "क्योंकि वे आपको अच्छी तरह जानते होंगे। आखिरी पत्र, मुझे मानना पड़ेगा (और मैं इसका जिक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि यह एक छोटी सी बात है, और इसमें कुछ भी अप्रिय नहीं है), ने मुझे फिर भी बहुत गुस्सा दिलाया। उसमें मुझे बताया गया था कि अगर बालबेक छोड़ने वाले दिन, आपने पहले तो वहीं रहने की इच्छा जताई और फिर जाने का फैसला किया, तो ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि इस बीच आपको एंड्री का एक पत्र मिला था जिसमें उसने बताया था कि वह नहीं आ रही है।" "मुझे अच्छी तरह पता है कि एंड्री ने मुझे पत्र लिखकर बताया था कि वह नहीं आ रही है, वास्तव में उसने टेलीग्राम भेजा था; मैं आपको टेलीग्राम नहीं दिखा सकता क्योंकि मैंने उसे रखा नहीं है, लेकिन वह उस दिन का नहीं था; आपको क्या लगता है कि एंड्री के आने या न आने से मुझे क्या फर्क पड़ता है?" "तुम्हें क्या लगता है इससे मुझे क्या फर्क पड़ेगा?" ये शब्द गुस्से का सबूत थे और यह भी कि 'कुछ फर्क तो पड़ा ही था', लेकिन ये ज़रूरी नहीं कि इस बात का सबूत हों कि अल्बर्टीन सिर्फ़ एंड्री से मिलने की इच्छा से ही पेरिस लौटी थी। जब भी अल्बर्टीन को लगता कि उसके किसी काम के असली या कथित मकसद का पता उस व्यक्ति को चल गया है जिसके सामने उसने कोई दूसरा मकसद बताया था, तो वह गुस्सा हो जाती थी,

चाहे वह व्यक्ति वही क्यों न हो जिसके लिए उसने असल में वह काम किया था। अल्बर्टीन का यह मानना कि उसके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में यह जानकारी मुझे मेरी इच्छा के विरुद्ध गुमनाम पत्रों में नहीं दी गई थी, बल्कि मैंने खुद उत्सुकता से मांगी थी, यह उसके बाद कहे गए शब्दों से कभी नहीं निकाला जा सकता था, जिनमें वह गुमनाम पत्रों की मेरी कहानी को स्वीकार करती हुई प्रतीत हुई, बल्कि उसके मेरे प्रति क्रोध के भाव से, जो उसके पहले के चिड़चिड़ेपन का मात्र विस्फोट प्रतीत हुआ, ठीक उसी तरह जैसे जासूसी जिसमें, इस परिकल्पना के अनुसार, उसे यह मानना चाहिए था कि मैं लिप्त था, उसके सभी कार्यों पर लंबे समय से चल रही निगरानी की पराकाष्ठा मात्र होती। उसका गुस्सा एंड्री तक पहुँच गया, और उसने ठान लिया कि अब से मैं कभी शांत नहीं रह पाऊँगी, यहाँ तक कि जब वह एंड्री के साथ बाहर जाएगी तब भी: "इसके अलावा, एंड्री मुझे पागल कर देती है। वह बेहद उबाऊ है। मैं उसके साथ कहीं नहीं जाना चाहती। आप यह बात उन लोगों को बता सकते हैं जिन्होंने आपको बताया कि मैं उसके लिए पेरिस वापस आई हूँ। मान लीजिए कि मैं आपसे कहूँ कि इतने सालों से एंड्री को जानने के बाद भी, मैं उसका चेहरा भी आपको नहीं बता सकती, मैंने उसे शायद ही कभी देखा हो!" बालबेक में, उस पहले साल में, उसने मुझसे कहा था: "एंड्री प्यारी है।" यह सच है कि इसका मतलब यह नहीं था कि उसके साथ उसके प्रेम संबंध थे, और वास्तव में मैंने उस समय उसे कभी भी इस तरह के किसी भी संबंध के बारे में आक्रोश के अलावा बोलते हुए नहीं सुना था। लेकिन क्या वह अनजाने में भी नहीं बदल सकती थी, यह जाने बिना कि वह बदल गई है, कभी यह सोचे बिना कि एक सहेली के साथ उसका मनोरंजन और वे अनैतिक संबंध, जो उसके मन में स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं थे, और जिनकी वह दूसरी महिलाओं में निंदा करती थी? क्या यह भी संभव नहीं था कि यही बदलाव, और बदलाव के प्रति यही अचेतनता, मेरे साथ उसके संबंधों में भी आई हो, जिसके चुंबनों को उसने बालबेक में इतने गुस्से से ठुकरा दिया था, वही चुंबन जो बाद में वह मुझे हर दिन अपनी मर्जी से देती थी, जो (कम से कम मुझे यही उम्मीद थी) वह मुझे लंबे समय तक देती रहेगी, और जो वह अभी देने वाली थी? "लेकिन, मेरे प्रिय, तुम मुझसे यह उम्मीद कैसे करते हो कि मैं उन्हें बताऊँ जब मुझे पता ही नहीं कि वे कौन हैं?" यह जवाब इतना ज़ोरदार था कि इससे अल्बर्टीन की आँखों में जमे हुए सभी संदेह और आपत्तियाँ पिघल जानी चाहिए थीं। लेकिन ऐसा नहीं

हुआ। मैं अब चुप था, फिर भी वह मुझे उसी निरंतर ध्यान से देखती रही, जैसा हम किसी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जिसने बोलना समाप्त नहीं किया हो। मैंने एक बार फिर उनसे माफ़ी मांगी। उन्होंने कहा कि उन्हें मुझे माफ़ करने की कोई ज़रूरत नहीं है। वह फिर से बहुत कोमल हो गई थीं। लेकिन, उनके उदास और परेशान चेहरे के पीछे, मुझे लगा जैसे कोई राज़ पनप रहा हो। मैं अच्छी तरह जानता था कि वह मुझे बिना बताए नहीं छोड़ सकतीं, इसके अलावा वह न तो मुझे छोड़ना चाहती थीं (एक हफ़्ते बाद उन्हें नए फ़ोर्टुनी गाउन ट्राई करने थे), और न ही शालीनता से ऐसा कर सकती थीं, क्योंकि मेरी माँ और उनकी चाची हफ़्ते के अंत में पेरिस लौट रही थीं। जब उनका जाना नामुमकिन था, तो मैंने उनसे बार-बार क्यों कहा कि हम अगले दिन साथ में कुछ वेनेशियन ग्लास देखने चलेंगे जो मैं उन्हें देना चाहता था, और जब मैंने उन्हें यह कहते सुना कि बात पक्की हो गई है, तो मुझे तसल्ली क्यों हुई? जब उन्होंने मुझे शुभ रात्रि कहा और मैंने उन्हें चूमा, तो उन्होंने हमेशा की तरह व्यवहार नहीं किया, बल्कि मुँह फेर लिया—मुश्किल से एक-दो मिनट ही हुए थे जब मैं सोच रहा था कि यह कितना सुखद है कि अब वह मुझे हर शाम वह दे रही हैं जो उन्होंने बालबेक में मुझे देने से मना कर दिया था—उन्होंने मेरे चुंबन का जवाब नहीं दिया। कोई कह सकता था कि मुझसे झगड़ा करने के बाद, वह मुझे स्नेह का ऐसा कोई प्रतीक नहीं देना चाहती थी जो बाद में मुझे उस झगड़े से इनकार करने जैसा धोखे का संकेत लगे। कोई कह सकता था कि वह अपने कार्यों को उस झगड़े के अनुरूप ढाल रही थी, और वह भी संयम से, शायद इसलिए कि वह इसे ज़ाहिर न करे, या इसलिए कि मुझसे शारीरिक संबंध तोड़ते हुए भी वह मेरी दोस्त बनी रहना चाहती थी। तब मैंने उसे दूसरी बार गले लगाया, ग्रैंड कैनाल के नीले रंग के प्रतिबिंब और मिलन करते पक्षियों को अपने दिल से लगा लिया, जो मृत्यु और पुनरुत्थान के प्रतीक थे। लेकिन दूसरी बार भी वह पीछे हट गई और मेरे चुंबन का जवाब देने के बजाय, उस सहज और घातक हठ के साथ दूर चली गई जो मृत्यु को भांप लेने वाले जानवरों में होता है। उसके मन में जो आशंका थी, वह मुझ पर भी हावी हो गई और मुझे इतनी घबराहट हुई कि जब वह दरवाजे तक पहुँच गई, तो उसे जाने देने की हिम्मत मुझमें नहीं हुई और मैंने उसे वापस बुलाया, "अल्बर्टीन," मैंने उससे कहा, "मुझे बिल्कुल नींद नहीं आ रही है। अगर तुम खुद सोना नहीं चाहती हो, तो तुम थोड़ी देर और यहाँ रुक सकती हो, अगर तुम्हें अच्छा लगे, लेकिन मुझे

कोई आपत्ति नहीं है, और मैं तुम्हें किसी भी हालत में थकाना नहीं चाहता।" मुझे लगा कि अगर मैं उसे कपड़े उतारने के लिए मना लेता और उसे उसकी सफेद नाइटगाउन में पाता, जिसमें वह और भी गुलाबी, और भी प्यारी लग रही थी, जिसमें वह मेरी इंद्रियों को और भी उत्तेजित कर रही थी, तो सुलह और भी गहरी हो जाती। लेकिन मैं एक पल के लिए हिचकिचाया, क्योंकि उसकी नाइटगाउन की नीली किनारी ने उसके चेहरे को और भी खूबसूरत, और भी चमकदार बना दिया था, जिसके बिना वह मुझे और भी कठोर लगती। वह धीरे-धीरे वापस आई और मुझसे बहुत मधुरता से बोली, और अब भी उसके चेहरे पर वही उदास, दुखी भाव था: "मैं जितनी देर चाहूँ रुक सकती हूँ, मुझे नींद नहीं आ रही है।" उसके जवाब ने मुझे शांत कर दिया, क्योंकि जब तक वह कमरे में थी, मुझे लगा कि मैं भविष्य के बारे में सोच सकता हूँ और साथ ही यह मित्रता, आज्ञाकारिता का संकेत था, लेकिन एक विशेष प्रकार की, जो मुझे उस रहस्य से घिरी हुई प्रतीत हुई जो मुझे उसकी उदास निगाहों और बदले हुए व्यवहार के पीछे छिपा हुआ महसूस हुआ, कुछ हद तक उसकी इच्छा के विरुद्ध, और कुछ हद तक शायद किसी ऐसी चीज़ के लिए पहले से ही खुद को तैयार करने के लिए जिसे मैं नहीं जानता था। मुझे लगा कि फिर भी, मुझे बस उसे सफेद कपड़ों में, बिना गले के, मेरे सामने देखना था, जैसा मैंने उसे बालबेक में बिस्तर पर देखा था, ताकि मुझे वह हिम्मत मिल जाए जो उसे झुकने पर मजबूर कर दे। "चूंकि आप मुझे सांत्वना देने के लिए यहां रुककर इतनी कृपा कर रही हैं, तो आपको अपना गाउन उतार देना चाहिए, यह बहुत गर्म और कड़ा है, मैं इस बढ़िया कपड़े के सिकुड़ने के डर से आपके पास आने की हिम्मत नहीं कर पा रही हूं और हमारे बीच वे प्रतीकात्मक पक्षी हैं। कपड़े उतारो, मेरी प्यारी।" "नहीं, मैं यहां यह पोशाक नहीं उतार सकती। मैं अभी अपने कमरे में कपड़े उतारूंगी।" "तो फिर आप मेरे बिस्तर पर आकर बैठेंगी भी नहीं?" "क्यों नहीं।" फिर भी वह मुझसे थोड़ी दूरी पर, मेरे पैरों के पास खड़ी रही। हमने बातें कीं। मुझे पता है कि मैंने तब मृत्यु शब्द कहा था, मानो अल्बर्टीन मरने वाली हो। ऐसा लगता है कि घटनाएँ उस क्षण से बड़ी होती हैं जिसमें वे घटित होती हैं और खुद को उसमें सीमित नहीं कर सकतीं। निश्चित रूप से वे हमारी स्मृति के माध्यम से भविष्य में फैल जाती हैं, लेकिन वे अपने से पहले के समय में भी एक स्थान की मांग

करती हैं। कोई कह सकता है कि हम उन्हें तब वैसे नहीं देखते जैसे वे होने वाली हैं, लेकिन क्या स्मृति में वे भी परिवर्तित नहीं होतीं?

जब मैंने देखा कि वह जानबूझकर मुझे चूमने से बच रही है, यह समझते हुए कि मैं अपना समय बर्बाद कर रहा हूँ, और यह कि चुंबन के बाद ही सुकून भरे, सच्चे पल शुरू होंगे, तो मैंने उससे कहा: "शुभ रात्रि, बहुत देर हो चुकी है," क्योंकि इससे वह मुझे चूम लेगी और हम आगे बढ़ सकते हैं। लेकिन "शुभ रात्रि, अच्छी नींद आए" कहने के बाद, ठीक वैसे ही जैसे उसने पहले दो बार कहा था, वह मुझे गाल पर चुंबन करने देने से ही संतुष्ट हो गई। इस बार मैंने उसे वापस बुलाने की हिम्मत नहीं की, लेकिन मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि मैं दोबारा लेट नहीं सका। एक पक्षी की तरह जो अपने पिंजरे के एक छोर से दूसरे छोर तक उड़ता है, बिना रुके मैं अल्बर्टीन के घर छोड़ने की चिंता से अपेक्षाकृत शांत अवस्था में पहुँच गया। यह शांति उस तर्क से उत्पन्न हुई जिसे मैं हर मिनट कई बार दोहराता रहा: "वह मुझे बिना बताए नहीं जा सकती, उसने जाने के बारे में कुछ नहीं कहा," और मैं कुछ हद तक शांत हो गया। लेकिन तुरंत ही मैंने खुद को याद दिलाया: "और फिर भी अगर कल मुझे पता चले कि वह चली गई है, तो मेरी चिंता का कोई न कोई आधार तो जरूर होगा; उसने मुझे चूमा क्यों नहीं?" यह सोचकर मेरा दिल बुरी तरह दुख उठा। फिर मैंने जो तर्क दोबारा दिया, उससे थोड़ी राहत मिली, लेकिन अंत में मुझे सिरदर्द हो गया, क्योंकि मेरे विचारों का यह निरंतर और नीरस प्रवाह था। इस प्रकार कुछ मानसिक अवस्थाएँ, और विशेष रूप से चिंता, हमें केवल दो विकल्प देती हैं, और एक तरह से शारीरिक दर्द की तरह ही सीमित होती हैं। मैं लगातार उस तर्क को दोहराता रहा जो मेरी चिंता को सही ठहराता था और जो उसे गलत साबित करता था और मुझे आश्वस्त करता था, ठीक उसी संकीर्ण दायरे में जैसे कोई बीमार व्यक्ति अपने दर्द का कारण बनने वाले अंग को लगातार आंतरिक हलचल से टटोलता है, और दर्द वाली जगह से एक पल के लिए हटकर फिर उसी जगह पर लौट आता है। अचानक, रात के सन्नाटे में, मैं एक ऐसी आवाज से चौंक गया जो देखने में तो मामूली लग रही थी, लेकिन फिर भी मुझे डर से भर दिया, अल्बर्टीन की खिड़की के ज़ोर से खुलने की आवाज। जब मुझे कोई और आवाज़ सुनाई नहीं दी, तो मैंने खुद से पूछा कि इससे मुझे इतनी घबराहट क्यों हुई। वैसे तो इसमें कुछ भी असाधारण नहीं था; लेकिन शायद मैंने इसके दो मतलब निकाले जो मुझे बराबर परेशान

कर रहे थे। पहली बात तो यह थी कि यह हमारे साझा जीवन की एक परंपरा थी, क्योंकि मुझे ठंडी हवा से डर लगता था, कि रात में कोई भी खिड़की नहीं खोलनी चाहिए। जब अल्बर्टीन घर में रहने आई थी, तब मैंने उसे यह बात समझाई थी, और हालाँकि उसे यकीन था कि यह मेरी सनक है और पूरी तरह से अस्वस्थ है, उसने मुझसे वादा किया था कि वह इस नियम को कभी नहीं तोड़ेगी। और वह हर उस चीज़ को लेकर इतनी डरपोक थी जिसे वह जानती थी कि मैं चाहता हूँ, भले ही वह इसके लिए मुझे ही दोषी ठहराए, कि वह जलती हुई चिमनी की बदबू में भी सो जाती, बजाय इसके कि अपनी खिड़की खोले, ठीक वैसे ही जैसे, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी गंभीर क्यों न हों, वह सुबह मुझे नहीं बुलाती। यह हमारे जीवन की छोटी-मोटी परंपराओं में से एक थी, लेकिन जिस क्षण उसने मुझसे बिना कुछ कहे इसका उल्लंघन किया, क्या इसका मतलब यह नहीं था कि उसे अब सावधानी बरतने की ज़रूरत नहीं है, कि वह सभी परंपराओं का उल्लंघन उतनी ही आसानी से कर देगी? इसके अलावा, वह आवाज़ हिंसक, लगभग असभ्य थी, मानो उसने गुस्से से लाल होकर खिड़की खोल दी हो और कहा हो: "यह जीवन मुझे घुटन दे रहा है, बस बहुत हो गया, मुझे हवा चाहिए!" मैंने ये सब बातें खुद से नहीं कहीं, लेकिन मैं लगातार उस खिड़की की आवाज़ के बारे में सोचता रहा, जो अल्बर्टीन ने खोली थी, मानो वह उल्लू की आवाज़ से भी ज़्यादा रहस्यमय और अशुभ संकेत हो। शायद कॉम्ब्रे में उस शाम के बाद से, जब स्वान नीचे खाना खा रहा था, मैं इतना बेचैन था कि ऐसी बेचैनी मुझमें कभी नहीं हुई थी। मैं काफी देर तक गलियारे में इधर-उधर घूमता रहा, इस उम्मीद में कि मेरे शोर से अल्बर्टीन का ध्यान मेरी ओर आकर्षित होगा, इस उम्मीद में कि उसे मुझ पर दया आएगी और वह मुझे अपने पास बुला लेगी, लेकिन मुझे उसके कमरे से कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। धीरे-धीरे मुझे लगने लगा कि बहुत देर हो चुकी है। वह सो चुकी होगी। मैं वापस बिस्तर पर चला गया। सुबह उठते ही, चूंकि कोई भी बिना बुलाए मेरे कमरे में नहीं आता था, चाहे कुछ भी हो जाए, मैंने फ्रांस्वा को बुलाया। और उसी समय मेरे मन में ख्याल आया: "मुझे अल्बर्टीन से उस नौका के बारे में बात करनी है जो मैं उसके लिए बनवाने वाला हूँ।" अपने पत्र लेते हुए मैंने फ्रांस्वा से बिना उसकी ओर देखे कहा: "अभी मुझे श्रीमती अल्बर्टीन से कुछ कहना है; क्या वह बिस्तर से उठ गई हैं?" "हाँ, वह जल्दी उठ गई हैं।" मेरे भीतर अचानक हवा के झोंके की तरह हजारों चिंताएँ उमड़ आईं, जिन्हें मैं अपने दिल में

दबाकर नहीं रख सका। वहाँ इतना शोर था कि मेरी साँस फूल रही थी, मानो मैं किसी आंधी में फँस गया हूँ। "अरे! वह अभी कहाँ है?" "मुझे लगता है वह अपने कमरे में है।" "अरे! अच्छा! ठीक है, मैं अभी उससे मिल लेता हूँ।" मैंने राहत की साँस ली, वह अभी भी घर में थी, मेरी घबराहट शांत हो गई। अल्बर्टीन वहाँ थी, मेरे लिए यह लगभग महत्वहीन था कि वह वहाँ थी या नहीं। वैसे भी, क्या यह मानना बेतुका नहीं था कि वह वहाँ नहीं हो सकती? मैं सो गया, लेकिन इस बात के पूरे यकीन के बावजूद कि वह मुझे छोड़कर नहीं जाएगी, मेरी नींद हल्की थी और वह हल्कीपन सिर्फ उसके लिए ही थी। आंगन में होने वाली उन आवाज़ों से, जिन्हें केवल काम से ही जोड़ा जा सकता था, मैं नींद में अस्पष्ट रूप से सुनता रहा, लेकिन मैं अविचलित रहा। वहीं, जब वह अपने कमरे से निकलती या चुपचाप लौटकर घंटी को धीरे से दबाती, तो कमरे से आने वाली हल्की सी सरसराहट भी मुझे चौंका देती, मेरे पूरे शरीर में सिहरन पैदा कर देती, और मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता, भले ही मैंने उसे गहरी नींद में सुना हो। ठीक वैसे ही जैसे मेरी दादी अपनी मृत्यु से पहले के अंतिम दिनों में, जब वह ऐसी गतिहीनता में डूबी हुई थीं जिसे कोई भी चीज़ भंग नहीं कर सकती थी और जिसे डॉक्टर कोमा कहते थे, तो मुझे बताया गया था कि जब वह उन तीन घंटियों की आवाज़ सुनती थीं जिनसे मैं फ़्रांस्वा को बुलाने का आदी था, तो वह एक पल के लिए पत्ते की तरह कांपने लगती थीं। उस सप्ताह के दौरान, जब मैंने उन्हें धीरे से बजाना शुरू कर दिया था ताकि मृत्यु-कक्ष की शांति भंग न हो, तब भी फ़्रांस्वा ने मुझे आश्वासन दिया था कि कोई भी, मेरे घंटी बजाने के तरीके को, जिसे मैं पूरी तरह से अनभिज्ञ था, किसी और की घंटी नहीं समझ सकता था। क्या मैं उस समय अपनी अंतिम पीड़ा में प्रवेश कर चुका था, क्या यही मृत्यु का आगमन था?

उस दिन और अगले दिन हम साथ बाहर गए, क्योंकि अल्बर्टीन ने एंड्री के साथ दोबारा बाहर जाने से इनकार कर दिया था। मैंने उससे नौका के बारे में कभी ज़िक्र तक नहीं किया। इन सैर-सपाटे से मुझे पूरी तरह से मन की शांति मिल गई थी। लेकिन रात में वह फिर से उसी अनोखे अंदाज़ में मुझे गले लगाती रही, जिससे मैं क्रोधित हो गया। अब मैं इसे केवल यही समझ पा रहा था कि वह मुझसे नाराज़ है, जो उसके प्रति मेरी निरंतर दयालुता के बाद मुझे बिल्कुल बेतुका लग रहा था। और इसलिए, उससे वे शारीरिक सुख भी न मिलने पर, जिन पर मैं निर्भर था, और उसके चिड़चिड़े स्वभाव को देखकर, मुझे उन सभी महिलाओं और यात्राओं

से वंचित होने का और भी गहरा एहसास हुआ, जिनके लिए इन शुरुआती सुहावने दिनों ने मेरी इच्छा को फिर से जगा दिया था। निस्संदेह, स्कूली छात्र रहते हुए, पूरी तरह से हरे-भरे पेड़ों के नीचे महिलाओं के साथ हुए मेरे भूले-बिसरे मुलाकातों की धुंधली यादों के कारण, यह वसंत ऋतु का क्षेत्र, जहाँ हमारे निवास स्थान का ऋतुओं के माध्यम से यात्रा का अंतहीन चक्र पिछले तीन दिनों से सुहावने आकाश के नीचे रुका हुआ था, और जहाँ से सभी रास्ते ग्रामीण इलाकों में पिकनिक, नौका विहार, आनंद यात्राओं की ओर इशारा करते थे, मुझे उतना ही महिलाओं की भूमि प्रतीत होती थी जितना कि पेड़ों की भूमि, और वह भूमि जहाँ हर जगह उपलब्ध आनंद मेरी स्वस्थ होती हुई शक्ति के लिए स्वीकार्य हो गया था। आलस्य को स्वीकार करना, पवित्रता को अपनाना, केवल उस स्त्री के साथ सुख का अनुभव करना जिससे मैं प्रेम नहीं करता था, अपने कमरे में बंद रहना, यात्रा न करना - ये सब उस पुरानी दुनिया में संभव था जिसमें हम एक दिन पहले ही थे, शीत ऋतु की खाली दुनिया में, लेकिन इस नए ब्रह्मांड में, जो हरे पत्तों से भरा हुआ था, अब संभव नहीं था। इस ब्रह्मांड में मैं एक युवा आदम की तरह जागा था, जो पहली बार अस्तित्व और सुख की समस्या का सामना कर रहा था, जो पिछले नकारात्मक समाधानों के बोझ तले दबा हुआ नहीं था। अल्बर्टीन की उपस्थिति मुझ पर भारी पड़ रही थी, इसलिए मैंने उसे उदास भाव से देखा, यह सोचकर कि काश हमारा कोई अलगाव हो गया होता। मैं वेनिस जाना चाहता था, और इस बीच लूव्र संग्रहालय में वेनिस की पेंटिंग्स देखना चाहता था, और लक्ज़मबर्ग संग्रहालय में एल्स्टर की दो पेंटिंग्स देखना चाहता था, जिनके बारे में मैंने अभी सुना था कि डचेस डी गुएरमांटेस ने हाल ही में उन्हें उसी गैलरी को बेचा था। ये वही पेंटिंग्स थीं जिनकी मैं बहुत प्रशंसा करता था - 'प्लेज़र्स ऑफ़ द डांस' और 'पोर्ट्रेट ऑफ़ द X फैमिली'। लेकिन मुझे डर था कि पहली पेंटिंग में कुछ कामुक मुद्राएँ अल्बर्टीन के मन में सार्वजनिक उत्सवों के लिए एक लालसा, एक अफसोसजनक तड़प पैदा कर सकती हैं, जिससे वह खुद से कहेगी कि शायद एक ऐसा जीवन जो उसने कभी नहीं जिया, आतिशबाजी और देहाती शराबखानों का जीवन, इतना बुरा नहीं था। पहले से ही, मुझे डर था कि कहीं 14 जुलाई को वह मुझे किसी लोकप्रिय नृत्य-समारोह में ले जाने के लिए न कह दे, और मैं किसी ऐसी असंभव घटना का सपना देख रहा था जिससे राष्ट्रीय अवकाश रद्द हो जाए। और इसके अलावा, एल्स्टिर की तस्वीरों में दक्षिण के हरे-भरे परिदृश्यों में कुछ नग्न

स्त्री आकृतियाँ भी मौजूद थीं, जो अल्बर्टीन को कुछ सुखों का एहसास करा सकती थीं, हालाँकि एल्स्टिर ने स्वयं (लेकिन क्या वह उनके काम के स्तर को कम नहीं करती?) उनमें केवल कृत्रिम सौंदर्य, या कहें कि बर्फीले स्मारकों की सुंदरता, जो हरियाली के बीच बैठी महिलाओं के शरीरों में झलकती है, के अलावा कुछ नहीं देखा था। इसलिए मैंने उस सुख को त्यागने का निश्चय कर लिया और वर्साय जाने का फैसला किया। अल्बर्टीन अपने कमरे में फोर्टुनी गाउन पहने पढ़ती रही। मैंने उससे पूछा कि क्या वह मेरे साथ वर्साय जाना चाहेगी। उसमें हमेशा किसी भी चीज़ के लिए तैयार रहने का आकर्षक गुण था, शायद इसलिए कि वह अतीत में अपना आधा समय दूसरों के मेहमान के रूप में बिताने की आदी थी, और जैसे ही उसने पेरिस आने का फैसला किया, दो मिनट में ही उसने मुझसे कहा: "मैं जैसी हूँ वैसी ही आ सकती हूँ, हम गाड़ी से बाहर नहीं निकलेंगे।" अपने घर के कपड़ों को छुपाने के लिए दो लबादों के बीच वह एक पल के लिए हिचकिचाई—जैसे वह अपने साथ चलने वाले साथी को चुनने में दो दोस्तों के बीच हिचकिचाती हो—गहरे नीले रंग का एक लबादा चुना, जो एक सराहनीय चुनाव था, और टोपी में एक पिन ठूँसी। एक मिनट में, वह तैयार हो गई, इससे पहले कि मैंने अपना ओवरकोट पहना होता, और हम वर्साय के लिए निकल पड़े। उसकी इस तत्परता, इस पूर्ण आज्ञाकारिता ने मुझे और भी आश्वस्त कर दिया, मानो वास्तव में, बिना किसी विशेष कारण के, मुझे आश्वासन की आवश्यकता थी। "आखिरकार मुझे डरने की कोई बात नहीं है, वह मेरी हर बात मानती है, भले ही उसने पिछली रात अपनी खिड़की से शोर मचाया हो। जैसे ही मैंने बाहर जाने की बात कही, उसने अपने गाउन के ऊपर वह नीला लबादा डाला और बाहर आ गई, एक विद्रोही ऐसा नहीं करता, एक ऐसा व्यक्ति जिसका मुझसे अब कोई मित्रतापूर्ण संबंध नहीं है," मैंने वर्साय जाते समय मन ही मन कहा। हम वहाँ काफी समय तक रहे। पूरा आकाश उस चमकीले और लगभग हल्के नीले रंग से बना था, जिसे खेत में लेटा हुआ राहगीर कभी-कभी अपने सिर के ऊपर देखता है, लेकिन इतना स्थिर, इतना गहरा कि उसे लगता है कि जिस नीले रंग से यह बना है, उसका उपयोग बिना किसी मिलावट के और इतनी असीम समृद्धि के साथ किया गया है कि कोई इसके सार में और गहराई तक जा सकता है, लेकिन उसे उसी नीले रंग के अलावा किसी और चीज का एक भी कण नहीं मिलेगा। मुझे अपनी दादी की याद आई, जो मानव कला और प्रकृति दोनों में भव्यता से प्रेम

करती थीं, और जो सेंट-हिलैरे के शिखर को उसी नीले रंग में ऊँचाई तक जाते हुए देखना पसंद करती थीं। अचानक मुझे अपनी खोई हुई स्वतंत्रता की लालसा फिर से महसूस हुई, जब मैंने एक ऐसी आवाज़ सुनी जिसे मैं पहले पहचान नहीं पाई, एक ऐसी आवाज़ जिसे मेरी दादी भी पसंद करतीं। यह किसी ततैया की भिनभिनाहट जैसी थी। "अरे," अल्बर्टीन ने कहा, "एक हवाई जहाज है, यह आकाश में बहुत ऊपर है, बहुत ऊपर।" मैंने हर दिशा में देखा, लेकिन मुझे केवल, बिना किसी काले धब्बे के, शांत नीले आकाश की अटूट चमक ही दिखाई दी। फिर भी मुझे पंखों की भिनभिनाहट सुनाई देती रही जो अचानक मेरी दृष्टि में प्रकट हुई। ऊपर आसमान में, काले और चमकते हुए छोटे-छोटे पंखों की एक जोड़ी ने स्थिर नीले आकाश को चीर दिया। अंततः मैं उस भिनभिनाहट के कारण का पता लगा पाया, उस छोटे से कीड़े के कारण जो आकाश में धड़क रहा था, शायद मुझसे लगभग पाँच हज़ार फीट ऊपर; मैं उसकी भिनभिनाहट देख सकता था। शायद उस समय जब ज़मीन पर दूरियाँ आज की तरह गति से इतनी कम नहीं होती थीं, एक मील दूर से गुज़रती ट्रेन की सीटी में वह सुंदरता थी जो अब और आने वाले समय तक पाँच हज़ार फीट ऊपर उड़ते हवाई जहाज़ की गूंज में हमारे भावों को झकझोर देगी, यह सोचकर कि इस ऊर्ध्वाधर यात्रा में तय की गई दूरियाँ ज़मीन पर तय की गई दूरियों के बराबर हैं, और उस दूसरी दिशा में, जहाँ माप हमें अलग-अलग प्रतीत होते थे क्योंकि वहाँ तक पहुँचने का प्रयास असंभव लगता था, पाँच हज़ार फीट पर उड़ता हवाई जहाज़ एक मील दूर उड़ती ट्रेन से ज़्यादा दूर नहीं है, बल्कि वास्तव में ज़्यादा नज़दीक है, क्योंकि दोनों एक ही पथ पर एक शुद्ध माध्यम में यात्रा करते हैं, यात्री अपने शुरुआती बिंदु से अलग नहीं होता, ठीक वैसे ही जैसे समुद्र पर या मैदानों में, शांत मौसम में, दूर जा चुके जहाज़ की लहरें या हल्की हवा का झोंका पानी या अनाज के सागर में लकीरें बना देता है।

“आखिर हम दोनों को भूख तो नहीं लगी है, चलो वर्दुरिन के घर जाकर देख लेते,” अल्बर्टीन ने मुझसे कहा, “यह उनका दिन और उनका समय है।” “लेकिन मुझे लगा था कि तुम उनसे नाराज़ हो?” “अरे! उनके बारे में तरह-तरह की बातें होती हैं, पर सच में वे उतने बुरे नहीं हैं। मैडम वर्दुरिन हमेशा मेरे साथ बहुत अच्छी रही हैं। वैसे भी, कोई हर समय सबसे झगड़ा नहीं कर सकता। उनमें भी कमियां हैं, पर किसमें नहीं होतीं?” “तुमने कपड़े नहीं पहने हैं, तुम्हें घर जाकर कपड़े पहनने पड़ेंगे, इससे हमें बहुत देर हो जाएगी।” मैंने आगे कहा कि मुझे भूख

लगी है। “हाँ, तुम सही कह रही हो, चलो हम खुद ही खा लेते हैं,” अल्बर्टीन ने अपनी उस अद्‌भुत विनम्रता से जवाब दिया जिसने मुझे हमेशा अचंभित कर दिया। हम शहर के लगभग बाहर स्थित एक बड़े पेस्ट्री की दुकान पर रुके, जिसकी उस समय अच्छी प्रतिष्ठा थी। एक महिला दुकान से जा रही थी और उसने दुकान की मालकिन से अपना सामान मांगा। और जब वह महिला चली गई, तो अल्बर्टाइन बार-बार उस लड़की की ओर देखती रही, मानो उसका ध्यान अपनी ओर खींचना चाहती हो, जबकि दूसरी लड़की प्याले, प्लेटें और केक समेट रही थी, क्योंकि देर हो रही थी। वह मेरे पास तभी आती जब मैं उससे कुछ माँगती। फिर हुआ ये कि वह लड़की, जो कि बहुत लंबी थी, हमारी सेवा करते हुए खड़ी हो जाती थी और अल्बर्टाइन मेरे बगल में बैठी होती थी। हर बार, अल्बर्टाइन उसका ध्यान खींचने के लिए, उसकी ओर एक चमकीली निगाह उठाती, जिससे लड़की को अपनी पुतलियों को और ऊपर उठाना पड़ता, क्योंकि लड़की हमारे ठीक सामने बैठी थी, इसलिए अल्बर्टाइन के पास अपनी निगाहों को तिरछा करके कोण को कम करने का कोई उपाय नहीं था। उसे अपना सिर ज़्यादा उठाए बिना, अपनी आँखों को उस असमान ऊँचाई तक ले जाना पड़ता था जहाँ लड़की की आँखें थीं। अपनी सुरक्षा का ध्यान रखते हुए, अल्बर्टाइन तुरंत अपनी निगाहें नीचे कर लेती थी, और क्योंकि लड़की ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, वह फिर से शुरू कर देती थी। इससे एक पहुँच से बाहर देवता के सामने व्यर्थ की प्रार्थनाओं का सिलसिला चलता रहा। फिर उस लड़की के पास हमारे बगल में एक बड़ी मेज को सीधा करने के अलावा और कोई काम नहीं बचा था। अब अल्बर्टीन की निगाहें स्वाभाविक ही रहनी थीं। लेकिन लड़की की नज़रें मेरी मालकिन पर एक पल भी नहीं टिकीं। इससे मुझे आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि मैं जानती थी कि जिस महिला से मेरी थोड़ी-बहुत जान-पहचान थी, उसके कई प्रेमी थे, हालाँकि वह शादीशुदा थी, लेकिन उसने अपने सारे षड्यंत्रों को पूरी तरह से छिपा रखा था, जो उसकी बेहिसाब मूर्खता को देखते हुए मुझे बेहद हैरान कर देता था। खाना खत्म होने तक मैंने उस महिला को गौर से देखा। अपने काम में मग्न, वह अल्बर्टीन के प्रति लगभग असभ्य थी, इस अर्थ में कि उसके पास अल्बर्टीन के लिए एक नज़र भी नहीं थी, हालाँकि अल्बर्टीन का रवैया बिल्कुल सही था। बाकी लोग चीज़ें व्यवस्थित करते रहे, बिना किसी बात से विचलित हुए। कॉफी के चम्मच और फल काटने वाले चाकू गिनने और रखने का काम इस लंबी और

खूबसूरत महिला को न सौंपकर, किसी 'श्रम-बचत' युक्ति से किसी मशीन को भी सौंपा जा सकता था, और तब आपको अल्बर्टीन के ध्यान से इतना अलग होना दिखाई नहीं देता। फिर भी उसने अपनी नज़रें नीचे नहीं कीं, खुद को काम में मग्न नहीं होने दिया, बल्कि अपनी आँखों और आकर्षण को अपने काम में पूरी तरह से चमकने दिया। यह सच है कि अगर यह महिला विशेष रूप से मूर्ख न होती (न केवल उसकी यही प्रतिष्ठा थी, बल्कि मुझे इसका अनुभव भी था), तो यह अलगाव उसकी चालाकी का सबसे बड़ा प्रमाण हो सकता था। और मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि सबसे मूर्ख व्यक्ति भी, अगर उसकी इच्छा या उसकी जेब दांव पर लगी हो, तो उस एक पल में, अपने मूर्ख जीवन की निरर्थकता से बाहर निकलकर, सबसे जटिल मशीनरी के कामकाज में तुरंत ढल सकता है; फिर भी, इस जैसी मूर्ख महिला के मामले में यह एक बहुत ही सूक्ष्म अनुमान होता। उसकी मूर्खता ने तो असभ्यता का असंभावित रूप भी धारण कर लिया था! उसने एक पल के लिए भी अल्बर्टीन की तरफ नहीं देखा, जिसे देखना तो लाज़मी था। यह मेरी मालकिन के लिए अच्छा नहीं था, लेकिन अंततः मुझे खुशी हुई कि अल्बर्टीन को यह छोटा सा सबक मिल गया और उसे समझ आ गया कि अक्सर औरतें उस पर ध्यान नहीं देतीं। हम पेस्ट्री की दुकान से निकले, अपनी गाड़ी में बैठे और घर की ओर चल पड़े, तभी अचानक मुझे अफ़सोस हुआ कि मैंने वेट्रेस को अलग ले जाकर उससे यह विनती क्यों नहीं की कि वह दुकान से बाहर आई महिला को मेरा नाम और पता किसी भी हालत में न बताए, क्योंकि मैंने उसे हमेशा ऑर्डर दिए थे। यह वाकई ठीक नहीं था कि वह महिला इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से अल्बर्टीन का पता जान ले। लेकिन मुझे लगा कि इतनी छोटी सी बात के लिए वापस लौटना समय की बर्बादी होगी और उस मूर्ख और झूठी वेट्रेस की नज़र में मैं इसे ज़रूरत से ज़्यादा अहमियत दे रहा हूँगा। अंततः मैंने तय किया कि मुझे एक सप्ताह बाद वहाँ वापस जाकर यह अनुरोध करना होगा, और यह बहुत उबाऊ था, क्योंकि कहने को आधी बातें हमेशा भूल जाते थे, यहाँ तक कि सबसे सरल काम भी किश्तों में करना पड़ता था। इस संदर्भ में, मैं आपको बता नहीं सकता कि अल्बर्टीन का जीवन किस प्रकार वैकल्पिक, क्षणभंगुर, और अक्सर परस्पर विरोधी इच्छाओं के जाल में उलझा हुआ था। निस्संदेह झूठ ने इसे और भी जटिल बना दिया, क्योंकि जब उसने मुझसे कहा था: "आह! अगर आप चाहें तो वह एक सुंदर लड़की है, और एक अच्छी गोल्फर भी है," और मैंने लड़की का नाम पूछा था,

तो उसने उस तटस्थ, सार्वभौमिक, श्रेष्ठ भाव से उत्तर दिया था, जो निस्संदेह हमेशा पर्याप्त मात्रा में होता है, क्योंकि इस श्रेणी का हर झूठा व्यक्ति किसी प्रश्न का उत्तर न देने के क्षण के लिए इसका उपयोग करता है, और वह कभी असफल नहीं होता: "आह! मुझे नहीं पता" (मुझे जानकारी न दे पाने पर खेद व्यक्त करते हुए)। “मुझे उसका नाम कभी पता नहीं था, मैं उसे गोल्फ कोर्स पर देखती थी, लेकिन मुझे उसका उपनाम नहीं पता था”;—अगर एक महीने बाद मैं उससे कहती: “अल्बर्टीन, तुम्हें वह खूबसूरत लड़की याद है जिसका तुमने मुझसे ज़िक्र किया था, जो गोल्फ बहुत अच्छा खेलती है।” “अरे हाँ,” वह बिना सोचे समझे जवाब देती: “एमिली डाल्टियर, मुझे नहीं पता उसका क्या हुआ।” और झूठ, मिट्टी के टीलों की तरह, अब पकड़े जा चुके नाम के बचाव से वापस उससे दोबारा मिलने की संभावनाओं की ओर लौट जाता। “ओह, मैं तुम्हें नहीं बता सकती, मुझे उसका पता कभी पता नहीं था। मुझे कोई ऐसा व्यक्ति नहीं दिखता जो तुम्हें बता सके। ओह, नहीं! एंड्री उसे कभी नहीं जानती थी। वह हमारे उस छोटे से समूह का हिस्सा नहीं थी, जो अब बिखर चुका है।” कभी-कभी झूठ एक घटिया स्वीकारोक्ति का रूप ले लेता: “अरे! अगर मेरे पास साल में तीन लाख फ्रैंक होते...” वह अपने होंठ काटती। “तो? फिर तुम क्या करती?” “मैं आपसे पूछना चाहती हूँ,” उसने मुझे चूमते हुए कहा, “कि आप मुझे हमेशा आपके साथ रहने की अनुमति दें। मैं और कहाँ इतनी खुश हो सकती हूँ?” लेकिन, उसके झूठों को भी ध्यान में रखते हुए, यह अविश्वसनीय था कि उसका जीवन कितना अस्थिर था, उसकी प्रबल इच्छाएँ कितनी क्षणभंगुर थीं। वह किसी व्यक्ति के लिए पागल हो जाती, और तीन दिन बाद उससे मिलने से इनकार कर देती। वह एक घंटे भी इंतज़ार नहीं कर सकती थी जब मैं कैनवास और रंग मंगवाता, क्योंकि वह फिर से पेंटिंग शुरू करना चाहती थी। पूरे दो दिन वह बेचैन रहती, लगभग वैसे ही आँसू बहाती, जैसे कोई शिशु अपनी माँ से दूध छुड़ाने के बाद तुरंत पोंछ लेता है। और लोगों, चीजों, व्यवसायों, कलाओं, स्थानों के प्रति उसकी भावनाओं की यह अस्थिरता वास्तव में इतनी व्यापक थी कि, अगर वह पैसे से प्यार करती भी, जिस पर मुझे विश्वास नहीं है, तो वह किसी और चीज से ज्यादा समय तक उससे प्यार नहीं कर सकती थी। जब उसने कहा: “आह! काश मेरे पास साल में तीन लाख फ्रैंक होते!” या फिर अगर उसने कोई बुरा लेकिन बहुत क्षणिक विचार भी व्यक्त किया होता, तो वह उस विचार से उतनी देर तक नहीं जुड़ी रह सकती थी जितनी देर तक वह लेस

रोचर्स जाने के विचार से जुड़ी रहती, जिसका एक चित्र उसने मेरी दादी के पास मौजूद मैडम डी सेविग्ने की पुस्तक में देखा था, या गोल्फ कोर्स के किसी पुराने दोस्त से मिलने के विचार से, हवाई जहाज में ऊपर जाने के विचार से, अपनी चाची के साथ क्रिसमस बिताने के विचार से, या फिर से चित्रकारी शुरू करने के विचार से जुड़ी रहती।

एक शाम हम बहुत देर से घर लौटे, और सड़क किनारे जगह-जगह लाल रंग की पैंट स्कर्ट से चिपकी हुई एक प्रेममयी जोड़ी को दिखा रही थी। हमारी गाड़ी पोर्ट मैलोट से अंदर गई। पेरिस के स्मारकों की जगह, शुद्ध, सीधी रेखाओं वाली, बिना गहराई वाली, पेरिस के स्मारकों की एक तस्वीर लगा दी गई थी, मानो किसी नष्ट हो चुके शहर के स्वरूप को याद दिलाने की कोशिश की गई हो। लेकिन, इस तस्वीर के चारों ओर, हल्के नीले रंग का फ्रेम इतनी खूबसूरती से उभरा हुआ था कि लालची निगाहें उस मनमोहक रंग की एक और झलक पाने के लिए हर जगह तरस रही थीं, जो उन्हें बहुत कम मात्रा में दिखाई दे रहा था: चाँद चमक रहा था। अल्बर्टीन चाँदनी की प्रशंसा कर रही थी। मैंने उसे यह बताने की हिम्मत नहीं की कि अगर मैं अकेला होता, या किसी अजनबी औरत की तलाश में होता, तो मैं इसकी और भी अधिक प्रशंसा करता। मैंने उसे चांदनी के बारे में कविताएँ या गद्य के अंश सुनाए, और उसे बताया कि कैसे एक समय में चाँदी जैसी चमक से, शैतोब्रिएंड में, विक्टर ह्यूगो की रचनाओं 'एविराडनस' और 'ला फेटे चेज़ थेरेसे' में वह नीली हो गई, और फिर बॉडेलेयर और लेकोंटे डी लिस्ले की रचनाओं में पीली और धात्विक हो गई। फिर, 'बूज़ एंडोर्मी' के अंत में अर्धचंद्र के लिए प्रयुक्त छवि की याद दिलाते हुए, मैंने उसे पूरी कविता सुनाई। और इस तरह हम घर पहुँचे। उस रात मौसम सुहाना हो गया और थर्मामीटर में पारा तेजी से ऊपर चढ़ गया। वसंत की अगली सुबह, जब सूरज जल्दी उठता था, मैं ट्राम की आवाज़ सुन सकता था, खुशबू के बादल के बीच से गुज़रते हुए, ऐसी हवा में जिसमें व्याप्त गर्माहट धीरे-धीरे घुलमिल जाती थी, यहाँ तक कि दोपहर की सघनता और ठंडक तक पहुँच जाती थी। जब चिकनी हवा ने वॉशस्टैंड, अलमारी और सोफे की गंध को अपने आवरण में लपेटकर अलग कर दिया, तो ये सभी गंधें, खड़ी और सीधी, एक-दूसरे से सटी हुई लेकिन अलग-अलग परतों में, मोती जैसी चमक के साथ पर्दों और नीले साटन की कुर्सियों की झिलमिलाहट को और भी कोमल बना रही थीं। तब मैंने खुद को, केवल अपनी कल्पना की उड़ान से नहीं, बल्कि शारीरिक रूप से

संभव होने के कारण, उपनगरों के किसी नए इलाके में, जैसे कि बालबेक में ब्लोच का घर स्थित था, सूरज की रोशनी से चकाचौंध सड़कों पर चलते हुए पाया। वहां मुझे नीरस कसाई की दुकानें और सफेद पत्थर की दीवारें नहीं, बल्कि देहाती भोजनालय मिला, जहां मैं पल भर में पहुंच सकता था। वहां मुझे चेरी और खुबानी के कटोरे की, साइडर की, और ग्रुयेर पनीर की सुगंध मिली, जो छाया के चमकदार जमाव में धीरे-धीरे समाई हुई थी। जैसे अगेट पत्थर का हृदय, जबकि प्रिज्मेटिक कांच के नुकीले किनारे कमरे में इंद्रधनुष बिखेरते हैं या मोम के कपड़े पर जगह-जगह मोर की आंखों जैसी आकृतियाँ बनाते हैं। एक नियमित गति से बहने वाली हवा की तरह, मैंने खिड़की के नीचे एक मोटर-कार की आवाज सुनकर खुशी महसूस की। मुझे उसमें पेट्रोल की गंध आई। यह अति संवेदनशील (जो हमेशा भौतिकवादी होते हैं) लोगों को अफसोसजनक लग सकता है, जिनके लिए यह देश को खराब करता है, और कुछ विचारकों (जो अपने तरीके से भौतिकवादी हैं) को भी, जो तथ्यों के महत्व में विश्वास करते हुए कल्पना करते हैं कि मनुष्य अधिक खुश होगा, कविता की उच्चतर उड़ान भरने में सक्षम होगा, यदि उसकी आँखें अधिक रंगों को देख सकें, उसकी नाक अधिक गंधों को पहचान सके। यह उन लोगों के सरल विचार का दार्शनिक रूपांतरण है जो मानते हैं कि जीवन तब बेहतर था जब मनुष्य आज के काले कोट के बजाय भव्य पोशाक पहनते थे। लेकिन मेरे लिए (ठीक वैसे ही जैसे नेफ्थालीन और फूलों वाली घासों की एक अप्रिय सी सुगंध, बालबेक पहुँचने के दिन मुझे समुद्र की नीली शुद्धता लौटाकर रोमांचित कर देती), पेट्रोल की यह गंध, जो कार के एग्जॉस्ट से निकलने वाले धुएँ के साथ अक्सर उन झुलसा देने वाले दिनों में फीके नीले रंग में घुल जाती थी, जब मैं सेंट-जीन डे ला हाइस से गौरविले तक गाड़ी चलाता था, और यह उन गर्मियों की दोपहरों में मेरे भ्रमण के दौरान मेरे साथ रहती थी जब मैं अल्बर्टाइन को चित्रकारी करते हुए छोड़ देता था, अब मेरे दोनों ओर खिले हुए कॉर्नफ्लावर, पॉपी और लाल तिपतिया घास, मुझे एक देहाती सुगंध की तरह मदहोश कर देती थी, जो सीमित और स्थिर नहीं थी, जैसे कि वह जो नागफनी के सामने फैलती है और अपने चिकने और घने तत्वों में समाहित होकर बाड़ के सामने एक निश्चित स्थिरता के साथ तैरती है, बल्कि एक ऐसी सुगंध जिसके सामने सड़कें उड़ जाती थीं, सूरज का चेहरा बदल जाता था, महल मुझसे मिलने के लिए दौड़ पड़ते थे, आकाश पीला पड़ जाता था, शक्ति दस गुना बढ़ जाती थी, एक ऐसी सुगंध

जो यह लचीली गति और शक्ति के प्रतीक की तरह था, और इसने बालबेक में मेरे अंदर उमड़ी उस इच्छा को फिर से जगा दिया, कि मैं इस्पात और क्रिस्टल के पिंजरे में प्रवेश करूँ, लेकिन इस बार किसी जानी-पहचानी महिला के साथ परिचित घरों में बार-बार जाने के लिए नहीं, बल्कि किसी अनजान महिला के साथ नए स्थानों पर प्रेम करने के लिए। एक ऐसी सुगंध जो हर पल गुजरती मोटरों के हॉर्न की आवाज़ के साथ आती थी, जिसे मैं एक सैन्य आह्वान की तरह शब्दों में पिरोता था: "पेरिसवासी, उठो, उठो, बाहर आओ और गाँव में पिकनिक मनाओ, और पेड़ों के नीचे नदी में एक सुंदर लड़की के साथ नाव की सवारी करो; उठो, उठो!" और ये सभी विचार इतने सुखद थे कि मैंने उस 'कठोर आदेश' पर खुद को बधाई दी जिसमें यह निर्धारित था कि जब तक मैं अपनी घंटी न बजा दूँ, कोई भी 'डरपोक इंसान', चाहे वह फ्रांस्वा हो या अल्बर्टाइन, 'इस महल' में आकर मुझे परेशान करने का सपना भी न देखे।
"...एक भयानक महिमा मुझे मेरी प्रजा के लिए पूरी तरह अदृश्य बना देती है।"
लेकिन अचानक ही दृश्य बदल गया; यह स्मृति थी, पुरानी छाप की नहीं, बल्कि एक पुरानी इच्छा की, जो नीले और सुनहरे रंग के फोर्टुनी गाउन द्वारा हाल ही में फिर से जागृत हुई थी, जो मेरे सामने फैल गई, एक और वसंत, एक ऐसा वसंत जो बिल्कुल भी पत्तों से भरा नहीं था, बल्कि अचानक ही अपने पेड़ों और फूलों से रहित हो गया था, उस नाम से जो मैंने अभी-अभी खुद से कहा था: 'वेनिस,' एक शुद्ध वसंत, जो अपने मूल गुणों तक सिमट गया है, और अपने दिनों के लंबे होने, गर्म होने और धीरे-धीरे परिपक्व होने को प्रगतिशील किण्वन द्वारा व्यक्त करता है, (इस बार) अशुद्ध मिट्टी का नहीं, बल्कि नीले और पवित्र जल का, बिना कली या फूल के वसंत जैसा, जो मई की पुकार का जवाब केवल उस महीने द्वारा तराशे गए चमकदार पहलुओं से दे सकता है, जो अपने धुंधले नीलमणि की दीप्तिमान, अपरिवर्तनीय नग्नता में उसके साथ पूरी तरह से सामंजस्य स्थापित करते हैं। और इसलिए, जिस प्रकार ऋतुएँ समुद्र के अपने निर्जीव खाड़ियों में कोई परिवर्तन नहीं लातीं, उसी प्रकार आधुनिक वर्ष गोथिक शहर में कोई परिवर्तन नहीं लाते; मैं जानता था, मैं इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था, लेकिन यही वह चीज़ थी जिसे मैं उसी तीव्र इच्छा से देखना चाहता था, जिस इच्छा ने बहुत पहले, जब मैं लड़का था, अपने प्रस्थान के उत्साह में यात्रा के लिए आवश्यक शक्ति को चकनाचूर कर दिया था; मैं अपने वेनिस के सपनों से रूबरू होना चाहता था, यह देखना

चाहता था कि कैसे वह विभाजित समुद्र अपनी घुमावदार धाराओं में, महासागर की धाराओं की तरह, एक सभ्य और परिष्कृत सभ्यता को समेटे हुए है, लेकिन एक ऐसी सभ्यता जो अपने नीले रंग के आवरण से घिरी हुई, स्वयं विकसित हुई है, जिसके अपने चित्रकला और वास्तुकला के स्कूल हैं, रंगीन पत्थरों से बने फलों और पक्षियों के उस अद्‌भुत बगीचे की प्रशंसा करना चाहता था, जो समुद्र के बीचोंबीच खिल रहा था, जो उसे तरोताज़ा रखता था, जिसकी लहरें स्तंभों के आधार से टकराती थीं और शीर्षों की उभरी हुई आकृतियों पर, छाया में देखती हुई एक गहरी नीली आँख की तरह, प्रकाश के धब्बे बिखेरती थीं, जिन्हें वह निरंतर गतिमान रखती थी। हाँ, मुझे जाना ही होगा, समय आ गया था। अब जब अल्बर्टीन मुझसे नाराज़ नहीं लग रही थी, तो उसका साथ पाना मुझे अब वह खजाना नहीं लग रहा था जिसके बदले हम सब कुछ कुर्बान करने को तैयार हों। क्योंकि हमने ऐसा सिर्फ़ उस दुख और चिंता से छुटकारा पाने के लिए किया था जो अब शांत हो चुकी थी। हम उस मुश्किल को पार करने में कामयाब हो गए हैं जिसे हमने एक पल के लिए सोचा था कि हम कभी पार नहीं कर पाएंगे। हमने तूफान को शांत कर दिया है, मुस्कान की शांति लौटा दी है। बिना किसी ज्ञात कारण के, और शायद कभी न खत्म होने वाली नफरत का दर्दनाक रहस्य दूर हो गया है। अब हम एक बार फिर उस समस्या का सामना कर रहे हैं, जिसे कुछ समय के लिए किनारे कर दिया गया था, उस खुशी का जिसे हम जानते हैं कि पाना असंभव है। अब जब अल्बर्टीन के साथ जीवन फिर से संभव हो गया था, तो मुझे लगा कि मुझे इससे दुख के अलावा कुछ नहीं मिल सकता, क्योंकि वह मुझसे प्यार नहीं करती थी; बेहतर यही था कि मैं उसकी सहमति के उस सुखद क्षण में उससे अलग हो जाऊं जिसे मैं यादों में संजो कर रखूं। हाँ, यही वह क्षण था; मुझे एंड्री के पेरिस छोड़ने की तारीख का पक्का पता लगाना था, और मैडम पर अपना पूरा प्रभाव डालना था। यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त समय था कि उस समय अल्बर्टीन न तो हॉलैंड जा सके और न ही मोंटजोवेन। अगर हम अपने प्रेम का बेहतर विश्लेषण कर पाते, तो यह हमारे नसीब में होता कि अक्सर महिलाएं हमारी नज़र में केवल इसलिए ऊपर उठती हैं क्योंकि उनके लिए हमें कई पुरुषों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है, हालांकि हम उस प्रतिस्पर्धा के विचार को मुश्किल से ही सहन कर पाते हैं; संतुलन हट जाने पर महिला का आकर्षण कम हो जाता है। इसका एक दुखद और शिक्षाप्रद उदाहरण पुरुषों के उस झुकाव में मिलता है जो

वे उन महिलाओं के प्रति महसूस करते हैं जो उन्हें जानने से पहले ही भटक गई हैं, उन महिलाओं के प्रति जिन्हें वे खतरनाक दलदल में डूबती हुई महसूस करते हैं और जिन्हें बचाने में उन्हें अपने प्रेम का पूरा समय व्यतीत करना पड़ता है; दूसरी ओर, एक मरणोपरांत उदाहरण मिलता है, जो बिल्कुल भी नाटकीय नहीं है, उस व्यक्ति का जो अपनी प्रेमिका के प्रति अपने स्नेह में कमी महसूस करते हुए, अपने द्वारा निकाले गए नियमों को सहज रूप से लागू करता है, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसका प्रेम उस महिला से कभी न रुके, उसे एक खतरनाक वातावरण में डाल देता है जहाँ से उसे प्रतिदिन उसकी रक्षा करनी पड़ती है। (यह उन पुरुषों के बिल्कुल विपरीत है जो किसी महिला को मंच से हटने के लिए कहते हैं, जबकि मंच पर होने के कारण ही उन्हें उससे प्रेम हुआ था।)

जब इस तरह अल्बर्टीन के जाने पर कोई आपत्ति नहीं होगी, तो मुझे आज जैसा कोई अच्छा दिन चुनना होगा—और ऐसे कई दिन जल्द ही आने वाले हैं—एक ऐसा दिन जब वह मेरे लिए महत्वहीन हो चुकी हो, जिस दिन मैं अनगिनत इच्छाओं से प्रलोभित हो रहा होऊं, मुझे उसे बिना देखे घर से जाने देना होगा, फिर अपने बिस्तर से उठकर, जल्दी से सारी तैयारियां करके, उसके लिए एक नोट छोड़ना होगा, इस बात का फायदा उठाते हुए कि चूंकि वह फिलहाल किसी ऐसी जगह नहीं जा सकती जिसके बारे में सोचकर मैं परेशान हो जाऊं, तो यात्रा के दौरान मैं उन बुरे कामों की कल्पना करने से बच सकूंगा जो वह शायद कर रही हो—जो मुझे फिलहाल बिल्कुल महत्वहीन लग रहे थे—और उसे दोबारा देखे बिना, वेनिस के लिए रवाना हो सकूंगा।

मैंने फ़्रांस्वा को फ़ोन किया और उनसे मेरे लिए एक गाइडबुक और समय सारिणी खरीदने को कहा, जैसा कि मैं बचपन में करता था, जब मैं वेनिस की यात्रा की तैयारी पहले से करना चाहता था, एक ऐसी तीव्र इच्छा की पूर्ति जो इस समय मेरे मन में उमड़ रही थी; मैं भूल गया था कि इस बीच, एक इच्छा थी जो मैंने पूरी तो कर ली थी, पर अतृप्त, बालबेक की इच्छा, और यह कि वेनिस, जो स्वयं भी एक प्रत्यक्ष घटना है, शायद बालबेक की तरह ही एक अवर्णनीय सपने को साकार करने में असमर्थ था, गोथिक युग का सपना, जो वसंत ऋतु के समुद्र द्वारा साकार किया गया था, और कभी-कभी एक मंत्रमुग्ध कर देने वाली, कोमल, अकल्पनीय, रहस्यमय, भ्रमित छवि के साथ मेरी आत्मा को झकझोर देता था। मेरी घंटी सुनकर फ़्रांस्वा

कमरे में आईं, इस बात को लेकर काफी बेचैन थीं कि मैं उनकी कही बातों और उनके किए को कैसे ग्रहण करूँगा। “यह बहुत अजीब रहा,” उसने मुझसे कहा, “कि आज सुबह महोदय ने इतनी देर से घंटी बजाई। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ। आज सुबह आठ बजे मैडमोजेल अल्बर्टीन ने मुझसे अपने बक्से मांगे, मैं उन्हें मना नहीं कर सकी, मुझे डर था कि अगर मैं जाकर उन्हें जगा दूँगी तो महोदय मुझे डांटेंगे। उन्हें समझाने-बुझाने का कोई फायदा नहीं था, उन्हें एक घंटा इंतजार करने के लिए कहना बेकार था क्योंकि मुझे हर समय उम्मीद थी कि महोदय घंटी बजाएंगे; वह नहीं मानीं, उन्होंने यह पत्र मेरे पास महोदय के लिए छोड़ दिया, और नौ बजे चली गईं।” फिर—हम अपने भीतर की भावनाओं से कितने अनजान हो सकते हैं, क्योंकि मैं अल्बर्टीन के प्रति अपनी उदासीनता से पूरी तरह आश्वस्त थी—मेरी सांस रुक गई, मैंने अपने दिल को अपने हाथों में थाम लिया जो अचानक पसीने से भीग गया था, ऐसा पसीना जो मुझे तब से नहीं आया था जब मेरी मालकिन ने छोटी ट्राम में मैडमोजेल अल्बर्टीन के बारे में खुलासा किया था। विन्ट्यूइल के मित्र ने, मेरे कुछ और कहने से पहले ही कहा: "आह! बहुत अच्छा, आपने मुझे न जगाकर बिल्कुल सही किया, अब मुझे थोड़ी देर के लिए अकेला छोड़ दीजिए, मैं अभी आपके लिए घंटी बजाऊंगा।"

समाप्त

sjeet